Prakrit Text Series

Vol. XVII

# DASAKĀLIASUTTA

## WITH

## NIRYUKTI AND CŪRNI

PRAKRIT TEXT SOCIETY

AHMEDABAD-380 009.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Prakrit Text Society Series No. 17

General Editors
Dr. P. L. VAIDYA
Dr. H. C. BHAYANI

SAYYAṂBHAVA'S

# DASAKĀLIYASUTTAṂ

WITH

## BHADRABĀHU'S NIRYUKTI

AND

## AGASTYASIṂHA'S CŪRṆI

Edited by
MUNI SHRI PUNYAVIJAYAJI

PRAKRIT TEXT SOCIETY
AHMEDABAD-380 007.
2003

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Published by
**RAMNIK SHAH**
Secretary
**PRAKRIT TEXT SOCIETY**
***Shree Vijay-Nemisuriswarji***
***Jain Swadhyay Mandir***
12, Bhagatbaug Society,
Sharada Mandir Road, Paldi,
Ahmedabad-380 007.

**Reprint :** October, 2003

**Price : Rs. 250/-**

***Available from :***

1. Saraswati Pustak Bhandar, Ratanpole, Ahmedabad-1.
2. Parshwa Prakashan, Zaveriwad, Relief Road, Ahmedabad-1.
3. Motilal Banarasidas, Delhi, Varanasi.

Printed by :
**MANIBHADRA PRINTERS**
3, Vijay House, Parth Tower,
Nr. Bus Stop, Nava Vadaj,
Ahmedabad-380 013.
Tel. 764 2464, 764 0750

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृतग्रन्थपरिषद् ग्रन्थाङ्क : १७

सिरिसेज्जंभवथेरविरइयं

# दसकालियसुत्तं

सिरिभद्दबाहुसामिविरइयाए निज्जुत्तीए सिरिवइरसामिसाहुब्भवसिरिअगत्थियसिंहथेरविरइयाए
चुण्णीए य संजुयं

संशोधकः सम्पादकश्च

**मुनिपुण्यविजयः**

जिनागमरहस्यवेदिजैनाचार्यश्रीमद्विजयानन्दसूरिवर (प्रसिद्धनाम-आत्मारामजीमहाराज) शिष्यरत्न-
प्राचीनजैनभाण्डागारोद्धारकप्रवर्तकश्रीमत्कान्तिविजयान्तेवासिनां श्रीजैनआत्मानन्दग्रन्थमालासम्पादकानां
मुनिप्रवरश्रीचतुरविजयानां विनेयः

**प्राकृत ग्रन्थ परिषद्**

**अहमदाबाद-३८० ००७.**

वीरसंवत् : २५३० विक्रमसंवत् : २०६० इस्वीसन् : २००३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक :
रमणीक शाह
सेक्रेटरी
प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी
श्री विजयनेमिसूरीश्वरजी जैन स्वाध्याय मंदिर
१२, भगतबाग सोसायटी,
शारदा मंदिर रोड, पालडी,
अहमदाबाद-३८० ००७.

पुनःमुद्रण : ओक्टोबर, २००३

मूल्य : रू. २५०/-

मुद्रक :
माणिभद्र प्रिन्टर्स
३, विजय हाउस, पार्थ टावर,
बस स्टेन्ड के पास, नवा वाडज,
अहमदाबाद-३८० ०१३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## પુન:પ્રકાશનના લાભાર્થી

પરમશાસનપ્રભાવક મહારાષ્ટ્રદેશોદ્ધારક વ્યાખ્યાનવાચસ્પતિ સુવિશાલગચ્છાધિપતિ સુવિશુદ્ધદેશનાદાતા રત્નત્રયીપ્રદાતા સ્વ. પૂજયપાદ પરમોપકારી આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્ **વિજયરામચંદ્રસૂરીશ્વરજી મહારાજા** તથા તેઓશ્રીજીના આજીવન અંતેવાસી વાત્સલ્યમહોદધિ સુવિશાલગચ્છનાયક સ્વ. પૂજયપાદ આચાર્યદેવેશ **શ્રીમદ્ વિજયમહોદયસૂરીશ્વરજી મહારાજા**ના દિવ્ય આશીર્વાદથી પ્રશમરસનિધિ પ્રવચનપ્રભાવક વર્તમાનગચ્છાધિપતિ પૂજયપાદ આચાર્યદેવેશ **શ્રીમદ્ વિજયહેમભૂષણસૂરીશ્વરજી મહારાજા**ના આજ્ઞાવર્તિની માતૃહૃદયા પ્રવર્તિની સ્વ. પૂ. સા.શ્રી જયાશ્રીજી મ.સા.ના પ્રથમાન્તેવાસી પ.પૂ. સા.શ્રી ભદ્રપૂર્ણાશ્રીજી મ.ના શિષ્યાઓ પૂ.સા. શ્રી સૂર્યપ્રભાશ્રીજી મ.,પૂ.સા. શ્રી મનોરમાશ્રીજી મ.,પૂ.સા.શ્રીનિરંજનાશ્રીજી મ.ની દિવ્યકૃપાથી તથા તેઓશ્રીના શિષ્યરત્ના પૂ.સા. શ્રીપુણ્યપ્રભાશ્રીજીમ.ના ઉપદેશથી શ્રી હસમુખલાલ ચુનીલાલ મોદી પરિવાર ટ્રસ્ટ દ્વારા સ્વદ્રવ્યનિર્મિત શ્રી અજિતનાથ સ્વામી પ્રાસાદ તેમજ સા. શ્રી સૂર્યપ્રભાશ્રીજી સ્વાધ્યાય મંદિર, કુમુદમેન્શન અને શ્રી વિજયરામચંદ્રસૂરીશ્વરજી સાધના મંદિર, લોટસ હાઉસમાં થયેલ જ્ઞાનદ્રવ્યની ઉપજમાંથી સૂરિરામના વિનેયરત્ન કલિકાલના ઘણા અણગાર સચ્ચારિત્રપાત્ર વર્ધમાનતપોનિધિ સ્વ. પૂજ્ય **પંન્યાસપ્રવરશ્રી કાંતિવિજયજી ગણિવરના** વિનેયરત્ન વાત્સલ્યવારિધિ શાસનપ્રભાવક પૂજયપાદ આચાર્યદેવેશ **શ્રીમદ્ વિજયનરચંદ્રસૂરીશ્વરજી મહારાજાની** પ્રેરણાથી કુમુદબેન હસમુખલાલ મોદી અને શ્રી કુમુદ મેન્શન તપાગચ્છ આરાધક સંઘ, કુમુદમેન્શન ફોરજેટહીલ, તારદેવ, મુંબઈ-૪૦૦૦૩૬, વાળાએ આ પુસ્તક પ્રકાશનનો લાભ લીધેલ છે.

મંત્રી,
પ્રાકૃત ગ્રંથ પરિષદ્
અમદાવાદ.

**પ્રાપ્તિસ્થાન :**
**દિપકભાઈ જી. દોશી**
કાપડના વેપારી
દેપાળાવાડ સામે, વઢવાણ સીટી-૩૬૩ ૦૩૦
ફોન : (૦૨૭૫૨) (ઓ.) ૨૪૧૧૫૨ પી.પી.
(રહે.) ૨૪૩૪૨૪ પી.પી.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## प्रकाशकीय

स्व. आगमप्रभाकर मुनिराज पू. पुण्यविजयजी म.सा. द्वारा संपादित 'दसकालियसुत्त' का पुनर्मुद्रण प्रकाशित करते हुए हमें आनंद अनुभव हो रहा है। प्राकृत ग्रन्थ परिषद् द्वारा ई.स. १९७३ में परिषद्ने इस ग्रन्थ का प्रकाशन किया था। पाँच वर्ष से अधिक समय से इस ग्रन्थ की सभी नकलें समाप्त हो गई थी। हम पुनर्मुद्रण करने के लिए आतुर थे किन्तु आवश्यक फंड के अभाव में प्रकाशन कार्य में विलंब हो रहा था। तदनन्तर प.पू.आचार्यश्री ओंकारसूरीश्वरजी के शिष्य पू. आचार्यश्री मुनिचंद्रसूरिजी म. ने ग्रंथ के पुनर्मुद्रण के लिए हमें लिखा और आपने प्रथम आवृत्ति में दिए हुए शुद्धिपत्रक अनुसार एक नकल में स्वयं शुद्धियाँ भी कर ली और अन्य भी अशुद्धियाँ दूर कर के ग्रंथ की वह नकल हमें भेजी। उन्ही की सहाय से एवं सुविशालगच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के समुदाय के **आचार्यदेव श्रीमद् विजयनरचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** की प्रेरणा से श्रीमती कुमुदबेन हसमुखलाल मोदी (मुंबई) की ओर से ग्रंथ प्रकाशन के लिए हमें रू. ६०,०००/- की सहाय मिली। साथ ही साथ एस. देवराज जैन वाले श्री शान्तिलाल जैन, चेन्नाई के प्रयत्नों से श्री चन्द्रप्रभु जैन नया मन्दिर ट्रस्ट, चेन्नाई की और से रू. ३५,०००/- की सहाय भी हमें प्राप्त हुई। इस तरह इस अमूल्य ग्रंथ के पुनर्मुद्रण के लिए सम्पूर्ण आर्थिक सहाय मिलने से हम यह कार्य संपन्न कर सके। उपरिनिर्दिष्ट प.पू.सूरिवरों एवं दोनो दाता ट्रस्टों के हम आभारी हैं।

पुनर्मुद्रणका कार्य सुचारु ढंग से पेश करने के लिए माणिभद्र प्रिन्टर्स के श्री के. भीखालाल भावसार को भी धन्यवाद।

**प्राकृत ग्रन्थ परिषद्** **- रमणीक शाह**

अहमदाबाद

ज्ञानपंचमी, ता. २९-१०-२००३

■

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्थविर श्री अगस्त्यसिंहगणिकृत दशवैकालिकसूत्रचूर्णि की ताडपत्रीयप्रति का आदि भाग ( जेसलमेरग्रन्थभण्डार, क्रमांक ८५(२), पत्र १७४वाँ )

उपर्युक्त ताडपत्रीय प्रतिका अंतिम भाग (पत्र ३४१-४२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# प्रस्तावना

## प्रस्तुत ग्रन्थ और उसके संपादक

इस ग्रन्थमें 'दसकालियसुत्त' और उसकी 'निर्युक्ति'–नामक टीका तथा उक्त दोनोंकी 'चूर्णि' नामक टीका मुद्रित हैं। 'दसकालियसुत्त' के कई संस्करण प्रकाशित हुए हैं। और उसकी 'निर्युक्ति' भी आचार्य हरिभद्रकी टीकाके साथ मुद्रित हो गई थी और एक चूर्णि भी प्रकाशित हो चुकी है[1]। किन्तु इस ग्रन्थमें जो 'चूर्णि' मुद्रित है वह प्रथमबार ही प्रकाशित हो रही है।

इसका संपादन पूज्यपाद मुनिराज श्री पुण्यविजयजीने किया है और वे ही इसकी विस्तृत प्रस्तावना लिखते किन्तु उनका स्वर्गवास ता. १४–६–७१ को हो गया अत एव उनके इस अधूरे कार्यकी पूर्ति मैं कर रहा हूं। ग्रन्थका मुद्रणकार्य भी कुछ अधूरा था उसे भी पूर्ण करना था जो पू. मुनिराजके दीर्घकालके साथी पं. अमृतलाल भोजकने किया, अत एव सोसायटीकी ओरसे तथा मेरी ओरसे मैं यहां उनका आभार मानता हूँ।

पूज्यपाद मुनिराज श्री पुण्यविजयजी प्राकृत टेक्स्ट सोसायटीके स्थापक ही नहीं थे किन्तु उसके प्राण भी थे। इस ग्रन्थके प्रकाशनके पूर्व भी 'अंगविज्जा' आदि महत्त्वपूर्ण छः ग्रन्थोंका संपादन सोसायटीके लिए उन्होंने बडे परिश्रमसे किया है। इतनाही नहीं किन्तु इसके बाद प्रकाशित होनेवाली 'सूत्रकृतांगचूर्णि'का भी संपादन उन्होंने ही किया है। वह भी आधेसे अधिक मुद्रित हो चुकी है। सोसायटीके लिए वे एक दृढ आधारस्तम्भ थे। ता. १४–६–७१ की रात ८–४५ बजे उनका स्वर्गवास हो जानेसे सोसायटीका आधारस्तम्भ अस्त हो गया। इससे सोसायटीकी जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना संभव नहीं है। सोसायटीकी स्थापनासे लेकर अब तक सोसायटीके विकासमें जो उनका प्रदान है वह अमर रहेगा।

इस ग्रन्थमें प्रथमबार ही मुद्रित स्थविर अगस्त्यसिंहकृत 'चूर्णि' की हस्तप्रतकी शोधका श्रेय भी पू. मुनिराजको है। इसकी प्रत जेसलमेरके भंडारमें थी और प्राच्यविद्यामंदिर, वडोदराद्वारा प्रकाशित सूचीपत्रमें (G. O. S. XXI) संख्यांक २५४ (२) में उस प्रतका निर्देश 'दशवैकालिक चूर्णि' नामसे है किन्तु वह अगस्त्यसिंहकृत है और उसका क्या महत्त्व है–इस ओर किसीका ध्यान नहीं गया था। पू. मुनिराजश्री जब ई. १९५० में जेसलमेर गये और जेसलमेरके हस्तप्रतसंग्रहोंका पुनरुद्धार किया तब अन्य कई ग्रन्थोंके साथ इस ओर भी उनका ध्यान गया और उनके द्वारा तैयार किये जेसलमेर भंडारके नये सूचिपत्रमें[2] उस हस्तप्रतका योग्यरूपसे उन्होंने संख्यांक ८५/२ में परिचय दिया है। उसके आदि–अन्त तथा प्रशस्ति भी नये सूचिपत्रमें मुद्रित किये हैं—पृ. २८।

श्रीनगर काश्मीरमें १९६१ अक्तूबरमें होनेवाले ओरिएन्टल कोन्फरंसके अधिवेशनमें जैनविभागके अध्यक्षपद के लिए लिखे गये अपने भाषणमें पू. मुनिजीने विद्वानों का ध्यान इस चूर्णिकी ओर दिलाया है–वह व्याख्यान 'ज्ञानाञ्जलि'[3] में मुद्रित है।

*

## संपादनमें उपयुक्त हस्तप्रत आदि

पूज्य मुनिराज श्री पुण्यविजयजीने जिन हस्तप्रतों आदिका उपयोग प्रस्तुत सम्पादनमें किया है उनका विवरण यहां दिया जाता है। इसका आधार उनके द्वारा लिखी गई कुछ नोंधें जो हमें प्राप्त हुई हैं वे तथा मुद्रित ग्रन्थ में जो संकेत मिलते हैं वे हैं।

### १ – दसकालियसुत्तं

अपा = अगस्त्यसिंहचूर्णिस्वीकृत पाठ

अचूपा = अगस्त्यसिंहकृतचूर्णिमें पाठान्तररूपसे निर्दिष्ट पाठ

खं १ = शान्तिनाथ जैनज्ञानभंडार, खंभात की यह ताडपत्रकी प्रत है। इसका परिचय उक्त भंडारके सूचिपत्रमें जो प्राच्यविद्यामंदिर, वडोदाने प्रकाशित किया है (VOL-135), स्वयं पू. मुनिराजश्रीने संख्यांक ७३ में दिया है। इसके पत्र ५७ हैं और समय विक्रम १३ वीं का पूर्वार्ध अनुमानित है।

---

१. इसे आ. हरिभद्रने वृद्धविवरण कहा है।

२. यह सूचीपत्र पूरा छप करके तैयार है। और वह पू. पाद मुनिराजश्रीके रहते ही पूरा छप भी गया है। वह ला. द. विद्यामंदिरसे प्रकाशित हो गया है।

३. प्राप्तिस्थान श्री महावीर जैन विद्यालय, अगस्त क्रान्तिमार्ग, बंबई–३६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खं २ = उक्त भंडारकी यह ताडपत्रीय प्रत है उसका संख्यांक ७४ है। उसके ६० पत्र हैं और उसका समय अनुमानसे विक्रमकी १४ वीं शतीका उत्तरार्ध है।

खं ३ = यह भी उक्त भंडारकी ताडपत्रीय प्रत है। और उसका संख्यांक ७५ है। इसकी पत्रसंख्या ५३ है। समय अनुमानसे विक्रम १४ वीं शतीका उत्तरार्ध है।

खं ४ = यह प्रत भी उक्त भंडारगत है। उसका संख्यांक ७६/१ है। उसके पत्र ७३ हैं, और समय अनुमानसे विक्रम १४ वीं शतीका उत्तरार्ध है[1]

जे = यह प्रत जेसलमेर भंडारगत हो सकती है। पू. मुनिराजजीने स्वयं एक नोंधमें यह लिखा है कि दशवैकालिकसूत्रकी-जेसलमेरकी प्रत के पाठान्तर मैने स्वयं लिए हैं। किन्तु जेसलमेरमें एकाधिक दशवैकालिकसूत्रकी हस्तप्रतें हैं। फिर भी जिसका उपयोग उन्होंने किया हो वह सूचीगत ८६ (३) संख्यांकवाली प्रत ही हो सकती है, क्यों कि यही ताडपत्रीय ऐसी प्रत है जो जेसलमेरकी दशवैकालिककी सब प्रतोंमें प्राचीनतम है इतनाही नहीं किन्तु उसमें लेखन सं. १२८९ भी दिया हुआ है। डो. शुब्रिंगकी आवृत्तिमें स्वयं पू. मुनिराजजीने J संज्ञा इस प्रतकी दी है जब कि प्रस्तुतमें सर्वत्र जे संकेत है।

बी = महिमा भक्तिज्ञान भंडार, बीकानेरकी यह प्रत है ऐसा सम्भव है। इसी संकेत बी का प्रयोग उन्होंने इसी भंडारकी एक अन्य प्रति जो अनुयोगद्वारसूत्रकी है, उसके लिए किया है। देखो नंदी-अनुयोगद्वारसूत्र, महावीर विद्यालय प्रकाशन, संपादकीय-पृ० ७

वृद्ध = इस संकेतका अर्थ है 'वृद्धविवरण' अर्थात वही मुद्रित पुस्तक जो 'दशवैकालिक चूर्णि' के नामसे श्री ऋ. के. श्वे० संस्थाने रतलामसे इ. १९३३ में प्रकाशित किया है। 'स्वयं आचार्य हरिभद्रजीने इस चूर्णिका 'वृद्धविवरण' के नामसे उद्धरण (दशवै० चूर्णि० पृ० २५२ से) अपनी दशवै० की वृत्तिमें पृ० २१७/१ में दिया है तथा दशवै० की सुमतिसूरिकृत टीकामें भी यही नाम दिया गया है—पृ० २१४'—ऐसा संकेत पू. मुनिश्रीने अपनी एक नोंध में किया है। अत एव उन्होंने प्रस्तुत संपादनमें उक्त चूर्णिके लिए 'वृद्धविवरण' नाम मानकर 'वृद्ध' ऐसा संकेत किया है।

वृद्धपा = पूर्वोक्त 'वृद्धविवरण' गत पाठान्तर.

शु = डॉ. लोयमान संपादित तथा डॉ. शुब्रिंगद्वारा अंग्रेजीमें अनूदित दसवेयालियसुत्त जिसे शेठ आणंदजी कल्याणजीकी पेढीने अहमदाबादसे इ० १९३२ में प्रकशित किया है। उस पुस्तक में जो पाठ स्वीकृत है उसे शु संज्ञा देकर प्रस्तुतमें निर्दिष्ट किया है।

शुपा = उक्त आवृत्तिमें टिप्पणमें जिन पाठान्तरोंका निर्देश किया है उनका निर्देश प्रस्तुतमें शुपा संकेतसे किया है।

हाटी = आचार्य हरिभद्रसूरिकृत दशवैकालिककी टीका जो—दे. ला. पु. फंडने १९१८ में प्रकाशित की है। उस टीकागत पाठका निर्देश हाटी संज्ञासे है।

## २—दसकालियनिज्जुत्ति

खं = संभवतः खंभातके शान्तिनाथ भंडारकी संख्यांक-७२ की यह प्रत है। इसी प्रतके आधार पर उन्होंने निर्युक्तिकी अपने हस्ताक्षरसे कॉपी की है। अत एव उसी के पाठान्तरोंकी नोंध प्रस्तुतमें खं संज्ञा से की हो यह संभव है। यही प्रत खंभातमें निर्युक्तियोंकी प्रतोंमें प्राचीनतम भी है। उन्होंने स्वयं अपने सूचिपत्रमें इसे अनुमानसे विक्रम १३ वीं शतीके पूर्वार्धकी बताई है।

पु = यह पू. मुनिराज श्री पुण्यविजयजीके संग्रहगत प्रत है। यह संग्रह ला. द. विद्यामन्दिर, अहमदाबादमें है।

बी = महिमा भक्तिज्ञानभंडारकी यह दशवैकालिकनिर्युक्तिकी प्रत हो सकती है।

---

१ खं १, २, ३, ४, प्रतोंके यहां दिये गये स्पष्टीकरण का आधार है डो. शुब्रिंगकी दशवैकालिक सूत्रकी आवृत्ति जिसमें स्वयं पू. मुनिजीने अपने हाथसे संशोधन किया है और अनेक हस्तप्रतोंके पाठांतरोंकी भी नोंध की है। उस पुस्तकमें 1C, 2C, 3C और 4C, ऐसे संकेत पाठान्तरोंके लिये किये हैं और वे प्रतियाँ खंभातकी हैं यह भी उनके सूचिपत्र गत संख्यांक के साथ वहां निर्दिष्ट है। दशवैकालिक मूलका जो संशोधन उन्होंने इस मुद्रितमें किया था उनके आधार पर ही प्रस्तुतमें दशवैकालिक संपादित करके चूर्णिके साथ उन्होंने छापा है। वहां C=Cambay रखा है, यहां खं = खंभात संकेत किया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**सा** = पूर्वोक्त दशवैकालिक की आचार्य हरिभद्रकी टीका में जो निर्युक्ति मुद्रित है - उसीकी संज्ञा सा है। आचार्य आनन्द-सागरजीने इसका संपादन किया था अत एव उसकी सा संज्ञा रखी है।

**हाटी** = दशवैकालिक की आचार्य हरिभद्रकृत टीकामें स्वीकृत पाठ

## ३ - स्थविर अगस्त्यसिंहकृत चूर्णि

**मूलादर्शे** = इसकी एकमात्र ताडपत्रकी प्रत जेसलमेरके भंडारमें उपलब्ध है। अत एव जहाँ उसमें संशोधन करना जरूरी लगा है वहाँ पूज्य मुनिराजश्रीने किया है और मूलप्रत का जो पाठ है उसे मूलादर्शे—इस संकेतके साथ टिप्पणमें दिया है। इस हस्तप्रत का विस्तृत परिचय पूज्य मुनिजीने अपने जेसलमेर-भंडारके नये सुचिपत्रमें पृ. २८ में क्रमांक ८५/२ में दिया है। इस हस्तप्रतका लेखनसमय दिया नहीं गया है। किन्तु वह १२ वीं विक्रमशतीके पूर्वार्धकी होनेका पू. मुनिजीने अपने जेसलमेरके सूचिपत्रमें निर्देश किया है। इस हस्तप्रतकी जो पट्टिका है उस पर जो लिखा है उससे यह प्रत आचार्य जिनदत्तसूरिकी होनेका प्रमाण मिलता है।

प्रतके अंतमें जो प्रशस्ति दी गई है उसमें यह बताया गया है कि—

पल्लिका पुरीमें धर्कटवंशीय शालिभद्रनामक श्रावक रहता था। उसकी बहुदेवी नामक पत्नी थी। साधारणनामक उनका पुत्र था। उसकी पत्नीका नाम शान्तिमती था उसके दो पुत्र हुए—पूर्णभद्र और हरिभद्र। शांतिमतीने अपने मोक्षके लिए इस प्रतका लेखन करवाया है।

यहां इस प्रतका फोटो छापा गया है।

*

## संपादनपद्धति

प्रस्तुतमें 'दसकालिय' 'निज्जुत्ति' और 'चुण्णि' जो मुद्रित हैं उनके संपादनकी पद्धति यह जान पडती है—जिन प्रतोंका तथा मुद्रित पुस्तकोंका उपयोग प्रस्तुत संपादनमें किया गया है उनका उल्लेख हो चुका है। उन सभीका उपयोग होते हुए भी दसकालिय और निज्जुत्तिके प्रस्तुत सम्पादनमें स्थविर अगस्त्यसिंहकृत चूर्णिकी एकमात्र प्रति जो मिली है उसको ही प्रधानता दी गई है। और यदि उसमें पाठ अशुद्ध नहीं है तो उसीके पाठ दसकालिय मूल और निज्जुत्तिमें स्वीकृत किये गये हैं।

मूलकी गाथाओमें जहां जिस प्रतमें न्यूनाधिकता देखी गई है या पाठान्तर उपलब्ध हुआ है, वहां उसका निर्देश टिप्पणोंमें दिया गया है। उनमें स्थविर अगस्त्यसिंहकी चूर्णिकी विशेषता भी दिखाई गई है।

स्थविर अगस्त्यसिंहकी चूर्णिकी तो एकमात्र हस्तप्रत उपलब्ध थी अत एव उसमें जहां अशुद्धि थी उसेही ठीक किया गया है और प्रतिका पाठ नीचे टिप्पणमें निर्दिष्ट कर दिया है। शेष संपूर्ण जैसाका तैसा पदच्छेद आदि ठीक करके छापा गया है।

प्रस्तुत सम्पादनमें मुख्यतः जिन हस्तप्रतोंका तथा मुद्रित पुस्तकोंका उपयोग किया गया है उसका विवरण संकेतके स्पष्टीकरणमें कर दिया है। किन्तु उसके अलावा भी कइ ग्रन्थोंका उपयोग पू. मुनिजीने किया है। तब जा कर पाठशुद्धि वे कर पाये हैं। अत एव यह नहीं समझना चाहिए कि पूर्वनिर्दिष्टके अलावा प्रस्तुत सम्पादनमें किसी ग्रन्थका उपयोग नहीं हुआ है।

टिप्पणोंमें चूर्णिके समान या असमान विवरण जो वृद्धविवरण, आचार्य हरिभद्रकी टीका तथा सुमतिसूरिकृत टीकामें देखा गया उसका भी निर्देश यत्र तत्र कर दिया है जिससे तीनों टीकाकारोंके समान-असमान मन्तव्योंको जाना जा सकेगा।

## दसकालियसुत्तं

**नाम** : अब तक जो इस ग्रन्थके संस्करण प्रकाशित हुए हैं उनमें संस्कृतरूप 'दशवैकालिक' और प्राकृतरूप 'दसवेयालिय' ग्रन्थके नामके लिए स्वीकृत हुए हैं और यह ग्रन्थ प्रायः इन्हीं नामोंसे पहचाना और छापा जाता है। किन्तु प्रस्तुत आवृत्तिमें पूज्य मुनिराजश्रीने इसे 'दसकालियसुत्तं' ऐसा जो नाम दिया है वह इस कारण कि उसकी निर्युक्तिमें जो नामके निक्षेप किए गए हैं वे 'दस' और 'काल' पदों के ही किये हैं अत एव उसका मुख्य नाम 'दसकालिय' ही सिद्ध होता है। आचार्य स्थविर अगस्त्यसिंहने भी मुख्यरूपसे प्रारंभमें यही नाम स्वीकृत किया है—देखें मंगलाचरण तथा पृ० १ पं० ३, २. ११, १४; ३. १८, २१; ६. २४; २३० इत्यादि। साथ ही 'अथवा' कह कर 'दसवेकालिय' और 'दसवेतालिय' भी स्वीकृत किया है—पृ० ३, ५, २४४, २४५ इत्यादि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किन्तु उसे गौण समझना चाहिए। अत एव इसका मुख्य नाम 'दसकालिय' है जो यहां प्रस्तुत संस्करणमें पूज्य मुनिराजद्वारा यथार्थ रूपसे स्वीकृत किया गया वह उचित ही है। इसका एक नाम विधिसूत्र भी है—निशीथभाष्य गा० ८८१।

**बाह्यस्वरूप** : यह दश अध्ययन और दो चूलिकामें समाप्त होता है। उसके नामसे ही स्पष्ट है कि इसमें मूलमें दश ही अध्ययन हैं और दो चुलाएं इसमें जोडी गई है। यह चुलिका नामसे ही सिद्ध होता है। निर्युक्तिकारने इन चूलाओंको सूत्रार्थका संग्रह करनेवाली संग्रहणीरूप उत्तरतंत्र कहा हैं—नि० गा० २५८।

यह ग्रन्थ पद्यप्रधान है। कुछ ही सूत्र ऐसे हैं जो गद्य में है। डो. शुब्रिंगकी आवृत्ति, आचार्य हरिभद्रकी टीकासह आवृत्ति, और स्थविर अगस्त्यसिंहकी चूर्णिसह आवृत्तिमें जो गाथाओंकी संख्या है वह इस प्रकार है।

| डो० शुब्रिंग | | आचार्य अगस्त्य० | आ० हरिभद्र० |
|---|---|---|---|
| अ० १ | ५ | ५ | ५ |
| अ० २ | ११ | ११ | ११ |
| अ० ३ | १५ | १५ | १५ |
| अ० ४ | २८ | २८ | २८[१] |
| अ० ५–१ | १०० | ११६[२] | १०० |
| ५–२ | ५० | ४७[३] | ५० |
| अ० ६ | ६९[४] | ६८ | ६८ |
| अ० ७ | ५७ | ५६[५] | ५७ |
| अ० ८ | ६३ | ६३[६] | ६४[६] |
| अ० ९–१ | १७ | १७ | १७ |
| ९–२ | २३ | २३ | २३ |
| ९–३ | १५ | १५ | १५ |
| ९–४ | ७ | ७ | ७ |
| अ. १० | २१ | २१ | २१ |
| चू. १ | १७[७] | १७ | १८ |
| चू. २ | १६ | १६ | १६ |

इस सूचीसे स्पष्ट हो जाता है कि प्रस्तुत अगस्त्यसिंहकी चूर्णिमें गाथाओंकी संख्यामें विशेषरूपसे पांचवें अध्ययनके प्रथम उद्देशमें गाथाओंकी विशेष अधिकता पाई जाती है। और वह भी अन्यत्र जो संग्रहणी गाथा है उसीका विस्तार होनेसे है। इससे यह निश्चित किया जा सकता है कि पुरानी पद्धतिके अनुसार विस्तृत करके कहनेकी शैलीका संग्रहणीमें संक्षेप है। विस्तारके स्थान पर संग्रहणी गाथाका आना यह सिद्ध करता है कि अगस्त्य चूर्णिका पाठ अन्य चूर्णिटीकाओंके पाठसे प्राचीन है। अगस्त्यसिंहकी चूर्णिकी प्राचीनताका यह भी एक प्रमाण है।

**आन्तरस्वरूप** : इस ग्रन्थमें भिक्षुओंके धर्ममूलक आचारका निरूपण है। खासकर निर्ग्रन्थ मुनिओंके आचारके नियमोंका विस्तारसे निरूपण इस सूत्रमें है। उसमें संयम ही केन्द्रमें है। वह भिक्षु यदि संयत है तो जीवहिंसासे बचकर किस प्रकार अपना संयमी जीवन धैर्यपूर्वक बितावे इसका मार्गदर्शन इसमें है। अतएव भिक्षुके महाव्रत तथा उसके आनुषंगिक नियमोंका वर्णन विस्तारसे करना अनिवार्य हो जाता है। यही कारण है कि इसमें पांच महाव्रत और छठा रात्रिभोजनविरमण व्रतकी चर्चा की गई है। संयमका मुख्य साधन शरीर है और शरीरके लिए भोजन अनिवार्य है। वह भिक्षासे ही संभव है। अत एव किस प्रकार भिक्षा ली जाय जिससे देनेवालों को तनिक भी

---

१. डो. शुब्रिंग और आचार्य हरिभद्रवृत्तिमें नं–२७ के बाद एक प्रक्षिप्त गाथा छापी गई है।

२. अन्यत्र संग्रहणी रूप दो गाथासे काम लिया गया, जब यहां विस्तार है—देखे पृ. १०८ टि. ६

३. गा. १० के स्थानमें अन्यत्र दो गाथाएं हैं—देखो पृ. १२७ टि. ९। गा. संख्याकी कमी के लिए यह भी कारण है कि गाथा २१२ वीं तीन पंक्तिकी है। ओर भी देखो—पृ. १२९ टि. १ और ४ तथा पृ. १३५ टी. ४

४. शुब्रिंगकी गा. नं–८ को प्रस्तुत में और आचार्य हरिभद्रने निर्युक्तिकी बताया है

५. प्रस्तुतमें गा. ८—९ के स्थानमें अन्यत्र तीन गाथाएं है—देखो पृ. १६६ टि. ६।

६. आ. हरिभद्रकी गा. ३५ को डॉ. शुब्रिंगने प्रक्षिप्त मानी है। देखो प्रस्तुत में पृ. १९३ टि. ५

७. गा. ६ के बाद की एक गाथा को डॉ. शुब्रिंगने प्रक्षिप्त माना है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कष्ट न हो—और भिक्षुको—योग्य भिक्षा भी मिले यह कहा गया है। जीवमें समभावकी पुष्टि अनिवार्य मानी गई है जिससे मनोवांछित भिक्षा न भी मिले तब भी क्लेश मनमें न हो तथा अच्छी भिक्षा मिलने पर रागका आविर्भाव न हो यह जीवनमंत्र दिया गया है। संयत पुरुषकी भाषा कैसी हो—जिससे किसीके मनमें उसके प्रति कभी भी दुर्भाव न हो यह भी विस्तारसे प्रतिपादित किया गया है। यह तभी संभव है जब उसमें आचारशुद्धि हो अर्थात् कषाय-राग-द्वेष आदिसे मुक्त होनेका जागरूक प्रयत्न हो, अहिंसा हो दयाभाव हो और अपने शरीरके कष्टोंके प्रति उपेक्षा हो। लेकिन आचारशुद्धिका मुख्य कारण सुगुरुकी उपासना भी है अत एव विनयका विस्तारसे वर्णन इसमें किया गया है। अन्तमें सबका सार देकर सच्चा भिक्षु कैसा हो यह संक्षेपमें वर्णित है।

इस सूत्रमें दो चूलिका भी जोडी गई हैं। उनका उद्देश भिक्षुको अपने संयमी जीवनमें दृढ रहनेका उपदेश देना-यह है। अर्थात् ही इसमें गृहस्थ जीवनकी हीनता और संयमीजीवनकी उच्चताका प्रतिपादन अनिवार्य हो गया है।

इस प्रकार संयमी जीवन के अनेक प्रश्नोंको लेकर इस ग्रन्थमें निरूपण होने से इसी सूत्रसे नये भिक्षुका पठनक्रम शुरू होता है। इसे भिक्षु जीवनकी प्रथम पाठ्य पुस्तक कहा जाय तो अनुचित नहीं होगा।

## दसकालियके कर्ता

'दसकालिय' सूत्रके कर्ता कौन थे इसका संकेत हमे निर्युक्तिकी अन्तिम गाथा से मिलता है जहाँ यह सूचित किया गया है कि मनकके समाधिपूर्वक मरणके अनन्तर (गा० २७०) 'सिज्जंभव थेरने आनन्दाश्रुपात किया तब जसभद्दने (कारण) पूछा। उसके उत्तरमें स्थविरने जो कहा उसीकी विचालना (विआलणा) संघमें हुई' (गा० २७१)। यहां 'विआलणा' पदका स्पष्टीकरण करते हुए स्थ० अगस्त्य-सिंहने कहा है कि 'मनक' अपना पुत्र है इस बात को सेज्जंभवने छुपाकर इसलिए रखा था कि गुरुपुत्र समझकर उसका अन्य शिष्यसमुदाय अनावश्यक आदर न करे। जब अंतमें पता चला तब यह कथाका प्रचलन संघ में हुआ कि मनक शय्यंभवका पुत्र है। इससे यह परंपरा स्थिर हुई है कि सिज्जंभवने इस ग्रंथ की रचना मनकके लिए की थी। इसमें तो संदेह नहीं कि मनकके लिए यह ग्रन्थ 'णिज्जूढ' किया गया था क्यों कि स्वयं निर्युक्तिमें प्रारंभमें ही (गा० ७) यह कहा गया है—'एयं किर णिज्जूढं मणगस्स अणुग्गहट्ठाए' और उपसंहारमें भी कहा गया है कि 'आर्य मनकने छ मासमें इसे पढा। उसका (दीक्षा) पर्याय छ मासका ही था और वह समाधिपूर्वक कालगत हुआ। (नि० गा० २७०)

निर्युक्तिमें मनक और सिज्जंभवका क्या संबंध था इसकी कोई सूचना नहीं है। यह स्पष्टीकरण सर्वप्रथम हमें अगस्त्यसिंहकृत चूर्णिमें ही मिलता है।[1] वह इस प्रकार है (पृ० ४)—

'भगवान वर्धमानस्वामीके बाद क्रमशः सुधम्म, जंबु और पभव हुए। पभवको चिन्ता हुइ कि परम्पराको कायम रखनेवाला गणधर कौन हो? उन्होंने अपने गणमें तथा गृहस्थोंमें उपयोग लगाया और देखा कि यज्ञकर्ममें दीक्षित राजगृहका एक ब्राह्मण सेज्जंभव इस पदके योग्य है। राजगृह जाकर उन्होंने अपने संघाडेके भिक्षुओं को कहा कि यज्ञवाडमें भिक्षाके लिए जाकर धर्मलाभ दो। वह तुम्हे मानेगा नहीं। तब इतना ही कहो कि तुम तत्त्वको नहीं जानते। भिक्षुओंने ऐसा ही किया। सेज्जंभवने सोचा कि ये तपस्वी भिक्षु जूठ तो बोलेंगे नहीं। अत एव उसने अपने अध्यापक से पूछा 'तत्त्व क्या है?' उत्तर मिला-'वेद तत्त्व है'। तब उसने तलवार खींच कर गुरुसे कहा यदि नहीं कहोगे तो मस्तक काट दूंगा। तब कहीं गुरुने सत्वर बताया कि तत्त्व तो आर्हत धर्म ही है। जिससे इस यज्ञयूपके नीचे रखी गई आर्हत की रत्नमयी प्रतिमाकी वेदमन्त्रों द्वारा स्तुति की जाती है। सुनकर वह पभवके पास जाकर धर्म सुनकर दीक्षित हो गया और स्वाध्याय करके चतुर्दशपूर्वी हो गया। जब उसने दीक्षा लीथी तब उसकी पत्नी गर्भवती थी और लोगोंके पूछने पर बताया था कि 'मणाग' अर्थात् 'छोटा' है। पुत्रके जन्म होने पर उसका नाम उसी उत्तर के आधार पर 'मणग' रखा गया। मणग जब आठ वर्षका हुआ तब उसने मातासे पूछा कि मेरा पिता कौन है? माताने उत्तर दिया कि उन्होंने श्वेतपटकी दीक्षा ली हैं। तब पुत्र घरसे भागकर पिताकी शोधमें निकला। उन दिनों आचार्य (सेज्जंभव) चंपामें विहार करते थे। आचार्य शौचके लिए जा रहे थे वहां रास्तेमें मिलन हुआ। दोनोंमें परस्पर स्नेह हुआ। आचार्यके पूछने पर उसने उत्तर दिया कि मैं राजगृहसे आ रहा हूं, मेरे पिता का नाम सेज्जंभव ब्राह्मण है। और वे दीक्षित हो गए हैं। मैं भी दीक्षा लेना चाहता हूं। क्या आप मेरे पिताको जानते हैं? आचार्यने उत्तर दिया कि हां मैं जानता हूं। वे तो मेरे मित्र थे और मेरे शरीर जैसे थे। मेरे पास ही तुम दीक्षा ले लो। तुम अपने पिताको भी देखोगे। उसने दीक्षा ले ली। आचार्यने अपने ज्ञानसे देखा कि मनकका आयु तो छ मास ही है। उनको चिन्ता हुई कि वह आचारादि ग्रन्थोंको जो समुद्र जैसे विशाल हैं कैसे पूरा करेगा? वह सिद्धान्तके परमार्थको बिना जाने ही मरेगा। अत एव उन्होंने सोचा कि अब क्या किया जाय? उन्होंने मनमें सोचा कि अन्तिम चतुर्दशपूर्वी तो-अवश्य निज्जूह करते हैं और अन्य चतुर्दशपूर्वी किसी कारण वश। तो मेरे समक्ष इसका अनुग्रह करना

---

१ आचार्य हरिभद्रकी टीकामें प्रारम्भ में ही कुछ निर्युक्तिगाथाएँ हैं जो प्रस्तुतमें नहीं हैं। और उनमें यह निर्देश हैं कि सेज्जंभवने यह निज्जूढ किया है (गा० १२) और यह भी कहा है कि वे मनकके पिता थे (गा० १४)। ये गाथाएँ बादमें जोडी गइ हैं—यह निश्चित है। क्यों कि वृद्धविवरणमें भी ये गाथाएँ नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यह कारण तो है तो मैं भी क्यों न निज्जूह करूं। ऐसा सोचकर उन्होंने निज्जूह करना प्रारंभ किया और विकाल-संध्यासमय होते होते उन्होंने दस अध्ययनों को निज्जूह कर लिया। अत एव ये दसवेयालिय कहलाये।''

इस कथासे यह स्पष्ट होता है कि आचार्य सेज्जंभवने ही इन दश अध्ययनोंका संग्रह किया है। 'निज्जूह' शब्दका अर्थ है बाहर निकालना। तात्पर्य होगा-सार तत्त्वको- खींचलेना। अर्थात् ही सिद्धान्त ग्रन्थोंकी राशिसे सारभूत बातोंका संग्रह सेज्जंभवने किया। अत एव यह स्वाभाविक है कि इसमें शब्दतः और अर्थतः आचारांग आदि ग्रन्थोंका सार रखा गया है[२]। स्थ. अगस्त्यसिंह द्वारा स्पष्ट की गई यह परंपरा आगे के सभी टीकाकारोंने मान्य रखी है।

सिज्जंभव या सेज्जंभवका संस्कृत रूपान्तर शय्यंभव ऐसा ही सभी टीकाकारों और अन्य लेखकोंने किया है किन्तु डो. शुब्रिंगने इसे 'स्वयंभू' शब्दके साथ जोडा है। (प्रस्ता. पृ. ४ टि. १) तथा 'स्वयंभू' शब्दसे बननेवाला 'स्वायंभव' रूपसे वह निकलता है-ऐसा संभव माना है-डॉक्ट्रीन ओफ ध जैनास-पृ. ४४

सेज्जंभव, पट्टावलीमें जैसा कि निर्दिष्ट है वीरनिर्वाण सं. ७५ से ९८ तक युगप्रधान बने रहे। अत एव तदनुसार दशवैकालिककी रचना परंपराके अनुसार विक्रमपूर्व ३९५ से ३७२ के बीच हुई ऐसा कहा जा सकता है। आधुनिक विद्वानोंका मत इससे भिन्न है। उनके मतसे वीरनिर्वाणके समयमें करीब ६० वर्षका अंतर है। ऐसी स्थितिमें विक्रमपूर्व ३३५ से लेकर ३१२ के बीच हुई ऐसा मानना चाहिए।

## दसकालियका आधार

'दसकालिय' निज्जूढ है तो उसका आधार क्या था इसकी चर्चा निर्युक्तिमें की गई है। तदनुसार आत्मप्रवादपूर्वसे धम्मपण्णत्ति (अ० ४), कर्मप्रवादपूर्वसे पिण्डैषणा (अ० ५), सत्यप्रवादपूर्वसे वाक्यशुद्धि (अ० ७) और शेष अध्ययनको निज्जूढ किया गया है (प्रत्याख्यान नामक) नवमपूर्वकी तृतीयवस्तुसे (नि० गा० ५-६)। आधारके विषमें यह एक मत है। किन्तु इस विषयमें एक अन्य मतका भी निर्देश निर्युक्तिमें किया गया है कि द्वादशांग गणिपिटकसे मनकके अनुग्रहके लिये यह निज्जूढ किया गया है (नि० गा० ७)।

स्थविर अगस्त्यसिंहने इसके विषयमें अपना कोई मत दिया नहीं है। दोनोंका निर्युक्तिके अनुसार निर्देशमात्र कर दिया है। केवल एक विषयकी चर्चा की है कि कर्मप्रवाद तो कर्मविषयक है तो उसके साथ पिंडैषणाका क्या सम्बन्ध? उत्तर दिया है कि अशुद्ध पिण्डके ग्रहणसे कर्मबन्ध होता है इसका प्रमाण प्रज्ञप्ति (भगवती) में भी मिलता है अतएव संबंध है ही।

यहां जो दो मान्यताएं दी गई हैं उनका कारण आगम या श्रुतकी रचनाके विषयमें जो दो मान्यताएं हैं, वह हो तो कोई आश्चर्य नहीं। एक मान्यता तो यह है जिसका निर्देश बृहत्कल्पभाष्य (गा० १४५) तथा विशेषावश्यकभाष्य (५४८) में किया गया है कि समग्रवाङ्मयका समावेश दृष्टिवादमें होता है फिर भी उसमेंसे मन्दबुद्धि तथा स्त्रीकी अपेक्षा से अंग-अनंगकी रचना की जाती है। दूसरी मान्यता वह है जो आचारांगकी निर्युक्तिमें उपलब्ध है जिसके अनुसार सभी तीर्थंकरों द्वारा तीर्थप्रवर्तनके प्रारंभमें आचारका ही उपदेश दिया जाता है और शेष ग्यारह अंगकी रचना क्रमशः होती है। (आचा० निं० ८)

आवश्यकनिर्युक्तिमें केवल इतना ही कहा गया है कि तीर्थंकर संक्षेपमें अर्थ बताते हैं उसके आधारसे गणधर सूत्रोंकी रचना करते हैं (आव० नि० गा० ९२; = विशेषा० गा० ११११६)। उसके भाष्यमें स्पष्ट किया है कि उसी अर्थ को लेकर गणधर द्वादशांगकी रचना करते हैं (विशे० गा० १११५-११२३), इससे यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन मान्यता इतनी ही थी कि गणधर सूत्रोंकी रचना करते हैं वे सूत्र कौन थे यह क्रमशः स्थिर हुआ। 'पूर्व' नामक साहित्य जो भ. महावीरको भी विरासतमें मिला होगा। उसीके आधार पर श्रुतकेवली या बहुश्रुतके लिये पूर्वधर या चतुर्दशपूर्वी ये शब्द प्रचलित हुए। सूत्रग्रन्थोंमें गणिपिटकके रूपमें द्वादशांगी की मान्यता जब स्थिर हुई तब माना गया कि बारहवें अंगमें पूर्वोका समावेश है। बारह अंगकी मान्यता कालक्रमसे स्थिर हुई है—इसमें संदेह नहीं क्यों कि व्यवहारसूत्रमें जहां स्वाध्यायका प्रकरण है वहां द्वादशांगमें समाविष्ट कुछ ही ग्रन्थोंका निर्देश है। ऐसी स्थितिमें प्राधान्य पूर्वोको दिया जाय या द्वादशांगको—यह एक समस्या बनी रही। यही कारण है कि जब दशवैकालिकके आधारको खोजा गया तब एक मतसे पूर्व और दूसरे मतसे द्वादशांगीको माना गया।

शास्त्रीय चर्चामें जिसे भी आधार माना जाय वह केवल शास्त्रीय परंपरा ही रहेगी किन्तु उपलब्ध जैनश्रुतमें दशवैकालिकका आधार क्या हो सकता है इसकी खोज तो आधुनिक विद्वान ही कर सकते हैं। डो. शुब्रिंग, डो. घाटगे तथा प्रो. पटवर्धनने[३] इस विषयमें जो चर्चा की है उसीसे यहां संतोष माना जाता है।

---

१. अंतिम दो चूलिकाएँ भी आ. सेज्जंभवकृत हैं-ऐसा स्वयं स्थविर अगस्त्यसिंहने माना है, वह इस निर्देशके साथ कैसे संगत है-यह विचारणीय है।

२. विद्वानोंने इसकी तुलना आचारांग और उत्तराध्ययनसे विशेषरूपसे की भी है। देखो कापडिया, Canonical Literature of Jainas, 156-157 pp.

३. The Daśavaikālikasūtra : A Study (in two parts 1933, 1936)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## दसकालियनिज्जुत्ति—

**निर्युक्तियाँ**—आचार्य भद्रबाहुने दश निर्युक्तियाँ लिखी हैं। उनमें एक दसकालिय निज्जुत्ति भी है। निर्युक्तिका प्रयोजन बताते हुए आचार्य भद्रबाहुने स्पष्टीकरण किया है कि ये निर्युक्तियाँ आहरण=दृष्टांत, हेतु, कारण=उपपत्तिका संक्षेपमें प्रदर्शनपूर्वक की जायँगी[1]। स्पष्ट है की निर्युक्तिके समय उपदेशमें आगमका प्राधान्य नहीं रहा। उसका स्थान क्रमशः अनुमान और तर्कने ले लिया था। यही कारण है की तत्कालीन सभी धर्मों और दर्शनोंने अपने अपने शास्त्र–आगम प्रतिपादित तथ्यों के लिए दलीलें देना शुरू कर दिया था। उस प्रवाहसे मुक्त रहना जैन विद्वानों के लिए भी संभव नहीं रहा। अत एव अपने आगमगत तथ्यों के लिए अनुमान और उपपत्ति देना शुरू कर दिया। उस प्रवाहपतनका प्रारूप हमें निर्युक्तिओंमें, खास कर प्रस्तुत दसवेयालियकी निर्युक्तिमें मिलता है जहां अनुमान विद्याका प्रवेश[2] ही नहीं है बल्कि उसका विविध प्रश्नोंमें प्रयोग भी है[3]।

निर्युक्तिकी एक विशेषता यह भी है कि उसमें किसी भी शब्द की व्याख्या प्रायः नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव इन निक्षेपों के द्वारा की जाती हैं[4]। परिणामस्वरूप एक ही शब्द किन किन विविध अर्थोंमें प्रयुक्त होता है यह ज्ञात हो जाता है। उपरांत इस शब्दके जो एकार्थक पर्यायवाची शब्दांतर होते है उन्हें भी दे दिया जाता है[5]। इस प्रकार ये निर्युक्तियाँ प्राकृत और संस्कृत भाषा के कोषोंके लिए उत्तम साधन बन गया है। खेद है कि भारतीय कोषकारोंका इस ओर विशेष ध्यान नहीं गया है। इस दृष्टिसे आचार्य भद्रबाहुकी निर्युक्ति ही नही किंतु उसके जो अनेक भाष्य और चूर्णि बने हैं उनका भी विशेष अध्ययन जरूरी है।

जैनोंकी एक अपनी विशेषता यह भी है कि किसी भी वस्तुके जो अनेक प्रकार और उपप्रकार होते हों उन्हें भी बता देना। इस विशेषताका विशेषरूपसे प्रदर्शन निर्युक्तिमें पाया जाता है जहां वस्तुके भेदानुभेद गिनानेका प्रयत्न किया गया है। प्रस्तुत निर्युक्तिमें भी यह विशेषता स्पष्टरूपसे ज्ञात होती है।[6]

निर्युक्तिकी एक अन्य विशेषता यह भी है कि किसी भी प्रतिपाद्य विषयको स्पष्ट करनेके लिए कथानकोंका प्रयोग करना। ये कथानक मूलनिर्युक्तिमें केवल सूचित किये जाते हैं[7] जिनका विस्तार भाष्य और चूर्णिमें देखा जा सकता है। इसके कारण ये निर्युक्तिय प्राचीन लोककथा और शिष्टकथाओंके भंडाररूप बन गई हैं जिनका इस दृष्टिसे अध्ययन अभी शेष ही है।

निर्युक्तिके कर्ता चतुर्दशपूर्वी भद्रबाहु हैं या अन्य यह भी एक चर्चाका विषय बना हुआ है। पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीने यह तो निश्चित कर दिया है कि विद्यमान निर्युक्तिओंके कर्ता चतुर्दशपूर्वी भद्रबाहु नहीं हो सकते।[8] यह संभव अवश्य है कि विद्यमान निर्युक्तिओंमें प्राचीन निर्युक्तिओंका संग्रह किया गया हो।

यदि प्रस्तुत निर्युक्तिको देखा जाय तो पू. मुनिजीके उक्त अभिप्रायकी पुष्टि होती है। गा० ५५ में स्पष्टरूपसे निर्युक्तिकारने कहा है कि यहां जो व्याख्या की गई है वह संक्षिप्त है। इसका विशेष अर्थ तो जिन और चतुर्दशपूर्वी कहते हैं। इससे फलित यह होता है कि प्रस्तुत निर्युक्तिके कर्ता न तो जिन हैं और न चतुर्दशपूर्वी। अत एव वे चतुर्दशपूर्वी भद्रबाहु तो हो ही नहीं सकते। अन्य भद्रबाहु हो सकते हैं।

निर्युक्तिके समयके विषयमें इतना ही कहा जा सकता है कि उसका प्रस्तुत संग्रह या रचना आचार्य जिनभद्र और उनसे भी पूर्व में होनेवाले बृहत्कल्पके भाष्यके रचयिता संघदास गणि के पूर्व है। आचार्य जिनभद्र ई० ६०९ में जीवित थे। ऐसी स्थितिमें निर्युक्तिकी रचना ई. ५७५ से पूर्वही कभी हुई एसा माना जाय तो उचित होगा।

पूज्य मुनिजी के अनुसार तो निर्युक्तियां आगम वाचनाके बाद लिखी गई हैं। यह वाचना भगवान महावीर के निर्वाणके बाद ९८० अथवा ९९३ में हुई ऐसा माना जात है।[9] तदनुसार सामान्य तौरपर यह कहा जा सकता है कि विक्रमकी छठी शतीके प्रारंभके बाद ये निर्युक्तियां बनी हैं।

---

१. आनि० ८४–८६ = विशेषा. १०७१–७३।
२. दनि० २२–२५, ५४
३. दनि० २६–२९
४. प्रस्तुतमें देखें दनि० १, ३, १२, १७, ६८ इत्यादि।
५. दनि० १४, २४, ६५, ६६ इत्यादि।
६. दनि० १८–२०; २५; ६९–७२; ७४–८१; ९२–११४ इत्यादि
७. दनि० २५ और उसकी चूर्णिमें उदाहरणों के प्रकारोंका निरूपण है। प्रस्तुतमें कथाओंकी ऐसी सूचना नहीं मिलती किन्तु अन्य निर्युक्तिमें यह पद्धति देखी जाती है जैसे आवश्यक नि० गा० १४१, १४२, १४६, १४७, ६७१–२ इत्यादि
८. बृहत्कल्पभाष्यप्रस्तावना; ज्ञानांजलि पृ० ५७ (गुजराती)
९. कल्पसूत्र – १४७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य मुनिजीने विशेषरूपसे निर्युक्तिका समय निर्धारित किया है और कहा है कि निर्युक्तिकर्ता भद्रबाहु ये वराहमिहिर के भाई थे। और वराहमिहिर की पंचसिद्धान्तिकाका समय विक्रम सं. ५६२ निश्चित है। ऐसी स्थितिमें विक्रम छठी शती ही निर्युक्तिका समय निश्चित किया जा सकता है[१] एक ओर भाष्य की अपेक्षा लेकर निर्युक्तिका समय वि. ६३१ (ई. ५७५) से पूर्व है और दूसरी ओर वराहमिहिरके समय की अपेक्षा वि. ५६२ (ई० ५०६) आसपास है। अत एव यह कहा जा सकता है कि निर्युक्तिका समय ई० छठी शतीका प्रारंभ है।

**दश० निर्युक्तिकी गाथाएँ**—दशवैकालिक निर्युक्तिकी गाथाओंकी संख्या कितनी है यह जानना जरूरी है। आचार्य हरिभद्रके अनुसार अर्थात् आचार्य हरिभद्रकृत टीकाकी मुद्रित आवृत्तिके अनुसार गाथासंख्या ३७१ है। स्थविर अगस्त्यसिंहकृत चूर्णिमें गाथासंख्या २७१ है। यहाँ यह स्पष्ट करना जरूरी है कि प्रस्तुत संपादनमें पूज्य मुनिश्रीने ग्रन्थ छप जानेके बाद गाथा. नं. २ को निर्युक्तिकी-नहीं माना हैं-अत एव उसे काट दिया है। गाथासंख्यांक १२९ तथा २२९ दियाही नहीं गया—इस प्रकार तीन गाथाओंकी कमी हुई। अतएव २७१–३ = २६८ गाथासंख्या वस्तुतः हुई। किन्तु गाथासंख्यांक २१० दोबार मुद्रित है अतएव पू. मुनिजीके अनुसार स्थ. अगस्त्यसिंह की चूर्णिमें २६८ + १ = २६९ गाथाएँ हैं—यह फलित होता है। इस दृष्टिसे आचार्य हरिभद्रकी वृत्तिके संस्करणमें १०२ गाथाएँ अधिक हैं-ऐसा मानना चाहिए।

यहाँ आ. हरिभद्र और स्थ. अगस्त्यकी गाथाओंकी समीकरणसूची दी जाती है। उसे देखने से पता चलता है कि-प्रारंभ में ही आचार्य हरिभद्र में कुछ गाथाएँ जोडी गई हैं। आ० हरिभद्रकी वृत्तिमें स्थ० अगस्त्यसिंह संमत गा० ३०, ३१, १२२–१२४, १२७–१२८, १३०, १३१, १३५, १३६, १४३ और १४६ निर्युक्तिगाथाओंको भाष्यकी मानी गई हैं। दो गाथाएं ऐसी हैं जिन्हें आचार्य हरिभद्रमें प्रक्षिप्त माना गया है किन्तु स्थ० अगस्त्यमें वे निर्युक्ति की हैं गा० ४४, ६४। स्थ० अगस्त्यमें ऐसी भी कुछ गाथाएँ हैं जो आ० हरिभद्रमें नहीं हैं—गा० १३८ २६२ और २६७। इनमें से गा० १३८ के विषयमें आचार्य हरिभद्रने "वृद्धास्तु व्याचक्षते" कह कर वह गाथा अपनी वृत्तिमें उद्धृत की है और वृद्धव्याख्या भी दे दी है नि० गा० २२८ हरि०। यह व्याख्या इतः पूर्व मुद्रित दशवैकालिकचूर्णिमें उपलब्ध है—दशवै० चू० पृ० १२९। और उसमें प्रस्तुत गाथाको निर्युक्तिकी माना है।

आचार्य हरिभद्रमें जो अधिक गाथाएँ हैं उनमें से कुछके विषयमें थोडा विचार करना जरूरी है। साथकी सूची देखनेसे पता लगता है कि आ० हरिभद्रमें प्रारंभमें ही[२] प्रायः अधिक गाथाए पाई जाती हैं। आचार्य हरिभद्रने प्रारंभमें जो गाथाएँ दी हैं उनको देखनेसे पता चलता है कि उनमें प्रथम मंगलगाथा है और शेष दशवैकालिकके अनुयोगके विषयमें उत्थानिकाकी सूचक गाथाएँ हैं। आ. भद्रबाहुने समग्रनिर्युक्तिओंका मंगल और उत्थानिका आदि आवश्यकनिर्युक्ति में दे ही दिया है। तदनुसार अन्यत्र भी समझलेना जरूरी है। अतएव आचार्य अगस्त्यसिंहमें और इतःपूर्व मुद्रित चूर्णिमें इसके लिए स्वतन्त्र गाथाएँ देखी नहीं जाती। किन्तु आचार्य हरिभद्रने इसे स्वतंत्र निर्युक्ति मानकर मंगलआदिकी पूरक गाथाएँ प्रक्षिप्त की हो तो आश्चर्य नहीं है। आ० हरिभद्रकी गाथा नं. १० वस्तुतः पाठान्तर के साथ निशीथभाष्यमें गा० ३५४५ उपलब्ध है अतएव वह निर्युक्तिकी नहीं हो सकती।

आ. हरिभद्रकी गाथा नं. १२ संपूर्तिरूप है। किन्तु गा. १४ तो निश्चितरूपसे आ. हरिभद्रकृत ही हो सकती है—उसमें सेज्जंभवको नमस्कार किया गया है। ये दोनों गाथाएँ भी पूर्वमुद्रित चूर्णिमें नहीं हैं। गा० १५ पुनरुक्त बनती है और वह भी अन्यत्र नहीं है। गा० १९ और २५ संपूर्तिरूप स्पष्ट है। यह गाथा नं० २५ प्रस्तुमें मुद्रित है (पृ० ६) किन्तु उसे निर्युक्ति गाथा माना नहीं गया है। वह उपसंहारात्मक गाथा है और वह पूर्वमुद्रित चूर्णिमें भी प्राप्त होती है। दोनों चूर्णिओंमें इसकी व्याख्या नहीं की गई। आ० हरिभद्रकी गा० २६–३३ भी संपूर्तिरूप हैं। गा० २७ विशेषावश्यक में उपलब्ध है—विशे० ९५३। गा० २८ भी विशेषावश्यक की गा० ९५४ का दशवै० के अनुरूप रूपान्तर है। गा० २९ भी अनुयोगद्वार में गा० २९ है। तथा वह उत्तराध्ययनकी निर्युक्ति गा० ६ है। गा० ३० उत्तराध्ययननिर्युक्ति गा० ७ है। तथा गा० ३१ भी उत्तरा० नि० गा० ८ है। वह अनुयोगद्वारमें भी उपलब्ध है—गा० १२६, पृ० १९७। गा० ३२ उत्तरा० नि० ९ का रूपान्तर है और गा० ३३ उत्तराध्ययन नि० की गा० ११ है। आ० हरि० की गा० ३६ उनके द्वारा जोडी गई हो ऐसा संभव है। पूर्वमुद्रित चूर्णिमें पुष्प के एकार्थ दिये हैं उन्ही के आधारपर यह गाथा निर्मित की गई है। गा० ४३ का भाव गद्यके रूप में प्रस्तुत में और पूर्वमुद्रित चूर्णिमें है। आ० हरिभद्रने उसे पद्यबद्ध किया है। आ० हरिभद्रकी गा० ४५ की रचना दोनों चूर्णिमें गद्यमें है उसे गाथाबद्ध किया गया है। गा० ४६ की तुलना ओघनिर्युक्तिके भाष्यकी गा० १६९ से करना चाहिए। गा० ४७ उत्तराध्ययनमें पाठान्तर के साथ ३०.८ में है। गा० ४८ भी उतराध्ययनकी ही है—३०.३०। गा० ५१ आचार्य हरिभद्रकी ही कृति हो तो आश्चर्य नहीं, यहाँ वह संपूर्ति रूप है।

इस प्रकार यदि आचार्य हरिभद्रमें जो अन्य भी अधिक गाथाएं हैं उनकी तलाश की जाय तो पता लगेगा कि कहीं संपूर्तिके लिए और कहीं विषयके निरूपण के लिए ये गाथाएँ या तो स्वयं बनाकर या अन्यत्रसे लेकर यहां आचार्य हरिभद्रने रखी हैं।

---

१ देखो बृहत्कल्पभाष्यकी प्रस्तावना।

२. प्रस्तुत चुर्णि गत गाथा नं ५६ से पूर्व ही अधिकमात्रामें आ. हरिभद्रमें अधिक गाथाएँ हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## आ० हरिभद्र और स्थ० अगस्त्यसिंहसंमत निर्युक्ति गाथाओं का समीकरण

| हरि० | स्थ० अ० | हरि० | स्थ० अ० | हरि० | स्थ० अ० | हरि० | स्थ० अ० | हरि० | स्थ० अ० | हरि० | स्थ० अ० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | × | ३९ | १७ | ८१ | × | ११८ | × | १५७ | ६३ | १९८ | ९९ |
| २ | × | ४० | १८ | ८२ | × | ११९ | × | (प्रक्षेप) १ | ६४ | १९९ | × |
| ३ | × | ४१ | १९ | ८३ | × | १२० | × | १५८ | ६५ | २०० | १०० |
| ४ | × | ४२ | २० | ८४ | × | १२१ | × | १५९ | ६६ | २०१ | १०१ |
| ५ | × | ४३ | × | ८५ | × | १२२ | × | १६० | ६७ | २०२ | × |
| ६ | × | ४४ | २१ | ८६ | × | १२३ | × | १६१ | ६८ | २०३ | १०२ |
| ७ | × | ४५ | × | ८७ | × | १२४ | ४५ | १६२ | ६९ | २०४ | १०३ |
| ८ | १ | ४६ | × | ८८ | × | १२५ | ४६ | १६३ | ७० | २०५ | १०४ |
| ९ | २† | ४७ | × | ८९ | २६ | १२६ | ४७ | १६४ | ७१ | २०६ | १०५ |
| १० | × | ४८ | × | ९० | २७ | १२७ | ४८ | १६५ | ७२ | २०७ | १०६ |
| ११ | ३ | ४९ | २२ | ९१ | २८ | १२८ | ४९ | १६६ | ७३ | २०८ | १०७ |
| १२ | × | ५० | २३ | ९२ | २९ | १२९ | ५० | १६७ | ७४ | २०९ | १०८ |
| १३ | ४ | ५१ | × | ९३ | × | १३० | ५१ | १६८ | ७५ | २१० | १०९ |
| १४ | × | ५२ | २४ | ९४ | × | १३१ | × | १६९ | × | २११ | ११० |
| १५ | × | ५३ | २५ | ९५ | × | १३२ | × | १७० | ७६ | २१२ | १११ |
| १६ | ५ | ५४ | × | मा० १ | × | १३३ | × | १७१ | ७७ | २१३ | ११२ |
| १७ | ६ | ५५ | × | मा० २ | ३० | १३४ | × | १७२ | ७८ | २१४ | ११३ |
| १८ | ७ | ५६ | × | मा० ३ | ३१ | १३५ | ५२ | १७३ | ७९ | २१५ | ११४ |
| १९ | × | ५७ | × | मा० ४ | × | १३६ | ५३ | १७४ | ८० | २१६ | ११५ |
| २० | ८ | ५८ | × | ९६ | ३२ | १३७ | ५४ | १७५ | ८१ | २१७ | ११६ |
| २१ | ९ | ५९ | × | ९७ | × | १३८ | × | १७६ | × | २१८ | ११७ |
| २२ | १० | ६० | × | ९८ | ३३ | १३९ | × | १७७ | ८२ | २१९ | ११८ |
| २३ | ११ | ६१ | × | ९९ | ३४ | १४० | × | १७८ | ८३ | २२० | ११९ |
| २४ | १२ | ६२ | × | १०० | × | १४१ | × | १७९ | ८४ | २२१ | १२० |
| २५ | × | ६३ | × | १०१ | × | १४२ | × | १८० | ८५ | २२२ | १२१ |
| २६ | × | ६४ | × | १०२ | × | १४३ | × | १८१ | ८६ | मा० ७ | १२२ |
| २७ | × | ६५ | × | १०३ | ३५ | १४४ | × | १८२ | ८७ | मा० ८ | १२३ |
| २८ | × | ६६ | × | १०४ | × | १४५ | × | १८३ | × | मा० ९ | १२४ |
| २९ | × | ६७ | × | १०५ | × | १४६ | × | १८४ | ८८ | २२३ | १२५ |
| ३० | × | ६८ | × | १०६ | ३६ | १४७ | × | १८५ | ८९ | २२४ | १२६ |
| ३१ | × | ६९ | × | १०७ | × | १४८ | × | १८६ | ९० | मा० २५ | १२७ |
| ३२ | × | ७० | × | १०८ | ३७ | १४९ | *५६ | १८७ | ९१ | मा० २८ | १२८† |
| ३३ | × | ७१ | × | १०९ | ३८ | १५० | ५७ | १८८ | ९२ | मा० ३३ | १३० |
| ३४ | १३ | ७२ | × | ११० | × | १५१ | ५५ | १८९ | ९३ | मा० ३४ | १३१ |
| ३५ | १४ | ७३ | × | १११ | ३९ | १५२ | ५८ | १९० | × | २२५ | १३२ |
| ३६ | × | ७४ | × | ११२ | ४० | १५३ | ५९ | १९१ | ९४ | २२६ | १३३ |
| ३७ | १५ | ७५ | × | ११३ | ४१ | १५४ | ६० | १९२ | ९५ | २२७ | १३४ |
| ३८ | १६ | ७६ | × | ११४ | ४२ | १५५ | ६१ | १९३ | ९६ | मा० ५६ | १३५ |
| | | ७७ | × | ११५ | ४३ | १५६ | ६२ | १९४ | × | मा० ५७ | १३६ |
| | | ७८ | × | (प्रक्षेप) गा. १ | ४४ | | | १९५ | ९७ | | |
| | | ७९ | × | ११६ | × | | | १९६ | × | | |
| | | ८० | × | ११७ | × | | | १९७ | ९८ | | |

† छप जानेके बाद यह गाथा काट दी गई है।

* यहाँ ५६, ५७, ५५ में क्रमव्यत्यय है।

† संख्यांक १२९ नहीं दिया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| हरि० | स्थ० अ० | हरि० | स्थ० अ० | हरि० | स्थ० अ० | हरि० | स्थ० अ० | हरि० | स्थ० अ० | हरि० | स्थ० अ० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२८ | १३७ | २५१ | १५४ | २७७ | १७९ | ३०३ | २०५ | ३२६ | २२७ | ३४८ | २४७ |
| × | १३८ | २५२ | १५५ | २७८ | १८० | ३०४ | २०६ | ३२७ | *२२८ | ३४९ | २४८ |
| २२९ | १३९ | २५३ | १५६ | २७९ | १८१ | ३०५ | २०७ | ३२८ | × | ३५० | २४९ |
| २३० | १४० | २५४ | १५७ | २८० | १८२ | ३०६ | २०८ | ३२९ | २३० | ३५१ | २५० |
| २३१ | १४१ | २५५ | १५८ | २८१ | १८३ | ३०७ | २०९ | ३३० | २३१ | ३५२ | २५१ |
| २३२ | १४२ | २५६ | १५९ | २८२ | १८४ | ३०८ | *२१० | ३३१ | × | ३५३ | २५२ |
| भा० ६० | १४३ | २५७ | १६० | २८३ | १८५ | ३०९ | २१० | ३३२ | २३२ | ३५४ | २५३ |
| २३३ | १४४ | २५८ | १६१ | २८४ | १८६ | ३१० | २११ | ३३३ | २३३ | ३५५ | २५४ |
| २३४ | × | २५९ | १६२ | २८५ | १८७ | ३११ | २१२ | ३३४ | २३४ | ३५६ | २५५ |
| २३५ | १४५ | २६० | १६३ | २८६ | १८८ | ३१२ | २१३ | ३३५ | २३५ | ३५७ | २५६ |
| भा० ६२ | १४६ | २६१ | १६४ | २८७ | १८९ | २१३ | २१४ | ३३६ | २३६ | ३५८ | २५७ |
| २३६ | × | २६२ | १६५ | २८८ | १९० | ३१४ | २१५ | ३३७ | २३७ | ३५९ | २५८ |
| २३७ | × | २६३ | १६६ | २८९ | १९१ | ३१५ | २१६ | ३३८ | २३८ | ३६० | २५९ |
| २३८ | × | २६४ | × | २९० | १९२ | ३१६ | २१७ | ३३९ | २३९ | ३६१ | २६० |
| २३९ | × | २६५ | १६७ | २९१ | १९३ | ३१७ | २१८ | ३४० | × | ३६२ | २६१ |
| २४० | × | २६६ | १६८ | २९२ | १९४ | ३१८ | २१९ | ३४१ | २४० | ३६३ | × |
| २४१ | × | २६७ | १६९ | २९३ | १९५ | ३१९ | २२० | ३४२ | २४१ | × | २६२ |
| २४२ | × | २६८ | १७० | २९४ | १९६ | ३२० | २२१ | ३४३ | २४२ | ३६४ | २६३ |
| २४३ | १४७ | २६९ | १७१ | २९५ | १९७ | ३२१ | २२२ | ३४४ | २४३ | ३६५ | २६४ |
| २४४ | × | २७० | १७२ | २९६ | १९८ | ३२२ | २२३ | ३४५ | २४४ | ३६६ | २६५ |
| २४५ | १४८ | २७१ | १७३ | २९७ | १९९ | ३२३ | २२४ | ३४६ | २४५ | ३६७ | २६६ |
| २४६ | १४९ | २७२ | १७४ | २९८ | २०० | ३२४ | २२५ | ३४७ | २४६ | × | २६७ |
| २४७ | १५० | २७३ | १७५ | २९९ | २०१ | ३२५ | २२६ | | | ३६८ | २६८ |
| २४८ | १५१ | २७४ | १७६ | ३०० | २०२ | | | ※ यहाँ गाथासंख्यांक २२९ नहीं दिया गया है। | | ३६९ | २६९ |
| २४९ | १५२ | २७५ | १७७ | ३०१ | २०३ | * २१० संख्यांक दो बार दिया गया है। | | | | ३७० | २७० |
| २५० | १५३ | २७६ | १७८ | ३०२ | २०४ | | | | | ३७१ | २७१ |

*

## स्थविर अगस्त्यसिंहकृत चूर्णि

स्थविर[1] अगस्त्यसिंहने अपनी वृत्तिको चूर्णि संज्ञा दी है यह अंतिम वाक्यसे स्पष्ट है—"चुण्णिसमासवयणेण दसकालियं परिसमत्तं" और प्रशस्तिकी तीसरी गाथामें भी इसे 'चूर्णि' कहा है। अत एव यह टीका 'चूर्णि' है इसमें संदेह नहीं है। अपना परिचय देते हुए अपनेको कोटिकगणके वज्रस्वामिकी शाखामें होनेवाले 'रिसिगुत्त'–'ऋषिगुप्त' क्षमाश्रमणके शिष्य बताया है। और अपना नाम 'कलसभवमइंद' इस सांकेतिक रूपमें प्रशस्तिमें रखा है। इसका स्पष्टार्थ पू. मुनिराजश्री पुण्यविजयजीने कलसभव=कलशभव=अगस्त्य और मइंद=मृगेन्द्र=सिंह–एसा मानकर अगस्त्यसिंह नाम होनेका जो अनुमान किया है वह उचित ही है।

लेखकको प्रस्तुतमें विस्तारसे व्याख्यान[2] करना इष्ट है। व्याख्यानमें एक भी महत्त्वका शब्द बिना व्याख्याके नहीं रहा। इस तरह यह व्याख्या विभाषा–या परिभाषाके लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। चूर्णिकारने विभाषा शब्दका प्रयोग पुनःपुनः किया भी है[3] अत एव

१. प्रस्तुत चूर्णिको ग्रन्थकर्ताने वृत्ति भी कहा है–पृ० ११२

२. वित्थरवक्खाणाहिगारोऽयं–पृ० १.

३. ३.१६; ५.१५; १०.२२; ११.१७; ५०.१७; ११४.२५; १२९.११. इत्यादि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वे अपनी इस व्याख्याको विभाषा कहना पसंद करते हैं ऐसा लगता है। बौद्धों के वहां सूत्र=मूल और विभाषा[1]=व्याख्या ये दो प्रकार ग्रन्थोंके हैं। वैसा जैनों में भी सूत्र और विभाषा ये श्रुतके भेद किये जा सकते हैं।

विभाषाके स्वरूपके विषयमें स्पष्टीकरण अन्यत्र किया है[2] अत एव यहाँ उसके विवरणकी आवश्यकता नहीं है। उसका खास लक्षण यह है कि शब्दोंके जो अनेक अर्थ होते हों, उन्हें बता देना चाहिए और प्रस्तुतमें जो अर्थ उपयुक्त हो उसका निर्देश करदेना चाहिए। प्रस्तुत चूर्णिमें यह पद्धति अपनाई गई है अत एव यदि इसे 'विभाषा' कहा जाय तो उचित ही होगा। केवल यही नहीं प्रस्तुत चूर्णिको ग्रन्थकर्ताने 'वृत्ति' नाम भी दिया है-पृ० ११२

चूर्णिमें अनेक दृष्टान्तों, कथानकों[3] द्वारा मूलके वक्तव्यको स्पष्ट किया गया है। यह चूर्णिकी एक विशेषता ही समझी जा सकती है।

अनेक ग्रन्थोंसे अवतरण दिये हैं उससे यह निश्चित होता है कि स्थविर अगस्त्यसिंह बहुश्रुत थे। वे केवल जैन शास्त्रके ही नहीं किन्तु अन्यशास्त्रोंके भी ज्ञाता थे। ये अवतरण ग्रन्थोंके नामके साथ और विना नामके भी दिये गये हैं। इसका कितना विस्तार है यह अंतमें दी गई अवतरण सूचीसे पता लग सकता है।

प्रस्तुत चूर्णिके अध्ययनसे यह निश्चित होता है कि इसके पूर्वभी कोई वृत्ति दसकालियकी बनी थी। उस वृत्तिका निर्देश अगस्त्यसिंहने कई स्थानोंमें किया है-पृ० ६४, ७८, ८१, १००, २५१।

अपने समय तक दशवैकालिकमें तथा निर्युक्तिमें जो पाठान्तर उपलब्ध थे उनका भी निर्देश चूर्णिमें किया गया है-पृ० ३८, ४८, ६०, ६१, ७७, ९९, १०१, १३२, १६४ इत्यादि। इससे यह अनुमान हो सकता है कि स्थविर अगस्त्यसिंहके समक्ष अन्य हस्तप्रतें मौजुद थीं। अन्य वृत्तिका निर्देश तो ऊपर हो चुका है। एक स्थानमें पाठान्तरके स्थानमें स्थविर अगस्त्यसिंहने 'आलावगो' शब्दका भी प्रयोग किया है-पृ० १६४। स्थ० अगस्त्यसिंहकी चूर्णिकी जो प्रत मिली है उससे यह निश्चित होता है कि प्राकृत शब्दके रूप एक जैसे ही प्रयुक्त नहीं हुए हैं। मूलके प्रतीक जो हैं उन शब्दोंके भी रूपान्तरोंका प्रयोग चूर्णिमें दिखाई देता है। अत एव पाठको एक निश्चित-रूप देकर ही मुद्रित करनेकी जो पद्धति है वह कहाँतक उचित है-यह विद्वानोंके लिए विचारणीय है। प्राकृतभाषाकी यही विशेषता है कि उसमें कई रूपान्तरोंकी शक्यता है। लेखक स्वयं भी नानारूपोंका प्रयोग करे-यह भी संभव है ही-ऐसी परिस्थितिमें संपादनमें एकरूपता लानेका प्रयत्न करना कहां तक उचित है? यह प्रश्न है। इस एकरूपताकी कमी को देखकर यदि यह कहा जाय कि सम्पादन उचित ढंगसे नहीं हुआ है तो यह पू. मुनिजीके प्रति अन्याय होगा ऐसा मैं मानता हूँ। विदेशी विद्वानों का यह आग्रह रहा है-प्रतमें एकरूपता न भी मिले फिरभी संपादकको एकरूपता लानेका प्रयत्न करना चाहिए-संपादनकी यह पद्धति प्राकृतभाषाके मूलमें ही कुठाराघात जैसी दिखती है। ऐसी परिस्थितिमें यदि पू. मुनिजीने उस एकरूपताका आग्रह नहीं रखा है तो उनका दोष नहीं है-उन्होंने प्राकृत भाषाकी प्रकृतिका ही अनुसरण किया है।

जैनोंमें प्रचलित अनुमानविद्याका भी तात्कालिक निरूपण उस विद्याके इतिहासकी एक कड़ी बन सके ऐसा विस्तृत है-जो अन्यत्र दुर्लभ है। आशाका—आगमका महत्त्व होते हुए भी वातावरणमें जब अनुमानविद्या या तर्कविद्याका महत्त्व बढा तो जैन आगम भी उससे अछूता नहीं रह सकता था। अत एव उस विद्याका प्रथम प्रवेश निर्युक्तिमें हुआ और विशदीकरण इस चूर्णिमें है। दशवैकालिक निर्युक्तिकी गा० २२ से यह चर्चा शुरु होती है जो अतिविस्तारसे प्रस्तुत चूर्णिमें की गई है। विस्तृत होते हुए भी उसकी चर्चा की जो भूमिका है वह प्राथमिक ही कही जा सकती है। आचार्य अकलंक आदिने इस विषयमें जो आगे चल कर कहा वह इस भूमिका को छोड कर और तात्कालिक चर्चा विचारणा को लक्ष्य करके ही है।

स्थविर अगस्त्यसिंहके समक्ष दशवैकालिक की कई वृत्तियाँ[4] होनेका संभव इस लिए है कि उन्होंने प्रारंभमें ही 'भद्दियायरिओवएस' और 'दत्तिलायरिओवएस' की चर्चा की है-पृ० ३। अन्यत्र भी वृत्तिके मतों का निर्देश कईबार किया है। इससे यह तो निश्चित होता है कि दशवैकालिककी वृत्तिओंकी परंपरा प्राचीनकाल से ही प्रारब्ध हुई थी। आचार्य अपराजित जो यापनीय थे उन्होंने भी दशवैकालिककी विजयोदया नामक टीका लिखी थी[5]। वह स्थविर अगस्त्यके समक्ष थी या नहीं इसका निर्णय जरूरी है। किन्तु

---

१. व्याकरणगत परिभाषामें 'विभाषा' शब्दका जो अर्थ है उसके लिए देखें शाकटायन व्याकरण-प्रस्तावना, पृ० ६९, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी.

२. नंदीसुत्तं अणुयोगद्दाराइं च (महावीर जैन विद्यालय) की प्रस्तावना-पृ० ३७.

३. बृहत्कथा जैसे ग्रन्थका उनका अध्ययन अवश्य उन्हें इसके लिए सहायक हुआ है।-पृ. १९९ में बृहत्कथाके कथनको स्त्रीसंसर्गनामक दोष बताया है। किन्तु 'कोक्कास'को शिल्पीके रूपमें उदाहृत करनेमें उन्हें कोई संकोच नहीं हुआ है।-पृ. ५४।

४. ये व्याख्यायें मौखिक भी हो सकती हैं। संभव है कि इसीको लक्ष करके 'उपदेश' (उवएस) शब्दका प्रयोग किया गया है।

५. "दशवैकालिकटीकायां श्रीविजयोदयायां प्रपञ्चिता उद्गमादिदोषा इति नेह प्रतन्यते" भगवती आराधना टीका विजयोदया-गा० ११९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वह उपलब्ध नहीं है अत एव यह जानना कठिन है। स्थविर अगस्त्यसिंहद्वारा किया गया वृत्तिका उल्लेख पूर्वोक्त तीनोंमेंसे किसी एकका है या अन्य कोई है यह भी कहना कठिन है।

आचार्य अगस्त्यसिंहने अनेक मतभेद या व्याख्यान्तरोंका उल्लेख किया है[1] किन्तु यहां उन सबकी चर्चा न करके उनमें से कुछ की ही चर्चा की जाती है। ध्यानका सामान्य लक्षण दिया है–'एगग्गचिंता-निरोहो झाणं' और उसकी व्याख्यामें कहा गया है[2] कि "एक आलम्बनकी चिन्ता करना यह छद्मस्थका ध्यान है। योगका निरोध यह केवलीका ध्यान है। क्योंकि केवलीके चिन्ता नहीं होती। इस विषयमें कोई कहते हैं कि केवलीको योगनिरोध अर्थात् मनोयोग का निरोध नहीं होता। किन्तु उनका यह कहना ठीक नहीं। क्योंकि भगवानको भी द्रव्य-मनका निरोध संभव है। यदि ध्यान एकाग्रचिन्ता है तब तो योगनिग्रह भी ध्यान है ही। किन्तु जो यह कहते है– 'एकाग्र चिन्ताका निरोध ध्यान है'[3] तो यह लक्षण केवलीमें घटित नहीं होता है क्योंकि चिंता यह आभिनिबोधिक ज्ञानका भेद है। अत एव 'दृढ अध्यवसान ध्यान है' तो उनको समासके विग्रहका ज्ञान नहीं है यही कहना चाहिए। वे सूत्रका दूषण निकाल अपनी बुद्धिके माहात्म्यकी अभिलाषा करते हैं। उन्होंने व्यर्थ ही कहा है। क्योंकि दृढ अध्यवसाय और चिन्ता इनमें भेद नहीं है। जब यह कहा जाता है कि इसका क्या अध्यवसाय है तो यही समझा जाता है कि इसकी क्या चिंता है। और तत्त्वार्थमें तो तर्कादि सबको– आभिनिबोधिक ज्ञानके भेद बताये ही हैं।"

वृद्धविवरण जो दशवैकालिक चूर्णिके नामसे मुद्रित है उसमें ध्यानका जो लक्षण स्वीकृत है वह यहाँ अमान्य किया गया है। उक्त चूर्णिने यह मत प्राचीन वृत्तिसे स्वीकृत किया हो यह संभव है क्योंकि प्रस्तुत चूर्णि वृद्धविवरणसे पूर्ववर्ती है। देखो प्रस्तुत में पृ० १६ टि० ४।

प्रस्तुतमें ध्यानका जो लक्षण 'एगग्गचिंता-निरोहो' स्वीकृत किया गया है वह तत्त्वार्थसंमत है। तत्त्वार्थ भाष्यमें स्पष्ट लिखा है कि 'एकाग्रचिन्ता निरोधश्च ध्यानम्'–९. २७ और मूलसूत्रके 'एकाग्रचिन्तानिरोधो'[4] इस समस्तपदका ऐसा विग्रह भाष्यमें स्वयं आचार्य उमास्वातिने जो किया वह निर्मूल नहीं था किन्तु जैनपरंपरासंमत आध्यात्मिकविकासक्रमको देखकर ही किया था। आवश्यकनिर्युक्तिगत ध्यानशतक गा. ३ में ध्यानविषयक जो स्पष्टीकरण है वह भी इस प्रकारके विग्रहका ही समर्थन है—

**अंतोमुहुत्तमित्तं चित्तावत्थाणमेगवत्थुम्मि। छउमत्थाणं झाणं जोगनिरोहो जिणाणं तु॥**

यद्यपि ध्यानशतकमें ध्यानका जो लक्षण दिया है—"जं थिरमज्झवसाणं तं झाणं" गा० २, उसका तो प्रस्तुत चूर्णिमें निरास ही किया है। क्यों कि 'दढमज्झवसाओ' और 'थिरमज्झवसाणं' में शब्दका अन्तर है, अर्थका नहीं। 'एकाग्रचिन्तानिरोध' के विग्रहके विषयमें जो आक्षेप किया गया है वह आचार्य पूज्यपादने तत्त्वार्थकी टीकामें जो विग्रह किया है उसे लक्ष करके किया हो ऐसा संभव है। क्यों कि उसमें तत्त्वार्थ भाष्यके विग्रहसे विपरीत ही विग्रह दिखता है—

'चिन्ता परिस्पन्दवती, तस्या अन्याशेषमुखेभ्यो व्यावर्त्य एकस्मिन्नग्रे नियम एकाग्रचिन्तानिरोध इत्युच्यते'–सर्वार्थसिद्धि ९-२७।[5]

सामान्यतौरसे उपांगग्रन्थ जीवाजीवाभिगम[6] नामसे प्रसिद्ध है किन्तु यहां उसका नाम 'जीवाजीवाधिगम' निर्दिष्ट है (पृ०९४)' प्रश्न यह है कि क्या भि → हि → धि की प्रवृत्तिका यह परिणाम है या यही उसका नाम मूलतः होगा। आचार्य उमास्वातिने 'अधिगम।

---

१. २.२९; ३.५; १६.९; २५.५; ६४.६; ७८.२९; ८१–३४; १००.२५; २४८; २५४.५ इत्यादि।

२. १६. ७.

३. तुलना करें इस चर्चाकी भगवती आराधनागत विजयोदया टीका गा० १६९९। वहाँ चर्चा इसी लक्षणकी है किन्तु चर्चा अन्य ढंगसे की गई है।

४. वस्तुतः यहाँ मूलमें पाठ 'निरोधौ' ही उचित था। और आचार्य उमास्वातिने उसे उस रूपमें ही लिखा होगा। किन्तु अन्य सभी वृत्तिकारों के समक्ष योगसूत्रगत लक्षण 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' १.२. मौजुद था, अत एव उसी रूपको समक्ष रखकर 'निरोधौ' के स्थानमें 'निरोधो' मानकर ही व्याख्याएँ की हो तो आश्चर्य नहीं है।
राजवार्तिक और विजयोदयागत ध्यानके स्वरूपका वर्णन कई बातों में समान है फिर भी विवरणमें कई बातें ऐसी हैं जो एककी दूसरेमें नहीं हैं।

५. राजवार्तिक आदि में तथा सिद्धसेनमें भी इसी प्रकार विग्रह किया गया है। आचार्य उमास्वाति की ध्यानकी व्याख्यामें संगति बिठानेका विशेषप्रयत्न अपराजितसूरिने भगवती आराधनाकी टीकामें (१६९९) किया है वह भी यहां देखना जरूरी है। आचार्य उमास्वातिने योगसूत्रका अनुकरण करके ध्यानकी व्याख्या की किन्तु उसमें जैन दृष्टिसे विशेष स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी उसकी पूर्ति भी उन्होंने की है।

६. नंदिसुत्तमें उसे 'जीवाभिगम' कहा गया है–सू० ८३। दशवैकालिक मूलमें (४.३७) जो तत्त्वचर्चा है उससे ये तत्त्व फलित होते हैं – जीव-अजीव-पुण्य-पाप-बंध-मोक्ष-संवर.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अभिगम' 'आगम' इत्यादिको पर्यायवाचक माना है (१.३) इसे देखते हुए दोनों नाम संभव हैं। किन्तु 'जीवाजीवाभिगम' यह नाम अधिक प्रचलित हो गया है-इसे देखते हुए वही नाम मूलतः मानना उचित जँचता है।

'सुयं मे आउसं' इत्यादिका तथा 'महावीरेणं कासवेणं' का जो अर्थ दिया गया है वह ध्यान देने योग्य है—पृ० ७२। प्रस्तुतमें यह स्पष्टीकरण है कि प्रत्येक गणधर सूत्रोंकी रचना अपने शिष्यों के लिए करते हैं। विकल्पसे प्रस्तुतमें जंबूके उत्तरमें सुधर्मस्वामिने यह वाक्य-'सुयं मे' इत्यादि कहा यह भी स्पष्टीकरण है। और 'सुयं मे' इत्यादि पाठके दो और पाठान्तर देकर भी उनके अर्थ दिये गये हैं। काश्यपका अर्थ ऋषभस्वामी किया गया और उनके गोत्रज होनेसे महावीर भी काश्यप हैं-यह स्पष्टीकरण है।

दशवैकालिक मूलमें (सू० ४०, पृ० ७६) 'सव्वे देवा सव्वे असुरा' यह प्रयोग है। तथा 'देवा जक्खा य गुज्झगा' यह भी है-९-२·१०। यह सूचित करता है कि देवोंके जो चार प्रकार तत्त्वार्थ में (४·१) हैं वे स्थिर होनेके पूर्वके ये प्रयोग हैं। आचार्य अगस्त्यसिंहकी व्याख्या (पृ० ७७) भी यहां देखी जा सकती है जहाँ कहा गया है कि असुर ये देवोंके प्रतिपक्षी हैं। जब तत्त्वार्थमें असुर देवों के अन्तर्गत हैं। तथा देवा इत्यादिकी व्याख्या करनेमें आचार्य अगस्त्यको कठीनाई पडी है। यह सूचित करता है कि देवविभाग जो तत्त्वार्थमें है वह अभी स्थिर नहीं हुआ था।

वृद्धविवरण तथा आचार्य हरिभद्रमें मृषाके चार भेद किये हैं जब कि प्रस्तुत चूर्णिमें तीन भेद हैं, यह सूचित करता है कि सम्भवतः यह चूर्णि वृद्धविवरणसे प्राचीन हो-पृ० ८२ तथा टिप्पण नं. ७

ज्ञानाचारका स्पष्टीकरण करते हुए कहा है कि प्राकृतभाषानिबद्ध सूत्र का संस्कृतमें रूपान्तर नहीं करना चाहिए क्यों कि व्यञ्जनमें विसंवाद करने पर अर्थविसंवाद होता है। परिणामस्वरूप अंततः दीक्षाकी निरर्थकता हो जाती है-पृ० ५३। प्राकृतके लिए 'अपभ्रंश' शब्दका प्रयोग किया गया है-पृ० ७। आगम-प्राकृतमें होने से कुछ लोग जो आपत्ति करते थे उसका भी निर्देश है-"सव्वमेतं पागतभासानिबद्धत्तणेण [ण] कुसलकप्पितं होज्जा"-पृ० ५०"।

सिद्धसेनके सन्मतिकी गाथा[1] उद्धृत होने से वह भी प्रस्तुतसे पूर्वकी रचना सिद्ध होती है-पृ० २२।

'रात्रिभोजनविरमण'व्रतको मूलगुण माना जाय या उत्तरगुण[2]? इस प्रश्नके उत्तर में कहा गया है कि यह उत्तरगुण ही है किन्तु सर्वमूलगुणकी रक्षाका हेतु होनेसे मूलगुणके साथ कहा गया है-पृ० ८६। वृद्धविवरणमें उत्तरगुण तो माना है किन्तु वह प्रथम-अंतिम तीर्थंकरके समयके पुरुष-विशेषकी अपेक्षासे ही तथा बीचके तीर्थंकरोंके समयमें तो सभीकी अपेक्षासे उत्तरगुण है-देखें प्रस्तुत पृ० ८६ की टिप्पणी ६। इससे स्पष्ट है कि यह व्रत बादमें जोडा गया है।

मूलमें यह बात कही गई है कि वस्त्रपात्रादि संयम और लज्जाके लिए रखे जाते हैं अत एव वह परिग्रहमें शामिल नहीं है-मूर्छा ही परिग्रह है-(६-१९-२१)। इसकी चूर्णिमें 'चोलपट्टगादि'का उल्लेख है। और यह भी स्पष्ट किया गया है कि-"ण केवलं संघयणहीणाणं जिणकप्पियाण वि भगवतैवोपदिष्टम्"-पृ० १४७। और भी "उवधी वत्थादयोहरणाति, सव्वत्थ उपधिणा सह सोपकरणा बुद्धा जिणा, साभाविकमिदं जिणलिंगमिति सव्वे वि एगदूसेण निग्गता। पत्तेयबुद्धजिणकप्पियादयो वि रयहरणमुहणंतगातिणा सह संजमसारक्खणत्थे परिग्गहेण मुच्छानिमित्ते तम्मि विज्जमाणे वि ते भगवंतो मुच्छं न गच्छंतीति अपरिग्गहा"-पृ० १४८।

दशवैकालिककारको यह भी इष्ट है कि कोई साधु नग्न भी रह सकता है देखें-६·६४, पृ० १५७। अत एव यह ग्रन्थ यापनीय संघके भिक्षु जो नग्न रहते थे उन्हें भी मान्य हुआ है। तभी तो यापनीय आचार्य अपराजितने इस की टीका भी लिखी है।

निर्युक्तिमें प्रशस्त-अप्रशस्त राग आदि की जो चर्चा है उसकी चूर्णि देखने लायक है। इसमें तीर्थंकरोंकी पूजाके समय वाद्यादि तथा नाटक आदिमें जो मन लगता है वह प्रशस्त इन्द्रियरागका दृष्टान्त है तथा जैन शासनके विरोधीके प्रति जो क्रोध होता है, परवादिका पराभव होने पर जो अभिमान होता है, अभिमानसे संयममें उद्युक्त होने पर जो मान होता है, परवादीको हरानेकी दृष्टिसे जो छलप्रपंच किया जाता है वह माया, श्रुतज्ञानके लिए जो असन्तोष होता है वह लोभ-ये सब प्रशस्त प्रणिधिके उदाहरण हैं।-पृ० १८२-१८३।

दृष्टिवाद वस्तुतः था नहीं केवल काल्पनिक ग्रन्थ है-ऐसी मान्यतावालोंके लिए दशवैकालिककी यह गाथा नया प्रकाश देगी—

"आयारपण्णत्तिधरं दिट्ठिवादमधिज्जगं।" ८·४९.

प्रस्तुतमें चूर्णिमें आचारधर, पण्णत्तिधर, और दिट्ठिवादमज्झयणधर का उल्लेख है जो दृष्टिवादके अस्तित्वको सूचित करता है इतना ही नहीं किन्तु आगमोंमें उसके महत्त्वको भी सूचित करता है-पृ० १९७।

धर्मकी व्यवहारिकताका समर्थन यह कह कर किया गया है कि अनंत ज्ञानी भी गुरुकी उपासना अवश्य करे-दशवै० ९. १. ११, पृ० २०९। यहां चूर्णिकारने अनंत शब्दका पारिभाषिक ही अर्थ लिया है-अर्थात् सर्वज्ञ भी।

---

१. यह गाथा दशवैकालिकनिर्युक्तिकी हरिभद्रकी टीकामें भी निर्युक्तिरूपसे ली गई है— गा० ६०

२. मूलाचारमें भी इसे मूलगुण माना नहीं गया-देखो गा० २-३ (मूलगुणाधिकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणवत्ताके कारण भिक्षु है और यदि गुण नहीं तो भिक्षु भी नहीं–इस अनुमानकी सिद्धि सुवर्णदृष्टान्तसे की गई है और अन्यत्र प्रसिद्ध कष-छेद-ताव-तालण द्वारा सुवर्णकी प्रसिद्ध परीक्षाविधिका उल्लेख है –नि० गा० २४९।

इसकी तुलना तत्त्वसंग्रहगत निम्नकारिकासे करना योग्य है —

**"तापाच्छेदाच्च निकषात् सुवर्णमिव पण्डितैः। परीक्ष्य भिक्षवो ग्राह्यं मद्वचो न तु गौरवात् ॥ ३५८८ ॥**

दशवैकालिकमें (८·२७) "देहदुक्खं महाफलं" कहा है उसकी व्याख्यामें आचार्य अगस्त्यसिंहने कहा है–"दुक्खं एवं सहिज्जमाणं मोक्खपज्जवसाणफलत्तेण महाफलं"–पृ० १९२। और अन्यत्र बौद्धोंने जो चित्तको ही नियन्त्रणमें लेना जरूरी है–ऐसा माना है उसका निराकरण करते हुए काय का भी नियन्त्रण जरूरी है–ऐसा कहा है–पृ० २४१।

प्रस्तुत चूर्णिगत कुछ दार्शनिक चर्चाएं भी ध्यान देने योग्य हैं जिससे जैनोंके दार्शनिक मन्तव्योंके इतिहास पर प्रकाश मिलता है।

अनेकान्तवादकी यथावत् स्थापना जैसी दार्शनिक ग्रन्थोंमें देखी जाती है उसके पूर्व उस वादकी क्या क्या भूमिकाएं थीं यह एक गवेषणाका विषय है। प्रस्तुत चूर्णिमें उस विषयमें जो भूमिका है वह इस प्रकारकी है–निर्युक्तिमें धम्म शब्दके अनेक अर्थ बताए हैं। उससे यह स्पष्ट होता है कि धर्म शब्दका प्रयोग द्रव्यके लिए और उसके पर्यायोंके लिए भी होता है–गा० १८ की चूर्णिमें पर्यायोंके विवरणमें लिखा है–"जीवदव्वस्स वा अजीवदव्वस्स वा उप्पाय-ठिति-भंगा पज्जाया त एव धम्मा। जीवदव्वस्स इमे उप्पादठितिभंगा–देवभवातो मणुस्सभवमागतस्स मणुस्सत्तेण उप्पातो, देवत्तेण विगमो, जीवदव्वमवट्ठितं।" इत्यादि–पृ० १०

इसमें ध्यान देनेकी बात यह है कि स्थिति को भी पर्याय कहा है फिर भी विवरणमें जीवद्रव्य को अवस्थित कहा गया है। इस विषमता का निवारण दार्शनिकोंने आगे चलकर कर दिया है।

प्रस्तुत चर्चामें आकाशादि तीन द्रव्योंके उत्पादादि परप्रत्ययसे[1] होते हैं यह स्पष्टीकरण किया गया है यह ध्यान देने योग्य है–पृ० १०

'अनेकान्तपक्ष' के अवलंबनसे जीव द्रव्यार्थतासे नित्य है और पर्यायार्थितासे अनित्य है–यह भी सन्मतिकारके प्रभावसे कहा गया है और आत्माको सर्वथा नित्य माना जाय तो सुखदुःखादिका संभव नहीं होगा यह भी सिद्धसेनके सन्मतिके अवतरणद्वारा सिद्ध किया गया है–पृ० २२।

जीवके अस्तित्वको अनुमानसे सिद्ध किया गया है किन्तु एकेन्द्रिय जीवकी सिद्धिके विषयमें कहा है कि हेतुसे उसकी सिद्धि गुरुके अनुसार छज्जीवनिकाय नामक अध्ययनसे होती है किन्तु यहाँ तो आगमके आश्रयसे की जाती है–पृ० २३।

जीवके अस्तित्वके विषयमें 'णाहितवादी' (नास्तिकवादी) के समक्ष जो दलील दी गई है[2] वह यह कि 'यदि तुम कहो कि सर्वभाव ही जब नहीं तो जीव कैसे अस्ति होगा?' तो तुम्हारा यह वचन 'है' या 'नहीं है'? यदि 'है' तब तो सर्वभावका निषेध नहीं कर सकते–इत्यादि।[3] इस चर्चासे स्पष्ट है कि यहाँ नास्तिक से अभिप्राय शून्यवादीसे है। किन्तु वह शून्यवादी बौद्ध है या चार्वाक यह स्पष्ट नहीं होता। चार्वाकके तत्त्वोपप्लववादका मूल यदि इसमें माना जाय तब इसे चार्वाकमत कहा जा सकता है। 'लोकायत'का उल्लेख पृ० १४३ में है।

लौकिकशास्त्र गीतासे तथा वैदिक यज्ञोंके फलकी चर्चाके आधार पर भी जीवकी सिद्धिका समर्थन किया गया है–पृ० ६८।

अन्यत्र भी[4] इसमें जीवके अस्तित्व आदिकी चर्चा की गई है किन्तु चर्चासे स्पष्ट है कि कहीं भी स्थविर अगस्त्यसिंहने जिनभद्रके विशेषावश्यकमें से उद्धरण नहीं दिया है, यद्यपि चर्चामें अन्यकृत गाथाएँ उद्धृत है–पृ० २२, २३, २५।

तज्जीव तच्छरीरवादकी चर्चा आचार्य जिनभद्रने[5] भी की है किन्तु उस चर्चाका भी उपयोग प्रस्तुतमें नहीं है–पृ० २१।

'लोकायतिक' आदि मोक्ष और परलोक तथा ज्ञान-दर्शन-चारित्र के विषयमें जो कुछ कहें किन्तु वे जिनप्रवचनमें ही अवितथ हैं, अन्यत्र नहीं–यह निर्युक्तिकी व्याख्या में कहा गया है[6]।

द्रव्यजीवके विषयमें आचार्य उमास्वातिने कहा है–"गुणपर्यायवियुक्तः प्रज्ञास्थापितोऽनादिपारिणामिकभावयुक्तो जीव उच्यते। अथवा शून्योऽयं भङ्गः। यस्य हि अजीवस्य सतो भव्यं जीवत्वं स्यात् स द्रव्यजीवः स्यात्। अनिष्टं चैतत्।" तत्त्वार्थभाष्य १·५। किन्तु

---

१. आचार्य उमास्वातिने इन तीनों के परिणामको अनादि कह कर संतोष माना था।–५·४२। पूज्यपादने सामान्य परिणामको अनादि और विशेषको सादि माना था किन्तु परप्रत्ययसे होनेवाले परिणामकी चर्चा नहीं की थी।

२. पृ० २४।

३. आचार्य जिनभद्रने शून्यवादीके विरुद्ध अनेक दलीलें दी हैं उनमें एक यह भी है–विशे० २१८८ से। प्रस्तुतमें जिनभद्रकी युक्तियोंकी असर नहीं है यह स्पष्ट है।

४. २२·१९; २३·२४; २५·२८; २६·१०, १४; २८·२; इत्यादि।

५. विशेषा० २१०४ से।

६. गाथा १६८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तुतमें (पृ० ६६) अन्य प्रकारसे ही स्पष्टीकरण है—"दव्वजीवो जं अजीवदव्वं जीवदव्वत्तेण परिणमिस्सति त्ति ओरालितादिसरीरपरिणामजोग्गं। तं कहं? जीवो सरीरं च ण एगंतेण अत्थंतरं। जति अत्यंतरमेव सरीरभावभेदेसु ण सुहदुक्खाणुभवणं होज्जा।" आचार्य अगस्त्यसिंहने प्रस्तुतमें द्रव्यजीवके विषयमें जो स्पष्टीकरण किया है वह आगमानुसारी है।[1] आचार्य उमास्वातिने जो स्पष्टीकरण दिया था वह दार्शनिक विकासकी अग्रभूमिका थी। किन्तु स्थविर अगस्त्यसिंहने आगमिक भूमिका का ही आश्रय लिया है[2]। आचार्य पूज्यपादने द्रव्यनिक्षेपका विस्तारका आश्रय लेकर जो स्पष्टीकरण किया है उसमें आचार्य उमास्वातिके मतका भी स्वीकार है ही। उपरांत अन्य पक्ष भी देखे जाते हैं जिनमें अगस्त्यसिंहका पक्ष भी समाविष्ट हो जाता है।[3]

शून्यवादका निर्देश (पृ० ६८) जीवचर्चाको लेकर किया गया है किन्तु यहां भी विशेषावश्यकगत शून्यवादकी विस्तृत चर्चाकी कोई सूचना मिलती नहीं।

आत्माके अस्तित्वको माननेवालोंमें वेद, कापिल और काणादका भी उल्लेख है–पृ० ६८। इतना ही नहीं किन्तु उसी प्रसङ्ग में 'बुद्धस्स पंचजातकसताणि'को भी आत्माके अस्तित्वके समर्थनमें ही उपस्थित किया गया है–पृ० ६८।

'क्रियावाद' से तात्पर्य आस्तिकदर्शनोंसे था यह भी यहाँ स्पष्ट होता है–किरिया का अर्थ 'अत्थिभाव' करके जो माता-पिता-जीव आदिका अस्तित्व मानता है वह क्रियाकी आशातना नहीं करता यह स्पष्टीकरण है–पृ० १५, २०५.

स्याद्वादके विषयमें विचित्र विधान किया गया है जो आश्चर्यजनक इस लिए है कि सन्मति जैसे ग्रन्थों में स्याद्वादके भङ्गोंकी चर्चा है और उन ग्रन्थोंको अगस्त्यसिंहने देखा है। क्या इसका तात्पर्य यह है कि उनके समय तक 'स्याद्वाद' शब्द जैनोंने अपनाया नहीं था?[4] आचार्य अगस्त्यसिंहने लिखा है कि–"सिया इति निच्छय-संदेहवयणो। सन्देहे यथा स्याद्वादः। इतरम्मि–'सिया य केलाससमा अणंतका' [उत्त० ९. ४८] इह णिच्छयवयणो।"–पृ० १७९।

वैशेषिक संमत जीवकी-नित्यता का खंडन यह कहकर किया है कि यदि अरूपी होनेके कारण आकाशकी तरह वह नित्य माना जाय तब तो बुद्धि भी अरूपी होने से नित्य माननी पडेगी–अत एव हेतु अनैकान्तिक है, पृ० २७।

## स्थविर अगस्त्यसिंहका समय

स्थविर अगस्त्य कब हुए यह एक विचारणीय प्रश्न है। पू. मुनिश्रीने जब सर्वप्रथम इस चूर्णिको देखा तब उनका जो अभिप्राय बना था वह यहां दिया जाता है। सर्वप्रथम अपने एक पत्रमें (ता. ५–५–५१) अगस्त्यसिंहकृत दशवैकालिकचूर्णिका मात्र उल्लेख किया है[5] उसके अनन्तर जब उन्होंने इ. १९६१ में अखिल भारतीय प्राच्यविद्या परिषद के जैन विभागके अध्यक्षपदसे दिये जानेवाले व्याख्यानमें निर्देश किया है वह इस प्रकार है[6]–

"(३०) **अगस्त्यसिंह (भाष्यकारोंके पूर्व)**–ये स्थविर आर्य वज्रकी शाखामें हुए हैं। इन्होंने दशवैकालिक सूत्र पर चूर्णिकी रचना की है। यह चूर्णि दशवैकालिक सूत्र के विविधपाठभेद एवं भाषाकी दृष्टिसे बहुत महत्त्व की है। इस चूर्णिमें भाष्यकार की गाथाओं का उल्लेख न होनेसे इसकी रचना भाष्यकारों के पूर्वकी प्रतीत होती है। इसमें कई उल्लेख ऐसे भी हैं जो चालू सांप्रदायिक प्रणाली से भिन्न प्रकारके हैं। आचार्य श्री हरिभद्रने अपनी वृत्तिमें कहीं भी इस चूर्णिका उल्लेख नहीं किया है। इसका कारण यही प्रतीत होता है। विद्वानोंकी भी ज्ञातियां होती हैं। इसमें कल्किविषयक जो मान्यता चलती है और जिसका विस्तृत वर्णन तित्थोगालिय पइण्णयमें पाया भी जाता है, इस विषय में–"अणागतमट्ठं ण णिद्धारेज–जधा कक्की अमुको वा एवंगुणो राया भविस्सइ"–ऐसा लिखकर कल्किविषयक मान्यताको आदर नहीं दिया है। इस चूर्णिमें 'भणितं च वररुचिणा अंबं फलाणं मम दालिमं पियं' [पृ. १७३] इस प्रकार वररुचिके कोई प्राकृत ग्रंथका उद्धरण है। वररुचिका यह प्राकृत उद्धरण प्राकृत व्याकरण प्रणेता वररुचिके समयनिर्णय के लिए उपयुक्त होने की संभावना है। इस चूर्णिकी प्रति जेसलमेरके जिनभद्रीय ज्ञानभंडार में सुरक्षित है। इसका प्रकाशन प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी की ओरसे मेरेद्वारा संपादित होकर शीघ्र ही प्रकाशित होगा।"

इसके बाद जब उन्होंने इ. १९६६ में अपने नन्दीसूत्रचूर्णिके संपादन में अगस्त्यसिंहकृत चूर्णिका परिचय दिया वहां इस चूर्णिके विषयमें निम्न लिखा है–

---

१. आगमयुगका जैन दर्शन, पृ० ६४।

२. यह स्पष्ट है कि स्थविर अगस्त्यसिंह, आचार्य उमास्वातिके बाद हुए हैं। वे तत्त्वार्थमूल और उसके भाष्यको भगवान् उमास्वातिके नामसे ही उद्धृत करते हैं–पृ० ८५।

३. सर्वार्थसिद्धि १·५।

४. 'अणेगंतपक्ख' जैसे शब्दका प्रयोग मिलता है–पृ० २२।

५. ज्ञानांजलि पृ. २७० (गुजराती)

६. ,, पृ. ३६ (हिंदी)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"३. दशवैकालिक चूर्णिके कर्ता श्री अगस्त्यसिंहगणी हैं। ये आचार्य कोटिकगणान्तर्गत श्री वज्रस्वामीकी शाखामें हुए श्री ऋषिगुप्त क्षमाश्रमण के शिष्य हैं। इन दोनों गुरुशिष्योंके नाम शाखान्तरवर्ति होनेके कारण पट्टावलियोंमें पाये नहीं जाते। कल्पसूत्रकी पट्टावलीमें जो श्री ऋषिगुप्तका नाम है वे स्थविर आर्य सुहस्तिके शिष्य होने के कारण एवं खुद वज्रस्वामीसे भी पूर्व होने के कारण श्री अगस्त्यसिंहगणिके गुरु ऋषिगुप्तसे भिन्न हैं। कल्पसूत्रकी स्थविरावलिका उल्लेख इस प्रकार है–

**'थेरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगुत्तस्स इमे दुवालस थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था। तं जहा—**

**थेरे य अज्जरोहण १........................**

**इसिगुत्ते ९........................'**

स्थविर आर्य सुहस्ति श्री वज्रस्वामिसे पूर्ववर्ती होनेसे ये ऋषिगुप्त स्थविर दशकालिकचूर्णिप्रणेता श्री अगस्त्यसिंहके गुरु श्री ऋषिगुप्त क्षमाश्रमणसे भिन्न हैं यह स्पष्ट है। आवश्यकचूर्णि, जिसके प्रणेताके नामका कोई पता नहीं है–उसमें तपसंयमके वर्णनप्रसंगमें आवश्यकचूर्णिकारने इस प्रकार दशवैकालिकचूर्णिका उल्लेख किया है–

तवो दुविहो–बज्झो अब्भंतरो य। जधा दसवेतालियचुण्णीए चाउलोदणंतं (चालणेदाणंतं) अलुद्धेण णिज्जरट्ठं साधुसु पडिवायणीयं ८।८ आवश्यकचूर्णि विभाग २ पत्र ११७।

आवश्यकचूर्णिके इस उद्धरणमें दशवैकालिकचूर्णिका नाम नजर आता है। दशवैकालिक सूत्र के ऊपर दो चूर्णियां आज प्राप्त हैं– एक स्थविर अगस्त्यसिंहप्रणीत और दूसरी जो आगमोद्धारक श्री सागरानन्दसूरिमहाराजने रतलामकी श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी जैन श्वेताम्बर संस्थाकी ओरसे संपादित की है जिसके कर्ताके नामका पता नहीं मिला है और जिसके अनेक उद्धरण याकिनी महत्तरापुत्र आचार्य श्री हरिभद्रसूरिने अपनी दशवैकालिक सूत्रकी शिष्यहितावृत्तिमें स्थान स्थान पर वृद्धविवरण के नामसे दिये हैं। इन दो चूर्णिओं में से आवश्यकचूर्णिकारको कौनसी चूर्णि अभिप्रेत है, यह एक कठिनसी समस्या है। फिर भी आवश्यकचूर्णिके उपर उल्लिखित उद्धरणको गौरसे देखनेसे हम निर्णयके समीप पहुंच सकते हैं। इस उद्धरण में 'चाउलोदणंतं' यह पाठ गलत हो गया है। वास्तव में 'चाउलोदणंतं' के स्थानमें मूलपाठ 'चालणेदाणंतं' ऐसा होगा। दशवैकालिकसूत्रकी प्राप्त दोनों चूर्णियोंको मैंने बराबर देखी है। किन्तु 'चाउलोदणंतं' का कोई उल्लेख नहीं पाया है और इसका कोई सार्थक संबंध भी नहीं है। दशवैकालिकसूत्रकी अगस्त्यसिंहीया चूर्णिमें तपके निरूपणकी समाप्ति के बाद 'चालणेदाणि' (पत्र–१९) ऐसा चूर्णिकारने लिखा है, जिसको आवश्यक चूर्णिकारने 'चालणेदाणंतं' वाक्य द्वारा सूचित किया है।......अतः मैं इस निर्णय पर आया हूं कि आवश्यकचूर्णिकारनिर्दिष्ट दशवैकालिकचूर्णि अगस्त्यसिंहीया ही है। और इसी कारण अगस्त्यसिंहीया चूर्णि आवश्यकचूर्णिके पूर्व की रचना है।

आचार्य श्री हरिभद्रसूरिने अपनी शिष्यहिता वृत्तिमें इस चूर्णिका खास तौरसे निर्देश नहीं किया है। सिर्फ रइवका (सं. रतिवाक्या) नामक दशवैकालिक सूत्र की प्रथमचूलिकाकी व्याख्यामें (पत्र २७३–२)–"अन्ये तु व्याचक्षते"–ऐसा निर्देश करके अगस्त्यसिंहीयचूर्णिका मतान्तर दिया है। इसके सिवा कहीं पर भी इस चूर्णिके नाम का उल्लेख नहीं किया है।[1]

इस अगस्त्यसिंहीया चूर्णिमें तत्कालवर्ती संख्याबन्ध वाचनान्तर–पाठभेद, अर्थभेद एवं सूत्र पाठोंकी कमी-बेशीके काफी निर्देश हैं जो अति महत्त्व के हैं।

यहां पर ध्यान देने जैसी एक बात यह है कि दोनों चूर्णिकारोंने अपनी चूर्णिमें दशवैकालिकसूत्रकी एक प्राचीन चूर्णि या वृत्तिका समानरूपसे उल्लेख रइवकाकी चूर्णिमें किया है जो इस प्रकार है—

**"एत्थ इमातो वृत्तिगतातो पदुद्देसमेत्तगाधाओ जहा–**
**दुक्खं च दुस्समाए...पदमट्ठारसमेतं वीरवरसासणे भणितं ॥ ५ ॥"**

**—अगस्त्यसिंहीया चूर्णि**

दूसरी मुद्रित चूर्णिमें (पत्र ३५८) "एत्थ इमाओ वृत्तिगाधाओ। उक्तं च–" ऐसा लिखकर उपर दी गई गाथाएँ उद्धृत कर दी हैं।

इन उल्लेखोंसे यह निर्विवाद है कि दशवैकालिकसूत्रके ऊपर इन दो चूर्णिओंसे पूर्ववर्ती एक प्राचीन चूर्णि भी थी जिसका दोनों चूर्णिकारोंने वृत्तिनामसे उल्लेख किया है।"–ज्ञानांजलि–पृ० ७८ (हिन्दी)

पूज्य मुनिजीके लेखोंसे समयके विषयमें ये नतीजे निकलते हैं–

**१ अगस्त्यचूर्णि भाष्योंके पूर्व रची गई थी।**

**२ आवश्यकचूर्णिसे भी यह प्राचीन है।**

---

१. पृ. ३८ की टिप्पणी में पू. मुनिजीने आचार्य हरिभद्रका जो पाठ उद्धृत किया है उससे यह संभव प्रतीत होता है कि आ. हरिभद्रने इस चूर्णिको देखा हो। उन्हें चूर्णिनिर्दिष्ट पाठान्तर प्रतोंमें बहुत मिले अत एव उनकी व्याख्या करना उचित नहीं जंचा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उनके ये लेख अगस्त्यसिंहीया चूर्णिके सम्पूर्ण सम्पादनके पूर्व लिखेगये थे। अत एव अत्र मुद्रितके प्रकाशमें समयविचारणा की जाय यह उचित होगा।

स्वयं पू. मुनिजीने ही अपने सम्पादन में प्रस्तुत अगस्त्यसिंहचूर्णिमें जो उद्धरण हैं उनके मूलस्थानकी शोध करके जहां जहां मूल ग्रंथोंका निर्देश किया है उनमें पृ० २, पृ० २४ तथा पृ० २०० में कल्पसूत्रभाष्यकी–क्रमसे गा० १४९, गा० १७१६[1] तथा ११६९ होनेका निर्देश किया है। तथा पृ० ८४ में मुद्रित हो जानेके बाद अपने हाथसे कल्पभाष्यकी गा० ४९४४ उद्धृत होनेका लिखा है। तथा व्यवहारभाष्यकी गा० २८९ भी प्रस्तुतके पृ० ९८ में उद्धृत है–ऐसा निर्देश किया है।

आ० हरिभद्रमें दशवैकालिकनिर्युक्तिकी जो अधिक गाथाएं मिलती हैं उन्हें यदि मूलभाष्यकी मानी जायँ तब यह भी मानना होगा कि प्रस्तुत चूर्णिमें जो ऐसी गाथाएं उद्धृत हैं वे भी भाष्यकी हैं–इसके लिए देखें पृ० २२ और २५। यहां पृ० २२ में जो हरिभद्रसंमत निर्युक्तिकी मानी गई है वह वस्तुतः सन्मति (१·१८) की गाथा है। यह भी ध्यान देने की बात है कि आचार्य हरिभद्र जिन्हें भाष्यकी गाथा मानते हैं उसे प्रस्तुतमें निर्युक्ति मानी गई हैं–इसके लिए देखें पृ० ९८, गाथा १४६।

आवश्यकमूलभाष्य भी प्रस्तुत चूर्णिमें (पृ० २६) उद्धृत है–ऐसा संकेत पू. मुनिजीने दिया है। इस गाथाको आचार्य हरिभद्रने मूलभाष्य कहा है। किन्तु वह गाथा विशेषावश्यक भाष्य (२९३६) में उपलब्ध है।

इसके प्रकाशमें पू. मुनिजी अपना पूर्वोक्त अभिप्राय अवश्य[2] बदल देते ऐसा नहीं कहा जा सकता। क्योंकि कल्पभाष्यके प्रारम्भमें ही टीकाकारका यह स्पष्टीकरण है कि प्रस्तुतभाष्य तथा व्यवहारभाष्यमें भाष्य और निर्युक्तिकी गाथाएँ मिलकर एक ग्रन्थ हो गया है[3]। अत एव दोनोंका पृथक्करण करना सरल नहीं। फिर भी यत्र तत्र टीकाकारने निर्युक्तिका निर्देश किया है। विशेषावश्यककी–वह गाथा भी प्राचीन होनेका संभव माना जा सकता है। अभिप्राय नहीं बदलनेका यह भी एक कारण हो सकता है कि प्रस्तुत चूर्णिमें जहां अनेक गाथाएँ उद्धृत की गई हैं वहां भाष्योंकी मानी जाने वाली गाथाओंकी संख्या अत्यल्प है। अन्य चूर्णिओंमें बहुतायतरूपसे भाष्य गाथाएं उद्धृत हैं जब कि यहां भाष्योंमें विद्यमान ऐसी पांच ही गाथाएँ हैं।

पू. मुनिजी अपना अभिप्राय यदि बदलते तो और कारणोंकी खोज करके ही–ऐसा मुझे लगता है। मेरा यह अभिप्राय भ्रान्त भी हो सकता है। किन्तु पू. मुनिजीकी जो विधान करनेकी शैली थी उसे देखते हुए अभी तो यही जंचता है।

अब यह देखा जाय कि आवश्यकचूर्णि से भी पूर्व यह प्रस्तुत अगस्त्यसिंहकृतचूर्णि है या नहीं। भाष्य की पूर्ववर्ती मानने पर आवश्यकचूर्णिके पूर्ववर्ती होने में संदेह का स्थान नहीं होना चाहिए किन्तु प्रस्तुत संस्करण में आवश्यकचूर्णिके उद्धरण हैं ऐसा निर्देश पू. मुनिजीने किया है–पृ. ५०, ५१ और ५४। अत एव यह जांचना जरूरी है कि वस्तुस्थिति क्या है? इन तीनों ही स्थानोंमें "जहा आवस्सए" ऐसी ही सूचना मूल चूर्णिमें है। कहीं भी आवश्यक चूर्णिमें उन कथानकों के होने की बात कही गई नहीं है। पूरी कथा के लिए 'आवश्यक' देखनेको कहा गया है। अत एव उससे अगस्त्यसिंह को वहां मुद्रित आवश्यकचूर्णि ही अभिप्रेत है ऐसा नहीं कहा जा सकता फिर भी उन स्थानोंमें कौंसमें पू. मुनिजीने आवश्यकचूर्णि के पृष्ठोंका निर्देश किया है उसका इतना ही अर्थ है कि उस उस कथा के विषयमें चूर्णि देखी जाय। इसका यह अर्थ नहीं कि वहां अगस्त्यसिंह को आवश्यकचूर्णि जो मुद्रित है वही अभिप्रेत है। जिस प्रकार प्रस्तुत दशवैकालिक की प्राचीन वृत्ति थी उसी प्रकार आवश्यककी भी प्राचीन वृत्ति होना संभव है जिसको लक्ष्य करके आचार्य अगस्त्यने आवश्यक देखने को कहा हो।

भाष्यपूर्व यदि अगस्त्यसिंह को माना जाय तब उनका समय निर्युक्ति के समय के बाद और भाष्यके पूर्व अर्थात् ई० छठी शती के मध्यमें ठहरता है।

अगस्त्यसिंहकी चूर्णिमें अन्यग्रन्थोंके या व्यक्तिओंके जो निर्देश मिलते हैं उनमें–तत्त्वार्थ (पृ. १, १६, १९, ८९ इत्यादि), कप्प (पृ. २), तंदुलवेयालिय (पृ. ३), भद्दियायरिय (पृ. ३), दत्तिलायरिय (पृ. ३), पंचकप्प (पृ. २३), वैशेषिक (पृ. २३), गोविंदवाचक (पृ. ५३), अज्जवइर (पृ. ५१), कोक्कास (पृ. ५४), पंचजातकसताणि (पृ. ६८), कक्की (कल्की) (पृ. १६६), वड्डकहा (पृ. १९९) इत्यादि ऐसे नहीं है जो उक्त समयके बाधक बन सकें।

प्रस्तुत ग्रन्थके अन्तमें दिये गये परिशिष्टोंका निर्माण श्री रमेशचन्द मालवणियाने किया है। एतदर्थ मैं उनको धन्यवाद देता हूँ।

ला. द. विद्यामंदिर,
अहमदाबाद–९
ता. १–१०–७२

**दलसुख मालवणिया**

---

१. यद्यपि इस गाथाको चूर्णिमें तो ओघनिज्जुत्ति की कहा गया है–पृ० २४।

२. संभव यह भी है कि वे बदल देते क्यों कि मूलमें जहां 'पंचकप्पे' शब्द है (पृ० २३) वहाँ उन्होंने टिप्पणमें 'पञ्चकल्पभाष्ये इत्यर्थः' ऐसा टिप्पण जोडा है। किन्तु यहाँ भी कोई 'पंचकल्प' को सूत्र न समझ ले इसी उद्देशसे 'भाष्य' शब्दका निर्देश किया है।

३. बृहत्कल्पभाष्य टीका पृ० २।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# ग्रन्थानुक्रमः


| | पृष्ठ |
|---|---|
| प्रस्तावना | १–१७ |
| ग्रन्थानुक्रमः | १९ |
| दसकालियसुत्तं | १–२७२ |
| पढमं दुमपुप्फियज्झयणं | १–३५ |
| बिइयं सामण्णपुव्वगज्झयणं | ३६–४८ |
| तइयं खुड्डियायारकहज्झयणं | ४९–६४ |
| चउत्थं छज्जीवणियज्झयणं | ६५–९७ |
| पंचमं पिंडेसणज्झयणं–पढमो उद्देसओ | ९८–१२५ |
| ,, ,, –बिइओ उद्देसओ | १२५–१३७ |
| छट्ठं महइआयारकहज्झयणं–अवरनाम–धम्मत्थकामज्झयणं | १३८–१५८ |
| सत्तमं वक्कसुद्धिअज्झयणं | १५९–१७९ |
| अट्ठमं आयारप्पणिहिअज्झयणं | १८०–२०१ |
| णवमं विणयसमाहिअज्झयणं–पढमो उद्देसओ | २०२–२११ |
| ,, ,, –बिइओ उद्देसओ | २११–२१८ |
| ,, ,, –तइओ उद्देसओ | २१९–२२३ |
| ,, ,, –चउत्थो उद्देसओ | २२४–२२९ |
| दसमं सभिक्खुअज्झयणं | २३०–२४४ |
| पढमा रइवक्का चूलिया | २४५–२६० |
| बितिया विवित्तचरिया चूलिया | २६१–२७१ |
| चुण्णिकारपसत्थिया | २७१–२७२ |
| पढमं परिसिट्ठं–दसकालियसुत्तगाहाणुक्कमो | २७३–२७७ |
| बीयं परिसिट्ठं–दसकालियनिज्जुत्तिगाहाणुक्कमो | २७८–२८० |
| तइयं परिसिट्ठं–दसकालियचुण्णिअंतग्गयगंथंतरावतरणाणुक्कमो | २८१–२८२ |
| चउत्थं परिसिट्ठं–दसकालियसुत्त–चुण्णिअंतग्गयविसेसनामाणुक्कमो | २८३–२८४ |
| पंचमं परिसिट्ठं–दसकालियचुण्णिअंतग्गयवक्खात–अवक्खातविसिट्ठसद्दाणुक्कमो | २८५–२९४ |
| सुद्धिपत्तयं | २९५–२९६ |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ णमो त्थु णं महइमहावीरवद्धमाणसामिस्स ॥

सिरिसेज्जंभवथेरविरइयं

# दसकालियसुत्तं ।

## सिरिभद्दबाहुसामिविरइयाए णिज्जुत्तीए सिरिवइरसामिसाहुब्भवसिरिअगत्थियसिंहथेरविरइयाए चुण्णीए य विभूसियं ।

## [ पढमं दुमपुप्फियज्झयणं ]

॥ ॐ नमः श्रुतदेवतायै ॥

अरहंत-सिद्ध-विदु-वायणारिए णमिय सव्वसाधू य ।
**दसकालिय**त्थमुवणीयमंगला सुणह निव्विग्घं ॥ १ ॥

**दसकालिय**त्थवित्थरवक्खाणाहिगारोऽयं । तस्स इमं पढमं **सिलोगसुत्तं**—

**१. धम्मो मंगलमुक्कट्ठं, अहिंसा संजमो तवो ।**
**देवा वि तं णमंसंति, जस्स धम्मे सदा मणो[1] ॥ १ ॥**

**१. धम्मो मंगलमुक्कट्ठं**० ति । एयस्स अत्थवित्थारणावकासे भण्णति–सव्वण्णुप्पणीयं संसारनित्थरणसमत्थं सत्थमिमं ति परमं निस्सेयसं । 'बहुविग्घाणि पुण निस्सेयसाणी'ति विग्घोवसमणत्थमज्झत्थकाला बहुविहा जोगा उद्देस-कालादिविहयो य कीरंति । वक्खाणकाले पुण सविसेसमुण्णीयंति त्ति गुरवो सुहणिसेज्जोवगया पउत्तविहिवित्थरे सुस्सूसाभिमुहे सिस्से आमंतेऊण भणंति–सोम्ममुहा ! मंगलादीणि सत्थाणि मंगलमज्झाणि मंगलावसाणाणि । सव्वसत्थसामण्णो धम्मोऽयमिति बहुवयणनिद्देसो । मंगलपरिग्गहिया य सिस्सा अवग्गहेहा-ऽवायधारणासमत्था सत्थाणं पारगा भवंति, ताणि य सत्थाणि लोगे विरायंति वित्थारं च गच्छंति, तम्हा आदि-मज्झा-ऽवसाणेसु मंगलारंभो । इदाणि य "तिण्ह वि जो जस्स उवयोगो" [ ] तं विसेसिज्जति–आदिमंगलेण ओरंभप्पभितिं[2] णिव्विसाया सत्थं पडिवज्जंति, मज्झमंगलेण अब्वासंगेण[3] पारं गच्छंति, अवसाणमंगलेण सिस्स-पसिस्ससंताणे पडिवाएंति[4] । इमं पुण सत्थं संसारविच्छेयकरं ति सव्वमेव मंगलं तहा वि विसेसो दरिसिज्जति–आदिमंगलमिह "धम्मो मंगलमुक्कट्ठं" [ अ० १ गा० १ ], धारेति संसारे पडमाणमिति **धम्मो**, एतं च परमं समस्सासकारणं ति **मंगलं** । मज्झे **धम्मत्थकाम**पढमसुत्तं–"णाण-दंसण-संपण्णं, संजमे य तवे रयं" [ अ० ६ गा० १ ], एवं सो चेव धम्मो विसेसिज्जति, यथा–"सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः" [ तत्त्वा० अ० १. १ ] इति । अवसाणे आदि-मज्झदिट्ठविसेसियस्स फलं दरिसिज्जति–"छिंदित्तु जाती-मरणस्स बंधणं, उवेति भिक्खू अपुणागमं गतिं" [ अ० १० गा० २१ ], एवं सफलं सकलं सत्थं ति सफलमज्झयणादिपरिस्स[5]मंते[6] णिदरिसंतेण भणितं भगवता । तं पुण मंगलं चउव्विहं णामादि **आवस्सगादि**अणुक्कमेण परूवेतव्वं[7] । समाणसत्थभणियस्स भवति आदिगहणेण अणुकरिसणं[8], जहा–"भूवादयो धातवः" [ पा० १. ३. १ ] । भणितं च–"आवस्सगस्स दसकालियस्स तह उत्तरज्झमायारे ।" [ आव० नि० गा० ८४ ] । तत्थ भावमंगलं पंचणमोक्कारो, अहवा "वीरं कासवगोत्तं" [ ] सव्वाणि वा थुतिवयणाणि । अहवा भावमंगलं णंदी, सा तहेव चउव्विहा, तत्थ वि भावणंदी पंचविहं नाणं ॥

---

१ **मती** अपा० ॥ २ आरम्भात् प्रभृति निर्विषादाः ॥ ३ अव्यासङ्गेन ॥ ४ प्रतिवाचयन्ति ॥ ५ परिश्रमम् अन्ते निदर्शयता ॥ ६ °**स्समंमंते** मूलादर्शे ॥ ७ प्ररूपयितव्यम् ॥ ८ अनुकर्षणम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं सवित्थरोदाहरणं पसंगेण परूवेउं णियमिज्जति[1]–इहं सुयनाणेणं अहिगारो, जम्हा सुयनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य। वक्खाणाहिगारोऽयमिति भण्णति–उद्दिट्ठ-समुद्दिट्ठ-अणुण्णातस्स अणुयोगो भवति तेण अहिगारो। सो चउव्विहो, तं जहा–चरणकरणाणुओगो सो य कालियसुयादि १ धम्माणुओगो **इसिभासियादि** २ गणियाणुओगो **सूरपण्णत्ति**यादि ३ दवियाणुओगो **दिट्ठिवादो** ४। स एव समासओ दुविहो–पुहत्ताणुओगो[2] अपुहत्ताणुओगो य। जं ऍक्कतरम्मि[3] पट्ठविते चत्तारि वि भासिज्जंति एतं अपुहत्तं, तं पुण भट्टारगाओ[4] जाव **अज्जवइरा**। ततो आरेण[5] पुहत्तं जत्थ पत्तेयं पभासिज्जति। भासणाविहिपुहत्तकरणं[6] **अज्जरक्खिय-पूसमित्ततिक-विंझादि**[7] विसेसित्ता भण्णति। इहं चरणकरणाणुओगेण अधिकारो। सो इमेहिं अणुओगदारेहिं अणुगंतव्वो। तं०—

निक्खेवेगट्ठ १-२ णिरुत्त ३ विहि ४ पवित्ती य ५ केण वा ६ कस्स ७।
तद्दार ८ भेय ९ लक्खण १० तदरिह ११ परिसा य १२ सुत्तत्थो ॥ १ ॥ [ कल्पभाष्ये गा० १४९ पत्र ४६ ]

एत्थ जं "केण वा कस्स" त्ति एतेण पसंगेण **कप्पे** जहोववण्णियगुणेण आयरिएण सव्वस्स सुयनाणस्स भाणियव्वो अणुओगो विहिसुत्तपमुहभूयं[8] ति, विसेसेण **दसकालियस्स**, इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च[9] तस्स पत्थुओ। जदि दसकालियस्स अणुओगो दसकालियं णं किं अंगं अंगाइं? सुयक्खंधो सुयक्खंधा? अज्झयणं अज्झयणा? उद्देसो उद्देसा? दसकालियं णं नो अंगं नो अंगाइं, सुयक्खंधो णो सुयक्खंधा, णो अज्झयणं अज्झयणा, नो उद्देसो उद्देसा॥

दसकालियमिति संखाणेण कालेण य निद्देसो, तम्हा दस णिक्खिविस्सामि[10], कालं णिक्खिविस्सामि, सुयं निक्खिविस्सामि, खंधं णिक्खिविस्सामि, अज्झयणं निक्खिविस्सामि, [11]उद्देसं निक्खिविस्सामि। तत्थ पढमदारं दस, ते पुण ऍक्कादिसंकलणाते[12] निप्फज्जंति, तम्हा एक्कस्स निक्खेवो कातव्वो ततो दसण्हं। एक्कस्स **दारगाधा**—

**❀ णामं ठवणा दविए माउयपद संगहेक्कए चेव।**
**पज्जव भावे य तहा सत्तेए एक्कका[13] होंति ॥ १ ॥**

णाम-ठवणातो जहा **आवस्सए**। दव्वेक्कगं जहा एक्कं दव्वं सचित्तमचित्तं मीसं वा। सचित्तं जहा एक्को मणूसो, अचित्तं जहा [14]करिसावणो, मीसं जहा पुरिसो वत्था-ऽऽभरणभूसितो। मातुयपदेक्कगं[15] तं जहा–उप्पण्णे ति वा [16]भूते ति वा विगते ति वा, [17]एते **दिट्ठिवाते** मातुयापदा। अहवा इमे माउयापदा–अ आ एवमादि। संगहेक्कगं जहा दव्वं पदत्थमुद्दिस्स एक्को सालिकणो साली भण्णति, जातिं तु पदत्थमुद्दिस्स बहवो सालयो साली भण्णति, जहा निप्फण्णा साली, ण य एक्कम्मि कणे निप्फण्णे निप्फण्णं भवति। तं संगहेक्कगं दुविहं–आदिट्ठ-मणादिट्ठं[18] च। आदिट्ठं नाम विसेसितं, अणादिट्ठं अविसेसियं। अणादिट्ठं जहा साली, आदिट्ठं कलमो। पज्जवेक्ककं पि दुविहं–आदिट्ठमणादिट्ठं च। पज्जादो गुणादिपरिणदी। तत्थ अणादिट्ठं गुणे त्ति, आइट्ठं वण्णादि। भावेक्ककमवि अणादिट्ठमादि[ट्ठं च]। अणादिट्ठं भावो, आदिट्ठं ओदइओ [ओ]वसमिओ खइओ खओवसमिओ पारिणामितो। ओदतियभावेक्ककं दुविहं–आदिट्ठमणादिट्ठं च। अणादिट्ठं ओदयिओ भावो, आदिट्ठं पसत्थमप्पसत्थं च। पसत्थं तित्थगरणामोदयादि, अप्पसत्थं कोधोदयादि। ओवसमियस्स खइयस्स य अणादिट्ठा-ऽऽदिट्ठभेदो सामण्णविसेसस्स अभावे न संभवति। [19]**केति** [20]खंयोवसमियं एवं चेव इच्छंति, तं ण भवति, जेण सम्मदिट्ठीण मिच्छदिट्ठीण य

१ नियम्यते ॥ २ पृथक्त्वानुयोगः अपृथक्त्वानुयोगश्च ॥ ३ एकतरस्मिन् प्रस्थापिते ॥ ४ भट्टारकः–भगवान् महावीरः। ५ अर्वाग्–अनन्तरम् ॥ ६ भाषणाविधिपृथक्त्वकरणं आर्यरक्षित-पुष्यमित्रत्रिक-विन्ध्यादीन् ॥ ७ दुर्बलिकापुष्यमित्र १ घृतपुष्यमित्र २ वस्त्रपुष्यमित्र ३ इति पुष्यमित्रत्रिकम् ॥ ८ विधिसूत्रप्रमुखभूतमिति ॥ ९ इमां पुनः प्रस्थापनां–प्रारम्भं प्रतीत्य ॥ १० निक्षेप्स्यामि ॥ ११ **उद्देसो** मूलादर्शे ॥ १२ एकादिसङ्कलनया ॥ १३ °**का भणिया** वृद्धविवरणे ॥ १४ कार्षापणः ॥ १५ मातृकापदैककम् ॥ १६ भूत-शब्दोऽत्र सद्भूतार्थवाचकः, ध्रुव इति योऽर्थः। **धुवे ति वा** इति वृद्धविवरणे पाठः ॥ १७ दृष्टिवादसत्कमातृकापदपरिचयार्थं **समवायाङ्ग-सूत्रे** ४६ सूत्रं द्रष्टव्यम् पत्र ६९ ॥ १८ आदिष्टं अनादिष्टं च ॥ १९ केचित् ॥ २० "इयाणिं उवसमिय-खइय-खओवसमिया–ते तिण्णि वि भावेक्कगा णियच्छणस्स ( णिच्छयणयस्स ) पसत्था चेव, एतेसिं अपसत्थो पडिवक्खो णत्थि। कम्हा? जम्हा मिच्छद्दिट्ठीणं केइ कम्मंसा खीणा केई उवसंता, खओवसमेण य कम्माणं बुद्धिपाडवादिणो गुणा संता वि तेसिं विवरीयगाहित्तणेणं उम्मत्तवयणमिव अप्पमाणं चेव, तम्हा उवस-मिय-खयिय-खओवसमियभावा सम्मद्दिट्ठिणो चेव लब्भंति" इति **वृद्धविवरणे** ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खयोवसमलद्धीओ बहुहा संभवंति, तम्हा दुविहत्तणं चेव। पारिणामिओ – अणादि[ट्ठा-ऽऽदिट्ठ]पारिणामियभावेक्ककं सामण्ण-विसेसभेदेण तहेव। जं आदिट्ठं तं सादियपारिणामियं अणादियपारिणामियं च। तत्थ सादियपारिणामिय-ऐक्ककं कसायपरिणयो जीवो कसायो, अणादियपारिणामियएक्ककं जीवो जीवभावपरिणयो सैता एवमादि।

इह कयरेण ऐक्ककेण अहिकारो?, सव्वण्णुभासिए का एक्कीयमयविचारणा? तहा वि वक्खाणभेदपदरिसणत्थं कितिनिमित्तं गुरूणं भण्णति – **भद्दियायरिओवएसेणं** भिन्नरूवा एक्कका दससद्देण संगिहीया भवंति [त्ति] संगहेक्ककेण अहिकारो, **दत्तिलायरिओवएसेण** सुयनाणं खयोवसमिए भावे वट्टति त्ति भावेक्ककेण अहिगारो, उभयमविरुद्धं, भावो एवं विसेसिज्जति॥ १॥ दुयादिपरूवणावसरे दस परूविज्जंति, एवं सेसं परूवियं भवति, तम्हा दसगनिक्खेवो। सो छव्विहो, तं जहा—

**[ णामं ठवणा दविए खेत्ते काले तहेव भावे य।**
**एसो खलु णिक्खेवो दसगस्स उ छव्विहो होति॥ २॥ ]**

**[णामं ठवणा दविए०** गाधा।] णामदस ठवण० दव्व० खेत्त० काल० भाव०। णाम-ठवणाओ गताओ। दव्वदस सचित्तादि जहा एक्कतो। खेत्तदस आकासपदेसा दस। कालदस "बाला मंदा"० जहा **तंदुलवेयालिए** [गा० ३१]। **भावदस** एए च्चेव दसऽज्झयणा॥ २॥ काले त्ति दारं तत्थ गाधा—

**❀ दव्वे अद्ध अहाउय उवक्कमे देस कालकाले य।**
**तह य पमाणे वण्णे भावे पगयं तु भावेणं॥ ३॥**

एसा सव्वा गाहा विभासियव्वा जहा **सामाइयनिज्जुत्तीए** [गा० ६६० हा० वृ० पत्र २५७-१ चूर्णि भा० १ पत्र ३४०] तहा इहं पि। दिवस[प]माणकालेणाहिगारो, तत्थ वि ततियपोरुसीए पत्थुयं ति तीए अहिगारो॥ ३॥

दस कालो य त्ति वण्णियं। उभयपदनिप्फण्णं नामं **दसकालियं**। तत्थ कालादागयं विसेसिज्जति— चोद्दसपुव्विकालातो भगवतो वा पंचमातो पुरिसजुगातो, "तत आगतः" [पाणि० ४. ३. ७४] इति ठप्रत्ययः, कालं वा सव्वपज्जाएहिं पैरिहीयमाणमभिक्ख कयं एत्थ "अधिकृत्य कृते ग्रन्थे" [पाणि० ४. ३. ८७] स एव ठप्रत्ययः, तस्य इयआदेशः, दशकं अज्झयणाणं कालियं निरुत्तेण विहिणा ककारलोपे कृते **दसकालियं**। अहवा वेकालियं मंगलत्थं पुव्वण्हे सत्थारंभो भवति, भगवया पुण **अज्जसेज्जंभवेणं** कहमवि अवरण्हकाले उवयोगो कतो, कैालातिवायविग्घपरिहारिणा य निज्जूढमेव, अतो विगते काले विकाले दसकमज्झयणाण कतमिति **दसवेकालियं**। चउपोरिसितो सज्झायकालो तम्मि विगते वि पैढिज्जतीति विगयकालियं **दसवेकालियं**। दसमं वा वेतालियोपजातिवृत्तेहिं णियमितमज्झयणमिति **दसवेतालियं**। इदाणिं सुयक्खंध-ऽज्झयणुद्देसा सविसेसमणुयोगदारविहिणा भाणियव्वा। किंच— अवरण्हकाले णिज्जूढं ति निज्जूहणं भणियं, दसनिक्खेवेण परिमाणमवि, तह वि कत्तारं हेउमागमसुद्धिमज्झयणपरिमाणणियम[म]त्थाणुपुव्विनियमं च संकलितेहिं भण्णति—

---

१ °**भावेकेकं** मूलादर्शे॥ २ °**एकेकं** मूलादर्शे॥ ३ सदा॥ ४ **एकेकेण** मूलादर्शे॥ ५ "बाला १ मंदा २ किड्डा ३ बला य ४ पन्ना य ५ हायणी चेव ६। पवंचा ७ पब्भार ७ मम्मुही ८ सायणी य ९ दसमा उ कालदसा १०॥" इति पूर्णगाथा। दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्त्यादर्शेषु **तन्दुलवैतालिके** च "बाला किड्डा मंदा" इति पाठ उपलभ्यते, **श्रीहरिभद्रसूरि**चरणैरेनमेव पाठमनुसृत्य व्याख्यातमस्ति। किञ्च— **चूर्णिकृद्-वृद्धविवरणकृ**त्सम्मतः "बाला मंदा किड्डा" इति पाठस्तु नोपलभ्यते क्वचिदपि॥ ६ परिहीयमाणमभीक्ष्य कृतम्॥ ७ कालातिपातविघ्नपरिहारिणा च निर्यूढमेव॥ ८ पठ्यत इति॥ ९ अपराह्णकाले निर्यूढमिति निर्यूहणम्॥ १० सङ्कलयद्भिः॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**जेण व जं व पडुच्चा जत्तो जावंति[1] जह य ते ठविया ।**
**सो तं च तओ ताणि य तहा य कमसो कहेयव्वं ॥ ४ ॥**

**जेण व जं व पडुच्चा०** गाधा । **जेणं** ति कत्ता निद्दिट्ठो, गोरवट्ठावणनिमित्तं सिस्साणं, 'महापुरिसेणं भणियं' ति आयेरेण सत्थं पढंति ।

**वद्धमाणसामिस्स सामायियकमेण** निग्गमे भणिये, तयणु गणहराणं **सुधम्मसामि-जंबुणाम-प्पभवाण** य । **पभवस्स** कयाइ चिंता जाया – को अव्वोच्छित्तिसमत्थो[2] गणहरो होज्जा ? । सगणे कओवओगो अपेच्छमाणो संघे य घरत्थेसु[3] उवओगो कतो । उवउत्तो पासति **रायगिहे सेज्जंभवं** बंभणं जण्णे दिक्खियं, 'एसेवऽत्थु'[4] त्ति अवधारए । **रायगिहं** गंतुं संघाडगं वावारेति – अज्जो ! जण्णवाडं भिक्खट्ठाए गंतुं धम्मलाभेह[5], तत्थ तुब्भे अतिच्छाविज्जिहिह[6] ताहे भणेज्जह "अहो ! तत्तं न ज्ञायते" । तेहिं जहासंदिट्ठमणुट्ठियं । तेण **सेज्जंभवेण** दारमूलट्ठिएणं सोउं चिंतियं – एते उवसंता तवस्सिणो असंतं न वयंतीति । अज्झावगमुवगंतुं भणति – किं तत्त्वम् ? । सो भणति – वेदास्तत्त्वम् । तेण असिं कड्ढिऊण भणियं – कहय, सीसं ते छिंदामि जति ण कहेसि । उवज्झाएण भणियं – "एयं परं सीसच्छेदे कहेतव्वं" ति एस पुण्णो समयो तं कधेमि – आरुहंतो धम्मो तत्त्वम्, जेण एयस्स जूवस्स हेट्ठा रयणमयी अरहंतपडिमा वेदमंतेहिं थुव्वति[7] । ताहे सो उवज्झायस्स पाएसु पडिउं जन्नोवक्खेवं[8] च से दातुं निग्गतो ते साधुणो गवेसंतो [गओ] आयरियसगासं । गुरवो साधू य वंदित्ता भणति – को धम्मो ? । आयरिया उवयुत्ता – 'इमो सो' त्ति णातो । साहुधम्मे कहिते पव्वतितो, अणुक्कमेण चोद्दसपुव्वी जातो । **जेण व** एतं गतं ।

जदा पव्वइतो तदा से भज्जा गब्भिणी, तं दट्ठुं लोगो सयणो य परितप्पति – तरुणी अपुत्ता य, किंचि वा ते पोट्टे ? – त्ति पुच्छंति । सा भणति – मणागं लक्खेमि । समते[9] दारतो जातो । गते बारसाहे सयणेण नामं कतं – जम्हा पुच्छिते ते 'मणागं' ति भणियं तम्हा **मणगो** । अट्ठवरिसितो[10] जातो मायरिं भणति – को मम पिता ? । सा भणति – **सेयंपडतो**[11] पव्वइतो । सो णासित्ता पिउपासं पट्ठितो । तदा आयरिया **चंपाए** विहरंति । सो **चंपं** गतो । गुरूहिं सण्णाभूमिं निग्गतेहिं दिट्ठो । वंदिता य तेणं । दिट्ठे गुरूण सिणेहो जातो, तस्स वि दारगस्स । आभट्ठो[12] गुरूहिं – भो दारग ! कतो आगम्मति ? । सो भणति – **रायगिहाओ** । तत्थ तुमं कस्स पुत्तो णत्तुओ वा ? । भणति – **सेज्जंभवो** बंभणो तस्स अहं पुत्तो, सो पव्वतितो । तेहिं भणियं – तुमं किं आगतो ? । भणति – पव्वइस्सं, तं ता तुब्भे जाणह ? । ते भणंति – जाणामो । आह – सो कहिं ? । ते भणंति – सो मम मित्तो सरीरभूतो, पव्वयाहि मम मूले, तं पि पेक्खिहिसि । तेण भणियं – एवं होउ । पव्वावितो य । आयरिया आगंतुं पडिस्सए इरियापडिक्कंता आलोएंति – संवित्तो[13] पडुपण्णो अज्जो सो (अज्जेसो) पव्वावितो । गुरवो उवउत्ता – एयस्स किं आउं ? । णायं – छम्मासा । अद्धितीकया[14] चिंतेंति – इमस्स थोवं आउं, **आयाराती** गंथा समुद्दभूया आयतजोगा य, एस तवस्सी अणायसिद्धंतपरमत्थो कालं करेहिति, किं कायव्वं ? । चिंतियं च णेहिं – चरिमो[15] चोद्दसपुव्वी अवस्सं निज्जूहति,

---

१ **जावतिय** वी० । एनं पाठभेदमनुसत्यैव **वृद्धविवरणे** व्याख्यानं वर्तते । तथाहि — "जेण निज्जूढं सो भाणितव्वो १ जं वा पडुच्च निज्जूढं २ [ जत्तो वा णिज्जूढाणि ३ ] जइ वा णिज्जूढाणि ४ जाए वा परिवाडीए अज्झयणाणि ठवियाणि ५, पंच कारणाणि भाणियव्वाणि ।" इति ॥ २ अव्यवच्छित्तिसमर्थः ॥ ३ गृहस्थेषु ॥ ४ **एस वऽत्थु** मूलादर्शे । एष एवास्तु इति अवधारयति ॥ ५ धर्मलाभयत ॥ ६ अतिक्रामयिष्यथ ॥ ७ स्तूयते ॥ ८ यज्ञोपक्षेपम् ॥ ९ समये दारको जातः ॥ १० अष्टवार्षिको जातः मातरं भणति ॥ ११ श्वेतपटः प्रव्रजितः । स नंष्ट्वा पितृपार्श्वं प्रस्थितः ॥ १२ आभाषितः ॥ १३ सवित्तः पटुप्रज्ञ आर्यः स (अयेषः) प्रव्राजितः ॥ १४ अधृतीकृतः ॥ १५ "तं चोद्दसपुव्वी कहिं पि कारणे समुप्पण्णे णिज्जूहइ, दसपुव्वी पुण अपच्छिमो अवस्समेव णिज्जूहइ, ममं पि इमं कारणं समुप्पण्णं तो अहमवि णिज्जूहामि" इति **वृद्धविवरणे हारिभद्रीवृत्तौ च** ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोद्दस(?दस)पुव्वी वि कारणे, मम वि इमं कारणं–एयस्स अणुग्गहो तो निज्जूहामि । तहेव आढत्ता निज्जूहिउं । ते वि दस वि अज्झयणा निज्जूहिज्जंता विकाले निज्जूढा थेवावसेसे दिवसे तेण **दस[वे]कालियं** ति ॥ ४ ॥

**जं च पडुच** [त्ति] गतं । जत्तो त्ति दारं, एत्थ **निज्जुत्तिगाधाओ**—

**आयप्पवायपुव्वा णिज्जूढा होइ धम्मपण्णत्ती ।**
**कम्मप्पवायपुव्वा पिंडस्स तु एसणा तिविधा ॥ ५ ॥**
**सच्चप्पवातपुव्वा णिज्जूढा होति वक्कसुद्धी उ ।**
**अवसेसा णिज्जूढा णवमस्स उ ततियवत्थूतो ॥ ६ ॥**
**बितिओ वि य आदेसो गणिपिडगातो दुवालसंगातो ।**
**एयं किर णिज्जूढं मणगस्स अणुग्गहट्ठाए ॥ ७ ॥**

**आयप्पवायपुव्वा०** गाहा । **सच्चप्पवात०** । **बितिओ वि य आदेसो०** । **आयप्पवायपुव्वातो धम्मपण्णत्ती** निज्जूढा, सा पुण छजीवणिया । **कम्मप्पवायपुव्वाओ पिंडेसणा** । आह चोदगो–**कम्मप्पवायपुव्वे** कम्मे वण्णिज्जमाणे को अवसरो पिंडेसणाए ? । गुरवो आणवेंति–असुद्धपिंडपरिभोगो कारणं कम्मबंधस्स, एस अवकासो । भणियं च **पण्णत्तीए**–"आहाकम्मं णं भंते ! भुंजमाणे कति कम्म०" [ भग० श० १ उ० ९ सू० ७९ ] सुत्तालावओ विभासितव्वो ॥ ५ ॥

**सच्चपवायाओ वक्कसुद्धी** । **अवसेसा** अज्झयणा पच्चक्खाणस्स **ततियवत्थूतो** ॥ ६ ॥

**बितियादेसो** बारसंगातो जं जतो अणुरूवं ॥ ७ ॥

जत्तो त्ति गतं । जावन्ति दारं, तं निद्दिसति–**दुमपुप्फियादीणि सभिक्खुकावसाणाणि** दस **रतिवक्कचूलियातो चूलुत्तरचूलातो** ॥ जावंति गतं । जह ठविय त्ति दारं, एत्थ इमाओ पंच **निज्जुत्तिगाहाओ**—

**पढमे धम्मपसंसा सो य इहेव जिणसासणम्मि त्ति १ ।**
**बितिए धितीए सक्का काउं जे एस धम्मो त्ति २ ॥ ८ ॥**
**ततिए आयारकहा उ खुड्डिया ३ आयसंजमोवातो ।**
**तह जीवसंजमो वि य होति चउत्थम्मि अज्झयणे ४ ॥ ९ ॥**
**भिक्खविसोधी तव-संजमस्स गुणकारिया तु पंचमए ५ ।**
**छट्ठे आयारकहा महती जोग्गा महयणस्स ६ ॥ १० ॥**
**वयणविभत्ती पुण सत्तमम्मि ७ पणिहाणमट्ठमे भणियं ८ ।**
**णवमे विणओ ९ दसमे समाणियं एस भिक्खु त्ति १० ॥ ११ ॥**
**दो अज्झयणा चूलिय विसीययंते थिरीकरणमेगं १ ।**
**बितिए विवित्तचरिया असीयणगुणातिरेगफला २ ॥ १२ ॥**

**पढमे धम्मपसंसा०** । पंच वि संहियाणुक्कमेण उच्चारेत्ता अणुपुव्वेणं अत्थो विवरिज्जति–णवधम्मस्स असम्मोहत्थं पढमज्झयणे धम्मो पसंसिज्जति, सो य इहेव जिणसासणे एयं णियमिज्जति १ । बितिए पद्दाणं एयं धम्मकारणं ति धितिपरूवणं, कधं ? "जस्स धिती तस्स तवो०" [ ] २ ॥ ८ ॥

१ °णायरे° वी० ॥ २ "जस्स धिती तस्स तवो जस्स तवो तस्स सोग्गई सुलहा । जे अधितिमंतपुरिसा तवो वि खलु दुल्लहो तेसिं ॥" इति पूर्णा गाथा **वृद्धविवरणे** ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आयारे धिति करणिज्ज त्ति ततियज्झयणं **खुड्डियायारो** भणितो ३। आयारो पुण छक्कायदया पंच महव्वयाणि [ त्ति ] खुड्डियायाराणंतरं **धम्मपण्णत्ती** ४ ॥ ९ ॥

तदणु धम्मे धितिमतो आयारट्ठियस्स छक्कायदयापरस्स णासरीरो धम्मो भवति, पहाणं च सरीरधारणं पिंडो त्ति **पिंडेसणावसरो**। अहवा छज्जीवणियाए पंच महव्वया भणिता ते मूलगुणा, उत्तरगुणा पिंडेसणा, कहं? "पिंडस्स जा विसोधी०" [ व्यव० भा० उ० ३ गा० २८९ ] अतो **छज्जीवणिकायाऽणंतरं पिंडेसणा**। छज्जीवणितोवदिट्ठसव्वमहव्वयसंरक्खणं ति वा तदणंतरं **पिंडेसणा**—पाणातिवातरक्खणं ताव "उदओल्लेण हत्थेण दव्वीए भायणे०" [ अ० ५ उ० १ गा० ३३ ] एवमादि, मुसावादे "तवतेणे वतितेणे" [ अ० ५ उ० २ गा० ४४ ], [अदिण्णादाणे] "कवाडं णो पणोल्लेज्जा ओग्गहं से अजातिया।" [ अ० ५ उ० १ गा० १८ ], मेहुणे "ण चरेज्ज वेससामंते" [ अ० ५ उ० १ गा० ९ ], पंचमे "अमुच्छितो भोयणम्मी" [ अ० ५ उ० २ गा० २५ ] मुच्छा परिग्गहो सो निवारिज्जति ५। छट्ठे **आयारकहा** पुव्वेण अभिसंबज्झते—गोयरग्गगयमणेसणं पडिसेहितो कोति आयारं पुच्छेज्जा तत्थ "गोयरग्गपविट्ठो उ न निसीएज्ज कत्थति। कधं वा ण पबंधेज्ज" [ अ० ५ उ० २ गा० ८ ] त्ति ण कहेति, भणति तु—जति अत्थित्तं गुरुसगासं एह ते सविसेसं कहयंति, ततो जायकोउहल्ला एंति "रायाणो रायमच्चा य०" [ अ० ६ गा० २ ] सिलोगो ६ ॥ १० ॥

तदणु सव्वदोसपरिसुद्धं गुरवो वयंति वक्कमिति **वक्कसुद्धीए** अवसरो ७। **आयारपणिही**संबंधो—गुरवो अक्खेवणादिकहाकुसला 'आयारहरणीयो य लोगो' त्ति रायातीए आमंतेउं भणंति—सोम्ममुहा! "आयारपणिहिं लद्धुं०" [ अ० ८ गा० १ ] सिलोगो ८। णवमज्झयणसंबंधो—तेसिं कोति सवणाणंतरमायारं पडिवज्जेज्जा तस्स गुरुसमाराहणत्थमुपदिसति **विणयसमाहिं**, अवि य—"विणतो सासणे मूलं०" [ आव० नि० गा० १२२८ ] ९। **सभिक्खुयं** न केवलमणंतरेण णवहिं वि अज्झयणेहिं अभिसंबज्झति, कहं? जो धम्मे धितिसंपण्णो आयारत्थो छक्कायदयावरो एसणासुद्धभोगी आयारकहणसमत्थो विचारियविसुद्धवक्को आयारे पणिहितो विणयसमाहियप्पा स भिक्खु त्ति **सभिक्खुयं** १० ॥ ११ ॥

सेसत्थसंगहत्थं मउडमणित्थाणीयाणि दो चूलज्झयणाणि। **रतिवक्कचूलिया**—जम्मि ठितो भिक्खू भवति एस आयारसमुदओ धम्मो, धम्मट्ठिओ विसायं काहिति त्ति सीयणे दोसा पढमाए दरिसिया १। बितियाए असीयणगुणा फलं च सकलस्स धम्मप्पयासस्स[1] "सुरक्खितो सव्वदुहाण मुच्चति ॥ त्ति बेमि" [ चू० २ गा० १६ ] २ ॥ १२ ॥

**दसकालियस्सेह**[2] ( ? स्स उ इहं ) पिंडत्थो वण्णितो समासेणं।
एत्तो एक्केकं पुण अज्झयणं कित्तयिस्सामि[3] ॥ १ ॥

एयाणि **दुमपुप्फियादीणि सभिक्खुयावसाणाणि** दस अज्झयणाणि। तत्थ पढमज्झयणं **दुमपुप्फिया**, तस्स चत्तारि अणुओगद्दारा। तं०—उवक्कमे निक्खेवे अणुगमो णयो। तत्थ उवक्कमो जहा **आवस्सए**, णिक्खेवो य ओहनिप्फण्णो। नामनिप्फण्णो—दुमपुप्फिय त्ति, दुपयमभिहाणं दुमे त्ति पदं पुप्फे त्ति पदं। दुमे **निज्जुत्तिगाधा**—

**णामदुमो ठवणदुमो दव्वदुमो चेव होति भावदुमो।**
**एमेव य पुप्फस्स वि चउव्विहो होति णिक्खेवो ॥ १३ ॥**

**णामदुमो ठवणदुमो०**। णाम-ठवण-दव्वाणि जहा **आवस्सए**, णवरं दुमाभिलावेण। जाणगसरीर-भवियसरीरतव्वतिरित्ता रुक्खा विगप्पेण भाणितव्वा। भावदुमो दुविहो—आगमतो नोआगमतो य। आगमतो जो

१ धर्मप्रयासस्य इत्यर्थः ॥ २ **दसवेयालियस्स उ इहं पिंडत्थो** वृद्धविवरणे। **दसकालियस्स एसो पिंडत्थो** हाटी० निर्युक्ति गा० २५ ॥ ३ **वन्नयिस्सामि** वृद्धविवरणे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुमत्थाधिगारजाणतो 'एतेहिं कम्मेहिं दुमेसु उववत्ती' तम्मि णाणे उवउत्तो । नोआगमतो दुमनामा-गोताइं कम्माइं वेदेंतो भावदुमो । आह चोदतो–दुमणामा-गोताणि वेदेंतो भवतु भावदुमो, जं पुण तदुवओगेणं भावदुमो तदसमंजसं, जति पुण एवं होज्जा तो अग्गिविण्णाणोवउत्तो पुरिसो दहण-पयण-पगासणाणं कत्ता होज्जा । गुरवो भणंति–विण्णाणं वेयणा भावो अभिप्पातो त्ति तुल्लं, लोगे वि भण्णति–को एयस्स भावो?, अभिप्पाओ त्ति वुत्तं भवति, ण य विन्नाणवतिरित्तो अप्पा, तम्हा भवति दुमविण्णाणोवउत्तो भावदुमो । दव्वदुमेण अधिगारो ॥ १३ ॥

एत्ताहे दुमएगट्ठियाइं, जहा इंदस्स मघवं-पुरंदरादीणि, ताणि पुण—

**दुमा य १ पायवा २ रुक्खा[1] ३ विडिमी य ४ अगा ५ तरू ६ ।**
**कुहा ७ महीरुहा ८ वच्छा ९ रोवंगा[2] १० भंजगा वि य ११ ॥ १४ ॥**

**दुमा य पायवा रुक्खा०** गाहा । भूमीय आगासे य दोसु माया **दुमा**, अहवा द्रुः–साहा ताओ जेसिं विज्जंति ते **द्रुमा** १ । पा पाणे धातुः रक्खणे वा, पादेहिं पिबंति पालिज्जंति वा **पायवा**, पाया–मूला[3] पिज्जंति तेसु तेसु कारणेसु २ । **रुक्खा**[4] वृक्षाः, एतस्स अवब्भंसो एस ३ । विडिमाणि जेसिं विज्जंति ते **विडिमी** ४ । अगमणाद् **अगा** ५ । अत्थाहमुदगं तरंति तेहिं **तरवो** ६ । कु त्ति भूमी तीए धारिज्जंतीति **कुहा** ७ । महीए रुहंतीति **महीरुहा** ८ । सुतप्रियभवनं **वच्छा**, पुत्ता इव रक्खिज्जंति **वच्छा** ९ । रुप्पंति रोपणीया वा **रोपका** १० । "भञ्जो भंगे" भज्जंतीति भंजका ११ ॥ १४ ॥ दुमे त्ति गतं ।

पुप्फे त्ति दारं, तं पि चतुव्विहं जहा दुमो तहेव । दव्वपुप्फेण[6] अधिकारो । एगट्ठियाणि[7] से पुप्फं फुल्लं कुसुमं सुमणं एवमादीणि । जहा रुक्खस्स तहा [पुप्फस्स] सणिरुत्तेसु भणिएसु इदाणिं भिण्णपयसमसणं[8] समासो– एगीभावगमणं सो कीरति–इह छट्ठीतप्पुरिसो, दुमस्स पुप्फं दुमपुप्फं, दुमपुप्फोवमाणपहाणत्थमज्झयणं, गहादिविहितः [पा० ४. २. १३८] ठप्रत्ययः, दुमपुप्फियं ॥ तस्स इमे अत्थाहिगारा—

**दुमपुप्फियं[9] च १ आहारएसणा २ गोयरे ३ तया ४ उंछे ५ ।**
**मेस ६ जलोया ७ सप्पे ८ वण ९ ऽक्ख १० उंसु[10] ११ पुत्त १२ गोलु १३ दए १४ ॥ १५ ॥**

**दुमपुप्फियं च आहारएसणा०** गाधा । **दुमपुप्फियं** ति वा **आहारेसणे** त्ति वा एवं पयविभागो । एतेहिं ओवम्मं ति एते अज्झयणत्था । जहा दुमस्स पुप्फेहिंतो अकयमकारियं भमरो रसं आहारेति, ण य पुप्फस्स विणासो किलामो वा भवति, एवं सव्वेसणासुद्धं गिहीणं पीलं अकरेंतो साधू आहारं गेण्हति १ ।

**आहारएसण** त्ति गवेसण-गहण-घासेसणासु जतितव्वं २ ।

---

१ वृद्धविवरणकृता **रुक्खा विडिमी अगमा तरू** इति पाठभेदानुसारेण विवृतमस्ति । श्री**हरिभद्र**पादैः पुनः **रुक्खा अगमा विडिमी तरू** इति पाठानुसारेण व्याख्यातमस्ति, निर्युक्त्यादर्शेषु तु **रुक्खा अगमा विडिमा तरू** इति पाठो दृश्यते ॥ २ **रोवगा रुजगा वि य** इति **वृद्धविवरणकृ**त्सम्मतः पाठः, दृश्यतां टिप्पणी ५ । **रोवगा रुंजगा वि य** इति **हारिभद्रीवृत्तौ**, निर्युक्तिप्रतिष्वयमेव पाठ उपलभ्यते । **रोवगा रुंजगा दि य** खं० ॥ ३ **मूला छिज्जंति** मूलादर्शे । "पादा-मूला भण्णंति" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ४ "रु त्ति पुहवी, ख त्ति आगासं, तेसु दोसु वि जहा ठिया तेण रुक्खा; अहवा रुः–पुढवी, तं खायंतीति रुक्खा । विडिमाणि जेण अत्थि तेण विडिमी" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ५ "रु त्ति पिथिवी, तीय जायंति त्ति रुजगा" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ६ **भावपुप्फेण** मूलादर्शे । "दव्वपुप्फेण अहिगारो" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ७ "पुप्फा य कुसुमा चेव फुल्ला य पसवा वि य । सुमणा चेव सुहुमा य सुहुमकाइयाणि य ॥ १ ॥" इति पुष्पैकार्थिकानि ॥ ८ **भिण्णपयपसमणं** मूलादर्शे ॥ ९ **दुमपुप्फिया य आहार°** सर्वासु निर्युक्तिप्रतिषु वृद्ध। **हरिभद्र**पादैरप्ययमेव पाठः स्वीकृतोऽस्ति ॥ १० **उसु गोल पुत्तुदए** इति पाठः सर्वासु निर्युक्तिप्रतिषूपलभ्यते, एनमेव पाठमनुसृत्य श्री**हरिभद्राचार्यै**र्व्याख्या कृताऽस्ति । **चूर्णि-वृद्धविवरणकृ**त्सम्मतस्तु पाठ उपरि उल्लिखित एव, किन्तु नोपलभ्यतेऽयं पाठः कुत्राप्यादर्शे इति ॥

**गोयरे** त्ति गहणाविसेसेण दरिसिज्जति – एगम्मि सेट्ठिकुले **वच्छओ** केण वि सामिसालप्पमाएण दिवसं खुह-पिवासिओ सव्वालंकारविभूसियाए वहूए दिण्णं चारिं पाणियं च पडिच्छति तीसे रूवे अण्णेसु य विसएसु अरत्त-दुट्ठो, एवं साहुणा गोयरगएणं दायगसरीरे अण्णत्थ वा अरत्त-दुट्ठेणं भक्खं घेत्तव्वं ३ ।

**तये** त्ति "चत्तारि घुणा पण्णत्ता" **ठाणा**लावगा[1] [स्था० ४ सू० २४३ पृ० १८५-१] भाणितव्वा, तयक्खायी णामेगे णो सारक्खाती चउभंगो ४, एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता ४ ।

**उंछे** त्ति तं चउव्विहं, णाम-ठवणातो तहेव, दव्वुंछं उंछवित्ती मादीणं[2], भावे अण्णाएसणं[3] ५ ।

**मेसे** त्ति जहा मेसो थिमितं पिबति, एवं साहुणा वि दायओ[4] बीयादिसंघट्टणे न डहरप्फरेण वारेयव्वो जहा मुज्झति, किंतु उवाएण सणियं 'परिहराहि' त्ति ६ ।

**जलोय** त्ति जलोया वि एमेव, अयं विसेसो – जइ वि दायओ पुव्वं केणति[5] कारणेण पदोसमावण्णो तं पि उवएसवयणेहिं निद्दोसं करेति जहा जलुगा ७ ।

**सप्पे** त्ति घासेसणाविसेसेणं, जहा सप्पो सर त्ति बिलं पविसति तहा साहुणा अरत्त-दुट्ठेणं हणुयाओ हणुयं असंकामेंतेण भोत्तव्वं, जहा वा सप्पो एगंतदिट्ठी एवमेसणाए "उवयुज्जिऊण पुव्वं तल्लेसे०" [ओघ० नि० गा० २८७ पत्र ११६-२] गाधा ८ ।

**वणे** त्ति आलंबणविसेसेणं जहा 'व्रणो मा फुट्टिहिति' त्ति मक्खणादिदाणं एवं जीवस्स सरीरट्ठितिनिमित्तमाहारो, ण रूवादिहेतुं ९ ।

**अक्खे** त्ति आलंबणफलनिरूवणं–जहा अक्खो जत्तासाहणत्थमब्भंगिज्जति तहा संजमभरवहणट्ठमाहारो १० ।

**उसु** त्ति अप्पमायफलवण्णणं – जहा कयजोगो वि रहितो[6] उवउत्तो लक्खं विंधति ण अणुवउत्तो, एवमुवउत्तो हिंडंतो साधू संजमलक्खं लभति ११ ।

**पुत्ते** त्ति वच्छगदिट्ठंतातो फुडयरोपसंहारपुव्वकारिसु[7] दिट्ठंतो दरिसिज्जति त्ति, जीवसरीरमतो[8] त्ति पुत्तमंसतुल्लो वि आहारो कारणत्थमाहारेतव्वो, जहा **सुंसुमा**पिति-भायादीहिं[9] १२ ।

**गोले** त्ति गहणेसणाए अतिभूमीगमणिरोहत्थं भण्णति – जतुगोलमंणया[10] कातव्वा, जतुगोलतो अग्गिमारोवितो[11] विघिरति, दूरत्थो असंतत्तो रूवं ण निव्वत्तेति, साहू वि दूरत्थो अदीसमाणो भिक्खं न लभति एसणं वा न सोहेति, आसण्णे अप्पत्तियं भवति तेणातिसंका[12] वा, तम्हा कुलस्स भूमिं जाणेज्जा १३ ।

**उदये** त्ति दुमपुप्फियादिपयाणमत्थो सदिट्ठंतो सफलो य नियमिज्जति–जहा कोति **वाणियतो** दिसानिग्गतो छ रयणाणि विढवेत्ता चोराडवीते[13] असमत्थो नित्थारेउं छिण्णचीवरवसणो फुट्टपत्थरहत्थो कहिंचि ठवियरयणो उम्मत्तगवेसो[14] **रयणवाणियओ** त्ति कयाभिण्णाणो गच्छंतो समुप्पण्णकोउहल्लेहिं गहियविसज्जिओ तिक्खुत्तो भाविए 'पिसाओ' त्ति परिच्छिन्नो, रयणहत्थो तेणेव विहिणा पहावितो पिपासाभिभूतो खल्लरं[15] मत-कुहितसत्तवसा-रुहिरमिस्सपाणियमुपगम्म पाण-रयणनित्थारणत्थं अणस्सायंतो उदयं पातुं सरयणोतिण्णो[16] रयणविणिओगफलं पत्तो, एवं रातीभोयणवेरमणछट्ठाणि पंचमहव्वयरयणाणि विसयचोरविघट्टियसंसाराडवीए अंत-पंत-फासुयाहारकयपाणधारणो नित्थारेत्ता मोक्खपुरमुवगम्म सुही भवति १४ ॥ १५ ॥

---

१ **स्थानाङ्गसूत्रस्य** आलापका इत्यर्थः ॥ २ मायिनाम् ॥ ३ अज्ञातैषणम्, अज्ञातपिण्डैषणमित्यर्थः ॥ ४ दायकः ॥ ५ केनचित् ॥ ६ रथिकः ॥ ७ **फुडयरोसंपहार**° मूलादर्शे ॥ ८ जीवशरीरमयः ॥ ९ एतदुदाहरणं **ज्ञाताधर्मकथाङ्गे**ऽष्टादशे **सुंसुमा**ज्ञाताध्ययने द्रष्टव्यम् ॥ १० °**मयणा** मूलादर्शे। जतुवृत्तमणिका इत्यर्थः ॥ ११ अग्निमारोपितः 'विघिरति' द्रवीभवति ॥ १२ स्तेनादिशङ्का ॥ १३ चौराटव्याम् ॥ १४ उन्मत्तकवेषः ॥ १५ खल्लर-खिल्लूर-छिल्लरशब्दा देश्या एकार्थकाः ॥ १६ सरश्रोऽवतीर्णः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोण्णं णामं दुमपुप्फियं ति । नामनिप्फण्णो गतो । सुत्तालावगनिप्फण्णो पत्तलक्खणो वि ण निक्खिप्पति, इतो अत्थि ततियमणुओगद्दारमणुगमो त्ति, इह तत्थ य समाणत्थो निक्खेवो त्ति तहिं णिक्खिप्पिहिति, एवं लहु सत्थं भवति असम्मोहकारगं च ।

अणुगमो त्ति दारं, सो दुविहो – सुत्ताणुगमो वा १ निज्जुत्तिअणुगमो वा २ । निज्जुत्तिअणुगमो तिविहो, तं जहा – निक्खेवनिज्जुत्तिअणुगमो १ उवग्घायनिज्जुत्ति० २ सुत्तफासियनिज्जुत्ति० ३ । निक्खेवनिज्जुत्तिअणुगमो दसनिक्खेवप्पभिती भणितो । उवग्घायनिज्जुत्तीअणुगमो – उद्देसे[1] णि० गाहा [ आव० नि० गा० १४०–४१ पत्र १०४ ] । तित्थगरस्स सामाइयकमेण उवग्घाते कए **अज्जसुधम्म-जंबु-प्पभवाण य दसकालियकमेण पभवचिंताती** जाव **मणओ** एस उवग्घाओ । सुत्तप्फासियनिज्जुत्ती सुत्तसहगय त्ति सुत्ते उच्चारिते तदत्थवित्थारणी भविस्सति । इयाणिं सुत्ताणुगम-सुत्तफासियनिज्जुत्ति-सुत्तालावयनिप्फण्णनिक्खेवाणं पढमसण्णत्थाणं[2] पडिसमाणणत्थमत्थवित्थरागारभूतं सुत्तं उच्चारेतव्वं अक्खलितादिअणियोगद्दारविधिणा जाव णोदसवेयालियपयं वा । तं च इमं मंगलनिहाणभूतं दसकालियपढमसुत्तं—

**धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो०** एतस्स वक्खाणं । वक्खाणलक्खणमुपदिस्सति—

संहिता य १ पदं चेव २ पदत्थो ३ पदविग्गहो ४ ।

चालणा य ५ पसिद्धी य ६ छव्विहं विद्धि लक्खणं ॥ १ ॥ [ अनुयो० सू० १५५ पत्र २६१ ]

संहिता अविच्छेदेण पाढो, जहा "धम्मो मंगल०" आ सिलोगसमत्तीतो १ ।

पदविभागो इदाणिं – धम्मो इति पदं, मंगलं इति पदं, उक्किट्ठं इति, अहिंसा इति, संजमो इति, तवो इति, देवा इति, अवीति, तमिति, णमंसंतीति, जस्स इति, धम्मे इति, सदा इति, मणो इति २ ।

पदविभागाणंतरं पदत्थो – धारेति दुग्गतिमहापडणे पतंतमिति **धम्मो** । विसिट्ठधम्मफलगमणं **मंगलं** । उग्गयतरं **उक्किट्ठं** प्रधानम् । **अहिंसा** पाणातिवातवज्जणं । **संजमो** समिति-गुत्तीसु उवरमो । **तवो** अट्ठविहकम्मकिट्टावणमणसणाति[3] । विसेसेण क्रीडायुक्ता इति **देवा** । **अविसद्दो** अणेगेसु अत्थेसु, इहं संभावणे, किं संभाविज्जति ? संसारिसत्तणिकायप्पहाणा देवा ते वि, किं पुण सेसा ? । किं करेंति ? त्ति पडिणिद्दिसिज्जति – **तं णमंसंति** । कयरं ? ति उद्देसवयणं, **जस्स** निद्देसवयणं । जस्स निद्देस-उद्देसवयणातो पढमसिलोगे वि संभवति – किं जस्स ? भणति[4], **धम्मे सदा मती, सदा** सव्वकालं **मती** चित्तं मतिसमाहरणं । जस्स धम्मे सव्वकालं चित्तं तं देवा वि णमंसंति ३ ।

पदविग्गहावसरो – सो पुण समासपदाणं भवति, इह पत्तेयत्थाणि पदाणि त्ति न भवति ४ ॥ १ ॥ सुत्ताणुगमो गतो । एस एव सुत्तत्थो वित्थारिज्जति । चोयणातो वा आसंकामुहेण वा आयरियो विसेसेति । किंच—

**कत्थति पुच्छति सीसो कहिंचऽपुट्ठा कहिंति आयरिया ।**
**सीसाणं तु हितट्ठा विपुलतरागं[5] तु पुच्छाए ॥ १६ ॥**

**कत्थति पुच्छति सीसो०** गाहा । इमं पुण सतमेव[6] **धम्मपद**वित्थारणत्थमाणवेंति गुरवो ॥ १६ ॥

अयं सुत्तालावयनिप्फण्णो निक्खेवो । अतो परं सुत्तफासियनिज्जुत्ती—

---

१ उद्देसे १ णिद्देसे य २ णिग्गमे ३ खेत्त ४ काल ५ पुरिसे य ६ । कारण ७ पच्चय ८ लक्खण ९ णए १० समोयारणा ११ ऽणुमए १२ ॥ १४० ॥ किं १३ कइविहं १४ कस्स १५ कहिं १६ केसु १७ कहं १८ केच्चिरं हवइ कालं १९ । कइ २० संतर २१ मविरहियं २२ भवा २३ ऽऽगरिस २४ फासण २५ णिरुत्ति २६ ॥ १४१ ॥ २ प्रथमसंन्यस्तानां प्रतिसमाध्यर्थमर्थविस्तरागारभूतम् ॥ ३ अनशनादि ॥ ४ भणंति मूलादर्शे ॥ ५ विउलयरायं तु वी० ॥ ६ स्वयमेव ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**णामं-ठवणाधम्मो दव्वधम्मो य भावधम्मो य।**
**एएसिं णाणत्तं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ १७ ॥**

**णामं-ठवणाधम्मो॰** गाधा। णाम-ठवणातो तधेव ॥ १७ ॥ दव्वधम्मे गाहा—

**दव्वं च १ अत्थिका[1]यो २ पयारधम्मो य ३ भावधम्मो य।**
**दव्वस्स पज्जवा जे ते धम्मा तस्स दव्वस्स १ ॥ १८ ॥**

**दव्वं च अत्थिकायो॰**। दव्वधम्मो तिविहो, तं जहा—**दव्वधम्मो १ अत्थिकायधम्मो २ पयारधम्मो ३।**

तत्थ दव्वधम्मो—**दव्व[स्स] पज्जवा जे ते धम्मा तस्स दव्वस्स,** जीवदव्वस्स वा अजीवदव्वस्स वा उप्पाय-ठ्ठिति-भंगा पज्जाया त एव धम्मा। जीवदव्वस्स इमे उप्पायट्ठितिभंगा—देवभवातो मणुस्सभवमागतस्सा मणुस्सत्तेण उप्पातो, देवत्तेण विगमो, जीवदव्वमवट्ठितं। एगभवग्गहणे वि कुमारगत्तेण उप्पातो, बालभावेण विगमो, देवदत्त इति अवट्ठितो। अजीवदव्वस्स वि दुपदेसितादिभेदा जाव परमाणुस्स परमाणुत्तेण उप्पातो, दुपदेसितभावातो भंगो, रूविअजीवत्तावत्थाणं। अभिण्णे वि दव्वे गुणोवएसेण, जहा—घडस्स पागेण सामताविगमे रत्तभावसमुप्पाए वि घडावत्थाणं। एवं रूविदव्वेसु फुडं। अरूविसु आ[2]गासादिताणं तिण्हं परपच्चया नियमा, जहा—कहिंचि आगासपदेसे घडो विण्णत्थो, तदवगमे कुंडसो आगासपदेसो कुंडागासत्तेण उप्पण्णो, घडागासभावेण विगतो, आगास[अ]रूविभावादीहिं अवत्थिती। धम्मा-ऽधम्मा वि एवं १ ॥ १८ ॥ अत्थिकायधम्मो त्ति दारं—

**धम्मत्थिकायधम्मो २ पयारधम्मो य विसयधम्मो य[3] ३।**
**लोइय १ कुप्पावय[4]णिय २ लोगुत्तर ३ लोगऽणेगविहो ॥ १९ ॥**

**[5]धम्मत्थिकायधम्मो॰** गाहद्धं। काया समुदाया, अत्थी य काया य **अत्थिकाया,** ते य इमे पंच—धम्मा-ऽधम्मा-ऽऽकास-जीव-पोग्गला, **धम्मो** सभावो लक्खणं। धम्मत्थिकायो गतिपरिणयस्स गमणोवकारि त्ति गतिसभावो गतिलक्खणो, एवं अहम्मत्थिकायो ठ्ठितीए, आगासत्थिकायो अवगाहणस्स, पोग्गलत्थिकायो गहणस्स, जीवत्थिकायो सततमुवयोगधम्मी २।

पयारधम्मो त्ति दारं—इंदियविसयो पयारो स एव धम्मो, स[6]मणस्स सोतव्वं, एवं विभासा ३।

भावधम्मो त्ति दारं—सो य **लोइय कुप्पावयणि॰** गाहद्धं। लोइतो १ कुप्पावयणिओ २ लोउत्तरिओ ३ तिविहो। लोइओ अणेगहा ॥ १९ ॥ तं॰—

**गम्म १ पसु २ देस ३ रज्जे ४ पुरवर ५ गाम ६ गण ७ गोट्ठि ८ राईणं ९।**
**सावज्जो उ कुतित्थियधम्मो ण जिणेसु[7] तु पसत्थो ॥ २० ॥**

**गम्म पसु देस रज्जे पुरवर-गाम-गण-गोट्ठि-राईणं।** **गम्मधम्मो** **दक्खिणावहे** मा[8]तुलधीता गम्मा ण[9] **गोल्लविसए**, भक्खा[10]-ऽभक्ख-पेता-ऽपेतविहयो वि भिण्णा १। **पसुधम्मो** गम्मा-ऽगम्मविसेसो नत्थि २। **देसधम्मो** णेवच्छा[11]दिभेदो ३। **रज्जे** करपवत्तणादि ४। रज्जस्स भागो देसो। **पुरे**[12] दंसणराग-तंबोल-

१ °**कायप्पया**° खं॰ ॥ २ आकाशादिकानाम् ॥ ३ उ खं॰ ॥ ४ °**यणे लोगु**° वी॰ वृद्धविवरणे च ॥ ५ "धम्मत्थिकाय॰ गाहाव्याख्या—धर्मग्रहणाद् धर्मास्तिकायपरिग्रहः, ततश्च धर्मास्तिकाय एव गत्युपष्टम्भकोऽसंख्येयप्रदेशात्मकोऽस्तिकायधर्मः। **अन्ये** तु व्याचक्षते—धर्मास्तिकायादिस्वभावोऽस्तिकायधर्म इति, एतच्चायुक्तम्, धर्मास्तिकायादीनां धर्मत्वेन तस्य द्रव्यधर्माव्यतिरेकादिति" इति **हारि॰ वृत्तौ** ॥ ६ श्रवणस्य—कर्णस्य श्रोतव्यम् ॥ ७ **जिणेहिं** उ खं॰ वी॰ पु॰ वृद्धविवरणे च ॥ ८ मातुलदुहिता ॥ ९ "उत्तरावहे अगम्मा" इति **वृद्धविवरणे** ॥ १० भक्ष्या-ऽभक्ष्य-पेया-ऽपेयविधयः ॥ ११ नेपथ्यादिभेदः ॥ १२ **दसणगरावंबोल**° मूलादर्शे ॥

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

समाणणादी ५, ण **गामे** ६ । **गणधम्मो सारस्सतादीण** एगस्स वि आवतीए समाणकज्जया ७ । **गोट्ठिधम्मो** ललियासणिकादिट्ठाणेसु जहाविहि भो[1]यणातिपरिभोगो ८ । **रायधम्मो** इट्ठा - ऽणिट्ठेसु दंडधरणं मै[2]यगसूयगं णत्थि ९॥

कुप्पावयणितो कुच्छियं पवयणं कुप्पवयणं [3]**सक्क-कणादादि** । कहं पुण एताणि कुप्पवयणाणि ? जम्हा **सावज्जो उ कुतित्थियधम्मो ण जिणेसु तु पसत्थो,** [4]अवज्जं गरहणीयं, सह अवज्जेण **सावज्जो** सारंभ-परिग्गहत्तणेणं, तहा य कुप्पवयणितो, अतो ण पसंसितो जिणवरेहिं । ते य जिणा चउव्विहा – नामादिविहिणा । णाम-ठवणातो तहेव । [5]दव्वजिणा जे वाहिं वेरियं वा जिणंति । भावजिणा केवली, तेहिं ण पसंसितो, सारंभ-परिग्गहो त्ति कुप्पावयणियो ॥ २० ॥

लोउत्तरियो भावधम्मो दुविहो – सुतधम्मो चरित्तधम्मो य । सुतधम्मो दुवालसंगं गणिपिडगं, तस्स धम्मो जाणितव्वा भावा, [ अहवा ] असंजमातो नियत्ती संजमे पवित्ती । चरित्तधम्मो दसविहो उत्तमो साधुधम्मो, तं जहा – खमा १ मद्दवं २ अज्जवं ३ सोयं ४ सच्चं ५ संजमो ६ तवो ७ [6]चातो ८ अकिंचणत्तणं ९ बंभचेरमिति १० । तत्थ खमा – अक्कोस - तालणादी [7]अहियासिंतस्स कम्मक्खयो भवति अणहियासिंतस्स कम्मबंधो, तम्हा कोहोदयस्स निरोहो कातव्वो उदयप्पत्तस्स वा विफलीकरणं, एसा खम त्ति वा तितिक्ख त्ति वा कोहनिग्गहो त्ति वा [एगट्ठा] १ । मद्दवता – जाति - कुलादीहिं परपरिभवाभावो एत्थ वि माणोदयनिरोहो उदयप्पत्तस्स विफलीकरणं २ । अज्जवं – रिजुभावो, तस्स अकरणे कम्मोवचतो करणे निज्जरा, मायाए वि उदयनिरोहो वा उदिण्णविफलीकरणं वा ३ । सोयं – अलुद्धता धम्मोवगरणेसु वि, तस्स करणे अकरणे य कम्मस्स निज्जरा उवचतो य, अतो लोभोदयनिरोहो उदयप्पत्तस्स विफलीकरणं च कातव्वं ४ । सच्चं–अणुवघायगं परस्स वयणं, तहाभणंतस्स निज्जरा, अण्णहा कम्म-बंधो ५ । संजम - तवा सुत्तालावगपदत्थविभासाए भणिता, **निज्जुत्तिविसेसेण** भणितव्वा, अतो ण भण्णंति ६–७ । चागो–दाणं, तं अलुद्धेण निज्जरट्ठं [8]साहूसु पडिवायणीयं ८ । [9]आकिंचणीयं – नत्थि जस्स किंचणं सोऽकिंचणो तस्स भावो आकिंचणीयं, कम्मनिज्जरट्ठं सदेहाइसु वि णिम्ममेण भवियव्वं ९ । बंभमट्ठारसप्पगारं– ओरालिया कामभोगा मणसा न सेवति न सेवावेति सेवंतं ण समणुजाणति ३ एवं वायाए ३ काएण वि ३ णवविहं गतं, दिव्वेसु वि एते विगप्पा ९, एतं अट्ठारसविहं बंभचेरं आयरंतस्स कम्मनिज्जरा अणायरंतस्स बंधो तम्हा सेवियव्वं १० । एस दसविहो समणधम्मो मूलुत्तरगुणेसु समोयरति–संजमो पाणातिवायविरती, सच्चं मुसावायवेरमणं, आकिंचणीयं निम्ममत्तं ति अदत्त - परिग्गहवज्जणं, बंभचेरं मेहुणविरती, खंती - मद्दव - अज्जव - सोत - तव-चाता उत्तरगुणेसु जहासंभवं । [गयं] धम्मो त्ति दारं ॥ **मंगलं** ति दारं–तं चउव्विहं नामादि । णाम - ठवणातो गतातो । दव्व - भावेसु इमा गाधा—

**दव्वे भावे वि य मंगलाणि दव्वम्मि पुण्णकलसादी ।**
**धम्मो उ भावमंगलमेत्तो सिद्धि त्ति काऊणं ॥ २१ ॥**

**दव्वे भावे वि य मंगलाणि०** । [11]दव्वमंगलं **पुण्णकलसादि** घडोदगसंजोग - सुवण्ण - सिद्धत्थगादी स[12]मुप्पत्तितो । भावमंगलं अयमेव लोउत्तरो धम्मो, जम्हा एत्थ ट्ठियाणं जीवाणं सव्वदुक्खक्खओ मोक्खो भवति । दव्व - भावमंगलाणं को पतिविसेसो ?, दव्वमंगल[13]मणेगंतियमणच्चंतियं च, भावमंगलमेगंतियमच्चंतियं च । एगंतियमव-स्संभावि, अच्चंतियं सदाभावि ॥ २१ ॥

---

१ भोजनादिपरिभोगः ॥ २ मृतकसूतकम् ॥ ३ शाक्य-कणादादि ॥ ४ "वज्जो णाम गरहिओ, सह वज्जेण सावज्जो भवइ" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ५ "दव्वजिणा जे छउमत्था, वाहिं वा वेरियं वा जे जिणंति ते दव्वजिणा" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ६ त्यागः ॥ ७ अध्यासमानस्य सहमानस्येत्यर्थः ॥ ८ **साहुसपडि°** मूलादर्शे । "तम्हा वत्थ-पत्त-ओसहादीहिं साहूण संविभागकरणं कायव्वं" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ९ आकिञ्चन्यम् ॥ १० **य** वी० पु० ॥ ११ "तत्थ दव्वमंगलं पुण्णकलसादी, आदीगहणेण न केवलं पुण्णकलसो एगो मंगलं, किंतु जाणि दव्वाणि उप्पज्जंतगाणि चेव लोगे मंगलबुद्धीए घेप्पंति, जहा–सिद्धत्थग-दहि-सालि-अक्खयादीणि, ताणि मंगलं ।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ १२ समुत्पत्तितः ॥ १३ अनैकान्तिकमनात्यन्तिकं च ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**उक्किट्ठं** ति दारं–मंगलविसेसणमिमं। एस लोउत्तरो भावधम्मो भावमंगलं **उक्किट्ठं** पहाणं ॥

**अहिंसे**ति पदं–पढमं हिंसावण्णणं, ततो अकारेण पडिसेहणं। [1]पमत्तजोगस्स पाणववरोवणं हिंसा। एत्थ चत्तारि भंगा–दव्वतो नामं एगा हिंसा णो भावतो ४। चरिमभंगो पासंगिको सुण्णो। पुण तत्थ दव्व-भावतो जहा–केति पुरिसे मिगवधपरिणते मिगवहाए उसुं खिवेज्जा विंधेज्ज य तं मिगं एसा दव्व-भावतो हिंसा १। दव्वतो न भावतो इमा–"[2]उच्चालियम्मि पाए०" **ओहनिज्जुत्ति**गाहा, "[3]ण य तस्स तन्निमित्तो०" एसा वि २। भावओ न दव्वओ जहा–केति पुरिसे असिणा अहिं छिंदिस्सामीति रज्जुं छिंदेज्जा ३। विको[4]वणट्ठमिदं। अहिंसाए अहिगारो। को पुण अहिंसाए संजमस्स य विसेसो? अहिंसा पंच वि महव्वयाइं, सव्वावत्थमहिंसोवकारी संजमो। अहिंस त्ति गतं ॥

**संजमो** त्ति – संजमो सत्तरसविहो, तं जहा–पुढविकायसंजमो १ आउ० २ तेउ० ३ वाउ० ४ वणस्सति० ५ बेइंदिय० ६ तेइंदिय० ७ चउरिंदिय० ८ पंचेंदिय० ९ पेहासंजमो १० उवेहासंजमो ११ अवहट्टु संजमो १२ पमज्जियसंजमो १३ मणसंजमो १४ वतिसं० १५ काय० १६ उवगरणसंजमो १७ त्ति। पुढविकायसंजमो–पुढविकायं तियोगेन ण हिंसति ण हिंसावेति हिंसंतं नाणुजाणति १। एवं आउक्कायसंजमो जाव पंचेंदिय-संजमो २–९। पेहासंजमो–जत्थ ठाण-निसीयण-तुयट्टणं काउकामो तं पडिलेहिय पमज्जिय करेमाणस्स संजमो भवति, अण्णहा असंजमो १०। उवेहासंजमो–संजमवंतं संभोइयं पमायंतं चोदेंतस्स संजमो, असंभोइयं चोयंतस्स असंजमो, पावयणीए कज्जे [5]चियत्ता वा से पडिचोयण त्ति अण्णसंभोइयं पि चोएति, गिहत्थे कम्मायाणेसु सीदमाणे उपेहंतस्स संजमो, वावारितस्स अस्संजमो ११। अवहट्टु संजमो–अतिरेगोवगरणं विगिंचंतस्स संजमो, पाणजातीए य आहारादिसु असुद्धोवहिमादीणि य परिट्ठवितस्स १२। पमज्जणासंजमो–[6]सागारिए पाए अपमज्जंतस्स संजमो, अप्पसागारिए पमज्जंतस्स संजमो १३। मणसंजमो–अकुसलमणनिरोहो वा कुसलमणउदीरणं वा १४। वतिसंजमो–अकुसलवइनिरोहो वा कुसलवतिउदीरणं वा १५। कायसंजमो–अवस्सकरणीयवज्जं सुसमाहियस्स कुम्म इव गुत्तिंदियस्स चिट्ठमाणस्स संजमो १६। उवगरणसंजमो–पोत्थएसु घेप्पंतेसु असंजमो महाधणमोल्लेसु वा दूसेसु, वज्जणं तु संजमो, कालं पडुच्च चरणकरणट्ठं अव्वोच्छित्तिनिमित्तं गेण्हंतस्स संजमो भवति १७ ॥

[7]तवो दुविहो–बज्झो १ अब्भिंतरो य २। पढमं बज्झो भण्णति सूयलक्खो त्ति। एतं चेव तस्स बज्झत्तणं जं सव्वजणपच्चक्खो, सासणबज्झेहिं वि कज्जति घरत्थ-कुतिरिथिएहिं वि, लोगे पूयणकारणं च। सो छव्विहो, तं जहा–अणसणं १ ओमोयरिया २ भिक्खायरिया ३ रसपरिच्चाओ ४ कायकिलेसो ५ संली[8]णय ६ त्ति।

असणं – भोयणं तस्स परिच्चातो अणसणं। तं दुविहं–इत्तिरियं १ आवकहियं च २। इत्तिरियं – परिमियं कालं, तं चउत्थाती छम्मासावसाणं। आवकहियं–जावज्जीविगं, तं तिविहं–पा[9]दोवगमणं १ इंगिणिमरणं २ भत्त-पच्चक्खाणं ३। तत्थ पाओवगमणं–जं निप्पडिकम्मो पायवो विव जहापडिओ अच्छति। तं दुविहं–वाघातिमं णिव्वाघातिमं च। वाघातिमं–जं आउयं [10]पहुप्पंतं बला उवक्कामेति, वाधिगहितो वे[11]यणाणहितासे वेहासादी वा करेति। निव्वाघातं सुत्त-ऽत्थ-तदुभयाणि गेण्हिऊण अव्वोच्छित्तिं कातुं जरापरिणतो करेति १। इंगिणिमरणं–संयमेव उव्वत्तण-परियत्तणादि करेति चतुव्विहाहारविरतो २। भत्तपच्चक्खाणं नियमा सपडिकम्मं, पडिकम्मं–उव्वत्तण-परियत्तणादि, असहुस्स वा सव्वं पि कीरति ३। तिण्णि वि णी[12]हारिमा अनीहारिमा वा। गतमणसणं १ ॥

---

१ "प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा" तत्त्वा० अ० ७ सू० ८ ॥ २ "उच्चालियम्मि पाए इरियासमियस्स संकमट्ठाए। वावज्जेज्ज कुलिंगी मरिज्ज तं जोगमासज्ज ॥" [ ओघनि० गा० ७४८ ] ॥ ३ "न य तस्स तन्निमित्तो बंधो सुहुमो वि देसिओ समए। अणवज्जो उ पओगेण सव्वभावेण सो जम्हा ॥" [ ओघनि० गा० ७४९ ] ॥ ४ विकोचनार्थं–स्पष्टीकरणार्थमित्यर्थः ॥ ५ चियत्ता–अभिमता ॥ ६ सागारिके–गृहस्थे पश्यति सति पादौ अप्रमार्जयतः संयमः, अल्पसागारिके-गृहस्थेऽपश्यति सति ॥ ७ तपःस्वरूपं **भगवत्यङ्गे** श० २५ उ० ७ मध्ये तथा **औपपातिको**पाङ्गे सूत्र १९–२० मध्ये द्रष्टव्यम् ॥ ८ **पडिसंलीणय** मूलादर्शे ॥ ९ पादपोपगमनम् ॥ १० **पडुप्पंतं** मूलादर्शे ॥ ११ वेदनानध्यासे वैहायसादि वा करोति ॥ १२ "णीहारिमे' त्ति यद् आश्रयस्यैकदेशे विधीयते, तत्र हि कडेवरमाश्रयान्निर्हरणीयं स्यादिति कृत्वा निर्हारिमम्। 'अणीहारिमे य' त्ति अनिर्हारिमं यद् गिरिकन्दरादौ प्रतिपद्यते।" [ भगवतीसूत्रटीका श० २५ उ० ७ पत्रं ९२४ ] ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओमोदरियं—ओमोदरभावो। ओमं—ऊणं । सा दुविहा—दव्वे भावे य । दव्वे उवकरणे भत्त-पाणे य । उवकरणे एगवत्थधारित्तं एवमादि ।

भत्तपाणोमोदरिया अप्पप्पणो मुहप्पमाणेण कवलेणं पंचविगप्पा—अप्पाहारोमोदरिया १ अवड्ढोमोदरिया २ दुभागोमोदरिया ३ पमाणोमोयरिया ४ किंचूणोमोदरिय ५ त्ति । एतासिं विभागो—चतुव्वीसं लंबणा पमाणजुत्तोमोदरिया, एयातो ओमोयरिदातो तिण्हं ओमोयरियाणं उत्थाणं, तिण्हं ति—अप्पाहार-अवड्ढ-दुभागोमोयरियाणं निप्फत्ती भवति, पंचमा सणामसूयिता किंचूणोमोयरिया भवति ।

एतासिं निदरिसणं—अप्पाहारोमोदरिया—जम्हा अप्पतरं कुच्छीए पुण्णं बहुतरं ऊणं, पमाणोमोदरिदाए तिभागो १ । पमाणजुत्ता ओमोयरिया अवगतऽड्ढा अवड्ढोमोदरिया २ । पमाणोमोदरियं तिधा काउं एगं भागं उज्झिउं दोभाए अब्भवहरति एसा दुभागोमोयरिया, पमाणजुत्ताहारस्स वा दुभागं अब्भवहरति दुभागोमोदरिया ३ । पमाणजुत्तोमोदरिया नाम—बत्तीसं लंबणा संपुण्णो पुरिसस्स आहारो, तस्स चतुब्भागो छड्डिज्जति सेसा चउव्वीसं कवला पमाणजुत्तोमोयरिया ४ । किंचूणोमोयरिया—थोवूणाहारो ५ ।

एता चेव सोदाहरणं विसेसिज्जंति—अप्पाहारोमोयरिया पमाणोमोदरियाए तिभागे, ते य अट्ठ कवला, सा अट्ठविधा, तं जहा—अट्ठकवलअप्पाहारोमोयरिया १ एकूणऽट्ठकवलअप्पाहारोमोदरिता जाया सत्त २ बिऊणऽट्ठकवलअप्पाहारोमोदरिता जाता छ ३ तिऊणऽट्ठकवलअप्पाहारोमोयरिया जाया पंच ४ चतुरूणऽट्ठकवलअप्पाहारोमोयरिया जाया चतुरो ५ पंचूणऽट्ठकवलअप्पाहारोमोयरिया जाया तिण्णि ६ छऊणऽट्ठकवलअप्पाहारोमोदरिया जाया दो ७ सत्तूणऽट्ठकवलअप्पाहारोमोदरिया जातो एक्को ८ । अप्पाहारोमोयरिया एक्ककवलाहारोमोयरिया जहण्णा, अट्ठकवलाहारोमोयरिया उक्कोसा, सेसा अजहण्णमणुक्कोसा १ । इदाणिं अवड्ढाहारोमोयरिया बारसकवला, सा चउव्विहा, तं०—बारसकवलअवड्ढाहारोमोयरिया १ एकूणबारसकवलअवड्ढाहारोमोयरिया जाया एक्कारस २ बिऊणबारसकवलअवड्ढाहारोमोयरिया जाया दस ३ । तिऊणबारसकवलअवड्ढाहारोमोयरिया जाया नव ४ । अवड्ढाहारोमोयरियाए जहण्णा नव कवला, उक्कोसा बारस, सेसा अजहण्णमणुक्कोसा २ । दुभागोमोयरिया सोलसकवला, सा चतुव्विहा, तं०—सोलसकवलदुभागोमोयरिया १ एकूणसोलसकवलदुभागोमोयरिया जाया पण्णरस २ दुऊणसोलसकवलदुभागोमोयरिया जाया चोद्दस ३ तिऊणसोलसकवलदुभागोमोयरिया [ जाया तेरस ४ । दुभागोमोयरियाए ] जहण्णा तेरस, उक्कोसा सोलस, सेसा अजहण्णमणुक्कोसा ३ । पमाणजुत्ताहारोमोयरिया चतुव्वीसकवला अट्ठविहा, तं०—चतुव्वीसकवलपमाणजुत्ताहारोमोयरिया १ एकूणचतुव्वीसकवलप्पमाणजुत्ताहारोमोयरिया जाया तेवीसं २ बिऊणचतुव्वीसकवलपमाणजुत्ताहारोमोयरिया जाता बावीसं ३ तिऊण० जाया एकूणवीसं ४ चतूण० जाया वीसं ५ पंचूण० जाया एक्कूणवीसं ६ छऊण० जाया अट्ठारस ७ सत्तऊण० जाया सत्तरस ८ । पमाणजुत्ताहारोमोयरिया जहण्णा सत्तरसकवला, उक्कोसा चतुव्वीसकवला, सेसा अजहण्णमणुक्कोसा ४ । किंचूणाहारोमोयरिया एक्कतीसं कवला, सा सत्तविहा, तं०—एक्कतीसकवलकिंचूणाहारोमोयरिया १ एक्कोणेक्कतीसकवलजुत्ताहारोमोयरिया जाता तीसं २ बिऊणेक्कतीस० जाया एकूणतीसं ३ तिऊणेक्कतीस० जाया अट्ठावीसं ४ चतूण० जाया सत्तावीसं ५ पंचूण० जाया छव्वीसं ६ छऊण० जाया पंचवीसं ७ । किंचूणाहारोमोयरियाए जहण्णा पंचवीसं, उक्कोसा एक्कतीसा, अवसेसा अजहण्णमणुक्कोसा ५ । एसा पुरिसस्स ओमोयरिया । इत्थियाए वि एवं चेव, णवरं अट्ठावीसं कवला संपुण्णाहारो, तदणुसारेण सेसं भाणितव्वं । दव्वोमोयरिया गता । भावोमोयरिया चउण्हं कसायाणं उदयनिरोहो उदयप्पत्तविफलीकरणं च । ओमोदरिता गता २ ॥

१ लंबणा—कवलाः ॥ २ अवमोदरिकातः ॥ ३ प्रमाणावमोदरिकायाः ॥

भिक्खायरिया अणेगप्पगारा, तं जहा–दव्वाभिग्गहचरगा, जहा कोति अभिग्गहं गेण्हेज्जा–जति मे भिक्खं हिंडमाणस्स अमुगं दव्वं लभेज्जा तो परेयव्वं सेसं न कप्पति, एवमादी भिक्खायरियाए अभिग्गहा णेतव्वा। अहवा भिक्खायरिया छव्विहा–पेला य १ अद्धपेला २ गोमुत्तिया ३ पयंगवीहिया ४ संवुक्कावट्टा ५ गंतुं-पच्चागता ६। ३॥ रसपरिच्चातो खीर-दहि-णवणीयादीणं रसविगतीणं वज्जणं ४॥

कायकिलेसो लोया-ऽऽतावणाती ५॥

संलीणता चतुव्विहा, तं०–इंदियसंलीणया १ कसायसंलीणया २ जोगसंलीणया ३ विवित्तचरिया ४। इंदियसंलीणया पंचविधा, तं०–सोतिंदियसंलीणया जाव फासिंदियसंलीणया। सोतिंदियसंलीणया णाम—

सद्देसु त भद्दत-पावगेसु सोतविसतमुवगएसुं। रुट्ठेण व तुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं॥ १॥

[ ज्ञाता० अ० १७ गा० १६ ]

सेसेसुं वि इंदिएसु एसेव गाधा इंदियविसयाभिलावेणं १। कसायसंलीणया चतुव्विहा, तं०–कोहोदय-निरोहो वा उदयप्पत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं, एवं सेसेसु वि २। जोगसंलीणया तिविहा, तं०–अकुसलमणनिरोहो कुसलमणउदीरणं वा, एवं वायाए, कायसंलीणया चंकमणादीणि ण अकज्जे, कज्जे जयणाए ३। विवित्तचरिया आरामुज्जाणादिसु इत्थि-पसु-पंडगविरहिएसु फासुएसणिज्जेसु पीढ-फलगादीणि अभिगिज्झ विहरितव्वं ४। ६। एस बज्झो॥

अब्भितरो तवो छव्विहो। तं जहा–पायच्छित्तं १ विणतो २ वेयावच्चं ३ सज्झातो ४ झाणं ५ विओसग्गो ६ त्ति।

पायच्छित्तं दसविहं, तं जहा–आलोयणं १ पडिक्कमणं २ तदुभयं ३ विवेगो ४ वियोसग्गो ५ तवो ६ छेदो ७ मूलं ८ अणवट्ठप्पो ९ पारंचिओ १० त्ति। परोप्परस्स वायण-परियट्टण-लोयकरण-वत्थदाणादिअणालोइए गुरूणं अविणयो त्ति आलोयणारिहं १। पडिक्कमणं पुण–पवयणमादिकादिसु आवस्सग[इ]क्कमे वा सहसाइक्कमणे पडिचोतितो सतं वा सरिऊण 'मिच्छा दुक्कडं' करेति, एवं तस्स सुद्धी २। मूलुत्तरगुणातिक्कमसंदेहे आउत्तेण वा कते आलोयण-पडिक्कमणमुभयं ३। आहारातीण उग्गमादिअसुद्धाणं गहियाणं पच्छा विण्णाताणं संसत्ताण वा विवेगो–परिच्चातो ४। विओसग्गो–काउस्सग्गो, गमणागमण-सुविण-णइसंतरणादिसु ५। तवो–मूलुत्तरगुणातियारे पंचराइंदियाइ छम्मासावसाणमणेकधा ६। छेदो–अवराहोपचएण सासणविरुद्धादिसमायरणेण वा तवारिहमतिक्कंतस्स पंचरातिंदियादिपव्वज्जाविच्छेदणं ७। मूलं–पगाढतरावराहस्स मूलतो परियातो छिज्जति ८। अणवट्ठो–मूलच्छेदाणंतरं केणति कालावधिणा पुणो दिक्खिज्जति ९। पारंचितो–खेत्ततो देसाओ वा निच्छुब्भिज्जइ १०। छेद-मूल-अणवट्ठ-पारंचियाणि देस-काल-पुरिस-सामत्थाणि पडुच्च दिज्जंति। पायच्छित्तं गतं १॥

विणयो सत्तविहो, तं०–नाणविणओ १ दंसणविणओ २ चरित्त० ३ मण० ४ वति० ५ काय० ६ ओवयारियविणओ ७ त्ति। नाणे विणओ पंचविहो, तं०–आभिनिबोहियनाणविणओ जाव केवलनाणविणयो। कहं नाणविणओ? जस्स पंचसु वि नाणेसु भत्ती बहुमाणो वा, जे वा एएहिं भावा दिट्ठा तेसु सद्दहाणं ति नाणविणतो १।

---

१ "अहवा इमा चउव्विहा भिक्खायरिया, तं०—पेला अद्धपेला गोमुत्तिया संबुक्कावट्ट त्ति।" इति **वृद्धविवरणे**॥ २ केशलोचा-ऽऽतापनादिः॥ ३ ज्ञाताधर्मसूत्रे **तुट्ठेण व रुट्ठेण व** इति पाठो दृश्यते॥ ४ अत्र शेषचक्षुः-घ्राण-जिह्वा-स्पर्शनेन्द्रियविषयाश्चतस्रो गाथाः **ज्ञाताधर्मकथाङ्गे** सप्तदशाध्ययने द्रष्टव्याः॥ ५ चङ्क्रमणादीनि॥ ६ अष्टप्रवचनमातृकादिषु आवश्यकातिक्रमे वा सहसातिक्रमणे प्रतिचोदितः स्वयं वा स्मृत्वा 'मिथ्या दुष्कृतम्' करोति॥ ७ "छेदो नाम–जस्स कस्स वि साहुणो तहारूवं अवराहं णाऊण परियाओ छिज्जइ, तं जहा–अहोरत्तं वा पक्खं वा मासं वा संवच्छरं वा एवमादि छेदो भवति।" इति **वृद्धविवरणे**॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दंसणविणतो दुविधो, तं०–सुस्सूसणाविणतो १ अणासायणाविणओ य २। सुस्सूसणाविणयो–सम्मदंसणगुणाहियाण साधूण सुस्सूसणं सम्मदंसणसुस्सूसणत्थं। सुस्सूसाविणतो अणेगप्पगारो, तं०–सक्कारविणतो १ सम्माणविणतो २ अब्भुट्ठाणविणतो ३ आसणाभिग्गहो ४ आसणाणुप्पदाणं ५ कितिकम्मं ६ अंजलिपग्गहो ७ एंतस्स अणुगच्छणता ८ ठितस्स पज्जुवासणया ९ गच्छंतस्स अणुव्वयणं १०। सक्कार-सम्माणविसेसोऽयं–[1]वत्थादीहिं सक्कारो, थुणणादिणा सम्माणो। आसणाभिग्गहो–आगच्छंतस्स परमादरेण अभिमुहमा[2]गंतूण [3]नत्थासणेहिं भण्णति–अणुवरोहेण एत्थ उवविसह। आसणप्पदाणं–ठाणातो ठाणं संचरंतस्स आसणं गेण्हिऊण इच्छिते से ठाणे ठवेति। अब्भुट्ठाणादीणि फुडत्थाणीति न विसेसितां[4]णि १। अणासायणाविणतो पण्णरसविधो, तं०–अरहंताणं अणासायणा १ अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणासायणा २ एवं आयरियाणं ३ उवज्झायाणं ४ थेर ५ कुल ६ गण ७ संघ ८ संभोगस्स अणासायणा ९। किरियाए अणासायणा, किरिया–[5]अत्थिभावो, तं०–अत्थि माता अत्थि पिता अत्थि जीवा एवमादि, जो एयं ण सद्दहति विवरीतं वा पण्णवेति तेण किरिया आसातिया, जो पुण सद्दहति तहाभावं वा पण्णवेति तेण णाऽऽसातिया १०। आभिणिबोहियनाणस्स अणासातणा ११ जाव केवलनाणस्स अणासायणा १२-१५। एतेसिं पण्णरसण्हं कारणाणं एक्केक्कं तिविहं, तं०–अरहंताणं भत्ती १ अरहंताणं बहुमाणो २ अरहंताणं वण्णसंज[ल]णता ३, एवं जाव केवलनाणं पि तिविहं, सव्वे वि एते भेदा पंचचत्तालीसं २। इदाणिं चरित्तविणतो, सो पंचविहो, तं०–सामायियचरित्तविणतो १ एवं छेदोवट्ठावणिय० २ परिहारविसुद्धिग० ३ सुहुमसंपराग० ४ अधक्खाय० ५। एतेसिं पंचण्हं चरित्ताणं को विणतो? भण्णति–पंचविधस्स वि चरित्तस्स जा सद्दहणता सद्दहियस्स य काएण फासणया विहिणा य परूवणया एस चरित्तविणयो ३।

मणविणयो–आयरियादिसु अकुसलमणवज्जणं कुसलमणउदीरणं च ४। एवं वायाविणओ वि ५। कायविणतो–तेसिं चेवाऽऽयरियादीणं [6]अद्धाण-वायणातिपरिसंताणं सीसादारब्भ जाव पादतला पयत्तेण विस्सामणं ६। ओवयारियविणतो सत्तविहो, तं०–सदा आयरियाण अब्भासे अच्छणं १ छंदाणुवत्तणं २ कारियनिमित्तकरणं ३ कतपडिकतिता ४ दुक्खस्स गवेसणं ५ देस-कालण्णुया ६ सव्वत्थेसु अणुलोमया ७। तत्थ अब्भासे अच्छणं–'इंगितेण [7]अभिप्पातं णाऊण निज्जरट्ठाए [8]जहिच्छितं उववातइस्सामी'ति गुरूणं अब्भासे अच्छति १। तत्थ छंदाणुवत्तणं–आयरियाणं जहाकालं आहारोवहि-उवस्सगाणं उववायणं २। कारियनिमित्तकरणं–पसण्णा आयरिया सविसेसं सुत्त-ऽत्थ-तदुभयाणि दाहिंति [त्ति] तहा अणुकूलाणि करेति जेणं आयरियाणं चित्तपसादो जायति ३। कतपडिकतिया–जति वि णिज्जरत्थं ण करेति तहा वि मम वि एस पडिकरेहिति त्ति करेति विणयं ४। दुक्खस्स पुच्छणादीणि पसिद्धाणि अतो ण भण्णंति ७। अधवा एस सव्वो चेव विणतो नाण-दंसण-चरित्ताण अव्वतिरित्तो त्ति तिविहो चेव २॥

इदाणिं वेयावच्चं। तं च इमेहिं कज्जति–अण्ण-पाण-भेसज्जादीहिं धम्मसाहणेहिं। तं केसिं कज्जति? इमेसिं दसण्हं, तं०–आयरिय १ उवज्झाय २ थेर ३ तवस्सि ४ गिलाण ५ सिक्खग ६ साहम्मिय ७ कुल ८ गण ९ संघाणं १०। आयरियो पंचविहो, तं०–पव्वावणायरियो १ दिसायरियो २ सुयस्स उद्दिसणायरियो ३ सुयस्स समु[9]द्दिसणायरिओ ४ सुयस्स वायणायरिओ ५। १। [10]अविदिण्णदिसो गणहरपदजोग्गो [11]उवज्झातो २। थेरो–जाति-सुय-परियाएहिं वृद्धो, जो वा गच्छस्स संथितिं करेति ३। तवस्सी–उग्गतवच्चरणरतो ४। गिलाणो–

---

१ "सक्कारो–थुणणाई, सम्माणो–वत्थ-पत्तादीहिं कीरइ।" इति **वृद्धविवरणे**। **हरिभद्र**पादैरपि वृत्तौ "सक्कारो–थुणण-वंदणादी, सम्माणो–वत्थ-पत्तादीहिं पूयणं" इत्येव व्याख्यातमस्ति॥ २ °**गंतूणऽवग्गहत्थेहिं भण्णइ** इति **वृद्धविवरणे** पाठः॥ ३ न्यस्तासनैः॥ ४ विश्लेषितानि विशेषितानीति वा॥ ५ "अत्थिवादो" इति **वृद्धविवरणे**॥ ६ अध्व-वाचनादिपरिश्रान्तानां शीर्षादारभ्य॥ ७ अभिप्रायम्॥ ८ यथेप्सितं उपपादयिष्यामीति॥ ९ समुद्देशनाचार्यः॥ १० अविदत्तदिग्–अग्राहिताचार्यपद इत्यर्थः॥ ११ उपाध्यायः॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोगी ५। सिक्खगो–अहुणपव्वतितो ६। साहम्मितो लिंग-पवयणचतुब्भंगो–तत्थ पवयणतो लिंगतो य जहा साहू साहुस्स, पवयणतो नो लिंगतो जहा साधू सावगस्स, णो पवयणतो लिंगतो णिण्हतो, जो णो लिंगतो णो पवयणतो सो णेव साहम्मिओ ७। कुल-गण-संघा पसिद्धा ८–१०। ३॥

सज्झाओ पंचविहो, तं जहा–वायणा १ पुच्छणा २ परियट्टणा ३ अणुप्पेहा ४ धम्मकहा ५। वायणा–सीसस्स अज्झावणं १। पुच्छणा–सुत्तस्स वा अत्थस्स वा संकितस्स २। परियट्टणं–पुव्वपढितस्स अब्भसणं ३। अणुप्पेहा–सुत्त-ऽत्थाणं मणसाऽणुचिंतणं ४। धम्मकहा–जो अहिंसालक्खणं धम्मं अणुयोगं वा कहतति ५। ४॥

ईदाणिं झाणं। तस्स इमं सामण्णं लक्खणं–एगग्गचिंतानिरोहो झाणं, अग्गसद्दो आलंबणे वट्टति, एगग्गो–एगालंबणो, आलंबणाणि विसेसेण भण्णिहिंति, एगग्गस्स चिंता एगग्गचिंता, एतं झाणं छउमत्थस्स; निरोहो केवलिणो जोगस्स, चिंता नत्थि त्ति। "केवलिणो तन्निरोहो न संभवति" त्ति केति, तं न, दव्वमणनिरोहो तस्स भगवतो, जति एगग्गचिंता झाणं ततो जोगनिग्गहो सुतरामेव। जे पुण भणंति–"एगग्गचिंतानिरोहो झाणं' ति एतं न घडते केवलिणो, आभिणिबोहियभेदो चिंत त्ति, तम्हा दढमज्झवसाणं झाण"मिति, ते अविदितविग्गहभेदा सुत्तदूसणेणं बुद्धिमाहप्पमभिलसंति, परिफग्गु जंपियं, दढमज्झवसाओ एतं विसेसेण चिंतारूवं, को एतस्स अज्झवसातो? यदुक्तं का चिंता?, तक्कादतो सव्वे आभिनिबोहियनाणभेदा पढिता तत्त्वार्थे। कालनिरोहो आ मुहुत्तातो, एगनाणस्स चिरमवत्थाणमसक्कं ती एतं उक्करिसेणं। तं सामण्णलक्खणोववातियं झाणं पत्तेयं लक्खणभेदेण इमाणि चत्तारि अट्ट-रोद्द-धम्म-सुक्काणि। ऋतं–दुःखं तन्निमित्तं दुरज्झवसातो अट्टं १। रोदतीति रुद्रः, तेण कृतं रौद्रं–अतिक्रूरतालिङ्गितम् २। खमादिधम्माऽणपेतं धम्मं ३। सु त्ति–सुद्धं शोकं वा क्लामयति सुक्कं ४। परिणामविसेसो य फलविसेससूतितो त्ति भण्णति—

अट्टे तिरिक्खजोणी, रोद्दज्झाणेण गम्मती णरयं। धम्मेण देवलोगं, सिद्धिगती सुक्कझाणेणं॥ १॥
[ ]

अट्टमवि सविसए लक्खणभेदेण चउधा। तस्स पढमभेदरूवं–अमणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओगाभिकंखी सतिसमण्णागते यावि भवति। अमणुण्णं–अणिट्ठं, एगीभावेण पगरिसेण य जोगो संपओगो, तेण अमणुण्णेण संपउत्तो, तस्स विप्पओगाभिकंखी 'संतिसमण्णागते' चिंतामणुगते तदेगग्गो चिंतानिरोहेण तमेव झायति, 'कहमणिट्ठविसयविप्पओगो भवेज्ज? इट्ठेहिं वा संपयोगो?' त्ति सुतिसमण्णाहरणमेव तिव्वराग-दोसाणुगतो कम्मसुवचिणति, पढमभेओ १। विवरीओऽयमुत्तरो–मणुण्णसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगाभिकंखी सतिसमण्णागते यावि भवति। मणुण्णा–मणोभिरामा विसता तेहिं संपउत्तो तेसिं अविप्पतोगत्थं तहेव सतिसमण्णाहरणमेव ते अच्चंतमभिलसंतो दुक्खपडिभीतो करेति बितियभेदो २। अतो पुण आयंकसंपओगसंपउत्तो

१ अधुनाप्रव्रजितः–नवदीक्षितः॥ २ "परियट्टणं ति वा अब्भसणं ति वा गुणणं ति वा एगट्ठा" इति वृद्धविवरणे॥ ३ कथयति॥ ४ "इदाणिं झाणं–तं च अंतोमुहुत्तियं भवइ। तस्स य इमं लक्खणं, तं०–दढमज्झवसाणं ति। केई पुण आयरिया एवं भणंति–"एगग्गस्स चिंताए निरोधो झाणं" एगग्गस्स किर चिंताए निरोधो तं झाणमिच्छंति, तं छउमत्थस्स जुज्जइ, केवलिणो न जुज्जइ त्ति। किं कारणं? जेण मइ त्ति वा सुति त्ति वा सण्ण त्ति वा आभिणिबोहियणाणं ति वा एगट्ठा, केवलिस्स य सव्वभावा पच्चक्ख त्ति काऊण आभिणिबोहियणाणस्स अभावे कओ चिंतानिरोधो भवइ? तम्हा "एगग्गचिंतानिरोधो झाणं" इति विरुज्झते, दढमज्झवसाओ पुण सव्वाणुवाइ त्ति काऊण। जेसिं पुण आयरियाण "एगग्गचिंता निरोधो झाणं" तेसिं इमो वक्खाणमग्गो–एगग्गस्स य जा चिंता [ निरोधो य ] तं झाणं भवइ, एते दोण्हाणं, तत्थ एगग्गस्स चिंता एतं झाणं छउमत्थस्स भवइ, कहं? जहा दीवसिहा निवायगिहावत्थिया वि किंचि कालंतरं निच्चला होऊण पुणो वि केणइ कारणेण कंपाविज्जइ, एतं छउमत्थस्स झाणं, तं कम्मि वि आलंबणे कंचि कालं अच्छिऊण पुणो वि अवत्थंतरं गच्छइ; जो पुण एगग्गस्स निरोधो एयं झाणं केवलिस्स भवइ, कम्हा? जम्हा केवली सव्वभावेसु केवलोवयोगं णिरुंभिऊण चिट्ठइ।" इति वृद्धविवरणे॥ ५ विग्रहः–समस्तपदपृथक्करणम्॥ ६ तर्कादयः॥ ७ "आ मुहूर्तात्" तत्त्वार्थ० ९–२८॥ ८ सामान्यलक्षणोपपादितम्॥ ९ "तत्थ संकिलिट्ठज्झवसायो अट्टं १। अइकूरज्झवसाओ रोद्दं २। दसविहसमणधम्मसमणुगतं धम्मं ३। सुक्कं असंकिलिट्ठपरिणामं अट्ठविहं वा कम्मरयं सोधति तम्हा सुक्कं ४।" इति वृद्धविवरणे॥ १० स्मृतिसमन्वागतः। "सतिसमण्णागते नाम चित्तनिरोहं काउं झायइ" इति वृद्धविवरणे॥ ११ स्मृतिसमन्वाहरणमेव॥ १२ अविप्रयोगार्थं तथैव स्मृतिसमन्वाहरणमेव॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स विप्पओगाभिकंखी सतिसमण्णा० । आतंको[1]–दीहकालो कुट्ठाति जेण कहिंचि जीवति, "तकि कृच्छ्रजीवने" इति एतस्स रूवं, आयंकस्स उवद्दवो आसुकारी वा सूलातिरोगो[2], "रुजो भंगे" सद्दो, रुजतीति रोगः, अत एव आयंकग्गहणेण रोगो वि घेप्पति, जेणं आयंकस्स उवद्दवो ण पत्तेयं, तस्स विप्पतोगत्थं[4] सतिसमण्णाहारं काउं झायति ततियभेदो ३ । परिज्झितकाम-भोगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगाभिकंखी [ सतिसमण्णागते यावि भवति ] । परिज्झा[5]–अभिज्झा अभिलासो, कामो[6]–फरिसो, तदुपकारिणो सेसिंदियविसया भोगा, परिज्झितो–अभिलसितो, तेहिं संपउत्तो । परिज्झितो परिज्झा जस्स संजाता तारकादिइतचि परिज्झितो । जं वा इंद-चक्कवट्टिमहाभोगाभिलासेण सति वा असति वा तधेतदुपपत्तिसुतिसमण्णाहरणं णिदाणं नाम चतुत्थमट्टविहाणं ४ ।

को पुण अट्टं झातति ? सामिविसेसेणं सो अविरत-देसविरत-पमत्तसंजता । कण्ह-नील-काउलेस्सा अंतग्गतो भावो । तेसिं इमे क्रियाविशेषा भावसूचकाः, तं०–कंदणता १ सोतणता २ तिप्पणता ३ विलवणता ४ । कंदणं–महता सद्देण विरवणं संपओग-विप्पओगत्थं १ सोयणं–अंसुपुण्णनयणस्स रोयणं २ तिप्पणं–अंतग्गतजेरणं तितोग-परितावो ३ विलवणं–'हा हा ! कट्ठं, अहो ! विणट्ठो ह'मिति सोगसंबद्धमणेगसो भासणं ४ । १ ।

अट्टाणंतरसमुद्दिट्ठं रोद्दं । तं चउविहं–हिंसाणुबंधी १ मोसाणुबंधी २ तेणाणुबंधी ३ सारक्खणाणुबंधी ४ । हिंसाणुबंधी–सया सत्तवहपरिणामो सीहस्सेव १, मोसाणुबंधी–परब्भक्खाण-पेसुण्ण-परुसवयणरती २, तेणाणुबंधी–परदव्वहरणाभिप्पातो निच्चं ३, सारक्खणाणुबंधी–असंकणिज्जेसु वि संकितस्स परोवमद्देण वि संतसरीरसारक्खणं[11] ४, सव्वत्थ सुतिसमण्णाहारो । तं कस्स भवति ? अविरतस्स देसविरतस्स य तिव्वकण्ह-नील-काउलेसस्स । इमाणि तज्झाइणो[12] लक्खणाणि–उस्सण्णदोसो १ बहुदोसो २ अण्णातदोसो ३ आमरणंतदोसो ४ । हिंसादीणं अण्णतरे अणवरतं पवत्तमाणो उस्सण्णदोसो १ । हिंसादिसु सव्वेसु पवत्तमाणो बहुदोसो २ । अण्णातहिंसादिदोस-फल-विवागो तिव्वतदज्झवसाणो अण्णातदोसो ३ । परिगिलायमाणो वि आगतपच्चादेसो अभिमुहीभूतकम्मोदतो[13] काल-सोगरिक इव हिंसादिसु अपच्छाणुतावी आमरणंतदोसो ४ । २ ।

पसत्थमुवरिमं झाणदुगं । तत्थ पढमं धम्मं, तं चउव्विहं चउपडोतारं[14] । पडोतारवयणं सव्वविसेससूतणत्थं तस्स विधतो[15]–आणाविजए १ अवायविजए २ विपाकविजए ३ संठाणविजए ४ । आणा–वीतरागवयणं, तेण विजयणं विजतो–जिणभणित-दिट्ठेसु भावेसु धम्मा-ऽधम्मा-ऽऽगास-जीव-पोग्गलत्थिकाय-पुढविकायादि-समिति-गुत्ति-समय-लोगंत-समुप्पत्ति-विगम-ध्रुवादिसु परमसुहुमेसु[16] हेउ-दिट्ठंतादीतेसु वि सुतोवएसेणेव एवमेतदिति अज्झव-सातो आणाविजतो, जहा–"तमेव सच्चं निस्संकं जं जिणेहिं पवेदितं" [ आचाराङ्गे श्रु० १ अ० ५ उ० ५ सू० ३ ] १ । मिच्छादरिसणा-ऽविरति-पमाद-कसाद[17]-जोगाणं इह परलोए य विवागा इति णिच्छतो[18] पसत्थनिच्छओ वा अवात[19]-

---

१ "तत्थ आतंको णाम–आसुकारी, तं०–जरो अतीसारो सूलं सज्जहूओ एवमादि, आतंकगहणेण रोगो वि सूइओ चेव, सो य दीहकालिओ भवइ, तं०–गंडी अदुवा कोढी० [आचा० श्रु० १ अ० ६ उ० १ सू० २] एवमादि" इति **वृद्धविवरणे** ॥ २ शूलादिरोगः ॥ ३ धातुरित्यर्थः ॥ ४ विप्रयोगार्थं स्मृतिसमन्वाहारम् ॥ ५ "परिज्झ त्ति वा पत्थणं ति वा गिद्धि त्ति वा अभिलासो त्ति वा लेप्प त्ति वा कंख त्ति वा एगट्ठा" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ६ "तत्थ कामग्गहणेण सद्दा रूवा य गहिया, भोगग्गहणेणं गंध-रस-फरिसा गहिया" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ७ ध्यायति ॥ ८ **°ण भितोग°** मूलादर्शे । अन्तर्गतज्वरेण त्रियोगपरितापः । "तिप्पणया नाम–तीहि वि मण-वयण-काइएहिं जोगेहिं जम्हा तप्पति तेण तिप्पणया ।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ९ एतदार्तध्यानचतुर्लक्षणानन्तरं **वृद्धविवरणकृता** [ "अहवा कूवणया कक्करणया तिप्पणया विलवणया । तत्थ] कूवणया नाम-माति-पिति-भाति-भगिणी-पुत्त-दुहित्तमरणादीसु महइमहंतेण सद्देण रोवइ त्ति कूवणया । कक्करणया नाम–जो घरजंतगं व वाहिज्जमाणं करगरइ सा कक्करणया । तिप्पणया-विलवणयाओ पुव्ववण्णियाओ ।" इति प्रकारान्तरेणापि लक्षणचतुष्कं निष्टङ्कितमस्ति ॥ १० मृषानुबन्धि–पराभ्याख्यान-पैशुन्य० ॥ ११ स्वकशरीरसंरक्षणम्, सर्वत्र स्मृतिसमन्वाहारः ॥ १२ तद्ध्यायिनः ॥ १३–कर्मोदयः कालशौकरिक इव । कालशौकरिक इति एतन्नामा महाघातुकः कषायी ॥ १४ चतुष्प्रत्यवतारम् । प्रत्यवतारवचनं सर्वविशेष-सूचनार्थम् ॥ १५ विधयः प्रकारा इत्यर्थः ॥ १६ **°सु मेओ दि°** मूलादर्शे । हेतु-दृष्टान्तातीतेष्वपि ॥ १७–कषाय–॥ १८ निश्चयः ॥ १९ अपायविजयः अपायविचयो वा ॥



Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

विजतो २ । पुण्णा-ऽपुण्ण-कम्मप्पगडि-ठिति-अणुभाव-प्पएसबंधविविहफलोदयचिंतणं विपा[1]कविजतो ३ । अत्थि-काय-लोग-दीवोदहि-पव्वय-णदी-वलय-दव्व-खेत्त-काल-पज्जवविचयणं संठाणविजतो ४ । तदत्थं सुतिसमण्णाहारो धम्मं । तं इंदियादिप्प[2]मातणियत्तमाणसस्सेति भण्णति अपमत्तसंजयस्स । तस्स सामिणो लक्खणाणि, तं जहा—आणारुयी १ निसग्गरुयी २ सुत्तरुयी ३ ओगा[3]ढरुयी ४ । आणारुयी—तित्थगराणं आणं पसंसति १ निसग्ग-रुती—सभावतो जिणपणीए भावे रोयति २ सुत्तरुयी—सुतं पढंतो संवेगमावज्जति ३ ओगा[4]ढरुयी—णै[5]यवायभंगगुविलं सुतमत्थओ सोऊणं संवेगजातसड्ढो झा[6]तति ४ । आलंबणाणि से चत्तारि जहा विसमसमुत्तरणे वल्लिमादीणि, तं०—वा[7]यण १ पुच्छण २ परियट्टण ३ धम्मकहातो ४ । इमा पुण से अणुपेहाओ, तंजहा—अणिच्चाणुप्पेहा १ असरणाणु-प्पेहा २ एगत्ताणुप्पेहा ३ संसाराणुप्पेहा ४ । संगविजयणिमित्तमणिच्चताणुप्पेहं आरभते, "स[8]व्वट्ठाणाइं असासताइं०" गाहा [ मरणसमाहीए गा० ५७४ ] १ । धम्मे थिरताणिमित्तं असरणतं चिंतयति, "ज[9]म्म-जरा-मरण०" गाहा [ मरण० गा० ५७८ ] २ । संबंधिसंगविजताय एगत्तमणुपेहेति, "ए[10]क्को करेति कम्मं०" गाहा [ महापच्चक्खाणे गा० १५ ] ३ । संसारुव्वेगकरणं संसाराणुप्पेहा, "[11]धी संसारो जहियं०" गाहा [ मरण० गा० ५९९ ] ४ । एसा ण केवलमप्पमत्त-संजतस्स उवसामग-खवगसेढीपज्जवसाणे उवसंतकसायस्स खीणकसायस्स एक्कारसंगवितो । एवमणेगविहाणं धम्मज्झाणमुपदिट्ठं ३ ।

धम्मसु[12]पवादितगुणं । अणंतरुद्दिट्ठं तु तस्स सुत्तं ( ? चतुत्थं सुक्कं ), तं चतुव्विहं, तं जहा—पुहत्तवियक्कं स[13]वितारं १ एगत्तवियक्कं अविचारं २ सु[14]हुमकिरियमपडिवादिं ३ समुच्छिण्णकिरियमणियट्टि ४ । जं परमाणु-जीवादि-एकदव्वे उप्पाय-विगम-धुवभावपज्जायाणेगणयसमाहितं पुहत्ते वा यस्स चिंतणं वितक्कसहचरितं सविचारं च एतं पुहत्तवियक्कं सविचारं १ । जं पुण पज्जवंतरविणियत्तितमेगपज्जवचिंतणं सवितक्कमेव विचारविउत्तं तु तं एगत्त-वियक्कमविचारं २ । तं ए[15]तं उभयं सामिविसेसेण सुक्कलेसस्स चोद्दसपुव्वधरस्स अणुत्तरोववाताभिमुहस्स उत्तमसंघ-यणस्स । उत्तरमवि उभयं उत्तमसंघयणाधिकारा तस्सेव, जेण जीवा नियमा पढमसंघयणे सिज्झंति । बितियं सुक्कज्झाणमतिक्कंतस्स ततियमप्पत्तस्स एतं झाणंतरं, एत्थ वट्टमाणस्स केवलनाणमुप्पज्जति । जं पुण भवधारणीय-कम्माणं वेयणिज्जादीणं आयुसमधिकाणं अचिन्तमाहप्पसमुग्घायसमीकयाणं तुल्लेसु वा समुग्घायाभावे अंतोमुहुत्त-भाविपरमपदस्स मण-वयण-कायजोगणिरोधपरिणतस्स तिभागूणोरालियसरीरत्थितस्स केवलिस्स सण्णिपंचेंदिय बेइंदिय-पणगजीवापज्जत्तगाहोसंखेज्जगुणहीणसुहुमजोगत्तं पडिवायविज्जुतं तं सुहुमकिरियमपडिवाति ३ । जं तु

---

१ "सीसो आह—अवाय-विवागविजयाणं को पइविसेसो ? । आयरिओ भणइ—अवायो एगंतेणं चेव अवादहेउएहिं कम्मेहिं भवइ, जेहिं असुहेहिं संसारियाइं दुक्खाइं पावंति ताणि चेव कम्माणि वावहारियणयस्स अवायो भण्णइ । कहं ? जहा लोगे अण्णवेज्जए "अण्णमया वै प्राणाः" जम्हा किर अण्णेण विणा पाणा ण भवंति तम्हा लोगेण अण्णं चेव पाणा कया, एवं इहइं पि जम्हा मिच्छादरिसणा-ऽविरइ-पमाद-कसाय-जोगेहिं विणा णावायो भवइ तम्हा ताणि चेव अवातो भण्णइ । भणियं च—इहलोइए अवाए अदुवा पारलोइए । चिंतयंतो जिणक्खायं धम्मं झाणं झियायइ ॥ १ ॥ विवागो पुण सुभा-ऽसुभाणं कम्माणं जो अणुभावो तं चिंतइ सो विवागो । भणियं च—"सुहाणं असुहाणं च कम्माणं जो विवागयं । उदिण्णाणं च अणुभागं धम्मज्झाणं झियायइ ॥ १ ॥" अवाय-विवागाणं एस विसेसो त्ति गयं ।" इति वृद्धविवरणे पत्र ३२-३३ ॥ २-प्रमाद-॥ ३-४ "ओगाढरुयी" इति वृद्धविवरणे ॥ ५ नयवादभङ्ग-॥ ६ ध्यायति ॥

७ "आलंबणाणि वायण-पुच्छण-परियट्टणा-ऽणुचिंताओ ।" इति ध्यानशतके गा० ४२ ॥

८ "सव्वट्ठाणाइं असासताइं इह चेव देवलोगे य । सुर-असुर-नराईणं रिद्धिविसेसा सुहाइं वा ॥" इति पूर्णगाथा ॥

९ "जम्म-जरा-मरण-भएहऽभिद्दुते विविहवाहिसंतत्ते । लोगम्मि णत्थि सरणं जिणिंदवरसासणं मोत्तुं ॥" इति पूर्णा गाथा ॥

१० "एक्को करेति कम्मं फलमवि तस्सेक्कओ समणुहोइ । एक्को जायइ मरइ य परलोयं एक्कओ जाइ ॥" इति सम्पूर्णा गाथा ॥

११ "धी ! संसारो जहियं जुवाणओ परमरूवगव्वियओ । मरिऊण जायइ किमी तत्थेव कलेवरे नियए ॥" इति पूर्णा गाथा ॥

१२ उपपादितगुणम् ॥ १३ सविचारम् ॥ १४ "सुहुमकिरियं अणियट्टि ३ समुच्छिन्नकिरियं अप्पडिवादि ४।" इति वृद्धविवरणे । व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ स्थानाङ्गसूत्र स्था० ४ उ० १ सू० २४७ ध्यानशतक गा० ८१-८२ प्रभृतिष्वयमेव नामप्रकारो दृश्यते । औपपातिकोपाङ्ग सू० २० तत्त्वार्थादिषु पुनः श्रीअगस्त्यसिंहपादप्रतिपादितो नामप्रकारो दृश्यते ॥ १५ "तत्थ आदिल्लाणि दोण्णि चोद्दसपुव्विस्स उत्तमसंघयणस्स उवसंत-खीणकसायाणं च भवति ।" इति वृद्धविवरणे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वजोगकृतोवरतं पंचरहस्सक्खरुच्चारणाकालं सेलेसि वेदणीया-ऽऽउ-णाम-गोतनिस्सेसखवणमणियत्तिसमावं केवलिस्स तं परमसुक्कं समुच्छिण्णकिरियमणियट्टिं ४। एतेसिं लक्खणाणि—अव्वहे १ असम्मोहे २ विवेगे ३ विओसग्गे ४। 'अव्वहे' विण्णाणसंपण्णो न बीभेति ण चलति १ 'असम्मोहे' सुसण्हे वि पयत्थे ण सम्मुज्झति २ 'विवेगे' सव्वसंजोगविवेगं पेच्छति ३ 'वितोसग्गे' सव्वोवहिवितोसग्गं करेति ४। इमातो अणुप्पेहातो—अवाताणुपेहा १ अणंतवत्तियाणुप्पेहा २ असुभाणुप्पेहा ३ विपरिणामवत्तियाणुपेहा ४। जहत्थं आसवावातं पेक्खति १ संसारस्स अणंतत्तं० २ असुभत्तं० ३ सव्वभावविपरिणामित्तं० ४। ताणि पुण चत्तारि वि सुक्कज्झाणाणि सामिविसेसेण त्रि-एक-काययोग-अजोगाणं। त्रिजोगाणं भंगितसुतपादीणं पुहत्तवितक्कं, अण्णतरएगजोगाणं एगत्तवियक्कं, कायजोगाणं सुहुमकिरितमपडिवाति, अजोगाणं समुच्छिण्णकिरियमणियट्टिं। मणसोऽवस्सभावे वि पाहण्णेण निद्देसो सेसाण वि जोगाणं। जहा—"सव्वं कुट्ठं तिदोसं हि पवणेण तु तिगिच्छितं।" [ ]। एतेसिं पुण सुक्कज्झाणाणं जहा जोगकतो विसेसो तहा इमो वि—एकाहारं सवितक्कं विचारं पढमं, बितियं च परमाणुम्मि अण्णत्थ वा एगदव्वे समसियमुभयं अवितक्काविचारं तु कट्ठं व तुल्लता अविचारं बितितं। को पुण वितक्को विचारो वा? भण्णति—वितक्को पुव्वगतं सुतं, अत्थ-वंजण-जोगसंकमणं वियारो, एगदव्वविवण्णादिपज्जाओ अत्थो, वंजणं सद्दो, जोगा कायादयो। एतं सुक्कं। चतुव्विहमवि ज्झाणं परिसमत्तं ५॥

विओसग्गो पुण—वितोसग्गो—परिच्चागो, सो बाहिर-ऽब्भंतरोवहिस्स जिण-थेरकप्पियाणं चेल चेला दुविहा बारसावसाणचउद्दसोवग्गहे अणेगविहगण-भत्त-सरीर-वाया-माणसाणं अब्भंतरस्स मिच्छादरिसणा-ऽविरति-पमाय-कसायाणं वितोसग्गो इति ६। अब्भंतरो तवो॥

एस बारसविहो तवो आसवनिरोहसमत्थो निज्जराकारणं च, "तपसा निर्जरा च" [तत्त्वा० ९-३] इति वचनात्, परमं धम्मसाहणं, तेणं अहिंसा-संजम-तवसाहितो मंगलमुक्किट्ठं धम्मो भवति। सुत्तप्फासितनिज्जुत्ती गता, वित्थारेण य उवरिं भण्णिहिति। उवघायपदत्था य संभवत उत्ता।

चालणेदाणिं—चालणा पुण सुत्तं पुच्छितगिति(?) चोदगवयणं। किं च—

णिर[त्थ]गमवत्थं च ऊणं वाऽधियमेव य। संदिद्धं पुणरुत्तं च असिलिट्ठं च चोदणा॥ १॥

[ ]

आह चोदगो—'धम्मो मंगलमुक्किट्ठ'मिति भणिते किमहिंसा-संजम-तवगहणेण पतोयणं? जतो ताणि चेव धम्मसाहणाणि तम्हा पुणरुत्तदोसोऽयं। चालणा गता॥

पसिद्धी भण्णति, तं पुण पचवत्थाणं इमं—

अण्णातं थिरितोपेतं विरोधोपत्थितं णयो। दूसिय पचवत्थाणं सिद्धिमाहु मणीसिणो॥ १॥

[ ]

गम्मं-पसु-देसातीणिद्धारणत्थं पहाणसाहणग्गहणं, अहिंसा-संजम-तवेहिं जो साहिज्जति सो धम्मो मंगलमुक्किट्ठं। सुत्तगतं चोदणावत्थाणं भणितं। इदाणीं पुणो चोयइ—किं एस धम्मो आणाए पडिवज्जितव्वो अह किंचि कारणमवि पडिवादणत्थमत्थि?। 'अत्थि' गुरवो भणंति—सव्वण्णुमयमिति पहाणमाणापडिवत्तिकारणं किंतु सीसस्स [13]मतिविउद्धत्तणमभिसमिक्ख कारणातिवित्थारोपेतमवि भण्णति त्ति। निज्जुत्तिगाहा—

---

१ पञ्चह्रस्वाक्षरोच्चारणाकालम्॥ २ "विवेगो विउस्सग्गो संवरो असम्मोहो, एते लक्खणा सुक्कस्स" इति वृद्धविवरणे॥ ३ "इदाणिं अणुप्पेहाओ, तं०—असुहाणुप्पेहा अवायाणुप्पेहा अणंतवत्तियाणुप्पेहा विप्परिणामाणुप्पेहा।" इति वृद्धविवरणे॥ ४ अपायानुप्रेक्षा॥ ५ आश्रवापायम्॥ ६ भङ्गिकश्रुतपातिनां दृष्टिवादश्रुतपाठिनामित्यर्थः॥ ७ "विओसग्गो त्ति वा विवेगो त्ति वा अधिकरणं ति वा छड्डणं ति वा वोसिरणं ति वा एगट्ठा।" इति वृद्धविवरणे॥ ८ "जो अहिंसा-संजम-तवजुत्तो सो धम्मो मंगलमुक्कट्ठं भवइ।" इति वृद्धविवरणे॥ ९—तपःसाधितः॥ १० प्रयोजनम्॥ ११ गाम-पसु° मूलादर्शे॥ १२ प्रतिपादनार्थमस्ति?॥ १३ मतिविबुद्धत्वमभिसमीक्ष्य कारणादिविस्तारोपेतमपि भण्यत इति॥

**जिणवयणं सिद्धं चेव भण्णती कत्थई उदाहरणं ।**
**आसज्ज उ सोयारं हेऊ वि कहिंचि भण्णेज्जा ॥ २२ ॥**

**जिणवयणं सिद्धं चेव०** । जिणा चउव्विहा जहा पुव्वं भणिता । तेसिं भावजिणाणं वयणं सव्वण्णुत्तणेण अकोप्पं निव्वयणिज्जं पुव्वपसिद्धमेव । भणितं च—

वीयरागा हि सव्वण्णू मिच्छा णेव पभासती । जम्हा तम्हा वती तस्स तच्चा भूतत्थदरिसिणी ॥ १ ॥
[ ] ॥ २२ ॥

किंच ण केवलं हेऊ, उदाहरणमवि । अहवा पंचावयवमवि [1]उपपातिज्जति त्ति गाहा—

**कत्थति पंचावयवं दसहा वा सव्वहा ण पडिसिद्धं ।**
**ण य पुण सव्वं भण्णति हंदी ! सवियारमक्खातं ॥ २३ ॥**

**कत्थति पंचावयवं** सिस्समतिसामत्थावेक्खं भण्णति, दसावयवमवि संभवति । आह–जति पंचदसावयवोववण्णमत्थविवरणसमत्थमत्थि वयणं किण्ण तेणेव वक्खाणिज्जति सैता ? । आयरिया भणंति–**हंदी ! सवियारमक्खातं**, हंदीति उपप्पदरिसणे, एवं गिण्ह–एत्थ वा पगरणे पगरणंतरेसु वा कयाइ आगममेत्तमेव कहिज्जति, कँदादि सहेतुकं, आगम-हेउ-दिट्ठंता वा, अहवा सोपसंहारा, पइण्णा हेउ-दिट्ठंतोवसंहार-णिगमणेहिं वा णिरूविज्जति आगमवयणं पंचहिं, दसहिं वा ।

एतेसिं पंचण्हं अवयवाणं लक्खणं लोगसिद्धे अत्थे फुडं निदरिसिज्जति ततो समए अत्थपसाहणं भविस्सति–साहणीयनिद्देसो पतिण्णा, जहा अणिच्चो सद्दो १ । उदाहरणसाधम्मेण साहणीयस्स साहणं हेऊ, वैधम्मेण वा, जहा पयत्तनिप्फण्णत्तणेण साहणीयधम्मेण २ । तद्धम्मभावी दिट्ठंतो उदाहरणं, तव्विवज्जए वा, विवरीयं जहा पडो ३ । उदाहरणावेक्खो तहेति उवसंहारो ण वा तहेति साहणीयस्स उँवणतो, जहा पडो पयत्तनिप्फण्णे त्ति तहा सद्दो वि, ण वा तहेति हेतुववदेसो ४ । पतिण्णाए पुणो वयणं निगमणं, जहा–तम्हा पयत्तनिप्फण्णत्तणेण अणिच्चो सद्दो ५ । एतं अवयवनिरूवणं ।

एतेहिं समए [6]अत्थत्थपसाहणं । धम्मो पत्थुतो, तम्मि साहेतव्वे जीवत्थित्तं णिदरिसिज्जति, तम्मि विज्जमाणे सव्वं सफलमिति भण्णति–अत्थि जीवो पतिण्णा, एकपदनामसिद्धेरिति हेतुः, दिट्ठंतो घडो, जहा घड इति [7]एगपतं नाम सिद्धं तं च वत्थु विज्जते तहा असमासपदं जीव इति, तम्हा एगपदसिद्धेरिति अत्थि जीवो, तस्स सरूवं चेयणत्तणं ।

दसावयवपरूवणं पुण–पतिण्णा पढमो अवयवो १ पतिण्णासुद्धी २ हेऊ ३ हेउसुद्धी ४ दिट्ठंतो ५ दिट्ठंतविसुद्धी ६ उवसंहारो ७ उवसंहारसुद्धी ८ निगमणं ९ निगमणविसुद्धी दसमो १० । एते एत्थेव उवरिं भणिहिंति । पतिण्णा [8]अक्खरथोववइत्तो फुडा इति । हेतुरपि तदुभयमतिकम्म पहाणमिदमत्थसाहणमिति । भणितं च—

ताव पइण्णाओ हेउणा वि सह णोवलब्भते अत्थो। जाव [य] लोगपसिद्धो दिट्ठंतो न पयासति ॥ १ ॥
[ ] ॥ २३ ॥

अतो दिट्ठंतेगट्ठितनिज्जुत्तिगाहा इमा—

**[9]णातं १ आहरणं ति य २ [10]दिट्ठंतो ३ वम्म ४ निदरिसणं ५ तह य ।**
**एगट्ठं तं दुविहं चउव्विहं चेव णायव्वं ॥ २४ ॥**

**णातं आहरणं ति य०**।णज्जंति अणेण अत्था **णातं** १ । आहरति तमत्थे विण्णाणमिति **आहरणं** २ । [11]दिट्ठोऽस्स अंतो **दिट्ठंतो** ३ । उवेच माणं उवमा, तब्भावो **ओवम्मं** ४ । अहिकं दरिसणं **निदरिसणं** ५ ।

---

१ **उपपातजुति त्ति** मूलादर्शे । उपपाद्यत इति ॥ २ °**वेक्खत्थं भण्णति** मूलादर्शे ॥ ३ सदा–निरन्तरम् ॥ ४ कदाचित् ॥ ५ उपनयः ॥ ६ अस्त्यर्थप्रसाधनं धर्मास्तिकायाद्यर्थप्रसाधनमित्यर्थः ॥ ७ एकपदम् ॥ ८ अक्षरस्तोकवचस्तः स्फुटा ॥ ९ **नायमुदाहरणं** सा० हाटी० । खं० वी० आदर्शयोः **वृद्धविवरणे** अस्यां चागस्त्यचूर्णौ **णातं आहरणं** इत्येव पाठो वर्तते ॥ १० **दिट्ठंतु ३ वमाण ४ नि°** हाटी० ॥ ११ **दिट्ठस्समंतो** मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगट्ठिता गता । तं उदाहरणं **दुविहं**-चरितं कप्पितं च । चरितं-केणति अणुभूतं दिट्ठंतत्तेण उवदंसिज्जति । कप्पितं-असब्भूतमवि अत्थसाहणत्थमुप्पादिज्जति । इदमवि—

जह तुब्भे तह अम्हे तुब्भे वि य होहिहा जहा अम्हे । अप्पाहेति पडंतं पंडुयपत्तं किसलयाणं ॥ १ ॥
[ उत्त० नि० गा० ३०८ अनुयो० पत्र २३२ ]

एतं कप्पियं । एत्थ एक्केक्कं **चउव्विहं** ॥ २४ ॥ तत्थ गाहा—

**चरितं च कप्पितं या दुविहं तत्तो चउव्विहेक्केक्कं ।**
**आहरणे तद्देसे तद्दोसे चेवुवण्णासे ॥ २५ ॥**

चरितं च कप्पितं च । चउव्विहमेव, तं०-आहरणे आहरणतद्देसे आहरणतद्दोसे उवण्णासोवणए । एतेसिं पि एक्केक्कं चरित-कप्पितभेदेण दुविहं ॥ २५ ॥

**आहरणं** ति दारं, तं चउव्विहं, तं०-अवाते उवाते ठवणाकम्मे पडुप्पण्णविणासि । अवाए वि चउव्विहे, तं०-दव्व-खेत्त-काल-भावावाए ।

तत्थ **दव्वावाए** उदाहरणं-**मालवगाओ** दोहिं भाउगेहिं **सुरट्ठं** गंतूण साहस्सितो णउलतो विढत्तो । ते सग्गामं पहाविता तं वारएण वहंति । जस्स हत्थे भवति सो इयरं चिंतेति 'घाएमि' त्ति । चिंतेंति ण य अज्झवस्संति । सग्गामब्भासं पत्ता दहतडं पादपक्खालणट्ठमुवगता । जेट्ठेण इतरस्स पेच्छंतस्स सहसा दहे पक्खित्तो । कणीयसो संभंतो भणति-किं ते कतं ? । जेट्ठेण साहिप्पायो कहिओ । इतरो भणति-मम वि एस चेव अभिप्पातो आसि, सुट्ठु कतं । घरं गताण सागतकिच्चं काऊण माताए तेसिं भगिणी कुमारिया वीहिं पेसिता मच्छाणं । सो णउलओ जेण मच्छेण गिलितो सो मारिओ मच्छिएण, हट्टे विक्कायमाणो तीए गहितो । घरे फालितीए [णउलओ] दिट्ठो । सव्वेसिं च चक्खुं हरिऊणं उच्छंगे छूढो कहमवि थेरीए दिट्ठो । पुच्छिया य-किं एतं ? । गूहंतीए घेत्तुमभिप्पायंती थेरी असिएणं मम्मत्थाणे पहता मता य । भाउएहिं पडंती दिट्ठा, चेडियसंभमक्खलितो णउलओ [वि] । 'इमो सो अणत्थो' त्ति थेरिं सक्कारेऊणं चेडीए दाउं पव्वइया ॥

तेहिं दव्वातो अवातो कतो, थेरीए ण कओ । एवमत्थजातस्स कारणगहितस्स अवाओ करणीओ, विणासकारणमिह परलोए य एतं ति । एतं दव्वओ आहरणं ॥

**खेत्तावाते**-जो जतो खेत्तातो सावातातो अवक्कमति, जहा **दसारा मधुरातो जरासंधभएण बारवतिं** गता । एवं साधुणा वि असिवादिनित्थरणत्थं खेत्तावादो कातव्वो ।

**कालावाते**-जहा **दीवायणेण बारवती** कालपरिमाणेण मुक्का तहा "संवच्छरबारसएण होहिति०" [ओघनि० भा० गा० १५ ] गाहा, सकाल एव अवातो कातव्वो ।

**भावावाए** उदाहरणं-एक्को **खमतो** चेल्लएण सह वासारत्ते भिक्खस्स हिंडति । तेण मंडुक्कलिता मारिता । चेल्लगं पडिचोएंतं भणति-चिरमता । रत्तिं आवस्सए अणालोएंतो चेल्लएण 'आलोएहि मंडुक्कलियं' ति भणिए रुट्ठो खेलमल्लगं घेत्तुमुद्धातितो खंभस्स अंसीए वेगावडितो मतो जोतिसिएसु उववण्णो । चइत्ता दिट्ठीविसकुले दिट्ठीविसो जातो । तत्थ समीवणगरे रायपुत्तो सप्पेण खतितो । वालग्गाहिणा मंतेहिं मंडलं पवेसित्ता भणिता-जेण खइतो सो अच्छतु, सेसा गच्छंतु । गतेसु एक्को ठितो । अंगाररासिं समीवे काउं भणितो-विसं पडिपिब अग्गिं वा पविस ।

---

१ उपपाद्यते ॥ २ **कप्पियं वा दु°** खं० ॥ ३ साहस्रिकः सहस्ररूप्यकपरिमितः ॥ ४ अध्यवस्यन्ति-प्रवर्त्तन्ते ॥ ५ स्वाभिप्रायः ॥ ६ क्षेत्रापायः कर्तव्यः ॥ ७ "संवच्छरबारसएण होहिइ असिवं ति तो तओ गिंति । सुत्तत्थं कुव्वंता अइसयमाईहिं नाऊणं ॥" इति पूर्णा गाथा ॥ ८ गृहीत्वा उद्धावितः स्तम्भस्य अस्र्या वेगापतितः ॥ ९ दृष्टिविषाः नागजातिविशेषः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्पा य गंधणा अगंधणा य। अगंधणा उत्तमा माणिणो। सो अगंधणो अग्गिं पडितो, न पिबति। मतो रायपुत्तो। रण्णा रुट्ठेण घोसावियं–जो सप्पसीसमाणेति तस्स दीणारं देमि। लोगो दीणारलोभेण सप्पे मारेति। तं खमगसप्पकुलं जातीसरं रत्तिं चरति 'मा दिया डहीहामो'। वालग्गाहीहिं सप्पे मग्गंतेहिं रत्तिं परिमलेण खमगसप्पबिलं दिट्ठं। दारट्ठिएहिं ओसहीहिं आवाहितो विदितकोवविवागो 'मा अभिमुहो डहिहामि' त्ति पतीवं[1] निग्गच्छंतो पुंछादारब्भ कप्पितो जाव सीसं। सो देवतापरिग्गहितो। तीए रण्णो दरिसणं दिण्णं–मा सप्पवहं करेहि, पुत्तो ते भविस्सति। **णागदत्तं** च से णामं करेहि। खमगसप्पो सम्मं पाणपरिच्चागेण रायपुत्तो जातो **नागदत्त** इति। जातिसरो खुड्डलओ चेव तहारूवाणं थेराणं अंतिए पव्वतितो। तिरियाणु[भाव]त्तणेण छुहालू दोसीणवेलाए[2] आढत्तो ताव भुंजति जाव सूरत्थमणं, उवसंतो धम्मसद्धिओ[3] य। तत्थ गच्छे चत्तारि खमगा[4]–चाउमासितखमतो तेमासिय० दोमासिय० एगमासितो। रत्तिं देवया वंदिया आगता, एक्कमासितो बारमूले, तदणु दोमासितो, तदणु तेमासितो, तदणु चाउम्मासितो, पंचमओ खुड्डतो[5], ते वोलेउं खुड्डओ वंदितो। खमगा रुट्ठा। निग्गच्छंती चाउमासितेण वत्थंते घेत्तुं भणिता–कडपूयणे! तवस्सिणो न वंदसि? दोसीणविद्धंसणं वंदसि। सा भणति–भावखमगं वंदामि, ण पूया-सक्कारमाणिणो। [6]ते वेगंतेण सामरिसिता। देवता चेलगरक्खणत्थं पडिचोयणत्थं च सण्णिहिता चेव। वितियदिवसे चेलओ दोसीणमाणेतुमालोएत्ता चाउम्मासितं णिमंतेति। तेसिं तद्दिवसं पारणगाणि, तेण पडिग्गहगे से निट्ठूढं[7]। मिच्छा दुक्कडं, तुब्भ [8]मंते खेलमल्लतो ण दिण्णो त्ति। तमणेण उप्परातो खेलमल्लए छूढं[9]। एवं तेमासिय-दोमासिएहिं जाव मासिएण अ। फेडेत्ता कुसणियलंबणं गेण्हंतो खमएहिं हत्थे गहितो। तस्स चेलगस्स अदीणस्स विसुद्धपरिणामस्स केवलमुप्पण्णं। देवया भणति–कोधाभिभूता कहं तुब्भे वंदियव्वा?। [ताहे ते] खमगा संवेगमावण्णा–मिच्छा मे दुक्कडं, अहो! बालस्स माहप्पं, अम्हेहिं पुण आसातितो[10]। तेसिं पि सुहअज्झवसाणाणं केवलमुप्पण्णं। एवं कोहा वि अवातो कातव्वो॥

जीवचिंताए वि सेहादीणं अवातो दरिसिज्जति संवेगत्थं सम्मत्तथिरीकरणत्थं च। जहा–जस्स वादिणो जीवो सव्वहा निच्चो तस्स सुह-दुक्ख-संसार-मोक्खा ण संभवंति, कूडत्थो सुहादीहिं अविपरिणामी आगासतुल्लो त्ति, जस्स वा खणभंगो तस्स सह कम्मणा पतिक्खणनिरोह-समुप्पाते को सुहादिसंबंधो?। किंच—

सुह-दुक्खसंपओगो णे[11] संभवति णिच्चपक्खवातम्मि। एगंतुच्छेयम्मि य सुह-दुक्खविकप्पणमजुत्तं॥ १॥

[ दसवै० नि० गा० ६० हाटी पत्र ४० ]

इह पुण अणेगंतपक्खावलंबणम्मि जीवो दव्वट्ठताए निच्चो पज्जवट्ठताए अणिच्चो, दिट्ठंतो सुवण्णं–जहा सुवण्णमंगुलीयत्तेण विणट्ठं कुंडलभावेण संभूतं सुवण्णदव्वमवट्ठितं, तहा जीवदव्वमवट्ठितं मणुस्सादिपज्जवेण संभूतं विणट्ठं देवादिणा उप्पाय-विगम-ट्ठितिजुत्तं ति सुह-दुक्ख-संसार-मोक्खा तस्स संभवंति॥

**उवाए** त्ति दारं, सो दव्वादि चतुव्विहो। दव्वोवातो[12]–जहा धातुवातिता उवादेण सुवण्णादि करेंति तहा संघादिकज्जे **जोणिपाहुडादीहिं** दव्वोवाए दरिसेति, पडिणीयपडिघायणत्थं वा। खेत्तोवातो–जहा **पुव्ववेतालीओ अवरवेताली** णावाए गम्मति एवं विज्जादीहिं अद्धाणाती आवती नित्थरितव्वा। कालोवातो–जहा णालियाए कालो णज्जति तहा सुत्त-ऽत्थब्भासेण एत्तिओ कालो गओ त्ति कज्जे जाणितव्वं॥

**भावोवाते** उदाहरणं–**सेणितो** राया भज्जाए भणति–**एगखंभं** मे पसादं करेहि। तेण वड्डतिणो[13]

१ प्रतीपम्॥ २ दोषीनवेलायाः–प्रथमालिकाभोजनाद् आरब्धः तावत्॥ ३ **धम्मसंठिओ य** वृद्धविवरणे॥ ४ क्षपकाः–तपस्विनः॥ ५ क्षुल्लकः॥ ६ तेऽप्येकान्तेन सामर्षिताः॥ ७ निष्ठ्यूतम्॥ ८ मया खेलमल्लकः॥ ९ क्षिप्तम्॥ १० आशातितः॥ ११ **ण जुज्जए णिच्चवायपक्खम्मि** खं०। **ण पविस्सइ णिच्चवायपक्खम्मि** वी०। **ण विज्जई निच्चवायपक्खम्मि** सा० हाटी०॥ १२ द्रव्योपायः–यथा धातुवादिकाः उपायेन॥ १३ वर्धकिनः॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आणत्ता गता कट्ठछिंदगा । तेहिं सलक्खणो महादुमो दिट्ठो, धूवो दिण्णो-जेणेस परिग्गहितो सो दरिसावं देउ जा न छिंदामो, अण्णहा छिंदामो । वाणमंतरेण **अभयस्स** अप्पा दरिसितो-अहं एकखंभं पासादं सव्वोउय-पुप्फ-फलं च आरामं करेमि, सव्वरुक्खसमिद्धं मा छिंदहा । ण छिण्णो । कतो [पासादो] ।

अण्णया एक्काए मातंगीए अंबडोहलो, भत्तारं भणति-आणेहि । अकालो अंबयाणं, रायारामाओ **ओणामणीए** ओणामेत्ता गहिता अंबा, **उण्णामणीए** उण्णामिता । रण्णा दिट्ठं-पदं ण दीसति, कहमंतेउरे ण माणूसो पविट्ठो ? जस्स एसा सत्ती सो अंतेउरमवि विणासेज्जा । **अभयं** भणति-सत्तरत्तब्भंतरे चोरमणुवर्णेतस्स णत्थि जीतं[1] । **अभतो** गवेसति । एगत्थ य गो[2]ज्जो रमिउकामो । लोगो मिलितो । तत्थ **अभतो** भणति-जाव आढवेति गोज्जो ताव अक्खाणगं सुणेह-

एगम्मि दरिद्दसेट्ठीकुले **वड्डुकुमारी** रूविणी । सा वरकामा देवं अच्चेति । एक्कम्मि आरामे चोरिउं पुप्फाणि उच्चेंती आरामिगेण दिट्ठा । कड्डिउमारद्धो । सा भणति-मा मे विणासेहि, तव वि भगिणी भागिणेज्जी वा अत्थि । भणति-एक्कहा मुयामि, जदि जद्दिवसं परिणिज्जसि तद्दिवसं भत्तारं अमिलित्ता मम सगासं एहि । 'एवं होउ' त्ति विसज्जिता । परिणीया, तलिमे भत्तारस्स सब्भावो कहितो, विसज्जिता आरामं जाति । अंतरे चोरेहिं गहिता, तेसिं पि सव्वं कहियं, मुक्का गच्छति । अंतरा रक्खसो छण्हं मासाणं आहारत्थी णीति । सब्भावे सिट्ठे मुक्का गता आरामितस्स सगासं । दिट्ठा-कतो सि आगता ? । भणति-सो समओ । कहं मुक्का सि भत्तारेणं ? । सव्वं कहेति । 'अहो ! सच्चपतिण्णा, एत्तिएहिं मुक्कं कहं दुहामि ?' त्ति मुक्का । पडिएंती सव्वेसिं मज्झेण आगता । सव्वेहिं मुक्का । भत्तारसगासमक्खुता आगता ।

**अभतो** जणं पुच्छति-एत्थ केण दुक्करं कतं ? । ईसालुया भणंति-भत्तारेण । छुहालुया-रक्खसेण । पारदारिया-मालागारेणं । हरिएसो भणति-चोरेहिं । सो गहितो 'एस चोरो' त्ति । **अहवा** अंबकोइलियाओ[3] कुक्कुडएहिं ओकतलियाओ हरिएसेहिं णिज्झाइयातो । 'एस चोरो' त्ति रण्णो उवणीतो । पुच्छितो, सब्भावो कहितो । रण्णा भण्णति-जति णवरं एताओ विज्जाओ देहि तो न मारेमि । देमि त्ति । आसणत्थो पढिउमावाहेति, ण वहंति । राया भणति-किं ण वहंति ? । पाणो भणति-अविणयगहिता, अहं भूमित्थो तुमं आसणे । तस्स अण्णं आसणं दाउं णीयतरे ठितो, सिद्धा । जहा **अभएण** उवाएण भावो णातो एवं सेहाणं पव्वावणे भावो नातव्वो । "अट्ठारस पुरिसेसुं०" एतं **पंचकप्पे**[4] ॥

जीवचिंताए वि सेहादीणं उवाओ दरिसिज्जति-पच्चक्खतो अणुवलब्भमाणो जीवो सुह-दुक्खादीहिं साहिज्जति अत्थि त्ति, पच्चक्ख[तो] वि विज्जमाणो घडो दव्वतो कडियोसिणिज्जति (?), खेत्ततो गामातो णगरं, कालओ हेमंताओ वसंतं जाति, भावतो पागेण सामताओ रत्तत्तं; एवं जीवो वि कम्मसंहगतो दव्वतो देवसरीरपरिच्चागे मणुस्ससरीरजोगलक्खणो अत्थेसो जीवो, दिट्ठंतो वेतिधम्मेण[5] कुंभो, कुंभदव्ववत्थुत्ते सति चेतण्णविरहितमिति ण केणति जीवो त्ति भण्णति, तम्हा उवयोगलक्खणो अत्थि जीव इति । किंच-

जो चेट्ठति कायगतो जो सुह-दुक्खस्सुवायतो निच्चं । विसयसुहजाणओ वि य सो अप्पा होति नायव्वो ॥ १ ॥

[　　　　　　]

चोदगो भणति-तव **छज्जीवणियाए** पुढविकातियादतो[6] जीवा भणिहिंति, तत्थ एगिंदिया उवओग-विरहिता घडसमाण त्ति न जीवा । गुरवो भणंति-हेउगतं साहणं **छज्जीवणियाए**, इहाऽऽगमप्पहाणं भण्णति-

---

१ जीवितम् ॥ २ नाटकादिकारी गायकः ॥ ३ आम्रकोकिलिकाः-आम्रविद्ध कुर्कुटैः अवकूताः-हदिता इत्यर्थः । यद्वा आम्रकोकिलिकाः-आम्रछल्लिखण्डाः कुर्कुटैः ओकतलियाओ-चर्वित्वा निष्कासिताः वान्ता वा ॥ ४ **पंचकप्पे** इति **पञ्चकल्पभाष्ये** इत्यर्थः ॥ ५ वैधर्म्येण ॥ ६ पृथ्वीकायिकादयः ॥

Jain Education International　　　　For Private & Personal Use Only　　　　www.jainelibrary.org

सव्वजीवाणं आहारादीयातो दस सण्णाओ पढिज्जंति, तहा "सव्वजीवाणं अक्खरस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडिओ" [नन्दि० सू० ४२] त्ति भणितं, अक्खरं[1] पुण विण्णाणमेव, "जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज तेण जीवो अजीवत्तं गच्छेज्जा, सुट्ठु वि मेहसमुदए होति पहा चंद-सूराणं।" [नन्दि० सू० ४२]। तहा "सव्वविसुद्धे उवओगे अणुत्तरोववातियाणं, उवरिमगेवेज्जाणं असंखेज्जगुणहीणे, एवं असंखेज्जयगुणहाणीए जाव पुढविकायिया" [ ], अण्णे सव्वत्थ अणंतगुणहीणे भणंति, तम्हा ते वि अव्वत्तेण उवओगेण उवओगलक्खणो त्ति जीवो एव ॥

ठवणाकम्मे त्ति दारं-तं च किंचि णिभं काऊण अभिरुइतस्स अत्थस्स परूवणं, जहा **पोंडरीयज्झयणे**[2] पोंडरीयणिभेण परमतदूसणं सव्वणयविरु(?सु)द्धपवयणोवदेसो य एवमादि ठवणाकम्मं।

**ठवणाकम्मे** उदाहरणं-**मालागारो** पुप्फे घेत्तूण वीहिं जाति। सन्नाडोप्पीलितेण[3] सिग्घं वोसिरित्ता पुप्फपुडिया[4] तोवरिं पल्लत्थिता। लोगो पुच्छति-किं पुप्फे छड्डेसि?। भणति-देवेण अहं एत्थ सन्निहितो त्ति निदरिसणं दिण्णं। अपरिक्खएहि तं परिग्गहितं। **अज्ज वि पाडलिपुत्ते हिंगुसिवं देउलं** ॥

एवं जति किंचि पावयणीतं[5] उड्डाहं [केणइ] कतं पमादेण[6] तं तहा पच्छादेतव्वं जेण पवयणओभावणा [ण] भवति। जहा **ओहनिज्जुत्तीए** (?)-

"ओद्धंसितो य मरुतो साहू पत्तो जसं च कित्तिं च।" [कल्पभा० गा० १७१६ पत्र ५०६]।

एवं जीवादिचिंताए जदि परवादी भासमाणस्स छलं लहेज्ज तस्स तं छलवयणं णयदिट्ठीए तहा वामोहेतव्वं जहा निरुत्तरो भवति ॥

**पडुप्पण्णविणासीदारं**-एगस्स **वाणितस्स** बहुतीओ भगिणी-भागिणेज्जिमादीओ। घरसमीवे [राउलगा] णाडगायरिया संगीतं करेंति तिसंझं। ताओ महिलातो गीयसद्देण तेसु अज्झोववण्णातो[7] कम्मं ण करेंति। वाणिएण चिंतितं-विणट्ठे को उवातो?। मित्तस्स कहितं। सो भणति-सघरसमीवे वाणमंतरं करेहि। कतम्मि पाडहियाणं मोल्लं दाऊण संगीतवेलाए पडहे पाडावेति भेरि-झल्लरि-संखप्पाएण। गंधव्वायरिया 'संगीतविग्घो' त्ति राउलं उवट्ठिया। वाणियतो सद्दावितो। किं विग्घं करेहि?। भणति-पराए भत्तीए देवस्स पडहे दवावेमि। राया भणति-अण्णत्थ ठाह, किं देवस्स पूयाविग्घेण कतेण?॥ एवं आयरिएण सीसेसु कहिंचि अज्झोववज्जमाणेसु[8] उवातो कातव्वो तद्दोसनिरोहणत्थं। जीवचिंताए वि णाहितवादीणं[9] अदूरयो जीवस्स अत्थिभावो पण्णविज्जति, तत्थ जति कोति भणेज्ज-सव्वे भावा नत्थि किं पुण जीवो?। सो भण्णति-एयं ते सव्वभावपडिसेहगं वयणं किं अत्थि णत्थि? जति अत्थि तो जं भणसि 'न सन्ति सव्वभावा' तं न भवति, अह नत्थि पडिसेहवयणाभावे अत्थिपक्खसिद्धी। सो एवमादीहिं हेऊहिं पडिहणितव्वो। पडुपण्णविणासी गतं। समत्तमाहरणमिति ॥

**आहरणतद्देस** त्ति दारं। तं चउव्विहं, तं जहा-अणुसट्ठी १ उवालंभो २ पुच्छा ३ णिस्सावयणं ४। **अणुसट्ठीए** उदाहरणं-

**चंपाए जिणदत्तस्स** धूता **सुभद्दा** रूविणी **तच्चणियसड्ढेण** दिट्ठा, अज्झोववण्णो मग्गति। 'अभिग्गहियमिच्छादिट्ठि' त्ति ण लभति। साधुसमीवं गतो धम्मं पुच्छति। कहिते कवडसावगधम्मं पगहितो, उवगओ य से सब्भावो। [साहूणं] आलोएति-मए दारियानिमित्तं कवडं आरद्धं, अण्णाणि अणुव्वयाणि देह। दिण्णाणि।

१ "अक्खरं णाम चेयण्णं ति वा उवयोगो त्ति वा अक्खरं ति वा एगट्ठा" इति **वृद्धविवरणे** ॥ २ "जहा पुंडरीयज्झयणे पुंडरीयं पहवेतूण अण्णाणि मयाणि दूसियाणि, णिव्वयणं च सव्वणयविसुद्धं पवयणमुद्दिट्ठं, एवमादि ठवणाकम्मं भण्णइ" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ३ मलोत्सर्गबाधोत्पीडितेन ॥ ४ पुष्पपुटिका उपरि पर्यस्ता ॥ ५ प्रावचनिकम् ॥ ६ "पमायेणं ताहे तहा पच्छादेतव्वं जहा पज्जंते पवयणुब्भावणा भवति" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ७ अध्युपपन्नाः-रागवत्यः ॥ ८ अध्युपपद्यमानेषु रागभावमापद्यमानेष्वित्यर्थः ॥ ९ नास्तिकवादिनामदूरतः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोगपगासो सावगो जातो। कालंतरेण वरगा पट्ठविता । 'सम्मदिट्ठि' त्ति दिण्णा । कतविवाहा विसज्जिया। जुयकं[1] से घरं कतं। 'तच्चण्णिएसु भत्तिं न करेति' त्ति सासु-णणंदाओ पउट्ठाओ भत्तारस्स से कहेंति एसा खमगेहिं समं [लग्गा]। सो ण सद्दहति। [अण्णदा] खमगस्स भिक्खट्ठमतिगतस्स कणुगं लग्गं। **सुभद्दाए** जीहाए फेडितं। तिलगो से खमगललाडं पसिण्णं[2] संकंतो। उवासियाहिं 'सावगो सि' त्ति भत्तारस्स से सासूयं दरिसियं, पत्तीतं[3], ण तहा अणुवत्तति। **सुभद्दा** चिंतेति–किं चित्तं जदि अहं गिहत्था छोभंगं[4] लभामि? जं सासणस्स उड्डाहं एतं कट्ठं। काउस्सग्गं ठिता। देवो आगतो-संदिसाहि। अयसं पमज्जाहि त्ति। देवो भणति–एवं, अहं चत्तारि वि णगरदाराणि ढुएहामि, भणिहामि य–जा पतिव्वता सा उग्घाडेहिति, तुमं चेव उग्घाडेहिसि, सयणपच्चयनिमित्तं चालणिगतमुदगं दरिसेज्जाहि णिग्गलं। तं आसासेऊण गतो [देवो]। ठतियाणि [दाराणि]। आदण्णो जणो। आगासे वाया–मा किलिस्सह, जा[5] सती ससएण चालणीगयमुदगं तं घेत्तूणं अच्छोडेति सा उग्घाडेज्ज। कुलवडुवग्गो किलिस्संतो न सक्केति। **सुभद्दा** सयणमापुच्छति। अविसज्जेंताणं चालणिगतेण उदगेण पाडिहेरे दरिसिते विसज्जिता। उवासितातो पवंचिति–एसा किल उग्घाडेति!। 'चालणिगतं से उदगं ण गलति' त्ति विसण्णातो। ततो महाजणेण समुस्सुतेण[6] दीसंती गता। अरहंताणं णमोक्कारं काऊणं चालणीयो उदएण अच्छोडिता दारा। महता कोंचारवं करेमाणा तिण्णि दारा उग्घाडिया, उत्तरं न उग्घाडितं, भणितं–जा मए सरिसा एतं सा उग्घाडेज्जा। तं अज्ज वि अच्छति। णागरजणेण साडुक्कारो कतो सक्कारिता य॥

एवं पिय-दढधम्मा वेयावच्चादिसु उज्जमंता अणुसासितव्वा, अणुज्जमंता संठवेतव्वा–सीलमंताणं इहेव एरिसं फलमिति। जीवचिंताए वि जेसिं जीवो अत्थि ते अणुसासितव्वा–साधु एतं जं जीवो अत्थि, अम्ह वि अत्थि[7], जं भणह 'अकारतोऽयं' [एयं] न जुज्जति, जेण सुहातीणि[8] अणुभवति कत्ता, अणुभवणदरिसणा, तं०–करिसगादतो[9] कम्मं करेंति तस्स फलं सालिमुपभुंजंति, तम्हा करेति भुंजति य। एवमादीहिं हेऊहिं अणुसासिज्जति॥

**उवालंभे** त्ति दारं–उदाहरणं **मिगावती**, जहा **आवस्सए** दव्वपरंपरए [हाटी० पत्र ६२] जाव पव्वतिता, **अज्जचंदणाए** सिस्सिणी दिण्णा। कयाइ **कोसंबीए** भगवतो समोसरणं। चंदा-ऽऽइच्चा सविमाणेहिं वंदगा आगता, दिवसं समोसरणं काउं अत्थमणकाले गता। **मिगावती** संभंता। 'विकालो जातो' त्ति भणिऊण साहुणीसहिता जाव **अज्जचंदणा**सगासं गता ताव अंधकारो जातो। **अज्जचंदणा**दीहिं पडिक्कंतं। **अज्जचंदणाए** उवालब्भति–तुमं णाम कुलपसूया एवं करेसि, अहो! ण लट्ठं। सा पडिक्कमंती पाएसु पडिता परमेण विणएण खमावेति–खमह मे खमज्जाओ[10]!, ण पुणो एवं करेहामि। **अज्जचंदणा** य किर तम्मि समए संथारगता पसुत्ता। **मिगावती** परमं संवेगं गया, केवलनाणमुप्पण्णं। अंधकारे य सप्पो तेणोवासेण आगतो। खमज्जाणं हत्थो लंबमाणो तीए उप्पाडितो। पडिबुद्धा पुच्छति–किं एतं?। भणति–दीहजातितो। किं अतिसतो जं जाणसि?। आमं। को?। 'अपडिवादि' त्ति भणिए सा वि संभंता खामेति॥

एवं पमादी सीसो उवालंभियव्वो। जीवचिंताए वि णाहितवाती[11] उवालंभितव्वो–जं कुसत्थं भवता जीवभावपडिसेहकमुच्चारियं एस जीवभावं कहयति, इट्टालातिसु 'अत्थि नत्थि' त्ति वीमंसा ण संभवति, तम्हा पडिसेहेण जीवभावं तुमं कहेसि।

अत्थि त्ति जा वितक्का अहवा नत्थि त्ति जं कुविण्णाणं। अच्चंतमभावे पोग्गलस्स एयं चिय ण जुत्तं॥ १॥
उवालंभो त्ति गयं॥ [दशवै० नि० गा० ७७ हाटी० पत्र ५०-१]

---

१ जुयकं पृथगित्यर्थः॥ २ प्रस्विन्नं प्रस्वेदयुक्तमित्यर्थः॥ ३ प्रत्ययितम्॥ ४ छोभगं आलं दोषारोपमित्यर्थः॥ ५ या सती 'स्वशयेन' स्वहस्तेन। **जा सति समघण** मूलादर्शे पाठः॥ ६ समुत्सुकेन॥ ७ **अत्थित्तं तं जं भणह** मूलादर्शे॥ ८ सुखादीनि॥ ९ कर्षकादयः॥ १० क्षमार्याः!॥ ११ नास्तिकवादी॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**पुच्छादारं**। **कूणिएण** सामी पुच्छितो–चक्कवट्टिणो अपरिचत्तकाम-भोगा कालं किच्चा कहिं गच्छंति ?। सामी भणति–सत्तमीए पुढवीए। सो भणति–अहं कहिं उववज्जीहामि ?। सामिणा भणियं–छट्ठपुढवीए। सो भणति–अहं सत्तमीए किं न उववज्जामि ?। सामी भणति–सत्तमिं चक्कवट्टी गच्छति। भणति–अहं किं न चक्कवट्टी ? मम वि चउरासीतिं दंतिसयसहस्सा। सामी भणति–तव किं रयणा अत्थि ?। सो कित्तिमाणि रयणाणि कारवेत्ता ओयवेउमारद्धो। **तिमिसगुहं** पविसिउमारद्धो **कयमालएण** वारितो–वोलीणा चक्कवट्टी बारस वि, तुमं विणस्सिहिसि। ण ठाति। **कयमालएण** हतो छट्ठिं गतो ॥

एवं बहुस्सुया कारणाणि पुच्छितव्वा, ततो सक्काणि समायरणीयाणि, णासक्काणि।

पुच्छह पुणो पुणो आदरेण धारेह कुणह य हियाइं। दुलहा संदेहवियाणएसु कुसलेसु संसग्गी ॥ १ ॥

[ ]

जीवातिचिंताए णाहितवादी भण्णति–नत्थि त्ति को हेऊ ?। भणेज्ज–अपच्चक्खत्तणं। भण्णति–भवता चम्ममएण चक्खुणा समुद्दजलपत्थपरिमाणं न लब्भति तं किं ण होज्ज ? तम्हा पच्चक्खत्तणमहेऊ। पुच्छा गता ॥

**णिस्सावयणे–गागलिगादयो** जहा पव्वतिता तावसा य, **आवस्सग**विहिणा [ हाटी० पत्र २८९ ] **गोयमसामिस्स** अद्धिती। भगवता भणियं–चिरसंसट्ठो सि मे गोतमा !। तण्णिस्साए अण्णे अणुसासिया **दुमपत्तए** अज्झयणे। एवं असहणादओ अण्णे मद्दवातिसंपण्णनिस्साए अणुसासेतव्वा। जीवचिंताए नैत्थितो अण्णावदेसेण पण्णविज्जति, अण्णहा राग-दोस त्ति ण पडिवज्जेज्जा। अण्णो एयं भणति–जस्स सव्वभावा सुण्णा तस्स दाण-दमातीणं किं फलं ?। एवमण्णावदेसेणं पण्णविज्जति। णिस्सावयणं गतं। एवं आहरणतद्देसे ॥

**आहरणतद्दोस** त्ति दारं। तं चउव्विहं, तं०–अहम्मपयुत्ते १ पडिलोमे २ अत्तोवण्णासे ३ दुरुवणीते ४।

**अहम्मपउत्ते** उदाहरणं–**चाणक्केण** उच्छादिते **णंदे चंदगुत्ते** ठिते जहा **सिक्खाए** [ आव० नि० गा० ९५० हाटी० पत्र ४३३ ] णंदपुरिसेहिं चोरग्गाहो मिलितो णगरं मुसत्ति। **चाणक्को** अण्णं चोरग्गाहं मग्गति, पंरिव्वायगनेवच्छेण णगरमण्णातो हिंडति। **नलदामकोलियस्स** य चेल्लिक्कं मक्कोडएण खतितं। तेण तं बिलं खणित्ता दड्ढं। **चाणक्को** तहिं भणति–[ किं एतं डहसि ?। कोलिओ भणति–] जदि से मूला ण उप्पाडिज्जंति तो पुणो वि खातिस्संति। **चाणक्को** चिंतेति–एस णगरपुरिसे समूले उद्धरिहि–त्ति चोरग्गाहो कतो। तेण दुट्ठा वीसंभिता–अम्हे सहिता मुसामो। तेहिं अण्णे वि अक्खाया–बैहुता सुहं मुसीहामो त्ति। ते सव्वे मारिया ॥

एवं अहम्मपउत्तं ण उल्लावेतव्वं, ण कातव्वं। जीवचिंताए वि पावयणीयं कज्जं णाऊण सावज्जं पि कज्जेज्ज, जहा **छलुगणं** सो परिव्वातो "मोरी णउलि०" [ आव० मूलभाष्य गा० १३८ हाटी० पत्र ३१९ ] एवमादीहिं विज्जाहिं जिओ। एवमादी अहम्मपउत्तं ॥

**पडिलोमे** त्ति दारं–तत्थ **अभय-पज्जोया**णं हरण-पडिहरणोदाहरणं जहा **सिक्खाए** [ आव० हाटी० पत्र ६७४-७५ ]। जीवचिंताए जदि परवाती एवं भणेज्जा–दो रासी जीवा अजीवा। तत्थ भणितव्वं–न याणसि, तिण्णि रासी। ततियं ठवेत्ता जित्ते भण्णति–बुद्धी तव परिभूता, दो चेव रासी। एवमादी पडिलोमे ॥

**अत्तोवण्णासे** त्ति दारं–एगस्स रण्णो तलागं रज्जस्स आधारभूतं, तं भरितं भरितं भिज्जति। राया भणति–केण उवाएण ण भिज्जेज्ज ?। तत्थेगो मणूसो भणति–जदि कविलपिंगलो पिंगलदाढिओ पुरिसो जीवंतो भेदे निक्खम्मति तो ण भिज्जति। राया भणति–को एरिसो ?। कुमारामच्चेण भणियं–एवंलक्खणो एस चेव। निक्खतो। एरिसं ण उल्लावेतव्वं जं अप्पवहाए होति।

---

१ उपपत्स्ये ॥ २ साधयितुम् ॥ ३ **उत्तराध्ययनसूत्रे** दशममध्ययनम् ॥ ४ नास्तिकः ॥ ५ परिव्राजकनेपथ्येन नगरमज्ञातः ॥ ६ बाल्पुत्रः ॥ ७ बहुकाः ॥ ८ "मोरी णउलि बिराली वग्घी सीही उलूगि ओवाई। एयाओ विज्जाओ गेण्ह परिव्वायमहणीओ ॥" इति पूर्णा गाथा ॥ ९ निखन्यते ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवचिंताए तारिसं ण उल्लावेतव्वं जं दुस्साधितवेताल इव अप्पवहाए। जहा कोति भणेज्ज—एगिंदिया जीवा, जम्हा तेसिं फुडो उस्सास-नीसासो [? ण] दीसति, दिट्ठंतो घडो, घडस्स निज्जीवस्स उस्सासनिस्सासो नत्थि, तहा एगिंदियाणं उस्सास-निस्सासो नत्थि तम्हा। एवमाइ विरुद्धं ण भणितव्वं ॥

**दुरुवणीत** त्ति दारं—**तंबणिणओ** मच्छए मारिंतो रण्णा दिट्ठो भणितो—किं मच्छए मारेसि?। भणति—अविलंको न सक्केमि पातुं। मज्जं पिएसी?। भणति—महिला ढोयं ण देति। महिला वि ते?। किं जातपुत्तभंडं छड्डेमि?। णं पुत्ता वि ते?। किं ताइं? खत्तं खणामि। खत्तं पि खणसि?। किं वाऽकम्मं खोट्टिपुत्ताणं?। खोट्टिपुत्तो सि?। कुलपुत्तो को वा बुद्धसासणे पव्वयति?॥ एरिसं ण वत्तव्वं जेण सयं भंडावियति सासणपीला वा। जीवचिंताए तहा सव्वणयविसुद्धमभिधेयं जहा जओ भवति। दुरुवणीयं गतं। समत्तमाहरणतद्दोस त्ति दारं ॥

**उवण्णासोवणए** चउव्विहे, तं०—तव्वत्थुगे १ तदण्णवत्थुए २ पडिणिभे ३ हेऊ ४।

**तव्वत्थुते** उदाहरणं—एगम्मि देवकुले **पहिया** मिलिया भणंति—केण किंचि दिट्ठं?। एको भणति—मए [किं पि] दिट्ठं, जति एत्थ सावगो णत्थि तो साहामि। तेहिं भणियं—नत्थि। भणति—मए पुव्वं समुद्दतीरे रुक्खो महइमहालओ दिट्ठो, तस्स साहाओ समुद्दं थलं च पत्तातो, जाणि से पत्ताति जले पडंति ताणि जलचराणि भवंति थले थलचराणि। वातिया भणंति—अहो! देवस्स विभूती। एक्कोऽत्थ सावतो भणति—जाणि मज्झे पडंति ताणि कहं?। सो खेरत्थो भणति—मए पुव्वं भणितं जति सावतो नत्थि तो कहेमि ॥ एवं कुसुइकहाए ततो चेव किंचि वत्थुं घेत्तव्वं जेण तुण्हिक्का भवंति। जीवचिंताए वि जति **वैसेसियादी** भणेज्जा—एगंतेण णिच्चो जीवो, जम्हा अरूवी, दिट्ठंतो आगासं, जहा आगासमरूवी निच्चं तहा जीवो वि। सो भण्णति—जति अरूवित्तं णिच्चत्तणे कारणं बुद्धिरपि ते णिच्चा आवण्णा, ण य तदत्थि, तम्हा अणेगंतितो हेतू। गतं तव्वत्थुयं ॥

**तदण्णवत्थुयं** ति दारं। जति कोति भणेज्ज—जस्स वाइणो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं तस्स अण्णसद्दो तुल्लो जीवे सरीरे य, तेण अण्ण इति भणंतस्स जीव-सरीराणं एगत्तं भवति। एवं तज्जीव-सरीरवादिणा चोदिते उत्तरम्—जदि अण्णसद्दसारिसेण जीव-सरीरएगत्तं मण्णसि एवं ते सव्वभावाणं एगत्तं पावति, जम्हा अण्णो देवदत्तो अण्णो जण्णदत्तो, अण्णसद्दो समाणो त्ति किसुभयमेकं भवति?, एवं सव्वभावेसु, तम्हा सिद्धं 'अण्णो जीवो अण्णं सरीरं'। गतं तदण्णवत्थुगं ॥

**पडिणिभे** त्ति दारं। उदाहरणं—परिव्वातो सोवण्णेणं खोरेणं भिक्खं हिंडति। सो भणति—जो असुयं सुणावेति तस्सेयं देमि। सावएण भणितं—

तुज्झ पिता मज्झ पिऊ धारेति अणूणतं सतसहस्सं। जदि सुतपुव्वं दिज्जतु अह ण सुतं खोरयं देहि ॥१॥

एवं समत्थमुत्तरं दातव्वं। जीवचिंताए जो भणेज—[जं] अत्थि तं पहाणं। सो वत्तव्वो—जति जं अत्थि तं पहाणं एवं घडो अत्थि सो वि ते पहाणं एवमादि। पडिणिभं गतं ॥

**हेउ** त्ति दारं, सो चउविहो—जावओ थावओ वंसओ लूसओ।

---

१ अत्रार्थे **हारिभद्रीवृत्ति**गतमिदं पद्यमवधेयम्—

कन्थाऽऽचार्याऽघना ते?, ननु शफरवधे जालमश्नासि मत्स्यान्?, ते मे मद्योपदंशान्, पिबसि?, ननु युतो वेश्यया, यासि वेश्याम्?। कृत्वाऽरीणां गलेऽङ्घ्रिं, क नु तव रिपवो?, येषु सन्धिं छिनद्मि, चौरस्त्वम्?, द्यूतहेतोः, कितव इति कथं? येन दासीसुतोऽस्मि ॥ १ ॥

२ खत्थो झल्लितः ॥

**आवओ**-एक्को जवा किणति। अण्णेण पुच्छितो-किं जवा किणसि ?। भणति-जेण मुहा ण लभामि। जीवचिंताए जो भणेज्ज-कहं जीवो न दिस्सति ?। भणति-जम्हा अणिंदियगज्झो तम्हा णो दिस्सति।

एत्थेव **वाणिणीए** उदाहरणं-एगा वाणियभज्जा दुस्सीला 'जतो ततो गच्छतु' त्ति पतिं भणति-जाहि वाणिज्जेणं। सो भणति-भंडमोल्लं णत्थि। ताए['मा] चिरं करेउ' त्ति भणितो-उट्टलेंडाइं उज्जेणिं नेहि, दीणारेण एक्केक्कं विक्किणसु। सो सगडं भरेऊण गतो, वीहीए ठविताइं, ण कोति गेण्हति। **मूलदेवेण** दिट्ठो पुच्छितो। कहिए णातं-एस वराओ महिलाए वंचिओ। भणितं च तेण-अहं एताणि विक्किणावेमि, मोल्लस्स अद्धं देहि। भणति-देमि त्ति। ततो **मूलदेवेण** कह वि सउणजुत्तजाणविलग्गुप्पतितेण णिसिं णगरोवरि-महसंतिं करेह, जस्स चेडरूवस्स गलए उट्टलिंडिया नत्थि तस्स जीवितं नत्थि। लोएण भीतेण [1]दीणारिक्कातिं कीताइं। दिण्णमद्धं। **मूलदेवेण** भणितो-तव महिला धुत्ती, ताए एवं [2]सिट्ठितो सि। भणति-मा एवं भणसु, सा पुण्णमंतिया। **मूलदेवेण** भणितं-एहि जामु, जति ण पत्तियसि। गया अण्णातलेस्साए। **मूलदेवेण** कयलिपत्तेहिं वेढेत्ता 'मा नज्जिहिति' त्ति देवपडिमाकतो [3]कम्मारएण वहविततो गतो। तीए वि धुत्ताणं आगमणत्थं देवकुलं कतं तस्स कोणे पडिमाए थाणं मग्गितं। दिण्णं। सा महिला विडो य आगतो, मज्जं पिबंताइं गायंति इमं-

[4]ईरिमंदिरि पत्तहारतो, गततो मज्झ कंतो वणिजारतो। वरिसाण सयं पजीवउ, मा घराइं एउ ॥ १ ॥

**मूलदेवेण** वि उग्गीतं-

कयलीवणपत्तवेढिता !, देउलस्स कोणे। जं महलएण गिज्जति, तं सुणेहि देव ! ॥ १ ॥

एवं जापित इति जावतो। सूरोदए निग्गंतूण पभाए आगतो। संभंता अब्भुट्ठिता। पच्छा सव्वं संभारियं उवालद्धा य ॥ एवं सीसो केति पदत्थे असद्दहंतो देवता-विज्जाईहिं सद्दहावेतव्वो।

तहा वादी वि **कुत्तिंतावणा**[5]दीहिं णिज्जिणितव्वो, जहा **सिरिगुत्तेण छलुओ**। गओ जावओ ॥

**थावए** उदाहरणं-एक्को **परिव्वायतो** भणति-लोगमज्झमहं जाणामि। जत्थ पुच्छितो तत्थ कीलगं निहणिऊण भणति-जति विपच्चओ तो मिणह। सावएण अण्णेसिं समक्खं पुच्छितो भणति-एतं मज्झं। अण्णत्थ वि पुच्छितो भणति-एतं मज्झं। सावएण भणितं-जदि एतं मज्झं तं ण भवति विवज्जतो वा, पुव्वावरविरुद्धमिति थावतो। जीवचिंताए वि सो पक्खो घेत्तव्वो जस्स परो उत्तरं ण भणति। एसो थावतो ॥

**वंसके**-एक्केण **गामेल्लएण कट्ठसगडेण** णगरं जंतेणं अंतरे तित्तिरी [6]मंता लद्धा। तं सगडे पक्खिवित्ता णगरे पविसंतो णगरधुत्तेण पुच्छितो-कहं सगडतित्तिरी लब्भति ?। तेण भणितं-[7]तप्पणादुयालिताए। धुत्तेण सक्खिणो आहणिऊणं सगडं सतित्तिरीयं णीयं। गामेल्लओ सचिंतओ अच्छति। अण्णेण विडेण पुच्छितो-किं चिंतेसि ?। तेण सव्वं कहितं। विडो भणति-जाहि पदेसिणिं वेढेत्ता भण-विसिट्ठं पि ता तप्पणाडुगालियं देहि। दिण्णाए 'अंगुली दुक्खति' त्ति महिलाए [8]आडुतालावेहि। तं महिलं ससक्खियं हत्थे घेत्तुं भण-तप्पणाडुतालिता सगडतित्तिरीए कीता। तेण जहोवएसं कतं। धुत्तेण [10]संण्होरं जेमावेत्ता सगडभरो विसज्जितो, णियत्तिया भज्जा। एवं प्रतिव्यंसित इति वंसतो। जीवचिंताए वि जति कोति अभिजुंजेज्जा-[11]आरिहताणं जीवो अत्थि वा णत्थि वा ?, जदि अत्थि घडो वि,अत्थि उभयमवि अत्थि त्ति एक्कमवि घडो जीवो य, अह णत्थि [12]णत्थियपक्खावलंबणं तं च दुट्ठं। सो भण्णति-वच्छ ! एस एव अणेगंतवातो णियमा-ऽणियमविसेसेण, जहा

१ दैनारिकाणि दिनारमूल्यानीत्यर्थः ॥ २ शिष्टोऽसि शिक्षितोऽसीत्यर्थः ॥ ३ कर्मकारकेण-कर्मकरेण ॥ ४ लक्ष्मीमन्दिरे पत्रधारकः गतो मम कान्तः वाणिज्यकारकः। वर्षाणां शतं प्रजीवतु मा गृहाणि एतु ॥ ५ कुत्रिकापणादिभिः-विश्ववस्तुभण्डारापणादिभिः निर्जेतव्यः ॥ ६ मृता ॥ ७ तप्पणादुयालिता भोजनविशेषः, सक्तुप्रधानं वा भोजनम् ॥ ८ शीतीकरणार्थं आचालय ॥ ९ तर्पणाचालिका ॥ १० सण्होरं सलज्जम् ॥ ११ आर्हतानां-जैनानाम् ॥ १२ नास्तिकपक्षावलम्बनम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खदिरो नियमेण वणस्सती, वणस्सती पुण खदिरो सज्ज-ऽज्जुणादी वा । एवं जीवो नियमेण अत्थि, अत्थि पुण जीवो घडो वा । वंसतो गतो ॥

**लूसए** त्ति दारं–एक्को **तउसभरिएण सगडेण** णगरं पविसति । धुत्तेण भण्णति–जो एतं सगडं तउसभरितं सव्वं खाति तस्स तुमं किं देसि ? । तेण भण्णति–तं मोदगं देमि जो णगरदारेण न नीसरति । धुत्तेण सक्खीसमक्खं सव्वतउसाणि दंतेहिं उंडुक्कियाणि, मोदगं मग्गति । सागडितो भणति–ण खइयार्ति । करणे ववहारो–खइयाइं, न विक्कयं गच्छंति । जितो मग्गिज्जति । सतेण वि रूवयाण ण मुच्चति । अण्णेण से धुत्तेण उवदिट्ठं–विसोवँदेण घेत्तुं ठावेहि ससक्खितं णगरद्दारेण मोदगं । सो सेतं ण णीति । तहाकते पडिजितो ॥ लूसणं–विणासणं, पुव्वमुत्तरं लूसितमिति लूसओ । जीवचिंताए वि सहसा सामत्थतो वा सव्वभिचारं हेतुं भणित्ता उवचयहेऊहिं समत्थेति । एस हेतू । उवण्णासोवणतो त्ति दारं । दिट्ठंतो समत्तो ॥

पतिण्णा-हेतुपुव्वो दिट्ठंतो भवति त्ति तप्पसंगेण सव्वावयवविगप्पा दरिसिज्जंति–धम्मपसंसा पत्थुता, सो य धम्मो पंचावयवेण दसावयवेण वा साधिज्जति । पंचावयवेण ताव–

**धम्मो गुणा अहिंसादिया उ ते परम मंगल पतिण्णा १ ।**
**देवा वि लोगपुज्जा पणमंति सुधम्ममिति हेऊ २ ॥ २६ ॥**

**धम्मो गुणा अहिंसादिया उ०** गाहा । अहिंसादिसाधितो स इति ते एव अहिंसादिगुणा धम्मो, आदिगहणेणं संजम-तवगहणं । अहिंसा-संजम-तवसाहितो धम्मो मंगलमुक्किट्ठं भवतीति **पतिण्णा** । पतिण्णाऽणंतरं हेऊ, सो पढमं सुत्तालावगगतो भण्णति–**देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सदा मणो** । सुत्तप्फासियनिज्जुत्तीगाहा-पच्छद्धेण विसेसिज्जति–**देवा वि लोगपुज्जा पणमंति सुधम्ममिति हेऊ** । देवा लोगेण **इंदाइमहामहेसु** पूतिज्जंति, ते वि अहिंसादिगुणड्ढियं णमंसंति । को पुण सुधम्मो ? त्ति भण्णति–**जस्स धम्मे सया मणो**, **धम्मे** अहिंसादिगुणसाहणे **जस्स [ सया ]** अविरहितो जावज्जीवं **मणो** ॥ २६ ॥

हेऊ गतो । **दिट्ठंतो** भण्णति इमाए अद्धगाहाए–

**दिट्ठंतो अरहंता अणगारा य बहवे य जिणसिस्सा ।**
**वँत्तऽणुवत्ते णज्जति जं णरवतिणो वि पणमंति ३ ॥ २७ ॥**

**दिट्ठंतो अरहंता अणगारा य बहवे य जिणसिस्सा** । अरहंताण पुव्वमुद्देसो पूज्यतमा इति । **अणगारा** समणा **गोतमादयो** य जिणसिस्सा देवेहिं पूइता । चोदणा–कहं णज्जति तित्थगरा ससिस्सवग्गा देवेहिं पूतिया ? गाहापच्छद्धं समत्थणं–**वत्तऽणुवत्ते णज्जति जं णरवतिणो वि पणमंति**, वत्तं–चिरातीतं तं अणुवत्तेण साधिज्जति, जेण अज्ज वि राय-रायमच्चा निमित्तसत्थकुसलाण तवस्सिवग्गस्स [य] पूया-सक्कार-पज्जुवासणं करेंति । एस दिट्ठंतो । आह चोदगो–पच्चक्खं वत्थुं दिट्ठंतो भवति, ण य तित्थगरा पच्चक्खा, आगमाऽणुमाणसाधिता, तेण ण दिट्ठंतोऽयं, भण्णति–ण अधुणा सुत्तं उप्पण्णं, तक्कालियमेव वत्तऽणुवत्तेण नज्जति त्ति य ॥ २७ ॥ दिट्ठंतो गतो ।

**उवसंहारो देवा जह तह राया वि पणमति सुधम्मं ङ्क ।**
**तम्हा धम्मो मंगलमुंकट्ठं निगमणं एवं ५ ॥ २८ ॥**

---

१ खादति ॥ २ लाञ्छितानि दष्टानि वा ॥ ३ खादितानि ॥ ४ विशोपकेन–कपर्दिकाया विंशतितमेनांशेन ॥ ५ स्वयं न निर्गच्छति ॥ ६ पूज्यन्ते ॥ ७ **वत्तऽणुवत्तेणऽज्जति** इत्यपि पदविच्छेदः साधुरेव ॥ ८ "ङ्क" इति चतुःसंख्यासूचकोऽक्षराङ्कः ॥ ९ °**मुक्कट्ठमिई णिगमणं च** ५ खं० वी० । °**मुक्किट्ठमिई य निग्गमणं** ५ सा० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**उवसंहारे** इमं गाहापुव्वद्धं–**उवसंहारो देवा जह तह राया वि पणमति सुधम्मं**। सोभणे धम्मे ठितं जहा देवा तहा रायाणो विभविया पणमंति । **णिगमणं** गाहापच्छद्धेण भण्णति–**तम्हा धम्मो मंगलमुक्कट्ठं निगमणं एवं**। अतो पूयणहेतु त्ति अहिंसा-संजम-तवसाहणो धम्मो मंगलमुक्किट्ठं भवति ५ ॥ २८ ॥

अयमेव पंचावयवसाहितो अत्थो विसेसत्थं दसावयवेण वित्थारिज्जति—

**बितियपइण्णा जिणसासणम्मि साहेंति साहवो धम्मं २।**
**हेऊ जम्हा सोभाविय अहिंसादिसु जयंति ३ ॥ २९ ॥**

**बितियपइण्णा जिणसासणम्मि०** गाहद्धं। पंचावयवभणियाए पढमपतिण्णाए इमा **बितियपइण्णा**। तम्मि भावजिणाणं सासणे ठिता **साहवो धम्ममणुवालयंति**, पतिण्णासुद्धी। जहा जिणाणं सासणे ठिता विसुद्धं धम्ममणुपालेंति ण एवं परतित्थियसमएसु विसुद्धो अणुपालणोवातो। एत्थ चोदेति–सव्वे पावादिया अप्पप्पणो धम्मं पसंसंति, धम्मसद्दो य तेसु वि। गुरवो भणंति–णणु भणितं "**सावज्जो उ कुतित्थियधम्मो ण जिणेहिं उ पसत्थो**" [ नि० गा० २० ]। जो वि एतेसिं सासणे धम्मसद्दो सो उवयारतो, णिच्छततो पुण अहिंसा-संजम-तवसाहितो जो सो धम्मो, जहा सीहसद्दो सीहे पाहण्णेण उवयारेण अण्णत्थ, एसा पतिण्णाविसुद्धी २। अहिंसादिगुणजुत्तत्तं हेऊ, तत्थ इमं गाहापच्छद्धं–**हेऊ जम्हा साभावियं अहिंसादिसु जयंति** जम्हा अहिंसादिसु महव्वतेसु सभावेण जयंति कहमक्खलियसील-चारित्ताण मरणं भवेज्ज ? । एस हेऊ ३ ॥ २९ ॥

हेउविसुद्धी—

**जं भत्त-पाण-उवकरण-वसहि-सयणा-ऽऽसणादिसु जयंति।**
**फासुयमकयमकारियमणणुमतमणुद्दिसितभोती ॥ ३० ॥**

**जं भत्तपाणउवकरण०** अद्धगाहा। जेण अहिंसादिविसुद्धिनिमित्तं **भत्त-पाण-उवकरण-वसहि-सयणा-ऽऽसणादिसु** संजमोवकरणेसु **जयंती**ति । किमिदं ? एत्थ इमं गाहापच्छद्धं–**फासुयमकयमकारियमणणुमतमणुद्दिसितभोती**, धम्मोवकरणाणि एवंविहाणि भुंजंति ॥ ३० ॥

कुतित्थिया पुण—

**अप्फासुय-कय-कारित-अणुमय-उद्दिट्ठभोईणो हंदि !।**
**तस-थावरहिंसाए जणा अकुसला उ लिप्पंति ह्रू[5] ॥ ३१ ॥**

**अप्फासुयकयकारित०** गाहा। हेतुविसुद्धी ४ ॥ ३१ ॥ दिट्ठंतो—

२. जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियती रसं ।
णय पुप्फं किलामेति सो य पीणेति अप्पयं ॥ २ ॥

**२. जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियती रसं**। **जहा** इति उवमा। **दुमो** वण्णितो पुप्फाणि य। तेसु **भमरो आवियति** पियति। **रसो** सारो। एस दिट्ठंतो एगदेसेण–चंदमुही दारिकेति, अतीवसोमता अवधारिज्जति ण सेसं, एवं भमरदिट्ठंते अणियतवित्तित्तणं अकिलामणकरणं च घेप्पति। एस दिट्ठंतो। दिट्ठंतविसुद्धी सुत्तेण भण्णति–**ण य पुप्फं किलामेति सो य पीणेति अप्पयं**। ण य पुप्फाणं किलामणं करेति अप्पाणं च पीणेति त्ति दिट्ठंतविसुद्धी ॥ २ ॥

---

१ वैभविका ऋद्धिमन्तः ॥ २ साभाविएसुऽहिंसा° खं० वी०। साभावियहिऽहिंसा° हाटीपा० (?) ॥ ३ फासुय-अकय-अकारिय-अणणुमय-अणुद्दिट्ठभोई य खं० वी० सा० ॥ ४ °भोयणो वी० ॥ ५ ह्रू इति चतुःसंख्याद्योतकोऽक्षराङ्कः ॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

**दिट्ठंतो दिट्ठंतविसुद्धी य सुत्तप्फासितनिज्जुत्तीए** भण्णति–

**जह भमरो त्ति य एत्थं दिट्ठंतो होति आहरणदेसे ।**
**चंदमुहिदारिगेयं सोमत्तऽवधारण ण सेसं ५ ॥ ३२ ॥**

**जह भमरो त्ति य एत्थं०** अद्धगाथा पाढेण गतत्था ५ ॥ ३२ ॥

दिट्ठंतविसुद्धीए णिज्जुत्तिमासंकामुहेण सूरिराह—

**एत्थ य भणेज्ज कोती समणाणं कीरती सुविहिताणं ।**
**[1]पाकोवजीविणो त्ति य लिप्पंताऽऽरंभदोसेण ॥ ३३ ॥**
**वासति ण [2]तणस्स कते ण [3]तणं वड्ढति कते म[4]यंकुलाणं ।**
**ण य रुक्खा [5]सतसाहा फुल्लेंति कते महुयराणं ॥ ३४ ॥**

**एत्थ य भणेज्ज कोती समणाणं कीरती सुविहिताणं** पाकोवजीविनिमित्तं पाको कीरति त्ति **पाकोवजीविणो** साहवो वि **आरंभदोसेण** संबज्झंति ॥ ३३ ॥ उत्तरम्–ण एतं एवं, जम्हा––

**वासति ण तणस्स कते०** गाधा पाढसमा । [6]एत्थ चोदेति–हविं अग्गिम्मि हूतति, सो आदिच्चं प्रीणेति, आदिच्चो वरिसेति प्रजावृद्धिनिमित्तं, [ ततो ] ओसहीओ संभवंति, तेण ण कहं तणस्स कते ? । सूरिराह–यदि एवं तो सव्वदा हूयति त्ति न कयाति दुब्भिक्खं होज्ज, अह दुरिट्ठं किं सव्वत्थ तुल्लं ? तेण एतं ण किंचि; अह इंदो णिग्घातादीहिं विग्घिं[7]ज्जति ? अह रितुविसेसेणं ? जम्हा हिमं हेमंते, किं पयाहितकप्पणाए ? तम्हा न तणस्स कते ॥ ३४ ॥ इदं च—

**किं[8]च दुमा पुप्फेंती भमराणं कारणा अहासमयं ।**
**मा भमर-म[9]हुयरिगणा किलामएज्जा अणाहारा ॥ ३५ ॥**

**किंच दुमा पुप्फेंती०** गाहा पाढेण सिद्धा ॥ ३५ ॥ कस्सति बुद्धी–पयावतिणा सत्ताणं वित्ती विहिता तेण दुमा भमराणं अट्ठाए पुप्फेंति, तं ण भवति, ते हि दुमनामा-गोतस्स कम्मस्स उदएणं पुप्फ-फलं निव्वत्तेंति । किंच—

**अत्थि बहू वणसंडा भमरा [10]जत्थ ण उवेंति ण वसंति ।**
**तत्थ वि पुप्फेंति दुमा प[11]गती एसा दुमगणाणं ॥ ३६ ॥**

**अत्थि बहू वणसंडा०** ॥ ३६ ॥ अह भणेज्ज–जति पगती किमकाले न पुप्फेंति फलिंति वा ? । आयरियो आह–जं काले पुप्फ-फलं अत एव––

**पगती एस दुमाणं जं उउसमयम्मि आगए संते ।**
**पुप्फेंति पादवगणा फलं च कालेण बंधंति ॥ ३७ ॥**

---

१ **पागोव°** खं० वी० ॥ २ **तिणस्स** खं० ॥ ३ **तिणं** खं० ॥ ४ **मइकु°** वी० ॥ ५ **सयसाला** खं० ॥ ६ "एत्थंतरे सीसो चोदेइ, जहा–मेहा पयाविवड्ढिनिमित्तं वासंति, सा य पयाविवड्ढी ण तेण विरहिया भवइ, तम्हा जं भणह "वासइ न तणस्स कए" तं विरुज्झइ । एत्थ आयरिओ भाह–न तं एवं भवइ, कम्हा ?, जम्हा **सुतीओ** विरुद्धाओ दीसंति । **परे** कहयंति जहा–मघवं वासइ; **अण्णे** पुण भणंति–गब्भा वासंति; तत्थ जइ इंदो वासति तओ उक्कावात-दिसादाह-निग्घायादीहिं उवघाओ वासस्स न होज्जा; अह पुण गब्भा वासंति तओ तेसिं असण्णीणं णेवं सण्णा भवति, जहा–लोगस्स अट्ठाए वरिसामि त्ति तणाणं वा अट्ठाए ।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ७ विद्यते ॥ ८ **किं तु** वृद्धविवरणे ॥ ९ **°महुयरि°** वी० ॥ १० **जं च ण उवेंति** वी० ॥ ११ **पयई** खं० वी० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पगती एस दुमाणं० गाहा ॥ ३७ ॥ जहा दुमा रितुविसेसेण पुप्फेंति न भमरट्ठा तहा—

किण्णु गिही रंधंती समणाणं कारणा[1] सुविहियाणं ? ।
मा समणा भगवंतो किलामएज्जा अणाहारा ॥ ३८ ॥
कंतारे दुब्भिक्खे आयंके वा महई[2] समुप्पण्णे ।
रत्तिं समणसुविहिया सव्वाहारं ण भुंजंति ॥ ३९ ॥
अह कीस पुण गिहत्था रत्तिं आयरतरेण रंधंति ? ।
समणेहिं सुविहिएहिं चउव्विहाहारविरएहिं ॥ ४० ॥
अत्थि बहुगाम-देसा[3] समणा जत्थ ण उवेंति ण वसंति ।
तत्थ वि रंधंति गिही पगती एसा गिहत्थाणं ॥ ४१ ॥
पगती एस गिहीणं जं गिहिणो गाम-णगर-णिगमेसुं ।
रंधंति अप्पणो परियणस्स कालेण अट्ठाए ॥ ४२ ॥
एत्थ[4] य समणसुविहिया परकड-परनिट्ठियं विगयधूमं ।
आहारं एसंती जोगाणं साहणट्ठाए ॥ ४३ ॥
णवकोडीपरिसुद्धं[5] उग्गम-उप्पायणेसणासुद्धं ।
छट्ठाणरक्खणट्ठा अहिंसअणुपालणट्ठाए ६ ॥ ४४ ॥

**किण्णु गिही रंधंती०** गाहा ॥ ३८ ॥ अह भणेज्ज—समणअणुकंपणट्ठा पुण्णनिमित्तं च जुत्तमेव गिहत्थाणं पाककरणं, समणट्ठाए पुण पाको त्ति कहं निरुवलित्ता ? । एत्थं भण्णति—जं भणसि साधुनिमित्तं पाककरणं तं ण, जम्हा—**कंतारे दुब्भिक्खे०** गाहा पाढगता ॥ ३९ ॥ **अह कीस०** । इदमवि तहेव ॥ ४० ॥ **अत्थि बहुगामदेसा०** ॥ ४१ ॥ **पगती एस गिहीणं०** पुव्वगतं ॥ ४२ ॥ **एत्थ य समण सुविहिता०** । एसा वि ॥ ४३ ॥ **णवकोडीपरिसुद्धं०** । इमाओ णव कोडीओ—ण हणति ण हणावेति हणंतं नाणुजाणेति ३, ण पयति० ३, ण किणति० ३ । णवकोडीहिं उग्गम-उप्पायणाहि य सुद्धमाहारेंति । इमेहिं पुण कारणेहिं—"वेयण वेयावच्चे०" सिलोगो (? गाहा) जहा **पिंडनिज्जुत्तीए** [ गा० १०२२ ] । एसा दिट्ठंतविसुद्धी ६ ॥ ४४ ॥

उवसंहारो सुत्तेण भण्णति—

३. एमेते समणा मुक्का[7] जे लोके संति—साहवो[8] ।
विहंगमा व पुप्फेसु दाण-भत्तेसणे रया ७ ॥ ३ ॥

**३. एमेते समणा०** सिलोगो । एवंसद्दो तहासद्दस्स अत्थे, जहा दुमपुप्फरसं भमरा, वकारलोपो सिलोगपायाणुलोमेणं । **एते** इति साहुणो पच्चक्खीकरेति अणियतवित्तित्तणेण । **समणा** तवस्सिणो, "श्रमू तपसि" इति । **मुक्का** आरंभदोसेणं । **जे** इति उद्देसे । **लोके** इति पराहीणवित्तिता दरिसिज्जति । **संति** विज्जंति [ साहवो ] खेत्तंतरेसु वि एवंधम्मताकहणत्थं । अहवा **संतिं** सिद्धिं साधेंति **संतिसाधवः** । उवसमो वा संती तं सोहेंति

१ **कारणा अहासमयं** खं० वी० सा० ॥ २ **महया** खं० ॥ ३ **गाम-नगरा समणा** खं० वी० सा० **वृद्धविवरणे** च ॥ ४ **तत्थ समणा सुविहिया पर**° वृद्धविवरणे । **तत्थ समणा तवस्सी पर**° खं० वी० सा० हाटी० ॥ ५ **हरिभद्रपादैः टीका**याम् "इयं च किल **भिन्नकर्तृकी**" इति निर्दिष्टमस्तीति तेषामभिप्रायेणेयं गाथा न **निर्युक्ति**सत्का । **चूर्णि-वृद्धविवरणा**भिप्रायेण तु नेयमन्यकर्तृकीति **निर्युक्ति**गाथेयम् ॥ ६ "वेयण १ वेयावच्चे २ इरियट्ठाए य ३ संजमट्ठाए ४ । तह पाणवत्तियाए ५ छट्ठं पुण धम्मचिंताए ६ ॥" इति पूर्णा गाथा ॥ ७ **मुत्ता** अचू० विना ॥ ८ **साहुणो** अचू० विना ॥ ९ साहेंति—साधयन्ति कथयन्ति इति वा । "तामेव गुणविशिष्टां शान्तिं साधयन्तीति [ शान्ति ] साधवः, अहवा संति—अकुतोभयं भण्णइ, ते चेव साहुणो अप्पमत्तत्तणेणं जीवाणं शान्तिं भणंति" इति **वृद्धविवरणे** ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**संतिसाहवो** । णेव्वाणसाहणेण साधवः । साहणीयसाहणतुल्लतोवसंहरणत्थं भण्णति–**विहंगमा व पुप्फेसु दाणभत्तेसणे रया,** विहं–आगासं, विहायसा गच्छंति त्ति **विहंगमा,** के य ते ? भमरा एत्थाहिकिता इति । **विहंगमा व पुप्फेसु** जहा विहंगमा पुप्फेसु एवं ते **दाणभत्तेसणे रता, दाण** इति दत्तं गेण्हंति, **भत्त** इति "भज सेवायाम्" इति साहुजोगता भण्णति, **एसणे** इति गवेसण-गहण-घासेसणा सूइता, **रता** इति एसणासु आउत्ता । एस उवसंहारो ७ ॥ ३ ॥ उवसंहारविसुद्धी **सुत्तफासितनिज्जुत्तीए** भण्णति—

**अवि भमर-म[1]हुकरिगणा अविदिन्नं आ[2]वियंति कुसुमरसं ।**
**समणा पुण भगवंतो णादिण्णं भोत्तुमिच्छंति ॥ ४५ ॥**

**अवि भमर-महुकरिगणा०** गाहा पाढसिद्धा ॥ ४५ ॥ एत्ताहे अणंतर**निज्जुत्तिगाहा** सुत्तविहिणा समत्थिज्जति सिस्ससंपच्चायणत्थं, आयभावो य साहुसामण्णो दरिसिज्जति त्ति गुरवो भणंति–

४. वयं च वित्तिं लब्भामो ण य कोति उवहम्मति ।
अ[3]हागडेहिं रीयंति पुप्फेहिं भमरा जहा ॥ ४ ॥

**४. वयं च वित्तिं लब्भामो ण य कोति उवहम्मति ।** कहं णो उवहम्मति ? **दाणभत्तेसणे रय** त्ति, उग्गमुप्पायणेसणासुद्धमुंछमाहारेंतेहिं । पुणरवि एगदेसोदाहरणस्स पतिसमाणणत्थं भण्णति– **अहागडेहिं रीयंति पुप्फेहिं भमरा जहा,** पवित्तीए अणण्णहाभावं दरिसेति **अहा**सद्दो, जेण पगारेण पढमं साहुग्गहणं भिक्खग्गहपवित्तीए कयं तहा इदाणीमवि कयं, जहा स[4]रितुसभावपुप्फितेहिं भमरा तहा गोत्तसामण्णेसु पागेसु साहुणो **रीयंति** तृप्तिमुवलभंति ॥ ४ ॥ अत एव–

५. मधुकारसमा बुद्धा जे भवंति अणिस्सिया ।
नाणापिंडरया दंता तेण वुच्चंति साहुणो ॥ ५ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ दुमे[5]पुप्फियज्झयणं समत्तं ॥

**५. मधुकारसमा बुद्धा जे भवंति अणिस्सिया ।** मधु कुव्वंतीति मधुकरा तेहिं तुल्ला सरिसा, तस्समाणा **बुद्धा** जाणगा **अणिस्सिया** अ[6]णभिसंधितदायारो ॥ चोदगो भणति–

**अस्संजतेहिं भमरेहिं ज[7]दि समा संजता खलु भवंति ।**
**एवं उवमं किच्चा णूणं अस्संजता समणा ॥ ४६ ॥**

**अस्संजतेहिं भमरेहिं जदि समा०** गाहा । जदि भमरसमा तो अस्सण्णिणोऽसंजता य, जतो एवंगुणा भमरा । गुरवो भणंति–बुद्धगहणेण अणिस्सियगहणेण य तं परिहरितं ॥ ४६ ॥

अहवा इमं **सुत्तफासितणिज्जुत्तिगतमुत्तरं**–

**उवमा खलु एस कता पुव्वुत्ता देसलक्खणोवणया ।**
**अणिययवित्तिणिमित्तं अहिंसअणुपालणट्ठाए ॥ ४७ ॥**

---

१ **महुगरिगणा** खं० । **महुयरिगणा** वी० सा० । **मधुकरगणा** वृद्ध० ॥ २ **आइयंति** वी० । **आदियंति** वृद्धविवरणे । ३ **अहागडेसु रीयंते पुप्फेहिं** वृद्धविवरणे । **अहागडेसु रीयंते पुप्फेसु** हाटी० खं १-२-३-४ जे० शु० । अत्र पाठभेदे जे० खं २-४ प्रतिषु **रीयंति** पाठो वर्त्तते ॥ ४ स्वकृतुस्वभावपुष्पितेषु ॥ ५ इयं पुष्पिका खं १ प्रतावेव वर्त्तते ॥ ६ अनभिसन्धितदातारः अनपेक्षितदातारः ॥ ७ **जति** खं० । **जइ** वी० ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**उवमा खलु एस कता०** गाहा। एगदेसेण उवमा–जहा सीहो माणवगो, सूरतामेत्तं सारिसं, ण सरीरागारो सेसगुणा वा, एवमणुवरोहवित्तिता[1] तुल्ला, न सेसं ॥ ४७ ॥ इमं च–

**जह दुमगणा उ तह णगरजणवया पयण-पायणसभावा।**
**जह भमरा तह मुणिणो णवरि[2] अदिण्णं[3] ण[4] गेण्हंति ॥ ४८ ॥**

**जह दुमगणा उ०** गाहा। जहा सभावतो दुमा काले पुप्फ-फलं देंति तहा जणा वि पाकादि। **जहा भमरा तहा मुणिणो** विसेसधम्मा **ण अदिण्णं गेण्हंति** ॥ ४८ ॥

कहं पुण जहा भमरा तहा मुणिणो ? णणु–

**कुसुमे सभावपुप्फे[5] आहारेंति भमरा जह तहेव[6]।**
**भत्तं सभावसिद्धं समणसुविहिता गवेसंति ॥ ४९ ॥**

**कुसुमे सभावपुप्फे० णिज्जुत्ती। जहा** सभावकुसुमितेसु दुमेसु **भमरा** अणुवरोहेण रसमापिबंति एवं लोगस्स सभावनिव्वत्तियातो पागातो **समणसुविहिता** उग्गमादिविसुद्धमाहारेति ( माहारं **गवेसंति** ) ॥ ४९ ॥ असण्णि-असंजतदोसपरिहरणत्थं विसेसेण उवणतोवदरिसणत्थं च इमा अद्धगाहा–

**उवसंहारो भमरा जह तह समणा वि अवधजीवि[7] त्ति।**

**उवसंहारो [ भमरा ] जह तह स ( स ) मणा वि अवधजीवि त्ति।** जहा भमरा पुप्फस्स अणुवमद्देणं तहा अणुवरोहेण साहुणो ॥ संजतेहिं भमरेहिंतो गुणाहिकयाससुब्भावणत्थं भण्णति—

**णाणापिंडरता दंता,** णाणापगारं दव्वादिअभिग्गहविसेसेहिं **पिंडरता,** [8]अंत-पंत-विगतिविवज्जितेसु वा सरीरधारणमुद्देसरतिगता। भण्णिहीति य–"अरसं विरसं वा वि" [ अ० ५ उ० १ श्लो० १२० ]। **दंता** दव्वयो अस्स-हत्थिमादि, भावतो इंदिय-नोइंदियदमेण **दंता** साहुणो ॥ वक्खाणधम्मतोवदरिसणत्थमत्थ-वित्थारणनिमित्तं च भण्णति—

**दंत त्ति पुण पदम्मी णातव्वं[9] वक्कसेसमिणं ॥ ५० ॥**

**दंत त्ति पुण पदम्मी णातव्वं वक्कसेसमिणं।** वक्कसेसो–जं सुत्ते सूतितं लाघवत्थं न निगदितं। दंत त्ति एगजातिताणि पदाणि सूतिज्जंति–खंतो गुत्तो एवमादि ॥ ५० ॥

**जह एत्थ चेव इरियादिएसु सव्वम्मि दिक्खियपयारे।**
**तस-थावरभूयहियं जयंति सब्भावियं साहू ८ ॥ ५१ ॥**

**जह एत्थ चेव० गाधा।** जहा एयम्मि चेव अज्झयणे एसणासमितिपसंगेण सेससमितिवयणमवि **दिक्खियपयारे** जं दिक्खियायरणितं तं सव्वमुक्तम्। उवसंहारविसुद्धी ८ ॥ ५१ ॥ निगमणं—

**तेण वुच्चंति साहुणो,** जेण मधुकारसमा णाणापिंडरता य तेण कारणेण। तम्हा अहिंसा-संजम-तवसाहणोववेतमधुकरवयऽणवज्जाहारसाधुसाहितो[10] धम्मो मंगलमुक्कट्ठं भवति ९ ॥ ५ ॥

'णिगमणविसुद्धी चोदणा विसंव[य]इ' त्ति[11] आसंकामुहेण गुरवो भणंति–जति कोति भणेज्ज–तित्थंतरिया वि अहिंसादिगुणजुत्ता इति तेसिं पि धम्मो भविस्सति तत्थ समत्थमिदमुत्तरं–ते छक्कायजतणं ण जाणंति, ण वा उग्गम-उप्पायणासुद्धं मधुकरवदणुवरोहि भुंजंति, ण वा तिहिं गुत्तीहिं गुत्ता। साहवो पुण—

---

१ अनुपरोधवृत्तिता ॥ २ **णवर** वृद्ध० ॥ ३ **अदत्तं** खं० वी० सा० ॥ ४ **ण भुंजंति** सा० हाटी० ॥ ५ **सहावफुल्ले** खं० वी० सा० हाटी० ॥ ६ **तहा उ** सा० ॥ ७ °**जीवीआ** खं० ॥ ८ अन्त-प्रान्त-विकृतिविवर्जितेषु ॥ ९ **णायव्वो वक्कसेसोऽयं** खं० हाटी० ॥ १० मधुकरवद् अनवद्याहारसाधुसाधितः ॥ ११ निगमनविशुद्धिं चोदना विसंवदते इति ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**कायं वायं च मणं च इंदियाइं च पंच दमयंति ।**
**धारेंति बंभचेरं संजमयंती कसाए य ॥ ५२ ॥**

**कायं वायं च मणं०** गाहा । काएण जुत्तं चेट्ठंति, वायाए अकुसलवतिणिरोहिणो कुसलउदीरगा, एवं कुसलमणे । कुसलियइंदियविसएसु इट्ठा-ऽणिट्ठेसु राग-दोसपरिहारिणो । अट्ठारसविहअब्बंभनिवृत्ता । कोहादीणं उदयणिरोहजुत्ता उदिण्णविफलीकरणे य ॥ ५२ ॥ अयं विसेसो—

**जं च तवे उज्जुत्ता तेणेसिं साधुलक्खणं पुण्णं ।**
**तो साधुणो त्ति भण्णंति साहवो णिगमणं चेयं १० ॥ ५३ ॥**

**जं च तवे उज्जुत्ता०** गाधा । जं च इति जम्हा बारसविहे तवे जहासत्तीए उज्जुत्ता तम्हा साधूसु संपुण्णं साधुलक्खणं, ण तित्थंतरिएसु । तेहिं समत्तसाधुलक्खणलक्खितेहिं साधूहिं साधितो संसारनित्थरणहेऊ सव्वदुक्खविमोक्खमोक्खगमणसफलो धम्मो मंगलमुक्कट्ठं भवति त्ति सुट्ठु निद्दिट्ठं । एसा निगमणविसुद्धी १० ॥५३॥

सव्वावयवपच्चवगरिसणमिदं—

**ते उ पतिण्णा १ सुद्धी २ हेउ ३ विभत्ती ४ विवक्ख ५ पडिसेहो ६ ।**
**दिट्ठंतो ७ आसंका ८ तप्पडिसेहो ९ णिगमणं च १० ॥ ५४ ॥**

**ते उ पतिण्णा सुद्धी०** गाधा ॥ ५४ ॥ **दुमपुप्फित**अज्झयणविवरणं समासतोऽभिहितं । वित्थरेण सव्वक्खरसण्णिवायावदातागमबुद्धीहिं चोद्दसपुव्वीहिं भण्णति । अत्थपडिसमाहरणत्थं **णिज्जुत्ती** इमा—

**दुमपुप्फियाए णिज्जुत्तिसमासो वण्णिओ विभासा य ।**
**जिण-चोद्दसपुव्वी वित्थरेण कहयंति से अट्ठं ॥ ५५ ॥**

**दुमपुप्फिया०** गाधा ॥ ५५ ॥ ततियमणुओगदारं सुत्ताणुगम इति समत्तं । णये त्ति दारं—

**णायम्मि गेण्हियव्वे अगेण्हियव्वम्मि चेव अत्थम्मि ।**
**जइयव्वमेव इति जो सो उवदेसो णओ णाम ॥ ५६ ॥**
**सव्वेसिं पि णयाणं बहुविहवत्तव्वयं णिसामेत्ता ।**
**तं सव्वणयविसुद्धं जं चरणगुणट्ठिओ साहू ॥ ५७ ॥**

**॥ दुमपुप्फियणिज्जुत्ती समत्ता ॥**

**णायम्मि गेण्हियव्वे०** गाहा । **सव्वेसिं पि णयाणं०** गाहा । जहा **आवस्सए** (हाटी० पत्र ४८८) ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

**॥ दुमपुप्फियचुण्णी दिट्ठाग्रं (?) समत्ता ॥**

**धम्मो ससाहणगुणो पंचावयवं तहा दसावयवं । धम्मस्स साहगाणं साधूण गुणा य पढमम्मि ॥ १ ॥**

---

१ **दमइंति** खं० ॥ २ **ते उ पइण्ण १ विसुद्धी २** वृद्धविवरणे । **ते उ पइन्न १ विभत्ती २** खं० वी० सा० हाटी० । अस्या गाथाया **हरिभद्रव्याख्या**—"तत्र प्रतिज्ञानं प्रतिज्ञा वक्ष्यमाणस्वरूपेत्येकोऽवयवः १ । तथा विभजनं विभक्तिः तस्या एव विषयविभागकथनमिति द्वितीयः २ । तथा हिनोति–गमयति जिज्ञासितधर्मविशिष्टानर्थानिति हेतुः तृतीयः ३ । तथा विभजनं विभक्तिरिति पूर्ववच्चतुर्थः ४ । तथा विसदृशः पक्षो विपक्षः साध्यादिविपर्यय इति पञ्चमः ५ । तथा प्रतिषेधनं प्रतिषेधः, विपक्षस्येति गम्यते इत्ययं षष्ठः ६ । तथा दृष्टमर्थमन्तं नयतीति दृष्टान्त इति सप्तमः ७ । तथा आशङ्कनमाशङ्का, प्रक्रमाद् दृष्टान्तस्यैवेत्यष्टमः ८ । तथा तत्प्रतिषेधः अधिकृताशङ्काप्रतिषेध इति नवमः ९ । तथा निश्चितं गमनं निगमनं निश्चितोऽवसाय इति दशमः १० । चशब्द उक्तसमुच्चयार्थ इति गाथासमासार्थः [ पत्र ७५ ] ॥ ३ **दुमपुप्फियणिज्जुत्ती समासओ वण्णिया विभासाए** सा० ॥ ४ °**चउदस**° वी० सा० ॥ ५ **अत्थं** खं० ॥ ६ °**यज्झयणं॥ छ ॥** खं० ॥

Jain Education International    For Private & Personal Use Only    www.jainelibrary.org

# [ बिइयं सामण्णपुव्वगज्झयणं ]

धम्मो पढमज्झयणे पसत्थो, तस्स पहाणं धिति त्ति धीतिपरूवणाभिसंबंधं पिंडत्थमज्झयणं बितियं **सामण्णपुव्वगं**। तस्स चत्तारि अणिओगदारा जहा **सामाइए**। नामनिप्फण्णो से—

**सामण्णपुव्वगस्स तु निक्खेवो होइ णामनिप्फण्णो।**
**सामण्णस्स चउक्को तेरसगो पुव्वगस्स भवे ॥ १ ॥ ५८ ॥**

**सामण्णपुव्वगस्स तु०** गाहा। सामण्णं पुव्वगं च दो पदाणि। समणभावो सामण्णं, भाव-भाविणो न विसेसे त्ति ॥ १ ॥ ५८ ॥ समणस्स निक्खेवो इमो चउहा—

**समणस्स उ णिक्खेवो [1]चउव्विहो होइ आणुपुव्वीए।**
**दव्वे सरीर भविओ [2]भावेण उ संजओ समणो ॥ २ ॥ ५९ ॥**

**समणस्स उ णिक्खेवो०** अद्धगाहा। णाम-ठवणाओ गताओ। दव्वसमणे इमं गाहापच्छद्धं—**दव्वे सरीर भविओ भावेण उ संजओ समणो**। दव्वसमणो आगमतो नोआगमतो य। आगमतो जहा दुमो समणाभिलावेण। भावसमणो संजतविरतो भावविसेसणमेव ॥ २ ॥ ५९ ॥

**जह मम ण पियं दुक्खं जाणिय एमेव सव्वजीवाणं।**
**ण हणति ण हणावेति य सममणई तेण सो समणो ॥ ३ ॥ ६० ॥**
**णत्थि य से कोति वेसो पिओ व सव्वेसु चेव जीवेसु।**
**एएण होति समणो एसो अण्णो वि पज्जाओ ॥ ४ ॥ ६१ ॥**
**तो समणो जति सुमणो भावेण य जइ ण होति पावमणो।**
**सयणे य जणे य समो समो य माणा-ऽवमाणेसु ॥ ५ ॥ ६२ ॥**

**जह मम ण पियं दुक्खं०** गाहा ॥ ३ ॥ ६० ॥ बितिया–**णत्थि य से कोति वेसो०** ॥ ४ ॥ ६१ ॥ ततिया–**तो समणो जति०** अक्खरत्थेण गताओ ॥ ५ ॥ ६२ ॥

स एव भावो सोदाहरणो भण्णति—

**[3]उरग १ गिरि २ [4]जलण ३ सागर ४ [5]गगण ५ तरुगणसमो ६ य जो होइ।**
**भमर ७ मिग ८ धरणि ९ जलरुह १० रवि ११ पवण[6]समो १२ यतो समणो ॥ ६ ॥ ६३ ॥**
**[7]विंस १३ तिणिस १४ [8]वाउ १५ वंजुल १६ [9]कणवीरु १७ प्पलसमेण १८ समणेण।**
**भमरुं १९ [10]दुंर २० णड २१ कुकुड २२ अद्दागसमेण २३ [11]भवितव्वं ॥ ७ ॥ ६४ ॥**

**उरगगिरि०** गाहा। एगदेसेणोदाहरणं भवति–उरगादीणं सविस-रोसणादिदोसपरिवज्जिता इट्ठा गुणा घेप्पंति। **उरगे** एगंतदिट्ठी, भावसाधुणा धम्मे एगंतदिट्ठिणा भवितव्वं, तहा उरग इव [12]परेकडणिलएण, बिलमिव पण्णगभूतेण अप्पाणेण आहारवृत्तिः, जहा बिलं पण्णगं णाऽऽसाएति १। एवं [13]**गिरि** विव निच्चलेण सीले भवितव्वं, ण पुण तहा खर-अचित्तत्तणेण य २। **जलण** इव तेयस्सिणा भवितव्वं, जह सो इंधणम्मि [14]अवितित्तो तहा सुत्ते

१ **चउक्कओ होइ** वी० सा० ॥ २ **भावे उण सं°** वृद्धविवरणे ॥ ३ अनुयोगद्वारचूर्णिकृता **उदग** इति पाठ आदृतोऽस्ति ॥ ४ **जलय** इति पाठः **अनुयोगद्वारसूत्र**प्रत्यन्तरे ॥ ५ **°णभतल-तरु** सर्वासु निर्युक्तिप्रतिषु। **हरिभद्र**पादैरयमेव पाठः स्वीकृतोऽस्ति। किञ्च–**अनुयोगद्वारचूर्णि**कृता **गगण** इत्येव पाठ आदृतोऽस्ति ॥ ६ **°समो अतो** वी०। **°समो जओ** सा०। अत्र मूले **य तो** इत्यपि पदविच्छेदः स्यात् ॥ ७ "इयं किल गाथा **भिन्नकर्तृकी**, अतः पवनादिषु न पुनरुक्तदोष इति।" इति **हारि० वृत्तौ** ॥ ८ **वात-वं°** खं० वी० सा० हाटी० ॥ ९ **°कणियारु** खं० वी० सा० हाटी० ॥ १० **°दुरु-णड°** खं० वी० सा० हाटी० ॥ ११ **होयव्वं** खं० वी० सा० ॥ १२ परकृतनिलयेन ॥ १३ **गिरिरिउनिच्च°** मूलादर्शे ॥ १४ अवितृप्तः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवितित्तेण, इह-पेच्चहितत्थे निव्विसेसो, एवं फासुएसणिज्जे मणुण्णा-ऽमणुण्णनिव्विसेसाहारकिरियेण ३ । **सागर** इव गंभीरेण नाण-दंसण-चरित्त-भावणअणेगगुणरयणनिहिणा भवितव्वं, ण तु तहा कडुगणिरुवहोजेण ४ । सव्वसंगनिरालंबणेण **गगणमिव** भवितव्वं ५ । छेदणे पूयणे वा **तरुरिव** राग-दोसरहितेण ६ । अणियतवित्तिणा **भमरेणेव** ७ । **मिगेणेव** संसारभउव्विग्गेण अप्पमादिणा ८ । **धरणि** व्व सव्वफासविसहेण ९ । **जलरुहमिव** पंक-तोएहि तज्जातसंवुड्ढेण निरुवलित्तेण, " जहा पुण्णस्स [ कच्छति ] तहा तुच्छस्स इध कच्छति " [ आचा० श्रु० १ अ० २ उ० ६ सू० ४ ] त्ति वयणातो १० । सम्मत्तादिहितोवदेसवयणकिरणावभासिणा **सूरेण** व ११ । **वाउरिव** अपडिबद्धेण सव्वपदाभिसंबंधिणा भवितव्वं १२ ॥ ६ ॥ ६३ ॥ तहा—

**विस-तिणिस०** गाहा । सव्वरसाणुवादिणा **विसेणेव** १३ । भणितं च —

वयं मणुस्सा ण सेढा[2] ण निट्ठुरा, ण माणिणो णेव य अत्थगव्विता ।
जणं जणं पप्प तहा भवामहे, जहा विसं सव्वरसाणुवातिकं[3] ॥ १ ॥ [ ]

कज्जे णमणं एति **तिणिसेणेव** १४ । **वाऊ** भणितो १५ । समीवोवगताण **वंजुलेणेव**[4] विसोवसमणे कोहादिविसोवसमणसमत्थेण १६ । सव्वत्थ पागडेण निव्विगंधसीलेण[5] य **कणवीरेणेव** १७ । सीलगंधेण **उप्पलेणेव** १८ । **भमरेणेवाणुवरोधवित्तिणा** १९ । **उंदुरेणेव** देस-कालचारिणा माणा-ऽवमाणेसु पणताणुरूवरोसेण २० । **णडेणेव** रंगगतेणाणेगरूवेण २१ । **कुक्कुडावकिण्णमण्णे** वि तज्जातीता[6] उपजीवंति तहावि[ह]संविभागरुतिणा २२ । पागडभावेण **अद्दागपलिभा**[7] इव अणुरूवेण वा २३ । लाघवत्थमंते भणियं **भवितव्वं** सव्वपदेहिं संबज्झति ॥ ७ ॥ ६४ ॥

समणस्स एगट्ठियाणि तं जहा—

**पव्वइए १ अणगारे २ पासंडी[8] ३ चरक ४ तावसे ५ भिक्खू ६ ।**
**परिवायए य ७ समणे ८ णिग्गंथे ९ संजए १० मुत्ते ११ ॥ ८ ॥ ६५ ॥**
**तिण्णे[9] १२ णेया १३ दविए १४ मुणी य १५ खंते य १६ दंत १७ विरए य १८ ।**
**लूहे १९ तीरट्ठी[10] वि य २० हवंति समणस्स णामाइं ॥ ९ ॥ ६६ ॥**

**पव्वइए अणगारे०** गाहा । तत्थ **पव्वइए** इति प्रगतो गिहातो संसारातो वा १ । **अणगारो** अगारं–गृहं तं जस्स नत्थि सो अणगारो २ । अट्ठविहकम्मपासादो[11] घरपासादो वा डीणे **पासंडी** ३ । तवं चरइ त्ति **चरको** ४ । तवो से अत्थि **तावसो** ५ । भिक्खणसीलो **भिक्खू** ६ । पावाइं परिहरंतो **पारिव्वातो** ७ । **समणो** भणितो ८ । बाहिर-ऽब्भंतरातो गंथातो निग्गओ **निग्गंथो** ९ । एगीभावेण अहिंसादीहिं जतो **संजतो** १० । **मुत्तो** नेहादिबंधणेहिं ११ ॥ ८ ॥ ६५ ॥ तहा—

**तिण्णे जाणे ( णेया )०** गाहा । संसारसागरतरणा **तिण्णो** १२ । भवा सिद्धिमहापट्टणं निव्विग्घेणं

---

१ °**ण जह पच्च**° मूलादर्शे ॥ २ **सढा ण पंडिया ण माणिणो** वृद्धविवरणे ॥ ३ सर्वरसानुपातिकम् । ४ "वंजुलो नाम–वेतसो, तस्स किल हेट्ठा चिट्ठिया सप्पा निव्विसीभवंति, एरिसेण साहुणा भवितव्वं ।" इति **वृद्धविवरणे** । "वञ्जुलः–वेतसः तत्समेन भवितव्यम्, क्रोधादिविषाभिभूतजीवानां तदपनयनेन, एवं हि श्रूयते—किल वेतसमवाप्य निर्विषा भवन्ति सर्पा इति ।" इति **हारिभद्र्यां वृत्तौ** ॥ ५ अशुचिगन्धापेक्षया निर्विगन्धमित्यर्थः ॥ ६ **तीवा उपज्जवंति** मूलादर्शे ॥ ७ आदर्शप्रतिबिम्बमिवेत्यर्थः ॥ ८ **पासंडे** खं० सा० ॥ ९ **तिण्णे ताती दविए** खं० सा० । एतत्पाठभेदानुसारेणैव **हरिभद्र**पादैर्व्याख्यातमस्ति । तथाहि–"तीर्णवान्स्तीर्णः, संसारमिति गम्यते । त्रायत इति **त्राता,** धर्मकथादिना संसारदुःखेभ्यः इति भावः । रागादिभावरहितत्वाद् **द्रव्यम्**, द्रवति–गच्छति वा तांस्तान् ज्ञानादिप्रकारानिति **द्रव्यम्**" । **वृद्धविवरणकृता** पुनः **तिण्णो ताती णेया दविए मुणी खंत दंत** इति प्रस्तुतानुपलब्धपाठभेदानुसारेण विवृतं वर्त्तते । तथाहि—"**तिण्णो ताती०** गाहा । जम्हा य संसारसमुद्दं तरंति तरिस्संति वा तम्हा **तिण्णो ताती** य । जम्हा अण्णे वि भविए सिद्धिमहापट्टणं अविग्घपहेण नयइ तम्हा **नेया** । **दविओ** नाम राग-द्दोसविमुक्को भण्णइ ।" इति ॥ १० **तीरट्ठे** सा० । चूर्णिद्वये वृत्तौ च "**तीरट्ठे**" "**तीरट्ठी**" इति पाठभेदयुगलं व्याख्यातं वर्त्तते ॥ ११ अष्टविधकर्मपाशाद् गृहपाशाद् वा ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेतीति **णेता** १३। जीवदव्वं राग-दोसविरहितमिति **दवितो** १४। सावज्जं न भासति त्ति **मुणी** १५। खमइ त्ति **खंतो** १६। इंदिय-कसाए दमेति त्ति **दंतो** १७। पाणातिवातातिणिवृत्तो **विरतो** १८। पन्त-लूहे णिसेवी लूहे, णेधवंज्जिते वा **लूहे** १९। संसारतीरगमणे अत्थी **तीरट्ठी** तीरस्थो वा २०॥ ९॥ ६६॥

समणस्स एगट्ठिता गता। पुव्वतं तेरसविहं, तं जहा—

**णामं १ ठवणा २ दविए ३ खेत्ते ४ काल ५ दिसि ६ तावखेत्ते य ७।**
**पण्णवग ८ पुव्व ९ वेत्थू १० पाहुड ११ अइपाहुडे १२ भावे १३ ॥१०॥६७॥ सुत्तं ॥**

**णामं ठवणा॰** गाहा। णाम ठवणा तहेव १।२। दव्वपुव्वयं पुव्वमिति कारणं, जहा बीजपुव्वा अंकुरुप्पत्ती ३। णायपुव्वयं (खेत्तपुव्वयं) पुव्विं सालिखेत्तं पच्छा जवखेत्तं ४। कालपुव्वयं पुव्विं वरिसारत्तो पच्छा सरदो एवमादि ५। दिसापुव्वयं "जंबुदीवे दीवे मंदरपव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिम-हेट्ठिमिल्लेसु खुड्डागपतरेसु एत्थ णं तिरियलोयस्स आयाममज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते जतो पुव्वादियाओ दिसाओ पवत्तंति" [ स्थानाङ्ग स्था॰ १० सूत्र ७२० ] एयं दिसापुव्वगं ६। तावखेत्तपुव्वगं जस्स जतो आदिच्चो उट्ठेति तस्स तं पुव्वं ७। पण्णवगपुव्वगं जो जत्थ जतोमुहो ठितो पण्णवेति तं तस्स पुव्वगं ८। पुव्वपुव्वयं चोद्दसण्हं पुव्वाणं जं पढमं पुव्वं तं पुव्वपुव्वगं ९। वत्थुपुव्वगं तस्सेव जं पढमवत्थुं तं वत्थुपुव्वगं १०। पाहुडपुव्वगं जहा **सूरपण्णत्तीए** पाहुडेसु जं पढमं तं पाहुडपुव्वगं ११। पाहुडपाहुडपुव्वगं तस्सेव पुव्ववत्थुं तं पाहुडपाहुडपुव्वगं १२। भावपुव्वयं पंचण्हं भावाणं ओदतिओ भावो भावपुव्वगं १३॥ १०॥ ६७॥

सामण्णं पुव्वं **एतम्मि** अज्झयणे तं एतं सामण्णपुव्वगं। नामनिप्फण्णो गतो। पुव्वाणुक्कमेण सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेतव्वं अखलियं जहा **अणुओगदारे**। तं सुत्तं इमं—

६. कहं णु कुज्जा सामण्णं जो कामे ण णिवारते ?।
पदे पदे विसीयंतो संकप्पस्स वसंगतो ॥ १ ॥

**६. कहं ण (? णु) कुज्जा सामण्णं जो कामे ण निवारते**। पदच्छेदाणंतरं पदत्थो–किंसद्दो क्खेवे पुच्छाए य वट्टेति, खेवो णिंदा, हसद्दो प्रकारवाचीति नियमेण पुच्छाए वट्टति। णुसद्दो वितक्के, प्रकारं वियक्केति, केण णु प्रकारेण सो सामण्णं कुज्जा ?। **जो कामे ण निवारते** जो कामेहिंतो इंदियाणि ण णिवारए। **पाढंतरं**–"**कतिऽहं कुज्जा**" 'कति' त्ति संखा, 'अहो' दिवसो, कति दिणाणि स कुज्जा ? अप्पाणि दिणाणि स सत्तो जो कामे॰। **अण्णेसिं** "**कयाऽहं कुज्जा**" 'कदा' कम्मि काले, 'अहं' अप्पाणं निद्दिसति, आसंसावयणमिदं सावगस्स उ जुज्जति, कदा पुण अहं सामण्णगुणे व धरेहामि जो कामे ण॰। **अण्णेसिं** "**कहं स कुज्जा**" एत्थ परनिद्देसो उदाहरणत्तेण, [सुत्तं] अणंतगमपज्जवमिति सव्वं सिद्धं॥

**कहं ण (णु) कुज्जा सामण्णमिति** एतस्स सुत्तत्थो। ते कामा निक्खेवं प्रति—

**णामं ठवणाकामा दव्वकामा य भावकामा य।**
**एसो खलु कामाणं णिक्खेवो चउविहो होइ ॥ ११ ॥ ६८ ॥**

---

१ लेहवज्जितो वा॥ २ **वत्थुय पाहुड** वी॰॥ ३ **सूभम्** वी॰॥ ४ "तं च सुत्तं जहा–**कइऽहं कुज्जा सामण्णं जो कामे न निवारते**, तत्थ कति त्ति संखा, अह इति दिवसो भण्णइ, कति पुण सो अहाणि कुज्जा सामण्णं जो कामे ण णिवारए ?। **अण्णे** पुण पढंति–**कयाऽहं कुज्जा सामण्णं**, कदा इति कम्मि काले, अहमिति अत्तनिद्देसे वट्टइ, कदाऽहं करेमि सामण्णं जो कामे न निवारए। **केसिं चि** पुण एवं–**कहं णु कुज्जा सामण्णं जो कामे न निवारए**। तिन्नि एते विकप्पा अविरुद्धा। पाएण पुण एतं सुत्तं एवं पढिज्जइ–**कहं णु कुज्जा सामण्णं**" इति वृद्धविवरणकृतः। श्रीहरिभद्रपादास्त्वेवं निर्दिशन्ति स्म स्ववृत्तौ–"**कत्यहम्, कदाऽहम्, कथमहम्** इत्याद्यहश्यपाठान्तरपरित्यागेन हश्यं व्याख्यायते–**कथं नु कुर्याच्छ्रामण्यं यः कामान् न निवारयति**" इति पत्र ८५-१॥ ५ **चउव्विहो होइ णिक्खेवो** खं॰॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**सद्द-रस-रूव-गंधा-फासा उदयंकरा य जे दव्वा।**
**दुविहा य भावकामा इच्छाकामा मयणकामा ॥ १२ ॥ ६९ ॥**

**णामं ठवणा०** गाहा। णाम-ठवणाउ तहेव ॥ ११ ॥ ६८ ॥ दव्वकामा इमे–

**सद्दरस०** गाधाते पुव्वद्धं । इट्ठा **सद्द-रस-रूव-गंध-फासा** कंता [1]विसतिणामिति कामा । जाणि य **कामोदयकराणि** [2]किलिंप्पंति तिगिच्छियदिट्ठाणि दव्वाणि ते **दव्वकामा** । भावकामा इति–**दुविहा य भावकामा०** गाहापच्छद्धं । भावकामा दुविहा–**इच्छाकामा मयणकामा य** ॥ १२ ॥ ६९ ॥

**इच्छा पसत्थमपसत्थिका य मयणम्मि वेदमुवओगो।**
**तेणऽहिगारो तस्स उ वदंति धीरा णिरुत्तमिणं ॥ १३ ॥ ७० ॥**

**इच्छा पसत्थमपसत्थिका य०** गाहद्धं। दुविहा इच्छा–पसत्था अपसत्था य। तत्थ पसत्था इच्छा जहा धम्मकामो मोक्खकामो, अप्पसत्थिच्छा रज्जकामो जुद्धकामो, एवमादि इच्छाकामा। मदणकामो वेदोपओगो–जहा पुरिसो पुरिसवेदेण उदिण्णेण इत्थिं पत्थेति, इत्थी पुरिसं एवमादि। **तेणेति** तेण मदणकामेण अधिकारो, सेसा उच्चारितसरिस त्ति परूविता ॥ १३ ॥ ७० ॥ तेसिं मदणकामाण इमाओ दो **णिरुत्तिगाहातो**—

**विसयसुहेसु पसत्तं अबुहजणं कामरागपडिबद्धं।**
**उक्कामयंति [3]जीवं धम्मातो तेण ते कामा ॥ १४ ॥ ७१ ॥**
**अण्णं पि य[4] सिं णामं कामा रोग त्ति पंडिया बेंति।**
**कामे पत्थेमाणो रोगे पत्थेति खलु जंतू ॥ १५ ॥ ७२ ॥**

**विसयसुहेसु पसत्तं०** गाहा। **अण्णं पि य सिं०** गाहा। पाढसिद्धाओ ॥ १४ ॥ ७१ ॥ १५ ॥ ७२ ॥

कामा भणिया। एते मयणकामा इच्छाकामा य जो ण णिवारेति सो कहं सामण्णं करिस्सति ? । आह–णणु सद्दादिविसतोवायाणे वि सीलधारणे सति सामण्णं ? उच्यते–तप्पसंगेण सो **पदे पदे विसीयंतो संकप्पस्स वसंगतो,** [5]गम्मते इति पदं, तं पुण पादेण वा समक्कंतं सीहादिपदं, विक्खतं वा णहपदादि, ठाणं वा पदं जहा–लद्धं पदं एतेण ॥ तं च पदं चउव्विहं—

**णामपदं ठवणपदं दव्वपदं चेव होति भावपदं।**
**एक्केक्कं पि य एत्तो णेगविहं होति णायव्वं ॥ १६ ॥ ७३ ॥**

**णामपदं०** गाहा। णाम-ठवणाओ गताओ ॥ १६ ॥ ७३ ॥ दव्वपदं अणेगविहं, तं०—

**[6]आओडिम १ मुक्किण्णं २ ओणेज्जं ३ [7]पीलियं च ४ रंगं च ५।**
**[8]गंथिम ६ वेढिम ७ पूरिम ८ वातिम ९ संघातिमं १० छेज्जं ११ ॥ १७ ॥ ७४ ॥**

**आओडिममुक्किण्णं०** गाहा। **आओडिमं** जहा रूवओ बिंबेण बिंबेओ ओवीलिज्जति १। **ओकिण्णं** जहा सिलाए टंकेण [9]ओकिरिज्जति २। **ओणेज्जं** मदणविच्छित्तिविसेसा ३। [10]संवेलियपोत्तरंगो (? भंगो) **पीलियं** ४। **रंगपदं** वद्धरत्तगं ५। **गंथिमं** मालाविसेसो ६। **वेढिमं** कोति याऽऽकारो मालाहि वेढिज्जति ७। **पुरिमं** अंगुट्ठएहि पूरिज्जति ८। **वातिमं** सिप्पिता तहारूवं वीणंति ९। **संघातिमं** कंचुगाति १०। **छेज्जं** अब्भपडलादिपत्तछेदो ११। एतं दव्वपदं ॥ १७ ॥ ७४ ॥ भावपदं पि अणेगहा, तं समासतो दुविहं—

---

१ विषयिणामिति इत्यर्थः ॥ २ क्लृप्यन्ते इत्यर्थः ॥ ३ **जम्हा धम्मा**हाटीपा० ॥ ४ **य से णामं** वी० सा० ॥ ५ "कम्मति जेणं ति तं पदं भण्णइ" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ६ **आउट्टिम उक्किन्नं** सा० हाटी०। **आओडिम उक्किन्नं** खं० वी० ॥ ७ **पीलिमं च** खं० वी० सा० हाटी० ॥ ८ **गंथिय वेढिय पूरिय वाइत्ति संघा°** वी० ॥ ९ अवकीर्यते उत्कीर्यते इति वा ॥ १० "पीलियं नाम जहा पोत्तं संवेल्लेत्ता ठविज्जइ तत्थ भंगा उट्ठंति तं पीलियं भण्णइ" इति **वृद्धविवरणे** ॥

**भावपदं पि य दुविहं अवराहपदं च णो य अवराहं ।**
**दुविहं णोअवराहं माउग णोमाउगं चेव ॥ १८ ॥ ७५ ॥**

**भावपदं पि य दुविहं०** गाहा । भावपदं दुविहं, तं०—अवराहपदं णोअवराहपदं च । णोअवराहपदं दुविहं, तं०—माउयापदं नोमाउयापदं च । माउयापदं मातियाअक्खराणि, अहवा इमाणि दिट्ठिवादियाणि मातुयापदाणि भवंति, तं०—उप्पण्णे ति वा धुए ति वा विगमे ति वा । णोमातुयापदं दुविहं, तं०—गंथितं पतिण्णं च । गंथितमिति बद्धं । पतिण्णतं जं अणेगपदं पमाणेण भण्णति ॥ १८ ॥ ७५ ॥ जं गंथितं तं चउव्विहं—गज्जं पज्जं गेतं चुण्णपदं । एतं चउपगारमवि तिसमुट्ठाणं अत्थ-धम्म-कामेहिंतो । एत्थं **निज्जुत्तीगाहा—**

**गज्जं पज्जं गेतं चुण्णं च चउव्विहं तु गहियपदं ।**
**तिसमुट्ठाणं सव्वं इति बेंति सलक्खणा कइणो ॥ १९ ॥ ७६ ॥**

**गज्जं पज्जं गेतं०** ॥ १९ ॥ ७६ ॥ तत्थ गज्जं—

**मधुरं हेउनि[1]उत्तं गहितमपादं विरामसंजुत्तं ।**
**अपरिमियं चऽवसाणे कव्वं गज्जं ति णायव्वं ॥ २० ॥ ७७ ॥**

**मधुरं हेउ०** गाधा । **मधुरं** तिविहं सुत्त-अत्थ-अभिधाणविभागेण, **हेउनिउत्तं** जं सकारणं[2], **गहितं** रतितं, **अपादं** जं ण पादबद्धं, अत्थविरमणविरामजुत्तं, एवमाति गज्जं ॥ २० ॥ ७७ ॥

**पज्जं पि[3] होति तिविहं सममद्धसमं च णाम विसमं च ।**
**पाएहिं अक्खरेहि य एव विहण्णू कई बिंति ॥ २१ ॥ ७८ ॥**

**पज्जं पि होति तिविहं०** गाहा । पज्जं तिविहं, तं०—समं अद्धसमं विसममिति । तत्थ चउसु वि पादेसु समक्खर-विराममत्तं समं । जस्स पढम-ततिया बितिय-चउत्था य पादा समक्खर-विराम-मत्ता तं अद्धसमं । जस्स चत्तारि वि [ पादा ] विसमा तं विसमं ॥ २१ ॥ ७८ ॥ अधुणा गेयं, गिज्जति गेयं, तं पंचविहं—

**तंति[4]समं १ वण्णसमं २ तालसमं ३ गहसमं ४ लयसमं च ५ ।**
**कव्वं तु होइ गेयं पंचविहं [5]गेयसण्णाए ॥ २२ ॥ ७९ ॥**

**तंतिसमं०** गाहा । वीणादितंतिच्छेदेण तुलं **तंतिसमं** १ । **वण्णसमं** गादवादतो वण्णा जं सममापातिज्जंति २ । सव्वाओज्जविहाणे तालेण तुलं **तालसमं** ३ । आतोज्जगेयं पढमुक्खेवतुलं **गहसमं** ४ । कोणसमाहताण य तंतीए णहेणाणुमज्जणं लओ, तेण समाणं **लयसमं** ॥ २२ ॥ ७९ ॥

चुण्णपदमिदाणीं, तं बंभचेरादि । लक्खणे से इमा गाहा—

**अत्थबहुलं महत्थं हेउ-निवाओवसग्गगंभीरं ।**
**बहुपय[6]मव्वोच्छिन्नं गम-णयसुद्धं च चुण्णपदं ॥ २३ ॥ ८० ॥**

**अत्थबहुलं महत्थं०** । **अत्थबहुलं** जस्स पदं पदमणेगत्थं । **महत्थमिति** ते य अत्था अणेगणयवादागमगंभीर[7]तता महान्तः । **हेउ**[8]रवतेसो कारणं तेण जुत्तं कारणजुत्तं । **णिवाया** जहा—च वा अह एवमादयः । **उवसग्गा** पुण तं०—प्र परा एवमादतो वीसं । **बहुपदं** अपरिमितपदं । **अव्वोच्छिण्णं** अविरामं । गमेहिं णएहि य परिसुद्धं **गम-णयसुद्धं चुण्णपदं** ॥ २३ ॥ ८० ॥

---

१ °**निजुत्तं** वी० सा० ॥ २ **सभारणं** मूलादर्शे ॥ ३ तु खं० वी० सा० हाटी० ॥ ४ **तंतिसमं तालसमं वण्णसमं गहसमं** खं० वी० सा० हाटी० ॥ ५ **गीयस°** वी० सा० हाटी० ॥ ६ **बहुपायमवोच्छिण्णं** खं० वी० सा० वृद्ध० हाटी० । "बहुपादं णाम जहा सिलोगो" **वृद्ध०** । "बहुपादं अपरिमितपादम्" हाटी० ॥ ७ गम्भीरतया ॥ ८ हेतुः अपदेशः ॥

गहितं च गयं । समत्तं च णोअवराहपदं । अवराहपदं तु—

**इंदियविसय[1]कसाया परीसहा वेयणा[2] पमाता य ।**
**एए अवराहपया जत्थ विसीयंति दुम्मेहा ॥ २४ ॥ ८१ ॥**

**इंदियविस०** गाहा । **इंदियाणि[3]** सोतादीणि, तेसिं **विसता[4]** सद्दादतो, तेसु सद्दादिसु विसतेसु[5] इट्ठा-ऽणिट्ठेसु सोतादीहिं इंदिएहिं राग-दोसं गंतूण कोहादिसु **कसादेसु[6]** वट्टंतो । बावीसपरीसहेहिं उदिण्णेहिं । वेयणत्तो । **पमाता** मज्जादयो ॥ २४ ॥ ८१ ॥

एतेसु अवराहपदेसु एक्केक्कम्मि सीदंतो विसायं गच्छंतो **संकप्पस्स वसं गतो, संकप्पो** अभिज्झा यतो संभवति, कारणे कज्जोवयारेण संकप्पो, स पुण कामः । अपि च—

काम ! जानामि ते रूपं सङ्कल्पात् किल जायसे । न ते सङ्कल्पयिष्यामि ततो मे न भविष्यसि ॥ १ ॥
[ ]

तस्स वसंगतो संतो । **एत्थुदाहरणं—**

एक्को **खंतो** सपुत्तो पव्वइतो । सुट्ठु से इट्ठो चेलओ । सो सीतमाणो भणति—**खंत !** ण सक्केमि अणुवाहणो हिंडिउं । अणुकंपाए दिण्णाओ । सो भणति—उवरितला मे फुट्टंति । खस्सिताओ से कताओ । पुणो वि 'सीसं मे तप्पति' सीसदुवारतो से अणुण्णातो । 'न सक्केमि हिंडिउं' ति अच्छंतस्स आणेति । भूमिसयणं मंचकमुपहरति, लोयं खुरमुंडं करेति, अण्हाणए पाणककप्पकरणं, मधुरपाणक-कूर-कुसणं पयत्तेण गेण्हति । **खंतो** से वत्थुं वत्थुं समणुजाणति । अण्णदा भणति—ण सक्केमि **खंतो !** विणा अविरतिताए अच्छिउं । 'सद्धोऽतोऽजोगो' त्ति निच्छूढो करिसणादिकम्मं काउं अयाणंतो संखडिभोज्जे छणभत्ते अजिण्णं काउं मतो । विसयवसट्टमरणेण महिसो जातो वाहिज्जति । **खंतो** वि कालगतो देवो जातो ओहिणा आभोइत्ता पुव्वणेहेण तेसिं हत्थाओ किणिउं वेउव्वियभंडीए वाहेति । गुरुयभरमचाएंतं वोढुं तुत्तएणाबद्धुं भणति—ण तरामो **खंतो !** सक्खं हिंडिउं । एवं भूमिसयणं लोयं सव्वाणि उच्चारेति । एवंभणंतस्स 'कहिं एरिसमणुभूतं ?' ति ईहा-ऽपोहं करेंतस्स जातीसरणं समुप्पण्णं । भत्तं पच्चक्खातं । देवलोगं गतो ॥

एवं पदे पदे विसीदंतो संकप्पस्स वसं जाति ॥ १ ॥ एते दोस त्ति अट्ठारसण्हं सीलंगसहस्साणं रक्खणनिमित्तं एते अवराहपदे वज्जेज्ज । तेसिं पुण अत्थाणुगमो इमाए गाहाए, तं जहा—

**❀ जोगे करणे सण्णा इंदिय भोमादि समणधम्मे य ।**
**सीलंगसहस्साणं अट्ठारसगस्स उप्पत्ती ॥ २५ ॥ ८२ ॥**

**॥ सामण्णपुव्वगस्स णिज्जुत्ती सम्मत्ता ॥**

जोगो तिविहो—काओ वाया मणो । करणं तिविहं—कतं कारितं अणुमतं । सण्णातो चत्तारि—आहारसण्णा भयसण्णा मेहुण० परिग्गह० । इंदिया पंच—सोइंदियं चक्खुइंदियं घाणइंदियं जिब्भिंदियं फासिंदियं । भोमादि—पुढविकायसंजमो आउ० तेउ० वाउ० वणस्सति० बे० ते० च० पंचिं० अजीवकायसंजमो । दसविहो समणधम्मो, तं०—खंती मोत्ती अज्जवं मद्दवं लाघवं सच्चे तवे संजमे आकिंचणियं बंभचेरवासे । एसा परूवणा ।

एत्ताहे—तिण्णि जोगा तिहिं करणेहिं गुणिता जाता णव । णव चउहिं सण्णाहिं गुणिता जाता छत्तीसा । छत्तीसा पंचेंदिएहिं गुणिता जातं सतमसीतं । असीतं सतं भोमादीहिं दसहिं गुणितं जाताइं अट्ठारस सताइं । अट्ठारस सताणि दसविहो समणधम्मो त्ति दसएण गुणिताइं अट्ठारस सहस्साणि । एसा गुणणा ।

---

१ **कसाए परीसहे** वी० ॥ २ °**णा य उवसग्गा** खं० सा० वृद्ध० हाटी० । °**णा उवस्सग्गो** वी० ॥ ३ "इन्द्रियाणि-स्पर्शनादीनि, विषयाः-स्पर्शादयः, कषायाः-क्रोधादयः, इन्द्रियाणि चेत्यादि द्वन्द्वः ।" इति **हरिभद्र**पादाः ॥ ४ विषयाः शब्दादयः ॥ ५ विषयेषु ॥ ६ कषायेषु वर्तमानः ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमा उच्चारणा–काएण न करेमि आहारसण्णापडिविरतो सोइंदियसंवुडो पुढविकायसमारंभं खंतिसंपउत्तो, पढमो गमो। कायेण न करेमि आहारसण्णाविरओ सोइंदियसंवुडो पुढविसमारंभं मोत्तिसंपउत्तो वितितो। एतेण कमेण बंभचेरसंपउत्तो दसमो गमो। एते दस गमा पुढविकायसमारंभविरतीए, एवं आउकाएण दस, तेउ० वाउ० वणसति० बे० ते० च० पं० अजीवकायसंजमे दस, एमेयं सतं गमा। एणं सोइंदियसंवुडं अमुंचमाणेण लद्धं, चक्खिंदिए सतं, घाणे वि सतं, जिब्भाए सतं, फासे सतं। एयाणि पंच सताणि आहारसण्णापडिविरयं अमुंचमाणेण लद्धाणि, एवं भयसण्णाए वि पंच सताणि, मेहुणे पंच सताणि, परिग्गहे पंच सताणि। एताणि वीसं सताणि ण करेमि त्ति अमुंचमाणेण लद्धाणि, एवं ण कारवेमि त्ति वीसं सताणि, करेंतं ण समणुजाणामि त्ति वीसं सताणि। एवमेताणि छ सहस्साणि कायं अमुंचमाणेण लद्धाइं, वायाए वि छ सहस्साइं, मणेण वि छ सहस्साति। एवमेताइं अट्ठारस सीलंगसहस्साति भवंति ॥ २५ ॥ ८२ ॥

किं पुण कामभोगनिवारणमेव केवलं धम्मसाहणभावेणं उपयुज्यते? अह को वि विसेसो अत्थि? भण्णति–सवसस्स कामभोगपरिच्चाओ भवति साहणं, अवसस्स ण भवति। कथं तरहि ण भवति? उच्यते—

७. वत्थ-गंध-मलंकारं इत्थीतो सतणाणि य।
अच्छंदा जे ण भुंजंति ण से चागि त्ति वुच्चति ॥ २ ॥

७. **वत्थगंधमलंकारं०** सिलोगो। **वत्थाणि** खोम-दुगुलादीणि, **गंधा** कुंकुमा-ऽगरु-चंदणादतो, **अलंकारो** केस-वत्था-ऽऽभरणादि। **इत्थितो** नारितो। **सतणाणि** पल्लंकमातीणि। चकारेण इट्ठसद्दातिविसयपरिग्गहो। एते जहुद्दिट्ठा विसया **अच्छंदा जे न भुंजंति, अच्छंदा** अकामगा, **जे** इति उद्देसवयणं, **ण भुंजंति** ण उवजीवंति, **ण से** इति बहुवयणस्स त्थाणे एगवयणमादिट्ठं, **चागी** चयणसीलो इति, ते ण भण्णंति चागिणो जे ण भुंजंति अच्छंदा। एत्थ उदाहरणं **सुबुद्धी**—

**णंदे** निच्छूढे दारेण णिग्गच्छंते **चंदगुत्ते** पविसंते **णंदकण्णा चंदगुत्ते** साहिलासं दिट्ठिं देति, **चंदगुत्तो** वि तीए। **णंदो** भणति–किं पुत्ता! अभिलससि एतं?। आमं, जदि अणुजाणह। **णंदेण** सा भण्णति–गच्छ, जति ते एतम्मि अहिलासो। सा रहाओ ओरुहित्ता **चंदगुत्तरहं** विलग्गा। [ रहं विलग्गंतीए ] तीए रहस्स णव अरगा भग्गा। 'दुन्निमित्तं' ति **चंदगुत्तस्स** अद्धीती। **चाणक्को** भणति–मा अद्धितिं करेहि, णव पुरिसजुगे ते वंसो। **चंदगुत्तं** च विसेण भावेति। 'मा विसकतो पमादो होही'ति तस्स विसकतं भोयणं वट्टितं। देवीए आवण्णसत्ताए कवलो गहितो। 'मा गब्भो विणस्सिहिति' **चाणक्केण** फालेत्ता गब्भो नीणितो। आहारबिंदु मत्थए पडितो तं थाणं णीरोमं। **बिंदुसारो** से नामं कतं। **चंदगुत्ते** उवरते **बिंदुसारो** राया जातो। **णंदामच्चो सुबुद्धि** त्ति तेण राया विण्णवितो–जइ वि भट्टारका णिव्वच्छला तहा वि हितमुपदिसितव्वं, तुब्भ माता **चाणक्केण** मारिता। रण्णा धाती पुच्छिता 'होति' त्ति। अवियारियकारणो राया रुट्ठो आगयस्स दिट्ठी ण देति। **चाणक्केण** णातं–अहमवि गतायुसो। पुत्त-पोत्तादिकतधणसंविभागो चेतितायतणोवउत्तसव्वविभवो[1] जोगगंधे चीरिंगं च समुग्गकगतं चउमंजूसासंयुतमोव्वरए पक्खिप्पति, सुड्डइयं काउं अडविं गतो गोब्बरे पादोवगतो[2]। पुत्तादयो य से पव्वइता। राया विचारिए धातीए कहितसब्भावो 'मम रक्खणत्थ'मिति पसण्णचित्तो पुच्छति–कहिं **चाणक्को**?। 'निग्गओ' त्ति सिट्ठे गंतुं पसाएति। सो महासत्तो निच्चलो। पडिनियत्तं तं **सुबुद्धी** विण्णवेति–एतस्स पूयणीयस्स पूयं करेमि, समणुजाणह। 'तह' त्ति परिणिग्गते धूवलक्खेण इंगालं छुभति। तेण गोब्बराणुसरितेण दड्ढो **चाणक्को**। **सुबुद्धी** विण्णविए रायाणुमतो **चाणक्कघरमणुप्पविट्ठो** ओव्वरगं सुजड्डियं दट्ठुं चिंतेति–एत्थ सव्वस्सं। विग्घाडिते लोहसंकलाणिबद्धं ओव्वरगमणोसारितमंजूसं[3] तुट्ठो उग्घाडेति। तीसे मज्झे समुग्गकं वण्णगं च तत्थ दट्ठुं परमसुरभिगंधं समुक्खिप्पमाणचित्तो

१ चैत्यायतनोपयुक्तसर्वविभवः ॥ २ पादपोपगमनं नाम अनशनं कृतमित्यर्थः ॥ ३ अपवरकम् अनपसारितमजूषम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविचारियगुण-दोसो समग्घाति, चीरिगं च पेच्छेति वातेति य, तं पुण इमेण अत्थेण लिहितं–जो एतं चुण्णमग्घाति सो जइ [1]इत्थीसंपक्कमलंकारं विलेवणं च ण्हाणं गेयं मणुण्णं वा इत्थिं विसया वा सेवति तो मरति, केवलं कंजिय[भोय]गो पव्वतियसमायारो जावेति । सो भीतो [ अण्णं ] पुरिसं तं चुण्णगं [2]ओसिंघावेति, इट्ठे कामभोगे भुंजावेति परिक्खणनिमित्तं । मते तम्मि समुव्विग्गो अकामओ साहुचरियं चरति । ण सो साधू भवति चाती वा ॥ २ ॥ अकामस्स भोगपरिच्चातो जहा ण भवति धम्मसाहणं तं भणितं । जहा चाती भवति धम्मसाहओ य तं [3]विसेसंतेहिं भण्णति—

८. जे उ[4] कंते पिए भोए लद्धे विप्पिट्ठं[5] कुव्वति ।
साधीणे चयति [6]भोगी से हु चाति त्ति वुच्चति ॥ ३ ॥

८. **जे उ कंते पिए भोए०** सिलोगो । **जे** इति उद्देसवयणं, पागते **जे** एगे भवति । **तुसद्दो** विसेसणे, अच्छंदपरिच्चातितो उत्तरं विसेसेति । **कंता** सोभणा, **प्रिया** अभिप्रेता, **भोगा** इंदियविसया । कंत-प्रियविसेसो–कंता णाम एगे णो प्रिया चउभंगो, कंत इति सामण्णं सोभणत्तणं, प्रिय इति अभिप्रायकतं, किंचि अकंतमवि कस्सति साभिप्रायतो प्रियं । [7]जहा–"चतुहिं ठाणेहिं संते गुणे णासेज्जा, तं०–[8]रोसेणं पडिणिवेसेणं अकतण्णताए मिच्छत्ताभिणिवेसेणं" [ स्थानाङ्ग स्था० ४ उ० ४ सू० ३७० पत्र २८४-१ ] । **लद्धा** नाम संपत्ता । **विप्पिट्ठं कुव्वति** विविधं पच्छतो करेति–अवजाणति । **साधीणे** [9]अप्पाहीणे **चयति** वज्जयति **भोगी** भोगा जस्स [10]विज्जंति स भोगी । णणु जे लद्धा ते साहीणा एव, भण्णति–उप्पज्जमाणाणि पाण-भोयणादीणि [11]संततितं भुंजंति, जे [12]सप्पहाणा ते साहीणा, अहवा **साधीणे** [13]समंधिर्तिदिए पुरिसे णिद्दिसति, अबद्ध-रुद्धो नीरोगो । बितियं वा भोगग्गहणं संपुण्णभोगनिगमणत्थं, णिदरिसणं **भरह-जंबुणामादतो**, जहा ते समुदितं रिद्धिं [14]परिचियंता चातिणो, एवं जो चयति सो **चाती** ।

किं पुण जे **भरहादतो** महाभोगा ते एव चाइणो ? ण मंदविभवपव्वतिया ?, भण्णति–जे वि दमगपव्वतिया ते वि तिण्णि कोडीओ परिचयंति अग्गि-तोय-महिलापरिच्चातेणं । **निदरिसणं**—

**सुधम्मसामिणा रायगिहे** एगो **कट्ठहारओ** पव्वावितो । सो भिक्खं हिंडंतो लोगेण भण्णति–एस **कट्ठहारओ** पव्वतितो । सो भणति–[15]मंए अण्णत्थ णेह, ण सक्केमि अहियासेउं । आयरिएहिं **अभओ** पुच्छितो गमणस्स । भणति–मासकप्पपाओग्गं खेत्तं किण्ण एतं ? । ते भणंति–सेहनिमित्तं । **अभतो** भणति–अच्छह, अहं लोगं णिवारामि–त्ति ठिता । कल्लं तिण्णि कोडीओ ठवेत्ता 'दाणं दिज्जति' त्ति घोसावितं । लोगे आगते भणति–जो अग्गिं पाणितं महिलं च ण सेवति तस्स देमि । लोगो भणति–एतेहिं विणा किं धणेण ? । **अभओ** भणति–किं भणह 'दमओ' त्ति ?, जो वि णिरत्थितो पव्वयति सो वि तिण्णि कोडीओ छड्डेति । लोगो 'एवं सामि !' त्ति पत्तिओ ॥

तम्हा अत्थपरिहीणा वि धम्मे ठिता तिण्णि लोगसाराणि परिचयंता [16]चातिणो लभंति ॥ ३ ॥

तस्सेवं [17]चातसत्तिजुत्तस्स धम्मसाहणपरस्स [18]अपरिक्खीणरागासयत्तेण पहाणरागकारणइत्थीसु मणो सज्जेज्ज तन्निवारणत्थमिदं भण्णति—

९. [19]समाए पेहाए परिव्वयंतो, सिता मणो नीसरती बहिद्धा ।
ण सा महं णो वि अहं पि तीसे, इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥

---

१ स्त्रीसम्पर्कम् अलङ्कारम् ॥ २ प्रापयति ॥ ३ विशेषयद्भिः ॥ ४ य खं १-२-३-४ जे० शु० वृद्ध० हाटी० ॥ ५ **विप्पिट्ठि-कु°** खं १-२-३-४ जे० शु० वृद्ध० हाटी० ॥ ६ **भोए** खं १-२-३-४ जे० शु० वृद्ध० हाटी० ॥ ७ **जहा य तहिं ठाणेहिं** मूलादर्शे ॥ ८ **कोहेणं पडिनिवेसेणं अकयण्णुयाए** इति स्थानाङ्गे पाठः ॥ ९ आत्माधीनान् ॥ १० **विज्जंति आभागी** मूलादर्शे ॥ ११ स्वतन्त्रितं स्वातन्त्र्येणेत्यर्थः ॥ १२ स्वप्रधानाः स्वः प्रधानो यत्र एवंविधा इत्यर्थः ॥ १३ समाहितेन्द्रियः ॥ १४ **परिभयंता** मूलादर्शे ॥ १५ माम् ॥ १६ त्यागिनः ॥ १७ त्यागशक्तियुक्तस्य ॥ १८ अपरिक्षीणरागाशयत्वेन ॥ १९ **समाय पे°** अचूपा० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. **समाए पेहाए परिव्वयंतो॰** सिलोगो । **समा** राग-दोसविरहिता, **पेहा** चिंता, समंतादसंजमातो णियत्तंतस्स **समाए पेहाए परिव्वयंतो**, वृत्तभङ्गभयादलक्खणो[1] अणुस्सारो । **अहवा "समाय" समो** संजमो तदत्थं, **पेहा** प्रेक्षा, **परिव्वयंतो** तहेव । तस्सेवंविहारिणो **सिता मणो नीसरई बहिद्धा ।** अहवा तदेव मणोऽभिसंबज्झति–**समाए पेहाए परिव्वयंतो सिया मणो णीसरति बहिद्धा, सिया**[2]सद्दो आसंकावादी 'जति' एतम्मि अत्थे वट्टति, **मणो** चित्तं **निस्सरति** निग्गच्छति **बहिद्धा** ण अंतो संजमस्स अच्छति, भुत्ताऽभुत्तभोगाण सरण[3]-कोउहल्लाओ । तस्स नियत्तणे **उदाहरणं**—

एगस्स **रायपुत्तस्स** सइर[4]मभिरमंतस्स समीवेण दासी जलघडेण गच्छति । तेण से गोडीए[5] घडो भिण्णो । अद्धितिलद्धं दट्ठुं पुणरावत्ती जाता, चिंतेति—

रक्खंति अप्पमत्ता जति ण पमाणत्थिता पमाणाइं । वयणाणि ताणि पच्छा काही को वा पमाणाइं ? ॥ १ ॥

तं पुणो चिक्खल्लगोलीए ठएति ॥

एवं मणोनिग्गमणं संजमोदगरक्खणाइं सुहसंकप्पेण ठएतव्वं । तं इमेण विवेगालंबणेण–**ण सा महं णो वि अहं पि तीसे,** णकारो पडिसेहे, **सा** इति जतो मणोणिस्सरणं ण सा इति, "णालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमं पि तेसिं णालं ताणाए वा सरणाए वा" [ आचाराङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० १ सूत्र २ ] एत्थ **उदाहरणं**—

**एक्को वाणियदारतो** लद्धं कण्णं मोत्तुं पव्वतिओ । सो ओहाणुपेही[6]भूतो इमं पढति–**न सा महं नो वि अहं पि तीसे ।** सो चिंतेति–सा मम अहमवि तीसे, उभयमिदमणुरत्तं परोप्परं, तं कहं छड्डेहामि ? त्ति गिहीं[या]यारभंड-णेवच्छेण[7] गतो जत्थ सा णिव्वाणतडं[8] संपत्ता । सा य पाणितस्स[9] तहिं गतिता, साविगा य सा पव्वइउकामा । ताए णातो । सो ण याणइ । पुच्छिया सा–अमुगस्स धूता किं मंता[10] ? सधरा ? । [सो] चिंतेति–जइ सधरा तो उप्पव्वतिस्सामि[11] । ताए णातो अभिप्पातो[12] । 'मा दो वि संसारे पडीहामो' त्ति चिंतेऊण भणति–सा अण्णस्स दिण्णा । सो चिंतेति–सच्चं गुरूहिं पाढितो हं–**ण सा महं णो वि अहं पि तीसे ।** संवेगमावण्णो, णियत्ता मती । तीए पुणो णाताभिप्पायाए अणुसासितो–जहा अणिच्चं जीवितं कामभोगा य । एवमणुसट्ठो जाणावितो पडिगतो गुरुसकासं, पव्वज्जाए थिरीभूतो ॥

एवमप्पा वारेतव्वो–**इच्चेव ताओ विणएज्ज,** इति एवं **इच्चेवं, इति** सद्दो प्रकारे वट्टति, **एवमणेगेहिं** प्रकारेहिं असदभिप्राये सम्भूते **विणएज्ज** विविहेहिं प्रकारेहिं णीतं विणीतं वसीकतमिति ॥ ४ ॥

अब्भिंतरकरणविणयमुपदिट्ठं । इदं तु अब्भितरएण चोदिता चेट्ठा पवत्तइ त्ति बाहिरकरणविणयमुपदिस्सति—

**१०. आतावयाहि चय सोउमल्लं[13], कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं ।**
**छिंदाहि[14] रागं विणएहि दोसं, एवं सुही होहिसि संपराए ॥ ५ ॥**

१०. **आतावयाहि चय॰** सिलोगो । गुरवो आणविंति–वच्छ ! जइ मणो बहिता[15] णिस्सरति ततो इदमवि विणयणं–**आतावयाहि,** उड्ढं बाहाओ पगिज्झित[16] सूराभिमुहो सरीरसंतावेण कम्माणि वि **आयावयाहि** । आयावणं कायक्केसो, बाहिरंगस्स तवस्स चरिमविहाणं, बारसविहस्स वि तवस्स मज्झं, मज्झोपादाणेणं[17] डंड इव सव्वो तवो घेप्पति, तवं संतितो करेहि । **जहि** णिण्णासेहि हण, सुकुमालभावो **सोउमल्लं,** सुकुमालो अभिलसति अभिलसिज्जति

१ अत्रायमाशयः—'परिव्वयंतो' इति सानुस्वारः पाठोऽलाक्षणिकश्छंदोभङ्गपरिहारार्थमेव । 'परिव्वयतो' परिव्रजत इत्यर्थः ॥ २ सियाशब्दः आशङ्कावाची 'यदि' एतस्मिन् अर्थे वर्तते ॥ ३ स्मरण-कुतूहलाभ्याम् ॥ ४ स्वैरम् ॥ ५ मृद्गुटिकया इत्यर्थः, "गलोलो" इति लोकभाषायाम् ॥ ६ अवधावनानुप्रेक्षीभूतः–प्रव्रज्यां त्यक्तुकामः ॥ ७ गृहीताचारभाण्डनेपथ्येन ॥ ८ निपानतटम् ॥ ९ पानीयार्थं तत्र गता ॥ १० मृता संभृता ॥ ११ उत्प्रव्रजिष्यामि ॥ १२ अभिप्रायः ॥ १३ **सोगुमल्लं** खं ४ शु० । **सोगमल्लं** खं १-२-३ वं ४ वृद्ध० हाटी० । **सोयमल्लं** जे० ॥ १४ **छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं एवं** खं १-२-३-४ जे० शु० वृद्ध० हाटी० ॥ १५ बहिः । **बद्धिता** मूलादर्शे ॥ १६ प्रगृह्य ॥ १७ **मज्झे पादाणेणं डंडइयसत्थो तवो** मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य । **कामे कमाहि** तपसा अप्पसत्थिच्छाकामा मयणकामा य **कमाहि** अतियाहि वोलेहि । ते कमितुं किं फलं ? भणति–**कमियं खु दुक्खं**, कामेहि अतिक्कंतेहिं संसारे दुक्खं वोलीणमेव भवति । **खु** इति अवधारणसद्दो, कमितमेव । एतेण अब्भिंतर-बाहिरकरणजएण **छिंदाहि रागं विणएहि दोसं**, इट्ठा-ऽणिट्ठविसयगता राग-दोसा संसारबीजमिति । उत्तं च–

रागो द्वेषश्च मोहश्च यथान्धमिह मानवम् । कामतो विप्रकर्षन्ति शब्दादिप्रविलोभितम् ॥ १ ॥
[ ]

राग-दोसजयफलमिदं–**एवं सुही होहिसि संपराए**, **एवं** एतेण विहिणा सुहं जस्स अत्थि सो **सुही** छिण्णसंसयं सव्वं सुवयणं **होहिसि, संपराओ** संसारो, जेण संपराइयं कम्मं भणति, संपराए वि दुक्खबहुले देव-मणुस्सेसु सुही भविस्ससि, जुद्धं वा संपराओ बावीसपरीसहोवसग्गजुद्धलद्धविजतो परमसुही भविस्ससि । उद्देसगादीतो तिण्हं सिलोगाणं उवरि उपेन्द्रवज्रोपजातीन्द्रवज्रायुगलकम्, परतो सिलोगा एव ॥ ५ ॥

तं अब्भिंतर-बाहिरकरणविणयणं ण विणा ववसाएणं ति ववसायथिरीकरणत्थं भणति–

११. पक्खंदे जलियं जोतिं धूमकेतुं दुरासदं ।
णेच्छंति वंतगं भोत्तुं कुले जाया अगंधणे ॥ ६ ॥

११. **पक्खंदे जलियं०** सिलोगो । भिसं आदितो वा खंदे **पक्खंदे**युरित्यर्थः, **जलियं** अतिप्पदित्तं **जोतिं** अग्गिं **धूमकेतुं** धूमद्धयं । सव्वहा एस अग्गि त्ति कहं पुण ण पुणरुत्तं ? भणति–**जलित**मिति ण मुम्मुरभूतं, **जोति**मिति परासणसमत्थमवि ण हंतलोहपिंडादि, **धूमकेतु**मिति णक्खत्ताणि वि जोतीणि भण्णंति तेसिं विसेसणत्थं[1], उप्पादे वा आयुधातीणि णिद्धूमाणि जलंति तेसिं वा, अतो सव्वं भण्णति । **दुरासयं** डाहकत्तणेण दुक्खं समस्सतिज्जति[2] तं दुरासदमवि पक्खंदेयुः । ण य **वंतं** पुणो [ **भोत्तुं** ] [3]आपिबिउ**मिच्छंति कुले जाता अगंधणे**, गंधणा अगंधणा य सप्पा, गंधणा हीणा, अगंधणा उत्तमा, ते डंकातो विसं न पिबंति मरंता वि । किंच–

**सुलसा**गब्भप्पसवा कुलमाणसमुण्णता भुयंगमणाहा ।
रोसवसविप्पमुक्कं ण पिबंति विसं विसायवज्जितसीला ॥ १ ॥
[ ]

एत्थ **दुमपुप्फिया**भणितमुदाहरणं पच्चवलोएतव्वं[4] [ नि० गा० २५ पत्र २१-२२ ] । जहा एसो अग्गिं पविट्ठो, ण य पीतं सेविसं[5], एवं साहुणा वि चिंतेतव्वं । जदि ताव ते अविदितविपाका माणावलंबिणो मरणं ववसंति ण य पिबंति, किं पुण साहुणा परिचत्तकामभोगविपागजाणएणं ? । तम्हा जीवियंचए[6] वि विवज्जिता कामा णाभिलसितव्वा ॥ ६ ॥ किंच–

एक्कं पंडियमरणं छिंदइ जाईसयाइं बहुयाति । तं मरणं मरितव्वं जेण मतो सुम्मतो होति ॥ १ ॥
[ मरण० गा० २४५ ]

“ववसायसाहणो धम्मो” त्ति तस्स दढीकरणत्थं भणितं–“**णेच्छंति वंतगं भोत्तुं**” अण्णावदेसोऽयम्, इदं तु सम्मुहं णिट्ठुरमणुसासणं–**धिरत्थु ते जसो०** । अहवा “**णेच्छंति वंतगं भोत्तुं**” एत्थं **वृत्तिगत**मुदाहरणं, इदं सुत्तगतमेव–

१२. धिरत्थु ते जसोकामी जो तं जीवितकारणा ।
वंतं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥

---

१ विशेषणार्थं विश्लेषणार्थमिति वा योऽर्थः ॥ २ समाश्रीयते ॥ ३ आपातुम् ॥ ४ प्रत्यवलोकयितव्यम् ॥ ५ स्वविषम् ॥ ६ जीविताशयेऽपि ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. **धिरत्थु ते०** सिलोगो । **अरिट्ठणेमिसामिणो** भाया **रहणेमी** [1]भट्टारे पव्वइते **रायमतिं** आराहेति 'जति इच्छेज्ज' । सा निव्विण्णकामभोगा तस्स विदिताभिप्पाया कल्लं मधु-घयसंजुत्तं पेज्जं पिबिंते आगते कुमारे मदणफलं मुहे पक्खिप्प पात्रीए छड्डेतुमुवणिमंतेति–पिबसि पेज्जं ? । तेण पडिवण्णे वंतमुवणयति । तेण 'किमिदं ?' इति भणिते भणति–इदमवि एवंप्रकारमेव, भावतो हं भगवता परिचत्त त्ति वन्ता, अतो तुज्झ मामभिलसंतस्स **धिरत्थु ते जसोकामी** जसं कामयतीति जसोकामी खत्तिया एवंपहाणा, **धिक्** णिंदासद्दो, **अत्थु** भवतु, **ते** इति तव । **अहवा "धिरत्थु ते अजसो०"** "एदोत्पर" [ कातन्त्र० १. २. १७ ] इति अकारलोपः, एतेणं कम्मुणा अजसोकामी **जो तं** पुव्वेण सङ्कच्छावेति **जीवितकारणा** जीवितनिमित्तं कुसग्गजलचंचलस्स जीवितस्स कारणा भाउणा परिचत्तं मए भोत्तुमिच्छसि, एवंगयस्स **सेयं ते मरणं** । एवं संबोहितो पव्वइतो । **रायीमती** वि पव्वतिया ॥ ७ ॥

धितिपरूवणप्पकरणे कुलववदेसो परमं महग्घताकारणमिति सेव भगवती **रातीमती** के ति कारणेण विसीयमाणं कुमारमाह–**अहं च भोगरातिस्स०** । कयाति **रहणेमी बारवतीतो** भिक्खं हिंडिऊण ग्गामिसगासमागच्छंतो वद्दलाहतो एगं गुहमणुपविट्ठो । **रातीमती** य भगवंतमभिवंदिऊण [4]सं लयणं गच्छंती 'वासमुव ातं' ति तामेव गुहामुवगता । तं पुव्वपविट्ठमपेक्खमाणी उदओल्लुमुं[5]परिवित्थं णिप्पिलेउं विसारेती विवसणोपरिसरीरा दिट्ठा कुमारेण, वियलियधिती जातो । सा हु भगवती सुनिच्चलसत्ता तं दट्ठुं तस्स वंसकित्तिकित्तणेण संजमे धीतिसमुप्पायणत्थमाह—

१३. अहं च भोग[6]रातिस्स तं च सि अंधगवण्हिणो ।
मा कुले गंधणा होमो संजमं णिहुओ चर ॥ ८ ॥

१३. **अहं च भोगराति०** सिलोगो । **भोया** इति **हरिवंसे** चेव गोत्तविसेसो, तेसिं भोयाणं राया **भोयराया** भोय**उग्गसेणो** तस्स **अहं** दुहिया । तुमं **च अंधगवण्हिणो** कुलसमुप्पण्णो महाराय**समुद्दविजयस्स** पुत्तो **सिवादेवी**गब्भसंभवो । ते वयमगंधणे **कुले** जाता **मा गंधणा** भवामो । सा सप्पक्खाणयं तस्स कहेति, भणति य–जहा वंतविसप्पाणं तहा सव्वभावपरिचत्ताण भोयाणं अभिलसणं । **कुले गंधणा** कुलपसूता असदाचारचरितेण मा कुलफंसणा भवामो । सव्वारतिनिवारणं **संजमं निहुओ चर** ॥ ८ ॥

अहुणा अप्पणो असंबंधमुद्धाविंती दिट्ठंतेण य पुव्वमत्थमाविब्भाविंती **रातीमती** भगवती भणति —

१४. जति तं काहिसि भावं जा जा [9]दच्छसि णारीतो ।
वाताइद्धो व्व हढो अट्ठितप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥

१४. **जति तं काहिसि०** सिलोगो । **जदि**सद्दो अणब्भुवगमे, **तुम**मिति तस्स निद्देसो, **काहिसि** करिस्ससि, **भावो** [10]अभिसंगो, **जा जा** इति वीप्सा, **दच्छसि** पेच्छिहिसि, **णारीतो** इत्थितो, तो **वाताइद्धो व्व हढो अट्ठितप्पा भविस्ससि**, जलरुहो वणस्सतिविसेसो अणाबद्धमूलो हढो, सो [11]वाएरितो इतो ततो य जाति ण य पुप्फ-फलसमिद्धिं पावेति, तहा तुमं पि नारिदरिसणे जदि तासु भावं करिस्ससि ततो अप्पतिट्ठितमहव्वतमूलो केवलं लिंगधारी अणुवलद्धसामण्णफलो भविस्ससि ॥ ९ ॥

धीतिसमालंबणमुपणेत्ता **रातीमती**वयणसाफल्लं च दरिसेंता गुरवो आणविंति—

१५. तीसे सो वयणं सोच्चा संजताए [12]सुभासितं ।
अंकुसेण जहा णागो धम्मे संपडिवातितो ॥ १० ॥

---

१ भट्टारके श्री**नेमिनाथ**भगवति ॥ २ पीत्वा ॥ ३ राजीमती ॥ ४ स्वं लयनम् ॥ ५ °**मुपडिवित्थं** मूलादर्शे । उदकार्द्रमुपरिवस्त्रम् ॥ ६ °**राइस्स** खं १–३–४ । °**रायस्स** खं २ जे० शु० ॥ ७ सर्पाख्यानकम् ॥ ८ वान्तविषयानम् ॥ ९ **दच्छिसि** खं १–२–३ शु० ॥ १० अभिष्वङ्गः ॥ ११ वातेरितः–पवनप्रेरितः ॥ १२ **सुहासियं** खं २ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**१५. तीसे सो वयणं०** सिलोगो। तस्सद्देण अणंतरपत्थुतं संबज्झति, **तीसे रातीमतीते, स** इति **रहनेमी, वयणं** जं तीए सोदाहरणमुपदिट्ठं, तं सोऊण **संजताए** त्ति जं सा अच्चंतमविकारा, **सुभासितं** सोभणं भासितं एतदेव, अहवा अण्णेहि वि सुभासितेहिं समुपगूढं एतं सुट्ठु सदिट्ठंतं घेप्पति त्ति भण्णति–**अंकुसेण जहा णागो। उदाहरणं—**

**वसंतपुरे** इब्भवहुया णदीए ण्हाति। तं दट्ठूण एगो जुवाणगो भणति—

सुण्हातं ते पुच्छति एस णदी पँवरवारणकरोरू!। एते य णदीरुक्खा अहं च पाएसु ते पणतो॥ १॥

सा पडिभणति—

सुभगा होंतु णदीओ चिरं च जीवन्तु जे णदीरुक्खा। सुण्हायपुच्छगाणं घत्तीहामो पियं काउं॥ १॥

सो तीसे घरमजाणंतो बितिज्जगाणि से चेडरूवाणि पुप्फ-फलत्थीणि रुक्खे पलोएंति तेसिं ताणि दातुं णाम-संबंध-बार-साहीहिं पुच्छति। णाते विरहमलभमाणो परिव्वातियं आराहेऊण दूतिं पेसेति। सा तीए रुट्ठाए पैत्तुलकाणि धोवेंतीए मसिलित्तेण हत्थेण पँट्ठे तहा हता जेण पंचंगुलयं जातं, अवद्दारेण निच्छूढा। जहावत्ते कहिते विडेण णातं–कालपंचमीए पविसितव्वं। तहा पविट्ठो। **असोगवणियाए** मिलिताणि पसुत्ताणि ससुरेण दिट्ठाणि। णातं–परपुरिसो। तीसे पादाओ णेउरं हरितं। चेतितं तीए, सो भणितो–लहुं णस्साहि, सहायत्तं करेज्जासि। गंतुं पतिं भणति–घम्मो, **असोगवणियं** जामो। गताणि। सुत्तं पतिं उट्ठावेत्ता भणति–तुब्भं एयं कुलाणुरूवं? पिया ते मम पायातो णेउरं एस णेति। सो भणति–किं कीरउ?। पभाए थेरेण सिट्ठे रुट्ठो भणति–विवरीओ सि। थेरो भणति–अण्णो मए दिट्ठो। विवाए सा भणति–अहं अप्पाणं सोहेमि त्ति। कतोववासा ण्हाता जक्खघरं जाति। सो णं धुत्तो पिसातो होऊणं अँवयासेति जक्खस्स अंतरंतेण गम्मति। जो कारी सो लग्गति। सा तं पुरतो ठिता भणति–माता-पितीदिण्णं एतं च पिसायं मोत्तूण जहा परपुरिसं ण जाणेमि तहा पारं देज्जासि। ताहे जक्खो विलक्खु चिंतेति–पेच्छह, केरिसाइं मंतेति? अहगं पि वंचितो एतीए, णत्थि सतित्तणं खु धुत्तीए। [ताव] सा निग्गता। थेरो सव्वलोएण हीलितो। अद्धिईए से निद्दा नट्ठा। रण्णा कण्णं गते सद्दितो अंतेउरवालो कतो। अभिसेक्कं हत्थिरयणं घरस्स हेट्ठा बद्धं। एगा देवी हत्थिमेंठेण सह, रत्तिं हत्थिणा करो गवक्खंतेण पसारितो, देवी ओयारिता। 'चिरस्स आगत' त्ति मेंठेण कुविएण हत्थिसंकलाए हता सा भणति–सो चिरस्स सुत्तो, मा रुस। तं थेरो पेच्छति, चिंतेति–जति एयाओ वि एरिसियाओ, ताओ अतिभद्दियाओ। सुत्तो। पभाए उट्ठिए वि लोए ण उट्ठेति। रण्णो निवेदितं, भणति–सुवतु। चिरस्स उट्ठितो। पुच्छिएण कहितं जहावत्तं, 'न जाणामि कतरा?' ति। रण्णा भेंडमैतो हत्थि कतो, अंतेउरियाओ भणियाओ–एयस्स अच्चणियं करेंता ओलंडेह। सव्वाहिं कतं। सा णेच्छति, भणति–बीहेमि। रण्णा उप्पलणालेण आहता मुच्छिता। णातं–एसा। भणिता य—

मत्तं गयमारुहंतिए!, भेंडमतस्स गतस्स भायसी?।
इह मुच्छित उप्पलाहता, तत्थ ण मुच्छित संकलाहता?॥ १॥

संकलापहारो दिट्ठो। सा मेंठो य हत्थिं विलएतुं छिण्णकडए पडणं प्रति मेंठो भणितो–हत्थिं वाहेहि। वेलुग्गाहाहिट्ठितं चोदेति। जाव एगो पातो आगासे धरितो, तिहिं ठितो। 'चोदेहे'त्ति बितिओ वि। लोगो भणति–को एतस्स तिरियस्स दोसो? एताणि मारेयव्वाणि। राया रोसं न मुयति। जाव तिण्णि पाया आगासे, एगेण ठितो। लोएण अक्कंदियं–किं एयं रयणं विणासेहि?। पँडिआगते चित्ते भणति–तरसि णियत्तेउं?। भणति–जदि दोण्ह वि अभयं देह। दिण्णो। **अंकुसेण नियत्तितो जहा णागो,** मेंठेण तं आवत्तिं पावितो एरिसे ठाणे अंकुसेण छित्तो जहा खिप्पामेव पाँदमवट्ठब्भ सरीरमुविहिऊण चतुहिं वि पाएहिं भूमीए ठितो॥

---

१ **पउरसोहियतरंगा** वृद्ध०॥ २ परिव्राजिकाम्॥ ३ पात्राणि भाजनानीत्यर्थः॥ ४ पृष्ठौ॥ ५ ज्ञातमित्यर्थः॥ ६ आश्लिष्यति॥ ७ भेंडमतो रूतमयः मृण्मयो वा॥ ८ उल्लङ्घयत॥ ९ बिभेमि॥ १० प्रत्यागते वलिते शान्ते इत्यर्थः॥ ११ पादमवष्टभ्य॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं **रहणेमी रायीमईए** संसारुव्वेगकरणेहिं वयणेहिं तधाऽणुसासितो जहा सुगतिं संपावते, **धम्मे सम्मं** [ पडिवातितो ] **संपडिवातितो** ॥ १० ॥

धितिउपदेसप्रकरणस्स संहरितपतिण्णा-हेऊदाहरणोपणयस्स णिगमणमिदमुच्यते—

१६. एवं करेंति [1]संपण्णा पंडिता पवियक्खणा ।
विणियट्टंति [2]भोगेहिं जहा से [3]पुरिसुत्तिमे ॥ ११ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ [4]सामण्णपुव्वगज्झयणं सम्मत्तं ॥

**१६. एवं करेंति संपण्णा०** सिलोगो । एवंसद्दो प्रकारवयणे । **एवं करेंति** एतेण प्रकारेण करेंति । पण्णा-बुद्धी, सह पण्णाए **संपण्णा** सद्बुद्धयः । **पंडिता** विदुसा । **पवियक्खणा** पटवः । संपण्णा पंडिता पवियक्खणा तुल्ल त्ति चोदणा । समाधिरयम्-संपण्णा इति कम्मण्णता दरिसिता, पंडिता इति सा बुद्धिपरिकम्मिता जेसिं ते, पवियक्खणा वायाए वि परिग्गाहणसमत्था । **केति पढंति–"एवं करेंति संबुद्धा पंडिता"** सोभणं बुद्धा, पंडिता पवियक्खणाऽभिहिता । **विणियट्टंति भोगेहिं** विसेसेण महव्वतधारणेण णियट्टंति भोगेहिंतो, एसा पंचमी । **जहा से पुरिसुत्तिमे** त्ति जेण प्रकारेण **जहा, से** इति अणंतरमुदाहरणत्तेण **रहणेमी** पत्थुओ सो जि संबज्झति, पुरिसाण उत्तिमो **पुरिसोत्तिमो** रायरिसी सो भगवं ॥ ११ ॥

**इति** सद्दो अणेगहा, इह तु परिसमत्तिविसओ, अहवा एवमत्थो, एवमिति **बेमि** ब्रवीमि । **सेज्जंभवस्स** वयणमिदं-भगवता सव्वविदा उपदिट्ठमहमवि बेमि ॥ णता—

**णातम्मि०** गाहा । **सव्वेसिं पि णयाणं०** । जहा **सामातिए** ॥

॥ **सामण्णपुव्वगस्स अत्थलेसो समत्तो** ॥

**अविसीदणोवदेसो सकामकामविणितत्तणं मणसो । राग-दोसविणयणं सोहताहरणउज्झयणे(?)** ॥ १ ॥

---

[1] **संबुद्धा** पं° खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी० अचूपा० । **संपण्णा** पं° वृद्ध० ॥ [2] **भोगेसु** खं १-२-३-४ जे० शु० ॥ [3] **पुरिसोत्तिमे** खं १-३-४ अचूपा० । **पुरिसोत्तमो** खं २ जे० शु० ॥ [4] **कहसु कुड्डा अज्झयणं सम्मत्तं** खं १ । आदर्शान्तरेषु पुष्पिकैव न वर्तते ॥

## ३

## [ तइयं खुड्डियायारकहज्झयणं ]

धम्मसाहणमुत्तमं धिति त्ति धम्मपसंसाणंतरं धितिपरूवणं कतं । इदाणिं तु विसेसो णियमिज्जति–सा धिती आयारे करणीय त्ति **खुड्डियायारकहा**भिसंबंधो । एवमत्थसंबंधक्कमागतस्स **खुड्डियायारगस्स** चत्तारि अणिओगद्दारा जहा **आवस्सए** । नामनिप्फण्णो खुड्डियायारकह त्ति, तिपयं णाम । खुड्डिय त्ति आवेक्खिकमिदं, महती अवेक्ख भवति, सा पुण **आयारप्पणिही** महती आयारकहा भण्णिहिति, तम्हा खुड्डगं निक्खिवितव्वं, आयारो निक्खिवितव्वो, कहा निक्खिवितव्वा । खुड्डगस्स पढमं निक्खेवो, तं महंतं पडुच्च संभवति त्ति महंतमेव परूवेतव्वं, तं महंतं अट्ठविहं—

**णामं १ ठवणा २ दविए ३ खेत्ते ४ काले ५ पहाण ६ पइ ७ भावे ८ ।**
**एएसि महंताणं पडिवक्खे खुड्डता[1] होंति[2] ॥ १ ॥ ८३ ॥**

**णामं ठवणा०** गाहा । णाम-ठवणातो गतातो १।२ । दव्वमहंतं अचित्तमहाखंधो, सो सुहुमपरिणताणं अणंताणं अणंतपदेसियाणं खंधाणं तब्भावपरिणामेणं लोगं पूरेति । जहा केवलिसमुग्घातो डंडं कवाडं मंथं अंतराणि चउत्थे समये पूरेति, एवं सो वि चउत्थे समये सव्वं लोगं पूरेत्ता पडिणियत्तति, एतं दव्वमहंतकं ३ । खेत्तमहंतं सव्वागासं ४ । कालमहंतं सव्वद्धा ५ । पहाणमहंतं तिविहं–सचित्तं अचित्तं मीसकं । तत्थ सचित्तं तिविहं–दुपदं चउप्पदं अपदं । दुपदाणं पहाणो तित्थकरो, चउप्पदाणं हत्थी, अपदाणं अरविंदं । अचित्ताणं वेरुलितो । मीसकाणं भगवं तित्थकरो सविभूसणो ६ । पडुच्चमहंतं आमलगं प्रति बिल्लं महंतं एवमादि ७ । भावमहंतं तिविहं–पाहण्णतो कालतो आसयओ । पाहण्णओ खातितो भावो महंतो । कालतो परिणामितो, जं जीवदव्वमजीवदव्वं वा सता तहा-परिणामि । आसयतो ओदतितो भावो, तम्मि भावे बहुतरा जीवा वट्टंति ८ । महंतं गतं ।

तस्स **पडिपक्खे खुड्डतं** निक्खिवितव्वं, तं अट्ठविहमेव । णाम-ट्ठवणातो गतातो १।२। दव्वखुड्डतं परमाणु ३ । खेत्तखुड्डयं आगासपदेसो ४ । कालखुड्डयं समतो ५ । पहाणखुड्डयं तिविहं–सचित्तं अचित्तं मीसगं । सचित्तं तिविहं–दुपतं चउप्पतं अपतं । दुपदाणं पंचण्ह सरीराणं आहारकं, चतुप्पदाणं [ सीहो, अपदाणं ] लवंग-कुसुमं । अचित्ताणं वइरं । मीसगाणं तित्थकरो जम्माभिसेगालंकारसहितो ६ । पडुच्चखुड्डयं आमलगातो सरिसवो ७ । भावखुड्डयं सव्वत्थोवा जीवा उवसमिए भावे वट्टंति त्ति ओवसमिओ भावो ८॥१॥८३॥ आयार इति दारं—

**पंतिखुड्डएण[3] पगतं आयारस्स तु चतुक्क णिक्खेवो ।**
**णामं १ ठवणा २ दविए ३ भावायारे य ४ बोद्धव्वे ॥ २ ॥ ८४ ॥**

**पतिखुड्डएण पगतं०** गाहा । सो आयारो चउव्विहो । नाम-ठवणातो गतातो । दव्वायारो[4] जहा दव्वमायरति परिणमति तं तं भावं ॥ २ ॥ ८४ ॥ दव्वायारो इमाए गाहाए अणुगंतव्वो—

**णामण १ होवॅण[5] २ वासण ३ सिक्खावण ४ सुकरणा ५ ऽविरोहीणि ६ ।**
**दव्वाणि जाणि लोए दव्वायारं वियाणाहि ३ ॥ ३ ॥ ८५ ॥**

**णामणहोवण०** गाहा । **णामणं** पडुच्च दुविहं दव्वं—आयारमंतं अणायारमंतं च । णामणायारमंतं दव्वं

---

१ खुड्डला खं० । खुड्डगा पु० । खुड्डया वी० सा० ॥ २ हुंति पु० ॥ ३ पइखु° खं० पु० सा० । पयखु° वी० ॥
४ "तत्थ दव्वायारो णाम जहा दव्वं आयरइ, आयरइ णाम आयरयति त्ति वा तं तं भावं गच्छति त्ति वा आयरइ त्ति वा एगट्ठं ।" इति-वृद्धविवरणे ॥ ५ °धोवण° खं० पु० वी० सा० ॥



Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

तिणिसो णामणेण ण भज्जति, अणायारमंतं एरंडो सो भजेज्ज ण य णमेज्जा १ । **धोवणे** आयारमंतं हलिद्दारत्तं धोव्वंतं सुज्झति त्ति, किमिरागमंतं ण सुज्झति त्ति अणायारमंतं २ । **वासणे** त्ति दारं—वासणे आयारमंतीतो कवेल्लुताओ पाडलादीहिं वासिज्जंति, अणायारमंतं वइरं ण वासिज्जति त्ति ३ । **सिक्खावण** त्ति दारं—तत्थ आयारमंताणि सुक-सारिकादीणि, अणायारमंता काकादतो ४ । **सुकरणे** त्ति दारं—इच्छितरूवणिव्वैत्तकाति सुवण्णादीणि सुकरणायारवंति, घंटालोहादीणि अणायारमंति ५ । **अविरोधि** त्ति दारं—तदाचारवंति खीर-सक्करादीणि समतुलितमधु-घतादीणि, [ तेल्ल-दुद्धाणि ] अणायारवंति ६ । एस दव्वायारो ३ ॥ ३ ॥ ८५ ॥ भावायारो—

**दंसण १ नाण २ चरित्ते ३ तवआयारे य ४ वीरियायारे ५ ।**
**एसो भावायारो पंचविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ ८६ ॥**

**दंसण नाण चरित्ते०** गाहा । भावायारो पंचविहो, तं जहा—दंसणायारो १ नाणायारो २ चरित्तायारो ३ तवायारो ४ वीरियायारो ५ ॥ ४ ॥ ८६ ॥ दंसणायारो अट्ठविहो, तं जहा—

**निस्संकित १ णिक्कंखिय २ णिवितिगिच्छा ३ अमूढदिट्ठी य ४ ।**
**उववूह ५ थिरीकरणे ६ वच्छल्ल ७ पभावणे ८ अट्ठ ॥ ५ ॥ ८७ ॥**

**निस्संकित०** गाहा । **संका** दुविहा—देससंका सव्वसंका य । देससंका जहा—समाणते जीवत्ते कहं ईमो भवितो इमो अभवितो ?, ण मुणेति—दुविहा भावा, हेतुगेज्झा अहेतुगेज्झा य । हेतुगेज्झं जीवस्स सरीरत्थंतरभूतत्तं, अहेतुवातो भविया-ऽभवियादतो भावा । सव्वसंका—सव्वमेतं पागतभासानिबद्धत्तणेण कुसलकप्पितं होज्जा । उभए इमं **उदाहरणं—दो कप्पट्ठगा,** जहा **आवस्सए** [ चूर्णी विभाग २ पत्र २७९, हाटी० पत्र ८१४ ] तहा सव्वं विभासितव्वं १ ॥

**कंखा इ** दारं—सा दुविहा, देसे सव्वे य । देसकंखा एक्कं कंचि कुतित्थितमतं कंखति, सव्वकंखा सव्वाणि पावादितमताणि कंखति । दुविहाए वि कंखाए इदमुदाहरणं—**अमच्चो राया** य अस्सावधिया अडविं पविट्ठा, जहा **आवस्सए** [ चूर्णी विभाग २ पत्र २७९, हाटी० पत्र ८१ग ] तहा भाणितव्वं २ ॥

**वितिकिंछ** त्ति दारं—सा दुविहा, देसे सव्वे य । तत्थ देसे वितिकिंछा सव्वं लट्ठं साधूणं, जदि जीवाकुलो लोको ण दिट्ठो [ होंतो ] सुंदरं होंतं एवमादि । सव्ववितिगिंछा—जदि सव्वं सुकरं दिट्ठं होंतं सुहं अम्हारिसा करिंता । **उदाहरणं—चोरो** उज्जाणे अमलहियतत्तणं मोत्तूणं जहा **आवस्सए** [ चूर्णी विभाग २ पत्र २७९, हाटी० पत्र ८१५ ] । **विदुगुंछाए वितियमुदाहरणं—सावकधूता** विदुगुंछं काउं दुब्भिक्खगंधा जाता, जहा **आवस्सए** [ चूर्णी विभाग २ पत्र २८०, हाटी० पत्र ८१५ ] । एसा वितिगिच्छा ३ ॥

**अमूढदिट्ठि** त्ति दारं—बालतवस्सीणं केती तव-विज्जातिसता पूयातो वा दट्ठूण दिट्ठीमोहो ण कातव्वो । उदाहरणं **सुलसा** साविया—भवियाणं थिरीकरणत्थं सामिणा **अम्मडो रायगिहं** गच्छंतो भणितो—**सुलसं** पुच्छेज्जासि । सो चिंतेति—पुण्णमंतिया जं अरहा पुच्छति । तेण परिक्खणनिमित्तं भत्तं मग्गिता । अलभमाणेण बहूणि रूवाणि काऊण मग्गिता । ण य दिट्ठिमोहो **सुलसाए** जातो । एवं अमूढदिट्ठिणा भवितव्वं ४ ।

**उववूहण** त्ति दारं—सम्मत्ते विसेसेण सीदमाणस्स असीदमाणस्स वि उववूहणं कातव्वं । **दिट्ठंतो—रायगिहे सेणिओ** राया । तस्स देविंदो सम्मत्तं पसंसति । एको देवो असद्दहंतो णगरबाहिं **सेणियस्स** पुरतो चेल्लगरूवेण अणिमिसए पडिग्गाहेति, तं णिवारेति । पुणो पोहडितियासंजतीवेसेण पुरतो ठितो, तं ओव्वरए

---

१ °रागडंतं ण मूलादर्शे ॥ २ आचारवत्यः कवेल्लुकाः—मृण्मयानि भाजनादीनि ॥ ३ निर्वर्तकानि इत्यर्थः ॥ ४ अयं भव्यः अयं अभव्यः ? ॥ ५ अहेतुवादो भव्या-ऽभव्यादयः ॥ ६ प्रावादुकमतानि ॥ ७ अश्वापहृतौ ॥ ८ अनिमिसए मत्स्यानित्यर्थः ॥ ९ पाहडियिया गर्भिणीत्यर्थः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवेसेऊणं णिक्केतिंजंतीए अप्पसागारियनिमित्तं सयं चेट्ठति । सो गोमडगसरिसं गंधं विउव्वति तहा वि ण विप्परिणमति त्ति । देवो तुट्ठो दिव्वं देविड्ढिं दाएंतो उववूहति । एवं उववूहितव्वा साहम्मिया ५ ।

**थिरीकरणं** ति दारं-धम्मे सीतमाणस्स थिरयरता कातव्वा । जहा-उज्जेणीए **अज्जासाढो** संजते कालं करेंता णिज्जावेति, अप्पाहेति य-मए संबोधेज्जाह । जहा **उत्तरज्झयणेसु** [ अध्य० २ नि० गा० १२३-३१ पाइयटीका पत्र १३३-३९ ] तहा सव्वं ६ ।

**वच्छल्लं** ति दारं-तं सति सामत्थे पवयणस्स कातव्वं । दिट्ठंतो **अज्जवइरा, आवस्सगकमेण** [ चूर्णी विभाग १ पत्र ३९६, हाटी० पत्र २९५ ] सव्वमक्खाणगं ७ ।

**पभावणे** त्ति दारं—जति [वि] सभावतो जिणवयणं दिप्पति तहावि धम्मकहि-वादीमादीहि पभावेतव्वं । दिट्ठंतो **अज्जवइरेहिं, अग्गिगिहसुहुमकाइयाणयणं** जहेव **आवस्सए** [ चूर्णी विभाग १ पत्र ३९६, हाटी० पत्र २९५ ] । एसा पभावणा ८ ॥ ५ ॥ ८७ ॥ भणितो दंसणायारो । नाणायारो दारं-नाणधम्मनिमित्तं चेट्ठा जहो वएसकरणं नाणायारो, सो अट्ठविहो, तं जहा—

**काले १ विणये २ बहुमाणे ३ उवहाणे ४ तहा अनिण्हवणे ५ ।**
**वंजण ६ अत्थ ७ तदुभए ८ अट्ठविहो नाणमायारो ॥ ६ ॥ ८८ ॥**

**काले विणये०** गाहा । **काले** त्ति दारं-जो जस्स अंगपविट्ठस्स अंगबाहिरस्स वा अज्झयणकालो भणितो तम्मि काले पढंतो णाणायारे वट्टति । लोगे वि दिट्ठं-करिसगाणं कालं कालं पप्पाणं नाणाविहाणं बीजाणं निप्पत्ती भवति । लोगे वि—

अधीयाणा अणज्झाए सक्का ! किन्न निहंसि ते ? । मता सग्गं न गच्छंति णणु णारद ! ते हता ॥ १ ॥

[ ]

काले पढितव्वं । अकाले पढंतं पंडिणीता देवता छलेज्ज । **उदाहरणं**-एगो साधू पादोसियं कालमतिक्कंताए पोरुसीए कालियमणुपतोगेण पढति । 'मा पंताए छलिज्जिहिति' त्ति सम्मद्दिट्ठी देवता तक्ककुडं घेत्तूण तस्स पुरतो 'तक्कं विक्कायति' त्ति घोसेंती गता-ऽऽगताइं करेति । तेण 'चिरस्स सज्झायस्स वाघायं करेति' त्ति भणिया-को इमो तक्कविक्कयकालो ? । ताए भणितो-को इमो कालियसज्झायकालो ? ।

सूतीपदपमाणाणि परछिद्दाणि पस्ससि । अप्पणो बिल्लमेत्ताणि पस्संतो वि ण पस्सति ॥ १ ॥
[ उत्तरा० नि० गा० १४० ]

साधू उवउत्तो, णाउं 'मिच्छा मि दुक्कडं' आउट्टो । देवता भणति-मा अकाले पढ, मा पन्ताए छलिज्जिहिसि ॥

अहवा इदमुदाहरणं—

धमे धमे णातिधमे अतिधन्तं ण सोभती । जं अज्जितं धमंतेण हारितं तं अतिधमंतेण ॥ १ ॥

एक्को सामाइतो छेत्ते सूयरतासणत्थं सिंगं धमति । तेणोवंसेण चोरा गावीओ हरंति । तेण समावत्तीए धंतं । चोरा 'कुढो आगतो' त्ति गावीओ छड्डेउं गता । तेण पभाए दट्ठुं नीया घरंतेण । पए धमएण छेत्तं गावीओ य रक्खति । धमेंतो चोरेहिं परिमाणेतुं रुट्ठेहिं पंतावितो, णीताओ य गावीओ । तम्हा काले चेव आयरियव्वो सज्झातो ॥

---

१ णिक्केतिज्जंतीए प्रसुवत्याः ॥ २ सुहुमकाइयाणि पुष्पाणीत्यर्थः ॥ ३ विणए खं० वी० पु० सा० ॥ ४ तह य अनि° वी० सा० ॥ ५ प्रत्यनीका विरोधिनी ॥ ६ कालिकमनुपयोगेन ॥ ७ राई-सरिसवमेत्ताणि पर° उत्त० नि० गा० १४० पाठः । सूचीस्थानप्रमाणानीत्यर्थः ॥ ८ श्यामायितः राज्यन्धक इत्यर्थः, सामाजिक इति वा योऽर्थः ॥ ९ तेनावकाशेन ॥ १० ग्रहान्तेन ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहवा इमो **संखधमओ**-रायाए निग्गमकाले एगेण समावत्तीए संखो पूरितो। रण्णा तुट्ठेण 'थक्के पूरितो' त्ति सहस्सं दिण्णं। सो एवं धमंतो अच्छति। अण्णया राया विरेयणं पीतो पंचवनगमतीति। तेण संखो दिण्णो। परबलकोट्टरोहं वट्टति। राया संतावेवेगधारणेण ण तिण्णो उट्ठेतुं। उट्ठिएण सो डंडितो। तम्हा ण पढितव्वं॥

अहवा इमयुदाहरणं—

सिरीए मतिमं तुस्से अतिसिरिं तु ण पत्थए। अतिसिरिमिच्छंतीए **थेरीए** विणासिओ अप्पा॥ १॥

वाणमंतरमाराहितं, छाणाणि पल्हत्थंतीए रयणाणि जाताणि, इस्सरीभूता। चाउसालं घरं कारितं अणेग-सयणा-ऽऽसण-रयणभरितं। समोसितियाए थेरीए पुच्छंतीए सिट्ठं। ताए वि आराहितो-किं देमि? त्ति। भणितं-समोसीतियाथेरीए वरो सव्वो दुगुणो भवतु। तहा जं जं पढमा चिंतेति तं तं इयरीए दुगुणं। ताए सुतं-सव्वं मह वरातो दुगुणं। ताए चिंतितं-मम चाउस्सालं फिट्टउ, तणकुडिआ होउ। बितियाए दो चाउस्साला फिट्टा, दो तण-कुडिताओ जाताओ। पढमाए चिंतितं-एगं अच्छि फुट्टउ। बितियाए दो वि फुट्टाइं। एवं हत्थो पादो। **सुतीय** सुव्वति-एसो असंतोसस्स दोसो। तम्हा अतिरित्ते काले सज्झातो न कातव्वो, मा तहाविणासो होहिति १॥

**विणए** त्ति दारं-अविणीतो विज्जाफलं ण पावति त्ति विणएणं पढितव्वं। **उदाहरणं-सेणिओ** भज्जाए भण्णति-एगखंभं जहा **दुमपुप्फियाए** [ पत्र २२ ] २॥

**बहुमाणे** त्ति दारं-णाणमंतेसु भत्ती बहुमाणो य कातव्वो। को पुण भत्ति-बहुमाणगओ विसेसो? भावओ नाणमंतेसु णेहपडिबंधो बहुमाणो, भत्ती पुण अब्भुट्ठाणातिसेवा। एत्थ चउभंगो-भत्ती णामेगस्स णो बहुमाणो ४। भत्ति-बहुमाणविसेसणत्थमिदमुदाहरणं-एगम्मि गिरिकंदरे **सिवतो**। तं बंभणो पुलिंदो य अच्चेति। बंभणो उवलेवण-सम्मज्जण-पुप्फोवकराति कातुं पज्झयणं करेति भत्तीए। पुलिंदो पुण भावपडिबद्धो गल्लोदगेण ण्हावेति। **सिवतो** तं ओणमिऊण पडिच्छति आलवती वि तेणेव समं। अण्णदा बंभणेण तेसिं उल्लवितसद्दो सुतो। तेण पडियरिऊण 'पुलिंदेण सह उल्लवेसि?' त्ति उवालद्धो, तुमं एरिसो चेव **पाणसिवओ** जो एतेण उच्चिट्ठेण समं मन्तेसि। तेण सिट्ठं-एसो मे भावतो अणुरत्तो। अण्णदा अच्छि उक्खणिऊण अच्छति **सिवओ**। बंभणो य आगतो रडिउमुवसंतो। पुलिंदो आगतो '**सिवस्स** अच्छि नत्थि' त्ति अप्पणो अच्छि भल्लीए उक्खणिऊण **सिवस्स** लाएति। बंभणो पत्तीओ। एवं च नाणमंतेसु भत्ती बहुमाणो य कातव्वो ३॥

**उवहाणे** त्ति दारं-जो जस्स अज्झयण[स्स] आगाढमणागाढो वा जोगो सो तहारूवो कातव्वो। **दिट्ठंतो**-एगो आयरिओ वायणापरिस्संतो सज्झाए वि असज्झायं घोसेति। कालगतो। नाणंतराइयं काऊणं देवलोगं गतो। ततो चुओ **आभीरकुले** पच्चातातो भोगे भुंजति। धूया य से जाता अतीवरूविणी। ते पचंतिया गोयरियाए हिंडंति। तस्स सगडं पुरतो वचति। सा तस्स धूता सगडस्स धुरतुंडे ठिता। तीसे दरिसणत्थं तरुण-इत्तेहिं सगडाणि उप्पहेण खेडंते भग्गाणि। तीसे लोगेण नामं कतं **असगडा**। तीसे पिता **असगडपिता**। तस्स तं चेव वेरग्गं जातं। दारियं एगस्स दातुं निक्खंतो, पढितो जाव **चउरंगिज्जं**। **असंखए** उद्दिट्ठे तं नाणावरणिज्जं कम्मं उदिण्णं, पढंतस्स न ठाति। 'छट्ठेण अणुण्णव्वतु' त्ति भणिते 'तस्स केरिसो जोगो?'। आयरिया भणंति-जाव ण ठाति ताव आयंबिलं। सो भणति-एवमेव पढामि। तेणं बारस सिलोगा बारसहिं वरिसेहिं निरंतरमायंबिलेण पढिता, तं कम्मं खीणं। एवं सम्मं जोगो अणुपालेतव्वो ४॥

---

१ थक्के अवसरे॥ २ पंचवनगमतीति संज्ञां व्युत्सृजति, वेकिकां यातीत्यर्थः॥ ३ समोसितियाए थेरीए प्रातिवेश्मिकया स्थविरया पृच्छन्त्या॥ ४ "एत्थ चउभंगी—एगस्स भत्ती णो बहुमाणो १ एगस्स बहुमाणो णो भत्ती २ एगस्स बहुमाणो वि भत्ती वि ३ एगस्स णो बहुमाणो णो भत्ती ४।" इति वृद्धविवरणे॥ ५ पुष्पावकरादि कृत्वा प्राध्ययनम्॥ ६ गर्तोदकेन यद्वा मलिनोदकेन॥ ७ पाणशिवः॥ ८ उच्छिष्टेन॥ ९ लगयति॥ १० प्रत्ययितः॥ ११ प्रत्यायातः॥ १२ गोचार्यै॥ १३ तरुणैः॥ १४ उत्तराध्ययनेषु तृतीय-मध्ययनम्॥ १५ उत्तराध्ययनेषु चतुर्थमध्ययनम्॥ १६ तेण पारसिसलोगा मूलादर्शे॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**अणिण्हवे** त्ति दारं–जं जस्स सगासे सिक्खितं तं तहेव भणितव्वं । वायणारियं णिण्हवंतस्स इहेव परलोए वा नत्थि कल्लाणं । **उदाहरणं**–एगस्स ण्हावियस्स छुरघरगं विज्जाए आगासे अच्छति । तं परिव्वाओ बहूहिं [1]उस्सप्पणातीहिं लद्धुं विज्जं अण्णत्थ गंतुं तिदंडेण आगासगतेण लोएण [2]पूतिज्जति । रण्णा पुच्छितो–किं विज्जातिसतो ? तवातिसतो ? । भणति–विज्जातिसतो । कतो आगमो ? त्ति । '**हिमवंते महरिसीसगासातो**' त्ति तिडंडं खडखडेंतं पडितं । एवं जो वि [3]अप्पगासो आयरितो सो वि ण णिण्हवितव्वो ५ ॥

**वंजणे** त्ति दारं-**वंजणमक्खरं**, तेहिं वंजणेहिं निप्फण्णं सुत्तं तं सुत्तं पागतं सक्कयं करेति, जहा–"धर्मो मङ्गलमुत्कृष्टम्" एवमादि । तस्सेव वा अत्थस्स अण्णाणि वंजणाणि करेति, जहा–"पुण्णं कल्लाणमुक्कोसं दया संवर-णिज्जरा ।" एवं ण कातव्वं । किं कारणं ? वंजणविसंवाते अत्थविसंवातो, अत्थविणासे चरणविणासो, चरणविणासे मोक्खाभावो, मोक्खाभावे णिरत्था दिक्खा, अतो वंजणमण्णहा ण कायव्वं ६ ॥

**अत्थो** त्ति दारं–तेसु चेव वंजणेसु अण्णं अत्थं विकप्पेति । जहा–"**आवंती केया वंती लोगंसि विप्परामसति**" [आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० १ सू० १] एतस्स अत्थं विसंवाएति–'आवंती' देसो तत्थ 'केया' रज्जू 'वंती' कूवे पडिता तं लोगो 'विप्परामसति' मग्गति, एरिसो अत्थविसंवातो ण कातव्वो ७ ॥

**उभए** त्ति दारं–जत्थ सुत्तं पि अत्थो वि विणस्सति तं उभयं । जहा—

धम्मो जंगलसुक्कम्हो अहिंसा पव्वतमस्तके । देवा वि तस्स णस्संति जस्स धम्मे सदा मती ॥ १ ॥

अहाकडेहिं रंधेंति कट्ठेहिं रहकारिणो ।

एवमादिसुत्तत्थविसंवातो ८ ॥ ६ ॥ ८८ ॥ चरित्तायारो त्ति दारं । सो अट्ठविहो । तं०—

**पणिहाणजोगजुत्तो पंचहिं समितीहिं तिहि य गुत्तीहिं ।**
**एस चरित्तायारो अट्ठविहो होइ णायव्वो ॥ ७ ॥ ८९ ॥**

**पणिहाणजोगजुत्तो०** गाहा । **पणिहाणं** अज्झवसाणं, तेण अज्झवसाणजोगेण जुत्तो, यदुक्तं मनसा, अहवा तिविहेण वि करणेणं जुत्तो **पणिहाणजोगजुत्तो** । भणियं च **गोविंदवायएहिं**—

काए वि हु अज्झप्पं सरीर-वायासमन्नियं चेव । काय-मणसंपउत्तं अज्झप्पं किंचिदाहंसु ॥ १ ॥

**समितीतो** [4]रिताँदिता [5]ना । **गुत्तीओ** मणगुत्तीयादियाओ तिण्णि । समिति-गुत्तिविसेसो–सम्मं पवत्तणं समिती, णिरोधो गुत्ती ॥ ७ ॥ ८९ ॥ तवायारो दारं—

**बारसविहम्मि वि तवे सब्भिंतर बाहिरे कुसलदिट्ठे ।**
**[6]अगिलाए अणाजीवी णायव्वो सो तवायारो ॥ ८ ॥ ९० ॥**

**बारसविहम्मि वि तवे०** गाधा । तवो बारसविहो वि जहा **दुमपुप्फिताए** [पत्र १२] । **कुसलदिट्ठो** तित्थकरदिट्ठो । **अगिलाए** अदीणो । **अणाजीवी** ण तवमाजीवति लाभ-पूयणादीहिं ॥ ८ ॥ ९० ॥

वीरियायार इति दारं–अट्ठविहे दंसणायारे अट्ठविहे णाणायारे अट्ठविहे चरित्तायारे बारसविहे तवे, एतेसु छत्तीसाए कारणेसु जं असढमुज्जमति एस वीरियायारो ।

**अणिगूहितबल-विरिओ परक्कमति जो जहुत्तमाउत्तो ।**
**जुंजइ य [7] जहाथामं णायव्वो वीरियायारो ॥ ९ ॥ ९१ ॥ आयारो गओ ॥**

**अणिगूहित०** गाधा । पाढोक्तार्थी ॥ ९ ॥ ९१ ॥ एस वीरियायारो । आयारो समत्तो । कहादारं–

१ उत्सर्पणादिभिः सत्कार-सेवादिभिरित्यर्थः ॥ २ पूज्यते ॥ ३ "अप्पागमो" इति वृद्ध० हाटी० च ॥ ४ ईर्यादिकाः ॥ ५ ना इति पञ्चसङ्ख्याद्योतकोऽक्षराङ्कः ॥ ६ अगिलाइ खं० वी० सा० । अगिलाय पु० ॥ ७ य अहा° खं० ॥

Jain Education International  For Private & Personal Use Only  www.jainelibrary.org

**अत्थकहा १ कामकहा २ धम्मकहा चेव ३ मीसिया य कहा ४ ।**
**एत्तो[1] एक्केक्का वि य णेगविहा होइ नायव्वा ॥ १० ॥ ९२ ॥**

**अत्थकहा कामकहा०** गाहा । कहा चउव्विहा–अत्थकहा १ कामकहा २ धम्मकहा ३ मीसिया ४ । एतासिं **एक्केका** अणेगहा ॥ १० ॥ ९२ ॥

अत्थकहा जा अत्थनिमित्तं कहिज्जति सा इमाए गाहाए अणुगंतव्वा । तं जहा—

**विज्जा १ सिप्प २ मुवाओ ३ अणिवेओ ४ संचओ य ५ दक्खत्तं ६ ।**
**सामं ७ दंडो ८ भेओ ९ उवप्पयाणं[2] च १० अत्थकहा ॥ ११ ॥ ९३ ॥**

**विज्जा सिप्प०** गाहा । **विज्ज** त्ति दारं–जो विज्जाए अत्थमुप्पिणति, जहा कोति **लोहको** जक्खो साहितो पंचकं पभायकं देति । जहा वा **सच्चतिस्स** विज्जाहरचक्कवट्टिस्स भोगोवणती । **सच्चतिस्स** उट्ठाण-पारियाणिया जहा **जोगसंगहेसु** [ आव० चूर्णी विभाग २ पत्र १७४ हाटी० पत्र ६८५ ] १ । **सिप्पे** त्ति दारं–सिप्पेण अत्थो विढप्पति । उदाहरणं **कोकासो,** जहा **आवस्सए** [ आव० चूर्णी विभाग १ पत्र ५४१ हाटी० पत्र ४०९ ] २ । **उवाए** त्ति दारं-दिट्ठंतो **चाणक्को,** जहा "बे मज्झ धातुरत्ताइं०" [ आव० चूर्णी विभाग १ पत्र ५६५ हाटी० पत्र ४३५ ] एवमादीहिं **चाणक्केण** उवाएहिं धणोवज्जणं कतं ३ । **अणिवेदे संचए** य एक्कं चेव **मम्मणवणियो** निदरिसणं जहा **आवस्सए** [ चूर्णी विभाग १ पत्र ५४२ हाटी० पत्र ४१३ ] ४ । ५ ॥ ११ ॥ ९३ ॥ **दक्खत्तदारं** । एत्थ—

**दक्खत्तणगं[3] पुरिसस्स पंचगं १ सइकमाहु सुंदेरं २ ।**
**बुद्धी[4] पुण साहस्सा ३ सयसाहस्साइं पुण्णाइं ४ ॥ १२ ॥ ९४ ॥**

**दक्खत्तणगं पुरिस०** गाहा । **उदाहरणं–बंभदत्तकुमारो** कुमारामच्चपुत्तो सेट्ठिपुत्तो सत्थवाहपुत्तो [ य ] संतिमुल्लवेंति[5]–को भे केण जीवति ? त्ति । रायपुत्तो 'पुण्णेहिं' ति भणति । कुमारामच्चपुत्तो 'बुद्धीए' । सेट्ठिपुत्तो 'रूवेण' । सत्थवाहपुत्तो 'दक्खत्तणेण' । भणंति–अण्णत्थ गंतुं विण्णासेमो । गता णगरंतरं जत्थ ण णज्जंति । उज्जाणे ठिता । दक्खस्स संदेसो दिण्णो–अज्ज[6] ! परिव्वयमाणेहिं । सो वीहीए एगस्स थेरस्स गंधियावणे ठितो, उस्सवदिणे बहुते कइया, पुडका बंधंतो न पहुप्पति । सत्थाहपुत्तेण खणेण बहुते बद्धा । लद्धलाभो जातो तुट्ठो भणति–तुब्भे किमागंतुका ? । आमं । तो इहं अज्ज देस-कालो । तेण भणियं–अत्थि मे सहाया तेहिं विणा न भुंजामि । सव्वे एह । आगता, भत्त-तंबोलादि पंचकं भुत्तं १ । बितिए दिवसे रूवतित्तो[7] भणितो–अज्ज तव परिव्वयपरिवाडी । 'एव' मिति सो अप्पगं अलंकारेतुं वेसित्थिवाडगं गतो । तत्थेका गणिका पुरिसव्वेसिणी[8] बहूहिं रायपुत्तादीहिं पत्थिता णेच्छति, तीसे तस्स रूवे मणो गतो । दासीए से माऊए सिट्ठं–एगम्मि सुंदरजुवाणे भावो से । माताए सो भणितो–इह अज्ज देसकालो [ मम गिह ]मणुवरोहेण करेह । तहेव आगता, संतितो[9] उवओगो कतो २ । ततियदिवसे बुद्धितित्तो[10] भणितो, तहेव गतो करणं, तत्थ ततिओ दिवसो ववहारस्स ण छिज्जंतस्स–दो सवत्तीतो[11] मतपतियातो पुत्तस्स धणस्स य अत्थे विवदंति । पुत्तो लोको य समाणणेहाओ ण विभावेति । वरधणुणा भणितं–दुहा दारतो कीरतु धणं च । पुत्तइत्ती[12] भणति–सव्वं एताए, जीवंतं पेच्छीहामो त्ति । तीसे दिण्णो करणपतिणा । तहेव सहस्सपरिणिते पूतिया ३ । चतुत्थे दिवसे रायपुत्तो तहेव पडिवण्णे तेसिं मूलातो निग्गंतुमुज्जाणे निवण्णो अच्छति । तम्मि य नयरे अपुत्तो राया मतो, आसो अहिवासितो, आसेण तस्स उवरिट्ठितेण हिंसितं, रुक्खच्छाया वि ण परियत्तति, राया अहिसित्तो अणेगसतसहस्सपती ४ । ६ ॥

---

१ इत्तो इक्किका पु० ॥ २ अत्थपयाणं खं० ॥ ३ दक्खत्तणेण पुरि° वी० ॥ ४ बुद्धीए पंच सया सय° वी० ॥
५ सकृदुल्लपन्ति ॥ ६ आर्य ! परिव्ययमानय ॥ ७ रूपवान् भणितः–अद्य तव परिव्ययपरिपाटी ॥ ८ पुरुषद्वेषिणी ॥ ९ शान्तिकः ॥
१० बुद्धिमान् ॥ ११ द्वे सपत्न्यौ मृतपतिके ॥ १२ पुत्रवती ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**साम-भेदोवप्पदाण-दंडेहिं** जहा अत्थो विढप्पति एत्थ उदाहरणं **सितालो**–तेण हत्थी मैततो लद्धो, तुट्ठो 'कमेण खाहामि' त्ति । सीहो य आगतो पुच्छति–केण मारितो? । 'ऊणेण हतं ण खातिस्सति' त्ति सामवयणं भणति–वग्घेण । सो गतो । वग्घो आगतो तस्स कहितं–सीहेण मारितो, सो पाणितं पातुं ऐत्तिमेण एत्ति । वग्घो णट्ठो । एस भेदो । कातो आगतो–रोलेण मा बहव आगच्छंतु–त्ति तस्स किंचि देति । उवपदाणं गतं । सितालो आगतो, हेलं दाऊण धाडितो । एस दंडो ।

पणिवाएण पहाणं भेदेण ततो पलावकिट्ठतरं । लिच्छाए पुण णीतं सरिसं तु परक्कमेण जतो ॥ १ ॥
[ ] ७–१० ॥ १२ ॥ ९४ ॥

कामकह त्ति दारं–

**रूवं १ वैंतो व २ वेसो ३ दैक्खिण्णं ४ सिक्खियं च विसएसुं ५ ।**
**दिट्ठं ६ सुय ७ मणुभूयं च ८ संथवो चेव ९ कामकहा ॥ १३ ॥ ९५ ॥**

**रूवं वतो व वेसो०** गाहा । रूवकहाए उदाहरणं **वसुदेव-धंमदत्ता** १ । **वतो** त्ति दारं–तरुणे वये वट्टमाणो कामिज्जति २ । **वेसो** त्ति दारं–वत्था-ऽऽभरणादिसमलंकितो कमणीतो भवति । उदाहरणं–राया पासायवरगतो ओलोएति । तेण महिला हरितसद्दले समरत्तकपाउया चंकम्मंती दिट्ठा । चित्ते जाते आणाविया । दिट्ठा विरूवा । सो भणति—

सुमहग्घो वि कुसुंभो घेत्तव्वो पंडितेण पुरिसेण । जस्स गुणेण महिलिया होइ सुरूवा विरूवा वि ॥ १ ॥ ३ ।
[ ]

**दक्खिण्णे** त्ति दारं–चागातिसंपदाए विरूवो वि अवयत्थो वा वेसित्थियादीहिं कामिज्जति ४ । **सिक्ख** त्ति दारं–एत्थ **अयल-मूलदेवा** उदाहरणं–ते दो वि **देवदत्ताए** लग्गा । **अयलो** देति, **मूलदेवो** विण्णाणेण भुंजति । कुट्टणी **मूलदेवाओ** विस्सादेति । सा ण सुणेति । चैड्डिज्जंतीए कुट्टणी भणिता–**अयलं** भण, उच्छूणि देहि । तेण सगडभरो पेसितो । किमहं हत्थिणी तो सगडभरो पेसितो ? । **मूलदेवस्स** पेसियं । तेण उच्छुखंडियाओ छोडेतुं चैाउज्जातएणं वासेतुं सूर्ति लाएतुं पेसियातो । एवं पत्तियाविया ५ । **दिट्ठं** ति दारं–जहा कोति कस्सति दिट्ठं णारिं कहेति, **णारय** इव **रुप्पिणिं** वासुदेवस्स ६ । **सुतं** ति दारं, दिट्ठंतो–**दोवतीणाते पउमरहो णारयस्स** सोऊण पुव्वसंगतियं देवमाराधेउं तस्स परिकहेति जहाभूतं **दोवतीए** ७ । **अणुभूते** त्ति दारं–तं जहा **तरंगवईए** अप्पणो चरितं कहितं ८ । **संथवो** दारं, तत्थ इमा गाहा—

संदंसणेण पीती पीतीतो रती रतीओ वीसंभो । वीसंभातो पणतो पंचविहं वड्ढती पेम्मं ॥ १ ॥ ९ ।
[ ] ॥ १३ ॥ ९५ ॥

एवं संथवो । समत्ता कामकहा । धम्मकह त्ति दारं—

**धम्मकहा बोधव्वा चउविहा धीरपुरिसपण्णत्ता ।**
**अक्खेवणि १ विक्खेवणि २ संवेगे चेव ३ निव्वेए ४ ॥ १४ ॥ ९६ ॥**

**धम्मकहा बोधव्वा०** गाहा । धम्मकहा चतुव्विहा, तं०–अक्खेवणि १ विक्खेवणि २ संवेदणि ३ णिव्वेदणि ४ । जाए सोता रंजिज्जति सा अक्खेवणी १ । विविहं विण्णाण-विसयादीहिं खिवति विक्खेवणी २ । संवेगं संसारदुक्खेहिंतो जणेति संवेदणी ३ । भोगेहिंतो निव्वेदणी ४ ॥ १४ ॥ ९६ ॥

---

१ शृगालः ॥ २ मृतः ॥ ३ इदानीम् ॥ ४ वओ य वेसो वी० पु० सा० । वयो य वेसो खं० ॥ ५ दक्खत्तं सा० ॥ ६ खिद्यमानया इत्यर्थः ॥ ७ त्वक् तमालपत्रं एला नागकेशरम् इति द्रव्यचतुष्कं चातुर्जातकमुपलक्ष्यते ॥ ८ नारद इव रुक्मिणीम् ॥ ९ निव्वेगे खं० ॥

Jain Education International		For Private & Personal Use Only		www.jainelibrary.org

अक्खेवणी चतुव्विहा, तं०—आयारक्खेवणी १ ववहारक्खेवणी २ पण्णत्तिअक्खेवणी ३ दिट्ठिवायअक्खेवणी ४। साधुणो अट्ठारससीलंगसहस्सधारका बारसविहतवोकम्मरता दुक्करकारक त्ति आयारक्खेवणी १। अक्खित्तमतिसु सोतारेसु एवं परूविज्जति—दुरणुचरतवोजुत्ता वि साधुणो जदि किंचि अतिचरंति तो जहा अव्ववहारिस्स लोए डंडो कीरति तहा पायच्छित्तं ति ववहारक्खेवणी २। संदेहसमुग्घाते णिव्वेदकर-मधुर-सउवायपण्णत्तिगतोदाहरणेहिं पत्तियावणं पण्णत्तिअक्खेवणी ३। दव्व-जीवातितिचिंता णिपुणमतीसु सोतारेसु विविधभंग-णय-हेउवादसमुपगूढा दिट्ठिवादअक्खेवणी ४। अहवा अयमक्खेवणीविकप्पो—

**विज्जा १ चरणं च २ ततो[1] पुरिसक्कारो य ३ समिति ४ गुत्तीओ ५।**
**उवइस्सइ खलु जहियं कहाइ अक्खेवणीइ रसो ॥ १५ ॥ ९७ ॥**

**विज्जा चरणं च ततो॰** गाहा। **विज्जा** णाणं, णाणमाहप्पवण्णणं—जहा अंधकारे वट्टमाणा भावा चक्खुमं पदीवेण पासति एवं नाणं पुरिसस्स दीवब्भूतं। किंच—

पेच्छति जहा सचक्खू पुरिसो दीवेण अंधकारे वि। जिणसासणदीवेण उ पासति एवं णरो मतिमं ॥ १ ॥

[ ]

एवमादीहिं नाणसामत्थं दरिसिज्जति त्ति विज्जाअक्खेवणी १। एवं साहुणो सरीरे वि अप्पडिबद्धा भवंतीति चरणक्खेवणी २। अणिगूहितबल-वीरिएहिं संजमुज्जमणं पुरिसकारक्खेवणी ३। समितीतो पंच ४। गुत्तीओ तिण्णि ५। विज्जा-चरण-पुरिसकार-समिती-गुत्तीओ जाए कहाए उवदिस्संति सो **कहाए अक्खेवणीए रसो** मधुरता ॥ १५ ॥ ९७ ॥

विक्खेवणी चतुव्विहा, तं जहा—ससमयं कहित्ता परसमयं कहेति, ससमयगुणे कहेति परसमयस्स दोसे दरिसेति पढमा विक्खेवणी १। बितिया परसमयं कहित्ता तस्स दोसे ठावेंतो पुणो ससमयं कहेति गुणकहणेणं २। ततिया मिच्छावादं कहतित्ता सम्मावादं कहयति, परसमए कहिते तम्मि जे भावा इह विरुद्धा असंता कप्पिता ते कहतित्ता[3] दोसा य [4]सिं भणितो जे जिणप्पणीयभावसरिसा जंतिरिच्छाए घुणक्खरमिव[5] सोभणा भणिता ते कहयति। अहवा नत्थित्तं मिच्छावादो, अत्थित्तं सम्मावादो, पुव्विं णाहितवादं कहतित्ता पच्छा अत्थित्तपक्खं कहयति ३। चतुत्थी विक्खेवणी एवमेव, किंतु पुव्विं सोभणे कहयति पच्छा इयरे। एसा विक्खेवणी कहा। अण्णेण विकप्पेण इमाहिं दोहिं गाहाहिं भण्णति—

**जा ससमयवज्जा खलु होइ कहा लोग-वेयसंजुत्ता।**
**परसमयाणं च कहा एसा विक्खेवणी नाम ॥ १६ ॥ ९८ ॥**
**जा ससमएण पुव्विं अक्खाया तं छुभेज्ज परसमए।**
**परसासणवक्खेवा परस्स समयं परिकहेति ॥ १७ ॥ ९९ ॥**

**जा ससमयवज्जा॰** गाहा। **जा ससमएण॰** गाहा। जाए कहाए ससमयं मोत्तूण लोतितं भारहादीणि सक्कादीण य समया कहेऊणं तेसिं दोसे परूवेति। पढमगाहाए अत्थो ॥ १६ ॥ ९८ ॥

बितियाए पुण—

---

१ तवो ३ पुरिसक्कारो य ४ समिति ५ गुत्तीओ ६ खं॰ पु॰ वी॰ सा॰। श्रीहरिभद्रपादैरयमेव पाठः स्वीकृतोऽस्ति। तथाहि—"विज्जा॰ गाहा। 'विद्या' ज्ञानं अत्यन्तापकारिभावतमोभेदकम्। 'चरणं' चारित्रं समग्रविरतिरूपम्। 'तपः' अनशनादि। 'पुरुषकारश्च' कर्मशत्रून् प्रति स्ववीर्योत्कर्षलक्षणः। 'समिति-गुप्तयः' पूर्वोक्ता एव।" [ पत्र ११० ] इति। वृद्धविवरणकृता तु श्रीअगस्त्यसिंहपादादृत एव निर्युक्तिपाठः स्वीकृतोऽस्ति। तथाहि—"विज्जा-चरणाणि पुरिसकार-समिति-गुत्तिपज्जवसाणाणि पंच वि कारणाणि जाए कहाए उवदिस्संति" [ पत्र १०७ ] इति। अस्मत्पार्श्ववर्तिषु समग्रेष्वपि निर्युक्त्यादर्शेषु नोपलभ्यते चूर्णिकारसम्मतो निर्युक्तिपाठ इत्यवधेयं विद्वद्भिरिति ॥
२ पुरिसायारो य वी॰ ॥ ३ कथयित्वा ॥ ४ तेषाम् ॥ ५ यदृच्छया घुणाक्षरमिव ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ससमयं कहेत्ता परसमयं कहेति, अम्हं एवं तेसिं एवं, एवं ससमए त्थावेति परस्स दोसे देति । जति पुण वक्खेवो भवति तत्थ परसमयमेव कहयति । वक्खेवो—वाकुलणा कहणाए, तो परसमय एव अवसरप्पत्तो भण्णति दोसा य से दाविज्जंति, तेण इमं गाहापच्छद्धं—**परसासणवक्खेवा परस्स समयं परिकहेति** ॥ १७ ॥ ९९ ॥

संवेगणी चतुव्विहा, तं०—आतसरीरसंवेदणी परसरीरसंवेदणी [ इहलोगसंवेदणी ] परलोकसंवेदणी । आयसरीरसंवेदणी—जं एतं अम्हं तुब्भं वा सरीरयं एयं सुक्क-सोणित-वसा-मेतसंघातनिप्फण्णं मुत्त-पुरीसभायणत्तणेण य असुति त्ति कहेमाणो सोतारस्स संवेगमुप्पादयति १ । परसरीरसंवेदणीए वि परसरीरमेवमेवासुतिं, अहवा परतो मततो, तस्स सरीरं वण्णेमाणो संवेगमुप्पाएति २ । इहलोकसंवेदणी जहा—सव्वमेव माणुस्समणिचं कदलीथंभनिस्सारं एवं संवेगमुप्पाएति ३ । परलोकसंवेदणी जहा —

इस्सा-विसाय-मय-कोह-लोह-दोसेहिं एवमादीहिं । देवा वि समभिभूया तेसु वि कत्तो सुहं अत्थि ? ॥ १ ॥
[ मरण० गा० ६१० ]

जति देवेसु वि एरिसाणि दुक्खाणि णरग-तिरिएसु को विम्हतो ? । अहवा सुभाणं कम्माणं विपाककहणेणं संवेगमुप्पाएति—जहा इहलोए चेव इमाओ लद्धीओ सुभकम्माणं भवंति । तं जहा—

**वीरिय-विउव्वणिड्ढी नाण-चरण-दंसणस्स तह इड्ढी ।**
**उवइस्सइ खलु जहियं कहाइ संवेयणीइ रसो** ॥ १८ ॥ १०० ॥

**वीरियविउव्व०** गाहा । तवोजुत्तस्स साहुणो मेरुगिरिरुक्खेपणमेवमादि वीरियमुप्पज्जति विज्जालद्धी विउव्वणिड्ढी वा । णाणिड्ढी इहलोए चेव, कहं ? "पभू णं चोदसपुव्वी घडाओ घडसहस्सं० पडाओ पडसहस्सं अभिणिव्वत्तेतुं ?" [ भग० श० ५ उ० ४ सू० २०० पत्र २२४-१ ] एवमादि । चरणिड्ढी वि जहा—

"मणपज्जव आहारक०" [ ] एवमादीणि । दंसणिड्ढी—

सम्मदिट्ठी जीवो विमाणवज्जं ण बंधए आउं । जति वि ण सम्मत्तजढो अहव ण बद्धाउओ पुव्विं ॥ १ ॥
[ ] एवमादि ॥ १८ ॥ १०० ॥

निव्वेदणीकहा चउव्विहा, तं०—इहलोए दुचिण्णा कम्मा इहलोगदुहविवागसंजुत्ता भवंति चउभंगो । पढमे भंगे चोर-पारदारियाणं पढमा निव्वेदणी १ । बितिया निव्वेदणी—इहलोए दुचिण्णा कम्मा परलोए दुहविवागसंजुत्ता भवन्ति, जहा णेरतियाणं इह मणुस्सभवे कतं कम्मं णिरयभवे फलति २ । ततिया निव्वेगणी—परलोए दुचिण्णा कम्मा इहलोकदुहविवागसंजुत्ता भवंति, जहा बालत्तणे चेव दरिद्दकुलसंभूता खय-कुट्ठ-जलोयराभिभूता ३ । चतुत्थी निव्वेगणी—परलोए दुचिण्णा कम्मा परलोए चेव दुहविवागसंजुत्ता भवंति, जहा पुव्विं दुक्कएहिं कम्मेहिं चंडालादिदुगुंछितजातीजाता एकंतणिद्धंधसा णिरयसंवत्तणीयं पूरेऊणं णिरयभवे वेदंति ४ । इहलोक-परलोकता पण्णवकं पडुच्च भवति, तेण मणुस्सलोगो इहलोगो अण्णगतीतो परलोगो । इमा से निदरिसणगाहा—

**पावाणं कम्माणं असुभविवागो कहिज्जए जत्थ ।**
**इह य परत्थ य लोए कहा उ णिव्वेयणी णाम** ॥ १९ ॥ १०१ ॥

**पावाणं कम्माणं०** गाहा जहापाढं ॥ १९ ॥ १०१ ॥ अधुणा एक्काए चेव गाहाए ततिय-चउत्थीणं कहाणं लक्खणं भण्णति—

---

१ मृतकः ॥ २ °दंसणाण तह इड्ढी सा० हाटी० । °दंसणस्स जा इड्ढी वी० ॥ ३ मेरुगिरेः उत्क्षेपणम् एवमादि ॥ ४ य खं० ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**सिद्धी य देवलोगो सुकुलुप्पत्ती य होइ संवेगो।**
**नरगो तिरिक्खजोणी कुमाणुसत्तं च णिव्वेओ ॥ २० ॥ १०२ ॥**

**सिद्धी य देवलोगो॰** गाहा जहापाढेण ॥ २० ॥ १०२ ॥ एतासिं चतुण्हं कहाणं कस्स का पढमं कहेतव्वा ? भण्णति—

**वेणतितस्स पढमया कहा उ अक्खेवणी कहेतव्वा।**
**तो ससमयगहितत्थे कहेज्ज विक्खेवणी पच्छा ॥ २१ ॥ १०३ ॥**

**वेणतितस्स॰** गाहा। **वेणइतो** जो तप्पढमयाए सवणाभिमुहो तस्स **अक्खेवणी कहेतव्वा। ससमयगहितत्थस्स पच्छा विक्खेवणी**कहं ॥ २१ ॥ १०३ ॥ जम्हा—

**अक्खेवणिअक्खित्ता जे जीवा ते लभंति सम्मत्तं।**
**विक्खेवणीए भज्जं गाढतरागं व मिच्छत्तं ॥ २२ ॥ १०४ ॥**

**अक्खेवणिअक्खित्ता॰** गाहा। **अक्खेवणीए अक्खित्ता सम्मत्तं** लभेज्जा। **विक्खेवणीए** पुण भयणिज्जं **गाढतरागं व मिच्छत्तं**। आगाढमिच्छादिट्ठिस्स ससमतो वण्णिज्जंतो रोयति, मिच्छत्तोवहतत्तेण तस्स दोसा ण सद्दहति, सुहुमत्तणेण य अबुज्झमाणो अदोसा मण्णेज्जा, अतो भण्णति—**गाढतरागं व मिच्छत्तं** ॥ २२ ॥ १०४ ॥ एसा धम्मकहा मीसिता—

**धम्मो अत्थो कामो उवइस्सइ जत्थ सुत्त-कव्वेसु।**
**लोगे वेदे समए सा उ कहा मीसिया णामं ॥ २३ ॥ १०५ ॥**

**धम्मो अत्थो कामो॰** गाहा। लोग-वेत-समताविरोधेण जहिंतं धम्म-ऽत्थ-कामा तिण्णि वि कहिज्जंति सा मीसिता कधा। **लोए भारहादि। वेदे** जण्णकिरियादि। **समए तरंगवतियादि**। धम्म-ऽत्थ-काम-कहाओ कहिज्जंति एसा मीसा ॥ २३ ॥ १०५ ॥

कहापसंगेण विकहा भण्णंति। जहा विणट्ठसीला विसीला णारी एवं विणट्ठा कहा विकहा। सा पुण—

**इत्थिकहा भत्तकहा रायकहा चोर-जणवयकहा य।**
**नड-नट्ट-जल्ल-मुट्ठियकहा उ एसा भवे विकहा ॥ २४ ॥ १०६ ॥**

**इत्थिकहा॰** गाहा जहा **आवस्सए** ॥ २४ ॥ १०६ ॥ एताओ अक्खेवणिमादियाओ चत्तारि कहातो पुरिसं पप्प अकहातो विकहातो कहातो य भवंति। जहा एगारसं दुवालसंगं गणिपिडगं मिच्छादिट्ठिस्स सुतअण्णाण-भावेणं परिणमति, सम्मदिट्ठिस्स सुतनाणभावेणं, एवं कहातो पण्णवगं गाहगं च पडुच्च तिहा भवंति। तं जहा—

**एता चेव कहातो पण्णवगपरूवगं समासज्ज।**
**अकहा कहा व विकहा व होज्ज पुरिसंतरं पप्प ॥ २५ ॥ १०७ ॥**

**एता चेव कहातो॰** गाहा उत्तार्था ॥ २५ ॥ १०७ ॥ अकहा ताव एवं भवति—

**मिच्छत्तं वेदेंतो जं अण्णाणी कहं परिकहेइ।**
**लिंगत्थो व गिही वा सा अकहा देसिया समए ॥ २६ ॥ १०८ ॥**

**मिच्छत्तं वेदेंतो॰** गाहा ॥ २६ ॥ १०८ ॥ कहा पुण एवं—

**तव-संजमगुणधारी जं चरणरया कहेंति सब्भावं।**
**सव्वजगज्जीवहियं सा उ कहा देसिया समए ॥ २७ ॥ १०९ ॥**

---

१ य खं॰ ॥ २ "प्रज्ञापयतीति प्रज्ञापकः, प्रज्ञापकश्चासौ प्ररूपकश्चेति विग्रहः।......अन्ये तु-'प्रज्ञापकं-मूलकर्तारं प्ररूपकं-तत्कृतस्याख्यातारम्' इति व्याचक्षते"। इति हारि॰ वृत्तौ ॥ ३ वेएंतो वी॰। वेयंतो पु॰ सा॰ ॥ ४ चरणत्था सा॰ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**तवसंजम०** गाधा सिद्धा ॥ २७ ॥ १०९ ॥ विकहा एवं भवति—

**जो संजतो पमत्तो राग-दोस[1]वसगो परिकहेइ ।**
**सा उ विगहा पवयणे पण्णत्ता धीरपुरिसेहिं ॥ २८ ॥ ११० ॥**

**जो संजतो पमत्तो०** गाहा सिद्धा ॥ २८ ॥ ११० ॥ संजमगुणट्ठिएणं का कहा ण कहेतव्वा ? का वा कहेतव्वा ? । इमा ण कहेतव्वा—

**सिंगाररसु[2]गुतिया मोहकुवितफुंफु[3]गा हसहसेंति ।**
**जं सुणमाणस्स कहं समणेण ण सा कहेयव्वा ॥ २९ ॥ १११ ॥**

**सिंगाररसुग्गुतिया०** गाहा पाढसमा ॥ २९ ॥ १११ ॥ इमा पुण कहेतव्वा—

**समणेण कहेतव्वा तव-णियमकहा विरागसंजुत्ता ।**
**जं सोऊण [4]मणुस्सो वच्चइ [5]संवेग-णिव्वेगं ॥ ३० ॥ ११२ ॥**

**समणेण कहेतव्वा०** गाहा सिद्धा ॥ ३० ॥ ११२ ॥

**अत्थमहंती वि कहा अ[6]परिकेसबहुला कहेतव्वा ।**
**हंदि महया चडगरत्तणेण अत्थं कहा हणइ ॥ ३१ ॥ ११३ ॥**

**अत्थमहंती०** गाहा कमो ॥ ३१ ॥ ११३ ॥

**[7]देसं खेत्तं कालं सामत्थं चऽप्पणो वियाणेत्ता ।**
**समणेण उ अणवज्जा पगयम्मि कहा कहेयव्वा ॥ ३२ ॥ ११४ ॥**
**॥ तइयखुड्डियायारकहाए णिज्जुत्ती सम्मत्ता ॥**

**देसं खेत्तं कालं०** गाहा कमो ॥ ३२ ॥ ११४ ॥ कहा समत्ता । गतो नामणिप्फण्णो । सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेतव्वं जहा **अणुओगद्दारे** । तमिमं सुत्तं—

**१७. संजमे सुट्ठितप्पाणं विप्पमुक्काण ताइणं ।**
**तेसिमेतमणाइण्णं णिग्गंथाणं महेसिणं ॥ १ ॥**

**१७. संजमे सुट्ठितप्पाणं०** सिलोगो । संजमो सत्तरसविहो **दुमपुप्फिताए** भणितो [ पत्र १२ ], तम्मि संजमे सोभणं ठितो अप्पा जेसिं ते संजमे सुट्ठितप्पाणो । **विप्पमुक्काण** अब्भितर-बाहिरगंथबंधणविविहप्पगारमुक्काणं विप्पमुक्काणं । **ताइणं** त्रायन्तीति त्रातारः तेसिं ताइणं । ते तिविहा—आयतातिणो १ परतातिणो २ उभयताइणो ३ । आयतातिणो पत्तेयबुद्धा १ संसारमहाभयातो भवियजणमुपदेसेण त्रायन्तीति परतातिणो तित्थकरा । एत्थ चोदेति—अभव्वा वि सज्झातो(? सब्भावो)वदेसेण कहयंति ते किं तातिणो [भवंति] ? भण्णति, ते[हिं] अंधप्पईवधारितुल्लेहिं णाहिकारो २ । उभयतातिणो थेरा ३ । **तेसिमेतमणाइण्णं, तेसिं** पुव्वभणिताणं बाहिर-ऽब्भंतरगंथबंधणविप्पमुक्काणं आय-परोभयतातिणं एतं जं उवरिं एतम्मि अज्झयणे भण्णिहिति तं पच्चक्खं दरिसेति । एतं तेसिं **अणाचिण्णं** अकप्पं । अणाचिण्णमिति जं अतीतकालनिद्देसं करेति तं आय-परोभयतातिणिदरिसणत्थं, जं पुव्वरिसीहिं अणातिण्णं तं कहमायरितव्वं ? । **निग्गंथाणं** ति विप्पमुक्कता निरूविज्जति । **महेसिणं** ति इसी-रिसी, महरिसी—परमरिसिणो संबज्झंति, अहवा महानिति मोक्षो तं एसन्ति महेसिणो ॥ १ ॥

जं पुव्वभणितं **तेसिमेयं अणातिण्णं** ति तदुण्णयणं भण्णति—

---

१ °सधमओ परि° वी० ॥ २ °सुसुइया खं० । °सुसइया वी० पु० सा० ॥ ३ °गा सहासिंति सा० ॥ ४ मणूसो खं० ॥ ५ संवेय-णिव्वेयं पु० ॥ ६ अपरिकिलेस° सा० ॥ ७ खेत्तं देसं कालं सामत्थं वृद्ध० । खेत्तं कालं पुरिसं सामत्थं खं० वी० पु० सा० हाटी० ॥

Jain Education International      For Private & Personal Use Only      www.jainelibrary.org

**१८. उद्देसियं १ कीयगडं २ णि[1]याग ३ मभिहडं ति य ४ ।**
**राइभत्ते ५ सि[2]णाणे य ६ गंध ७ मल्ले य ८ वीयणे ९ ॥ २ ॥**

१८. **उद्देसियं कीयगडं०** सिलोगो । **उद्देसितं** जं उदिस्स कज्जति, **पिंडनिज्जुत्ती**ए से वित्थारो १ । **कीतकडं** जं किणिऊण दिज्जति २ । **णियागं** प्रतिणियतं जं निब्बंधकरणं, ण तु जं अहासमावत्तीए दिणे दिणे भिक्खागहणं ३ । **अभिहडं** जं अभिमुहमाणीतं उवस्सए आणेऊण दिण्णं । "**अ[3]भिहडाणी**"ति बहुवयणं **णियागा-ऽभिहडाणी**ति समासे कते दुवयणमवि पागते बहुवयणमेवेति ण विरोधो । अहवा अभिहडभेद-संबंधणत्थं, "सग्गाम परग्गामे०" गाहा **पिंडणिज्जुत्ति**गता [ गा० ३२९ पत्र १०२ ] ४ । **चसद्देण** ण केवलमेतदणातिण्णं किंतु उद्देसियवयणेण अविसोहिकोडी भणिता, सेसेहिं विसोहिकोडी । इदमवि अणातिण्णं—**रातिभत्ते सिणाणे य,** तं रातिभत्तं चतुव्विहं, तं जहा—दिवा घेत्तुं बितियदिवसे दिता भुंजति १ दिवा घेत्तुं रातिं भुंजति २ रातिं घेत्तुं दिया भुंजति ३ रातिं घेत्तुं रातिं भुंजति ४ । ५ । सिणाणं दुविहं—देसतो सव्वतो वा । दे[4]ससिणाणं लेवाडं मोत्तूणं जं णेव त्ति, सव्वसिणाणं जं ससीसो ण्हाति ६ । **गंध-मल्ले य वीयणे, गंधा** कोट्ठपुडादतो ७ । **मल्लं** गंथिम-पूरिम-संघातिमं ८ । **वीयणं** सरीरस्स भत्तातिणो वा उ[5]क्खेवादीहिं ९ ॥ २ ॥ इदमपि अणाइण्णं—

**१९. सण्णिही १० गिहिमत्ते य ११ रायपिंडे किमिच्छए १२ ।**
**[6]संवाधण १३ दंत[7]पहोयणा य १४ संपुच्छण १५ देहपलोयणा य १६ ॥ ३ ॥**

१९. **सण्णिही गिहिमत्ते य०** सिलोगो । **सण्णिही** सण्णिहाणं गुलादीणं १० । **गिहिमत्तं** गिहिभायणं कंसपत्तादि ११ । मुद्धाभिसित्तस्स रण्णो भिक्खा **रायपिंडो, रायपिंडे किमिच्छए** राया जो जं इच्छति तस्स तं देति एस रायपिंडो किमिच्छतो, तेहि णियत्तणत्थं एसणारक्खणाय एतेसिं अणातिण्णो १२ । इदमवि अणातिण्णं—**संवाधण दंतपहोयणा य, संवाधणा** अट्ठिसुहा मंससुहा तयासुहा [ रोमसुहा ] १३ । **दंतपहोवणं** दंताण कट्ठोदकादीहिं पक्खालणं १४ । **संपुच्छणं** जे अंगावयवा सयं न पेच्छति अच्छि-सिर-पिट्ठमादि ते परं पुच्छति 'सोभति वा ण व ?' त्ति, अहवा गिहीण सावज्जारंभा कता पुच्छति । अहवा एवं **पाढो**—"**संपुच्छ[8]णो**" कहंचि अंगे रयं पडितं पुंछति—लूहेति १५ । [ **देह** ]**पलोयणा** अंगमंगाइं पलोएति 'सोभंति ण व ?' त्ति १६ ॥ ३ ॥ अणातिण्णसेसासु पदिस्सति—

**२०. अट्ठावए य १७ णाली[9]या १८ छत्तस्स य धारऽणट्ठाए १९ ।**
**तेगिच्छं २० पाधणा पाए २१ समारंभं च जोतिणो २२ ॥ ४ ॥**

२०. **अट्ठावए य णालीया०** सिलोगो । **अट्ठावयं** जूयप्पकारो । रायारुहं णयजुतं गिहत्थाणं वा अट्ठावयं देति । केरिसो काले ? त्ति पुच्छितो भणति—ण याणामि, आगमेस्स पुण सुणका वि सालिकूरं ण

१ **णियागा-ऽभिहडाणि य** इति **णियागं अभिहडाणि य** इति च पाठभेदयुगलं **अगस्त्यचूर्णौ** दृश्यते । **णियागं अभिहडं ति य** खं १-२-३-४ जे० शु० वृद्ध० हाटी० ॥ २ **सणाणे** जे० खं ३ ॥ ३ "अभिहडं णाम अभिमुखमानीतम् । कहं? "सग्गाम परग्गामे निसिहाभिहडं च नोनिसीहं च ।" [ पिण्डनि० गा० ३२९ पत्र १०२ ] । अभिहडं जहा उवस्सए एव ठियस्स गिहंतराओ आणीयं एतमादी । एत्थ सीसो आह—'अभिहडाणि य' त्ति एत्थ बहुवयणअभिधाणं विरुद्धं चेव [ .................... ] । अहवा 'अभिहडाणि' त्ति बहुवयणेण अभिहडभेदा दरिसिता भवंति, कहं ? "सग्गाम परग्गामे णिसिहाभिहडं च णोणिसीहं च । णिसिहाभिहडं ठप्पं णो य णिसीहं तु वोच्छामि ॥ १ ॥" एयाए गाहाए वक्खाणं जहा **पिंडणिज्जुत्तीए**" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ४ "देससिणाणं लेवाडयं मोत्तूण सेसं अच्छिपम्हपक्खालणमेत्तमवि देससिणाणं भवइ ।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ५ उत्क्षेपः व्यजनविशेषः ॥ ६ **संबाहण** खं १-२-४ शु० हाटी० ॥ ७ **पहोवणा** खं ४ जे० ॥ ८ **संपुच्छणो** अचूपा० ॥ ९ **णालीय छ°** खं १-२ २-४ जे० शु० । **णालीए छ°** शुपा० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भुंजंति १७। **णालिया** जूयविसेसो, जत्थ 'मा इच्छितं पाडेहिति' त्ति णालियाए पासका दिज्जंति १८। **छत्तं** आतववारणं तस्स धारणमकारणे ण कप्पति [1]धारऽणट्ठाए १९। इदमवि अणातिण्णं–**तेगिच्छं पाघणा [पाए]**, **तेगिच्छं** रोगपडिकम्मं २०। **उवाहणा** पादत्राणं **पाए**। [2]एतं किं भण्णति? सामण्णे विसेसं ण (? विसेसणं) जुत्तं, निस्सामण्णं पाद एव उवाहणा भवति ण हत्थादौ, भण्णति–पद्यते येन गम्यते यदुक्तं नीरोगस्स नीरोगो वा पादो २१। **समारम्भं च जोतिणो, जोती** अग्गी तस्स जं समारंभणं एतदणाचिण्णं २२॥४॥

२१. सेज्जातरपिंडं च २३ [3]आसंदी २४ पलियंकये २५।
गिहंतरणिसेज्जा य २६ गायस्सुव्वट्टणाणि य २७॥ ५॥

२१. **सेज्जातरपिंडं च०** सिलोगो। **सेज्जा** वसती, स पुण सेज्जादाणेण संसारं तरति **सेज्जातरो**, तस्स भिक्खा सेज्जातरपिंडो, २३। **आसंदी पलियंकये, आसंदी** उपविसणं २४, **पलियंको** सयणिज्जं २५। **पाढविसेसो**–"**सेज्जातरपिंडं च आसण्णं परिवज्जए**।" एतम्मि पाढे सेज्जातरपिंड इति भणिते किं पुणो भण्णति "आसण्णं परिवज्जए"? विसेसो दरिसिज्जति–जाणि वि तदासण्णाणि सेज्जातरतुल्लाणि ताणि सत्त वज्जेतव्वाणि। **गिहंतरणिसेज्जा य,** गिहंतरं पडिस्सयातो बाहिं जं गिहं, गेण्हतीति गिहं, गिहं अंतरं च गिहंतरं, **गिहंतरणिसेज्जा** जं उवविट्ठो अच्छति, **च**सद्देण वाडग-साहि-णिवेसणादीसु २६। **गातं** सरीरं तस्स **उव्वट्टणं** अब्भंगणुव्वलणाईणि, एतं पि तेसिं अणाइण्णं २७॥ ५॥ इमं च अणातिण्णं—

२२. गिहिणो वेतावडियं २८ [4]जा य आ[5]जीविवित्तिया २९॥
[6]तत्तअनि[7]व्वुडभोती त ३० [8]आउरे सरणाणि य ३१॥ ६॥

२२. **गिहिणो वेतावडियं०** सिलोगो। **गिहीणं** वेयावडितं जं तेसिं उवकारे वट्टति २८। **आजीविवित्तिया** पंचविहा–"जाती कुल गण कम्मे सिप्पे आजीवणा उ पंचविहा।" जहा **पिंडनिज्जुत्तीए** [गा० ४३७ पत्र १२८] २९। **तत्तअनिव्वुडभोती त** जाव णातीवअगणिपरिणतं तं तत्तअपरिणिव्वुडं। अहवा तत्तं[10] पाणितं पुणो सीतलीभूतं आउक्कायपरिणामं जाति तं अपरिणयं **अणिव्वुडं**, [9]गिम्हे अहोरत्तेणं सचित्तीभवति, हेमंत-वासासु पुव्वण्हे कतं अवरण्हे। अहवा तत्तमवि तिन्नि वारे अणुव्वत्तं अणिव्वुडं, तं जो अपरिणतं भुंजति सो **तत्तअणिव्वुडभोती** ३०। **आउरे सरणाणि य,** छुहादीहिं परीसहेहिं आउरेणं सीतोदकादिपुव्वभुत्तसरणं, सत्तूहिं वा अभिभूतस्स सरणं भवति वारेति तोवेंसं वा देति तत्थ अधिकरणदोसा, पदोसं वा ते सत्तू जाएज्जा। अहवा **सरणं** आरोग्गसाला, तत्थ पवेसो गिलाणस्स, एतमणाइण्णं ३१॥ ६॥ इदं च—

२३. मूलए ३२ सिंगबेरे य ३३ उच्छुखंडे अणिव्वुडे ३४।
कंदे ३५ मूले य ३६ सच्चित्ते फले ३७ बीए य आमए ३८॥ ७॥

---

१ "तथा 'छत्रस्य च' लोकप्रसिद्धस्य धारणमात्मानं परं वा प्रति अनर्थायेति, आगाढग्लानाद्यालम्बनं मुक्त्वाऽनाचरितम्। प्राकृतशैल्या चात्रानुस्वारलोपोऽकार-नकारलोपौ च द्रष्टव्यौ, तथाश्रुतिप्रामाण्यादिति।" इति **हारि० वृत्तौ** पत्र ११७॥ २ "सीसो आह–पाहणागहणेण चेव नज्जइ–जातो पाहणाओ ताओ पाएसु भवंति, ण पुण ताओ गलए आबज्झंति, ता किमत्थं पायग्गहणं? ति। आयरिओ भणइ—पायग्गहणेण अकल्लसरीरस्स गहणं कयं भवइ, दुब्बलपाओ चक्खुदुब्बलो वा उवाहणाओ आविंधेज्जा, ण दोसो भवइ त्ति। किंच पादग्गहणेणं एतं दंसेति—परिग्गहियव्वा उवाहणाओ असमत्थेण, पओयणे उप्पण्णे पाएसु कायव्वा, ण उण सेसकालं" इति **वृद्धविवरणे**॥ ३ **आसण्णं परिवज्जए** अचूपा० वृद्धपा०॥ ४ **जा या आ°** खं ४॥ ५ **°जीवविवित्तिया** खं १–२–३–४ हाटी० वृद्ध०। **°जीववत्तिया** शु० जे०॥ ६ **तत्तानि°** खं २–४ शु०॥ ७ **°डभोइत्तं** खं १–२–४ जे० शु० वृद्ध० हाटी०॥ ८ **आउरस्सरणा°** खं २–३–४ जे० शु० हाटी०॥ ९ "तं च गिम्हे रत्तिं पज्जुसियं सचित्तीभवइ। हेमंत-वासासु पुव्वण्हे कयं अवरण्हे सचित्तीभवइ।" इति **वृद्धविवरणे**॥ १० अवकाशम्॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**२३. मूलए सिंगबेरे य०** सिलोगो । **मूलकं** सारुजाति ३२ । **सिंगबेरं** अलगं ३३ । **उच्छुखंडं** दोसु पोरेसु धरमाणेसु **अणिव्वुडं** । [ अणिव्वुडं ति ] मूलगादीहिं तिहिं वि संबज्झति, तं पुण जीवअविप्पजढं, **निव्वुडो** संतो मतो ३४ । तहा **कंदे मूले य सच्चित्ते फले बीए य आमए, कंदा** चमकादतो ३५ **मूला** भिसादतो ३६, **फला** अंबादतो ३७, **बीता** धण्णविसेसो ३८, **आमगं** अपरिणतं । पढमसिलोगसंबंधो तहेव ॥ ७ ॥ इदमवि अणाइण्णं—

**२४. सोवच्चले ३९ सिंधवे लोणे ४० रूमालोणे[1] य आमए ४१ ।**
**सामुद्दे ४२ पंसुखारे य ४३ कालालोणे य आमए ४४ ॥ ८ ॥**

**२४. सोवच्चले०** सिलोगो । **सोवच्चलं उत्तरावहे** पव्वतस्स लवणखाणीसु संभवति ३९ । **सेंधवं सेंधवलोणपव्वते** संभवति ४० । **रूमालोणं** रूमाए भवति ४१ । **सांभरिलोणं सामुद्दं**, समुद्दपाणीयं रिणे केदारादिकतमावट्टंतं लवणं भवति ४२ । **पंसुखारो** ऊसो कड्डिज्जंतो अड्डुप्पं भवति ४३ । **कालालोणं** तस्सेव **सेंधवपव्वतस्स** अंतरंतरेसु [ कालालोण ]खाणीसु संभवति ४४[2] । **आमगं** सच्चित्तं एतदपि अणाइण्णं ॥ ८ ॥ तहा—

**२५. धूवणे[3] त्ति ४५ वमणे य ४६ वत्थीकम्म ४७ विरेयणे ४८ ।**
**अंजणे ४९ दंतवणे य ५० गाताभंग ५१ विभूसणे ५२ ॥ ९ ॥**

**२५. धूवणे त्ति व०** सिलोगो । धूमं[4] पिबति 'मा सिररोगातिणो भविस्संति' आरोगपडिकम्मं, **अहवा "धूमणे"** त्ति धूमपाणसलागा, धूवेति वा अप्पाणं वत्थाणि वा ४५ । **वमणं** छड्डुणं ४६ । **वत्थिकम्मं वत्थी** णिरोहादिदाणत्थं चम्ममयो णालियाउत्तो कीरति तेण **कम्मं** अपाणाणं सिणेहादिदाणं वत्थिकम्मं ४७ । **विरेयणं** कसायादीहिं सोधणं ४८ । एताणि आरोग्गपडिकम्माणि रूव-बलत्थमणातिण्णं । **अंजणे दंतवणे य गाताभंग विभूसणे, अंजणं** णयणविभूसा ४९ **दंतमणं** दसणाणं ५० **गायब्भंगो** सरीरब्भंगण-मद्दणाईणि ५१ **विभूसणं** अलंकरणं ५२ एतं च अणाइण्णं ॥ ९ ॥

**"तेसिमेयमणातिण्णं"** [ सुत्रगा० १७ ] ति एकवयणनिद्देसेण संदेहो भवेज्ज–उद्देसितमेवमणातिण्णं, अतो संदेहनियत्तणत्थं भण्णति–**सव्वमेतं०** । अहवा पढममणाइण्णग्गहणं पयत्थेण संबंधाविज्जति, इदं तूवणयण-मेव–**सव्वमेतं०** । अहवा अदीवंते य दीवणत्थं भण्णति—

**२६. सव्वमेतमणातिण्णं णिग्गंथाण महेसिणं ।**
**[5]संजमम्मि उ[6] जुत्ताणं लहुभूयविधारिणं ॥ १० ॥**

**२६. सव्वमेतं०** [ सिलोगो ]। **सव्वं** असेसं । उद्देसियादि विभूसणंतं अणायरणकारणाणि–उद्देसिते सत्तवहो, कीतकडे गवादिअहिकरणं, णीताए तदड्डुपक्खडणं, आहडे छक्कायवहो, रातिभत्ते सत्तविराहणा, सिणाणे विभूसा-उप्पीलावणादि, गंध-मल्ले सुहुमघाय-उड्डाहा, वीयणे संपादिमवायुवहो, सण्णिहीए पिपीलियादिवहो, गिहिमत्ते आउ-कायवहो हिय-णट्ठे य दवावणं, रायपिंडे संबाहेण विराहणा उक्कोसलंभे य एसणाघातो, संवाहणे सुत्त-ऽत्थपलिमंथो [ अ ]तब्भावणं च, [ दंतपधोवणे ] दंतविभूसा, संपुच्छणे पावाणुमोदणं, संलोयणेण बंभपीडा, अट्ठावय-णालीयाए

१ **रोमालोणे** खं १-२-३-४ जे० शु० ॥ २ " सोवचलं नाम **सेंधवलोण**पव्वयस्स अंतरंतरेसु लवणखाणीओ भवति " इति **वृद्धविवरणे** ॥ ३ **धूमणे** अचूपा० ॥ ४ "धूपनमिति आत्म-वस्त्रादेरनाचरितम् । 'प्राकृतशैल्या अनागतव्याधिनिवृत्तये धूमपानम्' इत्यन्ये ।" इति हारि० वृत्तौ ॥ ५ **संजमं अणुपालेंति लहुभूयविहारिणो** वृद्ध० ॥ ६ **य** खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गेण्हणादतो उड्डाहो य, छत्ते उड्डाहो गव्वो य, तेगिच्छे सुत्त-ऽत्थपलिमंथो, उवाहणाहिं गव्वादि, जोतिसमारंभे कायवहो, सेज्जातरपिंडे एसणादोसा, आसंदी-पलियंकेसु सुसिरदोसा, गिहंतरणिसेज्जाए अगुत्ती बंभचेरस्स संकादतो य, [ गाउव्वट्टणाए गायविभूसा, ] गिहिणो वेतावडिए अहिकरणं, आजीववित्ती अणिस्संगता, तत्तानिव्वुडभोइयत्ते सत्तवहो, आउरसरणे उप्पव्वावणादि, मूलादिग्गहणे वणस्सतिघातो, सोवच्चलादीणं पुढविकायवहो, धूवणादि विभूसा । एते दोसा इति **सव्वमेतमणातिण्णं णिग्गंथाण महेसिणं** ति । **संजमम्मि उ जुत्ताणं संजमो** सत्तरसविहो, तुसद्दो हेतौ, जम्हा सव्वमेतमणातिण्णं अतो संजमे जुत्ताणं **लहुभूतविधारिणं** लहु जं ण गुरु, स पुण वायुः, **लहुभूतो** लहुसरिसो विहारो जेसिं ते लहुभूतविहारिणो ॥ १० ॥

तहा अपडिबद्धगामिणो ते जहुद्दिट्ठस्स दोसगणस्स अणायरणेण —

**२७. पंचासवपरिण्णाता तिगुत्ता छसु संजता ।**
**पंचनिग्गहणा वीरा[1] निग्गंथा [2]उजुदंसिणो ॥ ११ ॥**

२७. **पंचासवपरि॰** सिलोगो । **पंच आसवा** पाणातिवातादीणि पंच आसवदाराणि, परिण्णा दुविहा— जाणणापरिण्णा पच्चक्खाणपरिण्णा य, जे जाणणापरिण्णाए जाणिऊण पच्चक्खाणपरिण्णाए ठिता ते **पंचासवपरिण्णाता** । ते एव **तिगुत्ता** मण-वयण-कायजोगनिग्गहपरा । **छसु संजता छसु** पुढविकायादिसु त्रिकरणएकभावेण जता संजता । **पंचनिग्गहणा पंच** सोतादीणि इंदियाणि णिगिण्हंतीति । **वीरा** सूरा विक्रान्ताः । **निग्गंथा** इति जं पढमसिलोगभणितं तस्स निगमणमिदं, जम्हा तेसिं एवमणेगमणातिण्णं तिगुत्ता छसु संजता पंचणिग्गहणा वीरा य अतो ते निग्गंथा । अत एव य **उज्जुदंसिणो, उज्जु** संजमो समया वा, **उज्जू** राग-दोसपक्खविरहिता अविग्गहगती वा, उज्जू मोक्खमग्गो, तं पस्संतीति उज्जुदंसिणो, एवं च ते भगवंतो गच्छविरहिता उज्जुदंसिणो ॥११॥

जम्हा जम्मि काले जं दुक्खमभिभवति तमभिभवमाणा—

**२८. आतावयंति गिम्हासु[3] हेमंतेसु अवाउडा ।**
**वासासु पडिसंलीणा संजता सुसमाहिता ॥ १२ ॥**

२८. **आतावयंति गिम्हासु॰** सिलोगो । **गिम्हासु** थाण-मोण-वीरासणादि अणेगविधं तवं करेंति, विसेसेणं तु सूराभिमुहा एगपादट्ठिता उद्धभूता आतावेंति । हेमंते अग्गि-णिवातसरणविरहिता तहा तवो-वीरियसंपण्णा अवंगुता पडिमं ठायंति । सदा इंदिय-नोइंदियपडिसमल्लीणा विसेसेण सिणेहसंघट्टपरिहरणत्थं णिवातलत्तणगता[4] **वासासु पडिसंलीणा** ण गामाणुगामं दूतिज्जंति । अतो जता एकीभावेण **संजता सुसमाहिता** नाण-दंसण-चरित्तेसु सुट्ठु आहिता सुसमाहिता ॥ १२ ॥

**२९. परीसहरिवूंदंता[5] धुतमोहा जितिंदिता ।**
**सव्वदुक्खपहीणट्ठा पक्कमंति[6] महेसिणो ॥ १३ ॥**

२९. [ **परीसहरिवूदंता॰** सिलोगो ] । जम्हा उद्देसितादिभत्त-पाणपरिहरणेण आतावणाहि त छुहा-पिवासुण्ह-सीतसहा अतो ते परीसहरितुणो[7] दंता । **केई भणंति** "परीसहा एव रितुणो" । तहेव **धुतमोहा**

१ **धीरा** खं १-२-३-४ जे० शु० वृद्ध० हाटी० ॥ २ **उज्जुदं॰** खं ३ जे० शु० वृद्ध० ॥ ३ **गिम्हेसु** खं १-२-३-४ जे० शु० वृद्ध० हाटी० ॥ ४ निवातलयनगता ॥ ५ **रिऊ** खं १-२-३-४ जे० शु० ॥ ६ **ते वदंति सिवं गतिं ॥ १३ ॥ त्ति बेमि** इति आचार्यान्तरमतेन पाठभेदोऽत्रैवाध्ययनपरिसमाप्तिश्च सूचिता श्री**अगस्त्यसिंह**पादैरित्याचार्यान्तरमतेनाभिमतं **दुक्कराति करेंता णं॰** इति **खवेत्तु पुव्वकम्माणि॰** इति च सूत्रगाथायुगलं **प्राचीनवृत्ति**मध्यगतं बोद्धव्यम् । निर्दिष्टं चैतदगस्त्यपादैरिति ॥ ७ परीषहाणां रिपव इत्यर्थः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विकिण्णमोहा। **मोहो** मोहणीयमण्णाणं वा । जिताणि सोतादीणि इंदियाणि जेहिं ते **जितिंदिता** । **सवदुक्खपहीणट्ठा** सारीर-माणसाणि अणेगागाराणि सव्वदुक्खाणि, सव्वदुक्खाणं पहीणो अट्ठो जेसिं ते **सवदुक्खपहीणट्ठा** । सव्वदुक्खाणं **अट्ठो** अट्ठविधं कम्मं, अट्ठसद्दो कारणाभिधाती, जहा—किमत्थं जाति? कारणं पुच्छति। **"ते वदंति सिवं गतिं" ते** इति सव्वनामेण पत्थुतं संबज्झति, जेसिं तं अणेगमणाइण्णं जे पंचासवपरिण्णाता तिगुत्ता परीसहरिवूदंता **ते वदंति** व्रजन्ति यान्ति शांतिं **शिवं** सुखमेव तं सुखं गतिं, तं पुण णेव्वाणं। **केसिंचि "सिवं गतिं वदंती"**ति एतेण फलोवदरिसणोवसंहारेण परिसमत्तमिममज्झतणं, इति[1] बेमि त्ति सद्दो जं पुव्वभणितं तेसिं वृत्तिगतमिदमुक्कित्तणं सिलोकदुयं। **केसिंचि** सूत्रम्, जेसिं सूत्रं ते पढंति—**सवदुक्खपहीणट्ठा पक्कमंति महेसिणो, पक्कमंति** साधु क्रमंति **महेसिणो** महारिसतो ॥१३॥

**३०. दुक्कराति करेंता[2] णं दुस्सहाइं सहेत्तु य।**
**केइत्थ[3] देवलोएसु केइ सिज्झंति णीरता ॥ १४ ॥**

**३०. दुक्करातिं करेन्ता णं०** । दुक्खं कज्जति दुक्कराणि ताइं करेंता, **"आतावयंति गिम्हासु"** [ सूत्रगा० २८ ] एवमादीणि **दुस्सहादीणि [ सहेत्तु य ], केइत्थ देवलोएसु** सोहम्मादिसु, **केति** पुण केवलनाणमु[4]वलभित **सिज्झंति णीरता** ॥ १४ ॥

जे देवलोगेसु तेसिं किं तदेव फलं सामण्णस्स? न इत्युच्यते। कथं तर्हि? कदाति अणंतरे उक्कोसेण सत्त-ऽट्ठभवग्गहणेसु सुकुलपच्चायाता बोधिमुवलभित्ता सेसाणि—

**३१. खवेत्तु[5] पुव्वकम्माणि संजमेण तवेण य।**
**सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता तायिणो परिणिव्वुत ॥ १५ ॥ त्ति बेमि ॥**

**॥ खुड्डियायारकहाए तइयं अज्झयणं सम्मत्तं ॥**

**३१. खवेत्तु०** सिलोगो। **खवेत्तु पुव्वकम्माणि संजमेण तवेण य** पुव्वभणितेण **सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता तायिणो** सिद्धिमग्गं दरिसण-नाण-चरित्तमतं अणुप्पत्ता पच्छा ततो भवातो **तातिणो** पुव्वभणिता [ सूत्रगा० १७ चूर्णी ] **परिणिव्वुता** समंता णिव्वुता सव्वप्पकारं घाति-भवधारणकम्मपरिक्खते ॥ १५ ॥

धम्मे धितिमतो आयारसुट्ठितस्स फलोवदरिसणोवसंहारे कते णता—नायम्मि गेण्हितव्वे० गाहा। सव्वेसिं पि णयाणं० गाहा ॥

**एसणदोसा तणुपूयणं च कायवह सण्णिही जीवा।**
**सवमिदमणातिण्णं ततो फलं चेव ततियत्था[6] ॥ १ ॥**

**॥ खुड्डियायारकहावक्खाणलवो समत्तो ॥**

---

१ **इतिसद्दो बेमि त्ति** जं मूलादर्शे ॥ २ **करेत्ता णं** खं २-३-४ शु० हाटी० वृद्ध० ॥ ३ **केएत्थ** खं १-२ शु० ॥४ उपलभ्य ॥ ५ **खवित्ता पुव्वकम्माइं** खं १-२-३-४ जे० शु० वृद्ध० हाटी० ॥ ६ तृतीयाध्ययनगता अर्थाः—अर्थाधिकाराः विषया इत्यर्थः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# ४

# [ चउत्थं छज्जीवणियज्झयणं ]

धम्मे धितिमता जीवा[इ]परिण्णाणमायारसारक्खणत्थमवस्सकरणीतमिति **धम्मपण्णत्तीअज्झयणं खुड्डियायारकहाणंतरं** भण्णति। **छज्जीवणिया** चउत्थमज्झयणं। तस्स इमे अत्थाधिकारा—

**जीवा १ ऽजीवाहिगमो २ चरित्तधम्मो ३ तहेव जयणा य ४।**
**उवएसो ५ धम्मफलं ६ छज्जीवणियाए अहिगारा॥ १॥ ११५॥**

**जीवा-ऽजीवाहिगमो०** गाहा। पढमो जीवाहिगमो, **अहिगमो** परिण्णाणं १ ततो अजीवाधिगमो २ चरित्तधम्मो ३ जयणा ४ उवएसो ५ धम्मफलं ६॥ १॥ ११५॥

तस्स चत्तारि अणिओगद्दारा जहा **आवस्सए**। नामनिप्फण्णो भण्णति—

**छज्जीवणियाए खलु णिक्खेवो होइ नामणिप्फण्णो।**
**एएसिं तिण्हं पि उ पत्तेय परूवणं वोच्छं॥ २॥ ११६॥ दारगाहा॥**

**छज्जीवणियाए खलु०** गाहा। छज्जीवणियाए छ त्ति पदं जीव त्ति पदं निकाय इति पदं। तत्थ पढमं छ त्ति निक्खिवितव्वा। एक्कक्कस्स अभावे छण्ह वि अभावो, तम्हा एक्ककं निक्खिविस्सामि॥ २॥ ११६॥

एक्कको सत्तविहो—

**णामं १ ठवणा २ दविए ३ माउगपय ४ संगहेक्कए चेव ५।**
**पज्जव ६ भावे य ७ तहा सत्तेए एक्कगा होंति॥ ३॥ ११७॥**
**णामं १ ठवणा २ दविए ३ खेत्ते ४ काले ५ तहेव भावे य ६।**
**एसो उ छक्कगस्स[1] णिक्खेवो छविहो होइ॥ ४॥ ११८॥**

**णामं ठवणा०** गाहा जहा **दुमपुप्फिताए** [नि० गा० १]। इह संगहेक्कएण अधिकारो॥ ३॥ ११७॥

छसु परूवितेसु दुयादि तदंतग्गता परूविया एवेति छक्को भण्णति–[ **णामं ठवणा०** गाहा। ] तस्स छव्विहो निक्खेवो। तं जहा— णामछक्ककं ठवण० दव्व० खेत्त० काल० भावछक्ककं। णाम-ठवणातो गतातो १–२। दव्वछक्ककं तिविहं–सचित्तं अचित्तं मीसगं। सचित्तं जहा–छ म्मणूसा, अचित्तं काहावणा[2] छ, मीसं छ मणूसा सालंकारा ३। खेत्ते छ आगासपदेसा ४। काले छ स्समाओ उदुणो वा समया वा ५। भावे ओदयितोवसमित-खतित-खयोवसमिय-परिणामिय-सण्णिवातियभावा छ ६। इह पुण सचित्तदव्वछक्कएण अधिकारो॥ ४॥ ११८॥

अहुणा जीव इति पदं, तस्स दारा इमाहिं दोहिं गाहाहिं भणिता—

**जीवस्स उ निक्खेवो १ परूवणा २ लक्खणं च ३ अत्थित्तं ४।**
**अन्ना ५ ऽमुत्तत्तं ६ णिच्च ७ कारगो ८ देहवावित्तं ९॥ ५॥ ११९॥**
**गुणि १० उड्ढगतित्ते या ११ निम्मय १२ साफल्लता य १३ परिमाणे १४।**
**जीवस्स तिविहकालम्मि परिक्खा होइ कायव्वा[3]॥ ६॥ १२०॥**

**जीवस्स उ निक्खेवो०** गाहा॥ ५॥ ११९॥ **गुणि उड्ढगतित्ते०** गाहा॥ ६॥ १२०॥

पढमं दारं **जीवस्स निक्खेवो**। सो इमो—

१ °गस्स उ णि° वी०॥ २ कार्षापणाः॥ ३ णायव्वा वी०॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**णामं १ ठवणाजीवो २ दव्वजीवो य ३ भावजीवो य ४ ।**
**ओह[1] १ भवग्गहणम्मि य २ तब्भवजीवे य ३ भावम्मि ॥ ७ ॥ १२१ ॥**

**णामं ठवणा०** अद्धगाहा । णाम-ठवणातो गतातो १–२ । दव्वजीवो जं अजीवदव्वं जीवदव्वत्तेण परिणमिस्सति त्ति ओरालितातिसरीरपरिणामजोग्गं । तं कहं ? जीवो सरीरं च ण एगंतेण अत्थंतरं, जति अत्थंतरमेव सरीरभावभेदेसु ण सुह-दुक्खाणुभवणं होज्जा ३ । भावजीवो जीवदव्वं पज्जवसहभूतं । अहवा भावजीवो तिविहो– **ओह भवग्गहणम्मि य०** गाहापच्छद्धं ॥ ७ ॥ १२१ ॥ ओहजीवो—

**संते आउयकम्मे धरती तस्सेव जीवती[2] उदए ।**
**तस्सेव निज्जराए मओ त्ति सिद्धो नयमएणं १ ॥ ८ ॥ १२२ ॥**

**संते आउयकम्मे०** गाहा । **संते [ आउयकम्मे ]** आउयकम्मदव्वे विज्जमाणे, जाव ते आउपोग्गला सव्वहा न परिक्खीणा ताव कम्मसंताणाधिट्ठितो **धरति**, ण उ छिज्जति । **तस्सेव** आउयकम्मस्स जदा **उदतो** तदा **जीवति** त्ति भण्णति । **तस्स** निस्सेसक्खए **सिद्धो** भवति । जदा य सिद्धत्तणं पत्तो तदा सव्वणताण ओहजीवितं पडुच्च **मतो** । एतेण कारणेणं सव्वजीवा आउसद्दव्वताए[3] जीवंति एतं ओहजीवितं १ ॥ ८ ॥ १२२ ॥

भवजीवितं तब्भवजीवितं च एक्काए गाहाए भण्णति—

**जेण य धरति भवगतो जीवो जेण य भवाउ संकमई ।**
**जाणाहि तं भवाउं चउविहं २ तब्भवे दुविहं ३ । १ ॥ ९ ॥ १२३ ॥**

**जेण य धरति भवगतो जीवो०** गाहा । जस्स उदएण णरगादिभवग्गहणेसु जीवति जस्स य उदएण भवातो भवं गच्छति एतं भवजीवितं २ । तब्भवजीवितं दुविहं–तिरियाणं मणुयाण य । कहं पुण ? ते तिरिय-मणुया सट्ठाणतो उव्वट्टमाणा[4] पुणो तत्थेव उववज्जंति, जाव तत्थेव उववज्जंति ताव तब्भवजीवितं जीवंति ३ । १ ॥९॥१२३॥

**परूवण** त्ति दारं

**दुविहा य होंति जीवा सुहुमा तह बायरा य लोगम्मि ।**
**सुहुमा य सव्वलोए दो चेव य बायरविहाणे २ ॥ १० ॥ १२४ ॥**

**दुविहा य होंति जीवा०** गाहा । सुहुमा सव्वलोकपरियावण्णा । बादरा दुविहा–पज्जत्तका अपज्जत्तका य २ ॥ १० ॥ १२४ ॥ **लक्खणे** त्ति दारं–पच्चक्खमणुवलब्भमाणो (जीवो) जेणाणुमीयते 'अत्थि' त्ति तं लक्खणं । तं च इमाए **निज्जुत्तीए** भण्णति—

**आयाणे १ परिभोगे २ जोगु ३ वओगे ४ कसाय ५ लेसा य ६ ।**
**आणापाणू ७ इंदिय ८ बंधोदयनिज्जरा चेव ९ ॥ ११ ॥ १२५ ॥**
**चित्तं १० चेयण ११ सण्णा १२ विण्णाणं १३ धारणा य १४ बुद्धी य १५ ।**
**ईहा १६ मती १७ वितक्का १८ जीवस्स उ लक्खणा एए ३ ॥ १२ ॥ १२६ ॥ दारगाहाओ ॥**

**आयाणे परिभोगे०** गाहा । **चित्तं चेयण०** गाहा । **आयाणे** त्ति दारं–जहा अग्गिणो इंधणोवाताणं[5] लक्खणं एवं जीवस्स आयाणं लक्खणं । तं पुण गहणं । जहा लोहकारो तत्तमतोपिंडमण्णहाअसक्कं संडासएण गेण्हति[6], एवं जीवो संडासकत्थाणीएहिं सोतादीहिं[7] पंचहिं इंदिएहिं लोहपिंडत्थाणीया अण्णहाअगेज्झा[8] सद्द-रूव-रस-गंध-फासा गेण्हति १ ।

---

१ ओहे १ भवगह° खं० वी० पु० ॥ २ जीवए खं० ॥ ३ आयुःसद्द्रव्यतया ॥ ४ उद्वर्त्तमानाः ॥ ५ इन्धनोपादानम् ॥ ६ तप्तं अयःपिण्डं अन्यथाऽशक्यं सण्डासकेन गृह्णाति ॥ ७ श्रोत्रादिभिः ॥ ८ °अगेज्झा सद्द° मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**परिभोगे** त्ति दारं–अत्थि जीवो, परिभोगादिति हेतुः, [1]दिट्ठंतो–ओदेणवट्टितं ण य अप्पाणमुपभुंजति भुञ्जती य, तत्थ अवस्समत्थंतरभूतेण भोत्तारेण भवितव्वं, सो य जीवो २।

**जोगे** त्ति दारं–मण-वयण-कायजोगेहिं जीव एव जुज्जति ३।

**उवओग** इति दारं–सो य संवित्त(? त्ति)रूवो संवेयणेण जीव एव उवजुज्जति ४।

**कसाया** इति दारं–अत्थि जीवो कसायाणुमितो, कसाया कोधादतो, जो कोधादीहिं संजुज्जति सो जीवो। वैधम्मेण घडो निदरिसणं, ण कदाचि घडो कोधादीहिं संजुज्जति, अतो कोहसहभावादत्थि जीवो ५।

**लेसे**ति दारं–अंतग्गतो परिणामविसेसो लेस्सा। जहा सतिघातित्तणेण कोति अप्पाणं निंदंतो घातेति, कोति कारणतो, कोति हरिसितो, एतं पि जीवस्स, न कुंभस्स ६।

**आणापाणु** त्ति दारं–णासिकागतस्स वातस्स अंतो अणुप्पवेसणमाणू, पणूहिं निच्छुभणं, आणापाणू एतं जीवे, ण घडादाविति जीवलक्खणं ७।

**इंदिये** त्ति दारं–इंदिएण सूतिज्जति जो अत्थो सो अत्थि, सो य जीवो। उत्तं च–"इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गम्" [ ] एवमादि। तेण इन्द्रो जीवो, तस्स जं उवलिंगणं तं पुण सोतादि। चोदको भणति–आदाणमेव अत्थो? आयरिया भणंति–तत्थ दव्विंदियगहणमिह भाविंदियस्स, अहवा तत्थ गेण्हितव्वं इह गाहगं ८।

**कम्मबंधोदयणिज्जरा** समाणं दारं–जस्स एताणि स जीवो। आहारकिया णिदरिसिज्जति–जहा आहारो आहारितो सरीरेण संबंधं जाति, तेत्ति-[2]बलादीहि उदिज्जति, कालंतरेण निज्जिण्णो भवति; एवं जीवो सकसातो कम्मं बंधति, तस्सेव य वेदणोदयमणुभवति, तदाणंतरं च निज्जरेति ९॥ ११ ॥ १२५॥

**बितियगाहाए अत्थो**। तत्थ पढमं **चित्तं** ति दारं–चित्तमवि जीवलक्खणं। **चित्त**मतीता-ऽणागतविसयं १०।

**चेदणा** वट्टमाणा, देवदत्त इति भणिते जं देवदत्तस्स अहमिति मती संजायति ११।

पुव्वदिट्ठमत्थमाहितसंस्कारादि एसा **सण्णा**, आहारादि**सण्णा** वा १२।

विविहेहिं ऊभा-ऽवोहादीहिं जेण उवलभति तं **विण्णाणं** १३। अतीतगंथधरणं **धारणा** १४।

समतीते सत्थत्थभावभासणं **बुद्धी** १५। खाणु-पुरिससन्देहे उभयलक्खणाणुचिंतण**मीहा** १६।

तदेकतरपरिच्छेदो **मती** १७। एगवत्थुगयमणेगैत्थसंभावणं **वितक्का** १८।

एताणि जहुद्दिट्ठाणि लक्खणाणि जम्मि एगम्मि अत्थे संभवंति सो जीव इति पदत्थो अत्थि ३॥१२॥१२६॥

**अत्थि** त्ति दारं जहा—

> **सिद्धं जीवस्स अत्थित्तं सद्दादेवाणुमीयते।**
> **णासतो भुवि भावस्स सद्दो भवति केवलो ॥ १३ ॥ १२७ ॥**

**सिद्धं जीवस्स अत्थित्तं०** गाहापुव्वद्धं। जं जीवस्स अत्थित्तं तं जीवसद्दादेव सिज्झति। कहं? असंते जीवदव्वे जीवसद्दो न होज्जा, पसिद्धो य जीवसद्दो लोगे, तम्हा अत्थि जीवदव्वं जस्स जीव इति निद्देसो। चोदेति–खरविसाण-कुम्मरोमादिसद्दा लोके पयुज्जंति, ण य ताणि अत्थि, अतो गुरू इमं गाहापच्छद्धमाह–**णासतो**

१ "एत्थ दिट्ठंतो उदएण (? ओदण) वट्टिय जं–जहा उदएण (? ओदण) वट्टियाओ भोत्ता अण्णो अत्थंतरभूओ एवं सरीराओ अत्थंतरभूतेण अण्णेण भोत्तारेण भवितव्वं, सो य जीवो।" इति **वृद्धविवरणे**॥ २ ओदनवर्त्तिका॥ ३ सूच्यते॥ ४ तृप्ति-बलादिभिरुदीयते॥ ५ ऊहा-ऽपोहादिभिः॥ ६ स्वमत्या शास्त्रार्थभावभाषणम्॥ ७ अनेकार्थसम्भावनम्॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**भुवि भावस्स सद्दो भवति केवलो।** ण किर सव्वहा असतो भावस्स लोके केवलो सद्दो पसिद्धो, उपपदसहितो पजुज्जति, खरविसाणसद्दादतो ण केवला उवलब्भंति, किं तर्हि? खरसद्दो खरे वट्टति विसाणसद्दो गवादौ, तस्स गवि सण्णिहितस्स विसाणस्स खरपयत्थे[1] समवातं पडिसेहेति, णत्थि खरविसाणं, एवं कुम्मरोमादि, जीवसद्दो पुण णिरुपपदो पसिद्धो, तम्हा इच्छा-वितक्कादिलक्खणमत्थि जीवदव्वं ॥ १३ ॥ १२७ ॥

**सुण्णवादी** भणति—जदि जीवसद्दो जीवअत्थित्तं साहति एवं सुण्णसद्दो सुण्णतावादसाहओ भविस्सति?। एत्थ उत्तरं—केणति दव्वेण विरहितं किंचि वत्थुं सुण्णं भवति, देवदत्तविरहेणं घरं सुण्णं, उभयं च तदत्थि ॥ किंच—

**मिच्छा भवेतु[2] सव्वत्था जे केई पारलोइया।**
**कत्ता चेवोपभोत्ता य जदि जीवो ण विज्जई ॥ १४ ॥ १२८ ॥**

**मिच्छा भवेतु सव्वत्था०** गाहा। जदि णत्थि जीवो तो दाणमज्झयणादीणं[3] णत्थि फलं, ण वि य सुकड-दुक्कडाणं[4] कारओ वेदओ वा ॥ १४ ॥ १२८ ॥ इतो य अत्थि जीवो—

**लोगसत्थाणि[5]** ............................... ।
............................................................ ॥ १५ ॥ १२९ ॥

**लोगसत्थाणि०** गाहा। **लोके व्यासो**क्तमिदम् "अच्छेद्योऽयं०" [ भगवद्गीता अ० २ श्लो० २४ ]। **वेदे** पत्तेयजण्णफलाणि भणिताणि, ताणि सति अत्थित्ते भवंति। परसमए **बुद्धस्स पंच जातकसताणि** वण्णिज्जंति।

**कापिला** भणंति—

जं इंदिएहिं दीसति तं सव्वमचेतणं तहा ताइं। जो पेच्छति ण य दीसति भुंजति ण य भुज्जति अभोत्ता ॥१॥

**काणादा** वि "पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशं कालो दिगात्मा मन इति द्रव्याणि" [ वैशेषिकदर्शन अ० १ आ० १ सू० ५ ]। ते आत्मद्रव्यं तदर्थं च धर्मव्याख्यानमिच्छंति, अतो लोकसंपडिवत्तितो विज्जते अप्पा ॥ १५ ॥ १२९ ॥ इतो य—

**फरिसेण जहा वाऊ गेज्झती कायसंसितो।**
**णाणादीहिं तहा जीवो गेज्झती कायसंसितो ॥ १६ ॥ १३० ॥**

**फरिसेण जहा वाऊ०** गाहा। जहा वाऊ पच्चक्खओ मंसचक्खुणा अणुवलब्भमाणो वि तक्कंपादीभि[6] सूतिज्जति तहा जीवो पच्चक्खमणुवलब्भमाणो वि बुद्धि-सुह-दुक्खादीहिं सूतिज्जति 'अत्थि' त्ति। तहा—

उवओग-जोग-इच्छा-वितक्क-णाण-बल-चेट्ठितगुणेहिं। अणुमाणा णायव्वो पच्चक्खमदीसमाणो वि ॥ १ ॥
[ ] ॥ १६ ॥ १३० ॥

एत्थ चोदणा—अणुमाणतो गहणमिति भणितं तदपि पच्चक्खपुव्वकमणुमाणं, ण य [अप्पा]पच्चक्खमुवलद्धपुव्वो त्ति णाणुमाणगेज्झो, उत्तरं—

**अणिंदियगुणं जीवं दुन्नेयं मंसचक्खुणा।**
**सिद्धा पासंति[7] सव्वण्णू णाणसिद्धा य साहुणो ४ ॥ १७ ॥ १३१ ॥**

**अणिंदियगुणं०** गाहा। णातमिंदियपच्चक्खो[8] अप्पा पतिण्णा, अरूवित्तं हेतुः, दिट्ठंतो आकाशम्, जहा आकासमरूवी इंदियपच्चक्खं न भवति तहा। अरूवि जीवं **सव्वण्णुणो सिद्धा णाणसिद्धा य साहुणो पासंति**, तम्हा अरूवित्तादाकासवदणिंदियगेज्झो[9] ४ ॥ १७ ॥ १३१ ॥

---

१ **खरपत्थए सम**° मूलादर्शे। खरपदार्थे समवायं प्रतिषेधति ॥ २ भवेयुरित्यर्थः ॥ ३ दाणमज्झयणादीणं इत्यत्र मकारोऽलाक्षणिकः, दाना-ऽध्ययनादीनामित्यर्थः ॥ ४ **सुकर-दुक्कराणं** मूलादर्शे ॥ ५ नेयं निर्युक्तिगाथोपलब्धा कस्मिंश्चिदपि निर्युक्त्यादर्शे ॥ ६ तत्कम्पादिभिः सूच्यते ॥ ७ **पस्संति** खं० वी० पु० ॥ ८ न अयं इन्द्रियप्रत्यक्ष इत्यर्थः ॥ ९ अरूपित्वाद् आकाशवद् अनिन्द्रियग्राह्यः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**अणत्ता-ऽरूवित्त-सासतत्ताणि** तिण्णि वि दाराणि समतमेताहिं[1] दारगाहाहिं भण्णंति—

**कारणविभाग १ कारणविणास २ बंधस्स पच्चयाभावा ३ ।**
**विरुद्धस्स य अत्थस्साऽपादुब्भावा ४ ऽविणासा य ५ ॥ १८ ॥ १३२ ॥**
**निरामया-ऽऽमयभावा ६ बालकयाणुसरणा ७ दुवट्ठाणा ८ ।**
**सोताईहिं[2] अगहणा ९ जाईसरणा १० थणभिलासा ११ ॥ १९ ॥ १३३ ॥**
**सव्वण्णुवदिट्ठत्ता १२ सकम्मफलभोयणा १३ अमुत्तत्ता १४ ।**
**जीवस्स सिद्धमेवं णिच्चत्तममुत्तमण्णत्तं ५।६।७ ॥ २० ॥ १३४ ॥**

**कारणविभाग०** गाहा । **निरामय०** गाहा । **सव्वण्णुवदिट्ठत्ता०** गाहा । णिच्चो जीवो, कारणविभागस्स अभावात्, [ जहा आगासस्स, ] वैधम्मेण दिट्ठंतो घडो, पडकारणाणि तंतुणो, ते पत्त-पोत्तादीण विभज्जंति, सति विभागे पडा[3] सूवो भवति; जति एवं जीवस्स तंतुसरिसाणि कारणाणि भवेज्ज ततो तेसिं विभागे विणसेज्ज, तदभावे णिच्चो, जम्हा णिच्चो अतो अरूवी सरीरातो य अण्णो १ ।

**विणासकारणअभावो** त्ति दारं—णिच्चो जीवो, जम्हा तस्स विणासकारणस्स अभावो, दिट्ठंतो घडो, जहा घडस्स मोग्गराभिघातादीणि विणासकारणाणि भवंति ण तहा जीवस्स विणासकारणमत्थि, तम्हा विणासकारणाभावा णिच्चो जीवो । एवं च अरूवी सरीरातो य अण्णो २ ।

**बंधपच्चयअभावो** त्ति दारं-णिच्चो जीवो, खणविणासे बंधाभावदोसापत्तेः, दिट्ठंतो घडो, जहा अविणट्ठो घडो जलाहरण-धारणसमत्थो भवति तहा जदि जीवो ण भवति खणभंगुरो ततो तस्स बंधो मोक्खो वा घडति, तम्हा णिच्चो, अत एव अरूवी सरीरातो य अण्णो त्ति । एस बंधपच्चयअभावो ३ ।

**विरुद्धअत्थअप्पादुब्भाव** इति दारं—णिच्चो जीवो, विरुद्धदव्वअप्पादुब्भावादिति हेतुः, दिट्ठंतो संकुका[4], जहा धाणविणासे तव्विरुद्धा सत्तुका पादुब्भवंति, ण एवं जीवदव्वविणासे किंचि विरुद्धदव्वं पादुब्भवति, तम्हा णिच्चो, अत एव अरूवी सरीरातो य अण्णो त्ति ४ ।

**अविणासो**[5] त्ति दारं—णिच्चो जीवो, विणासकारणस्स अभावा, दिट्ठंतो आगासं, जहा आगासस्स विणासकारणं नत्थि तं णिच्चं, एवं जीवस्स वि विणासकारणं नत्थि तम्हा निच्चो, अत एव य अरूवी सरीरत्थंतरभूतो य ५ । पढमगाहाए अत्थो ॥ १८ ॥ १३२ ॥

**बितियगाहत्थे पढमं दारं**—णिच्चो जीवो, णिरामय-आमयभावेण, इह जीवो णिच्चत्ते सति णिरामतो[6] सामतो य भवति, दिट्ठंतो परकतावराहे गहणाभावो, जदि खणे खणे उप्पज्जति विणस्सति य ततो तस्स निरामय[-आमय]भावो ण जुत्तो, अवत्थितो पुण निरामतो सामतो वा भवेज्जा, आमतो रोगो, तम्हा णिरामय-आमयभावा णिच्चो, अत एव य अरूवी सरीरातो य अण्णो । एस निरामय-आमयभावो ६ ।

**बालकताणुसरणं** ति दारं—णिच्चो जीवो, पुव्वाणुभूतसरणं से हेऊ, दिट्ठंतो देवदत्त-जण्णदत्ता सरणाऽसरणे, देवदत्ते कतोति[7] थाणातो अवगते जण्णदत्ते आगते जं तत्थ देवदत्तेण कतं तं जण्णदत्तो न सरति, न य तहा सतमणुभूतं ण सरति, कुमारभावे कतं जोव्वणत्थो सरति, तम्हा णिच्चो, बालाणुभूतसरणातो, एवं च अरूवी सरीरातो य अण्णो ७ ।

---

१ समकं युगपदित्यर्थः ॥ २ **सोयाईहि** वी० । **सुत्ताईहि** पु० सा० ॥ ३ पटात् सूत्रं भवति ॥ ४ सक्तुकाः ॥ ५ "अविणासी खलु जीवो विगारऽणुवलंभओ जहाऽऽगासं ।" इति **दशवै० भाष्ये** गा० ४७ पत्र १३१ । "अविनाशी आत्मा, विरोधिविकारासम्भवात्, आकाशवत् ।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ६ निरामयः सामयः ॥ ७ कुतश्चित् स्थानादपगते ॥

**उवट्ठाणं** ति दारं–णिच्चो जीवो, अण्णम्मि काले उवट्ठाणेण सूतिज्जति, इह भवे करिसकादी करिसणकाले कतस्स कम्मस्स उत्तरकालमुवट्ठाणं दिट्ठं, तहेव पुव्वसुकतकारिणो विपुलभोगसमाउत्ता दीसंति, केति पुण दुक्कयकारिणो दीणा-ऽणाह-विकला दीसंति, तम्हा सुभा-ऽसुभकम्मोवत्थाणसूतितो णिच्चो जीवो, अत एव अरूवी सरीरातो य अण्णो ८।

**सोतादिअग्गहणं** ति दारं–णिच्चो जीवो, सोतादिअग्गहणेण कारणेणं, दिट्ठंतो आगासं, जहा आकासममुत्तं इंदिएहिं अणुवलब्भमाणं निच्चं, एवं जीवो वि सोतादीहिं ण घेप्पति तम्हा निच्चो, अत एव अरूवी सरीरातो य अण्णो ९।

**जातिसरणं** ति दारं–णिच्चो जीवो, जातीसरणेण साहिज्जति, एत्थ लोकदिट्ठमवलंबिज्जति, गोवालादयो वि पडिवज्जंति–जहा जातीसरणमत्थि, [1]अक्खाइतोवक्खातियासु य लोइया पडिवज्जंति–अमुको जातीसरो, तम्हा जातिसरणा णिच्चो अरूवी सरीरातो य अण्णो १०।

**थणाभिलासो** त्ति दारं–णिच्चो जीवो, जातमेत्तत्थणाभिलासेण नज्जति, दिट्ठंतो इह पुव्वाणुभूत[चूता]भिलासी देवदत्तो, जहा देवदत्तस्स परिपक्कं सुगंधमम्बफलमण्णेण खज्जमाणमवलोएंतस्स तग्गताभिलासेण मुहं [2]पजातलालपरिस्संदं भवति ण तहा भूमिघरसंठितस्साणुवलद्धचूत[3]फलासातस्स, तम्हा जम्माणंतरसमयथणाभिलाससूतियमिमस्स जीवियस्स निच्चत्तं, तहा य अरूवी सरीरप्पिहभूतो य ११। बितियगाहत्थो गतो ॥ १९ ॥ १३३ ॥

**ततियगाहा पभण्णति–सव्वण्णुवदिट्ठत्ता** [ इति ] दारं–णिच्चो जीवो, सव्वण्णुवदिट्ठ इति, ते हि भगवंतो ण मिच्छा पेच्छंति उवदिसंति वा।

वीतरागो हि सव्वण्णू मिच्छं णेव पभासती। जम्हा [ तम्हा ] वती तस्स तच्चा भूतत्थदरिसणी ॥ १ ॥

तम्हा णिच्चो जीवो अरूवी सरीरातो य अण्णो १२।

**सकम्मफलभोयणे**ति दारं–सकम्मफलभोयणा णिच्चो जीवो, इह करिसगादतो सचेट्ठितस्स सुद्धायारा सुभफलमणुभवंति, चोरादतो विपरीतं, तम्हा सकम्मफलभोयणतो साहिज्जति णिच्चो, तहा य सरीरातो य अण्णो अरूवी य १३।

**अमुत्त** त्ति दारं–णिच्चो जीवो, अरूवित्तणं णिच्चत्ते हेतू, दिट्ठंतो आकासं, जहाऽऽकासममुत्तं णिच्चं एवं जीवो वि, अत एव अरूवी सरीरातो य अण्णो १४। ततियगाहा गता। अण्णत्तं अरूवी णिच्चत्तणं भणितं ५।६।७॥ २० ॥ १३४ ॥

**कारतो** त्ति दारं–कारतो जीवो, सुभा-ऽसुभाणं कम्माणं सुभा-ऽसुभफलाणुभवणेणं सूतिज्जति, वैधम्मदिट्ठंतो आगासं, जहा आगासमकारगं ण सुभा-ऽसुभफलमणुभवति ण तहा जीवो ण संजुज्जति, तस्स सुहा-ऽसुहेण कम्मुणा सुभा-ऽसुभफलाणुभवणं भवति तम्हा कारओ ८।

**देहवावि** त्ति दारं–देहवावी जीवो, देहे लिंगोवलद्धितो, दिट्ठंतो अग्गी, जहा [4]इंधणसमवातमारुतेरितो हुयासणो जम्मि पदेसे तम्मि डहण-पयण-पगासणाणि भवंति तधा जीवो वि चेतणाआकुंचण-पसारणादीणि सरीरमेत्ते दरिसेति ण सव्वत्थ, तम्हा सरीर एव तल्लिंगोवलद्धितो साहिज्जति जहा देहवावी ९। **मूलदारगाहा** समत्ता ॥

**बितियगाहोवदरिसणं**। तत्थ पढमं दारं **गुणि** त्ति–गुणी जीवो पत्तेयविसेसाभिसंबंधे सूतिज्जति, दिट्ठंतो घडो, जहा रूवादीहिं ण विरहिज्जति तहा जीवस्स चेतणत्तादीणि गुणा, तम्हा गुणसंबंधी जीवो १०।

---

१ आख्यायिकोपाख्यायिकासु ॥ २ प्रजातलालापरिस्यन्दम् ॥ ३ फलास्वादस्य ॥ ४ इन्धनसमवायमारुतेरितः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**उड्ढगति** त्ति दारं–सभावतो उड्ढगती जीवो, जतो अगरुलहू । किं पुण जाति ? कहं वा जाति ? एत्थ दिट्ठंतो अलाबुकं–जहा [1]अलाबुपत्तं कुसोवणिबद्धं अट्ठहिं मत्तियालेवेहिं लित्तं परिसुक्खमगाहे जले पक्खित्तमुवलेव-तोरवेण जलतलमतिवतित्ता धरणितलपतिट्ठाणं भवति, लेवावगमे सभावप्रेरितं धरणितलातो [3]समुप्पतितमंतज्जलमुल्लंघेऊण जलोपरितलसमस्सियं भवति; एवं जीवो वि अट्ठकम्मप्पगडिगुरुभराभिभूतो संसारपरिकिलेसजलतले विणिमज्जति, [4]कम्मप्पगडिपरिक्खते णिव्वाघातलद्धस्सभावो संसारमंतज्जलत्थाणीयमतिवतित्ता मोक्खोपरितलपइट्ठो भवति, रतो (? अधो) वि ण जाति, जहा उदगाभावे तुंबमेव, अत्थित्तसमत्थणायैवेदमवि ११ ।

**निम्मय** इति दारं–**निम्मय** इति न कस्सति विकारो अवयवो वा, जहा [5]जवमया सत्तुता, सीसवामतो मंचतो, जो य तहाभूतो सोऽवस्साविणासी, तहा य जीवो, तेण णिच्चो अत्थि य । कारणविणासविभागे कारणमुहेण, इह वत्थुपहाणं परूवणं । णिम्मय इति गतं १२ ।

**साफल्ल** इति दारं–एवं च अत्थि णिच्चो अण्णो कारतो अरूवी य जतो सफला, फलं पुण से सुहा-ऽसुह-कम्माणं सुह-दुक्खरूवं, सकम्मफलभोयणे **काविल**दिट्ठीणिवारणं–जहा गुणा करेंति अप्पा भुंजति, इह फलो-ववत्तिमत्तं जहा तरुम्मि । साफल्लय त्ति गतं १३ । **परिमाण**मिति दारं । [6]तत्थ तं परिमाणं दुविहं, तं जहा–एगस्स य अणेगाण य । एगस्स ताव परिमाणं भण्णति—

> **जीवस्स उ परिमाणं वित्थरओ जाव लोगमेत्तं तु ।**
> **ओगाहणा य सुहुमा तस्स पदेसा असंखेज्जा ॥ २१ ॥ १३५ ॥**

**जीवस्स उ परिमाणं०** गाहा । जदा केवली समुग्घायगतो भवति तदा लोगं पूरेति जीवपदेसेहिं, एक्केक्को जीवपदेसो पिहीभवति, एवं ओगाहणे सुहुमं । असमुग्घायगतस्स जीवपदेसा उपरि उपरि भवंति । ते य **पदेसा असंखेज्जा**, जावतिया लोगागासपदेसा तावतिया जीवपदेसा वि एकजीवस्स परिमाणं भणितं ॥ २१ ॥ १३५ ॥ अणेगजीवाणं परिमाणं भण्णति ? केत्तिया पुण सव्वजीवा परिमाणतो ?—

> **पत्थेण व कुलएण व जह कोइ मिणेज्ज सव्वधण्णाइं ।**
> **एवं मविज्जमाणा हवंति लोगा अणंता उ १४ ॥ २२ ॥ १३६ ॥**

**पत्थेण व कुलएण व०** गाहाव्याख्या–जहा कोति सव्वधण्णाणि एगट्ठीकारेत्ता **पत्थेण व कुलएण वा** मवेज्जा । **कुलतो** धण्णमाणविसेसो, ते चत्तारि **पत्थो** । असब्भावपट्ठवणाए जति कोति लोगं कुलवं पत्थं वा कातुं अजहण्णमणुक्कोसियाए ओगाहणाए लोगं पुणो पुणो पूरेत्ता अलोए पक्खिवेज्जा, ततो एगो दो तिण्णि एवं गणिज्जमाणा अणंता लोगा । अहवा लोगस्स एक्केक्कम्मि पदेसे एक्केक्कं जीवं बुद्धीए ठावेत्ता जाव लोगो भरितो ताहे अलोगे पक्खिवति, एगो दो तिण्णि, एवं मविज्जमाणा अणंता लोगा १४ । एतं परिमाणं ॥ २२ ॥ १३६ ॥

जीव इति पदं समत्तं । **निकाय** इति दारं—

> **णामं १ ठवण २ सरीरे ३ गती ४ णिकाय ५ ऽत्थिकाय ६ दविए य ७ ।**
> **माउग ८ पज्जव ९ संगह १० भारे ११ तह भावकाए १२ य ॥ २३ ॥ १३७ ॥**
> **एक्को कातो दुहा जातो, एगो चिट्ठति एगो मारितो ।**
> **जीवंतो मएण मारितो, तं लव माणव ! केण हेउणा ? ॥ २४ ॥ १३८ ॥**

---

१ अलाबुपात्रम् ॥ २ उपलेपगौरवेण जलतलमतिव्रज्य अतिपत्य वा ॥ ३ समुत्पतितमन्तर्जलमुल्लङ्घ्य जलोपरितलसमाश्रितं भवति ॥ ४ कर्मप्रकृतिपरिक्षये निर्व्याघातलब्धस्वभावः संसारमन्तर्जलस्थानीयमतिपत्य ॥ ५ यथा यवमयाः सक्तुकाः, शिंशपामयो मञ्चकः ॥ ६ **तत्थ–एगस्स अणेगाण व० गाहा । तं परिमाणं** मूलादर्शे । **वृद्धविवरणे**ऽयमित्थंरूपः पाठ उपलभ्यते, तथाहि—"प्रमाण-निर्धारणार्थमिदमुच्यते—एगस्स अणेगाण य, तं परिमाणं दुविहं भवइ, तं जहा—एगस्स अणेगाण य । तत्थ एगस्स ताव परिमाणं भण्णइ—**जीवत्थिकायमाणं० गाहा** ।" इति पत्र १२८, चिन्त्यश्चायं पाठः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**णामं ठवण सरीरे॰** गाहा । णाम-ठवणातो गतातो १ । २ । सरीरकातो सरीरमेव ३ । तेयग-कम्मगेहि भवंतरं गच्छति ताइं गतिकातो, जो वा जाए गतीए कातो भवति जं सरीरमिति, जहा नेरइयाणं वेउव्विय-तेया-कम्मका तिण्णि सरीरा, एवं सेसाण वि गतीणं ४ । णिकायकातो छज्जीवणिकाया पुढविक्काइयादि ५ । अत्थिकाय-कातो धम्मादि पंच अत्थिकाया ६ । दवियणिकातो तिप्पभिति दव्वाणि एगतो मिलिताणि दव्वकातो, जहा तिदंडगं ७ । मातुकातो तिप्पभिति मातुअक्खराणि ८ । पज्जवकातो दुविहो, तं०—जीवपज्जवकाओ अजीवपज्जवकातो य । तिप्पभिती कालवण्णपज्जवादि अजीवपज्जवकातो । णाणादि तिप्पभिती जीवपज्जवनिकातो ९ । संगहणिकातो जहा एगेण संतातिणा सद्देण बहूणं संगहो, अहवा जहा एक्को साली एवमादि १० । भारकातो—

**एक्को कातो दुहा॰** गाहा । **उदाहरणं**—एक्को काहारो दो पाणियघडा वहति, सो एगो आउक्कातो घड-विभागेण दुहा कतो । पक्खुलियस्स एगो घडो पुव्विं भग्गो सो आउक्कातो मतो, इयरो जीवति । तस्स अभावे सो वि भग्गो, अतो तेण पुव्वमतेण अमतो मारितो ॥ अहवा आउक्कायघडस्स अद्धं तावितं तं मयं, इतरं जीवति, मिस्सिते तमवि मतं । एवं **जीवंतो मएण मारितो** । एस भारकातो ११ ।

तिप्पभितिओ ओदयियादिणो भावा भावकातो १२ ॥ २३ ॥ १३७ ॥ २४ ॥ १३८ ॥

**एत्थं पुण अधिकारो णिकायकायेण होइ सुत्तम्मि ।**
**उच्चारितत्थसंदिसाण[2] कित्तणं सेसगाणं पि ॥ २५ ॥ १३९ ॥**

**एत्थं पुण अधिकारो॰** गाहा । एत्थ पुण अज्झयणे **निकायकायेण अधिकारो । उच्चारितत्थसदिस** त्ति सेसा परूविता ॥ २५ ॥ १३९ ॥ निकाय इति समत्तं । गतो नामनिप्फण्णो । सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेतव्वं अक्खलितं जहा **अणुओगद्दारे** । तं च इमं सुत्तं—

३२. सुयं मे आउसं तेणं[3] भगवता एवमक्खातं—इह खलु छज्जीवणिया नामऽज्झयणं समणेणं भगवता महावीरेणं कासवेणं पवेदिता सुयक्खाता सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती ॥ १ ॥

३३. कतरा खलु सा छज्जीणिया नामऽज्झयणं समणेणं भगवता महावीरेणं कासवेणं पवेदिता सुयक्खाता सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती ? ॥ २ ॥

३४. इमा खलु सा छज्जीवणिया णामऽज्झयणं समणेणं भगवता महावीरेणं कासवेणं पवेदिता सुयक्खाता सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती । तं जहा—पुढविक्काइया १ आउक्काइता[4] २ तेउकाइया ३ वाउकाइया ४ वणस्सइकाइया ४ तसकाइया ६ ॥ ३ ॥

**३२. सुयं मे आउसं तेण भगवता एवमक्खातं । सुतं मया** इति ऐतिह्यमिदम् । तं कस्स वयणं ? को वा भणति 'सुतं मया' इति ? अतो भण्णति—

अत्थं भासति अरहा सुत्तं गंथंति गणहरा निउणं । सासणस्स हितट्ठाए ततो सुत्तं पवत्तति ॥ १ ॥
[ आव॰ नि॰ गा॰ ९२ ]

१ शतादिना ॥ २ °सारिसाण खं॰ ॥ ३ तेणं खं १-२-३-४ शु॰ वृद्ध॰ ॥ ४ आयुक्का° खं १ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं भगवतो सव्वातिसयसंपण्णं वयणं सोऊण गणहरा सुत्तीकतं पत्तेयमप्पणो सीसेहिं जिणवयणामतसवण-पाणसमुस्सुएहिं सविणयं 'भगवं! किं जीवितव्व'मिति चोदिता भगवतो गौरवमुब्भावेंता एवमुक्तवन्तः-**सुतं मे आउसं! तेण०**। अहवा **सुधम्मसामी** जंबुणामं पुच्छमाणं एवं भणति तया-**सुतं मे आउसं! तेणं,** सुतं मया आयुष्मन्!, **तेण भगवता,** [केण] सुतं तित्थगरवयणं ? तं दरिसेति-**मया** इति अप्पणो निद्देसं करेति खंध-खणितवातपडिसेहणत्थं[1], जेण सुतं स एवाहं ण खंधं-संताणातिमोहरूवमिदं[2]। आयुष्मन्! इति सीसस्स आह्वानम्, आयुष्मद्ग्रहणेन जाति-कुलादतो वि गुणाऽधिकृता भवंति, गुणवति अत्थं पडिवातियं सफलं भवति, तेण य [सासणस्स] अव्वोच्छित्ती कता भवति त्ति, आयुप्पहाणा गुणा अतो आयुष्मन्!। **तेणे**ति जेण एतं समुग्घातितं सैव्वण्णुता-पत्तं[3] भगवंतं तित्थकरमाह। अहवाऽयं बितिओ सुत्तत्थो-**सुतं मे आउसंतेण भगवता,** सुतं मया आयुषि संतेण आउसंतेण भगवता अक्खायं। ततियतो सुत्तत्थो **पाढविसेसेण** भण्णति-**सुतं मया आवसंतेण,** गुरुकुलमिति वाक्यशेषः, भगवता०। चउत्थो सुत्तत्थो **पाढविकप्पेणेव-सुयं मे आमुसंतेण,** चरणजुयलमिति वाक्यशेषः, **आमुसंतेण** छिवंतेण हत्थेहिं सिरसा य, एतम्मि सुत्तत्थे विणयपुव्वता गुरु-सिस्ससंबंधस्स दरिसिज्जति। **भगवता** इति भगो जस्स अत्थि स भगवान्।

अत्थ-जस-लच्छि-धम्म-प्पयत्त-विभवाण छण्ह एतेसिं। भग इति णामं ते जस्स संति सो भण्णती भगवं ॥१॥

तेण भगवता **एवमक्खातं, एवं**सद्दो प्रकाराभिधायी, एतेण प्रकारेण, जोऽयं भण्णिहिइ जीवोवदेसवित्थर-प्रकारो तं हितए काऊण भणति **एवमक्खातं, अक्खातं** कहितं। **इह खलु, इह** आरुहते सासणे, **खलु**-सद्दो विसेसणे, 'अण्णे वि तित्थगरा भगवंतो समाणा विण्णाणेणं'ति तेहिं वि एवमेव छण्हं जीवस्स निकायस्स अत्थो[4] जहा नामनिप्फण्णे [ नि० गा० ११७ तः ३७ ]। अधीयते तदिति **अज्झयणं**। समणो जहा **सामण्णपुव्वए** [ नि० गा०५९-६६]। **भगवता** इति भणितं। पहाणो वीरो **महावीरो**। 'भगवता एवमक्खाय'मिति भणिए पुणो विसेसिज्जति-**समणेण भगवता,** समणभावो केवलिया य दरिसिज्जति त्ति, णाम-ट्ठवणा-दव्वसमणविसेसण[पडिसे-हण]त्थं वा भावसमणेण। एवं भावभगवता भावमहावीरेण। **कासवेण** कासं-उच्छू तस्स विकारो काश्यः-रसः सो जस्स पाणं सो कासवो **उसभसामी,** तस्स जे गोत्तजाता ते **कासवा,** तेण **वद्धमाण**सामी कासवो, तेण कासवेण **पवेदिता,** "विद ज्ञाने" साधु वेदिता **पवेदिता,** साधु विण्णाता। सुट्ठु अक्खाता **सुयक्खाता। सुपण्णत्ता** जहाबुद्धि सिस्साणं प्रज्ञापिता। अतिसएण पसंसणीयं **सेयं, मे** इति मम, **अहिज्जिउं** अज्झातुं। अधीयते तदिति **अज्झयणं**। धम्मो पण्णविजए जाए सा **धम्मपण्णत्ती** अज्झयणविसेसो ॥ १॥

तमजाणमाणो सिस्सो भणति—

**३३. कतरा खलु सा छज्जीवणिया०**। एतेसिं पदाणं अत्थो तहेव ॥ २ ॥

गणहरा गुरवो वा भणंति-

**३४. इमा खलु सा०**। **इमा** इति जो भणिहिति पाढो तं आतिक्खति पच्चक्खं दरिसेति। **खल्वा-**दीण पैतत्थो पढममणित एव। छण्हं जीवनिकायाणं वक्खाणं **छज्जीवणिकायकं**। अधुणा जेसिं तं जीवणि-कायाणं वक्खाणं तेसिमुद्देसा आरब्भंति-**तं जहा-पुढविक्काइया, पुढवी** भूमी कातो जेसिं ते पुढविक्काता, स्वार्थिके ठञि पुढविक्काया एव **पुढविक्काइका,** एत्थ कायसद्दो सरीराभिधाणो। अहवा पुढविक्काय इति पुढवी चेव कातो पुढविक्कातो, एत्थ कायसद्दो समूहवाची, पुढविकाए भवः "बह्वचोऽन्तोदात्ता०" [ पाणि० ४।३।६७ ] ठञि उपात्ते पुढविकाते भवः पुढविकायिकः। पुढवी इति "प्रथु विस्तारे" विच्छिण्णा इति पुढवी। **आउक्काइता** इति, साहणं जहा पुढविक्कातियाणं, "आप्लृ व्याप्तौ" इति आउ। एवं तेउ "तिज निशामने"। "वा गति-गन्ध-नयोः" इति वायुः। "वन षण सम्भक्तौ" इति वनस्पतिः। "त्रसी उद्वेजने" त्रस्यन्तीति त्रसाः। काय इति जहा

१ स्कन्ध-क्षणिकवादप्रतिषेधनार्थम् ॥ २ स्कन्ध-सन्तानादिमोहरूपमिदम् ॥ ३ सर्वज्ञताप्राप्तम् ॥ ४ पदार्थः ॥



Jain Education International  For Private & Personal Use Only  www.jainelibrary.org

पुढवीए। उद्देसमेत्तमेतं। पुढविक्कायस्स पढममुद्देसो तदाधारा सेसा इति। तदणंतरं आऊ, पुढवीए आहारो घणोदधिरिति। तदणु पडिपक्खस्स तेजसः। तेय[सह]चरित इति ततो वायस्स। तदणु जस्स कंपेण वातो सूतिज्जति तस्स वणस्सइस्स। सव्वेसिमंते फुडलिंगाणं तसाणं ॥ ३ ॥ उद्देसाणंतरं सलक्खणपरूवणवित्थरनिद्देसोऽयमारभ्मते। तत्थ पढमुद्दिट्ठाण पुढविक्कातियाण[1] णिद्देसो पढममर्हति त्ति भण्णति–

**३५. पुढवि चित्तमंतमक्खाता[2] अणेगजीवा[3] पुढो सत्ता अण्णत्थ सत्थपरिणएणं ॥ ४ ॥**

**३५. पुढवि चित्तमंतमक्खाता०।** **चित्तं** चेतणा बुद्धी, तं जीवतत्त्वमेव, सा **चित्तवती** सजीवा इति णिद्देसो। **अहवा–"पुढवी चित्तमत्तमक्खाता"** मत्तासद्दो थोवे परिमाणे य, थोवे जहा–किंचिम्मत्तं, परिमाणे जहा–"अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं" [नन्दी० सूत्र १६ पत्र ९७-२]। इह मत्तासद्दो थोवे, चित्तमत्तमेव तेसिं पुढविक्कातियाणं, ण णिमेसादीणि लिंगाणि। अहवा चित्तं मत्तमेतेसिं ते चित्तमत्ता, जहा पुरिसस्स मज्जपाणविसोवयोग-सप्पावराह-हिप्पूरभक्खण-मुच्छादीहिं[4] चेतोविघातकारणेहिं जुगपदभिभूतस्स चित्तं मत्तं एवं पुढविक्कातियाणं, तस्स वा जा चित्तमंता ततो पुढविक्कातियाण परमगहणणाणावरणतमसामुदतेण[5] हीणतरा। सव्वजहण्णं चित्तं एगिंदियाणं, ततो विसुद्धतरं बेइंदियाणं, ततो तेइंदियाणं, ततो चउरिंदियाणं, ततो असण्णिपंचिंदितिरिक्खजोणिताणं सम्मुच्छिममणूसाण य, ततो गब्भवक्कंतियतिरियाणं, ततो गब्भवक्कंतियमणूसाणं, ततो वाणमंतराणं, ततो भवणवासीणं, ततो जोतिसियाणं, ततो सोधम्मताणं जाव सव्वुक्कस्सं अणुत्तरोववातियाणं देवाणं। अभिविहिणा वक्खाता **अक्खाता।** अणेगा जीवा जाए सा **अणेगजीवा,** ण पुण जहा **वेदवादीण** "आपो देवता, पृथिवी देवता" [ ] इति। किं पुण पाहाण-लेट्टुक-सिकतादतो[6] संघाता पुरिससरीरमिव एकजीवसरीरपरिग्गहो? अतो उत्तरमवि विसेसिज्जति–ण एक्कजीवपरिग्गहो, किं तर्हि? **पुढो सत्ता** पिधप्पिधाणि[7] सरीराणि। ताणि पुण असंखेज्जाणि समुदिताणि चक्खुविसयमागच्छंति। एत्थ चोदयति–पुढविपतिट्ठाणावतंसा तसजीव त्ति थाण-गमणुचारातिविसग्गा कहमणुवरोहेण पुढवीए [कीरंति? त्ति] सचित्ता-ऽचित्तविसेसणावहारणत्थं[8] भणति–**अण्णत्थ सत्थपरिणएणं, अण्णत्थसद्दो** परिवज्जणे वट्टति। किं परिवज्जति? सत्थपरिणतं मोत्तूण सेसा सचित्ता ॥ तं सत्थं दुविहं–दव्वसत्थं भावसत्थं च। दव्वसत्थमिमं–

**दवं सत्थ-ऽग्गि-विसं-नेहंबिल-खार-लोणमाईयं।**
**भावो तु दुप्पउत्तो वाया काओ अविरई य ॥ २६ ॥ १४० ॥**

**दवं सत्थऽग्गिविसं०** गाहा। दव्वसत्थं **सत्थमेव** परसु-वासिमादि। **अग्गी** डहणो। **विसं** थावरजंगमं मारगं दव्वं। **णेहसत्थं** घतादि। **अंबिलं** प्रतीतम्। **खारसत्थं** खाररुक्खा पीलु-करीरादतो। **लोणसत्थं** सोवच्चलाती। **आदिग्गहणेण** गोमतादि अणेगविहं। एतेहिं सत्थेहिं अचित्ततामेति। सेसकायाण वि एताणि सत्थाणि। एतं दव्वसत्थं। भावसत्थं **भावो तु दुप्पउत्तो** संजमविणासणं ति तस्स सत्थं **दुप्पउत्तो** अकुसलमणउदीरणाति, **वाया काओ** वि, एवं **अविरती** असंजमो। दव्वसत्थेण अधिकारो ॥ २६ ॥ १४० ॥

तं तिविहं–

**किंची सकायसत्थं किंची परकाय तदुभयं किंचि।**
**एतं तु दवसत्थं भावे अस्संजमो सत्थं ॥ २७ ॥ १४१ ॥**

---

१ °क्कातिणा णिद्देसो मूलादर्शे ॥ २ **चित्तमत्तमक्खा°** अचूपा० वृपा० हाटी०। **चित्तमंतऽक्खा°** जे० शु०। **चित्तमंता अक्खा°** तथा **चित्तमत्ता अक्खा°** वृपा०। एवमग्रेतनेषु चतुर्ष्वपि सूत्रेषु पाठभेदो ज्ञेयः ॥ ३ **अणेगे जीवा** खं १-२-३-४ जे०। एवमग्रेतनेषु चतुर्ष्वपि सूत्रेषु पाठभेदो ज्ञेयः ॥ ४ मद्यपान-विषोपयोग-सर्पापराध-हृत्पूरभक्षण-मूर्च्छादिभिः ॥ ५ परमगहनज्ञानावरणतमसामुदयेन ॥ ६ **पाहाणोलट्टुकसिक्कतादतो** मूलादर्शे। पाषाण-लेष्टुक-सिकतादयः ॥ ७ °**धाणि ण सारीरवणस्सणिअरसरीराणि** मूलादर्शे ॥ ८ °**विसेसणत्थं हारण स भण्णति** मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**किंची सकायसत्थं०** गाहा । **किंचि दव्वं सकायसत्थं, किंचि परकायसत्थं,** किंचि **उभयसत्थं** ति । सकायसत्थं किण्हमत्तिया णीलाए सत्थं, णीला वि कण्हाए, एवं च पंच वण्णा परोप्परस्स सत्थं । जहा य वण्णा एवं गंध-रस-फासा वि । परकायसत्थं पुढविकातो आउक्कायस्स, आऊ वि पुढवीए, एवं सव्वे वि परोप्परं सत्थं भवंति । उभयसत्थं जाहे किण्हमत्तियाए कलुसियमुदगं ताहे सा किण्हमत्तिया तस्स उदगस्स पंडुमत्तियाए त दोण्ह वि सत्थं जाव परिणता । ण य गोब्बराति परिणामगं दीसति, तत्थ केवलिपच्चक्खो भावो त्ति परिहरणमेव । एवं विसेसं णाऊण जयंता अहिंसगा एव ॥ २७ ॥ १४१ ॥

चोदगो पच्चक्खमेवावलंबिऊण भणति–अजीवा पुढवी, उस्सास-निस्सास-गमणातिविरहितत्वात्, घड इव । आयरिया उत्तरं भणंति च–से तवायं हेतू सव्वभिचारो, लोगपसिद्धा अंडगादयो जीवा, तेसिमुस्सासादीणि नत्थि, अथ च जीवा इति लोकपडिवत्ती । अह लोके पसिद्धा वि तव ण जीवा एवं उम्मत्तवयणमिव वयणमप्पमाणं तव । अह पुण मतिरियं ते–उत्तरकालमंडगादिसु गमणादिसंभव इति असममुत्तरं । एत्थ पच्चवत्थाणमायरिया आणवेंति–अपरिफंदणहेतौ अंडगापरिफंदणेण समीकते भवता विसेसो दरिसिज्जति 'उत्तरकालचेट्ठा' एवं तव णिग्गहत्थाणं । उक्तं च–"अविशेषोक्ते हेतौ प्रतिषिद्धे विशेषमिच्छतो हेत्वन्तरम्" [ न्यायसू० ५।२।६ ] तं च निग्गहत्थाणं । अह मण्णसि–सुहुमुस्सासादि अंडगादिसु । पढममम्हं पक्खो सिद्धो, जतो भगवता परमगुरुणा भणितं–"पुढविक्काइया वेमाताए याऽऽणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा निस्ससंति वा [ प्रज्ञा० पद ७ सूत्र १४६ पत्र २२९-१ ] ॥ ४ ॥

**३६. आउ चित्तमंतमक्खाता अणेगजीवा पुढो सत्ता अण्णत्थ सत्थपरिणएणं ॥ ५ ॥**

**३७. तेउ चित्तमंतमक्खाता अणेगजीवा पुढो सत्ता अण्णत्थ सत्थपरिणएणं ॥ ६ ॥**

**३८. वाउ चित्तमंतमक्खाता अणेगजीवा पुढो सत्ता अण्णत्थ सत्थपरिणएणं ॥ ७ ॥**

**३६–३८. आउ चित्तमंत०** । एवं सव्वे आलावगा अत्थविभासा य तेउ-वाऊण वि । वाऊ (?) सत्थ-परिणते त्रपु-सीस-लोहादीणि ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

**३९. वणस्सति चित्तमंतमक्खाता अणेगजीवा पुढो सत्ता अण्णत्थ सत्थपरिणएणं । तं जहा–अग्गबीता मूलबीया पोरबीया खंधबीया बीयरुहा सम्मुच्छिमा तणलता वणस्सतिकातिया सबीया, वेणस्सती चित्तमंत अक्खाता अणेगजीवा पुढो सत्ता अण्णत्थ सत्थपरिणएणं ॥८॥**

**३९. वणस्सति चित्तमंतमक्खाता०** । जेसिं कोरेंटगादीणं अग्गाणि रुप्पंति ते **अग्गबीता** । कंदलिकंदादी **मूलबीया** । इक्खुमादी **पोरबीया** । णिहूमादी **खंधबीया** । सालिमादी **बीयरुहा** । पउमिणिमादी उदग-पुढविसिणेहसम्मुच्छणा **सम्मुच्छिमा** । **तणलता**वयणेण तब्भेदपरूवणं । **वणस्सतिकातिय** त्ति पत्तेय-साधारण-बादर-सुहुमसव्वलोयपरियावण्णवणस्सतिप्पगारा भणिता । अंते दीवगमिदं–वणस्सतिभेदपरूवणेण सेस-भेदपरूवणं–"पुढवी य सक्करा वालुगा य०" [ आचा० नि० गा० ७३ ] एवमादि पुढविभेदा, आउभेदा "ओस्सुदय०" ("सुद्धोदए") [ आचा० नि० गा० १०८ ] एवमादि, तेउभेदा "इंगाल" [ आचा० नि० गा० ११ ] मादि, वातस्स "उक्कलिया" [ आचा० नि० गा० १६६ ] आदि । **सबीया** इति बीयावसाणा दॆस वणस्सतिभेदा संगहतो दरिसिता ।

चोदगो भणति–अग्गबीयादिसु सचित्तं रोवितं तहाजातीएण सरीरेण वड्ढइ त्ति तेण देहसंभवो, बीजं पुण

---

**१ तव णाजीवा** मूलादर्शे ॥ २ **वणस्सती** इति पदं **अगस्त्यचूर्णावेव** दृश्यते ॥ ३ दश भेदास्त्विमे–"मूले १ कंदे २ खंधे ३ तया ४ य साले ५ तह प्पवाले ६ य । पत्ते ७ पुप्फे ८ य फले ९ बीए १० दसमे य नायव्वे ॥ १ ॥" इति [ ] ॥

विसरिसमंकुरं णिव्वत्तेति, तं किं कुरील इव जोणिघातेण अंकुरो संभवति? अह बीजजीव एव विक्रियमाणो तहारूवो भवति? । गुरवो भणंति—सोम्म !,

**जोणिब्भूते बीए[1] जीवो वक्कमइ[2] सो वे[3] अण्णो वा ।**
**जो वि य मूले जीवो सो वि य पत्ते पढमयाए ॥ २८ ॥ १४२ ॥**

**जोणिब्भूते॰** गाहा । तं बीयं जोणिब्भूतमजोणिब्भूतं च । अजोणिब्भूतं कालंतरेण दाहातिणा वा उपघातेण, तं पुण अचित्तं । जोणिब्भूतं अजीवं वा होज्ज [ सजीवं वा ] । तम्मि **जोणिब्भूते [ बीए ] सो वा** बीजजीवो उव[व]ज्जेज्ज **अण्णो वा** । तत्थ अण्णे वि बहवे जीवा वक्कमंति । भणितं च—

सव्वो वि किसलओ खलु उप्पयमाणो अणंततो होइ । सो चेव वड्ढमाणो होति अणंतो परित्तो वा ॥ १ ॥
[ ]

**जो वि य मूले जीवो सो वि य पत्ते पढमयाए ।** [4]जो सो बीयजीवो विक्रियमाणो मूलमंकुरं च निरुद्धं निव्वत्तेति, ततो मूल-खंधनिव्वत्तणं पच्छोववण्णेहिं[5] ॥ २८ ॥ १४२ ॥

**सेसं सुत्तप्फासं काए काए अहक्कमं बूता ।**
**अज्झयणत्था पंच य पगरण-पद-वंजणविसुद्धा ॥ २९ ॥ १४३ ॥**

**सेसं सुत्तप्फासं॰** गाहा । **सेसं** जं एतेसु छसु जीवनिकाएसु सुत्तफासियनिज्जुत्तीय भणितं तं सुत्तं **काए काए** अणुप्फुसंतेहिं[6] **अहक्कमं** भणितव्वं । ण केवलं तदेव किंतु **पंच य अज्झयणत्था** ते वि सुत्तेण भणितव्वा । **पगरण-पद-वंजणविसुद्धा, पगरणं** अधिकारो उक्खेव-निक्खेवविसुद्धं, **पदं** सुप्-तिङन्तम्, **वंजणं** अक्खरं । ते इमे पंच अज्झयणत्था, तं जहा—जीवाभिगमो १ चरित्तधम्मो २ जयणा ३ उपदेसो ४ धम्मफलं ५ । कहं पुण छट्ठोऽजीवाभिगमो इमाए गाहाए ण भणितो? णणु भणितं—**काए काए अहक्कमं बूता,** एतेण छट्ठो भणितो ॥ २९ ॥ १४३ ॥

**वणस्सती चित्तमंत अक्खाता अणेगा जीवा पुढो सत्ता अणत्थ सत्थपरिणएणं,** एतेसिं वक्खाणं जहा पुढवीए ॥ ८ ॥

**४०.** [7]से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा । तं जहा—अंडया पोतया जराउया रसया संसेइया सम्मुच्छिमा उब्भिता[8] उववातिया[9], जेसिं केसिंचि पाणाणं अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचितं पसारितं रुतं भंतं तसितं पलाइतं, आगती-गतीविण्णाता, जे य कीड-पयंगा जा य कुंथु-पिवीलिता[10] सव्वे देवा सव्वे असुरा सव्वे णेरतिता सव्वे तिरिक्खजोणिता सव्वे मणुस्सा सव्वे पाणा परमाहम्मिता[11], ऐसो[12] छट्ठो जीवणिकातो तसकाओ त्ति पवुच्चति[13] ॥ ९ ॥

---

१ बीए जोणिब्भूते जीवो खं॰ वी॰ पु॰ सा॰ हाटी॰ ॥ २ विकमइ पु॰ । वुक्कमइ सा॰ ॥ ३ य वी॰ सा॰ ॥ ४ “जो सो बीयसरीरी जीवो सो जहा जहा वड्ढइ कायो तहा तहा पत्तं निव्वत्तेइ, मूलं खंधं साहाओ पुण अण्णे पच्छोववण्णगा निव्वत्तेंति ।” इति वृद्धविवरणे ॥ ५ पच्छाविवण्णेहिं मूलादर्शे ॥ ६ “अणुफासंतेहिं” वृद्धविवरणे ॥ ७ एतत्सूत्रप्रारम्भे तसा चित्तमंता अक्खाया अणेगजीवा पुढो सत्ता अण्णत्थ सत्थपरिणएणं इति सूत्रांशोऽधिको वृद्धविवरणे दरीदृश्यते ॥ ८ उब्भिदया वृद्ध॰ ॥ ९ ओववाइया हाटी॰ । ओववायया हाटीपा॰ ॥ १० °पिवीलिता, सव्वे बेइंदिया सव्वे तेइंदिया सव्वे चउरिंदिया सव्वे पंचिंदिया सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे नेरइया सव्वे मणुया सव्वे देवा सव्वे पाणा परमाहम्मिया खं १-२-३-४ जे॰ शु॰ हाटी॰ । °पिवीलिता सव्वे नेरइया सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे मणुया सव्वे देवा सव्वे पाणा परमाहम्मिया वृद्धविवरणे ॥ ११ पारहम्मिता अचूपा॰ वृद्ध॰ ॥ १२ एसो खलु छट्ठो खं १-२-३-४ जे॰ शु॰ हाटी॰ ॥ १३ °च्चइ खं १-३ जे॰ । °च्चई खं २-४ शु॰ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**४०. से** इति वयणोवण्णासे । **जे** इति सामण्णुद्देसवयणं । **पुण**सद्दो विसेसणे । **इमे** इति पच्चक्खं दरिसिज्जति । **अणेगा** अणेगभेदा बेइंदियादतो । **बहवे** इति बहुभेदा जाति-कुलकोडी-जोणीपमुहसतसहस्सेहिं पुणरवि संखेज्जा । त्रस्यन्तीति **त्रसाः । पाणा** इति जीवाः प्राणन्ति वा-निःश्वसन्ति वा । जोणीभेदेणोपदरिसिज्जति—**तं०**, अण्डजाता **अण्डजा** मयूरादयः । पोतमिव सूयते **पोतजा** वग्गुलीमादयः । जराउवेढिता जायंति **जराउजा** गवादयः । **रसजा** रसा से भवंति तक्कादौ सुहुमसरीरा । **संस्वेदजा** यूगादतः । **सम्मुच्छिमा** करीसादिसु मच्छिकादतो भवन्ति । **उब्भिता** भूमिं भिंदिऊण निद्धावंति सलभादतो । **उववातिया** णारग-देवा । एते तसा । तेसिं च तसाणं एगिंदिएहिंतो विसिट्ठाणि इमाणि लक्खणाणि भवंति, तं०—**जेसिं केसिंचि पाणाणं, जेसिं केसिंचि** त्ति अविसेसिताणं उद्देसवयणं । **पाणा** पुव्वभणिता । इमाणि जीवभावव्यक्तिकराणि, तं०—**अभिक्कंतं०** आलावगा उच्चारेतव्वा । अभिमुहक्कंतं **अभिक्कंतं**, पण्णवगं पडुच्च अभिमुहमागमणं । प्रतीपं कंतं **पडिक्कंतं** । हत्थादीणं बाहिं विच्छूढाणं एगीभावेणं कुंचणं **संकुचितं** । तेसिं चेव हत्थादीणं बाहिं विच्छोभो **पसारितं । रुतं** सद्दकरणं । [1]**भंतं** अणेगाण तं चेट्ठितं । **तसितं** [2]उव्वेवगमणं । **पलाइयं** [3]भैतादवक्कमणं । आगमण**मागती** । गमणं **गती** । णणु जं अभिक्कंतं सा आगतिः, पडिक्कंतं च गतिः, तेण पुणरुत्तं, चोयणेयं । समत्थणं भण्णति—रुक्खं प्रति अभिक्कमणं तुंबि-वल्लिमादीणं, पडिक्कमणमवि रुक्खग्गातो [4]पैंडितोयरणं । इहं पुण तस्सेव अत्थस्स विसेसणत्थं भण्णति—**आगती-गतीविण्णाता**, बुद्धिपुव्वमितो जाणावेति । पुणराह—विकलिंदियाण वि ऊहा-ऽपोहपुव्वं ण चेट्ठितमिति ण णाम ते तसा । एतं समत्थिज्जति—जदी वि बेइंदियादीणं ण सम्प्रधारणपुव्वं चेट्ठितं, [5]गुँलातिसमुवसप्पणं तु पिपीलिगादीण विण्णाणपुव्वगं आगमण-गमणादि, ण तहा एगिंदियाणं, तम्हा जे एतेहिं लक्खणेहिं लक्खिता ते तसा सिद्धा । जोणिलक्खणनिरूविताणं भेदाभिधाणत्थमिदं भण्णति—**जे य कीड-पयंगा, जे** उद्देसे, **च**सद्दो समुच्चए, कीडवयणेण तज्जातियगहणमिति सव्वे बेइंदिया घेप्पंति, पयंगवयणेण चउरिंदिया, कुंथु-पिवीलियाभिहाणेण तिंदिया । **सव्वे देवा**, 'पंचेंदिएसु पहाण' त्ति पढमं देवा पढिता । तदणु तेसिं पडिपक्खभूता **असुरा** भवणवासीभेदा णाग-सुवण्णा । अहोनिवाससाहम्मेण तदणु **णेरतिता** । तदणुभासदुक्खा इति तदणु पंचेंदि**तिरिक्खजोणिता** । मणूसेसूपदेस इति सव्वेसिं अंते **मणुस्सा** । सव्ववयणमसेसवाची, सव्व एव तसा, ण जहा सामण्णतिरिक्खजोणियवयणेण तसा थावरा य । **सव्वे पाणा** [6]**पैरमाहम्मिया, परमं** पहाणं तं च सुहं, **अपरमं** ऊणं तं पुण दुक्खं, [7]**धँम्मो** सभावो, परमो धम्मो जेसिं ते **परमधम्मिता**, यदुक्तं सुखस्वभावाः । **पाढविसेसो—"परधम्मिता" परा** जातिं जातिं पडुच्च सेसा, जो त परेसिं धम्मो सो तेसिं, जहा एगस्स अभिलास-प्रीतिप्पभितीणि संभवंति तहा सेसाण वि अतो **परधम्मिता । एसो छट्ठो जीवणिकातो, एसो** जस्स लक्खणं भणितं **छट्ठो** छण्हं पुढविकातियादीणं पूरणो **जीवणिकातो** समूहो **तसकाओ त्ति**, इति परिसमत्तिविसतो **पवुच्चति** भगवद्भिः ॥ ९ ॥

भणितो जीवाहिगमो । अजीवाभिगमो भण्णति—अजीवा दुविहा—पोग्गला य णोपोग्गला य । [8]पोंग्गला

---

१ "**भंतं** नाम जं देसाओ देसंतरं भमइ ।" **वृद्ध०** ॥ २ **दव्वे च गमणं** मूलादर्शे ॥ ३ भयादपक्रमणम् ॥ ४ प्रत्यवतरणम् ॥ ५ गुडादिसमुपसर्पणम् ॥ ६ "**परमाहम्मिया** नाम अपरमं दुक्खं, परमं सुहं भण्णइ, **सव्वे पाणा परमाधम्मिया** सुहाभिकंखिणो त्ति वुत्तं भवइ । अहवा एयं सुत्तं एवं पढिज्जइ—'**सव्वे पाणा परहम्मिया**' इक्किकस्स जीवस्स सेसा जीवभेदा परा, ते य सव्वे सुहाभिकंखिणो त्ति वुत्तं भवति । जो तेसिं एक्कस्स धम्मो सो सेसाणं पि त्ति काऊण **सव्वे पाणा परहम्मिया** ।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ७ **धम्मो अभावो** मूलादर्शे ॥ ८ "पोग्गला छव्विहा, तं०—सुहुमसुहुमा १ सुहुमा २ सुहुमबादरा ३ बादरसुहुमा ४ बादरा ५ बादरबादरा ६ । सुहुमसुहुमा परमाणुपोग्गला १ । सुहुमा दुपएसियाओ आढत्ता जाव सुहुमपरिणओ अणंतपएसिओ खंधो २ । सुहुमबादरा गंधपोग्गला ३ । बादरसुहुमा वाउकायसरीरा ४ । बादरा आउकायसरीरा उस्सादीणं ५ । बादरबादरा तेउ-वणप्फइ-पुढवि-तससरीराणि ६ । अहवा चउव्विहा पोग्गला, तं०—खंधा १ खंधदेसा २" इत्यादि **वृद्धविवरणे** ॥

Jain Education International          For Private & Personal Use Only          www.jainelibrary.org

चतुव्विहा, तं०–खंधा खंधदेसा खंधप्पदेसा परमाणुपोग्गला । णोपोग्गलत्थिकातो तिविहो, तं०–धम्मत्थिकातो अधम्मत्थिकातो आगासत्थिकातो, एते गति-ट्ठिति-अवगाहणालक्खणा जहासंखं । एस अजीवाधिगमो ॥

जीवाजीवाधिगमो चरित्तरक्खणत्थं ति चरित्तधम्मो भण्णति–

**४१. इच्चेतेहिं छहिं जीवनिकायेहिं णेव सयं [2]डंडं समारभेज्जा णेवऽण्णेहिं डंडं समारभावेज्जा डंडं समारभंते वि अण्णे ण समणुजाणेज्जा[3], जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं[4] न करेमि ण कारवेमि करेंतं[5] पि अण्णं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १० ॥**

४१. **इच्चेतेहिं[6] छहिं जीवनिकायेहिं** । इतिसद्दो अणेगत्थो अत्थि, हेतौ–वरिसतीति धावति, एवमत्थो–इति ब्रह्मवादिनो वदंति, आद्यर्थे–इत्याह भगवां नास्तिकः, परिसमाप्तौ–अ अ इति, प्रकारे–इति बहुविहमुक्खा । इह इतिसद्दो प्रकारे–पुढविक्कातियादिसु किण्हमट्टितादिप्रकारेसु, अहवा हेतौ–जम्हा परधम्मिया सुहसाया दुक्खपडिकूला । **इच्चेतेसु**, एतेसु अणंतराणुक्तं पच्चक्खमुपदंसिज्जति । "**एतेहिं**" **वा** तदा हिंसद्दो सप्तम्यर्थे[7] तेव, **एतेहिं छहिं जीवनिकाएहिं**, छ इति संखा, ते अणेगभेदा अपि छव्विहत्तणं णातिवत्तंति, जीवाण **निकाया** समुदाया तेहिं, **ण** इति पडिसेहे, एवसद्दो अवधारणे, किमवधारेति ? सव्वावत्थं समारभणं, **सयमिति** अप्पणा **डंडो** सरीरादिनिग्गहो तण्ण **समारभेज्जा** । **समारभणं** पवत्तणं । **णेवऽण्णेहिं डंडं समारभावेज्जा**, णकारो एवसद्दो य तहेव, इह तु परस्स पओगो निवारिज्जति । **डंडं समारभंते वि अण्णे ण समणुजाणेज्जा**, एतेण समारंभाणुमोयणमवि णिवारिज्जति । असमारंभकालावधारणमिदम्–**जावज्जीवाए** जाव पाणा धारंति । **तिविहं** ति मणो-वयण-कातो, **तिविहेणं** ति करण-कारावणा-ऽणुमोयणाणि । सुत्तेणेवायं विसेसो भण्णति–एक्केक्कं **न करेमि ण कारवेमि करेंतं पि अण्णं न समणुजाणामि**, मणेण दंडं करेति–सयं मारणं चिंतयति कहमहं मारेज्जामि, मणेण कारयति–जदि एसो मारेज्जा, मणसा अणुमोदति–मारेंतस्स तुस्सति; वायाए पाणातिवातं करेति–तं भणति जेण अद्धितीए मरति, वायाए कारेति–मारणं संदिसति, वायाए अणुमोदति–सुट्ठु हतो; कातेण[8] मारेति–सयमाहणति, काएण कारयति–पाणिप्पहारादिणा, काएणाणुमोदति–मारेंतं छोडिकादिणा पसंसति । एतेहि सव्वेहि पगारेहि ण करेमीति अब्भुवगमं करेमि । **तस्स भंते ! पडिक्कमामि, तस्स** त्ति दंडसमारंभस्स, **भंते !** इति भगवतो आमंतणं । गणहरा भगवतो सकासे अत्थं सोऊण वतपडिवत्तीए एवमाहु–तस्स भंते० !, तहा जे वि इमम्मि काले ते पि वताइं पडिवज्जमाणा एवं भणंति–तस्स भंते ! पडिक्कमामि, प्रतीपं क्रमामि–णियत्तामिं । जं पुव्वमण्णाणेण कतं तस्स **णिंदामि** "णिदि कुत्सायाम्" इति कुत्सामि । **गरहामि** "गर्ह परिभाषणे[9]" इति पगासीकेरेमि । **अप्पाणं** सव्वसत्ताणं दरिसिज्जए, **वोसिरामि** विविहेहिं प्रकारेहिं सव्वावत्थं परिच्चयामि । दंडसमारंभपरिहरणं चरित्तधम्मप्पमुहमिदं ॥ १० ॥

अतो परं महव्वउच्चारणं सविसेसं, जो जस्स अरुहो तं तम्मि सो भण्णति त्ति, जोग्गताविचारो परममंगलं, संसारुत्तारगो चरित्तधम्मो, सो य सम्मदरिसणाधारो त्ति । **केति सुत्तं केति वित्तिवयणमिमं भणंति**—

१ **इच्चेतेसु छसु जीवनिकायेसु** अचूपा० । **इच्चेसिं छण्हं जीवनिकायाणं नेव** खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी० ॥ २ **दंडं समारंभेज्जा णेवऽण्णेहिं दंडं समारंभावेज्जा दंडं समारंभंते** अचू० विना ॥ ३ °**आणामि** खं १-२-४ जे० । °**जाणेमि** खं ३ ॥ ४ **तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि** अचू० विना ॥ ५ **करंतं** खं १-२-४ ॥ ६ "**इच्चेएहिं छहिं जीवनिकाएहिं,** इतिसद्दो अणेगेसु अत्थेसु वट्टइ, तं०–आमंतणे परिसमत्तीए उवप्पदरिसणे त । आमंतणे जहा–धम्मए ति वा उवएसए ति वा एवमादि, परिसमत्तीए जहा–इति खलु समणे भगवं महावीरे एवमादि । उवप्पदरिसणे जहा–इच्चेए पंचविहे ववहारे । एत्थ पुण इच्चेतेहिं एसो सद्दो उवप्पदरिसणे दट्ठव्वो, किं उवप्पदरिसयति ? जे एते जीवा अजीवाभिगमस्स हेट्ठा भणिया, इच्चेएहिं छहिं जीवणिकाएहिं ।" इति **वृद्धविवरणे**। "**इच्चेसिं** इत्यादि । सर्वे प्राणिनः परमधर्माण इत्यनेन हेतुना 'एतेषां षण्णां जीवनिकायानां' इति, "सुपां सुपो भवन्ति" इति सप्तम्यर्थे षष्ठी, एतेषु षट्सु जीवनिकायेषु अनन्तरोदितस्वरूपेषु" इति **हारि० वृत्तौ** ॥ ७ सप्तम्यर्थ एव, अत्र **तेवशब्द एव** इत्यर्थकः ॥ ८ कायेन ॥ ९ °**भाषणमिति पं**° मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[ ❀ पुढविक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते ।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उट्ठावणाजोग्गो ॥ १ ॥
आउक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते ।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उट्ठावणाजोग्गो ॥ २ ॥
तेउक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते ।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उट्ठावणाजोग्गो ॥ ३ ॥
वाउक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते ।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उट्ठावणाजोग्गो ॥ ४ ॥
वणस्सतिकातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते ।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उट्ठावणाजोग्गो ॥ ५ ॥
तसकातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहि पण्णत्ते ।
अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उट्ठावणाजोग्गो ॥ ६ ॥
❀ पुढविक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते ।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उट्ठावणे जोग्गो ॥ ७ ॥
आउक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते ।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उट्ठावणे जोग्गो ॥ ८ ॥
तेउक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते ।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उट्ठावणे जोग्गो ॥ ९ ॥
वाउक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते ।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उट्ठावणे जोग्गो ॥ १० ॥
वणस्सतिकातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते ।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उट्ठावणे जोग्गो ॥ ११ ॥
तसकातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहि पण्णत्ते ।
अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उट्ठावणे जोग्गो ॥ १२ ॥ ]

---

१ 'एतद् गाथाद्वादशकं केचिदाचार्याः सूत्रत्वेन मन्यन्ते, केचिच्च प्राचीनवृत्तिसत्कं मन्यन्ते' इत्यगस्त्यसिंहपादा आवेदयन्ति । "सीसो आह–जो एसो दंडनिक्खेवो एवं महव्वयारुहणं तं किं सव्वेसिं अविसेसियाणं महव्वयारुहणं कीरति ? उदाहो परिक्खिऊणं ? । आयरिओ भणइ—जो इमाणि कारणाणि सद्दहइ तस्स महव्वयाणि समारुहिज्जंति ।

पुढविक्काइए जीवे ण सद्दहइ जे जिणेहिं पण्णत्ते । अणभिगयपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो ॥ १ ॥

एवं आउक्काइए जीवे० २ एवं जाव तसकाइए जीवे० ६ । एयारिसस्स पुण समारुभिज्जंति, तं०—

पुढविक्काइए जीवे सद्दहई जो जिणेहिं पण्णत्ते । अभिगतपुण्ण-पावो ण सो उवट्ठावणाजोग्गो ॥ ७ ॥

एवं आउक्काइए जीवे० ८, एवं जाव—

तसकाइए जीवे सद्दहई जो जिणेहिं पण्णत्ते । अभिगतपुण्ण-पावो सो उवट्ठावणाजोगो ॥१२॥" इति वृद्ध० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**पुढविक्कातिए जीवे ण सद्दहति जो जिणेहिं पण्णत्ते।**
**अणभिगतपुण्ण-पावो ण सो उट्ठावणाजोग्गो ॥ १ ॥**

एवं **आउक्कातिए०** २ जाव **तसक्कातिए०** ६ एस अणरुहो। अयं पुण अरुहो—

**पुढविक्कातिए जीवे सद्दहती जो जिणेहिं पण्णत्ते।**
**अभिगतपुण्ण-पावो सो हु उट्ठावणे जोग्गो ॥ ७ ॥**

एवं **आउक्कातिए०** ८ जाव **तसक्कातिए०** १२ ॥ छज्जीवणियाए पढित-सुत-सद्दहियाए उवट्ठाविज्जति, तं महव्वउच्चारणमिमेण विहिणा–

४२. पढमे भंते! महव्वंते[2] उवट्ठितो मि पाणातिवातातो वेरमणं, सव्वं भंते! पाणातिवातं पच्चक्खामि, से सुहुमं वा वातरं[3] वा तसं वा थावरं वा। [ से तं[4] पाणातिवाते चतुव्विहे, तं०—दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो। दव्वतो छसु जीवनिकाएसु, खेत्ततो सव्वलोगे, कालतो दिया वा राओ वा, भावतो रागेण वा दोसेण वा। ] णेवं[5] सतं पाणे अतिवातेमि, णेवऽण्णेहिं पाणे अतिवायावेमि, पाणे अतिवातंते वि अण्णे ण समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, मणसा वयसा कायसा ण करेमि ण कारवेमि करेंतं पि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। पढमे भंते! महव्वते[6] पाणातिवातातो वेरमणं ॥ ११ ॥

४२. **पढमे भंते! महव्वए०। पढमे** इति आवेक्खिगं, सेसाणि पडुच्च आदिल्लं, पढमे एसा सत्तमी, तम्मि उट्ठावणाधारविवक्खिगा। **भंते!** इति पढमाविभत्तिगतमामंतणवयणं, तं पुण सिस्सो उवट्ठावणट्ठमुट्ठितं गुरुमामंतेंतो आह–हे कल्लाणसुखभागिन् भगवन्!, एवं भंते!। सकले महति वते **महव्वते** तुब्भेहि जहोवदिट्ठे उवेच्च ठितो **उवट्ठितो मीति** अस्मि, यदुक्तमहम्। **पाणातिवाता[तो] अतिवातो** हिंसणं ततो, एसा पंचमी अपादाणे भयहेतुलक्खणा वा, भीतार्थानां भयहेतुरिति। **वेरमणं** नियत्तणं, जं वेरमणं एतं महव्वतमिति पढमाविभत्तिनिद्देसो। केति **"उवट्ठितो मि"** त्ति अंते पढंति तेसिं पि समाणं वक्कमिणं, तत्थ वि तेणाभिसंबंधो। **सव्वं** ण विसेसेण, यथा लोके–न ब्राह्मणो हन्तव्यः। **भंते!** इति पुव्वभणितं। **पाणातिवातमिति** च पच्चक्खाणं, ततो नियत्तणं। पच्चक्खाणविकप्पा–सीतालं भंगसतं० गाहा [ ]। सामण्णमिदं साधूणं सावगाण य, अतो परवयणेण भण्णति—

ण करेति ण कारवेति करेंतं नाणुजाणति मणसा वायाए काएण, एसो पढमो भंगो साधूणं १; तिविहं दुविहेण—न करेति ३ मणसा वायाए २, अहवा ण करेति ३ मणसा काएण ३, अहवा ण करेति ३ वायाए काएणं ४;

---

१ **°सुहसद्द°** मूलादर्शे ॥ २ **°व्वए पाणा°** अचू० विना ॥ ३ **बादरं** अचू० विना ॥ ४ [ ] एतत्कोष्ठकान्तर्वर्त्ययं पाठः कतिचिदाचार्याभिप्रायेण **सूत्रपाठः** कतिचिदाचार्यान्तराभिप्रायेण च **प्राचीनवृत्ति**पाठ इत्यावेदित**मगस्त्यसिंह**पादैरस्यां **चूर्णा**विति। एवमग्रेऽपि महाव्रतालापकेषु सर्वत्र ज्ञेयमिति ॥ ५ **नेव सयं पाणे अइवाएज्जा, नेवऽन्नेहिं पाणे अइवायावेज्जा, पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि** अचू० विना। **समणुजाणामि** स्थाने **समणुजाणेज्जा** शु० ॥ ६ **°व्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ पाणाइवायाओ** अचू विना ॥ ७ "सीयालं भंगसयं पच्चक्खाणम्मि जस्स उवलद्धं। सो पच्चक्खाणकुसलो सेसा सव्वे अकुसला उ ॥ १ ॥ ८ एतद्भङ्गसमूहावेदकं सूत्रं **भगवतीसूत्रे** श० ८ उ० ५ सूत्रं ३२९ पत्रं ३६८ ॥ ९ "एते तिन्नि वि २-३-४ भंगा पायसो सुण्णा" इति **वृद्ध०** ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिविहं एक्कविहेणं—ण करेति ३ मणसा ५, अहवा ण करेति ३ वयसा ६, अहवा न करेति ३ काएणं ७, एते सत्त भंगा तिविहं असुयंतेण लद्धा । दुविहं तिविहेण—ण करेति ण कारवेति मणसा वायाए काएण १, अहवा न करेति करेंतं नाणुजाणति मणसा ३–२, अहवा ण कारवेति करेंतं नाणुजाणति मणसा ३–३, एते तिण्णि भंगा दुविहं तिविहेण लद्धा । दुविहं दुविहेण—न करेति न कारवेति मणसा वायाए १, अहवा ण करेति ण कारवेति मणसा काएण २, अहवा ण करेति न कारवेति वायाए काएण ३, अहवा ण करेति करंतं नाणुजाणति मणसा वायाए ४, अहवा ण करेति करंतं नाणुजाणति मणसा काएण ५, अहवा ण करेति करंतं नाणुजाणति वयसा काएण ६, अहवा ण कारवेति करंतं नाणुजाणति मणसा वायाए ७, अहवा ण कारवेति करंतं नाणुजाणति मणसा काएण ८, अहवा न कारवेति करंतं नाणुजाणति वायाए काएणं ९, एते नव भंगा दुविहं दुविहेण लद्धा । दुविहं एक्कविहेणं—ण करेति न कारवेति मणसा १, अहवा न करेति न कारवेति वायाए २, अहवा न करेति न कारवेति काएणं ३, अहवा ण करेति करंतं ण समणुजाणति मणसा ४, अहवा ण करेति करेंतं नाणुजाणति वायाए ५, अहवा ण करेति करेंतं नाणुजाणति काएण ६, अहवा ण कारवेति करेंतं नाणुजाणति मणसा ७, अहवा ण कारवेति करेंतं नाणुजाणति वायाए ८, अहवा ण कारवेति करेंतं णाणुजाणति काएण ९, एते णव भंगा दुविहं एक्कविहेण लद्धा । एक्कविहं तिविहेण—ण करेति मणसा वायाए काएण १, अहवा ण कारवेति मणसा ३–२, अहवा करंतं नाणुजाणति मणसा ३–३, एते तिण्णि भंगा एक्कविहं तिविहेण लद्धा । एक्कविहं दुविहेणं—ण करेति मणसा वायाए १, अहवा ण करेति मणसा काएण २, अहवा ण करेति वायाए काएणं ३, अहवा ण कारवेति मणसा वायाए ४, अहवा ण कारवेति मणसा काएणं ५, अहवा ण कारवेति वाताए काएणं ६, अहवा करेंतं नाणुजाणति मणसा वायाए ७, अहवा करेंतं नाणुजाणति मणसा काएणं ८, अहवा करेंतं नाणुजाणति वायाए काएणं ९, एते णव भंगा एक्कविहं दुविहेण लद्धा । एक्कविहं एक्कविहेण—ण करेति मणसा १, अहवा ण करेति वायाए २, अहवा ण करेति काएणं ३, अहवा ण कारवेति मणसा ४, अहवा न कारवेति वायाए ५, अहवा ण कारवेति काएणं ६, अहवा करेंतं नाणुजाणति मणसा ७, अहवा करेंतं नाणुजाणति वायाए ८, अहवा करेंतं नाणुजाणति काएणं ९, एते णव भंगा एक्कविहं एक्कविहेण लद्धा ।

एते सव्वे वि संकलिज्जंति—तिविहं असुयंतेहिं सत्त लद्धा, दुविहं तिविहेण तिण्णि, एते संकलिता जाता दस । दुविहं दुविहेण णव लद्धा, ते दससु पक्खित्ता जाता एकूणवीसं । दुविहं एक्कविहेण णव लद्धा, ते एगूणवीसाए पक्खित्ता जाता अट्ठावीसं । एक्कविहं तिविहेण तिण्णि अट्ठावीसाए पक्खित्ता जाता एक्कतीसा । एक्कविहं दुविहेण णव लद्धा एक्कतीसाए पक्खित्ता जाता चत्तालीसं । एक्कविहं एक्कविहेण णव चत्तालीसाए पक्खित्ता जाता एगूणपण्णा । एते पडुप्पण्णं संवरेति, एगूणपण्णा अतीतं णिंदति, एते चेव तहा अणागतं पच्चक्खाति, तिण्णि एगूणपण्णातो सत्तयत्तालं भंगसतं १४७ ॥

एत्थ पढमभंगो साधूण जुज्जति तेण अधिकारो, सेसा सावगाणं संभवतो उच्चारितसरूव त्ति परूवणं । पाणातिवातपच्चक्खाणं सविकल्पं भणितं । अयं तु प्राणिविकल्पः—**से सुहुमं वा बातरं वा तसं वा थावरं वा, से** इति वयणाधारेण अप्पणो निद्देसं करेति, सोऽहमेव अब्भुवगम्म कतपच्चक्खाणो **सुहुमं** अतीव अप्पसरीरं तं वा, वातं रातीति **बातरो** महासरीरो तं वा । उभयं एतदेव पुणो विकप्पिज्जति—**तसं वा** "त्रसी उद्वेजने" त्रस्यतीति त्रसः तं वा, **थावरो** जो थाणातो ण विचलति तं वा, **वा**सद्दो विकप्पे, सव्वे पगारा ण हंतव्वा । **वेदिका** पुण "क्षुद्रजन्तुषु णत्थि पाणातिवातो" त्ति एतस्स विसेसणत्थं सुहुमातिवयणं । जीवस्स असंखेज्जपदेसत्ते सव्वे सुहुम-बायरविसेसा सरीरदव्वगता इति सुहुम-बायरसंसद्दणेण एगग्गहणे समाणजातीयसूतणमिति ।

**केति सुत्तमिमं पढंति केति वृत्तिगतं विसेसिंति,** जहा—**से त पाणातिवाते चतुव्विहे, तं०—दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो ।** दव्वतो छक्कायसरीरदव्वोवरोहो संभवति अतो **दव्वतो छसु जीवनिका-**

१ "एते तिन्नि वि ५–६–७ भंगा पायसो सुण्णा" इति वृद्धविवरणे ॥

दस० सु० ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एसु । सव्वलोगगतो पाणातिवातसंभवो त्ति **खेत्ततो सव्वलोगे** । कालविकप्पो अयमेवेति **कालओ दिया वा राओ वा** । मंसादीगेहीए णेहाणुमारणं वा रागेण वेरियमारणं दोसेणं ति भणति—**भावतो रागेण वा दोसेण वा** । राग-दोसविरहितस्स सत्तोवघाते भावतो पाणातिवातो ण भवति, जेण दव्वतो नामेके पाणातिवाते णो भावतो, चतुभंगो सणिदरिसणो जहा **दुमपुप्फिताए** [ पत्र १२ ] । तं एवंप्रकारं पाणातिवातं ते वा सुहुमादिविकप्पे **णेव सतं पाणे अतिवातेमि, णेवऽण्णेहिं पाणे अतिवायावेमि, पाणे अतिवातंते वि अण्णे ण समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, मणसा वयसा कायसा ण करेमि ण कारवेमि करेंतं पि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि** । एतेसिं पदाणं विवरणं जहा आदौ । फलं—पाणातिवाते पसत्ताणं इहेव गरहा पच्चवायजोगो परलोगे दोग्गतिगमणं, एतदुभतं पाणातिवातविरताणं न भवति । महव्वतादौ पाणातिवाताओ वेरमणं पहाणो मूलगुण इति, जेण **अहिंसा परमो धम्मो**, सेसाणि महव्वताणि एतस्सेव अत्थविसेसगाणीति तदणंतरं । क्रमपडिनिग्गमणत्थं पच्चुच्चारणमुक्तार्थस्स[1]—**पढमे भंते! महव्वते पाणातिवातातो वेरमणं ॥ ११ ॥**

कातोपरोहाणंतरं सेसदोससव्वाणुगामी मुसावातदोसा इति भणति—

४२. आहावरे[2] दोच्चे भंते! महव्वते उवट्ठितो मि मुसावातातो वेरमणं, सव्वं भंते! मुसावातं पच्चक्खामि, से कोहा वा लोभा वा भता वा हासा वा । [से य[3] मुसावाते चउव्विहे, तं०—दव्वतो ४क । दव्वतो सव्वदव्वेसु, खेत्ततो लोगे वा अलोगे वा, कालतो दिया वा रातो वा, भावतो कोहेण वा लोभेण वा भतेण वा हासेण वा । ] णेव[5] सतं मुसं वएमि, णेवऽण्णेहिं मुसं वायावेमि, मुसं वयंते वि अण्णे ण समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणसा वयसा कायसा ण करेमि ण कारवेमि करेंतं पि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि । दोच्चे भंते! महव्वते[6] मुसावातातो वेरमणं ॥ १२ ॥

**४३. आहावरे दोच्चे भंते! महव्वते उवट्ठितो मि मुसावातातो वेरमणं । अह**सद्दो अणेगेसु अत्थेसु, इह अणंतरताए, पाणातिवातवेरमणाणंतरं, **अवर**सद्दो अण्णत्ते, पाणातिवाता पिहं, **दोच्चे** बितीए **भंते!**, सेसं जहा पाणातिवातवेरमणे । विसेसो—मुसावातो[7] तिविहो, तं०—सब्भावपडिसेहो १ अभूतुब्भावणं २ अत्थंतरं ३ । सब्भावपडिसेहो जहा 'नत्थि जीवे' एवमादि १ । अभूतुब्भावणं 'अत्थि, सव्वगतो पुण' २ । अत्थंतरं गाविं महिसिं भणति एवमादि ३ । मुसावातवेरमणे कारणाणीमाणि—**से कोहा वा लोभा वा भता वा हासा वा,**

---

१ °**क्तार्थस्य** मूलादर्शे । प्रत्युच्चारणं उक्तार्थस्य ॥ २ **अहावरे** अचू० विना । एवमग्रेऽपि महाव्रतालापकेषु ज्ञेयम् । ३ °**व्वए मुसावायाओ** अचू० विना ॥ ४ दृश्यतां पत्रं ८० टि० ४ ॥ ५ **नेव सयं मुसं वएज्जा नेवऽन्नेहिं मुसं वायावेज्जा मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, मणेणं वायाए काएणं** अचू० विना । **समणुजाणामि** स्थाने **समणुजाणेज्जा** शु० ॥ ६ °**व्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मुसावायाओ** अचू० विना ॥ ७ "तत्थ मुसावाओ चउव्विहो, तं०—सब्भावपडिसेहो १ असब्भूयुब्भावणं २ अत्थंतरं ३ गरहा ४ । तत्थ 'सब्भावपडिसेहो णाम' जहा णत्थि जीवो नत्थि पुण्णं नत्थि पावं नत्थि बंधो णत्थि मोक्खो एवमादी १ । 'असब्भूयुब्भावणं नाम' अत्थि जीवो [ सव्वगतो ] सामागतंदुलमेत्तो वा एवमादी २ । 'पयत्थंतरं नाम' जो गाविं भणइ 'एसो आसो' त्ति ३ । 'गरहा णाम' "तहेव काणं काणि त्ति" [ दश० अ० ७ गा० ११ ] एवमादि ४ ।" इति **वृद्धविवरणे** । श्रीहरिभद्रसूरिपादैरपि **वृत्तौ** "मृषावादश्चतुर्विधः" इत्यादिग्रन्थसन्दर्भेण **वृद्धविवरणा**नुसार्येव व्याख्यातमस्ति ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"दोसा[1] विभागे समाणासता" इति कोहे माणो अंतग्गतो, एवं लोभे माता, भत-हस्सेसु पेज्ज-कलहादतो सविसेसा। एते भावो त्ति दव्व-खेत्त-कालसूयणमवीति भण्णति–**से य मुसावाते चउव्विहे, तं–दव्वतो ण्क[2]।** सव्वदव्वगतं विसंवादणं ति **दव्वतो सव्वदव्वेसु,** लोगमण्णहा थितमण्णहा पण्णवेज्ज, अलोगे वा संति जीवादत इति एवं संभवो त्ति भण्णति–**खेत्ततो लोगे वा अलोगे वा**। अयमेव कालसंभव इति **कालतो दिया वा रातो वा। भावतो** कोहेण अब्भक्खाणं देज्ज एवमादि। दव्वतो णामं एगे मुसावाते नो भावतो चउभंगो। संभवो से मारणभएणं लिंकं[3] दिट्ठमवि अदिट्ठं भणति एस दव्वतो ण भावतो मुसावातो १। मुसावातववसितस्स खलिएण सब्भाववयणमागतं एस भावतो ण दव्वतो २। मुसावातपरिणतो मुसं वदति एस दव्वतो भावतो य ३। चउत्थो सुण्णो ४। तस्स भासणे दोसा–अविस्सासो गरहा जिब्भच्छेदणाईया इह, परलोए य दोग्गती, अभासणे पुज्जता विस्सासो परलोगे सुगतिगमणं। **दोच्चे भंते! महव्वते मुसावातातो वेरमणं ॥ १२ ॥**

**४४. आहावरे तच्चे भंते! महव्वते[4] उवट्ठितो मि अदिण्णादाणातो वेरमणं, सव्वं भंते! अदिण्णादाणं पच्चक्खामि[5], से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा। [ से तं[6] अदिण्णादाणे चतुव्विहे पण्णत्ते, तं० दव्वतो ण्क। दव्वतो अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, खेत्ततो गामे वा णगरे वा अरण्णे वा, कालतो दिया वा रातो वा, भावतो अप्पग्घे वा महग्घे वा। ] णेवँ[7] सतं अदिण्णं गेण्हेमि, णेवऽण्णेहिं अदिण्णं गेण्हावेमि, अदिण्णं गेण्हंते वि अण्णे न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, मणसा वयसा कायसा ण करेमि ण कारवेमि करेंतं पि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। तच्चे भंते! महव्वते अदिण्णादाणातो वेरमणं॥१३॥**

**४४. आहावरे तच्चे भंते! महव्वते उवट्ठितो मि अदिण्णादाणातो वेरमणं[8]। अदिण्णादाणं** परेहिं परिग्गहितस्स वा अपरिग्गहितस्स वा अणणुण्णातस्स गहण[म]दिण्णादाणं। सव्वं तहेव। दव्वतो–**अप्पं[9] वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा [ अचित्तमंतं वा ]।** अप्पं परिमाणतो मुलतो वा, परिमाणतो जहा एगा सुवण्णा गुंजा, मुलतो कवड्डितामुलं वत्थुं। बहुं परिमाणतो मुलतो वा, परिमाणतो सहस्सपमाणं, मुलतो एक्कं वेरुलितं। **अणुं** तणँ[10]-सुगादि, **थूलं** कोयँवगादी[11]। **चित्तमंतं** गवादि। **अचित्तमंतं** करिसावणादी[12]। **खेत्ततो गामे वा णगरे वा अरण्णे वा** गेण्हेज्जा। **कालतो दिया वा रातो वा। भावतो अप्पग्घं**

१ दोषा विभागे समानाशयाः, अयं भावः—विभागे कृते सति समानाशया दोषा अन्तर्भवन्त्येवेति ते गृह्यन्त इत्यर्थः ॥ २ **ण्क** इति चतुःसंख्याद्योतकोऽक्षराङ्कः ॥ ३ 'लिंकं' निलीनं यं कमपि मृगादिप्राणिनमित्यर्थः ॥ ४ **व्वते अदिण्णादाणाओ** अचू० विना ॥ ५ **क्खामि, से गामे वा णगरे वा रण्णे वा अप्पं वा** अचू० विना ॥ ६ दृश्यतां पत्रं ८० टिप्पणी ४ ॥ ७ **नेव सयं अदिन्नं गेण्हेज्जा, नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गेण्हावेज्जा, अदिन्नं गेण्हंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, मणेणं वायाए काएणं न करेमि** अचू० विना। **समणुजाणामि** स्थाने **समणुजाणेज्जा** शु० ॥ ८ **व्वते उवट्ठिओ मि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ** अचू० विना ॥ ९ "**अप्पं** परिमाणओ मुल्लओ य। तत्थ परिमाणओ जहा एगं एरंडकट्ठं एवमादि, मुल्लओ जस्स एगो कवड्डओ पु(?प)णो वा मुलं। **बहुं** नाम परिमाणओ मुल्लओ य, परिमाणओ जहा तिण्णि चत्तारि वि वइरा वेरुलिया, मुल्लओ एगं मे(? वे)रुलियं महामोल्लं। **अणुं** मूलगपत्तादी अहवा कट्ठं कलिंचं वा एवमादि। **थूलं** सुवण्णकोडी वेरुलिया वा उवगरणं।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ १० तृणसच्यादि ॥ ११ रूतपूर्णवस्त्रप्रावरणविशेषः ॥ १२ कार्षापणादि ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**वा** पलालादिं **महग्घं वा** सुवण्णगादी । एत्थ दव्वतो नामेगे अदिण्णादाणं गेण्हिज्जा णो भावतो चउभंगो । संभवो से दव्वतो णो भावतो जहा–तंण[1]-सुगादी साधू अणाभोगेण अणणुण्णवितं गेण्हेज्ज १ । चोरो खण्णमुहेण पविट्ठो न किंचि लद्धं एतं भावतो अदिण्णं ण दव्वतो २ । अण्णेण तहेव लद्धं एतं उभयहा ३ । चउत्थभंगो सुण्णो ४ । अदत्तस्स उपादाणे दोसा–इहलोगे गरहमादीणि परलोए दोग्गतीगमणं । विरतस्स एताणि ण भवंतीति °गुणः । **तच्चे०** ॥ १३ ॥

४५. आहावरे चउत्थे भंते ! महव्वऐ[2] उवट्ठितो मि मेहुणातो वेरमणं, सव्वं भंते ! मेहुणं पच्चक्खामि । से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणितं वा । [ [3]से य मेहुणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं०—दव्वतो क्क[6] । दव्वतो रूवेसु वा रूवसहगतेसु वा दव्वेसु, खेत्ततो उड्ढलोए वा अहोलोए वा तिरियलोए वा, कालतो दिया वा रातो वा, भावतो रागेण वा दोसेण वा । ] णेवं[4] सतं मेहुणं सेवेमि, णेवऽण्णेहिं मेहुणं सेवावेमि, मेहुणं सेवंते वि अण्णे ण समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, मणसा वयसा कायसा ण करेमि ण कारवेमि करेंतं पि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि । चउत्थे भंते ! [5]महव्वते मेहुणातो वेरमणं ॥ १४ ॥

**४५. आहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठितो मि मेहुणातो वेरमणं० । से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणितं वा ।** तं पुण विभागेण चउहा—**दव्वतो क्क । दव्वतो रूवेसु वा रूवसहगतेसु वा दव्वेसु, रूवं** पडिमा मयसरीरादि, **रूवसहगतं** सजीवं, अहवा **रूवं** आभरणविरहितं, **रूवसहगतं** आभरणसहितं । **खेत्ततो उड्ढलोए** पव्वत-देवलोगादिसु **अहोलोए** गड्डादिसु **तिरियलोए** दीव-समुद्देसु । **कालतो दिया वा रातो वा । भावतो रागेण वा दोसेण वा, रागेण** मयणुब्भवेण, **दोसेण** जहा वेरियस्स भज्जं वा कुमारिं वा विणासेति, एत्थ दोसपुव्वे वि रागो भवति । तं पि दव्वतो सेवेज्जा नो भावतो एस सुण्णो, जतो भावं विणा ण संभवति । किंच–

कामं सव्वपदेसु वि उस्सग्ग-ऽववातधम्मता दिट्ठा । मोत्तुं मेहुणभावं ण विणेसो राग-दोसेहिं ॥ १ ॥
[कल्पभाष्ये गा० ४९४४]

इत्थीए पुण बला सेविज्जमाणीए संभवति १ । जं पुण भावतो ण दव्वतो तं मेहुणसण्णापरिणतस्स असंपत्तीए २ । दव्वतो वि भावतो वि मेहुणसण्णापरिणतस्स संपत्तीए ३ । चउत्थो भंगो सुण्णो ४ । एतस्स णिसेवणे दोसा–इहभवे परदारगमणातिसु मारणादतो; राग-द्दोसा संसारकारणं, तेसिं कारणं मेहुणं, अतो परलोगे दोसाययणं परमं मेहुणं । **चउत्थे भंते ! महव्वते मेहुणातो वेरमणं** ॥ १४ ॥

---

१ तृण-सूच्यादि ॥ २ °व्वए **मेहुणाओ** अचू० विना ॥ ३ दृश्यतां पत्रं ८० टिप्पणी ४ ॥ ४ **नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा, नेवऽन्नेहिं मेहुणं सेवावेज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि** अचू० विना । **समणुजाणामि** स्थाने **समणुजाणेज्जा** शु० ॥ ५ °व्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ **मेहुणाओ** अचू० विना ॥ ६ क्क इति चतुःसंख्याद्योतकोऽक्षराङ्कः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६. आहावरे पंचमे भंते ! महव्वए[1] उवट्ठितो मि परिग्गहातो वेरमणं, सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि[2], से गामे वा णगरे वा अरण्णे वा । [[3]से य परिग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते, तं०—दव्वतो खेत्तओ कालतो भावतो । दव्वतो सव्वदव्वेहिं, खेत्ततो सव्वलोए, कालतो दिया वा रायो वा, भावतो अप्पग्घे वा महग्घे वा । ] णेव सतं परिग्गहं परिगिण्हेमि, णेवऽण्णेहिं परिग्गहं परिगेण्हावेमि, परिग्गहं परिगिण्हंते वि अण्णे ण समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणसा वयसा कायसा ण करेमि ण कारवेमि करेंतं पि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि । पंचमे भंते ! महव्वए[4] परिग्गहातो वेरमणं ॥ १५ ॥

४६. **आहावरे पंचमे भंते ! महव्वए उवट्ठितो मि परिग्गहातो वेरमणं०, से गामे वा णगरे वा अरण्णे वा**, सेसं तहेव । **दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो** । **दव्वतो सव्वदव्वेहिं** मुत्ता-ऽमुत्त[दव्व]समुदतो लोगो त्ति तं अणियत्ततण्हो पत्थेति । **खेत्ततो सव्वलोए** सव्वं खेत्तमधिकरेति । **कालतो दिया वा रायो वा** । ममयादि **भावतो अप्पग्घं वा महग्घं वा** ममाएज्जा । दव्वतो णामेगे परिग्गहे णो भावतो चउभंगो । पढमो भंगो साहूणं मुच्छं अगच्छंताण दव्वतो णो भावतो, परिग्गहं उवरिं भण्णिहीति "ण सो परिग्गहो वुत्तो०" [ अध्य० ६ गा० २० ] १ । बितियभंगो मुच्छित-गढितस्स असंपत्तीए २ । [ ततिओ भंगो मुच्छित-गढितस्स संपत्तीए ३ । ] चउत्थो भंगो सुण्णो ४ । एत्थ दोसो—सपरिग्गहो तक्कणीतो सव्वतो य संकितो भवति, रक्खणादीहिं णेव्वुतिं ण लभति, परलोए तहाभूतस्स दोग्गतीगमणं । सर्वास्रवद्वारप्रत्यपायदर्शनार्थं भगवतोमास्वातिनाऽभिहितम्—"हिंसादिष्विहामुत्र चापायाऽवद्यदर्शनम्" [ तत्त्वा० ७-४ ] "दुःखमेव वा" [ तत्त्वा० ७-५ ] "व्याधिप्रतीकारत्वात् कण्डूपरिगतवच्चाब्रह्म०" [ तत्त्वा० ७-५ सूत्रभाष्ये ] "परिग्रहेष्वप्राप्तनष्टेषु काङ्क्षा-शोकौ प्राप्तेषु च रक्षणं उपभोगे चाप्यतृप्तिः" [ तत्त्वा० ७-५ सूत्रभाष्ये ] । **पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहातो वेरमणं** ॥ १६ ॥

४७. आहावरे छट्ठे भंते[5] ! वते उवट्ठितो मि रातीभोयणाओ वेरमणं, सव्वं भंते ! रातीभोयणं पच्चक्खामि, से असणं वा पाणं वा खादिमं वा सादिमं वा । [ से तं[6] रातीभोयणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं०—दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो । दव्वतो असणे वा पाणे वा खादिमे वा सादिमे वा, खेत्ततो समयखेत्ते, कालतो राती, भावतो तित्ते वा कडुए वा कसाए वा अंबिले वा महुरे वा लवणे वा । ] णेवं[7]

---

१ °व्वए परिग्गहाओ अचू० विना ॥ २ °क्खामि, से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हेज्जा, नेवऽन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हावेज्जा, परिग्गहं परिगिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं अचू० विना । समणुजाणामि स्थाने समणुजाणेज्जा शु० ॥ ३ दृश्यतां पत्रं ८० टिप्पणी ४ ॥ ४ °व्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ अचू० विना ॥ ५ भंते ! वए राईभो° खं १-२-४ जे० शु० वृद्ध० हाटी० । भंते ! महव्वते राईभो° खं ३ ॥ ६ दृश्यतां पत्रं ८० टिप्पणी ४ ॥ ७ नेव सयं राइं भुंजेज्जा, नेवऽन्नेहिं राइं भुंजावेज्जा, राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि अचू० विना । समणुजाणामि स्थाने समणुजाणेज्जा शु० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सतं रातीभोयणं भुंजेमि णेवऽण्णेहिं रातीभोयणं भुंजावेमि रातीभोयणं भुंजंते वि अण्णे ण समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, मणसा वयसा कायसा ण करेमि ण कारवेमि करेंतं पि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि। छट्ठे भंते ! वते रातीभोयणातो वेरमणं ॥ १६ ॥

४७. **आहावरे छट्ठे०** तहेव। तं चउव्विहं–**दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो। दव्वतो असणं वा ४।** ओदणादि असणं, मुद्दितापाणगाती पाणं, मोदगादी खादिमं, पिप्पलिमादि सादिमं। **खेत्ततो समयखेत्ते** समतो–कालो सो जम्मि तं समतखेत्तं, तं पुण अड्डाइज्जा दीव-समुद्दा, एत्थ असणादिसंभवो। रातीभोयणपडिसेहो त्ति **कालतो राती। भावतो तित्ते वा कडुए वा** एवमादि। एत्थ वि दव्व-भावचउभंगो दव्वतो रातीभोयणं णो भावतो जहा–उग्गमितो सूरितो अणत्थमितो व त्ति अरत्तदुट्ठो साधू भुंजेज्जा आगाढे वा कारणे १। भावतो णो दव्वतो अणहियासस्स अणुग्गते भोतव्ववसियस्स मेघादिव्ववहिते उद्दिते भुंजंतस्स २। दव्वतो भावतो वि आउत्तिताए रातिं भुंजंतस्स ३। चउत्थभंगो सुण्णो ४ ॥ १६ ॥

४८. इच्चेताणि पंच महव्वताणि रातीभोयणवेरमणछट्ठाणि अत्तहियट्ठताए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ १७ ॥[4]

४८. **इतिसद्दो** परिसमत्तिविसतो। **एताणीति** अणंतरोववण्णिताण पच्चक्खीकरणं। **पंचेति** वित्थरस्स नियमे ववत्थावणं। **महव्वताणीति** भणितं। **रातीभोयणवेरमणछट्ठाइं** रातीभोयणवेरमणं छट्ठं जेसिं ताणि महव्वताणि मूलगुणा, तेसु पढिज्जति त्ति मूलगुणो पंच महव्वताणि, "**रातीभोयणवेरमणछट्ठाणी**"**त्ति** पाढेण सूतिज्जति उत्तरगुणो, एतं संदेहकारणमुपादाय चोदगो भणति–किं रातीभोयणं मूलगुण उत्तरगुणः?, गुरवो भणंति–उत्तरगुण एवायं, तहावि सव्वमूलगुणरक्खाहेतु त्ति मूलगुणसंभूतं पढिज्जति। रातीभोयणवेरमणछट्ठाणि य पढिज्जंति महव्वताणि। **अत्तहियट्ठताए** अप्पणो हितं जो धम्मो मंगलमिति भणितो तदट्ठं **उवसंपज्जित्ताणं विहरामि** "समानकर्तृकयोः पूर्वकाले" [ पाणि० ३।४।२१ ] इति 'उपसंपद्य विहरामि' महव्वताणि पडिवज्जंतस्स वयणं, गणहराणं वा सूत्रीकरेंताणं ॥ १७ ॥ समारोपितमहव्वतस्स तेसिं पडिवालणट्ठा जयणा भण्णति—

४९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजत-विरत-पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे दिता वा रातो वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एगतो वा परिसागतो वा, से पुढविं वा भित्तिं वा सिलं वा लेलुं वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण वा

---

१ **भंते! वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ राईभो°** अचू० विना। **वए** स्थाने **महव्वए** खं ३ ॥ २ मृद्वीका द्राक्षा ॥ ३ °**ए ठाति** मूलादर्शे ॥ ४ एतत्सूत्रानन्तरं जे० आदर्शे **पंच महव्वया समत्ता** इति, खं १ आदर्शे च **महव्वयाणि समत्ताणि** इति च पुष्पिका वर्त्तते ॥ ५ '**समिति**' मूलादर्शे ॥ ६ "**छट्ठे भंते! वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं**। एत्थ सीसो आह— पंच महव्वयाणि जिणपवयणे पसिद्धाणि, तो किमेयं राईभोयणं महव्वएसु वणिज्जमाणेसु भणियं? ति। आयरिओ आह—पुरिम-पच्छिमगाण जिणवराणं काले पुरिसविसेसं पप्प पट्ठवियं, तत्थ पुरिमजिणकाले पुरिसा उज्जु-जडा, पच्छिमजिणकाले पुरिसा वंक-जडा, अतो निमित्तं महव्वयाण उवरिं ठवियं, जेण तं महव्वयमिव मन्नंता ण पिल्लेहिंति; मज्झिमगाणं पुण एयं उत्तरगुणेसु कहियं, किं कारणं? जेण ते उज्जु-पण्णत्तणेण सुहं चेव परिहरंति।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ७ **राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से पुढविं** खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी०। **वृद्धविवरणे** तु **अगस्त्यसिंह**मान्य एव पाठोऽस्ति ॥ ८ **हत्थेण वा पाएण वा कट्ठेण वा कलिंचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा सलागहत्थेण वा न आलि°** खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी०। **वृद्धविवरणे** तु **अगस्त्यचूर्णिसम** एव कमो वर्त्तते। केवलं तत्र **सलागहत्थेण वा** इति पदं व्याख्यातं वर्त्तते ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पादेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा कट्ठेण वा [1]कलिंचेण वा [2]णोऽऽलिहेज्जा ण विलिहेज्जा ण घट्टेज्जा ण भिंदेज्जा, अण्णं [3]णोऽऽलिहावेज्जा ण विलिहावेज्जा ण घट्टावेज्जा ण भिंदावेज्जा, अण्णं पि आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा ण समणु[4]जाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, [5]मणसा वयसा कायसा ण करेमि ण कारवेमि करेंतं पि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १८ ॥

४९. **से भिक्खू वा०** सुत्तं । से इति पडिसमासवतणं, जस्स एताणि वताणि उद्दिट्ठाणि **से भिक्खू वा** । जातिसद्देणं विकप्पणत्थं भण्णति – **भिक्खुणी वा । संजतविरत०, संजतो** एक्कीभावेण सत्तरसविहे संजमे ठितो, अत एव यः पावेहिंतो [6]**विरतो** पडिनियत्तो, **पडिहतं** णासितं, **पच्चक्खातं** णियत्तियं, **पावकम्म**-सद्दो पत्तेयं परिसमप्पति, पडिहतं **पावकम्मं** पावं । सव्वकालितो णियमो त्ति कालविसेसणं—**दिता वा रातो वा** सव्वदा । चेट्ठाऽवत्थंतरविसेसणत्थमिदं—**सुत्ते वा** जहाभणितनिद्दामोक्खत्थसुत्ते **जागरमाणे वा** सेसं कालं । परनिमित्तमाकुलं रहो वा तं विसेसिज्जति—**एगतो वा** एगत्तणं गतो **परिसागतो वा** परिसा–जणसमुदतो तग्गतो वा । तस्सेव विसेसितस्स जं न करणिज्जं तदिदमुपदिस्सति—**से पुढविं वा० । से** इति वयणोवण्णासे । **पुढवी** सक्करादीविकप्पा । **भित्ती** णदी-पव्वतादितडी, ततो वा जं अवद्दलितं । **सिला** सवित्थारो पाहणविसेसो । **लेल्दू** मट्टियापिंडो । **सरक्खो** पंसू, तेण अरण्णपंसुणा सहगतं **ससरक्खं**, तं **ससरक्खं वा कायं, काय** इति सरीरं । **वत्थं** खोमिकादि । पुढविकातियजयणा एवमिति भण्णति–**हत्थेण वा० । हत्थो** पाणी । **पादो** चरणो । **अंगुली** हत्थेगदेसो । **सलागा** कट्ठमेव घडितगं । अघडितगं **कट्ठं । कलिंचं** तं चेव सण्हं । एतेहिं करणभूतेहिं पुढवियादीणि **णाऽऽलिहेज्जा**, णगारो पडिसेहगो, तेसिं आलिहणादि पडिसेहेति । ईसिं लिहण**मालिहणं** । विविहं लिहणं [ **विलिहणं** ] । **घट्टणं** संचालणं । **भिंदणं** भेदकरणं । सयं तावदेवं । णो वि अण्णं **आलिहावेज्जा वा०** एतं कारवणं । **अण्णं पि आलिहंतं ण समणुजाणामीति** अणुमोदणं पडिसिद्धं । **जावज्जीवाए** जाव **वोसिरामि** पुव्वभणितं ॥ १८ ॥

एसा पुढविकातियजतणा । आउक्कातियजतणापरूवणत्थं भण्णति—

५०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजत-विरत-पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे दिता वा [7]रातो वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एगतो वा परिसागतो वा, से उदगं वा [8]तोसं वा हिमं वा महितं वा करगं वा हर[9]तणुगं वा सुद्धोदगं वा [10]उदओल्लं वा कातं [11]उदओल्लं वा वत्थं ससणिद्धं वा कातं ससणिद्धं वा वत्थं ण आमुसेज्जा ण [12]संमुसेज्जा ण आपीलेज्जा ण निप्पीलेज्जा ण अक्खोडेज्जा ण पक्खोडेज्जा ण आतावेज्जा ण पतावेज्जा, अण्णं ण आमुसावेज्जा ण

१ किलिंचेण खं १-२-३ ॥ २–३ न आलि° खं ४ जे० ॥ ४ °जाणेज्जा खं ३ शु० वृद्ध० हाटी० ॥ ५ मणेणं वायाए काएणं खं १–२–३–४ जे० शु० ॥ ६ "विरओ णाम अणेगपगारेण बारसविहे तवे रओ" इति वृद्ध० ॥ ७ दृश्यतां पत्रं ८६ टिप्पणी ७ ॥ ८ ओसं वा अचू० विना ॥ ९ °तणुं वा खं १-३ ॥ १०–११ उदउल्लं खं २-३-४ जे० ॥ १२ संफुसेज्जा न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा ण अक्खो° अचू० विना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[1]सम्मुसावेज्जा ण आपीलावेज्जा ण निप्पीलावेज्जा ण अक्खोडावेज्जा ण पक्खोडा-वेज्जा ण [2]आतावेज्जा ण पतावेज्जा, [3]अण्णं पि आमुसंतं वा [4]सम्मुसंतं वा आपीलंतं वा निप्पीलंतं वा अक्खोडेंतं वा पक्खोडेंतं वा [5]आतावेंतं वा पतावेंतं वा ण समणु[6]जाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, [7]मणसा वयसा कायसा ण करेमि ण कारवेमि करेंतं पि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १९ ॥

५०. **से भिक्खू वा०** । **से उदगं वा** नदी-तलागादिसंसितं पाणियमुदगं । सरयादौ णिसि मेघसंभवो सिणेहविसेसो [8]**तोस्सा** । अतिसीतावत्थंभितमुदगमेव **हिमं** । पोतो सिसिरे दिसामंधकारकारिणी **महिता** । वरिसोदगं [9]कढिणीभूतं **करगो** । [10]"किंचि सणिद्धं भूमिं भेत्तूण कहिंचि समस्सयति सफुसितो सिणेहविसेसो **हरतणुतो** । अंतरिक्खपाणितं **सुद्धोदगं** । एतेहिं उदगादीहि [11]"तोलं **उदओल्लं वा कातं** सरीरं, **उदओल्लं वा वत्थं, ओल्लं** जं सबिंदुगं । **ससणिद्ध**[म]बिंदुगं ओलं ईसिं । तमेवंगतं कातं वत्थं वा **ण आमुसेज्जा** ईसि मुसण**मामुसणं** । समेच्च मुसणं **सम्मुसणं** । ईसिं पीलण**मापीलणं** । अधिकं पीलणं **निप्पीलणं** । एकं खोडणं **अक्खोडणं** । भिसं खोडणं **पक्खोडणं** । ईसिं तावण**मातावणं** । प्रगतं तावणं **पतावणं** । एताइं सयं ण करेज्जा, परेण ण कारेज्जा, अण्णं पि **नाणुजाणेज्जा**, जाव **वोसिरामि** ॥ १९ ॥

आउक्कायजयणाणंतरं तेउजयणत्थं भण्णति—

५१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजत-विरत-पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे दिता वा [13]रातो वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एगतो वा परिसागतो वा, [14]से इंगालं वा मुम्मुरं वा अच्चिं [15]वा अलातं वा जालं वा उक्कं वा सुद्धागणिं वा, ण उंजेज्जा ण [16]घट्टेज्जा ण उज्जालेजा ण निव्वावेज्जा, अण्णं ण उंजावेज्जा ण घट्टावेज्जा ण उज्जालावेज्जा ण निव्वावेज्जा, अण्णं पि उंजंतं वा घट्टंतं वा उज्जालंतं वा निव्वावंतं वा ण समणु[17]जाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, [18]मणसा वयसा कायसा ण करेमि ण कारवेमि करेंतं पि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ २० ॥

---

१ **संफुसावेज्जा न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा न अक्खो°** अचू० विना ॥ २ **आयावेज्जा न पयावावेज्जा** खं ३ ॥ ३ **अण्णं आमु°** खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी० ॥ ४ **संफुसंतं वा आवीलंतं वा पवीलंतं वा अक्खो°** अचू० विना ॥ ५ **आयावयंतं वा पयावयंतं** खं ४ ॥ ६ **°जाणामि जाव** खं १-२-४ जे० ॥ ७ **मणेणं वायाए काएणं** खं १-२-३-४ जे० शु० ॥ ८ "**उस्सा** नाम निसि पडइ पुव्वण्हे अवरण्हे वा, सा य **तेहो** भण्णइ" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ९ प्रायः ॥ १० **कढणी°** मूलादर्शे ॥ ११ "**हरतणुओ** भूमिं भेत्तूण उट्ठेइ, सो य उच्छुगाइसु तिंताए भूमीए ठविएसु दीसति ।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ १२ तोलं आर्द्रम् ॥ १३ दृश्यतां पत्रे ८६ टिप्पणी ७ ॥ १४ **से अगणिं वा इंगालं** अचू० विना ॥ १५ **वा जालं वा अलायं वा सुद्धागणिं वा उक्कं वा न उंजेज्जा** खं १-३-४ जे० शु० हाटी० । **वा अलायं वा जालं वा सुद्धागणिं वा उक्कं वा न उंजेज्जा** वृद्ध० ॥ १६ **घट्टेज्जा न भिंदेज्जा न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा न निव्वावेज्जा, अन्नं न उंजावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा न उज्जालावेज्जा न पज्जालावेज्जा न निव्वावेज्जा, अण्णं उंजंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा उज्जालंतं वा पज्जालंतं वा निव्वावंतं वा** खं ४ ॥ १७ **जाणामि जाव°** खं १-२-३-४ जे० शु० ॥ १८ **मणेणं वायाए काएणं** खं १-२-३-४ जे० शु० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**५१. से भिक्खू वा** जाव **परिसागतो वा**। इमे तेउक्कायप्पगारे परिहरेज्जा–[1]**'से** इति पूर्ववत् । **इंगालं वा** खदिरादीण णिद्दड्ढाण धूमविरहितो **इंगालो** । करिसगादीण किंचि सिट्ठो अग्गी **मुम्मुरो** । दीवसिहासिहरादि **अची** । [ **अ** ]**लातं** उमुतं । उद्दित्तोपरि अविच्छिण्णा **जाला** । [ **उक्का** ] विज्जुतादि । एते विसेसे मोत्तूण **सुद्धागणी** । **वा**सद्दो विकप्पे । सव्वे अगणिप्पगारा एवं परिहरेज्जा–**ण उंजेज्जा०** अवसंतुयणं **उंजणं**, परोप्परसमुताणं अण्णेण वा आहणणं **घट्टणं**, वीयणगादीहिं जालाकरणमुज्जालणं, विज्झवणं **निव्वावणं**। एताणि सयं ण करेज्जा, परेण ण कारवेज्जा, करेंतं नाणुजाणेज्जा जाव **वोसिरामि** ॥ २० ॥

वाउक्कायविकप्पजयणुद्देसत्थमिदं भण्णति—

**५२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजत-विरत-पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे दिता वा रातो[2] वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एगतो वा परिसागतो वा, से सिएण वा विहुवणेण[3] वा तालवेंटेण[4] वा पत्तेण[5] वा साहाए वा साहाभंगेण वा पेहुणेण वा पेहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा अप्पणो[6] कायं बाहिरं वा[7] पोग्गलं ण फुमेज्जा ण वीएज्जा, अण्णं ण फुमावेज्जा ण वीयावेज्जा, अण्णं फुमेंतं वा वीएंतं वा ण समणुजाणेज्जा[8], जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, मणसा[9] वयसा कायसा ण करेमि ण कारवेमि करेंतं पि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ २१ ॥**

**५२. से भिक्खू वा० पच्चक्खातपावकम्मे०** । इमे वाउक्कायविसेसे एवं परिहरेज्ज–"**से [सि]एण वा०**" चामरं **सितं** । वीयणं **विहुवणं** । **तालवेंटमुक्खेवजाती** । पउमिणिपण्णमादी **पत्तं** । रुक्खडालं **साहा**, तदेगदेसो **साहाभंगतो** । **पेहुणं** मोरंगं, तेसिं कलावो **पेहुणहत्थतो** । वत्थं **चेलं**, तदेकदेसो **चेलकण्णो** । **हत्थो** पाणी । **मुहं** वयणं । एतेहिं करणभूतेहिं **अप्पणो कायं बाहिरं वा पोग्गलं** अप्पणो सरीरं सरीरवज्जो बाहिरो पोग्गलो । **ण फुमेज्जा० फुमणं** मुहेण वातप्रेरणम्, सेसेहि वीयणं । एतेसिं सयं करणं परेण कारावणं अणुमोयणं वा जाव **वोसिरामि** ॥ २१ ॥ वणस्सतिकातजतणत्थोऽयमुक्खेवो—

**५३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजत-विरत-पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे दिता वा रातो[10] वा सुत्ते वा जागरमाणे एगतो वा परिसागतो वा, से बीएसु वा बीतपतिट्ठितेसु वा रूढेसु वा रूढपतिट्ठितेसु वा जातेसु वा जातपतिट्ठितेसु**

१ "**से** त्ति निद्देसे वट्टति, जो अगणिक्काओ हेट्ठा भणिओ तस्स निद्देसो । **अगणी** नाम जो अयपिंडाणुगओ फरिसगिज्झो सो अयपिंडो भण्णइ । **इंगालो** नाम जालारहिओ । **मुम्मुरो** नाम जो छाराणुगओ अग्गी सो **मुम्मुरो** । **अची** नाम आगासाणुगया परिच्छिण्णा अग्गिसिहा । **अलायं** नाम उम्मुयाहियं पज्जलियं । **जाला** पसिद्धा चेव । इंधणरहिओ **सुद्धागणी** । **उक्का** विज्जुगादि ।" इति **वृद्धविवरणे** । "इह अयस्पिण्डानुगतोऽ**ग्निः** । ज्वालारहितोऽ**ङ्गारः** । विरलाग्निकं भस्म **मुर्मुरः** । मूलाग्निविच्छिन्ना ज्वाला **अर्चिः** । प्रतिबद्धा **ज्वाला** । **अलातं** उल्मुकम् । निरिन्धनः **शुद्धाग्निः** । **उल्का** गगनाग्निः" इति **हारिभद्र्यां वृत्तौ** ॥ २ दृश्यतां पत्रे ८६ टिप्पणी ७ ॥ ३ **विहुयणेण** खं १–२–३–४ जे० शु० ॥ ४ **तालियंटेण** खं १–२–३–४ जे० शु० वृद्ध० ॥ ५ **पत्तेण वा पत्तभंगेण वा साहाए** खं १–२–३–४ जे० शु० ॥ ६ **अप्पणो वा कायं** अचू० विना ॥ ७ **वा वि पो°** खं १–२–३–४ जे० शु० वृद्ध० ॥ ८ **°जाणामि जाव°** खं १–२–४ जे० ॥ ९ **मणेणं वायाए काएणं** खं १–२–३–४ जे० शु० ॥ १० दृश्यतां पत्रं ८६ टिप्पणी ७ ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा हरितेसु वा हरितपतिट्ठितेसु वा छिण्णेसु वा छिण्णपतिट्ठितेसु वा[1] सचित्त-कोलपडिणिस्सितेसु[2] वा ण गच्छेज्जा ण चिट्ठेज्जा ण णिसीदेज्जा ण तुयट्टेज्जा, अण्णं ण गच्छावेज्जा ण चिट्ठावेज्जा ण णिसीदावेज्जा ण तुयट्टावेज्जा, अण्णं पि गच्छंतं वा चिट्ठंतं वा णिसीदंतं वा तुयट्टंतं वा न समणुजाणेज्जा,[3] जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण, [4]मणसा वयसा कायसा ण करेमि ण कारवेमि करेंतं पि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ २२ ॥

५३. **से भिक्खू वा० परिसागतो वा।** तस्स इमे विकप्पा– **से बीएसु वा० बीयं** सालिमादीणं, तेसिमुपरि जं निक्खित्तं तं **बीतपतिट्ठितं।** उब्भिज्जंतं **रूढं,** तदुपरि विण्णत्थं तं **रूढपतिट्ठितं।** आबद्धमूलं **जातं, पतिट्ठितं** तहेव। **हरियाणि** हरितालिकादीणि, **पतिट्ठितं** तहेव। **छिण्णं** पिहीकतं तं अपरिणतं, तत्थ पतिट्ठितं **छिण्णपतिट्ठितं। सचित्त-कोलपडिणिस्सितेसु वा,** पडिणिस्सितसद्दो दोसु वि, सचित्तेसु पडिणिस्सिताणि अंडग-उद्देहिगादिसु, **कोला** घुणा ते जाणि अस्सिता ते कोलपडिणिस्सिता, तेसु सचित्त-कोलपडिणिस्सितेसु वा। **ण गच्छेज्जा० गमणं** चंकमणं, **चिट्ठणं** ठाणं, **णिसीदणं** उपविसणं, **तुयट्टणं** निवज्जणं। एताणि सयं ण करेज्जा, परे ण कारेज्जा, करेंतं नाणुजाणेज्जा जाव **वोसिरामि** ॥ २२ ॥

५४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजत-विरत-पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे दिता वा रातो[5] वा सुत्ते वा जागरमाणे वा एगतो वा परिसागतो वा, से कीडं वा पयंगं वा कुंथुं वा पिवीलियं वा [6]हत्थंसि वा पादंसि वा बाहंसि[7] वा उरंसि वा सीसंसि वा ऊरुंसि वा उदरंसि वा पातंसि वा रयहरणंसि वा गोच्छगंसि

---

१ **वा सचित्तेसु वा सचि°** खं १-२-३-४ जे० शु० ॥ २ **°पइणिस्सितेसु** खं ३। **°पइट्ठेसु** खं १ ॥ ३ **°जाणामि जाव** खं १-२-४ जे० ॥ ४ **मणेणं वायाए काएणं** खं १-२-३-४ जे० शु० ॥ ५ दृश्यतां पत्रं ८६ टिप्पणी ७ ॥ ६ **हत्थे सिता पादे सिता बाहे सिता उरे सिता सीसे सिता ऊरू सिता उदरे सिता पाते सिता रयहरणे सिता गोच्छगे सिता डंडगे सिता कंबले सिता उंडुए सिता पीढगे सिता फलगे सिता सेज्जगे सिता संथारगे सिता अण्णतरे सिता तं संजता°** अचूपा० ॥ ७ **बाहुंसि वा ऊरुंसि वा सेज्जगंसि वा संथारगंसि वा अण्णतरंसि वा, तओ संजयामेव एगंतमवणेज्जा, णो णं संघातमावज्जइ** एतत्पाठानुसारेण **वृद्धविवरण**कृता व्याख्यातं वर्तते। श्रीहरिभद्रपादैस्तु-**बाहुंसि वा ऊरुंसि वा उदरंसि वा वत्थंसि वा रयहरणंसि वा गुच्छगंसि वा उंडगंसि वा दंडगंसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सेज्जगंसि वा संथारगंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए, तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगंतमवणेज्जा, नो णं संघायमावज्जेज्जा** इति पाठानुसारेण व्याख्यातं ज्ञायते। **बाहुंसि वा ऊरुंसि वा उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा पडिग्गहंसि वा कंबलंसि वा पायपुंछणंसि वा रयहरणंसि वा गोच्छगंसि वा उंडुयंसि** (अग्रे हरिभद्रसमः पाठः) खं १ शु०। **बाहुंसि वा ऊरुंसि वा उदरंसि वा सीसंसि वा पडिग्गहंसि वा वत्थंसि वा रयहरणंसि वा गोच्छंसि वा कंबलंसि वा पायपुंछणंसि वा उंडुयंसि वा डंडंसि वा पीढंसि वा फलगंसि वा सेज्जंसि वा** (अग्रे हरिभद्रसमः पाठः) जे०। **बाहुंसि वा ऊरुंसि वा उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा पत्तंसि वा रयहरणंसि वा कंबलंसि वा गोच्छंसि वा उंडयंसि वा** (अग्रे हरिभद्रसमः पाठः) खं २ शु०। **बाहंसि वा ऊरुंसि वा उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा पडिग्गहंसि वा कंबलंसि वा पायपुंछणंसि वा रयहरणंसि वा उंडुयंसि वा दंडगंसि वा गोच्छगंसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारगंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि उवगरणजाए तं संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगंतमवक्कमेज्जा नो णं संघायमावज्जेज्जा** खं ३-४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा डंडगंसि वा कंबलंसि वा उंदुयंसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारगंसि वा अण्णतरंसि वा, तं संजतामेव एकंते अवणेज्जा णो णं संघायमावाएज्जा ॥ २३ ॥

५४. **से भिक्खू वा०** । तसकायविकप्पणिद्देसोऽयं–**से कीडं वा०** । **से** इति वयणावधारणत्थं । **कीड-पयंग-कुंथु-पिवीलियातो** पुव्वभणितातो । एतेसिं अण्णयरो जदि होज्जा **हत्थंसि वा०, अहवा "हत्थे सित्ता"** यदुक्तं स्यात् । **पाद[1]-बाहु-उर-सीस-ऊरु-उदर-पात-रयहरण-गोच्छग-डंडग** एते सिद्धा । **कंबलो** सामूली । **उंदुयं[2]** जत्थ चिट्ठति तं ठाणं । **पीढगं** कट्ठमतं छाणमतं वा । **फलगं** जत्थ सुप्पति चंपगपट्टादिपेढणं वा । **सेज्जा** सव्वंगिका । **संथारगो** यऽड्ढा[3]इज्जहत्थाततो सचतुरंगुलं हत्थं विरिथिण्णो । **अण्णतरवयणेण** तोवेग्गहियमणेगागारं[4] भणितं । एतेसु हत्थादिसु कीडादीणं अण्णतरो होज्जा **तं संजतामेव** जयणाए जहा ण परिताविज्जति **एकंते** जत्थ तस्स उवघातो ण भवति तहा **अवणेज्जा** । **णो णं संघायमावाएज्जा** परोप्परं गत्तपीडणं संघातो । एत्थ **आदि**सद्दलोपो, संघट्टण-परितावणोद्दवणाणि सूतिज्जंति । **आवज्जणा** तं अवत्थं पावणं ॥ २३ ॥ पुढविता[5]दीणि पडुच्च पाणातिवायवेरमणअणुपालणत्थं जयणा, एस छज्जीवणियाए चउत्थो अधिकारो । उवदेसो, सो य इमो—

५५. अजतं चरमाणस्स[6] पाण-भूताणि[7] हिंसतो[8] ।
बंधति[9] पावगं कम्मं तं से होति कडुयं फलं ॥ २४ ॥

५५. **अजतं चरमाणस्स०** सिलोगो । अजयं अपयत्तेणं **चरमाणस्स** गच्छमाणस्स, रियासमितिविरहितो[10] सत्तोपघातमातोवघातं वा करेज्जा । पाणाणि चेव भूताणि **पाणभूताणि**, अहवा **पाणा** तसा, **भूता** थावरा, अहवा फुडऊसास-नीसासा **पाणा**, सेसा भूता, ताणि **हिंसंतो[11]** मारेमाणस्स । तस्सेवंभूतस्स **बज्झति पावगं कम्मं, बज्झति** एक्केक्को जीवपदेसो अट्ठहिं कम्मपगडीहि आवेढिज्जति, **पावगं कम्मं** अस्सायवेयणिज्जाति । अजयणातो हिंसा, ततो पावोवचतो[12], तस्स फलं **तं से होति कडुयं फलं** कडुगविवागं कुगति-अबोधिलाभनिव्वत्तगं ॥ २४ ॥

ण केवलमजतं चरमाणस्स, किं तरिहि[13] ?

५६. अजतं चिट्ठमाणस्स पाण-भूताणि[14] हिंसतो ।
बज्झति पावगं कम्मं तं से होति कडुयं फलं ॥ २५ ॥

५६. **अजतं चिट्ठमाणस्स०** । **चिट्ठमाणो** उद्धट्ठितत्तो । तस्स हत्थ-पादातिविच्छोभेण सत्तोवरोहो त्ति । सेसं तहेव ॥ २५ ॥ अण्णो वि चेट्ठाविसेसो णियमिज्जति—

५७. अजतं आसमाणस्स पाण-भूताणि हिंसतो ।
बज्झति पावगं कम्मं तं से होति कडुयं फलं ॥ २६ ॥

---

१ **पाद-पाह-उद-सीस°** मूलादर्शे ॥ २ "उन्दकं स्थण्डिलम्" इति हारि० वृत्तौ ॥ ३ अर्द्धतृतीयहस्तायतः हस्तातत इति वा ॥ ४ औपग्रहिकमनेकाकारम् ॥ ५ पृथिव्यादीनि ॥ ६ **°माणो उ पा°** अचू० विना । एवमग्रेऽपि ॥ ७ **°भूयाइं** खं १–३ । **°भूयाई** खं २–४ जे० । **°भूयाइ** शु० । एवमग्रेऽपि ॥ ८ **हिंसइ** खं १–२–३ जे० शु० हाटी० । **हिंसए** खं ४ । एवमग्रेऽपि ॥ ९ **बंधई** अचू० विना । एवमग्रेऽपि ॥ १० ईर्यासमितिविरहितः सत्त्वोपघातमात्मोपघातं वा कुर्यात् ॥ ११ " सत्ताणं विविहेहिं पगारेहिं हिंसमाणो बंधई पावगं कम्मं, 'बंधइ नाम' एक्केक्कं जीवप्पदेसं अट्ठहिं कम्मपगडीहिं आवेढिअपरिवेढियं करेति" इति **वृद्धविवरणे** ॥ १२ पापोपचयः ॥ १३ किं तर्हि ? ॥ १४ **°भूयाइं** खं १–२–३–४ । **°भूयाई** जे० । **°भूयाइ** शु० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**५७. अजतं आसमाणस्स०** । **आसमाणो** उवेट्ठो सरीरकुरुकुतादि । सेसं तहेव ॥ २६ ॥

अयमवि णियमिज्जति—

५८. अजतं [1]सुतमाणस्स पाण-भूताणि हिंसतो ।
बज्झति पावगं कम्मं तं से होति कडुयं फलं ॥ २७ ॥

**५८. अजतं सुतमाणस्स०** । आउंटण-पसारणादिसु पडिलेहण-पमज्जणमकरिंतस्स पकाम-णिकामं रत्तिं दिवा य सुयन्तस्स । सेसं तहेव ॥ २७ ॥ भोयणगतो वि चेट्ठाविसेसो नियमिज्जति—

५९. अजतं भुंजमाणस्स पाण-भूताणि हिंसतो ।
बज्झति पावगं कम्मं तं से होति कडुयं फलं ॥ २८ ॥

**५९. अजतं भुंजमाणस्स०** । सुरुसुरादि काक-सियालभुत्तं एवमादि । सेसं तहेव ॥ २८ ॥

वायानियमणत्थं भणति—

६०. अजतं भासमाणस्स पाण-भूताणि हिंसतो ।
बज्झति पावगं कम्मं तं से होति कडुयं फलं ॥ २९ ॥

**६०. अजतं भासमा०** सिलोगो । तं पुण सावज्जं वा ढड्डरमादीहिं वा । सेसं तहेव ॥ २९ ॥

अंतेवासी भणति—छक्कायसमाकुलो लोगो, गमण-थाणा-ऽऽसण-सुवण-भोयण-भासणविरहितस्स णत्थि सरीरधारणमिति सरीरधारणत्थं भगवन् !

६१. कहं चरे? कहं चिट्ठे? [2]कहमासे? कहं [3]सुवे? ।
कहं भुं[4]जंतो भासंतो पावं कम्मं ण [5]बज्झति? ॥ ३० ॥

**६१. कहं०** सिलोगो । **कहमिति** गमणादिउपायपरिपुच्छा । सिलोगत्थो फुड एव ॥ ३० ॥

सूरिराह—छज्जीवणिकायसमाकुले वि लोगे गमणादि[6]अधीणे य सरीरधारणे तहा वि भगवता भव्वसत्तबंधुणा उवातोऽयमुपदिट्ठो जतणा इति । भणितं च—

जलमज्झे जहा णावा सव्वतो णिपरिस्सवा । गच्छंती चिट्ठ[7]माणी वा जलं ण परिगिण्हति ॥ १ ॥
एवं जीवाकुले लोके साधू [8]संवरियासवो । गच्छंतो चिट्ठमाणो वा पावं ण परिगिण्हति ॥ २ ॥

सो य इमो उवातो—

६२. जयं चरे जयं चिट्ठे [9]जयमासे जयं [10]सुवे ।
जयं भुंजंतो भासंतो पावं कम्मं ण [11]बज्झति ॥ ३१ ॥

**६२. जयं चरे०** सिलोगो । **जयं चरे** इरियासमितो दट्ठूण तसे पाणे “उद्धट्टु पादं रीएज्जा०” एवमादि । **जयमेव** कुम्मो इव गुत्तिंदितो चिट्ठेज्जा । एवं आसेज्जा पहरमत्तं । सुवणा जयणाए सुवेज्जा । दोसवज्जितं भुंजेज्ज । जहा **वक्कसुद्धीए** भण्णिहिति तहा भासेज्जा ॥ ३१ ॥ एवं सव्वावत्थं जयणापरस्स—

---

१ **सुयमाणो उ पा°** वृद्ध० । **सयमाणो उ पा°** खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी० ॥ २ **कहं आसे** शु० ॥ ३ **सए** अचू० विना ॥ ४ अत्रागस्त्यपादपाठानुसारेण **भुञ्जतो भाषमाणस्य** इति व्याख्येयम्, अनुस्वारस्त्वत्र छन्दोभङ्गनिवारणाय, अन्यत्र तु **भुञ्जानो भाषमाण** इति सुस्थमेव व्याख्यानम् । एवमग्रेऽपि ॥ ५ **बंधइ** अचू० विना ॥ ६ **°अधीणे य सचीर°** मूलादर्शे ॥ ७ **°माणि वा** मूलादर्शे ॥ ८ **संवडिया°** मूलादर्शे ॥ ९ **जयं आसे** शु० ॥ १० **सए** अचू० विना ॥ ११ **बंधई** अचू० विना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६३. सव्वभूतऽप्पभूतस्स सम्मं भू[1]ताणि पासतो ।
पिहितासवस्स दंतस्स पावं कम्मं ण ब[2]ज्झति ॥ ३२ ॥

६३. **सव्वभूतऽप्पभूतस्स०** सिलोगो । **सव्वभूता** सव्वजीवा तेसु सव्वभूतेसु **अप्पभूतस्स** जहा अप्पाणं तहा सव्वजीवे पासति, 'जह मम दुक्खं अणिट्ठं एवं सव्वसत्ताणं' ति जाणिऊण ण हिंसति, एवं **सम्मं** दिट्ठाणि **भूताणि** भवंति तस्स । **पिहितासवस्स** ठइताणि पाणवहादीणि आसवदाराणि जस्स तस्स पिहितासवस्स । **दंतस्स** दंतो इंदिएहिं णोइंदिएहि य । इंदियदमो सोइंदियपयारणिरोधो वा सद्दातिराग-द्दोसणिग्गहो वा, एवं सेसेसु वि । णोइंदियदमो कोहोदयणिरोहो वा उदयप्पत्तस्स विफलीकरणं वा, एवं जाव लोभो । तहा अकुसलमणणिरोहो वा कुसलमणउदीरणं वा, एवं वाया कातो य । तस्स इंदिय-णोइंदियदंतस्स **पावं कम्मं ण बज्झति,** पुव्वबद्धं च तवसा खीयति ॥ ३२ ॥

चोदगो भणति–"दंतस्स पावं कम्मं ण बज्झति" त्ति चरित्तपाहण्णं । गुरुराह–णाणपुव्वता चरणस्स पहाणत त्ति भण्णति—

६४. पढमं नाणं ततो दता एवं चिट्ठति सव्वसंजते ।
अण्णाणी [3]किं करिस्सति ? किं वा [4]णाहिति छेद पावगं ? ॥ ३३ ॥

६४. **पढमं नाणं०** सिलोगो । पढमं जीवा-ऽजीवाहिगमो, **ततो** जीवेसु **दता** । **एवं चिट्ठति** एवंसद्दो प्रकाराभिधाती, एतेण जीवादिविण्णाणप्पगारेण **चिट्ठन्ति** अवट्ठाणं करेति । सेसाण वि एवंधम्मतापरूवणत्थं भण्णति–**सव्वसंजते** सव्वसद्दो अपरिसेसवादी, सव्वसंजता नाणपुव्वं चरित्तधम्मं पडिवालेंति । अयमेव विसेसो नियमिज्जति—**अण्णाणी किं करिस्सति ? किं वा णाहिति छेद-पावगं ?, अण्णाणी** जीवो जीवविण्णाणविरहितो सो किं काहिति ? किंसद्दो खेववाती, **किं** विण्णाणं विणा **करिस्सति** ? । **किं वा णाहिति, वा**-सद्दो समुच्चये, **णाहिति** जाणिहिति **छेदं** जं सुगतिगमणलक्खातो चिट्ठति, पावकं तव्विवरीतं । निदरिसणं–जहा **अंधो** महानगरदाहे पलित्तमेव विसमं वा पविसति, एवं छेद-पावगमजाणंतो संसारमेवाणुपडति ॥ **३३** ॥

इंदितातीतविण्णाणविरहिताण परोवदेसप्पहाणतं नाणस्स दरिसंतेहि भण्णति—

६५. सोच्चा जाणति कल्लाणं सोच्चा जाणति पावकं ।
उभयं पि [5]जाणति सोच्चा जं छेदं तं समायरे ॥ ३४ ॥

६५. **सोच्चा जाणति०** । गणहरा तित्थगरातो, सेसो गुरुपरंपरेण सुणेऊणं । किं ? **जाणति, कल्लाणं** कल्लं–आरोग्गं तं आणेइ **कल्लाणं** संसारातो विमोक्खणं, सो य धम्मो । **पावकं** अकल्लाणं । **उभ[7]यं** एतदेव कल्लाण-पावगं । [8]परोप्परवितारेण सुवितारितगुण-दोसो **जं छेदं तं समायरे** सुगतिगमणअचुक्कलक्खं जं छेदं तमेव समेच्च आयरियव्वं ॥ ३४ ॥ 'सुपरिच्छितग्गाहिणा होतव्वं' ति निरूविज्जति—

६६. जो जीवे वि ण [9]याणति [10]अजीवे वि ण याणति ।
जीवा-ऽजीवे अजाणंतो [11]कह सो [12]णाहिति संजमं ॥ ३५ ॥

---

१ **भूयाइं** खं १–२–३–४ । **भूयाई** जे० । **भूयाइ** शु० ॥ २ **बंधई** अचू० विना ॥ ३ किं **काहिति** वृद्ध० । **किं काही** खं १–२–३–४ जे० शु० ॥ ४ **नाहीइ** खं १–२–३–४ । **नाही** जे० ॥ ५ दया ॥ ६ **जाणए** खं ४ ॥ ७ "**उभयं** नामा कल्लाणं पावयं च दो वि सोच्चा जाणइ । **केइ पुण आयरिया** कल्लाण-पावयं च देसविरयस्स पावयं इच्छंति तमवि सोऊण जाणति" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ८ परस्परविचारेण सुविचारितगुण-दोषः ॥ ९ **याणाइ** शु० ॥ १० **अजीवे** अचू० विना ॥ ११ **कहं से** वृद्ध० ॥ १२ **नाही उ संजमं** खं २ शु० । **नाही संजमं** खं १–३ जे० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**६६. जो जीवे वि ण याणति०** सिलोगो। **जो** इति उद्देसवयणं। जीवंतीति **जीवा** आउप्पाणा धरेंति, ते सरीर-संठाण-संघयण-ट्ठिति-पज्जत्तिविसेसादीहिं **जो ण जाणति, अज्जीवे वि** रूव-रसादिप्पभवपरिणामेहिं **ण जाणति। सो** एवं **जीवा-ऽजीवविसेसे अजाणंतो कह** केण प्रकारेण **णाहिति** सत्तरसविहं संजमं ॥३५॥

एतस्स चेव अत्थस्स पडिसमाणणं कज्जति—

६७. जो जीवे वि विता[1]णति अजीवे वि विता[2]णेति ।
जीवा-ऽजीवे वियाणंतो सो हु णा[3]हिति संजमं ॥ ३६ ॥

**६७. जो जीवे वि विताणति०** सिलोगो। **जो** इति उद्देसस्स उपरि णिद्देसो भविस्सति। **जीवा** भणिता। ते जो पुव्वभणितेहिं विसेसेहिं विविहं जाणति **विजाणति,** तहाऽ**जीवे वि, अपिसद्दो संभावणे,** सो संजमथिरत्ते संभाविज्जति। **जीवा-ऽजीवे वियाणंतो सो हु णाहिति [ संजमं ],** पडिणिद्देसवयणं। **हुसद्दो** अवधारणे, **णाहिति** जाणिहिति सव्वपज्जाएहिं। कहं ? छेदं कूडगं च जाणंतो कूडगपरिहरणेण छेदस्स उपादाणं करेति, जीवगतमु[4]परोहकतमसंजमं परिहरंतो अज्जीवाण वि मज्ज-मंसादीण परिहरणेण संजमाणुपालणं करेति। जीवे नाऊण वहं परिहरमाणो ण वड्डयति वेरं, वेरविकारविरहितो पावति निरुवद्दवं थाणं ॥ ३६ ॥

उवदेसो गतो। जीवाजीवाहिगम-चरित्त-जयणोवदेसप्[5]पतासफलतापडिवादणत्थं भणति—

६८. जता [6]जीवे अजीवे य दो वि एते विजाणति ।
तदा गतिं बहुविहं सव्वजीवाण जाणति ॥ ३७ ॥

**६८. जता जीवे अजीवे०** सिलोगो। **जदा** जम्मि काले। **जीवा-ऽजीवा** भणिता। ते जदा **दो वि** अणेगभेदभिण्णा अवि दो रासी **एते** इति **जीवा-ऽजीवाधिगम**भणिता, विसेसेण जाणति **विजाणति, तदा गतिं बहुविहं [सव्व]जीवाण, गतिं** ण[7]रगादितं अणेगभेदं **जाणति,** अहवा गतिः—प्राप्तिः तं बहुविहं ॥३७॥

इदमिदाणिं पुव्वुत्तरभावकरण-कज्जफलसंबंधोवदरिसणत्थं भण्णति—

६९. जता गतिं बहुविहं सव्वजीवाण जाणति ।
तदा पुण्णं च पावं च बंधं मो[8]क्खं पि जाणति ॥ ३८ ॥

**६९. जता गतिं बहुविहं०** पुव्वद्धं भणितमेव। पडिउद्दिसति—**तदा पुण्णं च०** तेसिमेव जीवाणं आउ-बल-विभव-सुखातिसूतितं **पुण्णं च पावं च** अट्ठविहकम्मणिगलबंधण-मोक्खमवि ॥ ३८ ॥

पूर्ववदयमपि संबंधो—

७०. जदा पुण्णं च पावं च बंधं मो[9]क्खं पि जाणति ।
तदा [10]णिव्विंदती भोगे जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ ३९ ॥

**७०. जदा पुण्णं०** गाहा। पुव्वद्धं भणितं। **तदा णिव्विंदती भोगे जे दिव्वे जे य माणुसे,** भुज्जंतीति **भोगा** ते **णिव्विंदति** णिच्छितं विंदति—विजाणति, जहा एते वड्डकिलेसेहि उप्पादिया वि किंपागफलो-

---

**१ वियाणइ** खं १-३-४ जे०। **वियाणाइ** शु० ॥ २ **वियाणई** अचू० विना ॥ ३ **नाही संजमं** खं १-२ जे०। **नाही उ संजमं** शु० ॥ ४ उपरोधः विराधना, हिंसेति यावत् ॥ ५ प्रयाससफलताप्रतिपादनार्थम् ॥ ६ **जीवमजीवे** खं १-२-४ शु० ॥ ७ नरकादिकाम् ॥ ८ **°क्खं च जा°** अचू० विना ॥ ९ **°क्खं च जा°** अचू० विना ॥ १० **निव्विंदए** खं २-३ जे० शु० वृद्ध०। **निव्विंदई** खं १-४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वमा । जे **दिव्वा** दिवि भवा दिव्वा, मणूसेसु [भवा] **माणुसा** । ओरालियं[1]सारिस्सेण माणुसाभिधाणेण तिरिया वि भणिया भवंति । अहवा जो दिव्व-माणुसे परिजाणति तस्स तिरिएसु किं गहणं ? । **जे य माणुसा** इति चकारेण वा भणितमिदं ॥ ३९ ॥ तदणंतरं पुण किं ? अतो भण्णति—

> ७१. जता णिविंदेती[2] भोगे जे दिव्वे जे य माणुसे ।
> तदा जहती[3] संजोगं सब्भिंतर-बाहिरं ॥ ४० ॥

**७१. जता णिविंदती०** सिलोगो । पुव्वद्धं भणितं । **तदा जहती सं०** सिलोगद्धं । परिच्चयति **सब्भिंतरबाहिरं** अब्भिंतरो कोहादि बाहिरो सुवण्णादि ॥ ४० ॥ संजोगपरिच्चागाणंतरं पडिपत्तिरुपदिस्सति—

> ७२. जता जहती[4] संजोगं सब्भिंतर-बाहिरं ।
> तदा मुंडे भवित्ता णं पव्वाति[5] अणगारियं ॥ ४१ ॥

**७२.** [ **जता जहती०** सिलोगो । पुव्वद्धं भणितं । ] **तदा मुंडे भवित्ता णं** तस्सिं काले **मुंडे** इंदिय-विसय-केसावणयणेण मुंडो भवित्ताणं **पव्वाति अणगारियं** प्रव्रजति प्रपद्यते अगारं—घरं तं जस्स नत्थि सो अणगारो तस्स भावो अणगारिता तं पवज्जति ॥ ४१ ॥

तदणंतरं किया भण्णति—

> ७३. जदा मुंडे भवित्ता णं पव्वाति[6] अणगारियं ।
> तदा संवरमुक्कट्ठं धम्मं फासे[7] अणुत्तरं ॥ ४२ ॥

**७३. जदा मुंडे भवित्ते**ति पुव्वद्धमणंतरं चेट्ठाभावणत्थं पडिउच्चारितं । तदा **संवरं** संवरो—पाणातिवातादीण आसवाण निवारणं, स एव संवरो **उक्कट्ठो** धम्मो तं **फासे** ति । सो य अणुत्तरो, ण ततो अण्णो उत्तरतरो । **अधवा** संवरेण उक्करिसियं धम्ममणुत्तरं **"पासे" ति** उक्किट्ठाणंतरं विसेसो उक्किट्ठो, जं णं देसविरती अणुत्तरो कुतित्थियधम्मेहिंतो पहाणो ॥ ४२ ॥ अतो उत्तरमपि—

> ७४. जदा संवरमुक्कट्ठं धम्मं फासे[8] अणुत्तरं ।
> तदा धुणति कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं ॥ ४३ ॥

**७४. जदा संवर०** सिलोगो । **तदा धुणति कम्मरयं, धुणति** विद्धंसयति कम्ममेव रतो कम्मरतो । **अबोहिकलुसं कडं** अबोही—अण्णाणं, अबोहीकलुसेण कडं अबोहिणा वा कलुसं कतं ॥ ४३ ॥

अणंतरक्रियोपन्यासार्थं गतमपि पुव्वद्धमुच्चारिज्जति—

> ७५. जदा धुणति कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं ।
> तदा सव्वत्तगं[9] णाणं दंसणं चाभिगच्छति[10] ॥ ४४ ॥

**७५. जदा धुणति०** सिलोगो । **तदा सव्वत्तगं णाणं** सव्वत्थ गच्छती **सव्वत्तगं** केवलनाणं केवलदंसणं च ॥ ४४ ॥ नाणुप्पत्तिसमणंतरभावी अत्थो विभाविज्जति—

---

१ औदारिकसादृश्येन ॥ २ **निविंवदए** खं २-३ जे० शु० वृद्ध० । **निव्विंदई** खं १-४ ॥ ३-४ **चयइ सं°** अचू० वृद्ध० विना ॥ ५-६ **पव्वइए अ°** खं १ जे० शु० । **पव्वयई अ°** खं २ । **पव्वए अ°** खं ४ । **पव्वयइ अ°** खं ३ हाटी० ॥ ७-८ **पासे** अचूपा० ॥ ९ **सव्वत्थगं** वृद्ध० ॥ १० **गच्छइ** खं १-३-४ । **गच्छई** खं २ जे० शु० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७६. जदा स[1]व्वत्तगं णाणं दंसणं चाभिग[2]च्छति ।
तदा लोगमलोगं च[3] जिणो जाणति केवली ॥ ४५ ॥

७६. **जदा स०** सिलोगो। पुव्वद्धं भणितं। **तदा लोगमलोगं** तस्सायं विसतो लोगा-ऽलोगविण्णाणं॥४५॥ सो विदियलोगा-ऽलोगो किमारभते ? भण्णति—

७७. जता लोगमलोगं च[4] जिणो जाणति केवली ।
तदा जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जति ॥ ४६ ॥

७७. **जता लो०** सिलोगो। पुव्वद्धं भणितं। **तदा जोगे निरुंभित्ता** भवधारणिज्जकम्मविसारणत्थं सीलस्स ईसति—वसयति **सेलेसिं०** ॥ ४६ ॥ तदणंतरं—

७८. जदा जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जति ।
तदा कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छति णीरतो ॥ ४७ ॥

७८. **जदा जोगे०** सिलोगो। ततो सेलेसिप्पभावेण **तदा कम्मं** भवधारणिज्जं कम्मं सेसं **खवित्ताणं सिद्धिं गच्छति णीरतो** निक्कम्ममले ॥ ४७ ॥ तदणंतरमिदमस्स संभवति—

७९. जदा कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छति णीरतो ।
तता लोगमत्थगत्थो सिद्धो भवति सासतो ॥ ४८ ॥

७९. **जदा कम्मं०** सिलोगो। पुव्वद्धमुक्तं। पच्छद्धं। शान्तानलवदेतस्याणियत्तणत्थं पच्छद्धं। **तता लोगमत्थगे** लोगसिरसि ठितो **सिद्धो** कतत्थो [ **सासतो** ] सव्वकालं तहा **भवति** ॥ ४८ ॥

छट्ठो अधिकारो धम्मफलं भणितं। जीवा-ऽजीवपरिण्णाणमुत्तरुत्तरफललाभेण **नाधिमो**क्खपज्जवसाणमुवदिट्ठं। तं किं नियमेण संभवति ? अह कोति विसेसो अत्थि ? त्ति भण्णति—परिण्णाणेण वि अपमादनिमित्तं—

८०. सु[5]हसीलगस्स समणस्स सा[6]ताकुलगस्स निकामसा[7]इस्स ।
उच्छोलणाप[8]होतिस्स दुलभा सु[9]ग्गती तारिसगस्स ॥ ४९ ॥

८०. **सुहसील०** सुत्तं। सुहं—प्रतीतं तं सीलेति—अणुट्ठेति सुहसीले। **केति पढंति "सुहसातगस्स"** तदा सुखं स्वादयति—चक्खति। **समणस्सेति** साहिक्खेवमिदं। **साताकुलगस्स** तेणेव सुहेण आउलस्स, आउलो—अणेकग्गो। जदा सुहसीलगस्स तदा साताकुलएण विसेसो—एगो सुहं कयाति अणुसीलेति, साताकुलो पुण सदा तदभिज्झाणो। **निकामसाइस्स** सुं[10]पच्छण्णे मउए सुइतुं सीलमस्स निकामसाती। **उच्छोलणापहोती** पभूतेण अजयणाए धोवति। एवंगुणस्स **दुलभा सुग्गती** ॥ ४९ ॥ केरिसस्स पुण सुलभा ? भण्णति—

८१. तवोगुणपहाणस्स उज्जुमति-खंति-संजमरतस्स ।
परीसहे जिणंतस्स सु[11]लभिता सो[12]ग्गति तारिसगस्स ॥ ५० ॥

---

१ सव्वत्थगं वृद्ध० ॥ २ °गच्छइ खं १-३-४। °गच्छई खं २ जे० शु० ॥ ३-४ च दो वि एते वियाणइ वृद्ध० ॥ ५ सुहसायगस्स खं १-२-३-४ जे० शु० वृद्ध० हाटी० अचूपा० ॥ ६ सायाउलग° अचू० विना ॥ ७ °सायस्स वृद्ध० ॥ ८ °पहोविस्स खं १-३ वृद्ध० हाटी०। °पहोयस्स खं ४ ॥ ९ सोगइ खं २-३ जे०। सोग्गइ खं १-४ शु० ॥ १० सुयछिण्णे मूलादर्शे ॥ ११ सुलभा सो° खं १-३ जे० वृद्ध०। सुलहा सो° खं १-४ शु० ॥ १२ सोगइ खं २-३ जे० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**८१. तवो-गुणपहाणस्स०** सुत्तं। **तवो** बारसविहो, **गुणा** णाण-दंसण-चरित्ताणि, तवो गुणा य पहाणा जस्स सो तव-गुणप्पहाणो तस्स। **उज्जुमति०** उज्जुया मती उज्जुमती–अमाती, खंति–अकोहणो, उज्जुमतीसमाणजातियसंसद्दणेण अरागी, खमाए अदोसो, संजमे सत्तरसविहे रतो **संजमरतो** तस्स। **परीसहे** बावीसं **जिणंतस्स**। जहुद्दिट्ठगुणस्स **सुलभिता सोग्गती तारिसगस्स** ॥ ५० ॥[१]

छज्जीवणियज्झयणएगट्ठिताणि, तं०—

**जीवा-ऽजीवाभिगमो आयारो चेव धम्मपण्णत्ती।**
**तत्तो चरित्तधम्मो चरणे धम्मे य एगट्ठा ॥ ३० ॥ १४४ ॥**

**॥ छज्जीवणियाणिज्जुत्ती सम्मत्ता ॥**

**जीवा-ऽजीवाहिगमो०** गाहा सिद्धा ॥ ३० ॥ १४४ ॥

चउत्थं छज्जीवणियअज्झयणमुपदिट्ठं। उपसंहरणत्थं भण्णति—

८२. इच्चेयं छज्जीवणियं सम्मद्दिट्ठी सदा जते[३]।
दुलभं लभित्तु सामण्णं कम्मुणा ण विराहेज्जा[२] ॥ ५१ ॥ त्ति बेमि ॥

**॥ छज्जीवणिया सम्मत्ता ॥**

**८२. इच्चेयं०** सिलोगो। इतिसद्दो प्रकारे। एयमिति अणंतरुद्दिट्ठं पच्चक्खीकरेति, एवमणेगप्रकारं दरिसितं **एतं छज्जीवणियं** प्रति इति वाक्यशेषः, **सम्मद्दिट्ठी सदा** सव्वकालं **जते** जतेज्जा, अहवा जते[३] णितप्पा **दुलभं** भवसतेसु **लभित्तु** प्राप्य समणभावं **सामण्णं** असमणपातोग्गेणं **कम्मुणा ण विराहेज्जा**। **अहवा दुल्लभं लभित्तु सामण्णं कम्मुणा** छज्जीवणियजीवोवरोहकारकेण **"ण विराहेज्जासि"** मज्झिमपुरिसेण वपदेसो, एवं सोम्म! ण विगणीया छक्कातो। इतिसद्दो परिसमत्तिविसेते। **बेमीति** पारम्पर्यमाह ॥ ५१ ॥ णता—

**णातम्मि गेण्हितव्वे०** गाहा। **सव्वेसिं पि णताणं०** गाहा। दो वि पुव्वभणितातो ॥

**जीवा १ ऽजीवाहिगमो २ चरित्त ३ जयणो ४ वदेस ५ फललाभा ६।**
**पढमं चिय उद्दिट्ठा छज्जीवणियापहाणत्था ॥ १ ॥**

**॥ छज्जीवणियाए चुण्णी समत्ता ॥ ४ ॥**

---

१ एतत्सूत्रगाथानन्तरं चूर्णिद्वये हारिभद्रीवृत्तौ सुमतिसाधुवृत्तावपि चाव्याख्याता एका सूत्रगाथा सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेष्वधिका उपलभ्यते—
**पच्छा वि ते पयाया खिप्पं गच्छंति अमरभवणाइं। जेसिं पिओ तवो संजमो य खंती य बंभचेरं च ॥** खं १-२-३-४ जे० शु० ॥ २ **विराहेज्जासि ॥ त्ति** खं १-२-३-४ जे० शु० वृद्ध० अचूर्णा० ॥ ३ 'यतः' नियतात्मा ॥



Jain Education International  For Private & Personal Use Only  www.jainelibrary.org

५

# [ पंचमं पिंडेसणज्झयणं ]

[ पढमो उद्देसओ ]

धम्मे धितिमतो विदितायार-धम्मपण्णत्तिसमारोपितमहव्वतमूलगुणस्स तदणंतरमुत्तरगुणोवदेसारुहस्स पढमो उत्तरगुणो उवदिस्सति पिंडेसणा। भणितं च—**पिंडस्स जा विसोही०** [ व्यव० भा० उ० १ गा० २८९ ] गाहा। अहवा अयममिसंबंधो–**धम्मपण्णत्तिअज्झयण**उवसंधरणमुपदिट्ठं "**परीसहे जिणंतस्स०**" [ सुत्तगा० ८१ ], ते य परीसहा भिक्खायरियाए विसेसेण समुदिज्जंति, तदधियासणनिमित्तं महव्वतभरहारिसरीरसंधारणत्थं च पिंडो एसियव्वो त्ति **पिंडेसणज्झयण**मागतं। तस्स चत्तारि अणुओगदारा जहा **आवस्सए**। नामनिप्फण्णो से भण्णइ—

**णामं ठवणापिंडो दव्वे भावे य होति णातव्वो।**
**गुल-ओदणाइ दव्वे भावे कोहादिया चउरो ॥ १ ॥ १४५ ॥**

**णामं ठवणा०** गाहा ॥ १ ॥ १४५ ॥ नामनिप्फण्णे **पिंडनिज्जुत्ती** सव्वा। सो पुण पिंडनिज्जुत्तिवित्थारो णवहिं कोडीहिं समोयरति, तं०—ण हणति ण हणावेति हणंतं णाणुजाणति ३ ण पयति ३ ण किणति ३। तत्थ **निज्जुत्तिगाहा**—

**कोडीकरणं दुविहं उग्गमकोडी विसोधिकोडी य।**
**उग्गमकोडी छक्कं विसोधिकोडी भवे सेसा ॥ २ ॥ १४६ ॥**

**कोडीकरणं०** गाथा। एतातो णव कोडीतो संहयाओ विभज्जमाणीतो दो भवंति, तं०–उग्गमकोडी विसोहिकोडी य। **उग्गमकोडी** अविसोधिकोडी, सा छव्विहा, तं०–आहाकम्मितं पढमा १ उद्देसियं कडं कम्मं पासंड-समण-निग्गंथाणं जं कतं एसा बितिया उग्गमकोडी २ भत्त-पाणपूतियं ततिया ३ मीसज्जाए घरमीसं पासंडाण य ४ बादरपाहुडिया ५ अज्झोयरए ६ एसा अविसोधिकोडी। सेसा विसोहिकोडी। जं ण हणति ३ ण पयति ३, अविसोधिकोडिभेदा एतेसु समोतरंति। ण किणति ३ एत्थ विसोधिकोडी समोयरति ॥ २ ॥ १४६ ॥

**णव चेवऽट्ठारसगं सत्तावीसं तहेव चउप्पण्णा।**
**णउती दो चेव सता उ सत्तरा होंति कोडीणं ॥ ३ ॥ १४७ ॥**

**॥ पिंडेसणाणिज्जुत्ती सम्मत्ता ॥**

**णव चेवऽट्ठारसगं०** गाहा। णव कोडीतो दोहिं राग-दोसेहिं गुणियातो अट्ठारस भवंति १८। एतातो चेव णव कोडीतो तिहिं मिच्छत्ता-ऽविरति-अण्णाणेहिं गुणियातो सत्तावीसं भवंति २७। सत्तावीसा दोहिं राग-दोसेहिं गुणिता चउप्पण्णा भवति ५४। णव कोडीतो दसविधेण समणधम्मेण गुणितातो णउतिं भवंति ९०। एसा णउती तिहिं नाण-दंसण-चरित्तेहिं गुणिता दो सता सत्तरा भवंति २७० ॥ ३ ॥ १४७ ॥

गतो नामनिप्फण्णो। सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेतव्वं अखलितं जहा **अणुओगद्दारे**। तं च इमं—

**८३. संपत्ते भिक्खकालम्मि असंभंतो अमुच्छितो।**
**इमेण कमजोएण भत्त-पाणं गवेसए ॥ १ ॥**

---

१ उपसंहरणम् ॥ २ नवसु कोटिषु। अत्र सप्तम्यर्थे तृतीया ॥ ३ °यतरि, तं० मूलादर्शे ॥ ४ श्रीहरिभद्रपादैरियं गाथा भाष्यगाथात्वेन निर्दिष्टाऽस्ति ॥ ५ **पादं पाहुडिया** मूलादर्शे ॥ ६ °**सगा सत्तावीसा तहेव** पु० सा० ॥ ७ **भिक्खुका**° जे० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८३. **संपत्ते भिक्खकालम्मि०** सिलोगो। उच्च-णीय-मज्झिमेसु कुलेसु एक्कीभावेण पत्ते संपत्ते, भिक्[1]खाणं समूहो "भिक्षादिभ्योऽण्" [ पाणि० ४-२-३८ ] इति भैक्षम्, भेक्खस्स कालो तम्मि संपत्ते । किं के[2]रणीतं ? भण्णति–**असंभंतो** 'मा वेला फिट्टिहिति, विलुप्पिहिति वा भिक्खयरेहिं भेक्खं' एतेण अत्थेण असंभंतो । **अमुच्छितो** अमूढो भत्तगेहीए सद्दातिसु य । **इमेण कमजोएण, इमेणे**ति जो इतो उत्तरं भण्णिहिति तमासण्णं ति पच्चक्खं दरिसेति, **कमो** परिवाडी, कमस्स जोगो **कमजोगो** तेण । **भत्त-पाणं** भजंति खुहिया तमिति भत्तं, पीयत इति पाणं, भत्तपाणमिति समासो । एतं चोएति एकालंभो (?) अपज्जत्तं **गवेसणं** मग्गणं ॥ १ ॥

एवं गवेसणीयता भणिता । तस्स भेक्खस्स कत्थ संभवो ? त्ति, भण्णति—

**८४. से गामे वा णगरे वा गोयरग्गगतो मुणी ।**
**चरे मंदमणुव्विग्गो अ[3]वक्खित्तेण चेतसा ॥ २ ॥**

८४. **से गामे वा०** सिलोगो । **से** इति वयणोवण्णासे । **गामे वा** ग्रसति बुद्धिमादिणो गुणा इति गामो । ण णिगरति कराणीति **णगरं** । खेडादतो वि स[4]मानजातीतसंसद्दणेण सूतिता । गोरिव चरणं **गोयरो**, तहा सद्दादिसु अमुच्छितो जहा सो **वच्छगो**, गोयरं अग्गं गोतरस्स वा **अग्गं गतो**, **अग्गं** पहाणं । कहं पहाणं ? एसणादिगुणजुतं, ण उ **चरगा**दीण अपरिक्खितेसणाणं । **मुणी** विण्णाणसंपण्णो, दव्वे हिर[5]ण्णादिमुणतो, भावमुणी विदितसंसारसब्भावो साधू । **चरणं** गमणं, एवं **चरेति मंदं** असिग्घं । असंभंत-मंदविसेसो–असंभंतो चेयसा, मंदो कियया । **अणुव्विग्गो** अभीतो गोयरगताण परीसहोवसग्गाण । **वक्खित्तं** अ[6]क्खणीतं, ण कहिंचि अक्खणीएण **चेतसा** चित्तेण, जं भणितं **अवक्खित्तेण चेतसा** ॥ २ ॥ तं कत्थ णियतेण ? इति भण्णति–समितिसु । तत्थ भेक्खसमीवं गमणे सति पढमं रीयासमिती उपदिस्सति । तं०—

**८५. पु[7]रतो जुगमा[8]ताए पेहमाणो महिं चरे ।**
**व[9]ज्जिंतो बीय-हरिताइं पाणे य दग-मट्टियं ॥ ३ ॥**

८५. **पुरतो जुगमाताए०** सिलोगो । **पुरतो** अग्गतो **जुग**मिति बलिवद्दसंदाणणं सरीरं वा तावम्मत्तं पुरतो, अंतो संकुयाए बाहिं वित्थडाए दिट्ठीए, **माताए** मात्रासद्दो अवधारणे, **अहवा "जुगमादाय"** तावतियं परिगेण्हिऊण **पेहमाणो** निरिक्खमाणो, 'सुहुमसरीरे दूरतो ण पेच्छति' त्ति न परतो, 'आसण्णो न तरति सहसा वट्टावेतुं' ति ण आरतो । **अहवा "पुरतो जुगमादाय"** इति चक्खुसा तावतियं परिगिज्झ पेहमाण इति, ए[10]तेण अग्गत इक्खणेण, आसादिपतणरक्खणत्थं अंतरंतरे पासतो मग्गतो य इक्खमाणो । **पादंतरं वा "सव्वतो जुगमादाय"** नातिअब्भंतरं णातिदूरं एवं **पेहमाणो मही** भूमी तं पेहमाणो **चरे** गच्छेदिति । जं **"चरे मंदमणुव्विग्गो"** [ सुत्तगा० ८४ ] इति सा प्रवृत्तिः इह नियमिज्जति, एवं चरेज्ज महिं पेहमाणो । कारणमिदं–**वज्जिंतो बीय-हरिताइं**, एतेण वणस्सतिभेदा पभूय त्ति बीय-हरितवयणं, बीयवयणेण वा दस भेदा भणिता, [11]हरितग्गहणेण जे बीयरुहा ते भणिता । **पाणा** बेइंदियादितसा । ओसादिभेदं पाणितं **दगं**, **मट्टिया** ण[12]वगणिवेसातिपुढविकातो । गमणे अग्गिस्स मंदो संभवो, दाहभएण य परिहरिज्जति, वायुराकाशव्यापीति ण सव्वहा परिहरणमिति न साक्षादभिधानमिति । प्रकारवयणेण वा सव्वजीवणिकायाभिहाणं, तावपि वज्जिंतो ॥ ३ ॥

---

१ "**भिक्षा** पसिद्धा चेव, भिक्खाए कालो भिक्खाकालो, तम्मि **भिक्खाकाले संपत्ते** अण्णस्स अट्ठाए गच्छेज्जा ।" इति **वृद्धविवरणे** । "भिक्षाकाले' भिक्षासमये" इति हारि० वृत्तौ ॥ २ करणीयम् ॥ ३ **अव्वक्खि**° अचू० विना ॥ ४ समानजातीयसंशब्दनेन सूचिताः ॥ ५ हिरण्यादिज्ञायकः ॥ ६ अक्षणिकम् ॥ ७ **सव्वतो** अचूपा० । **सव्वत्तो** वृद्धपा० ॥ ८ °**मादाय पे**° अचूपा० ॥ ९ **वज्जेंतो** खं ३ जे० । **वज्जन्तो** शु० ॥ १० **एतेण प्रगतइक्ख**° मूलादर्शे ॥ ११ **हविरुग्गहणेण जेण बीय**° मूलादर्शे ॥ १२ नवकनिवेशादिपृथिवीकायः ॥

संजमविराहणारक्खणत्थमेतं भणितं । इदं तु आय-संजमविराहणारक्खणत्थं भणति—

८६. ओवायं विसमं खाणुं विज्जलं परिवज्जए ।
संकमेण ण गच्छेज्जा विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥

८६. **ओवायं विसमं॰** सिलोगो । अहो पतण**मोवातो** । खड्डा-कूव-झिरिंडाती णिण्णुण्णयं **विसमं** । णातिउच्चो उद्धट्ठियदारुविसेसो **खाणू** । विगयमात्रं जतो जलं तं **विज्जलं** [ चिक्खल्लो ] । एताणि समंततो वज्जए **परिवज्जए** । पाणिय-विसमत्थाणाति संकमणं कत्तिम**संकमो** तेण न **गच्छेज्जा** । **विज्जमाणे** सति अन्यस्मिन् पराक्रमन्ते णेण **परक्कमो** पंथो तम्मि विज्जमाणे । एवं असति संकमेणावि जयणाए गच्छेज्जा ॥ ४ ॥

संदरिसितपच्चवाता सुहं परिहरंति दुस्समपुरिसा इति पच्चवातो दरिसिज्जति । सो य इमो—

८७. पवडंते व से तत्थ [1]पक्खुलंते व संजते ।
हिंसेज्ज पाण-[2]भूते य तसे अदुव थावरे ॥ ५ ॥

८७. **पवडंते व॰** सिलोगो । खड्डातीवियडतडीतो समे वा सरीरेण भूमीए फासणं **पवडणं** । **पक्खुलणं** उंडेंतस्स गमणं । तस्स **पवडेंतस्स पक्खुलंतस्स** जं हत्थ-पादादिलूसणं खयकरणाति तं सव्वजणप्रतीतमिति ण सुत्ते, **वृत्तीए** विभासिज्जति । सूत्रं तु—**हिंसेज्ज पाणभूते [ य ] तसे अदुव थावरे** । पाण-भूत-तस-थावरविसेसो भणितो ॥ ५ ॥ पुव्वभणितं पच्चवायकारणं णियमेन्तेहिं भण्णति—

८८. तम्हा तेण ण गच्छेज्जा संजते सुसमाहिते ।
[3]सति अण्णेण मग्गेण जतमेव परक्कमे ॥ ६ ॥

८८. **तम्हा तेण ण गच्छेज्जा॰** सिलोगो । जतो एते दोसा अतो ओवाय-विसमातिणा **ण गच्छेज्जा** । साहूण उवदेसो पत्थुतो तेण भण्णति—**संजते सुसमाहिते** । अहवा तेण ण गच्छति त्ति एवं संजते सुसमाहिते भवति । **सति अण्णेण मग्गेण** **सत्ती**ति विज्जमाणे तेण जतं जतमोए, एवसद्दो अवधारणे, सव्वावत्थं सव्विंदियसमाहिते । **अहवा** [“अ]**सति अण्णेण**” **असति जयमेव** ओवातातिणा **परक्कमे** ॥ ६ ॥ पुव्वं “**परक्कमे**” इति क्रियोपदेशः—सति अण्णेण गमणं । असति पुण विसेसे परिहरेज्जा—

८९. [4]चलं कट्ठं सिलं वा वि इट्टालं वा वि संकमो ।
ण तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥ ७ ॥

८९. **चलं कट्ठं सिलं वा वि इट्टालं वा वि संकमो । ण तेण भिक्खू गच्छेज्ज** । किं कारणं ? **दिट्ठो तत्थ [ असंजमो ]**, **दिट्ठो** णाम पच्चक्खमुवलद्धो यत्र इव पीसणं । अयं **केसिंचि** सिलोगो उवरिं भणिहिति ॥ ७ ॥ चलसंकमणे दिट्ठो [5]आद-तसोवघातो विसेसेण, इह पुण सुहुमपुढविक्कायजयणे त्ति **भण्णति**—

९०. इंगालं छारियं रासिं तुसरासिं च गोमयं ।
[6]ससरक्खेण पाएण संजतो तं [7]ण अक्कमे ॥ ८ ॥

१ **पक्खलंते** खं २ शु० ॥ २ °**भूयाइं तसे** खं १-२-३-४ जे० शु० ॥ ३ **असति अ**° अचूपा० ॥ ४ अचू० विना सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु हाटी० **वृद्धविवरणे** च अयं सूत्रश्लोकः पाठभेदेन १६४ सूत्रश्लोकानन्तरं वर्तते । दृश्यतां १६५ सूत्रश्लोकस्त्का टिप्पणी ॥ ५.अप्-त्रसोपघातः ॥ ६ **ससरक्खेहिं पाएहिं** अचू० विना ॥ ७ **णऽइक्कमे** खं ३-४ जे० शु० । **ण अक्कमे** खं १-२ अचू० वृद्ध० हाटी० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९०. **इंगालं छारियं रासिं०** सिलोगो । **इंगालो** खदिराईण दड्डुणेव्वाणं तं इंगालं । **छारियं** छाणादिभस्मरासिपुंजो । **रासिसद्दो** पुण इंगाल-छारियाए वट्टति । तहा **तुसरासी** भुसं सण्हं गोधूमादिपलालं । **गोमयं** गोपुरीसं, एत्थ वि रासि त्ति उभए वत्तेते । तं एगतरं पि रासिं **ससरक्खेण** सरक्खो–सुसण्हो छारसरिसो पुढविरतो, सह सरक्खेण ससरक्खो तेण **पाएण,** एगवयणं जातीए पयत्थो । **संजतो तं ण अक्कमे, तं** ससरक्खं, संभवो भेक्खायरियाए गमणेण वा वासणेण वा सग्गामे, अतो मा पुढविक्कायविराहणा भविस्सति त्ति **तं ण अक्कमेज्जा** ॥ ८ ॥ गोयरग्गगयस्स परिसण्हपुढविक्कायजयणा भणिता । तदणंतरुद्दिट्ठस्स आउक्कायस्स तहाजातियस्स जतणोवदेसणत्थं भण्णति—

९१. ण चरेज्ज वासे वासन्ते महिताए व पडंतीए ।
महावाते व वायंते तिरिच्छसंपातिमेसु वा ॥ ९ ॥

९१. **ण चरेज्ज वासे०** सिलोगो । **ण** इति पडिसेहसद्दो, चरणं गोचरस्स तं पडिसेहेति । **वासं** मेघो, तम्मि पाणियं मुयंते । **महिता** भणिता, ताए पडंतीए । वाउक्कायजयणा पुण **महावाते** अतिसमुद्धुतो मारुतो महावातो, तेण समुद्धतो रतो वाउक्कातो य विराहिज्जति । **तिरिच्छसंपातिमा** पतंगादतो तसा, तेसु पभूतेसु संपयंतेसु ण चरेज्जा इति वट्टति ॥ ९ ॥ आय-पाणातिवायरक्खणत्थमुवदिट्ठं गोयरविहाणं । इदं तु विसेसेण बंभव्वतरक्खणत्थमुपदिस्सति, जहा—

९२. ण चरेज्ज वेससामंते बंभचेरवसाणुगे[1] ।
बंभचारिस्स दंतस्स होज्जा तत्थ विसोत्तिका ॥ १० ॥

९२. **ण चरेज्ज वेस०** सिलोगो । **ण चरेज्ज** ण पवत्तेज्ज **वेससामन्ते** पविसंति तं विसयत्थिणो त्ति वेसा, पविसति वा जणमणेसु वेसो, स पुण णीयइत्थिसमवातो, तस्स ण चरेज्ज **सामंते** समीवे वि, किमुत तम्मि चेव । **बंभचेरवसाणुए, बंभचेरं** मेहुणवज्जणव्रतं तस्स वसमणुगच्छति जं **बंभचेरवसाणुगो** साधू सो ण चरेज्जा । **पाढंतरं–बंभचारिणो** गुरुणो तेसिं वसमणुगच्छतीति "**बंभचेर( ? चारि )वसाणुए**" । तस्स बंभचेरवसाणुगस्स **बंभचारिस्स दंतस्स** इंदिय-णोइंदियदमेण **होज्जा** भवे **तत्थ** तम्मि वेसे विस्रोतसा प्रवृत्तिः विस्रोतसिका **विसोत्तिका** । सा चउव्विहा–णाम-ट्ठवणातो गतातो । दव्वविसोत्तिया कट्ठ-कलिंचेहिं[2] सारणिणिरोहो अण्णतो गमणमुदगस्स । भावविसोत्तिता वेसित्थिसविलासविपेक्खित-हसित-विब्भमेहिं रागावरुद्धमणोसमाहिसारणीकस्स णाण-दंसण-चरित्तसस्सविणासो भवति ॥ १० ॥ जति पुण कोति भणेज्जा–'को एत्थ केणति वा विणासिज्जति ?' त्ति वेससामंतगमणे नत्थि दोसो, तत्थ सुचरित-दुच्चरितसंसग्गीनिमित्तं तं दरिसिन्ति भण्णति—

९३. अणायणे[3] चरंतस्स संसग्गीए[4] अभिक्खणं ।
होज्ज वताणं पीला सामण्णम्मि य संसओ ॥ ११ ॥

९३. **अणायणे चरंतस्स०** सिलोगो । एत्थ तस्मिन् यतति **आयतणं** थाणं आलयो, ण आयतण**मणायतणं** अस्थानम्, तं चरित्तादीण गुणाणं, तम्मि **चरंतस्स** गच्छंतस्स **संसग्गी** संपक्को, **संसग्गीए अभिक्खणं** पुणो पुणो । किंच—

संदंसणेण पिती पीतीओ रती रतीतो वीसंभो । वीसंभातो पणतो पंचविहं वड्ढई पेम्मं ॥ १ ॥
[ ]

१ **बंभचेरवसाणए** वृद्ध० हाटी० । **बंभचारिवसाणुए** अचूपा० ॥ २ °**कलिंचेट्ठसारणि**° मूलादर्शे ॥ ३ **अणायणे** खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी० ॥ ४ °**ग्गीय अ**° खं ४ वृद्ध० ॥

Jain Education International     For Private & Personal Use Only     www.jainelibrary.org

**होज्ज वताणं पीला, होज्ज** इति आसंसावयणमिदं, आसंसिज्जति भवेद् **वताणं** बंभव्वतपहाणाण **पीला** किंचिदेव विराहणमुच्छेदो वा समणभावे वा संदेहो अप्पणो परस्स वा । अप्पणो 'विसयविचालितचित्तो समणभावं छड्डेमि मा वा ?' इति संदेहो, परस्स 'एवंविहत्थाणविचारी किं पव्वतितो विडो वेसच्छण्णो ?' त्ति संसयो। सति संदेहे चागविचित्तीकतस्स सव्वमहव्वतपीला, अह उप्पव्वतति ततो वयच्छित्ती, अणुप्पव्वयंतस्स पीडा वयाण, तासु गयचित्तो रियं ण सोहेति त्ति पाणातिवातो । पुच्छितो 'किं जोएसि ?' त्ति अवलवति मुसावातो, अदत्तादाणमणणुण्णातो तित्थकरेहि, मेहुणे विगयभावो, मुच्छाए परिग्गहो वि ॥ ११ ॥

अणंतरोवदिट्ठं दोससमुदयं कारणभावमुवणेतुं भणति—

> ९४. तम्हा [2]एवं वियाणित्ता दोसं [3]दुग्गतिवड्डणं ।
> वज्जते वेससामन्तं मुणी एगन्तमस्सिए ॥ १२ ॥

**९४. तम्हा एवं वियाणित्ता॰** सिलोगो । **तम्हा** इति जतो एस दोसो सव्वदोसपभूतिकरो **एवमिति** अणंतरुद्दिट्ठेण प्रकारेण **विजाणित्ता दोसं**, दूसयतीति **दोसो**, कुच्छिता गती **दुग्गती**, तं वड्डेति **दोग्गतिवड्डणो** । किं करेज्जा ? इति ब्रवीति—**वज्जते वेससामन्तं मुणी एगंतमस्सिए, एगंतो** णिरपवातो मोक्खगामी मग्गो णाणादि तं अस्सितो ॥ १२ ॥ महव्वतसारक्खणत्थमणाययणगमणं पडिसिद्धं । इह तु महव्वताधारभूयसरीरपडिवालणत्थमुपदिस्सति—

> ९५. साणं [4]सूवियं गाविं दित्तं गोणं हयं गयं ।
> [5]संडिब्भं कलहं जुद्धं दूरओ परिवज्जए ॥ १३ ॥

**९५. साणं सूवियं॰** सिलोगो । साणं लक्खियं, अलक्खियं पुण विसेसेण । **गाविमसुइं** पि किं पुण **सूतियं** । **दित्तो** दप्पितो कुवितो वा तं **दित्तं, गोणं हयं गयं** गोण-हय-गया प्रतीता । **संडिब्भं** डिम्भाणि-चेडरूवाणि णाणाविहेहिं खेलणएहिं खेलंताणं तेसिं समागमो संडिब्भं । **कलहो** वाधा-समधिक्खेवादि । **जुद्धं** आयुहादीहि हणाहणी । अपरिवज्जणे दोसो—साणो खाएज्जा, गावी मारेज्जा, गोण-हत-गता वि, चेडरूवाणि परिवारेतुं वंदताणि भाणं विराहेज्जा आहणेज्ज वा इट्टालादिणा, कलहे अणहियासो किंचि हणेज्ज भणेज्ज वा अजुत्तं, जुद्धे उम्मत्तकंडादिणा हम्मेज्ज । प्रकारवयणेण एते समाणदोसे महिसादिणो वि **दूरतो परिवज्जए** ।

पातेण दुव्विणीतो अविणीयजणस्स जं च वसवत्ती । हत्थि मतो हत्थसतादालोकादेव वज्जेज्जा ॥ १ ॥

[ ] ॥ १३ ॥

परसमुत्थदोसपरिहरणं भणितं । इदं तु सरीर-चित्तगतदोसपरिहरणत्थमुपदिस्सति—

> ९६. [7]अणुण्णते णावणए अप्पहिट्ठे [8]अणाविले ।
> इंदियाइं जहाभागं दमइत्ता मुणी चरे ॥ १४ ॥

**९६. अणुण्णते णावणए॰** सिलोगो । अकारो पडिसेहगो उण्णतस्स । उण्णतो चउविहो । णाम-ठवणातो गतातो । दव्वुण्णतो जो चण्णाडीतएण विणिहालिंतो जाति । भावुण्णतो हट्ठ-तुट्ठ-विहसितमुहो जातियादिमएहिं वा अट्ठहिं मत्तो । अवणतो चतुव्विहो—दव्वोणतो जो अवणयसरीरो गच्छति । भावोणतो 'कीस ण

१ विकृतभावः ॥ २ एयं खं १-२-३-४ शु वृद्ध॰ हाटी॰ ॥ ३ दोग्ग° खं १-३-४ जे॰ वृद्ध॰ ॥ ४ सूइयं खं १-३-४ जे॰ । सूयं खं २ शु॰ ॥ ५ संडिंभं हाटी॰ ॥ ६ साणमणलक्खियं, अल° मूलादर्शे ॥ ७ अणुन्नए खं १-२-३ जे॰ शु॰ वृद्ध॰ । अणुन्नये खं ४ ॥ ८ अणाउले खं १-२-३-४ शु॰ वृद्ध॰ हाटी॰ । अणाइले जे॰ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लभामि ? विरूवं वा लभामि ? अस्संजता पूतिज्जंति' इति दीणदूमणो । दव्वतो ताव उण्णता-ऽवणएसु दोसो–दव्वुण्णतो रियं ण सोहेति, 'उम्मत्ततो सविगारो' त्ति वा लोगो गरहति; दव्वावणतो 'अहो ! जीवरक्खणुज्जुत्तो, सव्वपासंडाण वा णीयमप्पाणं जाणति' त्ति जणो वएज्जा । भावतो उण्णतावणतं तु सुत्तेणेव विभासिज्जति–**अ[1]प्पहिट्ठे** पहिट्ठो भावुण्णतो, ण पहिट्ठो अपहिट्ठो । पहिट्ठं हिंडमाणं लोगो संभावेज्ज–'सविकारो हिंडति, अत्थि से कंति, विण्णाणादिगव्वितो वा समणगो' एते चोआ ( ? इति बूआ ) । भावावणतो **आविलो** कलुसचित्तो । कोहादिवसट्टत्तणेण एत्थ दोसो–तं ओमंतुयं हिंडमाणं लोगो पवदति–णूणं काओ वि खंडितो, दीणो वरातो हीणजातीतो वा । सव्वेसिं अकारेण पडिसेहो, **अणुण्णते णावणए अप्पहिट्ठे अणाविले । इंदियाणि** सोतादीणि, ताणि **जहाभागं** जहाविसतं, सोतस्स भागो सोतव्वं, तत्थ **दमइत्ता** विसयणिरोहादिणा, एवं सव्वाणि **दम[इत्ता]** वसं णेऊण **मुणी चरे** ॥ १४ ॥ जहा उण्णमण-णमणादिचेट्ठाविसेसपरिहरणं तहा इदमपि—

**९७. दवदवस्स ण[3] चरेज्जा भासमाणो वि[4] गोयरे ।**
**हसंतो णाभिगच्छेज्जा कुलँ[5]मुच्चावयं सदा ॥ १५ ॥**

**९७. दवदवस्स ण चरे०** सिलोगो । **[6]दवदवस्स** अतिसिग्घं । संभम-दवद्वाण विसेसो जहा–पुव्वगामंतर-गिहंतेसु तत्थ संजमविराहणा, जं पुण दवदवस्स तं गिहंतरेसु तेण संजमविराहणा पवयणोवघातो य जणसमक्खं । किंच–संभमो चित्तगतो विसेसो, दवदवस्सेति कायचेट्ठा, एस विसेसोति । इदमवि भणितव्वं– जहा दवदवस्स ण चरे तहा **भासमाणो वि** आलप्पालाणि बुव्वंतो सिलोगादि वा पढंतो । इदमवि–इरियं च ण सोहेति तेण **हसंतो णाभिगच्छेज्जा कुलमुच्चावयं सदा, कुलं** संबंधिसमवातो तदालदो वा घर ( ? ) । **उच्चावच**मणेगविहं हीण-मज्झिम-मुत्तमं । हीणे परिभवति त्ति, मज्झिमे का वि संभावणा, पहाणे अंतेपुरादिसु कडगमद्दणदोसो । जतो एते दोसा इति अविहिणा [ ण ] पविसितव्वं ॥ १५ ॥

तुरित-भासित-हसितनिवारणेण वाक्कायनियमो कतो । चक्खुरातीण विणियमाय भण्णति—

**९८. आलोगं थिग्गलं दारं संधिं दगभवणाणि य ।**
**चरंतो न विनिज्झाँ[7]ए संक[8]ट्ठाणं विवज्जए ॥ १६ ॥**

**९८. आलोगं थिग्गलं०** सिलोगो । **आलोगो** गवक्खगो । **थिग्गलं दारं** निग्गम-पवेसमुहं । **संधी** जमलघराणं अंतरं । पाणियकम्मन्त-पाणियमंचिका-ण्हाणमंडवादि **दगभवणाणि** । **च**कारो समुच्चये । एताणि समुदिताणि पत्तेयं वा **चरंतो** भणिओ **न [ वि ]निज्झाए**, णकारो पडिसेहे, **निज्झायणं** णिरिक्खणं तं पडिसेहेति, **विसदेण** विसेसदरिसणं वारिज्जति, ण सहसा, एतेसिमणालोकणेण **संकट्ठाणं विवज्जए**, ताणि निज्झायमाणो 'किण्णु चोरो ? पारदारितो ?' त्ति संकेज्जेज्जा, **थाणं** पदं, तमेवंविहं संकापदं विवज्जए ॥ १६ ॥ विचरंतस्स घरंतराति वाक्काय-चक्खुनियमणमुपदिट्ठं । जम्मि ठाणे ठितो भिक्खं गेण्हति तदिदमुपदिस्सति—

---

१ " **अप्पहिट्ठे** त्ति अप्पसद्दो अभावे वट्टइ थोवे य, इहं पुण अप्पसद्दो अभावे दट्ठव्वो, अहसंतो त्ति वुत्तं भवति, मज्झत्थभावमहिट्ठिऊण समुदाणस्स गच्छेज्जा" इति **वृद्धविवरणे** ॥ २ काचित् ॥ ३ **ण गच्छेज्जा** अचू० विना ॥ ४ **य** हाटी० । **य** अचू० हाटी० विना ॥ ५ **°लं उच्चा°** खं १–२–३–४ शु० वृद्ध० ॥ ६ "**दवदवस्स** नाम दुयं दुयं । सीसो आह–णणु "असंभंतो अमुच्छिओ" [ सुत्तं ८३ ] एतेण एसो अत्थो गओ, किमत्थं पुणो गहणं ? । आयरिओ भणइ–पुव्वभणियं तु जं भण्णति तत्थ कारणं अत्थि–जं तं हेट्ठा भणियं तं अविसेसियं पंथे वा गिहंतरे वा, तत्थ संजमविराहणा पाहण्णेण भणिया, इह पुण गिहाओ गिहंतरं गच्छमाणस्स भण्णइ; तत्थ पायसो संजमविराहणा भणिया, इह पुण पवयणलाघव-संकणाइदोसा भवंति त्ति ण पुणरुत्तं । " इति **वृद्धविवरणे** ॥ ७ **°निज्झाए** खं ३–४ जे० ॥ ८ **संकाठाणं** वृद्ध० ॥

Jain Education International  For Private & Personal Use Only  www.jainelibrary.org

**९९. रण्णो गहवतीणं च [1]रहस्सारक्खिताण य ।**
**संकिलेसकरं ठाणं दूरतो परिवज्जए ॥ १७ ॥**

९९. **रण्णो गहवतीणं च०** सिलोगो। [2]राया भूमीवती। **गिहवइणो** इब्भादतो। **रहस्सारक्खिता** रायंतेपुरवरा-ऽमात्यादयो । एतेसिं **संकिलेसकरं ठाणं** जत्थ इत्थीतो वा रातिं वा पतिरिक्कमच्छंति मंतंति वा तत्थ जदि अच्छति तो तेसिं संकिलेसो भवति– किं एत्थ समणयो अच्छति ? कत्तो त्ति वा ?, मन्त्रभेदादि संकेज्जा, अतो तं थाणं **दूरतो परिवज्जए** ॥ १७ ॥ भेक्खग्गाहिणो साधुस्स थाणमुपदिट्ठं । इदं तु भिक्खाए थाणमुवदिस्सति 'जतो मग्गियव्वा ? ण वा ?' एवमिदं सिलोगसुत्तमागतं—

**१००. पडिकुट्ठ कुलं ण पविसे [3]मामकं परिवज्जए ।**
**[4]अचियत्त कुलं ण पविसे चियत्तं पविसे कुलं ॥ १८ ॥**

१००. **पडिकुट्ठ कुलं ण पविसे०** सिलोगो । **पडिकुट्ठं** निंदितं, तं दुविहं–इत्तिरियं आवकहियं च, इत्तिरियं मयगसूतगादि, आवकहितं चंडालादी, तं उभयमवि कुलं **ण पविसे** । **कुलं** उक्तं । **मामकं परिवज्जए** 'मा मम घरं पविसंतु' त्ति **मामकः**, सो पुण पंतयाए इस्सालुयताए वा । **अचियत्तकुलं ण पविसे**, **अचियत्तं** [5]अप्पितं, अणिट्ठो पवेसो जस्स सो अचियत्तो, तस्स जं कुलं तं न पविसे, अहवा ण चागो जत्थ पवत्तइ तं दाणपरिहीणं केवलं परिस्समकारी तं ण पविसे । **चियत्तं** इट्ठणिक्खमण-पवेसं चागसंपण्णं वा तहाविधं **पविसे कुलं** ॥ १८ ॥ पडिकुट्ठ-मामका-ऽचियत्तवज्जणमुपदिट्ठं । इहावि ते दोसा संभवंतीति भण्णति—

**१०१. साणी-पावारपिहितं अप्पणा [6]णे अवंगुरे ।**
**कवाडं णो पणोलेज्जा ओग्[7]गहं सिअ जाइया ॥ १९ ॥**

१०१. **साणीपावारपिहितं०** सिलोगो । **सणो** वक्कं, पडी साणी । कप्पासितो पडो सरोमो **पावारतो** । पडिसिरातीहिं वा **पिहितं** ठइतं, तं सतं **ण अवंगुरेज्ज** । किं कारणं ? तत्थ खाणं-पाण-सइरालाव-मोहणारंभेहिं अच्छंताणं अचियत्तं भवति, तत एव मामकं लोगोवयारविरहितमिति पडिकुट्ठमवि । तत्थ जणा भणंति–एते चइला इव अग्गलाहिं रुंभियव्वा । तहा **[11]कवाडं णो पणोलेज्जा, कवाडं** दारप्पिहाणं तं ण पणोलेज्जा, तत्थ त एव दोसा यन्त्रे य सत्तवहो । होज्ज कारणं पवेसे अतो **ओग्गहं सिअ जाइया** तव्विहे पओयणे अणुण्णविय अवंगुरेज्जा वा पणोलेज्जा वा ॥ १९ ॥ पडिकुट्ठादिविवज्जणत्थमिदमवि पवयणउवघातियं परिहरेतव्वमिति—

**१०२. गोयरग्गपविट्ठो उ वच्च-मुत्तं ण धारए ।**
**ओ[12]वासं फासुयं णच्चा [13]अणुण्णाते तु वोसिरे ॥ २० ॥**

---

१ **रहसाऽऽरक्खियाण य** हाटी० । **रहसाऽऽरक्खियाणि य** खं १-२-४ शु० । **रहस्साऽऽरक्खियाणि य** जे० ॥
२ "रण्णो रहस्सट्ठाणाणि गिहवईणं रहस्सट्ठाणाणि आरक्खियाणं रहस्सट्ठाणाणि, संकणादिदोसा भवंति । **चकारेण** अण्णे वि पुरोहितादि गहिया । **रहस्सट्ठाणाणि** नाम गुज्झोवरगा, जत्थ वा राहस्सियं मंतेंति । एताणि ठाणाणि संकिलेसकराणि भवंति, सवणगो एत्थ, इत्थियाइए हिय-णट्ठे संकणादिदोसा भवंति, तम्हा **दूरतो परिवज्जए** ।" इति **वृद्धविवरणे** । वृद्धविवरणसंवादिन्येव **हारिभद्री टीका** वर्तते ॥
३ **मामगं** अचू० विना ॥ ४ **अचियत्त** अचू० विना ॥ ५ अप्रियम् ॥ ६ **नावपंगुरे** अचू० जे० विना । **नाववंगुरे** जे० ॥
७ **ओग्गहंसि अजाइया** अचू० विना । **ओग्गहं से अजातिया** अचू० मुद्रितपत्र ६ पङ्क्ति ८ ॥ ८ स्वयम् ॥ ९ खान-पान-स्वैरालाप-मोहनारम्भैः ॥ १० **°सउराला°** मूलादर्शे ॥ ११ "**कवाडं** लोगपसिद्धं, तमवि कवाडं साहुणा णो पणोल्लेयव्वं, तत्थ पुव्वभणिया दोसा सविसेसयरा भवंति। एवं **उग्गहं अजाइया** पविसंतस्स एते दोसा भवन्ति । जाहे पुण अवस्सकज्जं भवति 'धम्मलाभो' एत्थ सावयाणं अत्थि जति अणुवरोधो तो पविसामो ।" इति **वृद्धविवरणे** । **श्रीहरिभद्रपादै**रेतदनुसार्येव व्याख्यातमस्ति स्ववृत्तौ ॥
१२ **ओगासं** शु० ॥ १३ **अणुण्णायम्मि वो°** खं १-३-४ जे० । **अणुन्नावेत्तु वो°** वृद्ध० हाटी० । **अणुन्नविय वो°** खं २ शु० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०२. **गोयरग्गपविट्ठो उ०** सिलोगो । पुव्वं चेव उच्चारातीउवओगो कातव्वो, मा गोयरग्गगतस्स भविस्सति । जदि पुण वावडताए अकओवओगो गोयरमुपगतो कतोवयोगस्स वा किह वि होज्ज ततो **वच्च-मुत्तं ण धारणीयं** । भणितं च—

मुत्तनिरोहे चक्खुं वच्चनिरोहे य जीवियं चयति । उड्डनिरोहे कोढं सुक्कनिरोहे भवे अपुमं ॥ १ ॥

[ ओघनि० गा० १९७ ]

अधारणे सति किं करणीयम् ? उच्यते—**ओवासं फासुयं णच्चा** सहायहत्थे भायणाणि दाऊण विहिणा पाणगमुपादाय अणावायमसंलोए वोसिरितव्वं । **अणुण्णाते** भगवता ओवासे भावासण्णे, जस्स पुरोहडादि तेण अणुण्णाते रायमग्गादौ वा ॥ २० ॥

जहा गोयरग्गगतस्स मुत्त-पुरीसधारणमात-संजमोवघातिकं एवमिदमपीति भण्णति—

१०३. **णीयदुवार-तमसं कोट्ठगं परिवज्जए ।**
**अचक्खुविसओ जत्थ पाणा दुप्पडिलेहगा ॥ २१ ॥**

१०३. **णीयदुवारतमसं०** सिलोगो । णीयं दुवारं जस्स सो णीयदुवारो, तं पुण फलिहयं वा कोट्ठतो वा जओ भिक्खा नीणिज्जति, पलिहतदुवारे ओणतकस्स पडिमाए हिंडमाणस्स खद्धवेउव्वियाति उड्डाहो । णीय-दुवारत्तणेण वा तमसो जो कोट्ठओ जत्थ पिपीलिकादयो **पाणा चक्खुणा अविसयो** त्ति **दुप्पडिलेहगा** दुरुवलक्खा इति दायगस्स उक्खेव-गमणाती ण सुज्झति, अतो तं कोट्ठगं भिक्खगहणं प्रति समंततो वज्जए **परिवज्जए** ॥ २१ ॥ नीयदुवार-तमसातो अचक्खुविसओ त्ति वज्जितं भिक्खगहणं । पगासातो वि नत्थि गहणं इमेहिं कारणेहिं—

१०४. **जत्थ पुप्फाणि बीयाणि विप्पइण्णाणि कोट्ठगे ।**
**अधुणोवलित्तं ओल्लं दट्ठूणं परिवज्जए ॥ २२ ॥**

१०४. **जत्थ पुप्फाणि०** सिलोगो । **जत्थ** जम्मि **पुप्फाणि** उप्पलातीणि अभिणवुक्खयसच्चित्ताणि, **बीयाणि** वा सालिमादीणि, विविहं **पकिण्णाणि** कोट्ठगदुवारपहेसु दुपरिहराणि दायगस्स, किं च **अधुणोवलित्तं ओल्लं**, उवलित्तमेत्ते आउक्कातो अपरिणतो निस्सरणं वा दायगस्स होज्जा अतो तं **[ परि ]वज्जए** ॥ २२ ॥

सुहुमकायजयणाणंतरं बादरकायजयणोवदेस इति फुडमभिधीयते—

१०५. **एलगं दारगं साणं वच्छतं वा वि कोट्ठए ।**
**उल्लंघिया ण पविसे विऊहित्ताण व[3] संजए ॥ २३ ॥**

१०५. **एलगं दारगं साणं०** सिलोगो । **एलगो** बक्करओ, **दारओ** चेडरूवं, **साणतो** सुणतो, **वच्छतो** गो-महिसतणयो, पहाणेण पुलिंगामिधाणमितराओ चित्त (? वि तु) । **उल्लंघणं** उप्परेण गमणं, **विऊहणं** उप्पीलणं । एत्थ पच्चवाता—एलतो सिंगेण फेट्टाए वा आहणेज्जा । दारतो खलिएण दुक्खवेज्जा, सयणो वा से अप्प-त्तिय-उप्फोसण-कोउयादीणि पडिलग्गे वा गेण्हणातिपसंगं करेज्जा । सुणतो खाएज्जा । वच्छतो वितत्थो बंध-च्छेय-भायणातिभेदं करेज्जा । वियूहणे वि एते चेव सविसेसा ॥ २३ ॥ एलगादीण थूलाण परिहरणमुपदिट्ठं । अतो सण्हतरेहिं वि तु—**असंसत्तं०** । अहवा अजुत्तं उलंघणातिकायचेट्ठापरिहरणं भणितं । दिट्ठीए वि—

---

१ **गेलण्णं वा भवे तिसु वि** इति ओघनिर्युक्तौ पाठः ॥ २ °**वारं त**° अचू० विना ॥ ३ वि खं ४ ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०६. असंसत्तं पलोएज्जा णातिदूरा वलोयए ।
उप्फुल्लं ण विणिज्झाए णियट्टेज्ज[1] अयंपुरो[2] ॥ २४ ॥

१०६. **असंसत्तं पलोएज्जा०** सिलोगो । **संसत्तं** तसपाणातीहि समुपचितं, न संसत्तं **असंसत्तं**, तं पलोएज्ज, जत्थ ठितो भिक्खं गेण्हति दायगस्स वा आगमणातिसु । तं च **णातिदूरा वलोयए** अतिदूरत्थो पिपीलिकादीणि ण पेक्खति, अतो तिघरंतरा परेण घरंतरं भवति पाणजातियरक्खणं ण तीरति त्ति । अहवा **असंसत्तं पलोएज्जा** बंभव्वयरक्खणत्थं इत्थीए दिट्ठीए दिट्ठिं अंगपच्चंगेसु वा ण संसत्तं अणुबंधेज्जा, ईसादोसपसंगा एवं संभवंति, णातिदूरगताए वत्तससणिद्धादीहत्थ-मत्तावलोयणमसंसत्ताए दिट्ठीए करणीयं । जता वि णातिदूरे अवलोकणं तं पि **उप्फुल्लं ण विणिज्झाए**, उप्फुल्लं उद्धुराए दिट्ठीए, "फुल्ल विकसणे" इति, हासविगसंततारिगं **ण विणिज्झाए** ण विविधं पेक्खेज्जा, दिट्ठीए विनियट्टणमिदं । वीताए वि **णियट्टेज्ज अयंपुरो** दिण्णे परियंदणेण अदिण्णे रोसवयणेहिं "दिट्ठा सि कसेरुमती०" [ ] एवमादीहिं अजंपणसीलो **अयंपुरो** एवंविधो णियट्टेज्जा ॥ २४ ॥ अणंतरमयंपुरस्स नियत्तणमुवदिट्ठं । इतो वि णियत्तियव्वं ति भण्णति—

१०७. अतिभूमिं न गच्छेज्जा गोयरग्गगतो मुणी ।
कुलस्स भूमिं[3] णाऊण[4] मितं भूमिं परक्कमे ॥ २५ ॥

१०७. **अतिभूमिं न गच्छेज्जा०** सिलोगो । भिक्खयरभूमिअतिक्कमणमतिभूमी तं ण गच्छेज्जा । गोयरो अग्गं मुणी य पुव्वभणियाणि । किं पुण भूमिपरिमाणं ? इति भण्णति—तं विभव-देसा-ऽऽयार-भद्दग-पंतगादीहिं **कुलस्स भूमिं णाऊण** पुव्वपरिक्कमणेणं अण्णे वा भिक्खयरा जावतियं भूमिमुपसरंति एवं विण्णातं **मितं भूमिं परक्कमे** बुद्धीए संपेहितं सव्वदोससुद्धं तावतियं पविसेज्जा ॥ २५ ॥

जम्मि य भूमिगमणमुद्दिट्ठमणंतरं तम्मि वि आय-पवयण-संजमोवरोहपरिहरणत्थं नियमिज्जति—

१०८. तत्थेव पडिलेहेज्जा भूमिभागं वियक्खणो ।
ओसिणाणस्स[5] वच्चस्स संलोगं परिवज्जए ॥ २६ ॥

१०८. **तत्थेव पडिलेहेज्जा०** सिलोगो । **तत्थे**ति ताए मिताए भूमीए, एवसद्दो अवधारणे । किमवधारयति ? पुव्वुद्दिट्ठं कुलाणुरूवं **भूमिभागं पडिलेहेज्जा** परिक्खेज्जा । भूमीए पदेसो भूमिभागो । **वियक्खणो** पराभिप्पायजाणतो, कहिं चियत्तं ण वा ? । विसेसेण पवयणोवघातरक्खणत्थं **आसिणाणस्स, आसिणाणं** जत्थ सपडिच्छण्णं इत्थीओ ण्हायंति पुरिसा वा, तत्थ आय-परसमुत्था दोसा । असुतित्थाणमिति गरहितं च **वच्चं** अमेज्झं तं जत्थ । पंचप(?पसु-पं)डगादिसमीवथाणादिसु त एव दोसा इति । **संलोगो** जत्थ एताणि आलोइज्जंति तं **परिवज्जए** ॥ २६ ॥ **तत्थेवे**ति भूमिभागपरक्कमेण भूमिपदेसपडिलेहणे इदमवि णियमिज्जति—

१०९. दगमट्टितआताणे[6] बितियाणि[7] हरिताणि य ।
परिवज्जेंतो चिट्ठेज्जा सव्विंदियसमाहितो[8] ॥ २७ ॥

१०९. **दगमट्टितआताणे०** सिलोगो । **दगं** पाणियं, **मट्टिया** सचित्तपुढविक्कायो, सो जत्थ अधुणाऽऽणीयो, जत्थ जेण वा थाणेण उदगमट्टियाओ गेण्हंति तं **दगमट्टियायाणं**, तत्थ त एव दोसा । **बितियाणि**

१ णियंटिज्ज खं १ जे० ॥ २ अयंपिरो अचू० विना । अजंपिरो जे० ॥ ३ वावाऽपि ॥ ४ भूमिं जाणित्ता मियं वृद्ध० अचू० विना ॥ ५ सिणाणस्स य वच्च° खं २ शु० हाटी० ॥ ६ °मट्टियआयाणे खं १-२-३ जे० वृद्ध० । °मट्टीआयाणे खं ४ शु० ॥ ७ बीयाणि अचू० विना ॥ ८ °समाहिए अचू० विना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सालिमादीणि हरिताणि दुव्वादीणि **परिवज्जेंतो** समंततो वज्जेंतो परिवज्जेंतो **चिट्ठेज्जा** एताणि परिहरिऊण भिक्खाए थाएज्जा । **सव्विंदियसमाहितो** सव्वेहिं इंदिएहिं एएसिं परिहरणे सम्मं आहितो **समाहितो** ॥२७॥

एवं काले अपडिसिद्धकुलमियभूमिपदेसावत्थितस्स गवेसणाजुत्तस्स गहणेसणाणियमणत्थमुपदिस्सति—

११०. तत्थ से चिट्ठमाणस्स आहरे पाण-भोयणं ।
अकप्पितं ण[1] इच्छेज्ज पडिग्गाहेज्ज कप्पितं ॥ २८ ॥

११०. **तत्थ से चिट्ठमाणस्स०** सिलोगो । **तत्थ** तम्मि पडिलेहिते भूमिभागे **से** इति छट्ठीसव्वाएसो तत्थ तस्स, **तत्थ से चिट्ठमाणस्स** तम्मिं ठाणे भिक्खत्थमुपत्थितस्स अभिमुहं हरे **आहरे** पीयते इति पाणं भुज्यते इति भोयणं तं **आहरे पाण-भोयणं** । तं पुण **अकप्पितं ण इच्छेज्ज** बायालीसाए अण्णतरेण एसणादोसेण दुट्ठं । तेहिं चेव सुद्धं **पडिग्गाहेज्ज कप्पितं** ॥ २८ ॥

कप्पितं सेसेसणादोसपरिसुद्धमवि भायणदोसेण पक्खालणेण् वा—

१११. आहरेंती सिया तत्थ परिसाडेज्ज भोयणं ।
दिंतियं पडियाइक्खे ण मे कप्पइ तारिसं ॥ २९ ॥

१११. **आहरेंती सिया तत्थ०** सिलोगो । **आहरेंती** आणेंती **सिता** कदायि **तत्थ** तम्मि पुव्वुद्दिट्ठे ठाणे ठितस्स **परिसाडेज्ज** समंता साडेज्जा **भोयणं** पाण-भोयणाधिकारे भोयणपरिसाडणं महादोसमिति तस्स गहणं । **दिंतियं पडियाइक्खे** 'पाएणं इत्थीहिं भिक्खादाणं' ति इत्थीनिद्देसो, **पडियातिक्खे** पडिसेहेज्ज । इमेण वयणेण—**ण मे कप्पति तारिसं**, न मम कप्पति, "एरिसं" इति भणितव्वे तारिसनिद्देसो **तारिसं** सोतारमासज्ज । परिसाडणपसंगदोसोदाहरणं **वारत्तगनिदरिसणं** [ पिण्डनि० गा० ६२८ ], सयं वा एतं जाणेज्जा ॥ २९ ॥

परिसाडणभोयणेण पाणजातिअक्कमणपसंग-विमद्दोसा भवेज्जा । इह पुण साक्षादुपघात एवातो भण्णति—

११२. सम्मद्दमाणी पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
असंजमकरी[2] णच्चा तारिसं परिवज्जए ॥ ३० ॥

११२. **सम्मद्दमाणी०** सिलोगो । **सम्मद्दमाणी** एगीभावेण बहूण विमद्दं करेंती **पाणाणि** पिपीलिकादीणि **बीयाणि** सालिमादीणि **हरियाणि** हरियालियादीणि, बासद्देण सव्ववणस्सतिकायं पुढविकायादी य एगिंदिए । **असंजमकरी** एतं असंजमं साधुनिमित्तं करेति त्ति णातूण **तारिसं** पुव्वमधिकृतं पाण-भोयणं **परिवज्जए** ॥ ३० ॥ परिसाडणे दातगस्स य गमणा-ऽऽगमण-सम्मद्दणे दोसपरिहरणमुपदिट्ठं । इदं तु दाणीयदव्वसम्मद्दणदोसपरिहरणत्थं भण्णति—

११३. साहट्टु निक्खिवित्ता णं सच्चित्तं घट्टिऊण[3] य ।
तहेव समणट्ठाए उदगं संपणोल्लिया[4] ॥ ३१ ॥

११३. **साहट्टु निक्खिवित्ता णं०** सिलोगो । **साहट्टु** अण्णम्मि भायणे छोढूणं । एत्थ य फासुयं अफासुए साहरति चउभंगो । तत्थ जं फासुयं फासुए साहरति तं सुक्खं सुक्खे साहरति एत्थ वि चउभंगो । भंगाण **पिंडनिज्जुत्तीए** विसेसत्थो [ गा० ५६३-६८ ] । **निक्खिवित्ता** ठवेत्ता छसु काएसु **सच्चित्तं** अमिलायपुप्फाति

१ ण गेण्हेज्जा खं १-२-३ शु० हाटी० ॥ २ °मकरिं खं २-३-४ शु० । °मकरं जे० ॥ ३ घट्टियाणि य खं १-२-३-४ जे० शु० ॥ ४ °पणुल्लि° खं०२ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घट्टेऊण तहेव समणट्ठाए तेणेव प्रकारेण सचित्तसंघट्टणाइणा इध समणट्ठाए उदगं संपणोल्लिया विच्छड्डेत्ता [दलेति] "तारिसं परिवज्जए"त्ति अणुवत्तति ॥ ३१ ॥

साहरण-निक्खिवण-पणोल्लणाणि भणिताणि । सव्वपगारं संघट्टणातीध भणति—

११४. ओगाहइत्ता[1] चलइत्ता[2] आहरे पाण-भोयणं ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ३२ ॥

११४. आगाहइत्ता० सिलोगो । आगाहणं अभिणवछड्डियस्स पाएण विमद्दणं आउक्कायस्स । चलणं अणंतर-परंपरगतस्स केणति सरीरावयवेण । देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं, एतेसिं पदाणं पुव्वभणितो अत्थो ॥ ३२ ॥ आउक्कायस्स आगाहणा-चलणाति निवारियं । हत्थ-मत्तगतमिदं विसेसिज्जति—

११५. पुरेकम्मकतेण[3] हत्थेण दव्वीए[4] भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे[5] ण मे कप्पति तारिसं ॥ ३३ ॥

११५. पुरेकम्मकतेण० सिलोगो । पुरेकम्मं जं साधुनिमित्तं धोवणं हत्थादीणं हत्थो सरीरावयवो । दव्वी वंजणादिआघट्टण-उद्धरणगं कंस-वंसादिभायणं । एतेसिं अण्णयरेण पुरेकम्मकतेण देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ३३ ॥

आउक्कायविराहणपरिहरणप्पगारो भणितो । इदमवि तस्स परिहरणे प्रकारान्तरं, तं जहा—

११६. उदओल्लेण[6] हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ३४ ॥

११६. उदओल्लेण० सिलोगो । उदओल्लं जं णं साधुं पुरतो काउं कतं उदगदत्तणेण गलति । पच्छद्धं तहेव ॥ ३४ ॥

११७. ससिणिद्धेण[7] हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ३५ ॥

११७. ससिणिद्धेण० सिलोगो । ससिणिद्धं जं उदगेण किंचि णिद्धं, ण पुण गलति ॥ ३५ ॥

११८. ससरक्खेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ३६ ॥

---

१ ओगाहइत्ता हाटी० ॥ २ °हयित्ता चलयित्ता खं ३ वृद्ध० । °हएत्ता चलएत्ता खं २ ॥ ३ पुरेकम्मेण ह° अचू० वृद्ध० विना ॥ ४ दव्विए खं १-२-४ ॥ ५ °याइक्खे अचू० विना ॥ ६ ११६ गाथातः १३२ पर्यन्तगाथास्थाने जे० प्रतिं विहाय सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु एतत् सङ्ग्रहणीगाथायुगलं दृश्यते—

एवं—उदओल्ले ससिणिद्धे ससरक्खे मट्टिया ऊसे । हरियाले हिंगुलुए मणोसिला अंजणे लोणे ॥

गेरुय वण्णिय सेडिय सोरट्ठिय पिट्ठ कुकुसकए य । उक्कट्ठमसंसट्ठे संसट्ठे चेव बोद्धव्वे ॥

किञ्च—अगस्त्यसिंहपादवद् वृद्धविवरणकृताऽपि स्वव्याख्यायां साक्षाद् गाथा एत्र व्याख्याता निर्दिष्टाश्च सन्ति । तथा हि—

"एवम्—उदउल्ले० सिलोगो । उदउल्लं नाम जलतिंतं उदउल्लं । सेसं कण्ठं ॥ एवम्-[ ससणिद्धे० सिलोगो । ] ससणिद्धं नाम जं न गलइ । सेसं कंठं ॥ ससरक्खेण० [ सिलोगो ] । ससरक्खं नाम पंसु-रजगुंडियं । सेसं कंठं ॥ मट्टियाकए० [ सिलोगो ] । मट्टिया चिक्खल्लो । सेसं कंठं ॥ एतेण पगारेण सव्वत्थ भाणियव्वं-ऊसो णाम पंसुखारो । हरियाल-हिंगुल-मणोसिला-अंजणाणि पुढविभेदा ।" इत्यादि वृद्धविवरणे । श्रीहरिभद्रपादैः पुनरुपर्युल्लिखिते सङ्ग्रहणीगाथे एव व्याख्याते स्तः ॥ ७ ससणिद्धेण खं २-३-४ वृद्ध० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११८. **ससरक्खेण०** सिलोगो । **ससरक्खं** पंसु-रउग्गुंडितं । सेसं तहेव ॥ ३६ ॥

११९. मट्टियागतेण[1] हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ३७ ॥

११९. **मट्टियागतेण०** सिलोगो । **मट्टिया** लेट्टुगो । सेसं भणितं ॥ ३७ ॥ एतेण विधिणा सव्वत्थ—

१२०. ऊसगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ३८ ॥

१२१. हरितालगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ३९ ॥

१२२. हिंगोलुयगतेण[2] हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ४० ॥

१२३. मणोसिलागतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ४१ ॥

१२४. अंजणगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ४२ ॥

१२५. लोणगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ४३ ॥

१२६. गेरुयगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ४४ ॥

१२७. वण्णियगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ४५ ॥

१२८. सेडियगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ४६ ॥

१२९. सोरट्ठियगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ४७ ॥

१३०. पिट्ठगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ४८ ॥

---

१ मट्टियाकएण वृद्ध० ॥ २ हिंगुलुय° खं २-३-४ वृद्ध० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३१. कुक्कुसगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ४९ ॥

१३२. [1]उंक्कुट्ठगतेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियायिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ५० ॥

१२०. ऊसो लवणपंसू ॥ ३८ ॥ १२१. हरितालं खाणिसु पुढविक्कायविसेसो ॥ ३९ ॥
१२२–२४. हिंगोलुयमवि मणोसिला वि अंजणमवि तहाजातीयं ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥
१२५. लोणं सामुद्दादि ॥ ४३ ॥ १२६. गेरुयं सुवण्णगेरुतादि ॥ ४४ ॥
१२७. वण्णिता पीतमट्टिया ॥ ४५ ॥ १२८. सेडिया महासेडाति ॥ ४६ ॥
१२९. सोरट्ठिया तूवरिया सुवण्णस्स ओप्पकरणमट्टिया ॥ ४७ ॥
१३०. आमपिट्ठं आमओ लोट्टो । सो अणिंधणो पोरुसीए परिणमति । बहुइंधणो आरतो चेव ॥ ४८ ॥

१३१. कुक्कसा चाउलत्तया ॥४९॥ १३२. उक्कुट्ठं थूरो सुरालोट्टो, तिल-गोधूम-जवपिट्ठं वा । अंबिलिया-पीलुपण्णियातीणि वा उक्खलछुण्णादि ॥ ५० ॥ जहा पुरेकम्मादिआउक्कायोवघातो तहा तहा वि भण्णति—

१३३. असंसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
दि[2]ज्जमाणं ण इच्छेज्जा पच्छाकम्मं जहिं भवे ॥ ५१ ॥

१३३. असंसट्ठेण० सिलोगो । असंसट्ठो अण्णादीहिं अणुवलित्तो तत्थ पच्छेकम्मदोसो । सुक्कपोयलियमादि देंतीए घेप्पति ॥ ५१ ॥ जदि फासुएण वि न घेप्पति कथं तर्हि गहणं ? भण्णति—

१३४. संसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
दि[3]ज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥ ५२ ॥

१३४. संसट्ठेण० सिलोगो । एत्थ भंगा—संसट्ठो हत्थो संसट्ठो मत्तो सावसेसं दव्वं १ संसट्ठो हत्थो संसट्ठो मत्तो णिरवसेसं दव्वं २ एवं अट्ठ भंगा । एत्थ पढमो पसत्थो, सेसा कारणे जीव-सरीररक्खणत्थमणंतरमपदिट्ठं ॥ ५२ ॥ चित्तगतपीडापरिहरणत्थं । भण्णति—

१३५. दो[4]ण्हं तु भुंजमाणाणं एगो तत्थ निमंतए ।
दिज्जमाणं न[5] इच्छेज्जा छंदं से पडिलेहए ॥ ५३ ॥

१३५. दोण्हं तु भुंजमाणाणं० सिलोगो । दोण्हं संखा । तुसद्दो विसेसणे । "भुज पालण-ऽब्भवहरणयोः" इति एवं विसेसेति—अब्भवहरमाणाण रक्खंताण वा विच्छपातातिं अभोयणमवि सिया । एगो निमंतए कदायि एगो निमंतेज्जा, तं एगपक्खअब्भणुण्णातं दिज्जमाणं न इच्छेज्जा । ण तस्स मवंतमग्गहणं किंतु छंदं से पडिलेहए छंदो अहिप्पायो तं पडिलेहेज्जा, तस्स अंतग्गतस्स भावस्स पडिलेहणं ।

आगारिंगित-चेट्ठागुणेहिं भासाविसेस-करणेहिं । मुह-णयणविकारेहि य घेप्पति अंतग्गतो भावो ॥ १ ॥

अब्भवहरणीयं जं [6]दोण्हं उवणीयं ण ताव भुंजिउमारभंति, तं पि "वर्तमानसामीप्ये०" [ पाणि ३-३-१३१ ] इति वर्तमानमेव । णाताभिप्पातस्स जदि इट्ठं तो घेप्पति, ण अण्णहा ॥ ५३ ॥

---

१ उक्कट्ठ° अचू० विना ॥ २–३ देज्ज° खं २ ॥ ४ देण्हं खं २ ॥ ५ न गिण्हेज्जा खं ३ ॥ ६ सोण्हं मूलादर्शे ॥

Jain Education International  For Private & Personal Use Only  www.jainelibrary.org

दोण्हं अवणीते भोयणे एगस्स निमंतणे बितियस्स अभिप्पायरक्खणत्थमुपदिट्ठं। इदं तु फुडमेव—

१३६. दोण्हं[1] तु भुंजमाणाणं दो वि तत्थ णिमंतए।
दिज्जमाणं[2] पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥ ५४ ॥

१३६. **दोण्हं तु भुंजमाणाणं०** सिलोगो। **दोण्हं**, तुसद्दो तहेव, **भुंजमाणाणं** सम्मं निमंतणे वयणोवलक्खियाभिप्पायाणं तं **दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं** एसणादोसेहिं वज्जितं **एसणिज्जं भवे** ॥ ५४ ॥

परचित्तपीडापरिहरणं सिलोगदुयएणावदिट्ठं। इध तदेव सुहुमतरमुपदिस्सति—

१३७. गुव्विणीय[3]मुवण्णत्थं विविधं पाण-भोयणं।
भुंजमाणं[4] विवज्जेज्जा भुत्तसेसं पडिच्छए ॥ ५५ ॥

१३७. **गुव्विणीयमुवण्णत्थं०** सिलोगो। **गुव्विणी** गब्भिणी तीए डोहलवि[ण]यणत्थं **उपण्णत्थं** उवणीयं **विविधं** अणेगागारं **पाण-भोयणं**, तं तीए अण्णेण वा दिज्जमाणं **भुज्जमाणं** उवणीयं, ण ताव भुंजति तं, "वर्तमानसामीप्ये" [ पाणि० ३-३-१३१ ] इत्यति भुजमाणमेव, अहवा भुंजति अण्णो देति तं विवज्जणीयं। इमे दोसा–परिमितमुवणीतं, दिण्णे सेसमपज्जत्तं ति डोहलस्साविगमे मरणं गब्भपतणं वा होज्जा, तीसे तस्स वा गब्भस्स सण्णीभूतस्स अप्पत्तियं होज्ज, तम्हा तं विवज्जेत्ता तेत्तीए से सोमणसं समुपजातं लक्खेऊण **भुत्तसेसं** उव्वरियं **पडिच्छए** गेण्हेज्जा ॥ ५५ ॥ गब्भाभिघाय-पीडापरिहरणमुपदिट्ठं। इदं तु सरीरपीडापरिहरणत्थं भणति—

१३८. सिया य समणट्ठाए गुव्विणी कालमासिणी।
उट्ठिता वा[5] णिसीएज्जा णिसण्णा वा पुणुट्ठए।
[6]देंतियं पडियाइक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ५६ ॥

१३८. **सिया य समणट्ठाए०** सिलोगो। **सिया** कयायि **गुव्विणी** गुरुगब्भा प्रसूतिकालमासे **काल-मासिणी** सुंघणिसण्णा[7] भिक्खं दाहामि किंचि वा गिण्हमाणी एव**मुट्ठिता वा णिसीएज्जा** पढम**णिसण्णा वा** भिक्खदाणत्थं **पुणुट्ठए** पुणसद्देण चारेण[8] वा जं दुक्खं णीति। एवमादिचेट्ठा[ए] तीसे विसेसेण गब्भ-सरीरपीड त्ति। पुव्वपत्थुयं वयणमवहारिज्जति–**देंतियं पडियाइक्खे ण मे कप्पति तारिसं** ॥ ५६ ॥[9]

गब्भमणो-सरीरपीडापरिहरणत्थमुपदिट्ठं। इदं तु जातस्स पीडापरिहरणत्थं भणति—

१३९. थणगं पज्जेमाणी दारगं वा कुमारियं।
तं निक्खिवित्तु रोयंतं आहरे पाण-भोयणं
[10]देंतियं पडियातिक्खे न मे कप्पति तारिसं ॥ ५७ ॥

१३९. **थणगं पज्जेमाणी०** सिलोगो। **थणो** पओहरो तं पाएंती **दारगं वा कुमारियं**। को पुण विसेसो दारगस्स कुमारियाए वा जं पिधं वयणं? किंचि थिरयरो दारगो। तं उभयं **निक्खिवित्तु रोयंतं आहरे**

---

१ **देण्हं** खं २ ॥ २ **देज्ज**° खं २ ॥ ३ °**णीए उव**° अचू० विना ॥ ४ **भुंजमाणं** खं १-२-३-४ जे० ॥ ५ **व** खं १ ॥
६ एतदर्धश्लोकस्थाने सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु हाटी० च—

**तं भवे भत्त-पाणं तु संजयाण अकप्पियं। देंतियं पडियाइक्खे ण मे कप्पइ तारिसं** ॥

इति पूर्णः सूत्रश्लोको दृश्यते। श्री**अगस्त्य**पादैः **वृद्धविवरणकृता** च अर्धसूत्रश्लोक एव पूर्वसूत्रश्लोकपञ्चमषष्ठपादतया निर्दिष्टोऽस्ति ॥
७ सुखनिषण्णा ॥ ८ **'चारेण'** चलनादिना ॥ ९ "जा पुण कालमासिणी पुव्वुट्ठिया परिवेसेंती य थेरकप्पिया गेण्हंति। जिणकप्पिया पुण जद्दिवसमेव आवण्णसत्ता भवति तद्दिवसाओ आरद्धं परिहरंति।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ १० दृश्यतां टिप्पणी ६ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**पाण-भोयणमिति** भणितं। गच्छवासीण थणजीवी थणं पियंतो निक्खित्तो रोवतु वा मा वा अग्गहणं, अह अपिबंतो णिक्खित्तो रोवंते [ अग्गहणं, अरोवंते ] गहणं, अह भत्तं पि आहारेति तं पिबंते निक्खित्ते रोवंते अग्गहणं, अरोवंते गहणं। गच्छनिग्गताण थणजीविम्मि णिक्खित्ते पिबंते [ अपिबंते ] वा रोयंते [ अरोयंते ] वा अग्गहणं, भत्ताहारे पिबंते निक्खित्ते रोयमाणे अरोयमाणे वा अग्गहणं, अपिबंते रोवमाणे अग्गहणं, अरोवमाणे गहणं। एत्थ दोसा-सुकुमालसरीरस्स खरेहिं हत्थेहिं सयणीए वा पीडा, मज्जाराती वा खाणावहरणं करेज्जा। पुव्वभणितं **सुत्तसिलोगद्धं वित्तीए** अणुसरिज्जति-**देंतियं पडियातिक्खे न मे कप्पति तारिसं। अहवा विवद्धसिलोगो** अत्थनिगमणवसेणं ॥ ५७ ॥ उग्गमादिसुद्धो त्ति "**दोण्हं तु भुंजमाणाणं**" [ सुत्तं १२६ ] एवमादि परचित्तावरक्खणत्थमुपदिट्ठं। अयं तु संचित्तगत एव गहणेसणाविधी पढमो भण्णति—

१४०. जं भवे भत्त-पाणं तु कप्पा-ऽकप्पम्मि संकितं।
देंतियं पडियातिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ५८ ॥

**१४०. जं भवे भत्त-पाणं तु०** सिलोगो। भत्त-पाणं वा जं गविस्समाणमवि उग्गम-उप्पायणासु संदेहमेव जणयति, तं **कप्पा-ऽकप्पम्मि संकितं देंतियं पडियातिक्खे ण मे कप्पति तारिसं** ॥ ५८ ॥

गहणेसणाविहाणे संकित-मक्खितमुदओल्लाति पुव्वभणितं, निक्खित्तमवि "साहट्टु निक्खिवित्ता णं" [ सुत्तं ११३ ]। पिधियाभिहाणत्थमिदं भण्णति—

१४१. दगवारएण[3] पिहितं णीसाए[4] पीढएण वा।
लोढेण वा वि लेवेण[5] सिलेसेण व केणइ ॥ ५९ ॥

**१४१. दगवारएण पिहितं०** सिलोगो। **दगवारओ** पाणियघडुलओ, तेण पिहितं भायणं जत्थ भत्तं वा पाणं वा। **णीसा** वा पीसणी। **पीढयं** कट्ठादिमयं। **लोढो** णीसापुत्तओ। **लेवो** मट्टियादि। **सिलेसो** जउ-खउरादि। 'केणइ' त्ति प्रकारोपादाणं सिलेसादीहि ओलित्तं भवति ॥ ५९ ॥

पिहितसमाणजातीयं चेदमिति उब्भिण्णं भण्णति—

१४२. तं च उब्भिंदियां[6] देज्जा समणट्ठाएँ[7] दायगे।
देंतियं पडियातिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ६० ॥

**१४२. तं च उब्भिंदिया देज्जा०** सिलोगो। **तं** सिलेसादिहि ओलित्तं **उब्भिंदिया** देज्जा। चसद्देण दगवारगादीहि वा पिधितमुप्पिहेऊण **समणट्ठाए**। अध सट्ठाए तो गहणमेव। **दायगो** दाता। पच्छिलिद्धं-**देंतियं०** पगतमेव ॥ ६० ॥ पिधितसमाणजातितो त्ति उब्भिण्णमुग्गमदोसो भणितो। जावंतियमुग्गमदोसो तदग्गहणं भण्णति—

---

१ "तत्थ गच्छवासी जति थणजीवी [पियंतओ] णिक्खित्तो तो ण गेण्हंति, रोवतु वा मा वा, अह अन्नं पि आहारेति तो जति न रोवइ तो गेण्हंति, [ अह रोवइ तो ण गेण्हंति, ]। अह अपियंतओ णिक्खित्तो थणजीवी रोवइ तो ण गेण्हंति, अह न रोवइ तो गेण्हंति। गच्छनिग्गया पुण जाव थणजीवी ताव रोवउ वा मा वा अपियंतओ पियंतओ वा न गेण्हंति, जाहे अन्नं पि आहारेउं पयत्तो भवति ताहे जइ पियंतओ तो रोवउ वा मा वा ण गेण्हंति, अह अपियंतओ तो जदि रोवइ तो परिहरंति, अरोवंते गेण्हंति। सीसो आह-को तत्थ दोसो? त्ति। आयरिओ आह-तस्स निक्खिप्पमाणस्स खरेहिं हत्थेहिं घेप्पमाणस्स य अपरित्तत्तणेण परितावणादोसो, मज्जाराइ वा अवधरेज्जा ( अपहरेदित्यर्थः )।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ २ खचित्तगतः ॥ ३ °**वारेण** खं २ ॥ ४ **णिस्साए** वृद्ध० ॥ ५ °**ण सेलेण व** जे० ॥ ६ °**दिउं दे°** खं १-२-३-४ जे० शु० ॥ ७ °**ए व दावए** खं ४ जे० शु०। °**ए व दायए** खं २। °**ए व दाइए** खं १-३ ॥

१४३. असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा दाणट्ठ[2]प्पगडं इमं ॥ ६१ ॥

१४३. **असणं पाणगं वा०** सिलोगो । असण-पाण-खादिम-सादिमविसेसो भणितो । सातिमाति वि ण कप्पति त्ति एस विसेसो । **जं जाणेज्ज** सयं, **सुणेज्ज वा** अण्णेसिं अंतियं । **दाणट्ठप्पगडं** कोति ईसरो पवासागतो साधुसद्देण सव्वस्स आगतस्स सक्कारणनिमित्तं दाणं देति, रायाणो वा **मरहट्ठगा** दाणकाले अविसेसेण देंति ॥ ६१ ॥

※ १४४. [3,4]तारिसं भत्त-पाणं तु संजताण अकप्पितं ।
देंतियं पडियाइक्खे ण मे कप्पइ तारिसं ॥ ६२ ॥

१४४. पढमभणियत्थमेयं ॥ ६२ ॥ दाणट्ठपगडाणंतरमेव किंचि दातारविसेसं विसिट्ठं भण्णति—

१४५. [5]असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा पुण्णट्ठ[6]प्पगडं इमं ॥ ६३ ॥

१४५. **असणं पाणगं०** सिलोगो । जं तिहि-पव्वणीसु पुण्णमुद्दिस्स कीरति तं **पुण्णट्ठप्पगडं** । सेसं भणितं ॥ ६३ ॥ तं पुण्णनिमित्तमेतेसिं विसेसेणं भवति भण्णति—

१४६. असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा वणिमट्ठ[7]प्पगडं इमं ॥ ६४ ॥

१४६. **असणं पाणगं०** सिलोगो । **वणिमट्ठप्पगडं** समणाति **वणीमगा** ॥ ६४ ॥ एवमेव केणति विसेसेण—

१४७. असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा समणट्ठ[8]प्पगडं इमं ॥ ६५ ॥

१४७. **असणं पाण०** सिलोगो । **समणट्ठप्पगडं समणा** पंच वणीमगाति ॥ ६५ ॥ उप्पायणादोसा भणिता । उग्गमदोसपरूवणत्थं तु भण्णति—

१४८. उद्देसियं कीयगडं पूतीकम्मं च आहडं ।
अज्झोयर पामिच्चं मीसजा[9]यं च वज्जए ॥ ६६ ॥

१४८. **उद्दे०** सिलोगो । उद्देसियातिपरूवणत्थं जहा **पिंडनिज्जुत्तीए** ॥ ६६ ॥ गहणेसणाए संकितमपदिट्ठं । तत्थ सति संकाकारणे ण संदेहावत्थेण अच्छितव्वं, किं तर्हि ?—

---

१ **चेव खा°** खं ३–४ जे० । एवमग्रेऽपि सर्वत्र ज्ञेयम् ॥ २ **°णट्ठा पग°** अचू० वृद्ध० विना ॥ ३ अयं सूत्रश्लोको **वृद्धविवरणे** नास्ति । **हारि० वृत्तौ** तु वर्तते ॥ ४ **तं भवे भत्त°** खं १ जे० शु० ॥ ५ १४५–४६–४७ सूत्रानन्तरं प्रतिसूत्रं **तं भवे** ( **तारिसं** खं २–३–४ पाठा० ) **भत्त-पाणं तु संजयाण अकप्पितं । देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं** ॥ इति सूत्रश्लोकः सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु हा० वृत्तौ च वर्तते ॥ ६ **°ण्णट्ठा पग°** अचू० वृद्ध० विना ॥ ७ **°मट्ठा पग°** अचू० वृद्ध० विना ॥ ८ **°णट्ठा पग°** अचू० वृद्ध० विना ॥ ९ **मीसजायं** खं २–४ ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४९. उग्गमं [1]से पुच्छेज्जा कस्सऽट्ठा ? केण वा कॅयं ? ।
सोच्चा नीसंकितं सुद्धं पडिग्गाहेज्ज संजते ॥ ६७ ॥

**१४९. उग्गमं से पुच्छेज्जा०** सिलोगो । **उग्गमो** समुप्पत्ती तं पुच्छेज्जा, **कस्सट्ठा** कमुद्दिस्स **केण वा कयमिति** देंतगं पुच्छति–किं तुमे कडं ? केणति संदिट्ठो सि ? । ततो तदभिप्पायेण जाणति । अहवा भणेज्ज 'तुब्भऽट्ठाए' तो फुडं णाऊण परिहरिज्जति । जदि पाहुणतादि ववदिसति तो **सोच्चा नीसंकितं सुद्धं** सव्वदोसविरहियं **पडिग्गाहेज्जा** । एवं **संजते** भवति ॥ ६७ ॥

[3]गहणेसणाए संकियस्स सोधणमुपदिट्ठं । इदमवि उम्मिस्समिति गहणेसणाविसेस एव भण्णति—

१५०. असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
[4]पुप्फेहिं होज्ज उम्मिस्सं बीएहिं हरिएहिं वा ॥ ६८ ॥

**१५०. असणं पाणगं०** सिलोगो । असण-पाण-खाइम-साइमाणि भणिताणि । तेसिं किंचि **पुप्फेहिं** बलिकूरादि असणं **उम्मिस्सं** भवति, पाणं पाडलादीहिं कढितसीतलं वा किंचि वासितं, खादिमं मोदगादी, सादिमं वडिकादि । **बीएहिं** अक्खतादीहिं, **हरिएहिं** भूतणातीहिं जहासंभवं ॥ ६८ ॥

१५१. [5]तारिसं भत्त-पाणं तु संजताण अकप्पितं ।
देंतियं पडियातिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ६९ ॥

**१५१. तारिसं भत्त-पाणं०** सिलोगो । **देंतियं पडियातिक्खे ण मे कप्पति तारिसं** ॥ ६९ ॥

"साहट्टु निक्खिवित्ताणं" [ सुत्तं ११३ ] एत्थ निक्खित्तमिति गहणेसणादोसो भणितो । इह स एव सविसेसो दंसिज्जतीति भण्णति—

१५२. असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
उदगम्मि होज्ज निक्खित्तं उत्तिंग-पणएसु वा ॥ ७० ॥

**१५२. असणं०** सिलोगो । पुव्वद्धं भणितत्थं । तत्थ **उदगम्मि होज्ज निक्खित्तं**, निक्खित्तमणंतरं परंपरं च । अणंतरं णवणीय-पोयलियाति, परंपरनिक्खित्तमसणाति भायणत्थमुपरि जलकुंडस्स विण्णत्थं । **उत्तिंगो** कीडीयाणगरं । अणंतरं परंपरं तहेव । **पणओ** उल्ली, ओल्लियए कहिंचि अणंतरादिट्ठवितं ॥ ७० ॥

१५३. [6]तारिसं भत्त-पाणं तु संजताण अकप्पितं ।
देंतियं पडियाइक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ७१ ॥

**१५३. तारिसं भत्तपाणं०** सिलोगो । विभासितत्थो ॥ ७१ ॥ उदगनिक्खित्तं भणितं अगणिम्मि भण्णति—

---

१ **से य पु°** वृद्ध० ॥ २ **कडं** अचू० विना ॥ ३ **गहणेसणए वंकियस्स** मूलादर्शे ॥ ४ **पुप्फेसु होज्ज उम्मीसं बीएसु हरिएसु वा** खं १-२-३-४ जे० शु० ॥ ५ **तं भवे भत्त°** शु० । अयं सूत्रश्लोकः **वृद्धविवरणे** नास्ति ॥ ६ **वृद्धविवरणे** तु एतत्सूत्रश्लोकस्थाने केवलं **देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं** इति अर्द्धश्लोक एव निर्दिष्टोऽस्ति ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५४. [1]असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
[2]अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च संघट्टिया दए ॥ ७२ ॥

१५४. **असणं पाणगं०** सिलोगो । **अगणिम्मि** अणंतरं परंपरं तहेव । 'जाव साधूणं भिक्खं देमि ताव मा डज्झिहिती उब्भुतिहिति वा' आहट्टेऊण देति, पूवलियं वा उत्थलेऊण, उम्मुयाणि वा हत्थ-पादेहिं **संघट्टेत्ता** । सेसं सिद्धं ॥ ७२ ॥ अगणिनिक्खित्ताधिगारे इदमवि भण्णति—

१५५. [3]असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च उस्सिक्किया दए ॥ ७३ ॥

१५५. **असणं०** सिलोगो । **उस्सिक्किया** अवसंतुइया । 'जाव भिक्खं देमि ताव मा विज्झाहिति' त्ति सअट्ठाए तन्निमित्तं चेइहरालक्खे (?) वि परिहरितव्वं ॥ ७३ ॥

१५६. [4]तं भवे भत्त-पाणं तु संजताण अकप्पितं ।
देंतियं पडियाइक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ७४ ॥

१५६. **तं भवे०** [ सिलोगो ] **देंतियं पडियाइक्खे०** ॥ ७४ ॥ निक्खित्ताधिगारिगमेव—

१५७. [5]असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
अगणिम्मि होज्ज णिक्खित्तं तं च ओसक्किया दए ॥ ७५ ॥

१५७. **असणं०** सिलोगो । **ओसक्किय** उम्मुयाणि ओसारेऊण, मा ओदणो डज्झिहिति उवधुप्पिधिति वा किंचि । तहेव सेसं ॥ ७५ ॥ समाणाधिकारमेवेदमवि—

१५८. असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च उज्जालिया दए ॥ ७६ ॥

१५८. **असणं०** सिलोगो । **उज्जालिय** कलिंच-कुतलगादीहि । उस्सिक्कणुज्जलणविसेसो—जलंताण चेव उम्मुयाणं विसेसुज्जालणट्ठमुप्पुंजणं उस्सिक्कणं, बहुविज्झातस्स तिणादीहिं उज्जालणं । सेसं जहा पुव्वं ॥ ७६ ॥ तम्मि चेवाधिकारे भण्णति—

१५९. असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च[6] विज्झविया दए ॥ ७७ ॥

---

१ जे० प्रतौ १५४ सूत्रश्लोकादारभ्य १६४ सूत्रश्लोकपर्यन्तं प्रतिसूत्रश्लोकानन्तरं **तं भवे भत्त-पाणं तु संजताण अकप्पितं०** इति सूत्रश्लोक आवर्तते ॥ २ १५४ सूत्रश्लोकादारभ्य १६४ सूत्रश्लोकपर्यन्तं सर्वासु गाथासु **अगणिम्मि** स्थाने **तेउम्मि** इति पाठः खं २ जे० हाटी० वर्तते ॥ ३ १५५ सूत्रश्लोकादारभ्य १६४ सूत्रश्लोकपर्यन्तसूत्रस्थाने जे० अचू० वृद्धविवरणं विना सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० च केवलं सूत्रसङ्ग्रहणीपदान्येव दृश्यन्ते । तथा हि—**एवं उस्सक्किया १ ओसक्किया २ उज्जालिया ३ पज्जालिया ४ निव्वाविया ५ उस्सिंचिया ६ निस्सिंचिया ७ उव्वत्तिया ८ ओयारिया ९** खं १-२-३-४ शु० हाटी० । **उव्वत्तिया** स्थाने खं १ हाटी० अचू० **ओवत्तिया** पाठो वर्तते । जे० प्रतौ एतन्नवसङ्ग्रहपदाङ्किताः साक्षाद् अष्टादश सूत्रश्लोका एव वर्तन्ते । **वृद्धविवरणे** तु **उस्सिक्किया १ उज्जालिया २ णिव्वाविया ३ उस्सिंचिया ४ निस्सिंचिया ५ उव्वत्तिया ६ ओयारिया ७** इति सप्तपदाङ्किताः सप्त सूत्रश्लोकाः दृश्यन्ते । अस्यामगस्त्यचूर्णौ पुनः **उस्सिक्किया १ ओसक्किया २ उज्जालिया ३ विज्झाविया ४ उस्सिंचिया ५ उक्कड्ढिया ६ णिस्सिंचिया ७ ओवत्तिया ८ ओतारिता ९** इति नवपदाङ्किता नव सूत्रश्लोकाः वर्तन्ते ॥ ४ दृश्यतां पत्रं ११४ टिप्पणी ६ ॥ ५ अयं सूत्रश्लोकः वृद्ध० नास्ति ॥ ६ **च निव्वाविया दए** वृद्ध० । खं १-२-३-४ शु० हाटी० च सङ्ग्रहणीपदेषु **निव्वाविया** पदमेव दृश्यते ॥

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

**१५९. असणं०** सिलोगो । पाणगादिणा देयेण विज्झवेंती देति । सेसमुक्तं ॥ ७७ ॥ इदमवि तदधिकारे—

१६०. असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च उस्सिंचिया दए ॥ ७८ ॥

**१६०. असणं पाणगं०** सिलोगो । **उस्सिंचिया** कढंताओ ओकड्ढिऊण उण्होदगादि देति । सेसं तहेव ॥ ७८ ॥ समाणसंबंधमेव भण्णति—

१६१. [1]असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च उक्कड्ढिया दए ॥ ७९ ॥

**१६१. असणं०** सिलोगो । अद्दहियगदव्वं अण्णत्थ **उक्कड्ढिऊण** तेणेव भायणेण देति । तहेव सेसं ॥ ७९ ॥ तेणेव प्रकारेण—

१६२. असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च णिरिंसिचिया दए ॥ ८० ॥

**१६२. असणं०** सिलोगो । जाव भिक्खं देमि ताव मा उब्भिहिति त्ति पाणितादि तत्थ **णिस्सिंचति** । सेसं भणितं तहेव ॥ ८० ॥

१६३. असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च [2]ओवत्तिया दए ॥ ८१ ॥

**१६३. असणं पाणगं०** सिलोगो । अगणिनिक्खित्तमेव एक्कपस्सेण **ओवत्तेतूण** देति । पुव्वविधिणा सेसं ॥ ८१ ॥ तेणेवाभिसंबंधेण—

१६४. असणं पाणगं वा वि खादिमं सादिमं तहा ।
अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च ओतारिता दए ॥ ८२ ॥

**१६४. असणं पाणगं०** सिलोगो । देयदव्वमेव ईसिमपत्तकाल**मोतारेतूण** देति 'मा ण गेण्हिहिति ण वट्टति त्ति, अण्णदव्वं वा मा ताव डज्झिहिति जाव भिक्खं देमि' तो ओतारेति । सेसं भणितं । अधाभावेण ओतारेतूण देंतीए अण्णं दव्वं घेप्पति । तमेव अचुसिणमिति ण घेप्पति ॥ ८२ ॥

गहणेसणाविसेसो निक्खित्तमुपदिट्ठं । गवेसेसणाविसेसो पागडकरणमुपदिस्सति । जहा—

१६५. [3]गंभीरं झुसिरं चेव सव्विंदियसमाहिते ।
णिस्सेणी फलगं पीढं उस्सवेत्ताणं[4] आरुहे ॥ ८३ ॥

---

१ अयं सूत्रश्लोको **वृद्धविवरणे** नास्ति ॥ २ **उव्वत्तिया** वृद्ध० । **ओयत्तिया** जे० ॥ ३ १६५-६६-६७ इति सूत्रश्लोकत्रिकस्थाने **अगस्त्यचूर्णि** विहाय सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु हाटी० **वृद्धविवरणे** च सूत्रश्लोकपञ्चकं वर्तते । तथा हि—

**होज्ज कट्ठं सिलं वा वि इट्टालं वा वि एगया । ठवियं संकमट्ठाए तं च होज्ज चलाचलं ॥ १ ॥**
**न तेण भिक्खु गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो । गंभीरं झुसिरं चेव सव्विंदियसमाहिए ॥ २ ॥**
**निस्सेणिं फलगं पीढं उस्सवित्ताणमारुहे । मंचं कीलं च पासायं समणट्ठाए व दायए ॥ ३ ॥**
**दुरुहमाणी पवडेज्जा हत्थं पायं व लूसए । पुढविजीवे विहिंसेज्जा जे य तन्निस्सिया जगा ॥ ४ ॥**
**एयारिसे महादोसे जाणिऊण महेसिणो । तम्हा मालोहडं भिक्खं न पडिगेण्हंति संजया ॥ ५ ॥**

४ **°णमारु°** खं ३ अचू० विना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६५. **गंभीरं झुसिरं०** सिलोगो । गंभीरं अप्पगासं तमः । **झुसिरमवि** तहाजातीयमेव । **सव्विंदियसमाहितो** सव्विंदिएहिं अव्वासंगेण एसणोवयुत्तो । एतं भूमिघरादिसु अहेमालोहडं । इदं तु उड्डमालोहडं— **णिस्सेणी फलगं पीढं, निस्सेणी** मालादीण आरोहणकट्ठं । संघातिमं **फलगं** । पहुलं कट्ठमेव ण्हाणातिउपयोज्यं **पीढं** । एताणि **उस्सवेत्ताण** उद्धं ठवेऊण **आरुहे** चडेज्ज ॥ ८३ ॥ समाणाभिसंबंध एवायं—

१६६. मंचं[1] खीलं च पासायं समणट्ठाए दायगे ।
दुरुहमाणे[2] पवडेज्जा हत्थं पायं विलूसए[3] ॥ ८४ ॥

१६६. **मंचं खीलं च पासायं०** सिलोगो । **मंचो** सयणीयं चडणमंचिगा वा । **खीलो** भूमिसमाकोट्टितं कट्ठं । **पासादो** समालको घरविसेसो । एताणि समणट्ठाए दाया चडेज्जा तस्स इमे पच्चवाया सुत्तेण चेव निद्दिसंति—**दुरुहमाणे पवडेज्जा, दुरुहमाणे** आरुहमाणे णिस्सेणिमादिए भग्गे खलितो वा **पवडेज्जा** । पडितो **हत्थं पायं विलूसेज्जा** विणासेज्जा ॥ ८४ ॥ एस दायगसरीरगतो पच्चवायो । अयं तु सेसकायेसु—

१६७. पुढविक्कायं[4] विहिंसेज्जा जे वा[5] तण्णिस्सिया जगा ।
तम्हा[6] मालोहडं भिक्खं ण पडिग्गाहेज्ज[7] संजते ॥ ८५ ॥

१६७. **पुढविक्कायं विहिंसेज्जा०** सिलोगो । णवोवासणे सगडमालिगासु सच्चित्तपुढविक्कायं वा केणति कारणेण आणियं एवं पुढविजीवे । **जे वा तण्णिस्सिया जगा** जे वा तं पुढविक्कायमस्सिता **जगा** जीवा यदुक्तम् । गंभीरादि सव्वं समाकरिसेतूण भण्णति—**तम्हा मालोहडं भिक्खं ण पडिग्गाहेज्ज संजते, तम्हा** इति कारणाभिधाणं, **मालोहडं** मालवतारियं **भिक्खं ण पडिग्गाहेज्जा** ण गिण्हेज्ज, **संजए** एवं भवति ॥ ८५ ॥ गवेसेसणाभिधाणाणंतरं गहणेसणाविकप्पावसेसमपरिणतं भण्णति—

१६८. कंदं मूलं[8] पलंबं वा आमं छिण्णं व सण्णिरं ।
तुंबागं[9] सिंगबेरं च आमगं परिवज्जए ॥ ८६ ॥

१६८. **कंदं मूलं पलंबं वा०** सिलोगो । **कंदं** चमकादि । **मूलं** पिसाति । **पलंबं** फलं । **सण्णिरं** सागं । सव्वमेयं सरसं **आमं, छिण्णं** तहेव अपरिणयं । **तुंबागं** जं तयाए मिलाणममिलाणं अंतो त्वम्लानम् । **सिंगबेरं** अल्लगं **आमगं** सचित्तं । समंतयो वज्जए **परिवज्जए** ॥ ८६ ॥ इदमवि अपरिणयमेवेति भण्णति—

१६९. तहेव सत्तुचुण्णाइं कोलचुण्णाइं आवणे ।
सक्कुलिं फाणियं पूयं[10] अण्णं वा वि तधाविधं ॥ ८७ ॥

१६९. **तहेव सत्तु०** सिलोगो । **सत्तुया** जवातिधाणाविकारो, **चुण्णाइं** अण्णे पिट्ठविसेसा । **कोला** बदरा तेसिं **चुण्णाणि** । **आवणं** कय-विक्कयत्थाणं तम्मि आवणे । **सक्कुली** तिलपप्पडिया । **फाणियं** छुद्दगुलो । **पुधो** तवगसिद्धो । **अण्णं वा वि** मोदगादि **तधाविधं** ॥ ८७ ॥

---

१ **मंचकीलं** खं १-२-३-४ जे० ॥ २ °**माणी पव**° अचू० विना ॥ ३ **व लू**° अचू० विना ॥ ४ °**विजीवे वि**° अचू० वृद्ध० विना ॥ ५ **य** अचू० विना ॥ ६ **हंदि ! मालो**° हाटीपा० ॥ ७ **पडिगेण्हंति सं**° खं १-२-३ शु० हाटी० ॥ ८ "मूलं पिप्पल्यादि-विदारिकादिरूपम्" इति **हारि० वृत्तौ** ॥ ९ "**तुंबागं** नाम जं तयामिलाणं अब्भंतरओ अद्दयं" इति **वृद्धविवरणे** । "**तुम्बाकं** नाम त्वम्मिज्जान्तर्वर्त्ति, आर्द्रा वा तुलसीमित्यन्ये" इति **हारि० वृत्तौ** ॥ १० **पूयं अ**° खं २-३ जे० शु० वृद्ध० हाटी० । **पूइं अ**° खं १-४ । "**पूयं** कणिक्कादिमयं" हाटी० । "**पूयओ** पसिद्धो" वृद्ध० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एताणि सत्तुचुण्णादीणि आवणे यदवत्थाणि ण कप्पंति तं भण्णति—

**१७०. विक्कायमाणं पसढं रयेण परिघासियं[1] ।**
**देंतियं पडियाइक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ८८ ॥**

**१७०. विक्कायमाणं०** सिलोगो । विक्कयत्थमावणे[2] विण्णत्थं । **पसढ**मिति पच्चक्खातं तद्दिवसं विक्कतं न गतं । **रयेण** अरण्णातो वायुसमुद्धतेण सचित्तेण समंततो घत्थं **परिघासियं** । तं अपरिणतमिति **देंतियं पडियाइक्खे ण मे कप्पति तारिस**मिति भणियमेव ॥ ८८ ॥

गहणेसणाविसेसो अपरिणयमुपदिट्ठं । तव्विसेस एव छड्डियं देंती परिसाडेज्ज त्ति एत्थ भणितमवि विकप्पंतरेण भण्णति । मंसातीण अग्गहणे सति देस-काल-गिलाणावेक्खमिदमववातसुत्तं—

**१७१. बहुअट्ठियं पोग्गलं अणिमिसं[3] वा बहुकंटयं ।**
**अच्छियं[4] तेंदुयं बिल्लं उच्छुखंडं च सेंबलिं[5] ॥ ८९ ॥**

**१७१. बहुअट्ठियं पोग्गलं०** सिलोगो । **पोग्गलं** प्राणिविकारो, तं **बहुअट्ठितं** निवारिज्जति । **अणिमिसो वा** कंटकायितो । **अच्छियं तेंदुयं बिल्लं** फलानि प्रतीतान्येव । एतेसिं पलंबग्गहणेणं गहणे वि पुणो गहणं तं पुण अपरिणयपसंगेण । इमं फासुगमवि छड्डणदोसेणं भण्णति—**उच्छु** प्रतीतम् । णिप्फावादिसेंगा **सेंबली** ॥ ८९ ॥ दोसोववज्जणं अणंतरसिलोगेण भण्णिहिति त्ति बहुअट्ठितपोग्गलादीण दोसुब्भावण-गहण-पडिसेहणत्थमिदं भण्णति—

**१७२. अप्पे सिता भोयणज्जाते बहुउज्झियधम्मए ।**
**देंतियं पडियाइक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ९० ॥**

**१७२. अप्पे सिता भोयणज्जाते०** सिलोगो । **अप्पं** थोवं **सिया** कयायि बहुतरमवि उज्झियव्वातो, जातसद्दो प्रकारे, भोयणपगार एव खादिमं एयं । **बहुउज्झियधम्मिए** धम्मसद्दो सभाववाची अ णिच्छितव्वो । बहुउज्झियव्वसभावाणि एताणि अतो **देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पति तारिसं** ति ॥ ९० ॥

'एगालंभो अपज्जत्तं'ति पाण-भोयणेसणाओ पत्थुयाओ, तत्थ किंचि सामण्णमेव संभवति भोयणे पाणे य, जधा—"**असणं पाणगं चेव खाइमं साइमं तहा । पुप्फेहिं होज्ज उम्मिस्सं**" [ सुत्तं १५० ] एवमादि, अयं तु पाणग एव विसेसो संभवतीति भण्णति—

**१७३. तहेवुच्चावयं पाणं अदुवा वालधोवणं[6] ।**
**संसेइमं चाउलोदगं अभिणवधोतं विवज्जए ॥ ९१ ॥**

**१७३. तहेवुच्चावयं पाणं०** सिलोगो । **तहेव** इति वज्जणविगप्पतुलता । **उच्चावयं[7]** अणेगविधं वण्ण-गंध-रस-फासेहिं हीण-मज्झिमुत्तमं । **अदुवा वालधोवणं, वालो** वारगो, र-लयोरेकत्वमिति कृत्वा लकारो

१ **परिफासियं** खं १-२-४ शु० हाटी० ॥ २ **विक्कयत्थमावणे** मूलादर्शे ॥ ३ **अणमिसं** खं २ ॥ ४ **अत्थियं** खं २-४ जे० शु० ॥ ५ **सिंबलिं** खं १-२ जे० । **संबलिं** शु० ॥ ६ **वारधोवणं** खं १-३-४ हाटी० वृद्ध० । **वारधोयणं** खं २ शु० । **वालधोयणं** जे० ॥ ७ "उच्चं च अवचं च **उच्चावचं** । **उच्चं** नाम जं वण्ण-गंध-रस-फासेहिं उववेयं, तं च मुद्दियापाणगादि । चउत्थरसियं वा वि जं वण्णओ सोभणं, गंधओ अपूयं, रसओ परिपक्करसं, फासओ अपिच्छिलं तं उच्चं भण्णइ । **अवयं** णाम जमेतेहिं वण्ण-गंध-रस-फासेहिं विहीणं तं अवयं भण्णइ । एवं ताव सतीए घेप्पति । अहवा **उच्चावयं** णाम णाणापगारं भण्णइ । **वारओ** नाम घडओ, रकार-लकाराणमेगत्तमिति काउं वारओ **वालओ** भण्णइ, सो य गुल-फाणियादिभायणं, तस्स धोवणं **वारधोवणं**" । इति **वृद्धविवरणे** ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवति वालः, तेण वार एव वालः, तस्स **धोवणं** फाणितातीहिं लित्तस्स वालादिस्स । जम्मि किंचि सागादी संसेदेत्ता सित्तोसित्तादि कीरति तं **संसेइमं** । **चाउलोदगं** चाउलधोयणं । 'आउक्कायस्स चिरेण परिणामो' त्ति मुद्दियापाणगं पक्खित्तमेत्तं, वालगे वा धोयमेत्ते, सागे वा पक्खित्तमेत्ते, **अभिणवधोतेसु** चाउलेसु, सव्वेसु अभिणवकतं विवज्जए ॥ ९१ ॥ ण एतं अचंतविवज्जणं, परिणामे गहणमेवेति भण्णति--

१७४. जं जाणेज्ज चिराधोतं मतीए दंसणेण[1] वा ।
पडिपुच्छिताण[2] सोच्चाण जं च निस्संकियं भवे ॥ ९२ ॥

**१७४. जं जाणेज्ज चिराधोतं०** सिलोगो । **जमिति** पाणगस्स उद्देसो । **जाणेज्ज** अवधारेज्जा । तं कह ? **मतीए दंसणेण वा, मतीए** कारणेहिं **दरिसणेणं** जत्थ पच्चक्खं वा जं चिरधोतं जाणेज्जा, उसिणोदगं तिण्णि वारे उव्वत्तं, चाउलोदगं आदेसतियं मोत्तूण बहु[प्प]सण्णं । जं मतीए दरिसणेण वा ण परिच्छिण्णं तत्थिमो परिक्खणविही--**पडिपुच्छिताण** पडिपुच्छति 'काए वेलाए कतं ?' तस्स पडिवयणं **सोच्चाण** । एतेहि मति-दंसण-सवणेहिं **जं च निस्संकियं भवे,** चसद्देण वण्ण-गंध-रस-फासणपरिणामावधारियं ॥ ९२ ॥

एवं परिक्खितस्स किं करणीयं ? भण्णति--

१७५. अजीवं[3] परिणयं णच्चा पडिग्गाहेज्ज संजते ।
अह संकितं भवेज्जा आसाएत्ताण[4] रोयए ॥ ९३ ॥

**१७५. अजीवं परिणयं णच्चा०** सिलोगो । अजीवभावं गतं जाणित्ता **पडिग्गाहेज्ज संजते** । एवं पुव्वभणितं एतेहिं विधाणेहिं परिक्खिज्जमाणमवि **अह संकितं भवेज्जा, अह** इति जदिसद्दस्सऽत्थे, **संकितं** संदिद्धं चतुरत्थरसिय-मुद्दियपाणगाती ततो तं **आसाएत्ताण रोयए** ॥ ९३ ॥

तं अण्णेहिं विधाणेहिं परिक्खियमासंकियमासाएऊण गेये(?गहे)यव्वं ति तं इमेण विधिणा-एवं साधू भणेज्जाहि--

१७६. थोवमासायणट्ठाए हत्थगम्मि दलाहि मे ।
मा मे अच्चंबिलं पूतिं णालं तण्हं[5] विणितए[6] ॥ ९४ ॥

**१७६. थोवमासायण०** सिलोगो । भावियकुलेसु एवं गोयरग्गगतेण साधुणा भणितव्वं, जधा-**थोवं आसायणट्ठाए** चक्खणत्थं **हत्थगम्मि** हत्थतले **दलाहि मे** ददाहि मम । कारणमवि कहयति-**मा मे अच्चंबिलं पूतिं, अच्चंबिलं** अतिखट्टं **पूतिं** कुधितं **ण अलं** ण पज्जत्तं तण्हाविणयणे, मा मम एतं अच्चंबिलं पूर्ति तण्हाविणयणे असमत्थं होज्जा ॥ ९४ ॥

तो किं एतेण ? तस्स एवमुपदरिसितगुणस्स पाणगस्स पडिसेहणत्थं भण्णति--

१७७. तं च अच्चंबिलं पूतिं णालं तण्हं विणितए ।
देंतियं पडियातिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ ९५ ॥

**१७७. तं च अच्चंबिलं पूतिं०** सिलोगो । **तं** पाणगं, चसद्दो चेवत्थे, जधा तेण साहुणा भणितं **णालं**

---

१ दरिसणेण खं ३ जे० वृद्ध० ॥ २ पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा जं च निस्संकियं भवे जे० अचू० वृद्ध० विना । सोच्चा निस्संकियं सुद्धं पडिग्गाहेज्ज संजए वृद्ध० ॥ ३ अजीवं जे० अचू० विना ॥ ४ °साइत्ता° खं ४ शु० । °सायत्ता° खं १-२ जे० ॥ ५-६ तण्ह विणित्तए खं १-२-३-४ जे० । तण्हं विणेत्तए शु० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**तण्हं विणिंतए।** तव्विधमेव होज्जा **अचंबिलं पूतिं,** अतो तं **देंतियं पडियातिक्खे ण मे कप्पति तारिसं** ॥ ९५ ॥ एतदुक्तमेव एवंपडिसेहणारिहमवि संतं—

**१७८. तं च होज्ज अकामेण विमणेण पडिच्छियं।**
**तं अप्पणा[1] वि न पिबे नो वि अण्णस्स दावए ॥ ९६ ॥**

१७८. **तं च होज्ज अका०** सिलोगो। **त**मिति अचंबिलाति पाणगमभिसंबज्झति, **च**सद्दो जतिअत्थे, जदि **होज्जा अकामेण** अणिच्छता मुहभारियियाए बलाभिओगेण वा निप्फेडियं 'गेण्हाहि, किं वा पेच्छसि ?' **विमणेण** अणुवयुत्तेण **पडिच्छियं** लइयं, अतो **तं अप्पणा वि न पिबे नो वि अण्णस्स दावए,** जतो तं णालं तण्हं विणिन्तए, दाहाति असमाही वा होज्जा ॥ ९६ ॥

तं [अ] काम-विमणगहितमपेयमदेयं च कथं तर्हि करणीयं ? भण्णति—

**१७९. एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं[2] पडिलेहिया।**
**जयतं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ ९७ ॥**

१७९. **एगंतमवक्कमित्ता०** सिलोगो। **एगंतं** अणावातमसंलोयं **अवक्कमित्ता** तत्थ गंतूणं **अचित्तं** झामथंडिल्लाति **पडिलेहणाए** तज्जाइया पमज्जणा वि सूइया, तत्थ चक्खुणा पडिलेहेऊण रयहरणपमज्जिते **जयतं परिट्ठवेज्जा,** परिट्ठावणाविधिणा **परिट्ठवेऊण** पच्चागतो रियावहियाए **पडिक्कमे** ॥ ९७ ॥

एतेण विधिणा भत्तं पाणगं च उपादाय भोतव्वमिति भोयणविधाणमुण्णीयते। अहवा गवेसण-गहणेसणासुद्धस्स घासेसणाविधाणत्थमिदं भण्णति—

**१८०. सिया य गोयरग्गगतो इच्छेज्जा परिभोत्तयं[3]।**
**कोट्ठगं भित्तिमूलं वा पडिलेहेत्ताण फासुगं ॥ ९८ ॥**

१८०. **सिया य गोयरग्गगतो०** सिलोगो। गोअरो अग्गं च भणितं। गोतरग्गगतस्स भोत्तव्वसंभवो गामंतरं भिक्खायरियाए गतस्स काल-क्खमण-पुरिसे आसज्ज पढमालियं **इच्छेज्जा** अभिलसेज्जा समंता भुंजिउं भत्तं पाणगं च **परिभोत्तयं** समणुण्णातिउवस्सगासति[4] **कोट्ठगं भित्तिमूलं वा,** सुण्णधण्णकोट्ठगादि **कोट्ठओ,** दोण्हं घराणं अंतरं **भित्तिमूलं वा, पडिलेहेत्ताणं** चक्खुपडिलेहणाए 'जोग्गो एस ओवासो' त्ति परिक्खितुं **फासुगं** अप्पपाणाति ॥ ९८ ॥ परिक्खितत्थाणगुणेण अदिण्णादाणपरिहरणत्थमिदमणंतरं कातव्वं—

**१८१. अणुण्णवेत्तु मेधावी पडिच्छण्णम्मि संवुडो।**
**हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ भुंजेज्ज संजते ॥ ९९ ॥**

१८१. **अणुण्णवेत्तु०** सिलोगो। धम्मलाभपुव्वं तस्स त्थाणस्स पभुमणुण्णवेति–जदि ण उवरोहो एत्थ मुहुत्तं वीसमामि, ण भणति 'समुद्दिसामि' मा कोतुहल्लेण एहिती। एव**मणुण्णवेत्तु मेधावी** जाणओ **पडिच्छण्णे** थाणे **संवुडो** सयं जधा सहसा ण दीसति सयमावयंतं पेच्छति। ससीसोवरियं हस्संतं **हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ** तम्मि ओवासे **भुंजेज्ज संजते**। संजत इति असुरुसुराती ॥ ९९ ॥

एवं तस्स अणुण्णाते पडिच्छण्णे ओवासे भुंजमाणस्स किंचि परिट्ठवेतव्वं पि संभवति त्ति भण्णति—

---

१ °**णा न पिबे** अचू० विना। °**णा न पवेसे** खं ४ ॥ २ **अचित्तं बहुफासुए** वृद्ध० ॥ ३ **परिभोत्तुयं** अचू० वृद्ध० विना। **पढमालियं** वृद्ध० ॥ ४ समनोज्ञाद्युपाश्रयासति ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८२. तत्थ से भुंजमाणस्स अट्ठितं कंटओ[1] सिया ।
तण कट्ठ सक्करं वा वि अण्णं वा वि तहाविहं ॥ १०० ॥

**१८२. तत्थ से भुंजमाणस्स०** सिलोगो । **तत्थेति** कोट्ठगातिपरिग्गहो, **से** इति तस्स मेधाविस्स **भुंजमाणस्स** अब्भवहरमाणस्स **अट्ठितं** कारणगहितं अणाभोगेण वा, एवं अणिमिसं (?स) **कंटओ** इतरो वा, **तण-कट्ठ-सकरा**ओ पसिद्धाओ, **अण्णं वा वि तहाविहं** पाहाण-बदरट्ठिलाति **तहाविधं** तहाजातीयं खरं ॥ १०० ॥ तस्स अट्ठियाति भोयणे समावडितस्स विसोधणविधाणं भण्णति—

१८३. तं उक्खिवित्तु ण णिक्खिवे आसएण ण छड्डुए ।
हत्थेण[2] तं गहेऊण एकंतमवक्कमे ॥ १०१ ॥

**१८३. तं उक्खि[वि]त्तु ण [णि]क्खिवे०** सिलोगो । तमिति सव्वणामेण अधिकृतमट्ठिताति संबज्झति, **उक्खिवित्तु न निक्खिवे** हत्थेण, **आसयं** मुखं तेण 'थु' त्ति **ण छड्डेज्जा,** मा पडंतेण पाणजातिविराहणं होज्जा, मुहेण छड्डणे वाउक्कायसंघट्टणमवि, परिसाडेतुं तस्स वल्लिक्कातिएसु समुद्दिसंतीति सागारियं । अतो **हत्थेण** अप्पसागारियं **गहेऊण** फासुयं थाण**मेकंतमवक्कमेज्जा** ॥ १०१ ॥

अवक्कंतस्स उत्तरो करणीयविधी भण्णति, तं०—

१८४. एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
जयणाए[3] परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ १०२ ॥

**१८४. एगंतमवक्कमित्ता०** सिलोगो । एवं तमुपादाय **एगंतं** अणाबाधं गंतूण पडिलेहित[4] पमज्जित कतदिसावलोगो **जयणाए परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प पडिक्कमे** । किंच–परिट्ठवेऊण आगतेण हत्थसयब्भंतराओ वि पडिक्कमियव्वं ति अतो जदि विस्समितुकामो मुहुत्तं तो परिट्ठवेऊण रीयावहियं पडिक्कमे ॥ १०२ ॥

भिक्खायरियागतस्स समुद्दिसणविधी भणितो, एस य अणियतो, अयं णियतो विधिरिति भण्णति—

१८५. सिया य भिक्खु इच्छेज्जा सेज्जमागम्म भोत्तुयं ।
सपिंडवायमागम्म[5] उण्णयं ( उंडयं ) पडिलेहिया ॥ १०३ ॥

**१८५. सिया य भिक्खु इच्छेज्जा०** सिलोगो । **सिया य** इति कदायि कस्सति एवं चिंता होज्जा–'किं मे सागारियातिसंकडे बाहिं समुद्दिट्ठेणं ? उवस्सए चेव भविस्सति' एवं इच्छेज्जा, एस नियतो विधिरिति एवं सियासद्दो । **सेज्जा** पडिस्सयो तं **आगम्म भोत्तुयं** भुंजितुं **सपिंडवायमागम्म** भिक्खापडिआगतो । **पिंडवातो** भिक्खं, तं बाहिं पडिलेहेति संसज्जिमं सत्तुयादि विधिणा, असंसज्जिममवि, **उण्णयं (उंडयं)** थाणं जत्थ ठितो पडिलेहेति भत्त-पाणं तम्मि ठाणे पडिलेहिय-पमज्जिते निसण्णो जहाविधिं पडिलेहेज्ज ॥ १०३ ॥ एवमागम्म पडिलेहियविसुद्धभत्त-पाणस्स अयमणंतरो विधी—

१८६. विणएण पविसित्ता[6] सगासं[7] गुरुणो मुणी ।
रियावहियमायाय[8][9] आगतो य पडिक्कमे ॥ १०४ ॥

---

१ **कंडुओ** खं ४ ॥ २ **हत्थएण** जे० ॥ ३ **जयं परि°** अचू० विना ॥ ४ प्रतिलिख्य प्रमार्ज्य ॥ ५ **°म्म वडुयं** खं ४ ॥ ६ **पविस्सित्ता** खं १ ॥ ७ **सगासे** अचू० विना ॥ ८ **इरिया°** अचू० विना ॥ ९ **°याए आ°** जे० ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८६. **विणएण पविसित्ता०** सिलोगो। "निंसीहिया[1], णमो खमासमणाणं" जति ण ओलंबगवावडो तो दाहिणहत्थमाकुंचियंगुलिं णिडाले काऊण एतेण **विणएण पविसित्ता सगासं** अंतियं **गुरू** आयरियो तस्स समीवं पविसित्ता **मुणी** जस्सायमुवतेसो पत्थुतो, **रियावहियमायाय आदायेति** गुरुसमीवे विण्णत्थभायणो, अहवा आदिआलावगातो आरब्भ थिमितमणुपरिवाडीए **आगतो य पडिक्कमे** आगतमत्त एव ण विस्समितूण पडिक्कमेज्जा ॥ १०४ ॥ [2]जहोतियाओ रीयावहियापडिक्कमणातो अयं विसेसविधि ( ? धी ) भण्णति—

१८७. आभोएत्ताण [3]निस्सेसं अतियारं जहक्कमं ।
गमणाऽऽगमणे चेव भत्त-पाणे[4] व संजते ॥ १०५ ॥

१८७. **आभोएत्ताण०** सिलोगो। **आभोएत्ता** हियएण अवधारेतूण **निस्सेसं** सव्वं **अतियारो** अतिक्कमो तं **जहक्कमं** आलोयणाणुलोमं पडिसेवणाणुलोमं च । सो **गमणाऽऽगमणे** वा अतियारो होज्जा **भत्त-पाणे** अविहिणा गहणे **संजते** णिहुयप्पा ॥ १०५ ॥

समाणियपडिक्कमणेणावधारियायियारेण इदमणंतरं करणीयमिति भण्णति—

१८८. उज्जुप्पण्णो अणुव्विग्गो अवक्खित्तेण चेयसा ।
आलोएज्ज[5] गुरुसगासे जं जधा गहियं भवे ॥ १०६ ॥

१८८. **उज्जुप्पण्णो अणुविग्गो०** सिलोगो । अपलिउंचियमती **उज्जुप्पण्णो**। परीसहाण अभीतो अतुरियो वा **अणुविग्गो**। केणति सह अणुलावेंतो अण्णमण्णं वा अचिंतेंतो अतियारोवउत्तेण **अवक्खित्तेण चेयसा आलोएज्ज** वयणेण **गुरूण** पच्चक्खीकरेज्जा **सगासे** णातिविप्पगिट्ठो हत्थ-मत्तवावाराणं **जं** जेण पगारेण गहियं भवेज्जा। **जधा गहिय**मिति वयणेणाऽऽलोइए ससीसोवरिपमज्जितपडिग्गहो कतदिसालोगो दाहिण-हत्थतलनिवेसियपडिग्गहो अद्धावणतो दरिसणेणावि आलोएज्जा ॥ १०६ ॥ आलोयणाणंतरं विधिमुपदिस्सति—

१८९. ण सम्ममालोइयं होज्जा पुव्विं पच्छा व जं कडं ।
पुणो पडिक्कमे तस्स वोसट्ठो[6] चिंतए इमं ॥ १०७ ॥

१८९. **ण सम्ममालोइयं होज्जा०** सिलोगो । जदि पुण विस्सरिएण असढताए **ण सम्ममालोइयं होज्जा पुव्विं पच्छा व जं कडं** पुरेकम्म-पच्छाकम्माति, **तस्स** अतिचारस्स पुव्विं पडिक्कंते वि **पुणो पडिक्कमे**। अयं तु विसेसो—काउस्सग्गं **वोसट्ठो इमं चिंतए** जं अणंतरं भणीहामि ॥ १०७ ॥

जं पढमं पडिण्णायं 'इमं वोसट्ठो चिंतयेद्' इति तमुण्णीयति—

१९०. अहो ! [7]जिणेहिं असावज्जा वित्ती साधूण देसिया ।
मोक्खसाहणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥ १०८ ॥

१९०. **अहो ! जिणेहिं०** सिलोगो। **अहोसद्दो** विम्हए । को विम्हओ ? सत्तसमाकुले वि लोए अपीडाए जीवाण सरीरधारणं **जिणेहिं** तित्थगरेहिं भट्टारएहिं **असावज्जा** अगरहिता **वित्ती** आहारातिसरीरजत्ता **साधूणं**

१ "**विणओ** नाम पविसंतो णिसीहियं काऊण 'नमो खमासमणाणं' ति भणंता जति से खणिओ हत्थो, एसो **विणओ** भण्णइ" **वृद्धविवरणे** ॥ २ यथोदिताद् ईर्यापथिकीप्रतिक्रमणात् ॥ ३ **नीसेसं** खं १-३ शु० ॥ ४ **°पाणं च सं°** खं ४ । **°पाणे य सं°** खं २ ॥ ५ **आलोए गुरु°** खं १-२-३ जे० शु० । **आलोए सगुरु°** खं ४ ॥ ६ **वोसिट्ठो** शु० ॥ ७ **जिणेहऽसाव°** खं १-२-३ वृद्ध० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मसाहणपवित्ताण **देसिया** उपदिट्ठा । सा किमत्थं **मोक्खसाहण[हेउ]स्स** साहणत्थं, मोक्खसाहणं **देहो** तस्स साहणत्थं उग्गमुप्पादणासुद्धं भिक्खं ॥ १०८ ॥ अणेसणापडिक्कमणाणंतरं—

१९१. [1]नमोक्कारेण पारेत्ता [2]करेत्ता जिणसंथवं ।
सज्झायं पट्ठवेत्ताणं [3]विस्समेज्जा खणं मुणी ॥ १०९ ॥

१९१. **नमोक्कारेण पारेत्ता०** सिलोगो । 'नमो अरहंताणं' ति एतेण वयणेण काउस्सग्गं **पारेत्ता जिणसंथवो लोगुज्जोवकरो** तं **करेत्ता**, तदणु जदि पुव्विं न पट्ठवियं तो **सज्झायं पट्ठवेत्ताणं** सज्झायं करेत्ता परिसमुद्धुताण देसाण सत्थाणगमणत्थं **विस्समेज्जा खणं मुणी** ॥ १०९ ॥

खमग-अत्तलाभिए पडुच्च विसेसेणायमुपदेसो—

१९२. [4]विस्समंतो इमं चिंते हियम[5]त्थं लाभमत्थिओ ।
[6]जदि मे अणुग्गहं कुज्जा साधू ! होज्जामि [7]तारियो ॥ ११० ॥

१९२. **विस्समंतो इमं०** सिलोगो । सो खेदविणोयनिमित्तं **विस्समंतो इमं** अत्थं विचिंतेज्जा **हियं** आयतीखमं **अत्थं लाभेण** पारलोइएणं **अत्थी** । कतरं अत्थं ? **जदि मे अणुग्गहं** भत्तगहणेण करेज्जा **साधू अहं तारियो होज्जा** ॥ ११० ॥ विस्समंतो एवंकतसंकप्पो—

१९३. साधवो तो [8]चियत्तेण निमंतेज्जा जहक्कमं ।
जदि [9]तत्थ [10]केति इच्छेज्जा तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥ १११ ॥

१९३. **साधवो तो चियत्तेण०** सिलोगो । इमेण विधिणा खमासमणे पडिग्गहमुपादाय भणति–इच्छक्कारेण पाहुणगादीण देह । जदि दिण्णं साधू, अह भणंति 'निमंतेहि तुमं चेव' **तो चियत्तेण** तुट्ठीए **साहवो जहक्कमं निमंतेज्जा** पाहुणगादिअणुपुव्वीए इच्छक्कारं कातूण । एवं निमंतिएसु **जदि केति इच्छेज्जा तेहिं सद्धिं तु भुंजए** समलाए समरसं कातुं ॥ १११ ॥

तेहिं कतोति कारणायो ण पडिग्गाहिते किं करणीयमिति ? भण्णति—

१९४. [11]अह केति ण इच्छेज्जा ततो भुंजेज्ज एक्कओ ।
[12]आलोगभायणे साधू जतं [13]अपरि[14]साडगं ॥ ११२ ॥

१९४. **अह केति ण इच्छेज्जा०** सिलोगो । जदि ते कतपज्जत्तिया वा केणति वा कारणेण ण **इच्छेज्जा ततो** पच्छा **एक्कओ भुंजेज्जा** । तं पुण कंट-ऽट्ठि-मक्खितापरिहरणत्थं **आलोगभायणे** पगास-विउलमुहे वलिकाइए **जत**मिति घासेसणाविधिणा **अपरिसाडगं** लंबणातो मुहातो वा अपरिसाडगमेव वा ॥ ११२ ॥

जतं गवेसण-गहणेसणासुद्धं घेत्तुमुवगतस्स आलोइय-पडिक्कंतस्स उवणिमंतियसाधम्मियस्स [15]साधूहि सहासह वा भुंजमाणस्स घासेसणोवदेसत्थमिदं भणति—

१ **णमोकारेण** जे० ॥ २ **करेंता** खं १ जे० ॥ ३ **वीसमेज्ज** खं १–२–३–४ जे० शु० ॥ ४ **वीसमंतो** अचू० विना ॥ ५ °**मट्ठं लाभमट्ठिओ** खं १–२–३–४ जे० शु० ॥ ६ **जइ** अचू० विना ॥ ७ **तारिओ** अचू० विना ॥ ८ **चियत्तेण** अचू० विना ॥ ९ **इत्थ** जे० ॥ १० **कोइ इ**° वृद्ध० ॥ ११ °**ह कोई ण** अचू० खं ३ विना ॥ १२ **आलोए भा**° खं २ अचू० वृद्ध० विना ॥ १३ **अप्परि**° खं ३ ॥ १४ °**साडियं** अचू० हाटी० विना ॥ १५ **साधूद्धिहि** मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**१९५. तित्तगं व कडुयं व कसायं, अंबिलं व मधुरं लवणं वा ।**
**एत लद्ध अण्णट्ठपउत्तं, मधु घतं व भुंजेज्ज संजते ॥ ११३ ॥**

१९५. **तित्तगं व कडुयं व०** वृत्तम् । **तित्तगं** कारवेलाति, **कडुयं** त्रिकडुकाति, **कसायं** आमलक-सारियाति, **अंबिलं** तक्क-कंजियादि, **मधुरं** खीराति, **लवणं** सामुद्दलवणातिणा सुपडियुत्तमण्णं । छहि रसेहिं उवचियं विपरीतं वा **एत लद्ध अण्णट्ठपउत्तं** एतमिति तित्ताति दरिसेति, लद्धमेसणासुद्धं **अण्णट्ठापउत्तं** परकडं, अहवा भोयणत्थे पयोए एतं लद्धं अतो तं **महु घतं व भुंजेज्ज** जहा मधु घतं कोति सुरसमिति सुमुहो भुंजति तहा तं सुमुहेण भुंजितव्वं, अहवा महु-घतमिव हणुयातो हणुयं असंचारंतेण ॥ ११३ ॥

समाणाभिसंबंधमेवेदं भणति—

**१९६. अरसं विरसं वा वि सूचितं वा असूचितं ।**
**ओल्लं वा जदि वा सुक्खं मंथु-कुम्मासभोयणं ॥ ११४ ॥**

१९६. **अरसं विरसं वा वि०** सिलोगो । **अरसं** गुड-दाडिमादिविरहितं । **विरसं** कालंतरेण सभावविचुतं उस्सिण्णोयणाति । **सूचितं** सव्वंजणं, **असूचितं** णिव्वंजणं । सूचियमेव विसेसिज्जति–सुसूचियं **ओल्लं** । मंदसूचियं **सुक्खं** । बदरामहितचुण्णं **मंथु**, जंपुलिगादि **कुम्मासा**, एवमादि **भोयणं** ॥ ११४ ॥

तमेवमुपदरिसितविधाणमभिप्पायतो विसिट्ठं—

**१९७. उप्पण्णं णातिहीलेज्जा अप्पं पि बहुफासुयं ।**
**मुधालद्धं मुधाजीवी भुंजेज्जा दोसवज्जितं ॥ ११५ ॥**

१९७. **उप्पण्णं णाति०** सिलोगो । **उप्पण्णं** लद्धं **ण अतिहीलेज्जा, हीलणं** णिंदणं, **णकारो** तं पडिसेहेति, ण णिंदेज्जा । किं कारणं? **अप्पं पि बहुफासुयं** 'फासुएसणिज्जं दुलभं' ति अप्पमवि तं पभूतं । तमेव रसादिपरिहीणमवि अप्पमवि **मुधालद्धं** वेंटलादिउवगारवज्जितेण मुहालद्धं **मुहाजीवी** उप्पादणादोसपरिहारी **भुंजेज्जा** घासेसणादोसेहिं सइंगाल**दोसादिवज्जितं** ॥ ११५ ॥

इमेण य आलंबणेण अरस-विरसाति अण्णं दायकं वा णातिहीलेज्जा । जधा—

**१९८. दुल्लभा हु मुहादायी मुहाजीवी वि दुल्लभा ।**
**मुहादायी मुहाजीवी दो वि गच्छंति सोग्गतिं ॥ ११६ ॥ ति बेमि ।**

**॥ पिंडेसणाए पढमो उद्देसओ सम्मत्तो ॥ ५–१ ॥**

१९८. **दुल्लभा हु मुहादायी०** सिलोगो । उपकारहरणीए लोए **मुहादाती दुल्लभा** । दायगचित्ताराहणपरेसु गेण्हंतएसु **मुहाजीवी वि दुल्लहा** ।

**मुहादातिम्मि उदाहरणं**–कोति परिव्वायगभत्तो परिव्वायएण 'मम जोगं वहाहि' त्ति अत्थितो भणति–वहामि, जदि पुण मम जोगं ण वहसि । परिव्वायएण 'तह' त्ति अब्भुवगते सुवि(? व)हिते य से कते अण्णया भागवयस्स अस्सो चोरेहिं अतिप्पभाते अवहंतेहिं जालीए बद्धो । परिव्वायतो पाणियं गतो अस्सं दट्ठुमागंतु भणति–अमुगम्मि

१ °**विलं मधुरं** खं २-३-४ ॥ २ **एय लद्धमण्णट्ठप**° अचू० विना ॥ ३ **सूइयं वा असूइयं** अचू० वृद्ध० विना ॥ ४ उस्सिण्णोदनादि ॥ ५ "**सूचियं** तं पुण मंथु-कुम्मासा ओदणो वा होज्जा । **मंथू** नाम बोरचुन्न-जवचुन्नादि । **कुम्मासा** जहा **गोल्लुविसए** जवमया करेंति । तेण तप्पगारं भोयणं" **वृद्धविवरणे** । "**मन्थु-कुल्माषभोजनं**" **मन्थु** बदरचूर्णादि, **कुल्माषाः** सिद्धमाषाः, यवमाषा **इत्यन्ये**" हारि० वृत्तौ ॥ ६ उ जे० शु० ॥ ७ **सोग्गइं** खं २-३-४ । **सोग्गई** खं १ । **सोगई** जे० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाणिततडे[1] पोत्ती विस्सरिया । तदत्थं गतेण पुरिसेण अस्सो दिट्ठो आणीतो य । परिव्वायगभत्तेण 'सोवातमेतेण[2] कहित' मिति णाते 'ण देमि णिविट्ठं' त्ति वज्जितो । एरिसो मुहादायी दुल्लभो ॥

**मुहाजीविम्मि उदाहरणं**–कोति राया निरुप्पकारी[3] सुद्धधम्मपरिक्खत्थं मोदगभोयणमाघोसेतुं रायपुरिसे भणति–पुच्छह को केण खाति ?, पडिवण्णे य ममं उवणेह । 'केण खाह ?' त्ति पुच्छिता । कोति भणति–मुहेण, कोति–हत्थेहिं, अण्णो–पाएहिं, एवमणेगेहि पडिवज्जंति । खुड्डओ भणति–ण केणति । उवणीयो रण्णा पुच्छितो कहेति–जो जेण णिव्विसति सो तेण क्खाति, आयुहिता[4] हत्थेहिं, दूतादयो पादेहिं, मंति-सूय-मागहादयो मुहेण, एवं जं जस्स आराहणमुहं सो तेण भुंजति, अहं पुण इहलोगोवगारं प्रति मुहागयाएसणियस्स । 'सोधम्मो' त्ति पव्वतियो । एरिसो मुहाजीवी ॥

उभयोरपि फलोवसंहरणमिदं–**मुहादायी मुहाजीवी** जहुद्दिट्ठगुणा **दो वि गच्छंति सोग्गतिं** देवगतिं मोक्खं वा ॥ ११६ ॥ **इति बेमि** पुव्वभणितमेव ॥

## ॥ पिंडेसणाए पढमो उद्देसओ सम्मत्तो ॥ ५ । १ ॥

## [ पिंडेसणाए बिइउद्देसओ ]

पिंडेसणाबितियुद्देसारंभो । घासेसणा पत्थुता, जहा–"**अरसं विरसं वा वि०**" [ सुत्तं १९९ ] एतं वीतिंगालं वीयधूमं साहुदेहस्स धारणत्थं ति कारणं, मा उग्गमुप्पायणेसणासुद्धमवि राग-दोसेहि भुंजमाणो विराहेहिति । भणितं च—

बातालीसेसणसंकडम्मि[5] गेण्हंतो जीव ! ण सि छलितो । एण्हिं जह ण छलिज्जसि भुंजंतो राग-दोसेहिं ॥ १ ॥

[ पिण्डनिर्युक्तिः गाथा ६३४ ]

अतो इंगाल-धूमपरिहरणत्थमिदं भण्णति—

१९९. **पडिग्गहं संलिहित्ताणं लेवमाताए[6] संजते ।**
**दुग्गंधं वा सुगंधं वा सव्वं भुंजे ण छड्डुए ॥ १ ॥**

१९९. **पडिग्गहं०** सिलोगो । भत्तपडिग्गाहणभायणं पडिग्गहो, तं **पडिग्गहं संलिहित्ताणं** सामासेउं **लेवमाताए** जावतियं भो( ? भा)यणोवलित्तं एवं लेवमात्रया, **अधवा "लेवमादाय"** लेवादारब्भ अण्णगंधनिस्सेसं जेण अलेवाडमिव भवति । **संजते** इति आमंतणमुवदेसो वा । एवं कडच्छेदेण भुंजमाणो **दुग्गंधं वा सुगंधं वा**[7] कुत्सितगंधं दुग्गंधं, गंधसंपण्णं सुगंधं, उभयहा । **वासदेण** रसादयो विकप्पिज्जंति । सुत्तस्स संलेहणविहाणे भणितव्वे अणाणुपुव्वीकरणं कहिंचि आणुपुव्विनियमो कहिंचि पकिण्णकोपदेसो भवति त्ति एतस्स परूवणत्थं । एवं च घासेसणाविधाणे भणिते वि पुणो वि गोयरग्गपविट्ठस्स उपदेसो अविरुद्धो । णग्ग-मुसितपयोग इव वा 'दुग्गंधं'पयोगो उद्देसगादौ अप्पसत्थो त्ति ॥ १ ॥ जहा करणं "**विणएण पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणि**" [ सुत्तं १८६ ] त्ति भणितं, ण पुण थाणविसेसो, तव्विसेसणत्थं भण्णति—

२००. **सेज्जा-निसीहियाएँ समावण्णो[8] यँ गोयरे ।**
**अयावयट्ठं[9] भोच्चा णं जति तेण ण संथरे ॥ २ ॥**

१ पानीयतटे ॥ २ सोपायमेतेन ॥ ३ निरुप्यकारी वीर्घज्ञ इत्यर्थः ॥ ४ आयुधिकाः ॥ ५ °**डम्मि गहणम्मि जीव !** इति पिण्डनिर्युक्तौ पाठः ॥ ६ **लेवमादाय** अचूपा० । **लेवमायाय** खं ३ ॥ ७ °**प वा स**° खं १ ॥ ८ **व** हाटी० ॥ ९ °**वयट्ठा** खं १–२–३ शु० । °**वइट्ठा** खं ४ जे० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२००. **सेज्जा-निसीहियाए०** सिलोगो। **सेज्जा** उवस्सओ, **णिसीहिया** सज्झायथाणं, जम्मि वा रुक्खमूलादौ सैव **निसीहिया**, सेज्जा एव वा णिसीहिया **सेज्जानिसीहियाए [ समावण्णो य गोयरे**······ ·········] गोयरे वा जहा पढमं भणितं। एतेसु **अयावयट्ठं भोच्चा णं** जावदट्ठं यावदभिप्रायं तव्विवरीय-**मतावयट्ठं** भुंजित्ता **जति तेण ण संथरे जति** सद्दो अब्भुवगमे, **तेण** जं भुत्तं **ण संथरे** ण तरेज्जा ॥ २॥ जति ण संथरेज्जा तेणेव जं भुत्तं—

२०१. ततो कारणमुप्पण्णे भत्त-पाणं गवेसए।
विधिणा पुव्ववुत्तेण इमेणं उत्तरेण य ॥ ३ ॥

२०१. **ततो कारणमुप्पण्णे०** सिलोगो। सो पुण खमओ वा जधा "विअट्ठभत्तियस्स कप्पंति सव्वे गोयरकाला" [ दशाश्रु० अ० ८ सूत्र २४४ ] छुधालू वा दोसीणाति पढमालियं काउं पाहुणएहिं वा उवउत्ते ततो एवमातिम्मि कारणे उप्पण्णे **भत्त पाणं गवेसेज्जा विधिणा पुव्ववुत्तेण** पढमुद्देसगवण्णितेण, जं अणंतरं भणीहामि **इमेणं** ततो पुव्वभणियातो **उत्तरेण**। चसद्दो पुव्वुत्तविधिसमुच्चये ॥ ३ ॥

सो उत्तरो विधी अयमारब्भति, तं जधा—

२०२. कालेण निक्खमे भिक्खू कालेणेव पडिक्कमे।
अकालं च विवज्जेत्ता काले कालं समायरे ॥ ४ ॥

२०२. **कालेण निक्खमे भिक्खू०** सिलोगो। गाम-णगरातिसु जहोचियभिक्खवेलाए **कालेणे**ति तृतीया तेण सहायभूतेण **णिक्खमे** पडिस्सयातो गच्छेज्जा णातिवेलातिक्कंतं। **कालेणेव पडिक्कमे** पडिणियत्तेज्जा। एत्थ खेत्तं पहुप्पति कालो पहुप्पति भायणं च, एते अट्ठ भंगा जोएयव्वा। जैधोतियं विवरीयं **अकालं च** सति कालमवगतमणागतं वा एतं **विवज्जेत्ता** चतिऊण, ण केवलं भिक्खाए पडिलेहणातीणमवि जैहोतिते **काले कालं समायरे** ॥ ४ ॥ भिक्खागहणकालोवदेसस्स विवरीयकरणदोसोवदरिसणत्थं परवैयणोववातणमेव। अकालचारी अलभमाणो भिक्खमातुरीभूतो केणति 'लद्धं भिक्खं ?' ति पुच्छितो 'एस थंडिलग्गामो' णिंदंतो भणति—

२०३. अकाले चैरसि भिँक्खो ! कालं ण पडिलेहसि।
अप्पाणं च किलामेसि सण्णिवेसं च ँगरहसि ॥ ५ ॥

२०३. **अकाले चरसि०** सिलोगो। **अकाले** भिक्खस्स अदेस-काले **चरसि** भेक्खस्स हिंडसि **भिक्खो** ! इति आमंतणं। पमाती **कालं ण पडिलेहेसि**, ततो **अप्पाणं च किलामेसि** विंधापरिस्समेण। **सण्णिवेसो** गामो तं **गरहसि** णिंदसि। अहवा अफव्वितो परिदेवमाणो एतमेव अरथं गुरूहिं भणति सोवालंभं ॥ ५ ॥

एते अकालचरणे दोसा अतो—

२०४. सति काले चैँरे भिक्खू कुज्जा पुरिसैँगारियं।
अलाभो त्ति ण सोएज्जा तवो त्ति अधियासते ॥ ६ ॥

२०४. **सति काले चरे०** सिलोगो। **सति** दोससमुच्चये **काले चरे भिक्खू**, सति वा भेक्खाकाले

१ °दयउत्तेणं खं २ जे०। °व्वावुत्तेणं खं ३। **पुव्वभणिएणं** वृद्ध० ॥ २ **कालेण य प°** खं १-२-३-४ जे० शु०। **कालेणेव प°** अचू० वृद्ध० हाटी० ॥ ३ यथोदितम् ॥ ४ यथोदिते ॥ ५ परवचनोपपादनमेव ॥ ६ **चरसी** वृद्ध० ॥ ७ **भिक्खू !** अचू० विना ॥ ८ **गरिहसि** खं २ शु० ॥ ९ वृथापरिश्रमेण ॥ १० **चरं** अचूपा० ॥ ११ °**सकारियं** खं १-२ जे० शु० वृद्ध० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरंतो "**सति काले चरं**" एवं **कुज्जा पुरिसगारियं**। णावस्सं काले वि लाभो भवति त्ति तत्थ इमं आलंबणं–**अलाभो त्ति ण सोएज्जा** ण परिदेवेज्जा, **तवो त्ति अधियासते**[1] तवोविधाणमोमोयरिया तदत्थमहियासए ॥ ६ ॥ काले जयणा भणिता। खेत्तजयणा पुण—

२०५. तहेवुच्चावया पाणा भत्तट्ठाए[2] समागता।
तो[3] उज्जुयं न गच्छेज्जा जयमेव पंडिक्कमे[4] ॥ ७ ॥

२०५. **तहेवुच्चावया पाणा॰** सिलोगो। तेण प्रकारेण **तधेव**, जहा अकालवज्जणं एवमिदमवि–**उच्चावया** णाणाविधा जाति-रूव-वय-संठाणातीहिं **भत्तट्ठाए** बलिपाहुडियादिसु **समागता** मिलिता, 'मा तेसिं उत्त्रासाती होहिति' त्ति **ततो उज्जुयं न गच्छेज्जा**। ते घासेसिणो परिहरंतो **जयमेव पडिक्कमे** ॥ ७ ॥

जधा अंतराइयातिदोसभएण उच्चावयवित्तासणं ण करणीयं, एवं भिक्खागयस्स णिसीयणादौ आलावगपसंगेण वा पाण-भोयणंतरायमिति भण्णति—

२०६. गोयरग्गपविट्ठो तु ण [5]णिसिएज्ज कत्थति।
कहं वा ण पबंधेज्जा चिट्ठित्ताण व संजते[6] ॥ ८ ॥

२०६. **गोयरग्ग॰** सिलोगो। **गोयरो अग्गं** च भणितं, तं **पविट्ठो**। तुसद्दो दोसहेतुभावदरिसणत्थो। **ण णिसिएज्ज** णो पविसेज्ज **कत्थति** त्ति गिह-देवकुलादौ। उट्ठितो वि **कहं वा कहा** धम्मकहाती **ण पबंधेज्जा** पबंधेण ण भणेज्जा, एगणातमेगवागरणं वा भणेज्जा, **चिट्ठितो वा** एगत्थाणे चिरं, **संजते** त्ति एसा साधुत्थिती[7] ॥ ८ ॥ ण केवलं णिसियणं, अवट्ठंभणमवि ण कप्पति, तण्णिवारणत्थमिदं भण्णति—

२०७. अग्गलं फलिहं दारं कवाडं वा वि संजते।
अवलंबिया ण चिट्ठेज्जा गोयरग्गगतो मुणी[8] ॥ ९ ॥

२०७. **अग्गलं फलिहं दारं॰** सिलोगो। दुवारे तिरिच्छं खीलिकाकोडियं कट्ठं **अग्गला**। णगरद्दारकवाडोवत्थंभणं **फलिहं**। **दारं** पवेसमुहं। **कवाडं** दारघट्टणं। एताणि अग्गलादीणि **अवलंबिया ण चिट्ठेज्जा**, यदुक्तं अवट्ठंभिऊण। **गोयरग्गगतो मुणी** एतं भणितमेव ॥ ९ ॥ दोसकहणमवलंबणे संचरकुंथुदेहियादि भत्ते वा पवडणं तस्स आय-संजमविराहणा। दव्वजयणाणंतरमिमा भावजयणा—

२०८. [9]समणं माहणं वा वि किविणं[10] वा वणीमगं।
तमतिक्कम्म ण पविसे ण चिट्ठे चक्खुफासयो ॥ १० ॥

२०८. **समणं माहणं वा वि॰** सिलोगो। **समणा** पंच। **माहणा** धीयारा। **किवणा** पिंडोलगा। वणीमगा पंच। एतेसिं कोति भिक्खत्थं पविसमाणो पुव्वपविट्ठो वा जदि भवेज्जा **तमतिक्कम्म ण पविसे ण वा चिट्ठेज्जा चक्खुफासयो** चक्खुदरिसणविसये ॥ १० ॥

---

१ तवोविधानमवमोदरिका ॥ २ **°ट्ठाय समा°** शुपा॰ ॥ ३ **तदुज्जुयं** खं १–२ हाटी॰। **तउज्जुयं** शु॰ ॥ ४ **परक्कमे** अचू॰ विना ॥ ५ **णिसीएज्ज** खं १–२–३ शु॰ ॥ ६ "संजए। त्ति आमंतणं" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ७ साधुस्थितिः ॥ ८ "मुणिसद्दो आमंतणे वट्टइ" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ९ २०८ सूत्रश्लोकस्थाने सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी॰ च सूत्रश्लोकद्वयं वर्तते। तथाहि—

**समणं माहणं वा वि किविणं वा वणीमगं। उवसंकमंतं भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए ॥**
**तं अइक्कमित्तु न पविसे न चिट्ठे चक्खुगोयरे। एगंतमवक्कमित्ता तत्थ चिट्ठेज्ज संजए ॥**

**अइक्कमित्तु** स्थाने **अक्कमित्तु** जे॰। **चक्खुगोयरे** स्थाने **चक्खुफासओ** जे॰ अचू॰ वृद्ध॰। **चक्खुफासए** खं ४। **अगस्त्यचूर्णौ वृद्धविवरणे** चोपरिनिर्दिष्ट एक एव सूत्रश्लोको व्याख्यातोऽस्ति ॥ १० **किविणं** खं ४ जे॰ शु॰ ॥

अणंतरसिलोगोपदिट्ठपडिसेहकारणावधारणत्थमिदं भण्णति—

२०९. वणीमगस्स वा तस्स दायगस्सुभयस्स वा ।
अप्पत्तियं[1] सिया होज्जा लहुत्तं[2] पवयणस्स वा ॥ ११ ॥

**२०९. वणीमगस्स वा तस्स०** सिलोगो। **वणीमगस्स वा,** समणादीण वा वासद्देण विकप्पियाण। **तस्सेति** जो भिक्खत्थं उवसंकंतो, **दायगस्स** वा भिक्खादीण, **उभयस्स वा** दायग-गाहगाण, तदतिक्कमणे **अप्पत्तियं** अणिट्ठं **सिया** कयायि भवेज्ज, 'एते परलाभोवजीवणत्थं संपयंति वरागा' इति **लहुत्तं पवयणस्स वा** तस्स वा ॥ ११ ॥ जहा पडिकुट्ठकुलातीणि अच्चंतपरिहरणीयाणि ण तहेदमिति तदुवसंकमणोपायो भण्णति—

२१०. पडिसेहिते व दिण्णे वा ततो तम्मि णियत्तिते ।
उवसंकमेज्ज भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजते ॥ १२ ॥

**२१०. पडिसेहिते व दि०** सिलोगो। जदा सो वणीमगादी अतिच्छति **पडिसेधितो दिण्णं वा** से, एवमदाणेण दाणेण वा **ततो तम्मि णियत्तिते** भिक्खातिलाभत्थाणातो समीवं संकमेज्जा **उवसंकमेज्ज भत्तट्ठा** भत्तनिमित्तं **पाणट्ठाए** वा ॥ १२ ॥ संजते होऊण जधा मणोगतदुक्खपरिहरणत्थं वणीमगाइणो णातिक्कमियव्वा तहा सरीरपीडापरिहरणनिमित्तमिमाणि णातिक्कमेज्ज—

२११. उप्पलं[3] पउमं वा वि कुमुदं वा मगदंतिगं ।
अण्णं वा पुप्फ सचित्तं[4] तं च संलुंचिया दए ॥ १३ ॥

**२११. उप्पलं पउमं०** सिलोगो । **उप्पलं** णीलं। **पउमं** णलिणं। **वा अपीति** तामरसातिपरिग्गहो। **कुमुदं** गद्दभगं। पुणो **वा**सद्देण थलयाणि वि काणियि विकप्पिज्जंति । **मगदंतिगा**[5] मेत्तिया। एतप्पकारोपदरिसणमेत्तमिदमिति भण्णति—**अण्णं वा पुप्फ सचित्तं** अव्वावादितं हिमादिणा **तं च संलुंचिया दए तं** अणंतरभणितं पुप्फाभिधाणसंबंधणं। **च** इति चेदत्थे। एतेसिं उज्जाणितागताणं सरतडनिवेसादौ समुक्खणणं लुंचणं करेंती जदि देज्ज एवं **दए**। "**सम्मद्दमाणी पाणाणि बीयाणि हरियाणि य** ।" [सुत्तं ११२] उप्पलादीण एत्थं हरियग्गहणेण गहणे वि कालविसेसेण एतेसिं परिणामभेदा इति इह सभेदोपादाणं ॥ १३ ॥

अणंतरसिलोगत्थमसमाणितं समाणंतेहिं भण्णति—

२१२. तं भवे भत्त-पाणं तु संजताण अकप्पितं ।
देंतियं पडियाइक्खे ण मे कप्पति एरिसं ॥ १४ ॥

**२१२. तं भवे भत्तपाणं तु०** सिलोगो। **त**मिति अणंतरसिलोगभणिउप्पलादि संलुंचंतीए दिण्णं **भवे** इति णियमेण **भत्त-पाणं तु** भयणीयं पायव्वं वा इति भत्त-पाणं, **तु**सद्देण वत्थादीयं पि अणागता-ऽतीत-वट्टमाणसाधूणं तं **अकप्पियं** अणेसणिज्जमिति। **देंतियं पडियाइक्खे** पडिसेहए **'ण मम कप्पति एरिसं'** इति एतेणं वयणेणं।

---

१ **अपत्तियं** खं ४ ॥ २ **लहुयत्तं** शुपा० ॥ ३ अग्रेतनसूत्रश्लोकचूर्ण्यनुसारेण अयं सूत्रश्लोकः आचार्यान्तरगतेन षट्चारणत्मको वर्तते इति एतत्सूत्रश्लोकानन्तरं **धेंतियं पडियाइक्खे ण मे कप्पति एरिसं** इति पश्चार्द्धमधिकं ज्ञेयम् ॥ ४ **सच्चित्तं** खं १-२-३ शु० ॥ ५ "**मगदंतिया** मेत्तिया, **अण्णे** भणंति-धियइल्लो **मगदंतिया** भण्णइ।" इति **वृद्धविवरणे**। "**मगदन्तिका** मेत्तिकाम्, मल्लिकामित्यन्ये।" इति **हारि० वृत्तौ** ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[ केति तु ] "तं भवे भत्तपाणं०" एतस्स सिलोगस्स प्रागेणं पच्छद्धं पढंति—**देंतियं पडियाइक्खे०**। तं किं? "**संजताणं अकप्पियं**" पुणो "**ण मे कप्पति एरिसं**"मिति पुणरुत्तं, तप्परिहरणत्थं पच्छिमद्धेणेव समाणसंबंधमतीताणंतरसिलोगसंबंधतं समाणेंति, तहा य दिवड्ढसिलोगो भवति, लोगे य मुंग्गाहियत्थपडिसमाणणेण दिवड्ढसिलोइया प्रयोगा उवलब्भंति। यथा—

दश धर्मं न जानन्ति धृतराष्ट्र! निबोधनात्। मत्तः प्रमत्त उन्मत्तो श्रान्तः क्रुद्धः पिपासितः।
त्वरमाणश्च भीरुश्च चोरः कामी च ते दश ॥ १ ॥ [ महाभारते ] ॥ १४ ॥

समाणसंबंधो केणति अत्थेण विसिट्ठो पुणो अयं उच्चारेतव्वो—

**२१३. उप्पलं पउमं वा वि कुमुदं वा मगदंतिगं।**
**अण्णं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च सम्मद्दिया दए।**
**[4]देंतियं पडियातिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ १५ ॥**

२१३. **उप्पलं पउमं०** सिलोगो। तहेव अत्थविभासणे कते अपच्छिमपादे **तं च सम्मद्दिया दए,** तमिति उप्पलादीणं किंचि पुव्वच्छिण्णमुवरवितं पुंप्फावचायगातिसु। **तं च सम्मद्दिया दए** पुव्वच्छिण्णाणि मलिऊण अपरिणताणि, तेसिं ण समुक्खणणनिमित्तेणं किंतु जल-थलयवेंट-णालिबद्धविसेसेणं परिणामो भवतीति जाणितूणं, अतो तधा **देंतियं पडियातिक्खे ण मे कप्पति तारिस**"मिति समाणाभिसंबंधमेव ॥ १५ ॥

**२१४. सालुगं वा विरालियं कुमुदुप्पलनालियं।**
**मुणालियं सासवणालियं उच्छुगंडमणिव्वुडं ॥ १६ ॥**

२१४. **सालुगं वा विरालियं०** सिलोगो। **सालुयं** उप्पलकंदो। **विरालियं** पलासकंदो, अहवा **छीरविराली** जीवंती गोवल्ली इति एसा। **कुमुदुप्पलाणि** भणिताणि, तेसिं **णाला**। पउमाण मूला **मुणालिया**। **सासवणालिया** सिद्धत्थगणाला। **उच्छुगंडमणिव्वुडं** सपव्व-ऽच्छियं ॥ १६ ॥

एतेसिं ण केवलं संलुंचणाति खंज्जंती वि, तहाजातीयमिदमवि—

**२१५. [11]तहेव तरुणगं पवालं रुक्खस्स व तणस्स वा।**
**[12]हरितस्स वा वि अण्णस्स आमगं परिवज्जए ॥ १७ ॥**

२१५. **तहेव तरुणयं०** सिलोगो। **तहेव** वज्जणीयं **तरुणयं** कोमलं **पवालं** पल्लवो **रुक्खस्स** चिंचादे **तणस्स वा** महुरतणातिकस्स **हरितस्स वा** भूतणकादे **अण्णस्स** वेति जीयंति-[गो]वल्लिमादीण **आमगं** अणुस्सिण्णं समंततो वज्जए **परिवज्जए** ॥ १७ ॥ पत्थुताभिसंबंधेणेव—

**२१६. तरुणियं वा छिवाडिं [13][14]आमिगं सतिभज्जितं।**
**देंतियं पडियातिक्खे ण मे कप्पति तारिसं ॥ १८ ॥**

---

१ २१२ सूत्रश्लोकस्थाने **देंतियं पडियाइक्खे०** इत्यर्धश्लोकसूत्रं अचूपा० वृद्ध०। **तारिसं भत्त-पाणं** खं १-२-३-४ जे० हाटी० ॥ २ अत्र मकारोऽलाक्षणिकः, तेन उद्ग्राहितार्थप्रतिसमाननेन इत्यर्थः ॥ ३ 'व्यर्धश्लोकका:' अर्द्धद्वितीयश्लोकका इत्यर्थः ॥ ४ **देंतियं०** इत्यर्धसूत्रश्लोकस्थाने सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० च पूर्णश्लोकसूत्रं वर्तते—**तं भवे भत्त-पाणं तु संजताण अकप्पितं। देंतियं पडियाइक्खे ण मे कप्पति तारिसं** ॥ ५ **पुप्फोवचारागतिसु** मूलादर्शे ॥ ६ **विरालीयं** खं ३ ॥ ७ **कुमुयं उप्प°** खं २-३-४ शु० ॥ ८ **°च्छुक्खंड°** अचू० विना ॥ ९ "**विरालियं** नाम पलासकंदो भण्णइ, जहा बीए वल्ली जायंति [ एवं ] तीसे पव्वे पव्वे कंदा जायंति सा विरालिया भण्णइ।" इति **वृद्धविवरणे**। "विरालिकां" पलाशकन्दरूपाम्, पर्ववल्लि-प्रतिपर्वेवल्लि-प्रतिपर्वकन्दम् इत्यन्ये।" इति **हारि० वृत्तौ** ॥ १० **खजंति वि तहाजातियमिदंसेवि** मूलादर्शे ॥ ११ **तरुणगं वा पवालं** अचू० विना ॥ १२ **अन्नस्स वा वि हरियस्स आमगं** अचू० विना ॥ १३ **छेवाडिं** खं २ शु० ॥ १४ **आमियं भज्जियं सइं** अचू० वृद्ध० विना ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१६. **तरुणियं वा छिवाडिं०** सिलोगो । **तरुणिया** अणापक्का । **छिवाडिया** संबिलिया । **आमिगा** असिद्धपक्का तं वा । **सतिभज्जिता** एक्कसि भज्जिता । एतं **देंतियं पडियातिक्खे०** ॥ १८ ॥

सव्वाभिसंबंधेण समाणणत्थमितं भण्णति—

२१७. तहा कोलम[1]णुस्सिण्णं वेलुयं कासवनालियं ।
तिलपप्पडगं [2]नीवं आमयं परिवज्जए ॥ १९ ॥

२१७. **तहा कोलमणुस्सिण्णं०** सिलोगो । [ तहा ] तेणेव पगारेण **कोलं** बतरं, तं **अणुस्सिण्णं** जं ण उस्सेतियं तो[3]गेंलि( ? तोय-ऽग्गि )निमित्तं । **वे[4]लुयं** विलं वंसकरिल्लो वा । **कासवनालियं** सीवण्णीफलं कस्सारुकं । **तिलपप्पडगो** आमतिलेहि जो पप्पडो कतो । **णीव**फलं वा । एतेसिं जं अणुस्सिण्णं तं **आमयं परिवज्जए** ॥ १९ ॥

पुव्वाधिकारोवजीवणत्थं भण्णति—

२१८. तहेव चाउलं पिट्ठं वियडं वा तत्तनिव्वुडं ।
तिलपिट्ठं पूतिपिण्णागं आमगं परिवज्जए ॥ २० ॥

२१८. **तहेव चाउलं पिट्ठं०** सिलोगो । **[5]चाउलं पिट्ठं** लोट्टो, तं अभिणवमणिंधणं सचित्तं भवति । **वियडं** उण्होयगं **तत्तनिव्वुडं** सीतलं पडिसचित्तीभूतं अणुव्वत्तदंडं वा । **तिलपिट्ठं** तिलउट्टो, तस्स वि णिरिंधणस्स तहेव परिणामो अभिण्णो वा कोति होज्जा । **पूतिपिण्णागो** सरिस[ व ]पिट्ठं एतेसिं जं असत्थपरिणतं तं **आमगं परिवज्जए** ॥ २० ॥ तुल्लाधिकारोपपादितमिदं भण्णति—

२१९. कविट्ठं मा[6]तुलिंगं च मूलगं मूल[7]कत्तियं ।
[8]आमगमसत्थपरिणयं मणसा वि ण पत्थए ॥ २१ ॥

२१९. **कविट्ठं मातुलिंगं०** सिलोगो । कवित्थफलं **कविट्ठं** । बीजपूरगं **मातुलिंगं** । सेमूलं ( ? ल )-पलासो **मूलग** एव । मूलगं( ? ग )कंदगचक्कलिया **[मूलकत्तिया]** । एतेसिं अण्णतरं **आमगं** अणुस्सिण्णं अण्णेण वा सत्थेण अणुवहतं **मणसा** किं पुण कम्मुणा **ण पत्थए** णाभिलसेज्जा ॥ २१ ॥

पुव्वपत्थुतप्रकाराभिसंबंधणत्थं भण्णति—

२२०. तहेव फलमंथूणि बीयमंथूणि जाणिया ।
बिभेलगं पियालं च आमगं परिवज्जए ॥ २२ ॥

२२०. **तहेव फलमंथूणि०** सिलोगो । तेणेव प्रकारेण, **एव**सद्दो अवधारणे । **मंथुं** चुण्णं, **फलमंथूणि** बतरातिचुण्णाणि । **बीयमंथूणि** बहुबीयाणि उंबरादीणि । **बिभेलगं** भूतरुक्खफलं, तस्समाणजातीतं हरिडगाति वा । **[ पियालं ]** पियालरुक्खफलं वा । सव्वेसिं पि **आमगं परिवज्जए** ॥ २२ ॥

---

१ **°मणस्सि°** खं १ जे० शु० हाटी० ॥ २ **नीमं** अचू० विना ॥ ३ "तथा 'कोलं' बदरम्, अस्विन्नं' वह्न्युदकयोगेनानापादितविकारान्तरम् ।" **हारि० वृत्तौ** ॥ ४ 'वेणुकं' वंशकरिल्लं" इति **हारि० वृत्तौ** । [ "**वेलुयं बिल्लं,** ] **अण्णे** पुण भणंति—वंसकरिल्लो **वेलुयं**" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ५ "**चाउलं पिट्ठं** भट्ठं ( ? लोट्टं ) भण्णइ, तमपरिणतधण्णं सचित्तं भवति । सुद्धमुदयं **वियडं** भण्णइ । **तत्तनिव्वुडं** नाम जं तत्तं समाणं पुणो सीयलीभूयं तं कालंतरेण सच्चित्तीभवति त्ति न पडिगाहेयव्वं । अहवा **तत्तनिव्वुडं** जं तत्तं न ताव डंडो उववत्तइ तं तत्तनिव्वुडं भण्णइ ।" इति **वृद्धविवरणे** । "तान्दुलं पिष्टं लोट्टमित्यर्थः । 'विकटं वा' शुद्धोदकम् । तथा 'तप्तनिर्वृतं' क्वथितं सत् शीतीभूतम् । 'तप्तानिर्वृतं वा' अप्रवृत्तत्रिदण्डम् ।" इति **हारि० वृत्तौ** ॥ ६ **माउलुंगं** खं २ वृद्ध० । **माउलंगं** खं ४ जे० शु० ॥ ७ **°लगत्ति°** खं १-२-३-४ शु० ॥ ८ **आमं अम°** अचू० वृद्ध० विना ॥ ९ "**मूलओ** सपत्त-पलासो । **मूलकत्तिया** मूलकंदचित्तलिया भण्णइ ।" इति **वृद्धविवरणे** । "मूलकं' सपत्रजालकम् । 'मूलकर्त्तिकां' मूलकन्दचक्कलिम् ।" इति **हारि० वृत्तौ** ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगिंदियजीवसरीरनिप्फण्ण एव पाएण आहारो, फलमंथु-पिट्ठादीण य पडिसेहो कतो, किं पुण गेण्हियव्वं ? ति विधिमुहमिदमारब्भते—

२२१. [1]समुयाणं चरे भिक्खू कुलमुच्चावयं सदा ।

णीयं कुलमतिक्कम्म [2]उस्सडं णाभिधारए[3] ॥ २३ ॥

२२१. **समुयाणं चरे भिक्खू०** सिलोगो । समुयाणीयंति–समाहरिज्जंति तदत्थं चाउलसाकतो रसादीणि तदुपसाधणाणीति अण्णमेव **समुदाणं चरे** गच्छेदिति । अहवा पुव्वभणितमुग्गमुप्पायणेसणासुद्धमण्णं समुदाणीयं चरे **समुदाणं चरे, भिक्खू** वण्णितो । **कुलमुच्चावयं** उच्चावयं अणेगविधं हीण-मज्झिमाऽहिगमपडिकुट्ठाति, तं चरंतो **णीयं कुलमतिक्कम्म उस्सडं णाभिधारए, णीयं** ऊणं, **उस्सडं** उस्सितं । तं पुण जाति-सार-पक्ख-समुस्सएहिं णीयमुस्सडं वा । जातितो नाम एगमुस्सडं णो सारयो, सारयो णाम नो जातितो चउभंगो, एवं सेसेसु वि । 'किं एतेहिं रंघडकुलेहिं ? इस्सरकुलेहिं मिट्ठं लहुं वा लभीहामि' त्ति एतेणाभिप्पायेण णातिक्कमे ण पाहारणाणि करेज्ज । एत्थ दोसा–ते णीयकुले 'अभिभवति अम्हे' त्ति पदोसमावज्जेज्जा, एतेसिं 'जातिगव्वित' त्ति धीयारातिजातिवायोववूहणं । तम्हा **णीयं अतिक्कम्म** बोलेतुं **उस्सियं णाभिधारए,** ॥ २३ ॥ एवं [4]णीतेसु अलाभेण अविसण्णो उस्सितेसु अलोलुओ—

२२२. अदीणो वित्तिमेसेज्जा ण विसीएज्ज पंडिते ।

अमुच्छितो भोयणम्मि[5] मातण्णो[6] एसणारते ॥ २४ ॥

२२२. **अदीणो वित्ति०** सिलोगो । **अदीणो** अदुम्मणो **वित्तिमेसेज्जा वित्तिं** सरीरधारणं **एसेज्जा** मग्गेज्जा । **ण विसीएज्ज** विसायं ण गंतव्वं, एवं बहूणि घराणि अतिक्कम्म णत्थि भिक्खा, अहो ! किलेसो । **पंडिते** इति जो एतमधियासेति स पण्डितः । मुच्छित इव मुच्छितो, जधा मुच्छावसगतो णट्ठचित्तो एवं [7]अण्णपाणगेहीते णट्ठचित्तो, ण तहा भवियव्वं ति **अमुच्छितो । भोयणम्मि मातण्णो** मात्रा–परिमाणं तं जाणतीति **मातण्णो,** णातूणं ओमोयरियाकरणमा( ? णं नाऽऽ )णेति अधिगं वा जं उज्झितव्वं । **एसणाए रते** ण दीणो [ण] विसण्णो ण मुच्छितो एसणं पेल्लेति ॥ २४ ॥

दीणता-विसाय-मुच्छाओ इमेण आलंबणेण अलब्भमाणे वि ण कायव्वाओ । जहा—

२२३. बहुं परघरे अत्थि विविधं खाइम-साइमं ।

ण तत्थ पंडितो कुप्पे इच्छा देज्ज परो ण वा ॥ २५ ॥

२२३. **बहुं परघरे अत्थि०** सिलोगो । **बहुं** प्रभूतं **परस्स घरे** ण मम **अत्थि** विज्जए **विविधं** अणेगागारं असणादि । एतं महग्घतरमिति विसेसिज्जति–**खाइम-साइमं । ण तत्थ पंडितो कुप्पे, ण** इति पडिसेहे, **तत्थेति** आधारसत्तमी, तम्मि खाइम-साइमे अलब्भमाण इति वाक्यशेषः, **पंडितो** एतस्स अत्थस्स विजाणओ, पंडिएणं तम्मि अलब्भमाणे ण कुप्पियव्वं । किं कारणं ? **इच्छा** अभिप्रायो कयाति तस्स अभिप्पायो 'देमि अणुग्गहत्थं' एताए इच्छाए **देज्ज, परो** इति [8]अप्पाणवतिरित्तो । सो 'किं एतेसिं दिण्णेणं ?' ति एताए **इच्छाए ण वा** देज्ज ॥ २५ ॥ ण केवलं मासंसुल (?) महग्घदव्वस्स खाइम-साइमस्स अलाभे ण कुप्पितव्वं, किं तर्हि—

---

१ **समुदाणं** खं ३ वृद्ध० ॥ २ **ऊसढं** अचू० विना । **उस्सियं** अचूपा० ॥ ३ °**धावए** खं ३ हाटी० ॥ ४ नीचेषु ॥ ५ °**णम्मी मा**° खं १–३ ॥ ६ **मायन्ने** खं १–२–३–४ जे० शु० ॥ ७ अन्न-पानगृद्ध्या ॥ ८ आत्मव्यतिरिक्तः ॥

Jain Education International  For Private & Personal Use Only  www.jainelibrary.org

२२४. सयणाऽऽसण वत्थं वा भत्त-पाणं व संजते ।

अदें[2]तस्स ण कुप्पेज्जा पच्चक्खे वि[1] य दीसतो ॥ २६ ॥

२२४. **सयणाऽऽसण वत्थं वा०** सिलोगो । **सयणं** संथारगादि, **आसणं** पीढकादि, **वत्थं** अणेगागारमुवगरणं । **वासद्दो** अलाबुपात्रादिविकप्पणे । **भत्त-पाणं व भत्तं** ओदणादि **पाणं** मुद्दियापाणगादि । **वा**-सद्दस्स ह्रस्सता उत्ता । अत्थो पुण से अणंतरसिलोगे खाइम-साइममुपदिट्ठं, इह भत्तं पाणमवि चउव्विहाहारतदुपकारभेअेज्जोवसंगहे । **वासद्दो** अकोधो संजमसारो त्ति संजताभिधाणं, एवं **संजते** भवति । इच्छा देज्ज परो ण वि त्ति अधिकृतं, अतो **अदेंतस्स न कुप्पेज्जा** सव्वं पि एतम्मि परिभुज्जमाणे त परिभुज्जमाणे परिभयिज्जमाणे **पच्चक्खे वि य दीसतो** अपिसद्द-चसद्दा पच्चक्खकडुगपीडाकारितिविसेसे, **दीसओ** दीसमाणस्स अदाणे दायगस्स न कुप्पेज्जा ॥ २६ ॥ "**अदेंतस्स न कुप्पेज्ज**" त्ति कोहो निवारितो । इह तु लोभो कोहफलं च परुसवयणं णिवारणीयमिति—

२२५. इत्थियं पुरिसं वा वि डहरं वा महल्लगं ।

वंदमाणं[3] ण जाएज्जा णो[4] य णं फरुसं वदे ॥ २७ ॥

२२५. **इत्थियं पुरिसं वा वि०** सिलोगो । एते दायगविकप्पा **इत्थी पुरिसो वा**, एक्केक्को **डहरगो महल्लो वा** । एतेसिं विकप्पाणं अण्णयरं **वंदमाणं ण जाएज्जा** जहा अहं वंदितो एतेण, जायामि णं, भद्दो अवस्स दाहिति । सो वंदियमेत्तेण जातिओ चिंतेज्ज भणेज्ज वा—चोरते वंदिहि त्ति एणातियं(?)एवमादि दोसा । अवस्सपओयणे वंदितो अण्णत्थ गंतूण सवक्खेवमागतो जाएज्जा । एवं वंदिते वा जातिएण पडिसेहिओ अप्पे वा दिण्णे [ **णो य णं** तं दायगं ] 'हीणं ते वंदणगं, वंदणगसारओ' णो एवमादि **फरुसं वदेज्जा** । **पाढविसेसो वा "वंदमाणो न जाएज्जा"** वंदमाणो विव वंदमाणो सिरकंप-भट्टि-सामिएवमादिपरियंदणेहि ॥ २७ ॥

इत्थि-पुरिस-डहर-महल्लविकप्पे तरुणित्थीसु विसेसतो दोसा इति दरिसिज्जंति—वंदणे जायण-फरुसवयणं णिवारियं । इदं तु अवंदणे वंदणे वा कोव-समुक्कसविणयणत्थं भण्णति—

२२६. जे ण वंदे ण से कुप्पे वंदितो ण समुक्कसे ।

एवमण्णेसमाणस्स सामण्णमणुचिट्ठति[5] ॥ २८ ॥

२२६. **जे ण वंदे ण से०** सिलोगो । **जो ण वंदति** तस्सुवरिं 'गव्वितो दुरप्प' त्ति **ण कुप्पितव्वं** । **वंदितो** वा रायमादीहिं 'को मए तुल्लो?' त्ति अप्पाणं **ण समुक्कसेज्जा** । **एवमण्णेसमाणस्स**, एवं अदेंतस्स अकोवेण, वंदमाणे अजायणेण, [ जातिएण पडिसेधिते ] फरुसवयणपरिहरणेण, अवंदितस्स कोधेण, वंदितस्स असमुक्करिसेण, एतेण अणेगविहेण प्रकारेण पुव्वरिसीहि एसियं अणुएसमाणस्स **सामण्णं** समणभावो तं **अणुचिट्ठति**, जधा पुव्वरिसिसु तमविकलमवत्थितं तहा एवं अण्णेसमाणस्स चिट्ठती ॥ २८ ॥

वंदमाणातिजायणं अणणुण्णातमिति परपक्खतेणिया । सपक्खतेणियापडिसेहणत्थं भण्णति—

२२७. सिया एगतियो[6] लद्धुं लोभेण विणिगूहंती[7] ।

मा मेतं दाइयं संतं दट्ठूणं सयमाइए[8] ॥ २९ ॥

१ वि धरीसओ खं ३ । वि य दीसते हाटी० ॥ २ मेदज्ञ इत्यर्थः ॥ ३ वंदमाणो ण अचूपा० वृद्धपा० हाटीपा० ॥ ४ नो अण्णं फ° खं ३-४ वृद्ध० । नो य ण्णं फ° जे० ॥ ५ °चिट्ठती जे० । °चिट्ठए खं १ । °चिट्ठइ खं ३-४ ॥ ६ एगईओ खं २-३ शु० । एगइओ खं १-४ जे० ॥ ७ °हए जे० । °हइ खं १-४ । °हई खं २-३ शु० ॥ ८ °मायए खं १-२ जे० शु० । °माइए खं ३-४ वृद्ध० । माईए जे० ॥

२२७. **सिया एगतिओ लद्धुं॰** सिलोगो । **सिया** कयाति **एगतिओ** एगतरो कश्चिदेव मणुण्णं भोयणं लद्धुं **लोभेण विणिगूहती** तम्मि गिद्ध-मुच्छितो **विविधं** अहिकं [ **णिगूहति** ] संवरेति अप्पसागारियं करेति । किं कारणं? **मा मेतं** मएतं विसिट्ठं **दाइयं** दरिसियं **संतं** सोभणं **दट्ठूण** आयरियो अण्णो वि कोति **सयमाइए** अप्पणा आहारेज्जा, [1]अधमेव एतं पढमालिआमिसेण मंडलीए वा ततो थाणातो उद्धरंतो आहारेहामि ॥ २९ ॥ तस्स एवं विणिगूहमाणस्स इमो लोभविपाको । तं जहा—

२२८. [2]अत्तट्ठगुरुओ लुद्धो बहुं पावं पकुव्वति ।
दुत्तोसतो [3]य भवति नेव्वाणं च [4]ण लब्भति ॥ ३० ॥

२२८. **अत्तट्ठगुरुओ लुद्धो॰** सिलोगो । अप्पणीयो अत्थो **अत्तट्ठो**, सो जस्स गुरुओ सो **अत्तट्ठगुरुओ** । **अत्थो** प्रयोजणं । **लुद्धो** लोभाभिभूतो । सो एवंगतो सपक्खवंचणपरो **बहुं पावं** पभूतं पातयतीति पावं तं बहुं प्रकरिसेण कुव्वती **प्रकुर्वती**, एस परलोगावातो । इहलोए वि **दुत्तोसतो य भवति** मणुण्णाहारसमुतियो जेण वा तेण वा भिक्खयरलाभेण **दुत्तोसतो भवति**, [ **नेव्वाणं च ण लब्भति** ] अपरितुट्ठस्स कओ नेव्वाणं?, अहवा परलोगपच्चवातोऽयं–सो अपरितुट्ठो धितिविरहितो सो मोक्खं **ण लभति** ॥३०॥ एस दिट्ठो अदिट्ठमवहरति । अयमण्णो सपक्खतेणियाविसेसो जो अदिट्ठो दिट्ठमपहरति तं पडुच्च भणति—

२२९. सिया एगतियो लद्धुं विविधं पाण-भोयणं ।
भद्दगं भद्दगं भोच्चा [5]विवण्णं विरसमाहरे ॥ ३१ ॥

२२९. **सिया एगतियो लद्धुं॰** सिलोगो । **सिया** कयाइ कोति भिक्खायरियागत एव लभिऊण **विविधं** अणेगागारं **पाण-भोयणं भद्दगं** सोभणं तं भुंजिऊण । **भद्दगं भद्दगमिति** वीप्सा । जं जं केणति गुणेण उववेतं तं सव्वं । अंबक्खलगाति **विवण्णं**, दोसीण-णिल्लोणाति वा **विरसं** तमाहरति ॥ ३१ ॥

एवं पुण जो मंडलीतो सो लोभेण व सपक्खपायणत्थं, इतरो कोऽहं?—

२३०. जाणंतु [6]ता मए समणा आयतट्ठी अयं मुणी ।
संतुट्ठो सेवती [7]पंतं लूहवित्ती सुतोसतो ॥ ३२ ॥

२३०. **जाणंतु ता इमे ( मए ) समणा॰** सिलोगो । **जाणंतु ता मए समणा**–जधा एस साधू [ **आयतट्ठी** ] आगामिणि काले हितमायतीहितं, आततिहितेण अत्थी आय[य]त्थाभिलासी । **मुणी य** जती भट्टारओ । **संतुट्ठो** जेण तेण चलति, **अंतपंताणि सेवती, लूहवित्तीए** जावेति **सुतोसतो** किंचि लभिऊणं अलभितूण वा तुस्सति ॥ ३२ ॥ आउट्टाविएसु जं फलं तदिदमुण्णीयते—

२३१. [8]पूयणट्ठी [9]जसोगामी माण-सम्माणकामए ।
बहुं पसवती पावं मायासल्लं च कुव्वती ॥ ३३ ॥

२३१. **पूयणट्ठी जसोगामी॰** सिलोगो । पूयणेण अत्थी **पूयणत्थी** । **जसोगामी** जसो गच्छति त्ति तदत्थं पवत्तती । **माण-सम्माणकामए** माणं सम्माणं च कामेति माण-सम्माणकामए । **माणो** अब्भुट्ठाणादीहिं गव्वकरणं, **सम्माणो** वत्थातीहिं, एगदेसेण वा **माणो**, सव्वगतो परिसंगो **सम्माणो** । सो एवमभिप्पायो बहुं

---

१ अहमेव ॥ २ **अत्तट्ठागुरुओ** खं २-३ शु० वृद्ध० । **अत्तट्ठागरुओ** खं १-४ ॥ ३ **य से होति** अचू० वृद्ध० हाटी० विना ॥ ४ **ण गच्छति** अचू० विना ॥ ५ **विउण्णं** खं ३ ॥ ६ **ता इमे** अचू० विना ॥ ७ **एतं** जे० ॥ ८ **पूयणट्ठा** अचू० वृद्ध० विना ॥ ९ **जसोकामी** अचू० विना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**पसवती पावं बहुं** पभूतं **पसवती** जणयती [**पावं**], कम्मपसूईए **मायासल्लं सल्लं** आउधं देर्धलग्गं, चसद्दो दोससमुच्चये, मायैव तस्स सल्लं भवति, तं **कुव्वती** मायासल्लं करेति ॥ ३३ ॥

सपक्खे तेणिया भणिता । इमा पुण स-परपक्खगता—

२३२. सुरं वा मेरगं वा वि अण्णं वा मज्जगं रसं ।
स[2]सक्खो ण पिबे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो ॥ ३४ ॥

२३२. **सुरं वा मेरगं वा वि०** सिलोगो । **सुरा** पिट्ठकम्मसमाहारो । **मेरगो** पसण्णाविसेसो । पधाण इति सुरा-मेरगाभिधाणं । **अण्णं वा** मधु-सीधुविकप्पसेसं **मज्जगं रसं** मदणीयं । **ससक्खो** सक्खीभूतेण अप्पणा सचेतण इति, अहवा जया गिलाणकज्जे त[3]ता **ससक्खो ण पिबे** जणसक्खिगमित्यर्थः । किं पुण ससक्खं ? **जसं सारक्खमप्पणो, जसो** स[4]कमोतं सारक्खंतो, लोगे वा जो जसो तं सारक्खंतो अप्पणो अप्पणा वा जसं सारक्खंतो ससक्खं ण पिबेति ॥ ३४ ॥ अप्पसागारियं मा विणा कज्जेण पिबेज्ज त्ति भण्णति—

२३३. पियातेगतियो तेणो ण मे [5]कोति वि[6]याणति ।
तस्स[7] पस्सह दो[8]सादिं निय[9]डिं च सुणेह मे ॥ ३५ ॥

२३३. **पियातेगतिओ तेणो०** सिलोगो । **पिबति** आजीवति **एगतिओ** कोति रसगिद्धो **तेणो** चोरियं **ण मे कोति विजाणति** एवमहं णिगूढं करेमि जधा ण कोति मए जाणति । **तस्स** एवंविधस्स तेणस्स गुरवो सीसे आमंतेऊण भणंति—**पस्सह** इहलोय-पारलोइयाइं **दोसादिं** । जहा य सो णियडिमायरति दुक्खं, **नियडी** माया तं सुणेह भण्णमाणिं ॥ ३५ ॥

"**तस्स पस्सध दोसाइं**" ति जं भणितं तेसिं दोसाणं पाउब्भावणत्थमिदं भण्णति—

२३४. वड्ढती [10]सोंडिया तस्स माया मोसं च भिक्खुणो ।
अजसो य [11]अणेव्वाणी सततं च असाधुता ॥ ३६ ॥

२३४. **वड्ढती सोंडिया तस्स०** सिलोगो । सुरादिसु संगो **सोंडिया** सा **वड्ढती** पाणवसणं । तस्स तेणियाए पिबंतस्स **माया** णिगूढं पावमिति **मोसो** पुच्छियस्स वऽवलावो **भिक्खुणो** पव्वतियस्स **अजसो य** सपक्ख-परपक्खे 'एस वेयडितो' त्ति । **अणेव्वाणी** तं अलभमाणस्स अतुट्ठी, मोक्खाभावो वा **अणेव्वाणी** । **सततं च** सव्वकालं असाधुभावो **असाधुता** ॥ ३६ ॥

सव्वमवि एतं वड्ढतीति आदिदीवितं । सो तेण वसणेण इहलोए चेव—

२३५. णिच्चुव्विग्गो जधा तेणो [12]अप्पकम्मेहिं [13]दुम्मती ।
तारिसो मरणंते वि [14]णं आराहेति संवरं ॥ ३७ ॥

२३५. **णिच्चुव्विग्गो जधा तेणो०** सिलोगो । **णिच्चं उव्विग्गो** भीतो, निदरिसणं—जहा **तेणो** रायपुरिसादीणं णिच्चभीतो, एवं सो वि [ अप्पकम्मेहिं ] अप्पणो दुच्चरितेहिं वसणाभिभूतो । कुच्छितमती **दुम्मती** । **तारिसो** अणेगग्गी **मरणंते वि** मरणमेव अंतो तम्मि वि **ण आराहेति संवरं** पच्चक्खाणं णमोक्कारमवि ॥ ३७ ॥

सयमवि तस्स दोसपसंगो—

---

१ देहलग्गम् ॥ २ **ससक्खं** अचू० विना ॥ ३ तदा ॥ ४ स्वकर्मोजः ॥ ५ **को वि वि**° खं २ ॥ ६ **विजाणयि** वृद्ध० ॥ ७ **तस्स सुणसु दो**° वृद्ध० ॥ ८ **दोसाइं** अचू० विना ॥ ९ **नियडं** खं ४ ॥ १० **सुंडिया** खं १-२-४ ॥ ११ **अनिव्वाणं** खं २-४ शु० हाटी० ॥ १२ **अस्तक**° अचू० विना ॥ १३ **दुम्मइ** खं ३-४ ॥ १४ **नाराहेइ** अचू० विना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३६. आयरिये नाऽऽराधेति समणे यावि तारिसो[1] ।
गिहत्था वि[2] णं गरहंति जेण[3] जाणंति तारिसं ॥ ३८ ॥

२३६. **आयरिये नाऽऽराधेति०** सिलोगो । आयरियाराधणं परलोगाराहणाए मूलं, सो एवंगुणो पमाती **आयरिये णाराहेति**, अण्णे **वि समणे**, **तारिसो** मत्तवालओ । ण केवलं गुरु-साधूण अवमतो, **गिहत्था वि णं गरहंति** 'मज्जव्वसणी समणओ' त्ति णिंदंति, **जेण** तहाभूतं **जाणंति** ॥ ३८ ॥

एवं दोसप्पसंगविरहितो पुण—

२३७. तवं कुव्वति मेधावी पणीए[5] वज्जए रसे ।
मज्जप्पमातविरतो तवस्सी अतिउक्कसो ॥ ३९ ॥

२३७. **तवं कुव्वति मेधावी०** सिलोगो। **तवो** बारसविधो तं करेति। **मेधावी**[6] दुविहो-[मेरामेधावी य] गहणमेधावी । मेराधावणेण य इह मेरामेधावी अधिकृतः । **पणीए वज्जए रसे, पणीए** पधाणे विगतीमादीते वज्जए । रसेसु जिब्भाडंडप्पसंगो केवलो, वियडे पुण सो य पमादत्थाणं च, अतो **मज्ज-पमातविरतो,** सो य **तवस्सी** । मतेण य एयं पि संभवतीति भण्णति–**अतिउक्कसो** णं अहमिति गव्वेण तवस्सित्तणेण अत्तुक्कासियो ॥ ३९ ॥ पाणाभिलासे **"बहुती सोंडिय"** [ सुत्तं २३४ ] त्ति एवमादी दोसपसंगो भणितो । तवस्सिणो गुणपरंपरपरूवणत्थमिदं भण्णति—

२३८. तस्स पस्सध[7] कल्लाणं अणेगसाधुपूतियं[8] ।
विपुलं[9]अट्ठसंजुत्तं कित्तयिस्सं सुणेह मे ॥ ४० ॥

२३८. **तस्स पस्सध कल्लाणं०** सिलोगो । **तस्सेति** तस्स तवस्सिणो पणितरस-मज्ज-पमादवज्जतस्स **पस्सध** त्ति गुरुवो आमंतेंति । पस्सणं णयणगतो वावारो सव्वगतावधारणे वि पयुज्जति, मनसा पश्यति । तस्स पश्येतेति **कल्लाणं** वृद्धिं अणेगेहिं **साधूहिं पूतियं** पसंसियं इह-परलोगहितं । **विपुलंअट्ठसंजुत्तं विपुलेण** विस्थिण्णेण **अत्थेण संजुत्तं** अक्खयेण णेव्वाणत्थेण । तमिदाणिं सविस्थरं **कित्तयिस्सं सुणेह मे** ॥ ४० ॥

तक्कित्तणमिदमारब्भते—

२३९. एवं तु[10] गुणप्पेधी अगुणाणं[11] विवज्जए ।
तारिसो मरणंते वि आराहेति संवरं ॥ ४१ ॥

२३९. **एवं तु गुणप्पेधी०** सिलोगो । **एवं** एतेण प्रकारेण मज्जपमायवेरमणातिणा, **तु**सद्दो हेतौ, पणीयरसपरिहरणातिहेतुणा **गुणप्पेही गुणा** सीलव्वयादयो ते **पीहेति** स्पृहयति सो **गुणप्पेही** । **अगुणा** [कु]-

---

१ **तारिसे** खं ४ ॥ २ **व** खं २ ॥ ३ **जेणं** खं ३ ॥ ४ २३६ सूत्रश्लोकानन्तरं सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० च एकः सूत्रश्लोकोऽधिको वर्तते—

**एवं तु अगुणप्पेही गुणाणं च विवज्जए । तारिसो मरणंते वि णाऽऽराहेइ संवरं ॥**

५ **पणीयं वज्जए रसं** अचू० वृद्ध० विना ॥ ६ "मेधावी दुविहो, तं०–गंथमेधावी मेरामेधावी य । तत्थ जो महंतं गंथं अहिज्जति सो गंथमेधावी । मेरामेधावी णाम मेरा मज्जाया भण्णति, तीए मेराए धावति त्ति मेरामेधावी ।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ७ **पासह** क° शुपा० ॥ ८ °**पूइयं** खं १–२–३ जे० शु० । °**पूजियं** वृद्ध० । °**पूयणं** खं ४ ॥ ९ **विपुलं** इत्यत्र अनुस्वारोऽलाक्षणिकः, सामासिकपदत्वात् । **वृद्धविवरणकृता**ऽपि इत्थमेव व्याख्यातमस्ति । श्री**हरिभद्र**पादैस्तु भिन्नपदत्वेन व्याख्यातमस्ति ॥ १० °**तु स गु**° हाटी० ॥ ११ °**णाणं च वज्जओ** खं १ । °**णाणं तु विवज्जओ** खं ३ । °**णाणं च विवज्जओ** खं २–४ शु० हाटी० । **अगुणाऽणविवज्जए** अचूपा० वृपा० ( दृश्यतां पत्रं १३६ टि० १ ) ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीलादयो तेसिं विवज्जए । [1]अधवा–अगुणा एव [अणं] रिणं तं विवज्जेति "अगुणाऽणविवज्जए"। तारिसो मरणंते वि, तारिसो पणितरसगेहीविरहितो अप्पमाती आराहेति संवरं ॥ ४१ ॥

गुर्वाराहणाहीणं च संवराराहणं, आयरियाराहणेण तमणुमीयति त्ति भण्णति—

२४०. आयरिए आराहेति समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि णं [2]पूयेंति जेणं जाणंति तारिसं ॥ ४२ ॥

२४०. **आयरिए आराहेति॰** सिलोगो । आयरियव्वा सुस्सूसणातिणेति **आयरिया**, ते **आराहेति** पसादयति । सेसे **समणे यावि तारिसो** । **गिहत्था वि णं पूयेंति** अहो ! भट्टारओ अप्पमत्तो । **जेणं जाणंति तारिसं** ॥ ४२ ॥ भत्त-पाण-मज्ज-तेणदोसजातमुपदिट्ठं । इदं पुण ततो कट्ठतरं तेणत्तणं ति भण्णति—

२४१. तवतेणे वतितेणे [3]रूवतेणे य जे णरे ।
आयार-भावतेणे य कुव्वती देवकिब्बिसं ॥ ४३ ॥

२४१. **तवतेणे वइतेणे॰** सिलोगो । **तवोतेणे** जधा–कोति सब्भावदुब्बलसरीरो 'तुमं सो खमओ ?' त्ति पुच्छितो पूयणत्थं भणति–आमं, तुसिणीओ वा अच्छति, अणुमतिनिमित्तं वा भणति–साधवो चेव खमगा भवंति । **वतितेणो** तधेव–कोति कस्सति धम्मकहिकस्स वातिणो वा सरिसो पुच्छितो जधा पढमो तहेव करेति । **रूवतेणो**–कोति कस्सति रायपुत्तपव्वतियस्स सरिसो 'तुमं सो ?' त्ति पुच्छिओ उवेक्खति, 'आमं' ति वा भणति, को वा पुच्छति ? त्ति । **आयारतेणे** जधा **आवस्सए मधुराकोंटइल्लगा** । **भावतेणो** माणावलेवेण सुत्तमत्थं वा अब्भुवगमं न पुच्छति, वक्खाणेंतस्स वा ववहितो गुणेंतस्स वा गेण्हति, उवाएण वा पुच्छति । सो एवं तवादितेणो इहलोए धट्ठो त्ति अजसं, परलोए य पुणो **कुवति देवकिब्बिसं** ॥ ४३ ॥ "देवकिब्बिस"मिति देवसद्देण कस्सति तत्थ विस्सबुद्धी भवेज्जा अतो किब्बिसियदेवदुगुंछणत्थमिदं भण्णति—

२४२. लद्धूण वि देवत्तं उववण्णो देवकिब्बिसे ।
[4]तत्थावि से ण [5]जाणाति किं मे किच्चा इमं फलं ? ॥ ४४ ॥

२४२. **लद्धूण वि देवत्तं॰** सिलोगो । **लद्धूण वि देवत्तं** सति वि देवभावे **देवकिब्बिसे उववण्णो** । **तत्थावि से ण जाणाति, तत्थ** सो किब्बिएसु देवेसु उववण्णो 'किं मे हुयं वा जट्ठं वा जं देवत्तणं लद्धं ? जति वा किं मे दुक्कडं कतं जं अहं सति देवभावे [6]अंतत्थो जातो ?' ॥ ४४ ॥

देवभावतो परतो वि अणस्सासदोसदरिसणत्थं भण्णति—

२४३. [7]तत्तो वि से [8]चइत्ताणं [9]लब्भिहिति एल[10]मूयतं ।
णरगं तिरिक्खजोणिं वा बोधी जत्थ सुदुल्लहा ॥ ४५ ॥

२४३. **तत्तो वि से॰** सिलोगो । **ततो वि** अंतत्थदेवलोगातो **से** इति तवोतेणाति अभिसंबज्झति, **चइत्ताणं** देवभावचुतो **लब्भिहिति** अभिलिति (?) मणुस्सेसु वि **एलमूयतं** एलओ विव बोब्बडभासी, तस्स

१ "**नागज्जुणिया** तु एवं पढंति—"**एवं तु गुणप्पेही अगुणाऽणविवज्जए**" अगुणा एव अणं अगुणाणं, अणं ति वा रिणं ति वा एगट्ठा, तं च अगुणरिणं अकुव्वंतो ।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ २ **पूयंति** खं २–४ शु॰ । **पूएंति** खं ३ । **पूइंति** खं १ जे॰ ॥ ३ **रूयतेणे** जे॰ ॥ ४ **तत्थ वि** खं ३ ॥ ५ **याणाइ** खं १–२–३–४ जे॰ शु॰ ॥ ६ अन्तस्थः अन्त्यजः हीनजातीयः ॥ ७ **ततो** अचू॰ विना ॥ ८ **चयित्ता°** खं ३ । **चतित्ता°** वृद्ध॰ ॥ ९ **लब्भिही** खं २ जे॰ शु॰ । **लब्भही** खं १ । **लब्भई** खं ३–४ ॥ १० **मूयगं°** खं १–२–३–४ जे॰ शु॰ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अतिमूकत्तणेण कतो बोधिलाभो ? । अहवा जत्थ अचंतमबोहिलाभो तं लभति **णरगं तिरिक्खजोणिं वा** ॥४५॥

दरिसितपच्चवातस्स दुच्चरितनियत्तणमुपदिस्सति त्ति भण्णति—

**२४४. एतं च दोसं दट्ठूण णीतपुत्तेण भासितं ।**
**अणुमायं पि मेधावी मीतामोसं विवज्जए ॥ ४६ ॥**

२४४. **एतं च दोसं०** सिलोगो । एतमिति अणंतरामिहितं पच्चक्खमुपदंसेति, चसद्देण एवंपधाणा अण्णे य अबोहिलाभाति, दूसयतीति **दोसो**,[ तं ] **दट्ठूण** जाणित्ता **णातपुत्तेण** भगवता **वद्धमाणसामिणा**, एवं गौरवमुप्पादणत्थं भण्णति । भगवतो वयणमिति दोसविणियत्तणं सुहं करेहिति । **भासितं** भणितं । अतो **अणुमायं** पि अणुमात्रं थोवमवि अप्पं पि **मेधावी** जाणतो **माता** सढता **मोसं** अलियं तं **विवज्जए** ॥ ४६ ॥

मायामोसपच्चवातविवज्जणमुपदिट्ठं । अधुणा समत्तमज्झयणमुपसंहरंतेहिं भण्णति—

**२४५. सिक्खिऊण भिक्खेसणसोधी, संजताण बुद्धाण सगासे ।**
**तत्थ भिक्खू सुप्पणिहितिंदिए, तिव्वलज्ज गुणवं विहरेज्जासि ॥ ४७ ॥ त्ति बेमि ॥**

**॥ पिंडेसणाए बीओ उद्देसओ समत्तो । पिंडेसणज्झयणं सम्मत्तं ॥ ५ ॥**

२४५. **सिक्खिऊण भिक्खेसण०** वृत्तम् । **सिक्खिऊण** जाणित्ता, भेक्खस्स एसणा **भेक्खेसणा**, भेक्खेसणाए **सोधी** उग्गमुप्पायणेसणादीहिं **भेक्खेसणसोधी**, तं सिक्खिऊण **सं** एकीभावेण **जताण संजताण**, विसेसणमेव **बुद्धाण**, ते य संजता **बुद्धा** तित्थकरा एतेसिं **सगासे** समीवे, तदागमादित्युक्तं भवति । **तत्थ भिक्खू सुप्पणिहितिंदिए**, **तत्थे**ति तीए भिक्खेसणासोधीए **भिक्खू** भिक्खणसीलो **सुप्पणिहितेंदिए** भेक्खेसणासोधीए सव्वेंदिएहिं उवउत्ते । अवि य—

उवयुञ्जिऊण पुव्विं तल्लेसो जति करेति परिणाइं । सोतेण चक्खुणा घाणतो य जीहाए फासेण ॥ १ ॥

**तिव्वलज्ज** तिव्वं अत्यर्थः **लज्जा** संजम एव जस्स स भवति **तिव्वलज्जः** । गुणा जस्स संति सो **गुणवं** विदितभेक्खेसणसोधीओ तिव्वलज्जो गुणवं एवं **विहरेज्जासि** पवत्तेज्जासि ॥ ४७ ॥

**त्ति बेमि** सद्दो य जधा पुव्वं ॥ णया—

**णायम्मि०** गाथा । **सव्वेसिं पि०** गाधा ॥ **पिंडेसणज्झयणे**—

**भेक्खाणिग्गमणविधी गवेस-गह-भोयणेसणविकप्पा ।**
**पिंडेसण पिंडत्था विरती पाणातिवाते य ॥ १ ॥**

**॥ पिंडेसणाचुण्णी समत्ता ॥**

---

१ **नायपु°** अचू० खं ४ विना । **नाइपु°** खं ४ ॥  २ **मायामोसं** अचू० विना ॥  ३ **°सोही** खं १ । **°सोहिं** अचू० खं १ विना ॥ ४ **भिक्खु** खं १-२ जे० ॥  ५ **°लज्ज गु°** खं १-२ ॥ ६ एतदध्ययनसमाप्त्यनन्तरं खं ३ प्रतौ पिण्डैषणाध्ययनद्वितीयोद्देशकग्रन्थाग्रप्रतिपादिका एका गाथा वर्तते—

**इय एसो पिंडेसणबीओद्देसो चऽणुट्ठुमाणेण । अडयालीसुत्तेहिं गंथग्गेणं परिसमत्तो ॥ १ ॥**



Jain Education International  For Private & Personal Use Only  www.jainelibrary.org

६

## [ छट्ठं महइआयारकहज्झयणं अवरनाम धम्मत्थकामज्झयणं ]

धम्मे समाधितमायारगहितमहव्वयमडमाणं भिक्खनिमित्तं सुविधियं कोति कोऊहला धम्मसद्धाओ वा वदेज्ज—को तुब्भं धम्मो ? त्ति। तस्स पुण साधुणो **पिंडेसणज्झयण**विधियैमिदैमणुसरंतस्स "कधं वा ण पबंधेज्जासि"[सुत्तं २०६]त्ति जुत्तमभिधातुं—धम्मोवदेसकुसला अम्हं गुरवो उज्जाणे समोसरिया, अण्णत्थ वा जत्थ ते तमुवदिस्संति, सव्वमेव वा तमुज्जाणं जत्थ तव्विधा महाभागा सण्णिहिता। अह ते बिउँणजणियकोऊहला गुरुसमीवमागच्छंति, पुच्छंति य धम्मं राया रायमत्तादयो। मज्जाया—'सबुद्धीको य जण' इति महतिमायारकधामुपदिसंति सूरय इति। एतेणाभिसंबंधेण **महतिमायारकहज्झयण**मागतं। तस्स चत्तारि अणिओगद्दारा जधा **आवस्सए**। नामनिप्फण्णो **महतीआयारकहा**, अतो महंतं निक्खिवितव्वं, आयारो निक्खिवितव्वो, कधा निक्खिवितव्वा। एताणि तिण्णि वि महंतालावेण जधा **खुड्डियायारए**। किंच पुव्वभणितं ?—

**जैह चेव य उद्दिट्ठो आयारो सो अहीणमइरित्तो।**
**सा चेव य होइ कहा आयारकहाए महईए ॥ १ ॥ १४८ ॥**

**जैह चेव य०** गाधा। जधा पुव्वं ॥ १ ॥ १४८ ॥ सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेतव्वं **अणुओगद्दार**विधिणा। तं इमं—

२४६. नाण-दंसणसंपण्णं संजमे य तवे रयं।
गणिमागमसंपण्णं उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥

**२४६. नाण-दंसणसंपण्णं०** सिलोगो। **नाणं** पंचविहं मति-सुया-ऽवधि-मणपज्जव-केवलनामधेयं। तत्थ तं दोहिं वा मति-सुतेहिं, तिहिं वा मति-सुता-ऽवहीहिं अहवा मति-सुय-मणपज्जवेहिं, चतुहिं वा मति-सुता-ऽवहि-मणपज्जवेहिं, एक्केण वा केवलनाणेण संपण्णं, **दंसणेणं** खतिएण वा ३। **संजम-तवा** पुव्वभणिता, तेसु **रयं** एवंगुणसंपण्णं। गणो—समुदायो संघातो, सो जस्स अत्थि सो गणी, तं **गणिं आगमसंपण्णं आगमो** सुतमेव अतो तं चोद्दसपुव्विं एक्कारसंगसुयधरं वा। अणुण्णविओग्गहमित्थि-पसु-पंडगविवज्जिते उज्जाणम्मि समोसरियं। **"नाणदंसणसंपण्णं" "गणिं आगमसंपण्ण"**मिति य कहं ण पुणरुत्तं ? ति चोयणा। सूरयो भणंति—"णाण-दंसणसंपण्ण"मिति एतेण आतगतं विण्णाणमाहप्पं भण्णति, "गणी आगमसंपण्णं" एतेण परग्गाहणसामत्थसंपण्णं। "संपण्णं" इति सद्दपुणरुत्तमवि ण भवति, पढमे सयं संपण्णं, बितिए परसंघातगं, एयं समरूवता ॥१॥ तमेवमुववण्णितगुणं गणिं उज्जाणमुवगतं साधुसगासातो जणपरंपरेण वा सोतूण—

२४७. रायाणो रायमैत्ता य माहणा अदुव खत्तिया।
पुच्छंति णिहुयप्पाणो कैधं तुब्भं आयारगोयरो ? ॥ २ ॥

**२४७. रायाणो राय०** सिलोगो। **रायाणो** बद्धमकुडा। **रायमत्ता** अमच्च-सेणावतिपभितयो। **माहणा** बंभणा। **अदुव** अहवा **खत्तिया** राइण्णादयो। जेण रायाइणो एते तं गणिं **पुच्छंति** तिविहाए पज्जुवासणाए

१ **महल्लियायारकहज्झयणं** इत्यप्यस्याध्ययनस्याभिधानान्तरं वर्तते ॥ २ सुविहितम् ॥ ३ विहितम् ॥ ४ °**मिदमुसुस्सरंतस्स** मूलादर्शे ॥ ५ द्विगुणजनितकुतूहलाः ॥ ६ **जो पुव्विं उद्दिट्ठो** खं० पु० वी० हाटी० ॥ ७ "**जधा य०** गाहा कण्ठ्या" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ८ °**मच्चा य** अचू० विना ॥ ९ **कहं मे आ**° अचू० वृद्ध० विना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जुवासमाणा **णिहुयप्पाणो–कधं तुब्भं आयारगोयरो?**, आयारस्स आयारे वा गोयरो आयारगोयरो । गोयरो पुण विसयो ॥ २ ॥ एवं सविणयचोयणाणंतरमेव—

२४८. तेसिं सो णिहुतो[1] दंतो सव्वभूतसुहावहो ।
सिक्खाए सुसमाउत्तो आइक्खति[2] वियक्खणो ॥ ३ ॥

२४८. **तेसिं सो निहुओ०** सिलेगो । **तेसिं** रायादीणं **सो**[3] अधिकओ[4] गणी **णिहुतो** सुसमाहित-पाणि-पादो, **दंतो** इंदिय-नोइंदिएहिं, भूताइं–जीवा, सव्वभूताण सुहमावहति **सव्वभूतसुहावहो, सिक्खाए** दुविहाए वि [ **सुसमाउत्तो** ] सुट्ठु समाउत्तो **आइक्खति** कहयति **वियक्खणो** पंडितो ॥ ३ ॥

अह सो भगवं जहोववण्णियगुणो गणहरो ते रायायिगे धम्मस्सवणमुवगते निहुते तम्मुहाभिमुहे समामंतेमाणो भणति–सोम्ममुहा !,

२४९. हंदि[5] ! धम्मत्थकामाणं निग्गंथाण सुणेह मे ।
आयारगोयरं भीमं सगलं दुरहिट्ठयं[6] ॥ ४ ॥

२४९. **हंदि ! धम्मत्थकामाणं०** सिलेगो । हंदिसद्दो उवप्पदरिसणे । एवं उवप्पदरिसेति–जमहमितो परं आयारगोयरमुपदिसीहामि एतदुक्तं पडिवज्जह हियएण कम्मुणा[7] योववादेध । धम्मस्स अत्थं कामयंतीति **धम्मत्थकामा** तेसिं **निग्गंथाण सुणेह,** आमंतणमिदं रायादीणं, **मे** इति मम । **आयारगोयरो** भणितो तं, **भीममिति** भयाणगं कातराणं, **सगलं** अखंडं, **दुरहिट्ठयं** दुक्खं तमभिट्ठइ ति ॥

अक्खरत्थोववण्णणाणंतरं "धम्मत्थकामाणं" ति एतस्स वित्थरत्थो भण्णति–धम्मो अत्थो काम इति तिण्णि वि परूविज्जंति । धम्म इति दारं–तस्स चउव्विहो निक्खेवो जहा **दुमपुप्फियाए** । इह लोउत्तरो भण्णति । सो इमो—

**धम्मो बाविसतिविहो[8] अगारधम्मोऽणगारधम्मो य ।**
**पढमो य बारसविहो दसहा पुण बितियओ[9] होइ** ॥ २ ॥ १४९ ॥

**धम्मो बाविसतिविहो०** गाहा । लोउत्तरो भावधम्मो मुहेण **बाविसतिविहो** । सो विभज्जमाणो दुविहो भवति, तं०—**अगारधम्मो अणगारधम्मो य** । अगारधम्मो **बारसविहो,** अणगारधम्मो दसविहो । एसो दुविहो वि मेलिज्जमाणो बाविसतिविहो भवति ॥ २ ॥ १४९ ॥ इमो बारसविहो अगारधम्मो—

**पंच य अणुव्वयाइं गुणव्वयाइं च[10] होंति तिण्णेव ।**
**सिक्खावया[11] य चउरो गिहिधम्मो बारसविहो उ** ॥ ३ ॥ १५० ॥

**पंच य अणुव्वयाइं०** गाहा । थूलगपाणातिवात-मुसावात-अदत्तादाणवेरमणं सदारसंतोसो इच्छापरिमाणमिति अणुव्वताणि । दिसिव्वत-उवभोगपरिमाण-अणट्ठाडंडवेरमणाणीति तिण्णि गुणव्वताणि । सामायिय-देसावकासिय-पोसहोववास-अतिहिसंविभाग[12]-अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणा इति चत्तारि सिक्खावताणि जधा **पच्चक्खाणनिज्जुत्तीए** [ आव० नि० हाटी० पत्र ८११ तः ३९ गद्यनिर्युक्तिः ] ॥ ३ ॥ १५० ॥

---

१ णिग्गओ दंतो खं ३ ॥ २ आइक्खिज्ज वि° खं ४ ॥ ३ सो धिकओ गणि णितो सुस° मूलादर्शे ॥ ४ अधिकृतः प्रस्तुतः ॥ ५ हंद ! अचूपा० ॥ ६ दुरहिट्ठियं खं १ जे० शु० ॥ ७ कर्मणा चोपपादयत ॥ ८ बावीसविहो खं० पु० वी० सा० ॥ ९ बीयओ सा० ॥ १० °याइं च° सा० ॥ ११ अ सा० ॥ १२ °अहासंविभाग° मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमो दसविधो समणधम्मो—

**खंती १ य मद्दव २ ऽज्जव ३ मुत्ती ४ तव ५ संजमे ६ य बोद्धव्वे।**
**सच्चं ७ सोयं ८ आकिंचणं ९ च बंभं १० च जइधम्मो ॥ ४ ॥ १५१ ॥**

**खंती य मद्दवऽज्जव०** गाधा। जहा **दुमपुप्फिताए** [पत्रं १२] ॥ ४ ॥ १५१ ॥

**धम्मो एसुवदिट्ठो अत्थस्स चउव्विहो उ णिक्खेवो।**
**ओहेण छव्विहऽत्थो चउसट्ठिविहो विभागेणं ॥ ५ ॥ १५२ ॥**

**धम्मो एसुवदिट्ठो०** गाहा। अत्थो भण्णति-सो चउव्विहो। नाम-ठवणातो गतातो। दव्वत्थो हिरण्णादी। भावत्थो दुविहो-पसत्थो अप्पसत्थो य। पसत्थो नाण-दंसण-चरित्ताणि। अप्पसत्थो अण्णाण-अविरति-मिच्छत्ताणि। सो दव्वत्थो संखेवेण छव्विहो, वित्थरतो चउसट्ठिविहो ॥ ५ ॥ १५२ ॥ छव्विहो—

**धण्णाणि[1] १ रयण २ थावर ३ दुपय ४ चउप्पय ५ तहेव कुवियं ६ च।**
**ओहेण छव्विहऽत्थो एसो धीरेहिं पण्णत्तो ॥ ६ ॥ १५३ ॥ दारगाहा ॥**

**धण्णाणि रयण०** गाधा। धण्णाणि १ रयणाणि २ थावरं ३ दुपयं ४ चउप्पयं ५ कुवियं ६ एसो **ओहेण छव्विहो अत्थो** ॥ ६ ॥ १५३ ॥ छव्विहातो इमो चउसट्ठिविहो णिप्फज्जति—

**चउवीसं[2] चउवीसं तिग-दुग-दसहा[3] य होयऽणेगविहो।**
**सव्वेसिं पि इमेसिं विभागमह[4] संपवक्खामि ॥ ७ ॥ १५४ ॥**

**चउवीसं चउवीसं०** गाहा। चउव्वीसं धण्णाणि। चउव्वीसं रयणाणि वि। थावरं ३। दुपयं २। चउप्पयं दसविधं। कुवियं अणेगविधं, तं पुण एगमेव। एते भेदा संपिंडिया चतुसट्ठी भवंति ॥ ७ ॥ १५४ ॥

धण्णाणि चउव्वीसं इमाहिं दोहिं गाहाहिं भण्णंति[5]—

**धण्णाणि[6] चउव्वीसं जव १ गोधुम २ सालि ३ वीहि ४ सट्ठीया ५।**
**कोद्दव ६ अणुया ७ कंगू ८ रालग ९ तिल १० मुग्ग ११ मासा य १२ ॥ ८ ॥ १५५ ॥**
**अतसि १३ [7]हिरिमिंथ १४ तिउडग १५ निप्फाव[8] १६ ऽलिसिंद १७ रायमासा य १८।**
**इक्खू[9] १९ आसुरि २० तुवरी २१ कुलत्थ २२ तह धन्नग २३ कलाया २४ ॥९॥१५६॥ दारं।**

**धण्णाणि चउव्वीसं०** गाधा। **अतसि हिरिमिंथ०** गाधा। **जव-गोधूम-साली-विघी** प्पसिद्धा। **सट्ठिका** सालिभेदो। **कोद्दव-अणुका** पसिद्धा। **कंगु[10]गहणेणं** उब्भकंगूए गहणं। जे पुण अवसेसा कंगुभेदा सो **रालओ**। **तिल-मुग्ग-मास-अयसीओ** विदियाओ। **हिरिमिंथा** कालचणगा। **तिपुंडा[11]** चणगजाती। **णिप्फावा** वल्ला। **अलिसिंदा[12]** चवलगा। **रायमासा** ते चेव **बा(?पा)रसकुलादिसु**। [**इक्खू** पसिद्धा।] **आसुरी** रायिया। **तूयरी** आढती। **कुलत्था** पसिद्धा। **धण्णातो** कोथुंभरीओ। **कलाया** वट्टचणगा। एताणि चउव्वीसं धण्णाणि ॥ ८ ॥ ९ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥

---

१ धण्णाई पु० वी० ॥ २ चउवीसा चउवीसा वी० सा० ॥ ३ °हा अणेगविह एव वी० सा० ॥ ४ °गमिह वी० ॥ ५ पञ्छ्ई धण्णाणि मूलादर्शे ॥ ६ धण्णाई खं० पु० वी० सा० ॥ ७ हिलिमिंथ खं०। हिरिमंथ पु० वी०। हरिमंथ सा० ॥ ८ °व १६ सिलिंद खं० पु० वी० सा० हाटी० ॥ ९ °क्खू १९ मसूर २० खं० पु० वी० सा० हाटी० वृद्ध० ॥ १० "कङ्गुः उदकङ्गुः" इति हारि० वृत्तौ ॥ ११ "तिपुडया लंगचनया। णिप्फावा वल्ला। मसूरा मालवविसयादिसु। चवलगा रायमासा। इक्खतुंडगादिसासियो रायधातो (?)। तुवरी आढगी।" इति वृद्धविवरणे ॥ १२ "शिलिन्द्रा मकुष्ठाः। राजमाषाः चवलकाः।" हारि० वृत्तौ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**रयणाइं चउव्वीसं सुवण्ण १ तउ २ तंब ३ रयय ४ लोहाइं ५ ।**
**सीसग ६ हिरण्ण ७ पासाण ८ वइर ९ मणि १० मोत्तिय ११ पवालं १२ ॥१०॥१५७॥**
**संखो १३ तिणिसो १४ अगरु १५ चंदणाणि १६ वत्था १७ ऽऽमिलाणि १८ कट्ठाणि १९ ।**
**तह चम्म २० दंत २१ वाला २२ गंधा २३ दव्वोसहाइं च २४ ॥ ११ ॥ १५८॥ दारं॥**

**रयणाइं चउव्वीसं०** गाधा । **संखो तिणिसो अगलु०** गाधा । **सुवण्ण-तउय-तंबगा** पसिद्धा । **रयतं** रुप्पं । **लोह-सीसगाणि** सिद्धाणि । **हिरण्णं** रयतं चेव घडियरूवं । **पासाणा** माणिक्कविजाती । **वैरं** वज्रं । **मणिणो** जातिसुद्धा । **मोत्तिय-पवाल-संखा** सिद्धा । **तिणिसो** दारुरयणं । **अगरु-चंदणा** दारुत्ते गंधरयणं । **वत्थं** सोत्तियादि । **आमिलं** सव्वरोमजाती । **कट्ठं** सागाति । **चम्मं** माहिसादि । **दंता** हत्थीणं । **वाला** चमरादीणं । **गंधा** जुत्तिविसेसा । **दव्वोसहियो** मरियमादि । एते चतुव्वीसं रयणा ॥ १० ॥ ११ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ थावरं—

**भूमी घरं तरुगणा तिविहं पुण थावरं मुणेयव्वं । दारं ।**
**चक्कारबद्ध माणुस दुविहं पुण होइ दुपयं तु ॥ १२ ॥ १५९ ॥ दारं ।**

**भूमी घरं०** अद्धगाधा । तं थावरं तिविधं—**भूमी घरं तरुगणा** इति । **भूमी** खेत्तादि । **घरं** तिविहं—खातं ऊसियं खातूसियं । खातं—भूमिघरादि, ऊसियं—पासादादि, खातूसियं—भूमिघरोवरि पासातो । **तरुगणा** णालिकेरादि । थावरं गतं । दुपयं—**चक्कारबद्ध माणुस०** गाधापच्छद्धं । **दुपयं दुविहं—चक्कारबद्धं माणुसं च । चक्कारबद्धं** सगडादि । **माणुसं** दास-भयगादि ॥ १२ ॥ १५९ ॥ चतुप्पयं दसविधं—

**गावी १ महिसी २ उट्टी ३ अय ४ एलग ५ आस ६ आसतरगा ७ य ।**
**घोडग ८ गद्दह ९ हत्थी १० चउप्पयं होति दसहा उ ॥ १३ ॥ १६० ॥ दारं ।**

**गावी महिसी उट्टी०** गाधा । **गावी-महिसी-उट्टी-अय-एलियाओ** सिद्धाओ । **आसा** पक्खलाति जचा । **अस्सतरा** वेसरा । अजचा **घोडगा** । तं एतं चउप्पदं ॥ १३ ॥ १६० ॥ कुवियं—

**णाणाविहोवकरणं णेगविहं कुप्पलक्खणं होइ ।**
**एसो अत्थो भणिओ छव्विह-चउसट्ठिभेओ उ[6] ॥ १४ ॥ १६१ ॥**

**णाणाविहोवकरणं०** गाहा । गिहोवक्खरो **कुवियं** । एसो अत्थो **छव्विह-चउसट्ठिविहो** समत्तो ॥ १४ ॥ १६१ ॥ कामे इमा सुत्तफासियनिज्जुत्ती । तत्थ—

**कामो चउविसतिविहो संपत्तो खलु तहा असंपत्तो ।**
**संपत्तो चोद्दसहा दसहा पुण होअसंपत्तो ॥ १५ ॥ १६२ ॥**

**कामो चउविसतिविहो०** गाधा । सो चतुव्वीसतिविहो वि दुविहो भवति-**संपत्तो असंपत्तो** य । **संपत्तो चोद्दसविधो असंपत्तो दसविधो,** एते मेलिया चतुवीसतिविहो भवति ॥ १५ ॥ १६२ ॥

असंपत्तो थोवतरो इति पढमं भण्णति इमाए दिवड्ढगाहाए—

**तत्थ असंपत्तोऽत्थी[6] १ चिंता २ तह सद्ध ३ संभरणमेव ४ ।**
**विक्कवय ५ लज्जनासो ६ पमाय ७ उम्मायँ ८ मरणं ९ च ॥ १६ ॥ १६३ ॥**

---

१ संखा १३ तिणिसा १४ पु० ॥ २ °गलु १५ वी० ॥ ३ घरा तरुगणा खं० पु० वी० । °घरा य तरुगण सा० ॥ ४ य खं० वी० ॥ ५ चउवीसविहो खं० पु० वी० सा० ॥ ६ °ऽत्थो १ वी० सा० हाटी० ॥ ७ °य ८ तब्भावो ९ ॥ मरणं १० च होइ दसमो खं० पु० वी० सा० हाटी० ॥

**तब्भावणा य १० दसमो, संपत्तं पि य समासओ वोच्छं ।**

**तत्थ असंपत्तोऽत्थी चिंता०** गाधा । **तब्भावणा य दसमो०** अद्धगाधा । असंपत्तो एवं दसविहो, तं०—अत्थी १ चिंता २ सद्धा ३ संभरणं ४ विक्कवता ५ लज्जणासो ६ पमादो ७ तुम्मातो ८ मरणं ९ तब्भावणा १० । **अत्थी** हियए गोरवनिवेसो, जहा कस्सइ इत्थिरूवं सोऊण वि अत्थो समुप्पज्जति १ । **चिंता** तत्थेव अभिणिवेसो 'अहो ! गुणाः' इति २ । **सद्धा** तेहिं रूवातीहिं अक्खित्तो तमेव कंखति ३ । **संभरणं** भुज्जो विप्पयोए अणुसरंतो अच्छति ४ । **विक्कवता** जीसे य विप्पयोए भत्ताइ णाऽभिलसति विक्कवीभूतो ५ । **लज्जाणासो** जीय गुरूण वि पुरतो ससिंगारं णामग्गहणं करेमाणो ण लज्जति ६ । **पमादो** सव्वारंभपरिचायो सद्दातिसु य तव्विरहिएसु अपरितोसो ७ । **उम्मातो** कज्जा-ऽकज्ज-वच्चा-ऽवच्चअपरिण्णाणं ८ । उम्मातेण पाणपरिचातो **मरणं** ९ ॥ १६ ॥ १६३ ॥ **तब्भावणा** तामिति मण्णमाणो थंभाति उवगूहति आगासाति वा १० । एस असंपत्तो ॥ संपत्तो इमेण गाहापच्छद्धेण गाहाए य भण्णति—

**दिट्ठीए संपातो १ दिट्ठीसेवा य २ संभासो ३ ॥ १७ ॥ १६४ ॥**
**हसित ४ ललितो ५ ऽवगूहित ६ दंत ७ नहनिवाय ८ चुंबणं होइ ९ ।**
**आलिंगण १० मायाणं ११ कर[1] १२ ऽणंग १३ अणंगकिड्डा य १४ ॥ १८ ॥ १६५ ॥**

**दिट्ठीए संपातो०** अद्धगाहा । **हसित ललिताऽवगूहित०** गाहा । चोद्दसविहो संपत्तो, तं०—दिट्ठिसंपातो १ दिट्ठिसेवणा २ संभासो ३ हसितं ४ ललितं ५ परिस्संगो ६ दसणपातो ७ कररुहाणं वा ८ वयणजोगो ९ आलिंगणं १० आयाणं ११ करणं १२ अणंगो १३ अणंगकिड्डा १४ । इत्थीए सरीरे दिट्ठिं दातूण पडिसाहरति **दिट्ठिसंपातो** १ । दिट्ठीए दिट्ठिणिवेसणं [ **दिट्ठिसेवणा** ] २ । दिट्ठीयातीएहिं साणुरागं णातूण सविकारमालवणं **संभासो** ३ ॥ १७ ॥ १६४ ॥

कोव-पणय-पसातेसु हासो **हसितं** ४ । गीय-गंधव्व-णट्टाति **ललितं** ५ । **अवगूहणं** परिस्संगो ६ । दसण-वसणातिसमालुंपणं **दसणसण्णिवातो** ७ । कररुहेहिं विक्खणणं **कररुहाणं** ८ । वदणसमागमो **वयणसंजोगो** ९ । ईसिफरिसण**मालिंगणं** १० । हत्थातिगहण**माताणं** ११ । तहावत्थाणं सिचयावहरणं वा **करणं** १२ । **अणंगो** पडिसेवणं १३ । उवत्थातीसु **अणंगकीडा** १४ । एस संपत्तो ॥ १८ ॥ १६५ ॥

समत्तो य ततियो । एतेसिं सवत्तया असवत्तया य भण्णति, तं जहा—

**धम्मो अत्थो कामो तिण्णेते पिंडिता पडिसवत्ता ।**
**जिणवयणं ओतिण्णा[2] असवत्ता होंति णातव्वा ॥ १९ ॥ १६६ ॥**

**धम्मो अत्थो कामो०** गाहा । धम्म-ऽत्थ-कामा एकतोऽवरुज्झमाणा विरुज्झंति । कधं ?—

अत्थस्स[3] मूलं णियडी खमा य, धम्मस्स दाणं च दमो दया य ।
कामस्स वित्तं च वपू वतो य, मोक्खस्स सव्वोवरमो क्रियासु ॥ १ ॥

णियडी धम्मेण विरुज्झति, दमो कामेण, एवं वित्थरतो भाणितव्वं । एवं गिहत्थ-कुतित्थेसु विरुद्धा धम्म-ऽत्थ-कामा **जिणवयणं ओतिण्णा असवत्ता होंति णातव्वा** ॥ १९ ॥ १६६ ॥ कधं पुण ?—

**धम्मस्स फलं मोक्खो सासयमउलं सिवं अणाबाहं ।**
**तमभिप्पाया[4] साहू तम्हा धम्मत्थकाम त्ति ॥ २० ॥ १६७ ॥**

---

१ कर १२ सेवण १३ ऽणंग° खं० पु० वी० हाटी० वृद्ध० ॥ २ उत्तिण्णा वी० सा० । ओयत्ता (? ण्णा) वृद्ध० ॥ ३ हाटी० वृद्धविवरणे चेदं वृत्तमित्थं वर्तते —"अर्थस्य मूलं निकृतिः क्षमा च, कामस्य वित्तं च वपुर्वयश्च । धर्मस्य दानं च दया दमश्च, मोक्षस्य सर्वोपरमः क्रियासु ॥" इति ॥ ४ °भिप्पेया खं० पु० सा० हाटी० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**धम्मस्स फलं मोक्खो०** गाहा । [ सो य सासतो अतुलो सिवो अणाबाधो, ] सो चेव अत्थो । तं अत्थं **अभिप्पायेंति** अभिलसंति कामेन्ति **धम्मत्थकामा** ॥ २० ॥ १६७ ॥

**लोकायतिकादिवयणं—**

**परलोग मुत्तिमन्तो नत्थि हु मोक्खो त्ति बेंति अविहण्णू ।**
**ते अत्थि अवितहा जिणमयम्मि पवरा ण अण्णत्थ ॥ २१ ॥ १६८ ॥**

**परलोग मुत्तिमन्तो०** गाधा । जं ते लोकायतिकातिणो भणंति–**परलोग मोत्ति०** परलोग-मोक्खा पसिद्धा, **मोत्तिमन्तो** नाण-दंसण-चरित्ताणि । ते **अवितहा** पवरा इहेव जिणप्पवयणे, णो कुप्पवयणेसु ॥ २१ ॥ १६८ ॥

धम्म-ऽत्थ-कामगहणेण य जीवस्स अत्थित्तं साहिज्जति, जो धम्म-ऽत्थ-कामेहिं सूयिज्जति सो जीवो । अहवा पढमपदोववण्णितो भावधम्मो, अत्थो य से नेव्वाणपजवसाणं फलं, तग्गयपसत्थिच्छा कामो य, एते धम्मत्थकामा आणेति–वसीकरेति । को पुण सो ? व्यवहितोऽभिसंबज्झति–**आयारगोयरो** । अधवा धम्मत्थकामा आणा जस्स, एवं आणाए धम्मत्थकामा जस्स आयारगोयरस्स सो धम्मत्थकामाणो आयारगोयरो, सो वा तेसिं आणाए वट्टति अतो तं । **हंद ! सोम्म ! णिग्गंथाण आयारगोयरं सुणेह । हंदि ! धम्मत्थकामाणं** ति एतं गतं । **णिग्गंथाणं** अब्भितर-बाहिरगंथनिग्गयाणं **सुणेह** इति आमंतणं । **आयारगोयरं** आयारविसयं । दुक्करत्तणेण भयाणक इति **भीमो** तं **सकलं** संपुण्णं । दुक्खं तं अहिट्ठेतीति दुरहिट्ठओ तं **दुरहिट्ठयं** ॥ ४ ॥

जति पुण कोति भणेज्ज–अण्णत्थ वि आयारगोयरोवतेसो विज्जति तं पति णिराकरणत्थमिह य अहिंसाति-सकलविसेसोवदरिसणत्थं भणति—

२५०. णऽण्णत्थेरिसं वुत्तं जं लोए परमदुक्करं ।
विउलट्ठाणभाविस्स ण भूतं ण भविस्सति ॥ ५ ॥

२५०. **णऽण्णत्थेरिसं वुत्तं०** सिलोगो । **ण** इति पडिसेहे, **अण्णत्थेति** अण्णम्मि सासणे एरिसस्स आयारोवदेसस्स पडिसेहे णकारो वट्टति, **एरिसं** इमेण सरिसं **वुत्तं** उपदिट्ठं सव्वकुतित्थियमतावकरिसणं । **परमं** प्रधानं **दुक्करत्तणेण** । विउलं विसालं [ ठाणं ] **विउलट्ठाणं** अणाबाधं, तं भावेमाणस्स **विउलट्ठाणभाविस्स** । तमण्णत्थ एरिसं **ण संभूतं** अतीते काले, आगामिके वि **ण भविस्सति,** वट्टमाणे पुण काले णेव अत्थि जं अण्णत्थेरिसमिति ॥ ५ ॥

तं करेंतं चाविसेसं प्रति (?) सुगतिगमणाभिलासीहिं सव्वावत्थगतेहिं करणीयमिति तं भणति—

२५१. सखुड्डग-वियत्ताणं वाहियाणं च जे गुणा ।
अखंड-फुल्ला कातव्वा तं सुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥

२५१. **सखुड्डग-वियत्ताणं०** सिलोगो । **खुड्डगो** बालो, **वियत्तो** व्यक्त इति, सखुड्डएहिं वियत्ता **सखुड्डग-वियत्ता** तेसिं । वाही जेसिं संजाता ते **वाहिया** तेसिं । सखुड्डग-वियत्त-वाधियाण साधूण **जे गुणा** भणीहामि ते **अखंड-फुल्ला कातव्वा खंडा** विकला, **फुल्ला** णट्ठा, अकारेण पडिसेहो उभयमणुसरति,

१ **मुत्तिमग्गो नत्थि** खं० पु० सा० हाटी० वृद्ध० ॥ २ **अविहिण्णू** सा० हाटी० ॥ ३ आचारगोचरोपदेशो विद्यते ॥ ४ °**ण्णत्थ एरि**° अचू० विना ॥ ५ °**उलं ठाण**° खं ३–४ जे० ॥ ६ °**भाइस्स** अचू० वृद्ध० विना । "विपुलस्थानभाजिनः" इति **हारि० वृत्तौ** ॥ ७ °**फुडिया का**° खं १–४ शु० हाटी० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**अखंडफुल्ला कातव्वा** । अहवाऽविकलमेव खंडफुलं, जहा इट्टगाति खंडफुलवितमितं एवं करणीया । **तमिति** एतं वत्थुं **सुणेह** त्ति सिस्सामंतणं । **जहा तहेति** जहा ते अवत्थिता तेण प्रकारेण सुणेह ॥ ६ ॥

पावणियत्तिलक्खणा गुणा इति जतो णियत्तियव्वं तदुद्देसत्थमिदं भण्णति—

२५२. दस अट्ठ य ठाणाइं जाइं बालोऽवरज्झति ।
तत्थे[1] अण्णयरे ठाणे निग्गंथत्ताओ भस्सति ॥ ७ ॥

२५२. **दस अट्ठ य ठाणाइं०** सिलोगो । **दस अट्ठ य** अट्ठारस, **ठाणाणीति** अवराधपदाणि अवराधकारणाणि, **जाइं** ति उद्देसवयणं, **बालो** अपंडितो **अवरज्झति** अतिचरति । **तत्थेति** तेसु अट्ठारससु **अण्णतरे [ ठाणे ]** इति एगम्मि वि ण समुतिएसु ठाणेसु, वट्टमाण इति वयणसेसो, **[ निग्गंथत्ताओ ]** निग्गंथभावातो **भस्सति** ॥ ७ ॥ एतस्स चेव अत्थस्स वित्थारणे इमा **निज्जुत्ती**—

**अट्ठारस ठाणाइं आयारकहाए जाइं भणियाइं ।**
**तेसिं अण्णतरागं सेवंतो ण होइ सो समणो** ॥ २२ ॥ १६९ ॥

**अट्ठारस ठाणाइं०** गाहा । कंठा ॥ २२ ॥ १६९ ॥ तेसिं विवरणत्थमिमा **निज्जुत्ती**—

**वंयछक्क[2] ६ कायछक्कं ६ अकप्पो १ गिहिभायणं २ ।**
**पलियंको[3] ३ गिहिणिसेज्जा य ४ सिणाणं ५ सोहवज्जणं[4] ६** ॥ २३ ॥ १७० ॥

**॥ महल्लियायारकहज्झयणणिज्जुत्ती सम्मत्ता[5] ॥**

**वयछक्क कायछक्कं०** गाहा । **वयछक्कं** रातीभोयणवेरमणछट्ठाइं पंच महव्वताणि । **काया** पुढविमाति छ । **अकप्पो १ गिहिभायणं २ पलियंको ३ गिहिणिसेज्जा ४ सिणाणं ५ सोभवज्जणं ६** । वज्जणसद्दो अकप्पादोहिं पत्तेयमभिसंबज्झति—अकप्पवज्जणं, एवं सव्वत्थ ॥ २३ ॥ १७० ॥

अट्ठारसट्ठाणुद्देसो कतो । एतेसिं विवज्जणेण जहा अखंडफुल्ला गुणा भवंति तव्विसेसणत्थमिदं भण्णति—

२५३. तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं ।
अहिंसा निपुणा दिट्ठा सव्वजीवेसु[6] संजमो ॥ ८ ॥

२५३. **तत्थिमं पढमं ठाणं०** सिलोगो । **तत्थेति** तम्मि अट्ठारसगे वतछक्क-कायादी जं अणंतरं भणीहामि **पढमं** आधं तिष्ठति तम्मीति **ठाणं** महता वीरेण **महावीरेण देसियं** साधितं । **अहिंसा** अमारणं **निपुणा** सव्वप्पकारं सव्वसत्तगता इति **सव्वजीवेसु संजमो** हिंसोवरतिरेव ॥ ८ ॥

कहमहिंसा णिउणा दिट्ठा ? भण्णति—

२५४. जावंति लोए पाणा तसा अदुवं[7] थावरा ।
ते जाणमजाणं वा ण हणे णो[8] वि घातए ॥ ९ ॥

२५४. **जावंति लोए पाणा०** सिलोगो । **'जावंति'** जेत्तिया लोक एव सव्वपाणा प्राणिणो । तब्भेदो

---

१ **तत्थऽन्नय°** खं १-३ ॥ २ इयं **निर्युक्ति**गाथा सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु सूत्रत्वेन दृश्यते । किञ्च श्री**अगस्त्यपाद-वृद्धविवरणकार-हरिभद्रपादैः** निर्युक्तिगाथात्वेनैवेयं गाथा निर्दिष्टा व्याख्याता च वर्त्तते इति ॥ ३ **पलियंकणि°** खं० पु० वी० सा० हाटी० ॥ ४ **ज्जणा** खं ॥ ५ **धम्मत्थकामयणिज्जुत्ती समत्ता** खं० । **अत्थकामणिज्जुत्ती सम्मत्ता** वी० ॥ ६ **सव्वभूएसु** खं १-२ जे० शु० हाटी० । **सव्वभूएहिं** खं ३-४ ॥ ७ **अदुय** जे० ॥ ८ **णो व घायए** खं १-२-३-४ शु० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणति–**तसा अदुव थावरा । ते जाणमजाणं वा, जाणं** संचिंतिऊण, **अजाणं** पमाएण, **ण हणे** सयं, **णो वि घातए** य परेण, अणुमोयणमिति मणसा परेण घातणमेव तमवि संबज्झति ॥ ९ ॥

किं पुण कारणं सव्वेसिं गुणाणं आदावहिंसा ? जम्हा—

२५५. सव्वजीवा वि इच्छंति जीवितुं ण मरिज्जितुं ।
तम्हा पाणवहं घोरं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ १० ॥

२५५. **सव्वजीवा वि इच्छंति०** सिलोगो । **सव्वजीवा** अपरिसेसा, **अपिसद्दो** कार्यविसेसेणं अवधारणे वि दिट्ठत्थो, जधा एतदप्यस्य कार्यं यदर्थमुपतिष्ठति, तेणेह अवधारणे । **इच्छंति** अभिलसंति **जीवितुं ण मरिज्जितुं । 'जीविउं ण मरिज्जिउं'** ति कहं ण पुणरुत्तं ? एत्थ "दुब्बद्धं सुबद्धं"मिति ण दोसो । भणियं च–"क्रिया हि द्रव्यं विनयति, नाद्रव्यम्" [ ] । ण केवलं मरणमेव ण इच्छंति, किंतु सारीर-माणसमप्पमवि उवप्पीडणं जाव लोमुक्खणणमात्रमवि । पुव्वद्धं हेतुभावमुवणेउं भणति–**तम्हा पाणवहो** मारणं, **घोरं** भयाणगं तं **निग्गंथा वज्जयंति णं** १ ॥ १० ॥

एवमेया(?यम)विकप्पं पढमं ठाणं पाणातिवातविरती भणितं १ । बितियट्ठाणविकप्पणत्थं भणति—

२५६. अप्पणट्ठा परट्ठा वा कोधा वा जइ वा भया ।
हिंसगं ण मुसं बूता णो वि अण्णं वयावए ॥ ११ ॥

२५६. **अप्पणट्ठा परट्ठा वा०** सिलोगो । **अप्पणट्ठा** जहा कोति 'गिलाणो अहं'मिति लज्जेति 'अगिलाणो' भासति । **परट्ठा** परं णिभं णातूण 'एस गिलाणो' अगिलाणस्स मग्गति किंचि । **कोधेण** अदासं 'दास'मिति भणति । **वा**सद्दो विकप्पवयणे इति । माणेण असब्भूतमदट्ठाणपगासणं करेति, माताए भेक्खा-लसियो भणति–पादो मे दुक्खति, अ[स]ब्भूयमेव । लोभेण असुसितो 'मुसितो ह'मिति लद्धेंतो मग्गति । **भयेण** अदिट्ठमवि 'दिट्ठं मए पेतरूवं' ति भणति । **जत्ति** वेति विकप्पेण कलहादि भणितमेव । **हिंसगं ण मुसं बूता, हिंसगं** जं सच्चमवि पीडाकारिं, **मुसा** वितहं, तमुभयं **ण बूया** ण वयेज, अणाउत्तो वा सहसा, अयाणओ वा अणाभोगेण ॥ ११ ॥ मुसावाद एव दोसकधणमुण्णीयते—

२५७. मुसावादो य लोगम्मि सव्वसाधूहिं गरहितो ।
अविस्सासो य भूताणं तम्हा मोसं विवज्जए ॥ १२ ॥

२५७. **मुसावादो य लोगम्मि०** सिलोगो । **मुसावादो य लोगम्मि** लोगे वि **गरहितो**, तित्थंतरिएहि वि लोगे **रत्तपडो** गरधितो, कूडसक्खेज्जातिसु डंडेज्जति वि, भिक्खुणो वि मुसावातमेवं विसेसेण गरहितं ति । उदाहरणं—

केणति **उवासगेण** मुसावातवज्जाणि सिक्खावयाणि गहिताणि । ताणि विराहेंतो पुच्छितो भणति–सव्वाणि एताणि मुसावादरहिताणि ॥

**सव्वसाधूहिं** गणधरातीहिं वा **गरहितो । अविस्सासो य भूताणं** अविस्संभणीतो सव्वसत्ताणं भवति, समएण वि ण पत्तियावेति । एताणि लोग-साहुगरहियत्तण-अविस्सासातीणि कारणाणीति **तम्हा मोसं विवज्जए** २ ॥ १२ ॥ मुसावायाणंतरमुवदिट्ठं महव्वउद्देसे अदत्तादाणं, तदिह तदणंतरमेवंगुणमिति नियमिज्जति—

---

१ **पाणिवहं** खं ३ ॥ २ **काउविसेसेणं अविचारणे** मूलादर्शे ॥ ३ द्विर्बद्धं सुबद्धम् ॥ ४ **हि** हाटी० ॥ ५ **अवीसासो** खं ३ ॥ ६ रक्तपटो गर्हितः ॥ ७ **गडवितो** मूलादर्शे ॥ ८ °**दगहि**° मूलादर्शे ॥ ९ **समव्वसासाधूहिं** मूलादर्शे ॥ १० **समवेन** ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५८. चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जदि वा बहुं ।
दंतसोहणमेत्तं पि ओग्गहं सि अजाइया ॥ १३ ॥

२५८. **चित्तमंतमचित्तं वा०** सिलोगो। चित्तं जस्स अत्थि तं **चित्तमंतं**, तव्विवरीयम[ चित्तं ]। चित्तमंतं दुपद-चतुप्पदाऽपदं, अचित्तं हिरण्णादि । तमवि **अप्पं वा जदि वा बहुं**, अप्पं थोवं, **बहुं** पभूतं। निरुद्धमुपदिस्सति–**दंतसोहणमेत्तं पि** तणसिलिगाति । **ओग्गहंसि अजातिया** ओग्गहमणणुण्णवेऊणं ॥१३॥

जं चित्तमन्तादिपकारं—

२५९. तं अप्पणा ण गेण्हंति णो वि[2] गेण्हावए परं ।
अण्णं वा गेण्हमाणं पि नाणुजाणेज्ज संजते ॥ १४ ॥

२५९. **तं अप्पणा न गेण्हंति०** सिलोगो । **त**मिति पुव्वसिलोगनिद्दिट्ठं **अप्पणा** सयं **ण गेण्हेज्ज, णो वि गेण्हावए परं, अण्णं वा गेण्हमाणं पि नाणुजाणेज्ज संजते** ३ ॥ १४ ॥

अदत्तादाणाणंतरमबंभवेरमणगुणनियमणत्थं भण्णति—

२६०. अबंभचरियं घोरं पमातं दुरहिट्ठियं ।
णाऽऽयरंती मुणी लोगे भेदायतणवज्जिणो ॥ १५ ॥

२६०. **अबंभचरियं घोरं०** सिलोगो । **अबंभं** असीलं मेहुणं, एतदेव **चरियं अबंभचरियं**, एतदेव **घोरं** भयाणगं, स एव [ पमातो ] इंदियप्पमा**तो, दुरहिट्ठियं** दुगुंछियाधिट्ठितं दुक्खं वा पव्वजाधिट्ठितेण अधिट्ठिज्जति । एयं **णाऽऽयरंति मुणी,** जं मुणी णाऽऽयरंति तं णाऽऽयरणीयमिति **लोगे** इति सव्वसाधुचरियमिदं । **भेदो** विणासो, **आययणं** मूलं आश्रयोत्थाणं, चरित्तभेदस्स एतं थाणं, तं वज्जेतुं सीलं जेसिं ते **भेदायतणवज्जिणो** ॥ १५ ॥ किं पुण कारणं अबंभभेदायतणवज्जिणो णाऽऽयरंति कतो—

२६१ मूलमेतमहम्मस्स महादोससमुस्सयं ।
तम्हा मेहुणसंसग्गिं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ १६ ॥

२६१. **मूलमेतमहम्मस्स०** सिलोगो । **मूलं** पतिट्ठा **एत**मिति अणंतरपत्थुतमब्बंभमभिसंबज्झति । **महादोस** इति महंता दोसा कलह-वेरादयो, **समुस्सयो** रासी समुदायो, तदेयं **महादोससमुस्सयं**। जतो ते अधम्ममूलदोसपरिहारिणो **तम्हा मेहुणसंसग्गि तम्हा**दिति पढमभणितदोसगणकारणतो **मेहुणसंसग्गी** संपर्कः तेण ते भगवंतो **णिग्गंथा वज्जेंति** ४ ॥ १६ ॥ 'तेहिं वज्जितं तं पयत्ततो वज्जणीयं' [ ति ]वयणुद्देसाणुपुव्विणियमितो मेहुणाणंतरं परिग्गहो । सो य सुहुमाण वि वत्थूण ण वट्टति, किमुत हिरण्णातीणं ? इति भण्णति—

२६२. विडमुब्भेइमं लोणं तेल्लं सप्पिं च फाणियं ।
ण ते सन्निहिमिच्छंति णायपुत्तवयोरया ॥ १७ ॥

२६२. **विडमुब्भेइमं लोणं०** सिलोगो । **विडं** जं पागजातं तं फासुगं **उब्भेइमं** सामुद्दाति । **[लोणं]** लवणागरेसु समुप्पज्जति तं अफासुगं, तदुभयमवि फासुगमफासुगं वा, प्रकारकहणमेतं । **तेल्लं** तिलातिविकारो । **सप्पिं** घतं । **फाणितं** उच्छुविकारो, समाणजातीओवसंग्रहेण सव्वुच्छुविकारो, मधुकाती ण य घेप्पंति,

१ उग्गहं से अ° जे० वृद्ध० ॥ २ व वृद्ध० ॥ ३ जाणंति संजया अचू० विना ॥ ४ दुरहिट्ठयं खं ३-४ ॥
५ °समूसयं खं ४ ॥ ६ °संसग्गं खं १-२ शु० हाटी० ॥ ७ सन्निहि कुव्वंति खं १-४ हाटी० ॥ ८ णाइपुत्तवइरया जे० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एतदपि अविणासि ओसहदव्वं च, किं पुण भत्तादि ? । **ण ते सण्णिहिमिच्छंति, ण** इति पडिसेहे, **ते** इति जे अणंतरे भणीहामि, सण्णिहाणं **सण्णिही पकरन्ति** परिवसणमवि । कतरे ? भगवतो **णायपुत्तस्स वयोरया** साधवः ॥ १७ ॥ सण्णिधिकरणं पुण किं विरुद्धं ? भण्णति—

२६३. लोभस्सेसो[1] अणुफासो मण्णे अन्नतरामवि ।
[2]जो सिया सन्निधीकामो गिही पव्वइए ण से ॥ १८ ॥

२६३. **लोभस्सेसो अणुफासो०** सिलोगो । **लोभो** तण्हा, तस्स [ **एसो** ] इति जं सण्णिधिकरणं अणुसरणमणुगमो **अणुफासो । मणगपिता** गणहरो सयं [3]चाअत्था अप्पणो अभिप्पायमाह–**मण्णे** एवं जाणामि **अण्णतरामिति** विडातीणं किंचि जहा अण्णं निहिज्जति । **अविसद्दो** थोवमवि [4]घरत्थतादोसे संभावेति । **जो** इति अविसेसिउद्देसवयणं, **सियादिति** [5]भवेज्ज । **सण्णिधी** भणितो, तं कामयतीति **सण्णिधीकामो** । लोभाणुफासकरणफलं इमं–**गिही पवइते ण से** पव्वतियगरूवी वि न सो पव्वतियो भवति, अप्पे वि परिग्गहे घरत्थतुलय त्ति महादोसोपपातणं ॥ १८ ॥ कहं पुण वत्थातिपरिग्गह ? इति, धम्मसाहणपरिग्गह इति धम्मसाहणपरिग्गहदोसपरिहरणत्थमिदं भण्णति—

२६४. जं पि वत्थं व पातं वा कंबलं पायपुंछणं ।
तं पि संजम-लज्जट्ठा [6]धारेंति परि[7]हरेंति य ॥ १९ ॥

२६४. **जं पि वत्थं व पातं वा०** सिलोगो । जं इति उद्देसवयणं । **अविसद्दो** [8]वक्खमाणकारणसमुक्करिसणे । **वत्थं वा** वत्थं खोमिकादि । **पातं** अलाबुकादि । **कंबलं** ओण्णियं रयतरण-कप्पाति । **पायपुंछणं** रयोहरणं । **वासद्दा** समाणजातीविकप्पगा । **तमिति** [9]जस्सद्देण उद्दिट्ठस्स पडिणिद्देसो । **अपिसद्दो** कारणपडिसंहरणे । **संजम-लज्जट्ठा** तन्निमित्तं । वत्थे अघेप्पमाणे अग्गि-पलालसेवाति [ **अ**]**संजमो** मे होहिति त्ति, पाते संसत्तपरिसाडाति, **लज्जट्ठा** चोलपट्टगाति समणा **धारेंति** । उत्तरकालं पयोयणत्थं **परिहरेंति** अणुरूवपरिभोगेण परिभुंजंति ॥ १९ ॥ सो य पुण परिग्गहाभासो वि असारमुला-ऽविभूसाति-विराहणपरिहरणोवायतो—

२६५. ण सो परिग्गहो वुत्तो णायपुत्तेण ताइणा ।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो [10]ईइ वुत्तं महेसिणा ॥ २० ॥

२६५. **ण सो परिग्गहो वुत्तो०** सिलोगो । ण इति पडिसेहे, **सो** इति अणंतराभिहितं वत्थाति संबज्झति, घेप्पमाणमवि **ण सो परिग्गहो वुत्तो** भणितो [**णायपुत्तेण**] **णाय**कुलप्पसूय**सिद्धत्थ**खत्तियसुतेण अप्प-पर**त्ताइणा** । संपत्ति-असंपत्तीए वा परिग्गहस्स भावदोसपधाणीकरणत्थं भण्णति–**मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, मुच्छा** गेही एस **परिग्गहो वुत्तो । इति वुत्तं महेसिणा, इति** उवप्पदरिसणे, एतं भणितं **सेज्जंभव**वयणं । **महेसिणा** इति महता रिसिणा भगवता, ण केवलं संघयणहीणाणं, जिणकप्पियाण वि भगवतैवोपदिट्ठं ॥ २० ॥

२६६. सव्वत्थुवहिणा बुद्धा [11]सारक्खणपरिग्गहे ।
अवि अप्पणो वि देहम्मि नाऽऽयरंति ममा[12]इयं ॥ २१ ॥

---

१ °स्सेसऽणुप्फासो खं १–२–३ । °स्सेसऽणुफासे खं० ४ शु० । स्सेसऽणुफासो जे० वृद्ध० ॥ २ जे सिया सन्निहीकामी खं १–३ जे० वृद्ध० । जे सिया सन्निहिं कामे खं २–४ हाटी० ॥ ३ त्यागार्थं सन्निधित्यागार्थमित्यर्थः ॥ ४ गृहस्थतादोषान् ॥ ५ भवेत् भवेज्ज मूलादर्शे ॥ ६ धारिंति खं २ । धारंति खं १ । धारयंति खं ४ ॥ ७ °हरंति खं १–२–४ ॥ ८ वक्ष्यमाणकारणसमुत्कर्षणे ॥ ९ जस्ससद्देण मूलादर्शे ॥ १० इई जे० ॥ ११ सारक्खण परिग्गहे वृद्ध० । "सारक्खण परिग्गहे नाम संजमरक्खणणिमित्तं परिगिण्हंति, ण दप्पविभूसणादिणिमित्तं ।" इति वृद्धविवरणे । संरक्खणपरिग्गहे खं १–२–३–४ जे० शु० हाटी० ॥ १२ °इउं खं १–३ जे० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६६. **सव्वत्थुवधिणा बुद्धा०** सिलोगो । **सव्वत्थ** सव्वेसु खेत्तेसु कालेसु य उपदधाति सरीरमिति **उवधी** वत्थ-रयोहरणाति, सव्वत्थ उवधिणा सह सोपकरणा **बुद्धा** जिणा, साभाविकमिदं जिणलिंगमिति सव्वे वि एगदूसेण निग्गता । पत्तेयबुद्ध-जिणकप्पियादयो वि रयहरण-मुहणंतगातिणा सह संजम**सारक्खणत्थे परिग्गहेण** मुच्छानिमित्ते तम्मि विज्जमाणे वि ते भगवंतो मुच्छं न गच्छंतीति अपरिग्गहा । कहं व ते भगवंतो उवकरणे मुच्छं काहिंति [1]जेहिं जयणत्थमुवकरणं धारिज्जति तम्मि ? । **अवि अप्पणो वि देहम्मि णाऽऽयरंति ममाइतं,** **अपि**सद्दो संभावणे, एतं संभाविज्जति–जे अप्पणो वि देहे अपडिबद्धा ते सेसेसु पढममप्पडिबद्धा, अप्पणो, ण परस्स, अपि देहे, किमुत बाहिरगे वत्थुविसेसे ? । **णाऽऽयरंति** ण करेंति **ममाइतं** ममत्तं लोभ एव, तं सरीरे वि णाऽऽयरंति, किं पुण बाहिरे भावे ? ॥ २१ ॥ परिग्गहाणंतरमिदमवि ममयाजातीयमेवेति भण्णति—

२६७. अहो ! निच्चं तवोकम्मं सव्वबुद्धेहि वण्णितं ।
जा य लज्जासमा वित्ती एगभत्तं च भोयणं ॥ २२ ॥

२६७. **अहो ! निच्चं तवोकम्मं०** सिलोगो । **अहो**सद्दो दीण-विस्मयादिसु । दीणभावे जहा–अहो ! कट्ठं, विम्हये जहा–अहो ! विस्मयः, आमंतणे–अहो देवदत्त ! एवमादि । इह अहोसद्दो विम्हए, अज्ज**सेज्जंभवो** गणहरा वा एवमाहंसु–**अहो ! निच्चं तवोकम्मं, अहो !** विम्हये, **निच्चं** सततं तव एव कम्मं **तवोकम्मं**, तवोकरणं **सव्वे बुद्धा** जाणका [ तेहिं ] **वण्णित**मक्खातं । तं पुण इमं–**जा य लज्जासमा वित्ती, जा** इति वित्ती-उद्देसवयणं, चकारो समुच्चये, लज्जा संजमो, **लज्जासमा** संजमाणुवरोहेण [2]**एगभत्तं च भोयणं** एगवारं भोयणं, **एगस्स** वा राग-दोसरहियस्स भोयणं ॥ २२ ॥ रातीभोयणदोसकहणत्थमिदं भण्णति—

२६८. संतिमे सुहुमा पाणा तसा [3]अदुव थावरा ।
जाणि राओ अपासंतो कधमेसणियं चरे ? ॥ २३ ॥

२६८. **संतिमे सुहुमा पाणा०** सिलोगो । **संति** विज्जंते, **इमे** त्ति पच्चक्खवयणं, **सुहुमा** सण्हा [**पाणा**] । ते पुण **तसा** कुंथुमादि, **थावरा** पणगादि । **अहवे**ति वयणाद् बादरा वि मंडुक्का वणस्सतिमादिणो । **जाणि राओ अपासंतो, जाणी**ति नपुंसकनिद्देसेण [बे] इंदियादयो णपुंसगा, ते पाएण संभवंति रायो चरंति । 'स(?अ)चक्खुविसये कधमिति एसणीयचरणप्रकारः संभवते ?' पुच्छति गुरू–**कधमेसणीयं चरे?** ति ॥ २३ ॥

ग्राहकगतं प्रायो भणितं । दायगगहणेसणात्रयं तु भण्णति—

२६९. उदओल्लं बीयसंसत्तं पाणा[4] सण्णिवयिया महिं ।
दिवा[5] ताइं विवज्जेज्जा[6] रायो तत्थ कहं चरे ? ॥ २४ ॥

२६९. **उदओल्लं बीयसंसत्तं०** सिलोगो । **उदओल्लं** बिंदुसहितमिति उदओल्लं भणितं, ससणिद्धातीणि समाणजातीयाणीति संवज्झंति । सालिमातीहिं **बीएहिं संसत्तं**, अहवा बीयाणि सयं संसत्तं च, बीयाणि एयाणि चेव, ताणि अक्कमंती वा देज्ज वा बीयाणि, संसत्तं वा सत्तु-सोवीरगादी देज्ज, संसत्तं संसृष्टं, अधवा संसत्तं

१ जे जयत्थ° मूलादर्शे ॥ २ "**एगभत्तं च भोयणं, एगस्स** राग-दोसरहियस्स भोयणं, अहवा एकवारं दिवसओ भोयणं ति" इति **वृद्धविवरणे** । "एकभक्तं च भोजनं' एकं भक्तं द्रव्यतो भावतश्च यस्मिन् भोजने तत् तथा । द्रव्यत एकम्–एकसंख्यानुगतम्, भावत एकं–कर्मबन्धाद्वितीयम्, तद्दिवस एव रागादिरहितस्य, अन्यथा भावत एकत्वाभावात्" इति **हारि० वृत्तौ** ॥ ३ **अदुय** जे० ॥ ४ °**णा निवडिता महिं** खं १-३ । °**णा निव्वडिता महिं** खं २-४ जे० शु० । °**णा निवतिता महिं** वृद्ध० ॥ ५ **दिया** अचू० विना ॥ ६ **विवज्जितो** खं १ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीयादिभि सम्मिस्सं भत्तं पाणं च । **पाणा वा जे** सिरिसिवादयो महीए **सण्णिवयिया** समागता चक्खुसा पेक्खमाणो **दिवा ताइं विवज्जेज्जा** परिहरेज्जा उदओल्लादीणि । अचक्खुविसए पुण **रायो तत्थ** तेसु बहुसु होंतेसु जयणा असक्क त्ति **कहं चरे?** ॥ २४ ॥ पुव्वदोसभणितदोससमुक्करिसेण परिहरणमुपदिस्सति—

२७०. एतं च दोसं दट्ठूण णायपुत्तेण भासितं ।
सव्वाहारं ण भुंजंति णिग्गंथा रातिभोयणं[1] ॥ २५ ॥

२७०. **एतं च दोसं दट्ठूण०** सिलोगो । **एत**मिति जो अणुक्कंतो सुहुमपाणातिपरिहरणअसक्कत्तणेण, **दोसमिति** एगवयणं जातिपयत्थताए, दट्ठूण पच्चक्खं । **एयं चेति** च**सद्देण** आय-सत्त-पवयणोवघातिए य अण्णे वि **णायपुत्तेण भासितं** । अतो परमुक्तार्थम् ६ ॥ २५ ॥

**वयछक्क**मुपदिट्ठं । **कायछक्कावसरे छज्जीवणिया** उद्देसाणुपुव्वीए भणति—

२७१. पुढविकायं न हिंसंति मणसा वयस कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजता सुसमाहिता ॥ २६ ॥

२७१. **पुढविकायं न हिंसंति०** सिलोगो । **पुढविकायो** पुव्वपरूवितो, तं **ण हिंसंति** ण विराहेंति तिहि वि जोगेहिं **मणसा वयसा कायसा, तिविहेण करणजोएण** करण-कारावणा-ऽणुमोयणेण । मण-आतीण **संजता** साधुणो सुट्ठु समाहिता **सुसमाहिता** ॥ २६ ॥

संजमाधिकारे पुढविकायारंभदोसुण्णयणत्थमिदं भण्णति—

२७२. पुढविक्कायं विहिंसंते हिंसति तु तदस्सिते ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ २७ ॥

२७२. **पुढविक्कायं विहिंसंते०** सिलोगो । पुढविकायविहिंसए तदतिरित्तमिममवि अवराधं करेति–**हिंसति तु, हिंसति** विद्धंसति । तुसद्दो छक्कायावधारणत्थं पुढवीए विसेसेति, अतो **तदस्सिते** अचित्तपुढवीए वि **तसे** बेइंदियाति **विविहे** अणेगागारे प्राणे जीवे **चक्खुसे य** सण्हयाए य **अचक्खुसे** ॥ २७ ॥

हिंसादोसस्स कारणतोवण्णासत्थं भणति—

२७३. तम्हा एयं विजाणित्ता दोसं दोग्गतिवड्ढणं ।
पुढविकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ २८ ॥

२७३. **तम्हा एयं विजाणित्ता०** सिलोगो । पुव्ववण्णियत्थो १ ॥ २८ ॥ पुढविक्कायजयणासमणंतरं **धम्मपण्णत्ति**आणुपुव्वीए आउजयणा भण्णति—

२७४. आउक्कायं ण हिंसंति मणसा वयस कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजता सुसमाहिता ॥ २९ ॥

२७५. आउक्कायं विहिंसंतो हिंसति तु तदस्सिते ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ ३० ॥

---

[1] रायभोयणं वृद्ध० । राईभोयणं खं ४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७६. तम्हा एतं विजाणित्ता दोसं दोग्गतिवड्ढणं ।
आउक्कायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३१ ॥

२७४-७६. तत्थ आउक्कायाभिलावेण तिण्ह सिलोगाण प्रायो एस एव अत्थो २ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ आउक्कायाणंतरं तहेव तेउक्कायो भण्णति—

२७७. जायतेयं ण इच्छंति पावगं जलइत्तए ।
तिक्खम[1]ण्णतरा सत्था सव्वतो वि दुरासयं ॥ ३२ ॥

२७७. **जायतेयं ण०** सिलोगो । **जात** एव जम्मकाल एव तेजस्सी, ण जहा आदिच्चो उदये सोमो मज्झण्हे तिव्वो, तं **जाततेयं ण इच्छंति** णाभिलसंति रिसियो, जं तेहिं न इच्छितं तदणिच्छितव्वं । **पावगं** हव्वं, 'सुराणं पावयतीति पावकः' एवं लोइया भणंति, वयं पुण 'अविसेसेण डहण' इति पावकः, तं पावकमुज्जलइयुं ण इच्छंति । **तिक्खमण्णतरा सत्था, सत्थं** आयुहं, **अण्णतराओ** त्ति पधाणायो **तिक्खतरं**, तं [2]सत्थमेगधारं ईलिमादि, दुधारं करणयो, तिधारं तरवारी, चतुधारं चउक्कण्णओ, सव्वओधारं गहणविरहितं चक्कं, अग्गी समंततो सव्वतोधारं, एवमण्णतरातो सत्थातो तिक्खयाए सव्वतोधारता । एतं **सव्वतो वि दुरासयं, सव्वतो** सव्वासु वि दिसासु अवि **दुरासयं** दुक्खमाश्रीयते दुरासतं, तं सव्वतो वि दुरासयमिति भणितं ॥ ३२ ॥ तदेव विसेसिज्जति—

२७८. [3]पाईणं पडिणं वा वि उड्ढं अणुदिसामवि ।
अहे दाहिणओ [4]वा वि दहे उत्तरतो वि य ॥ ३३ ॥

२७८. **पाईणं पडिणं वा वि०** सिलोगो । **पातीणं** पुव्वं, **पडिणं** अवरं, **उड्ढं** उवरिं, **अणुदिसाओ** अंतरदिसाओ जहा पुव्वदक्खिणा, **अहे** हेट्ठतो, **दाहिणओ** जम्माओ दिसाओ । **वासद्देण** तदंतरालाणि वि भणिताणि । **अपीति** सव्वविकप्पो । एतासु सव्वासु दिसासु **दहे उत्तरतो वि य** । चसद्देण दहणीयं विसेसियं ॥ ३३ ॥ जम्हा सव्वाहिं दिसाहिंतो आगतं डहति सव्वासु वा दिसासु थितं अतो—

२७९. [5]भूताणं एसमाघातो हव्ववाहो ण संसयो ।
तं [6]पदीव-वियावट्ठा संजता किंचि णाऽऽरभे ॥ ३४ ॥

२७९. **भूताणं एसमाघातो०** सिलोगो । **भूताणिं** जीवा तेसिं, **एस** इति जायतेयोऽभिसंबज्झति, **आघातो** मारणत्थाणं आघायणं । **हव्वाणि** डहणीयाणि **वहेति** विद्धंसयति एवं **हव्ववाहो**, लोगे पुण हव्वं देवाण वहति हव्ववाहो । **ण संसयो** असंदेहेण एस भूताण आघातो । **तं पदीव-वियावट्ठा**, तं हव्ववाहं **पदीवट्ठा** पगासणनिमित्तं **वितावणट्ठा वा** सरीरातीण सिसिरे । एवमादिप्पयोगेहिं **संजता किंचि णाऽऽरभे, संजता** साधवो ते **किंचि** कारणमुद्दिस्स **किंचि वा** संघट्टणाति **णाऽऽरभे** इति ॥ ३४ ॥

जोग-करणत्तिएण भूताघातत्तणं कारणमुपादाय भण्णति—

---

१ **°मन्नयरं सत्थं** अचू० विना ॥ २ "तत्थ एगधारं परसु, दुधारं कणयो, तिधारं असि, चउधारं तिपुडतो कणीयो, पंचधारं अज्जणु(? अज्जुण)फलं, सव्वओधारं अग्गी" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ३ **पातीणं** जे० ॥ ४ **यावि** हाटी० ॥ ५ **भूयाण एसमाघाओ** खं १-२-४ जे० शु० वृद्ध० । **भूयाण एस वाघाओ** खं ३ ॥ ६ **पईव-पयावट्ठा** अचू० विना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८०. तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दोग्गतिवड्ढणं ।
तेउ[1]कायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३५ ॥

२८०. **तम्हा एयं वियाणित्ता०** सिलोगो । जतो पातीणादिसु जीवविणासकारी अतो एतेण प्रकारेण **विजाणित्ता दोसं दोग्गतिं** वड्ढेति तेउसमारंभं **जावज्जीवं वज्जेज्ज** ३ ॥ ३५ ॥

तेउक्कायसमारंभवज्जणाणंतरं वाउक्कायवज्जणत्थमिदं भण्णति—

२८१. अणिलस्स समारंभं बुद्धा मण्णंति तारिसं ।
सावज्जबहुलं चेतं णेतं तातीहिं सेवितं ॥ ३६ ॥

२८१. **अणिलस्स समारंभं०** सिलोगो । अणिलयणाद्[2] **अणिलो** वातः, तस्स **समारंभं** उक्खेवादीहिं **बुद्धा** तित्थगरा **मण्णंति** जाणंति **तारिसं** अग्गिसमारंभसरिसं, जतो सो विराधिज्जति[3] संपादिमादि य विराहेति । सावज्जं बहुलं जम्मि तं **सावज्जबहुलं** । चकारो हेतौ । एतमिति अनिलसमारंभं वत्थु । जतो **एतं तातीहिं ण सेवितं** अतो ण सेवितव्वं ॥ ३६ ॥ वाउक्कायसमारंभविसेसणत्थं भण्णति—

२८२. तालियंटेण पत्तेण साहाविहुंवणेण[4] वा ।
ण ते वीयितुमिच्छंति[5] वीयावेऊण वा परं ॥ ३७ ॥

२८२. **तालियंटेण पत्तेण०** सिलोगो । **तालियंटातीणि छज्जीवणियाभणिताणि** [ सुत्तं ५२ पत्रं ८९ ] । एतेहिं **ण ते [वी]यितुमिच्छंति, वीयावेतूण वा परं,** अणुमोदणमवि भणितमेव ॥ ३७ ॥

तालियंटादी उदीरणत्थमेव परिघेप्पंति अणुदीरणत्थेणावि—

२८३. जं[6] पि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुंछणं ।
ण ते वायमुदीरंति[7] जतं परिहरंति णं[8] ॥ ३८ ॥

२८३. **जं पि वत्थं व पायं वा०** सिलोगो । जं पि वत्थादि सरीरपालणत्थं धारिज्जति तेणावि अजतऽक्खेव-पप्फोडणातीहि **ण ते वायमुदीरंति** । परिभोग-धारणापरिहारेण **जतं परिहरंति णं** ॥ ३८ ॥

जतो तातीहिं सावज्जबहुलमिति ण सेवितं—

२८४. तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दोग्गतिवड्ढणं ।
वाउक्कायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३९ ॥

२८४. **तम्हा एयं वियाणित्ता०** सिलोगो । हेट्ठा पुढविकायादिक्कमेण भणितो ४ ॥ ३९ ॥ वाउसमारंभपरिहाराणंतरं वणस्सतिसमारंभपरिहारोवदेसत्थमिदं भण्णति—

२८५. वणस्सतिं[9] ण हिंसंति मणसा वयस कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजता सुसमाहिता ॥ ४० ॥

२८६. वणस्सतिं[10] विहिंसंतो हिंसति तु तदस्सिते ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ ४१ ॥

---

१ **अगणिकाय°** खं २-४ ॥ २ " निलओ जस्स नत्थि सो अणिलो " इति **वृद्धविवरणे** ॥ ३ **विधिराविज्जति** मूलादर्शे ॥ ४ **°हुयणे°** अचू० विना ॥ ५ **°ति नो वि वीयावए परं** खं २ हाटी० ॥ ६ **जं च वत्थं** खं ४ ॥ ७ **वाउमु°** खं ४ जे० वृद्ध० ॥ ८ **य** अचू० विना ॥ ९-१० **°स्सतिकायं** जे० । **°स्सइकायं** खं १-४ । **स्सयकायं** खं ३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८७. तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दोग्गतिवड्ढणं ।
वणस्सैतिसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४२ ॥

२८५–८७. **वणस्सतिं ण हिंसंति॰** सिलोगो । **वणस्सतिं विहिंसंतो॰** सिलोगो । **तम्हा एयं वियाणित्ता॰** सिलोगो । वणस्सतिअभिलावेण तिण्ह वि जहा पुढविकाये अत्थो ५ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

२८८. तसकायं ण हिंसंति मणसा वयस कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजता सुसमाहिता ॥ ४३ ॥

२८९. तसकायं विहिंसंतो हिंसति तु तदस्सिते ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ ४४ ॥

२९०. तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दोग्गतिवड्ढणं ।
तसकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४५ ॥

२८८–९०. एवं तसकाये वि तिण्ह सिलोगाण ६ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ एतं **कायछक्कं** । गता मूलगुणा । मूलगुणोवदेसाणंतरं तेसिमेव सारक्खणत्थमुत्तरगुणोवदेसो, महव्वतसारक्खणत्थमिव भावणातो । पढमोत्तरगुणो **अकप्पो** । सो दुविहो, तं॰—सेहठवणाकप्पो अकप्पठवणाकप्पो य । पिंड-सेज्ज-वत्थ-पत्ताणि अप्पप्पणो अकप्पितेण उप्पावियाणि ण कप्पंति, वासासु सव्वे ण पव्वाविज्जंति, उडुबद्धे अणला । अकप्पठवणाकप्पो इमो—

२९१. जाणि चत्तारिऽभोज्जाइं इसिणाऽऽहारमाईणि ।
ताइं तु विवज्जेत्ता संजमं अणुपालए ॥ ४६ ॥

२९१. **जाणि चत्तारिऽभोज्जाणि॰** सिलोगो । **जाणीति** वक्ष्यमाणउद्देसो, **चत्तारि** संखा, **अभोज्जाणि** अकप्पिताणि, **इसिणा** साधुणा **आहारमादीणि** आहारो आदी जेसिं ताणि आहारादीणि । **ताणि** तुसद्देण अणणुण्णातं सेज्जाती **विवज्जेत्ता** परिहरेत्ता सत्तरसविधं संजमं अणुपालए ॥ ४६ ॥

समाणसत्थभणितमातिसद्देणातिकट्ठं गतमेव भवति, जधा "भूवादयो धातवः" [पाणि॰ १ । ३ । १] इति । इमाणि पुण तहा ण सिद्धाणीति भण्णति—

२९२. पिंडं सेज्जं च वत्थं च चउत्थं पादमेव य ।
अकप्पितं ण इच्छंति पडिग्गाहिंति कप्पितं ॥ ४७ ॥

२९२. **पिंडं सेज्जं च वत्थं च॰** सिलोगो । **पिंडो** असणादि । **सेज्जा** आवसहो । **वत्थं** रयोहरणादि । **पादं** पडिग्गहादि । एतं **अकप्पितं ण इच्छंति । पडिग्गाहिंति** सव्वेसणासुद्धं **कप्पितं** ॥ ४७ ॥

पिंडादीणमेव—

२९३. जे णियागं ममायंति कीयमुद्देसियाऽऽहडं ।
वहं ते अणुजाणंति ईति वुत्तं महेसिणा ॥ ४८ ॥

---

१ °**स्सयकायसमा**° जे॰ । °**स्सइकायसमा**° खं १-३-४ ॥ २ **वियत्ता णं दो**° खं ४ ॥ ३ °**तारऽभो**° खं २ ॥ ४ **ताई तु** जे॰ ॥ ५ **विवज्जंतो** खं १-३ । **विवज्जिंतो** खं २ । **विवज्जंतो** शु॰ वृद्ध॰ ॥ ६ **इच्छेज्जा पडिग्गाहेज्ज कप्पियं** अचू॰ विना ॥ ७ **ते समणु**° अचू॰ हाटी॰ विना ॥ ८ **इई** जे॰ । **इय** खं ४ । **इइ** खं १-२-३ शु॰ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९३. **जे णियागं ममायं०** सिलोगो । **णियाग-कीय-मुद्देसिया[-ऽऽहडा]**णि जधा **खुड्डिया-यारए** [ सुत्तं १८ पत्रं ६० ] । जे ताणि **ममायंति** ममीकरेंति गेण्हंति **वहं ते अणुजाणंति** अणुमोतंति **इति वुत्तं एयं महेसिणा** तित्थगरेण ॥ ४८ ॥ जम्हा वहदोसदूसियमिदं—

२९४. तम्हा असण-पाणाती कीयमुद्देसियाऽऽहडं ।
वज्जयंति ठितप्पाणो निग्गंथा धम्मजीविणो ॥ ४९ ॥

२९४. **तम्हा असण-पाणाती०** सिलोगो । **तम्हा**दिति पुव्वुद्दिट्ठं वहदोसं कारणीकरेति, एतेण कारणेण **असण-पाणादि, आदि**ग्गहणं प्रकारवयणं, **कीयमुद्देसियाऽऽहडं** पुव्वभणितं **वज्जयंति** परिहरंति **ठितप्पाणो निग्गंथा धम्मजीविणो, ठियप्पाणो** संजमे भगवतामुपदेसे वा, निग्गतगंथा **निग्गंथा, धम्मजीविणो** धम्माविरोहवित्तिणो॥ ४९ ॥ अकप्पपरिहरणमुपदिट्ठं १ । **गिहिभायणवज्जण**त्थमिदं भण्णति—

२९५. कंसेसु कंसपातीसु कुंडमोएसु वा पुणो ।
भुंजेंति असण-पाणाती आयारात् परिभस्सई ॥ ५० ॥

२९५. **कंसेसु कंसपाते(?ती)सु०** सिलोगो । कंसस्स विकारो **कांसं**, तेसु वट्टगातिसु लीलापाणेसु, **कंसपाती** कंसपात्री, ताण उपभोगो प्रायस इति विसेसग्गहणं । **'कुंडमोयं कच्छा**तिसु कुंडसंथियं कंसभायणमेव महंतं । **पुणो** इति विसेसणे, रुप्पतलिकातिसु वा । **जे पढंति–"कोंड-कोसेसु वा"** तत्थ **कोंडगं** तिलपीलणगं, **कोसो** सरावाती । एतेसु **भुंजति असणपाणाति** जति ततो **आयारात् परिभस्सति** परिपडति ॥ ५० ॥ कंसपत्तातिपरिभोगे असंजमोवदरिसणत्थं भण्णति—

२९६. सीतोदगसमारंभे मत्तधोवणछड्डणे ।
जाणि छण्णंति भूताणि सो तत्थ दिट्ठो असंजमो ॥ ५१ ॥

२९६. **सीतोदगसमारंभे०** सिलोगो । सीतं उदगं **सीतोदगं** असत्थपरिणतं, 'एते उदएण न करेंति' त्ति संजतेसु समुद्दिट्ठेसु पक्खालणत्थमुदगं समारभंति, तम्मी **सीतोदगसमारंभे । मत्तं** भायणं तम्मि धोये **धोवणछड्डणे** सति, **जाणी**ति छण्णमाणुदेसो, **छण्णंति** "क्षणु हिंसायामिति" हिंसिज्जंति **भूताणी**ति जीवा, **सो** इति निद्देसवयणं, छणणसंभवो–पुढविक्कायो जत्थ छड्डिज्जति, आऊ जेण धोव्वति, तेऊ चुल्लिमादि सण्णिकरिसे, वाऊ तत्थेव वेगेण वावडंतस्स, वणस्सति हरितादि, तसा पूतरग-पिपीलिकादि । एवं संभवतो **सो तत्थ दिट्ठो** केवलनाणेण भगवता, अथवा **दिट्ठ** इति उवदेसितो, पच्चक्ख इति वा **दिट्ठो असंजमो** अजयणा ॥ ५१ ॥

एतं दुगुंछापत्तियं । इदं पुण विणा वि दुगुंछाए—

२९७. पेच्छेकम्मं पुरेकम्मं सिया तत्थ ण कप्पई ।
एँतदट्ठं ण भुंजंति णिग्गंथा गिहिभायणे ॥ ५२ ॥

---

१ °**पाणाइं** खं १-२-४ जे० ॥ २ **कंसपातेसु** अचू० विना । "**कंसपाएसु** नाम कंसपत्तीओ भण्णंति, जं वा किंचि अन्नं तारिसं कंसमयं तं कंसपाएण गहियं ति" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ३ **कोंडकोसेसु** अचूपा० । **कुंडकोसेसु** वृपा० ॥ ४ **भुंजंतो असण°** अचू० वृद्ध० विना ॥ ५ **आयारा परि°** अचू० विना ॥ ६ "**कुंडमोयो** नाम हत्थिपदसंठियं तं कुंडमोयं । 'पुणो'सद्दो विसेसणे वट्टति । किं विसेसयति ? जहा अन्नेसु सुवन्नादिभायणेसु त्ति । **अन्ने** पुण एवं पढंति—'**कुंड-कोसेसु वा पुणो**' तत्थ **कुंडं** पुढविमयं भवति, **कोस**ग्गहणेण सरावादीणि गहियाणि " इति **वृद्धविवरणे** ॥ ७ °**धोयण°** खं २ अचू० वृद्ध० विना ॥ ८ **भूयाइं दिट्ठो तत्थ असं°** खं १-२-३-४ जे० शु० । **भूयाइं सोऽत्थ दिट्ठो असं°** हाटी० । **भूयाइं एसो दिट्ठो असं°** वृद्ध० ॥ ९ **पच्छाकम्मं** जे० अचू० विना ॥ १० **एयमट्ठं** अचू० विना ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९७. **पच्छेकम्मं पुरेकम्मं०** सिलोगो। **पच्छेकम्मं** पडियाणिते संजतेहिं। **पुरेकम्मं** संजताणं दातव्वमिति धोतुं ठावेति। अधवा 'भुत्तेसु पच्छा भुंजीहामो, तुरियं वा पुरतो भुंजंति, वरं ते भुंजंता' [1]एवमोसक्कणुस्सक्कणेण पुरेकम्म-पच्छेकम्मया सिया इति संभवो भण्णति। होज्ज एतं गिहिभायणग्गहणे अतो **न कप्पइ**, एस सिस्सउवदेसो। [2]एवंधम्मियादरिसणत्थमुपपातिज्जति–**एतदट्ठं ण भुंजंति, एते** पच्छेकम्मादयो दोसा इति **ण भुंजंति** अतो ण भुंजितव्वं २ ॥ ५२ ॥ [ **१ पलियंक-]गिहिणिसेज्जवज्जणं** ति दारं। जहा गिहिभायणे पच्छेकम्मादिदोसा तधा गिहिणिसेज्जाए वीति भण्णति—

२९८. **आसंदी-पलियंकेसु मंच-मासालएसु वा।**
**अणायरियमज्जाणं [3]आसइत्तु सइत्तु वा ॥ ५३ ॥**

२९८. **आसंदी-पलियंकेसु०** सिलोगो। **आसंदी** आसणं, **पलियंको** पल्लंकओ, **मंचो** मंचको जो वा पेक्खणएसु विरइज्जति, **आसालओ** सावट्ठंभमासणं। एतेसु **अणायरियमज्जाणं, अणायरणीयं** अकरणीयमिदं, **अज्जा** साधव एव, तेसिं **आसइत्तु** उवेसिउं **सइत्तु** णिवज्जिउं ॥ ५३ ॥

२९९. **[4]णाऽऽसंदी-पलियंकेसु ण णिसेज्जा ण पीढए।**
**णिग्गंथाऽपडिलेहाए बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥ ५४ ॥**

२९९. **णाऽऽसंदी-पलियंकेसु०** एस सिलोगो **केसिंचि** णेव अत्थि। जेसिं अत्थि तेसिं "तिण्हमण्णतरागस्स" ( सुत्तं० ३०४ ) पत्तिए, अहवा तस्स जयणा एसा। जे ण पढंति ते सामण्णमेव जयणोवदेसमंगीकरेंति, जता कारणं तदा पडिलेहाए, ण अपडिलेहिय ॥ ५४ ॥ आसंदादिदोसोववायणत्थमिदं भण्णति—

३००. **गंभीरविजया एते पाणा दुप्पडिलेहगा।**
**[5]आसंदी-पलियंका य एतमट्ठं [6]विवेज्जिता ॥ ५५ ॥**

३००. **गंभीरविजया एते०** सिलोगो। **गंभीरं** अप्पगासं, **विजयो** विभागो, गंभीरो विजयो जेसिं ते गंभीरविजया, **एते** इति आसंदादयो। अतो तेसु **पाणा दुप्पडिलेहगा** दुव्विसोहगा, वद्ध-सुंबातिविवरगता कुंथु-मंकुणादयो दुरवणेया, उववविसंतेहिं जंते इव पीलिज्जंति। **आसंदी-पलियंका य,** चसद्देण मंचादयो वि, **एतमट्ठं** एतेणं कारणेणं 'मा पाणोवघातो भविस्सति' त्ति **विवज्जिता** ॥ ५५ ॥

आसंदी-पलियंकवज्जणे इदमवि भूयो कारणमुपदिस्सति–

३०१. **गोयरग्गपविट्ठस्स निसेज्जा जस्स कप्पति।**
**इमेरिसमणायारं आवज्जति अबोहिकं ॥ ५६ ॥**

३०१. **गोयरग्गपविट्ठस्स०** सिलोगो। णिसीयणं **निसेज्जा**। से **गोयरग्गपविट्ठस्स जस्स** साधुणो **कप्पति** वट्टति सो **इमं** वक्ष्यमाणं **एरिसं** एवंप्रकारं **अणायारो** अमज्जाया तं **आवज्जति** पावति अबोधिकारिं **अबोहिकं** ॥ ५६ ॥ तस्स अणायारस्स विसेसेण उवदरिसणत्थमिदं भण्णति–

---

१ एवमवष्वष्कणोत्ष्वष्कणेन ॥ २ एवंधर्मितादर्शनार्थमुपपाद्यते ॥ ३ **आसयित्तु सयित्तु** खं ३ ॥ ४ **आचार्यान्तरमतेनायं** सूत्रश्लोको नास्ति। **वृद्धविवरणकृता** तु **आसंदी-पलियंकेसु** इति पूर्वसूत्रश्लोकपाठभेदरूपेणायं सूत्रश्लोको निर्दिष्टो व्याख्यातश्च दृश्यते। सूत्रप्रतिषु पुनः सर्वास्वप्ययं श्लोको विद्यत एवेति ॥ ५ **आसंदी पलियंको य** खं २ हाटी० ॥ ६ **विवज्जए** खं ४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०२. विवत्ती[1] बंभचेरस्स पाणाणं[2] अवहे वहो ।
वणीमगपडिग्घातो[3] पलिकोधो[4] अगारिणं ॥ ५७ ॥

३०२. **विवत्ती बंभचेरस्स०** सिलोगो । अभिक्खणदरिसण-णिसेज्जोवगतस्स संभासणेहि बंभचेरविवत्ती संभवति । **पाणाणं अवधे वधो,** अवहत्थाणे ओरंतो[5] । कहं ? अविरतियाए सहाऽऽलवेंतस्स जीवंते तितिरए विक्केणुए उवणीए, 'कहं जीवंतमेतस्स पुरतो गेण्हामि ?' त्ति वत्थऽद्धंतवलणसण्णाए गीवं वलावेति, एवमवहवधो संभवति, **पाणाणं अवधे वधो । वणीमगपडिग्घातो,** 'कहमालवेंतसमीवातो उट्ठेमि ?' त्ति भिक्खयरा अतिच्छावेति, एवमंतराइयदोसो । ते य अवण्णं वदंति–समणएण सह उल्लावेति । **पलिकोधो अंगारिणं[6],** परिकोध एव **पलिकोधो, "पडिकोधो" वा** समंता कोधो, "डकार-लकार-रेफाणामेकत्तं" इति कातुं । तीसे पति-दियरातीणं भवति चेतसि–अहो ! पव्वतियएण मंधुराऽऽराधिता[7] ण किंचि घरकरणीयमवेक्खति, अम्हे वा[8] तिसिय-भुक्खिते आगए य ण गणेति । अहवा विरूवभावपलिकोधो संभवति–**इमं च एरिसमणायारं[9] आवज्जति अबोधितं** [ सुत्तं ३०१ ] ॥ ५७ ॥

३०३. अगुत्ती बंभचेरस्स इत्थीओ यावि संकणं ।
कुसीलवड्ढणं थाणं दूरतो परिवज्जए ॥ ५८ ॥

३०३. **अगुत्ती बंभचेरस्स०** सिलोगो । इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं णिज्झायमाणस्स, ताण य सयणा-ऽऽसणाइं निसेवमाणस्स बंभव्वतस्स **अगुत्ती** भवति । **इत्थीओ** वा सो संकिज्जेज्ज–आयरेणोवदिसति, मुहं च से पुलएति, ण एतं सोहणं । सा व सविलासावलोकिणी संकिज्जेज । चसद्देण उभयमवि आदरवदिति संकामुप्पादेज्जा । एवं दोसपसूती अतो **कुसीलवड्ढणं थाणं** कुच्छितं सीलं जं ठाणं वड्ढेति तं **दूरतो परिवज्जए** ॥ ५८ ॥ सुत्तेण चेव गिहंतरणिसेज्जाववातत्थमिदं भण्णति—

३०४. तिण्हमण्णतरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पति ।
जराए[10] अभिभूतस्स १ वाहितस्स २ तवस्सिणो ३ ॥ ५९ ॥

३०४. **तिण्हमण्णतरागस्स०** सिलोगो । **तिण्हं**[11] संखाणं, उवरिं जे भण्णिहिंति, **अण्णतरागस्स** एतेसिं कस्सइ **निसेज्जा** भणिता **जस्स** सा **कप्पति** सो एतेसिं कोति होज्ज, ण पुण अण्णो । तिण्ह उद्देसो–**जराए अभिभूतस्स १ वाहितस्स २ तवस्सिणो ३, अभिभूत** इति अतिप्रपीडितो, एवं **वाहितो** वि, **तवस्सी** पक्ख-मासातिखमणकिलंतो, एतेसिं णेव गोयरावतरणं । जस्स य पुण सहायासतीए अत्तलाभिए वा हिंडेज्ज तता एतेसिं निसेज्जा अणुण्णाता । एतेसिं बंभविवत्ति-वणीमगपडिघातादि जयणाए परिहरंताणं णिसेज्जा ३ । ४ ॥ ५९ ॥

एतेसं णिसेज्जा । **सिणाणमिति** दारं–जराभिभूतादीण णिसेज्जा अणुण्णाता, पसंगेण धम्मसापरिगताण सिणाणं । अतिप्पसंगनिवारणत्थमिदं भण्णति—

३०५. वाहितो[12] वा अरोगो[13] वा सिणाणं जो तुं[14] पत्थए ।
वोक्कंतो होति आयारो जढो हवति संजमो ॥ ६० ॥

१ अगुत्ती सूत्रकृ० सूत्र ४५५ चूर्णौ ॥ २ पाणाणं च वहे वहो अचू० वृद्ध० विना । सूत्रकृताङ्ग ४५५ सूत्रचूर्णावप्ययमेव पाठो दृश्यते ॥ ३ पडीघाओ खं ३ शु० ॥ ४ पडिकोहो य अगा° खं १–२–३–४ जे० वृद्ध० । पडिकोहो यऽगा° शु० । पडिकोघो अगा° अचूपा० ॥ ५ ओरतो आरतः, 'ओरो' इति सौराष्ट्रगूर्जरभाषायां प्रसिद्धः प्रयोगः ॥ ६ आगारिसम्मिस्सणं परि° मूलादर्शे ॥ ७ मधुरावाचिता ण मूलादर्शे ॥ ८ वा वि २ खं १–३–४ ॥ ९ °रागस्स खं १–२–३–४ शु० वृद्ध० । °रागस्सा जे० ॥ १० जराय अ° खं ४ ॥ ११ असंखाणं तिण्हं उवरिं मूलादर्शे ॥ १२ वाहीओ वा खं २–४ ॥ १३ अरोगी वा अचू० वृद्ध० विना ॥ १४ तु इच्छए वृद्ध० ॥

Jain Education International  For Private & Personal Use Only  www.jainelibrary.org

**३०५. वाहितो वा अरोगो वा०** सिलोगो। **वाही** पुव्वभणितो, सो जस्स संजातो सो **वाहितो**। **अरोग** इति वाहियजातीय एव। जराभिभूत-तवस्सीण कोति सरीरस्स पाणितेणाभिसेयणं **सिणाणं, जो** इति उद्देसवयणं, **पत्थणं** अभिलसणं, तं **जो वाहितो अरोगो वा सिणाणं पत्थए**। तेण **वोक्कंतो होति आयारो, वोक्कंतो** वोलीणो यदुक्तम्। **संजमो** सत्तरसविहो, सो **जढो** परिचत्तो। आयार-संजमविसेसो— **आयारो** चक्कवालसामायारी, तेण सत्तरसविधस्स [ संजमस्स ] अणुपालणं ॥ ६० ॥

सिणाणगतअसंजमदोससमुब्भावणत्थमिदं भण्णति—

> ३०६. संतिमे सुहुमा पाणा घसीसु[1] भिलुहासु य।
> [2]जे तु भिक्खू सिणायन्तो वियडेणु[3]प्पीलावए ॥ ६१ ॥

**३०६. संतिमे सुहुमा पाणा०** सिलोगो। **संति** विज्जंति, **इमे** इति चक्खुगेज्झा, पगरिसेण सण्हा **सुहुमा, पाणा** जीवा, ते तसा कुंथुमादि, थावरा पिधियादि[4] ति। तेसिं विसेसेण झुसिरट्ठाणेसु **घसीसु भिलुहासु य** गसति सुहुमसरीरजीवविसेसा इति **घसी** अंतोसाणो भूमिपदेसो पुराणभुसातिरासी वा, कण्हभूमिदली **भिलुहा**। जे इति सुहुमसत्तुद्देसो, तुसद्देण न केवलं **घसि-भिलुधासु** समभूमीए वि। भिक्खणसीलो **भिक्खू सिणायन्तो** ण्हाणारंभं करेंतो **वियडेण** फासुपाणिएणावि **उप्पीलावए** उप्पीलेज्जा। तेसिं तं अत्थग्घमतरणीयमिति विणासमुपगच्छंति, एस दोस इति ॥ ६१ ॥

> ३०७. तम्हा ते ण सिणायंति सीतेण उसिणेण वा।
> जावज्जीवं वयं घोरं असिणाणमहिट्ठ[5]ए ॥ ६२ ॥

**३०७. तम्हा ते ण सिणायंति०** सिलोगो। **तम्हा** इति पुव्वभणितं कारणं पडिनिद्दिसति। **ते** इति 'पुव्वरिसिचरितमणुचरितव्वं' ति तेसिं गहणं, जहा तेहिं वज्जियं सिणाणमेवं वज्जणीयं। **सीतेण वा** सुहफरिसेण **उसिणेण वा** आउविणासकारिणा। बंभचेरगुत्तिनिमित्तं कायकिलेसो प्पमा(?घम्मा)तिसु एवं। अतो **जावज्जीवं वयं घोरं, जावज्जीवमिति** जाव प्राणा धरंति **वयं** अण्हाणगं **घोरं** दुचरं **असिणाणं** अण्हाणगं तं **अधिट्ठेज्ज** इति ॥ ६२ ॥

सउव्वट्टणं ण्हाणं भवति, ण्हायस्स वा सरीरसुगंधिकरणे इमाणि [6]पतुज्जंतीति भण्णति—

> ३०८. सिणाणं [7]अधवा कक्कं लोद्धं पउमगाणि य।
> गायस्सुव्वट्टणट्ठाए णाऽऽयरंति कयायि वि ॥ ६३ ॥

**३०८. सिणाणं अदुवा कक्कं०** सिलोगो। **सिणाणं** सामइगं उवण्हाणं। **अधवा** गंधवट्टओ **कक्कं** ण्हाणसंजोगो वा। **लोद्धं** कसायादि अपंडुरच्छविकरणत्थं दिज्जति। **पउमं** पउमकेसरं कुंकुमं वा। **च**सद्देण जं एवंजातीयं तं घेप्पति। जधुद्दिट्ठाइं **गायस्सुव्वट्टणट्ठाए, गातं** सरीरं तस्स उव्वट्टणानिमित्तं **णाऽऽयरंति** भगवंतो साधवो **कयायि** कहिंच घम्माभिघातावत्थंतरे ५ ॥ ६३ ॥

**सोभवज्जण**मिति दारं—तस्साभिसंबंधो, जति कोति वयेज्ज—सिणाणे उप्पीलावणदोसो, पउमादिसु को दोसो ?, भण्णति—विभूसाइ वा वि विभूसादोस एवेति नियमिज्जति—

---

१ घसाहि भिलुगाहि य वृद्ध०। घसासु भिलुगासु य खं १-२-३-४ शु० हाटी०। घसासु भिलुघासु य जे०। घसीसु भिलुधासु य अचू० ॥ २ जे य भिक्खू सिणायंति खं ४ ॥ ३ °णुप्पला° खं १ शु० हाटी० ॥ ४ पृथ्व्यादि ॥ ५ °महिट्ठगा खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी० ॥ ६ पभुज्जं° मूलादर्शे ॥ ७ अदुवा खं १ अचू० विना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०९. [1]णिगिणस्स वा वि मुंडस्स दीहरोम-[2]णहस्सिणो ।
मेहुणा उवसंतस्स किं विभूसाए कारियं ? ॥ ६४ ॥

**३०९. णिगिणस्स वा०** सिलोगो । **णिगिणो** णग्गो । **मुंडो** चउव्विहो । णाम-ट्ठवणाओ गताओ । दव्वमुंडो आदिच्चमुंडादि । इंदिय-णोइंदियाइदमेण भावमुंडो । दीहाणि रोमाणि कक्खादिसु जस्स सो **दीहरोमो, आश्री** कोटी, णहाणं आश्रीयो **णहस्सीयो,** णहा जदि वि पडिणहादीहि अतिदीहा कप्पिज्जंति तह वि असंठविताओ णहथूराओ दीहाओ भवंति । दीहसद्दो पत्तेयं भवति, दीहाणि रोमाणि णहस्सीयो य जस्स सो **दीहरोम-णहस्सी** तस्स । तस्सेवंरूवस्स **मेहुणा उवसंतस्स** ततो णियत्तस्स कामिणो जोग्गाए **किं विभूसाए** मंडणेण **कारियं** प्रयोजनम् ? ॥ ६४ ॥

सोभवज्जणत्थं पत्थुतं, तत्थ "किं विभूसाए कारिय"मिति भणितं । विभूसादोसुब्भावणत्थमिदं भण्णति—

३१०. विभूसावत्तियं भिक्खू कम्मं बंधति चिक्कणं ।
संसारसागरे घोरे जे[3]णं भमति दुरुत्तरे ॥ ६५ ॥

**३१०. विभूसावत्तियं भिक्खू०** सिलोगो । **विभूसावत्तियं** विभूसणं **विभूसा, विभूसावत्तियं** विभूसापच्चयं तन्निमित्तं **भिक्खू कम्मं बंधति चिक्कणं** चिप्फिलं अविसदं । तं च एवंफलं—**संसारसागरे घोरे जेणं भमति दुरुत्तरे,** सागर इव सागरो, संसार एव सागरो **संसारसागरो घोरो** भयाणगो, तम्मि **जेण** कम्मुणा सुचिरं भमति । दुक्खमुत्तरिज्जतीति **दुरुत्तरो** ॥ ६५ ॥

भट्टारगाओ केवलणाणविदियत्थातो आगम इति आगमगोरवावधारणत्थं **सेज्जंभवसामी** भणति—

३११. विभूसावत्तियं चेतं बुद्धा मण्णंति तारिसं ।
सा[4]वज्जबहुलं चेतं णेयं तादीहिं सेवितं ॥ ६६ ॥

**३११. विभूसावत्तियं०** सिलोगो । **विभूसावत्तियं** पूर्ववत् । **च**सद्दो काकुणा चिक्कणताविसेसं दरिसेति । **एत**मिति जमणंतरसिलोगभणितं । **बुद्धा** इति भट्टारगे परमगुरौ गौरवेण बहुवयणं, सव्व एव **वा** तित्थयरा एवं **मण्णंति** जाणंति **तारिस**मिति जहोववण्णितदोसावधारणं । सव्वधा **सावज्जबहुलं चेतं** उदगोवण्हाणाति गवेसण-पीसणादीहि सावज्जबहुलमिति अतो **णेयं तादीहि सेवितं** ति ॥ ६६ ॥ सोहवज्जणं गतं उत्तरगुणा य । समत्ताणि अट्ठारस ठाणाणि । अट्ठारसठाणफलोवसंहरणणिदरिसणत्थमिदं भण्णति—

३१२. खवेंति अप्पाणममोहदंसिणो, तवे रया सं[5]जम अज्जवे गुणे ।
धुणंति पावाइं पुरेकडाइं, नवाइं पावाइं ण ते करेंति ॥ ६७ ॥

**३१२. खवेंति अप्पाणममोह०** वृत्तम् । **खवेंति** कृशीकुर्वन्ति **अप्पाणं** [6]अप्पा इति एस सद्दो जीवे सरीरे य दिट्ठप्रयोगो, जीवे जधा मतसरीरं भण्णति—गतो सो अप्पा जस्सिमं सरीरं, सरीरे—थूलप्पा किसप्पा, इह पुण तं खविज्जति त्ति अप्पवयणं सरीरे ओरालियसरीरखवणेण, कम्मणं वा सरीरखवणमिति, उभयेणाधिकारो । **मोहं**

---

१ **नगिण°** शु० हाटी० वृद्ध० । **निगण°** खं १-२ जे० ॥ २ **°नहंसिणो** अचू० विना ॥ ३ **जेणं पडइ दु°** जे० अचू० विना ॥ ४ **सावज्जाबहुलं** शु० । **सावज्जं बहुलं** खं ४ जे० ॥ ५ **संजमे** जे० ॥ ६ "आह—किं ताव अप्पाणं खवेंति ? उदाहु सरीरं ? ति । आयरिओ भणइ—अप्पसद्दो दोहि वि दीसइ—सरीरे जीवे य । तत्थ सरीरे ताव जधा-एसो संतो ( ? सत्तो ) दीसइ, मा णं हिंसिहिसि । जीवे जहा-गओ सो जीवो जस्सेयं सरीरं । तेण भणितं '**खवेंति अप्पाणं**' ति, तत्थ सरीरं ओदारिकं कम्मगं च, तत्थ कम्मएण अधिगारो, तस्स य तवसा खए कीरमाणे ओदारियमवि खिज्जइ" इति **वृद्धविवरणे** ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवरीयं, ण **मोहममोहं,** अमोहं पस्संति **अमोहदंसिणो**। बारसविहे **तवे रता,** सत्तरसविहे **संजमे** रता इति वट्टति । उज्जुभावो **अज्जवं** तम्मि वि रता इति । **गुणे** इति एतम्मि चेव संजमगुणे । ते एवं गुणसुत्थिता **धुणंति पावाइं पुरेकडाइं, धुणंति** जीवातो विकप्पेंति, पायंतीति **पावाणि,** अणंतभवोवातियाणि **पुरेकडाइं,** तवसा गुत्ति-समितिसमवत्थिता **णवाणि** एत्ताहे उवणीयमाणाणि **पावाणि ण ते करेंति,** एवंगुणा भगवंतः ॥ ६७ ॥ णिदरिसणभूतं रिसिसमुकित्तणं। अट्ठारसठाणफलनिगमणत्थं भण्णति—

३१३. सतोवसंता अममा अकिंचणा, सविज्जविज्जाणुगता जसंसिणो ।
उडुप्पसण्णे विमले व चंदिमा, सिद्धिं विमाणाणि व[1] जंति ताइणो ॥ ६८ ॥

त्ति[2] बेमि ॥

॥ [3]धम्मत्थकामज्झयणं छट्ठं सम्मत्तं ॥

**३१३. सतोवसंता०** वृत्तम् । सव्वकालं **सता, उवसंता** अकोवणा, **अममा** लोभविरहिता, एवं राग-दोसविप्पमुक्का । **अकिंचणा,** किंचणं चतुव्विधं, नाम-ट्ठवणातो गतातो, दव्वकिंचणं सुवण्णादि, भावे अण्णाण-अविरइ-मिच्छत्ताणि, तं जेसिं दव्व-भावकिंचणं णत्थि ते **अकिंचणा**। **सविज्जविज्जाणुगता, स्व** इति अप्पा, **विज्जा** विण्णाणं, आत्मनि विद्या **सविज्जा** अज्झप्पविज्जा, विज्जागा( ? ग)णातो [वि]सेसिज्जति, अज्झप्पविज्जा जा **विज्जा** ताए **अणुगता सविज्जविज्जाणुगता** । जसो जेसिं ते **जसंसिणो** । ते विज्जापभावेण **उडुप्पसण्णो विमले व चंदिमा,** उडू[4] छ, तेसु पसण्णो **उडुप्पसण्णो,** सो पुण सरदो, अहवा उडू एव पसण्णो तम्मि **विमले व चन्द्रमा चन्द्र** इत्यर्थः, ज[5]धा मेघ-रतोविरहिते सरये अधिकं निम्मलो चंदो भवति, एवं अट्ठविधकम्ममलुम्मुक्का **सिद्धिं** परिणेव्वाणं गच्छंति, विमलभूतप्राया **विमाणाणि** उक्कोसेण अणुत्तरादीणि । एवं सिद्धिं वा विमाणाणि वा । वासद्दस्स र[6]हस्सता पागते, जहा—

हे जं व तं व आसिय ! जत्थ व तत्थ व सुहोवगतणिद्द ! ।
जेण व तेण व संतुट्ठ ! **वीर** ! मुणितो हु ते अप्पा ॥ १ ॥

**जंति** गच्छंति **ताइणो** अट्ठारससु ठाणेसु ठिता । एस फलं मयं ॥ ६८ ॥ **इति बेमि** पूर्ववत् ॥ **णयाणायम्मि गेण्हियव्वे०** गाधा ॥ **सव्वेसिं पि०** गाहा ॥ दो वि भणितातो ॥

**धम्म-ऽत्थ-कामकधणा अट्ठारसदोसवण्णणं विधिणा ।**
**एतेसु ठितस्स य फलमज्झयणस्सेस संखेवो ॥ १ ॥**

॥ **धम्मत्थकामपयविभागविवरणलेसो समत्तो** ॥ ६ ॥

---

१ **उवेंति** खं १-३-४ शु० हाटी० वृद्ध० । **वयंति** खं २ जे० ॥ २ **त्ति बेमि ॥ आयारकहा एसा महई गंथग्गओ मुणेयव्वा । अट्ठाहियाए सट्ठीए संखिया परिसमत्ता** ॥ खं ३ ॥ ३ **धम्मत्थकाम समत्ता** जे० । **धम्मत्थकाम नामऽज्झयणं सम्मत्तं** खं ४ ॥ ४ ऋतवः षट् ॥ ५ यथा मेघ-रजोविरहिते शरदि ॥ ६ ह्रस्वता प्राकृते ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७

## [ सत्तमं वक्कसुद्धिअज्झयणं ]

**॥ नमो सुयदेवयाए भगवतीए ॥**

धम्मट्ठितस्साणुक्कमेण विदितायारवित्थरस्स परोवदेससामत्थोववण्णणमुपदिस्सति, सव्ववयणदोसपरिहरणत्थमणवज्जा वक्कसुद्धी, एतेणाणुक्कमेण आगतस्स **वक्कसुद्धीअज्झयणस्स** चत्तारि अणिओगद्दारा जहा **आवस्सए**। नामनिप्फण्णो से वक्कसुद्धी, अतो वक्कं निक्खिवितव्वं, सुद्धी निक्खिवितव्वा। पढमं वक्कं निक्खिप्पति—

**निक्खेवो तु चउक्को वक्को दवं तु भासदव्वाइं।**
**भावे भासासद्दो तस्स यं एगट्ठिया इणमो॥ १ ॥ १७१ ॥**

**निक्खेवो तु चउक्को०** गाधा। नाम-ठवणातो गतातो। दव्ववक्कं वक्कजोग्गा दव्वा। ताणि चेव वक्कभावपरिणामिताणि निगिरिज्जमाणाणि तं भावं भावयंतीति भाववक्कं। वक्कएगट्ठिताणि ॥ १ ॥ १७१ ॥

**वक्कं वयणं च गिरा सरस्सती भारती[2] य गो वाणी।**
**भासा पण्णवणी देसणी य वइजोग[3] जोगे य॥ २ ॥ १७२ ॥**

**वक्कं वयणं च गिरा०** गाधा। वयियव्वं **वक्कं**। वयंति तेण अत्थमिति **वयणं**। णिगिरंति तामिति **गिरा**। सरो से अत्थि त्ति **सरस्सती**। अत्थभारं धरेतीति **भारती**। णिसिरिया लोगंतं गच्छतीति **गो**। वणयतीति **वाणी**। भासणेण **भासा**। पण्णविज्जति तीए इति **पण्णवणी**। अत्थनिद्दिसणे **निद्देसणी**। जीवस्स वायाकम्मं **वइजोगो**। सुहा-ऽसुहजोयणं **जोगो** ॥ २ ॥ १७२ ॥ दव्वभासा पुण इमा—

**दव्वे तिविधा गहणे य णिसिरणे तह भवे पराघाते।**
**भावे दव्वे य सुते चरित्तमाराहणी चेव॥ ३ ॥ १७३ ॥ दारगाहा ॥**

**दव्वे तिविधा गहणे य णिसिरणे०** गाधापुव्वद्धं। दव्वभासा तिविधा, तं०—**गहणं णिसिरणं पराघातो य**। वइजोगपरिणतस्स अप्पणो गहणसमए भासादव्वोपादाणं **गहणं**। तेसिं चेव उर-कंठ-सिर-जिब्भामूल-तालु-णासिका-दसणोट्ठेसु जहाथाणसम्मुच्छिताणं[4] विसज्जणं **निसिरणं**। निसिट्ठेहिं विघट्टिताणं तप्पाजोग्गाण दव्वाण भासापरिणती **पराघातो**। एसा दव्वभासा। [ भावभासा ] इमेण गाहापच्छद्धेण भण्णति—**भावे दव्वे य सुते०** अद्धगाधा। परावबोधायिकयाभिप्पायस्स[5] सयमवधारितत्थस्स वेदणादिव परं गमं अप्पसवित्तिरूवं वयणपणिधाणं **भावभासा**। सा तिविधा, तं जधा—**दव्वभावभासा सुतभावभासा चरित्तभावभासा**। दव्वविभावणं **दव्वभावभासा**, जधा घडग्राहकघडविण्णाणं ॥ ३ ॥ १७३ ॥

सा आराहणाति चतुव्विधा—

**आराहणी यु[6] दव्वे सच्चा मोसा विराहणी होति।**
**सच्चामोसा मीसा असच्चमोसा य पडिसेधो॥ ४ ॥ १७४ ॥**

**आराहणी यु०** गाधा। जधत्थं दव्वं आराधेति दव्वाराधणी **सच्चा**। तव्विवरीया दव्वविराधणी **मोसा**। तधा अण्णहा य पडिवायेति आराहणी-विराहणी **सच्चामोसा**। आराधण-विराधणविरहितं [ पडिसे ]धनिमित्तं अत्थसमूहम**सच्चामोसा** ॥ ४ ॥ १७४ ॥ तं सच्चं दसविधं—

---

१ उ वी० सा० हाटी० ॥ २ **भारही** सा० वृद्ध० ॥ ३ **वयजोग** सा० ॥ ४ °**संपुच्छिताणं** मूलादर्शे ॥ ५ परावबोधादिकृताभिप्रायस्य ॥ ६ उ खं० पु० वी० सा० हाटी ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**जणवत १ संमुति २ ट्ठवणा ३ णामे ४ रूवे ५ पडुच्चसच्चे ६ य ।**
**ववहार ७ भाव ८ जोगे ९ दसमे ओवम्मसच्चे १० य ॥ ५ ॥ १७५ ॥ दारं ।**

**जणवत समुति॰** गाधा । भिण्णदेसिभासेसु जणवदेसु एगम्मि अत्थे संदेण-वंजण-कुसण-जेमणाति भिण्णमत्थपच्चायणसमत्थमविप्पडिवत्तिरूवेणेति **जणवदसच्चं १** । कुमुद-कुवलय-तामरसा-ऽरविंदादीण समाणे पंकसंभवे गोपाल-बालातिसम्मतमरविंदं पंकजमिति **समुतिसच्चं २** । गणितोवतेसट्ठाणसंभवेण सयक्खनिक्खेवाति **ट्ठवणासच्चं ३** । जीवस्स अजीवस्स वा तदत्थसंबोधगं संविक्करण ( ? बोधगसन्निधिकरणेण ) सच्चं इति **नामसच्चं ४** । अतग्गुणस्स तधारूवधारणं जधा उप्पट्टणपव्वतिस( ? स्स ) **रूवसच्चं ५** । समयपतिट्ठितरूवं परापेक्खं, जधा अणामिगाए काणंगुलिं मज्झिमंगुलिं च प्रति दिग्घता ह्रस्सता य एवमादि **पडुच्चसच्चं ६** । 'पव्वओ डज्झति, गलति भायण'मिति पव्वयत्थं तणं डज्झति ण पाधाणणिचयायि, भायणातो उदगं गलति, 'भवति एवं लोकव्ववहारो' त्ति **ववहारसच्चं ७** । जंधाभिप्पायवदणंतरालावो–घडविवक्खाया घडाभिधानं, भावो तहावत्थित इति **भावसच्चं ८** । परसंजोगेण तदभिलावो जधा–छत्रजोगेण छत्री, एवमाति **जोगसच्चं ९** । गुणेक्कदेसेण सारिक्खोववातणं–जहा चन्द्रमुही **देवदत्ता** इति **ओवम्मसच्चं १०** ॥ ५ ॥१७५॥

मोसा वि दसविधा, तं०—

**कोधे १ माणे २ माया ३ लोभे ४ पेज्जे ५ तहेव दोसे ६ य ।**
**हास ७ भये ८ अक्खाइय ९ उवघाते णिस्सिता १० दसमा ॥ ६ ॥ १७६ ॥ दारं ।**

**कोधे माणे॰** गाधा । जं कोधाभिभूतो विसंवातणाबुद्धीए किंचि सब्वेण परं पत्तियावेंतो सच्चमसच्चं वा वदति तस्स आसयविवत्तियो तं घुणकतक्खरपडिरूवगमिवाणक्खरसच्चं मुसा, जधा–कोति धीयाराती साधुणा पंथमापुच्छितो विसंवादेति, अवण्णं वा वदति, एवं माणातिविभासा, एसा **कोधणिस्सिता १** । जं अत्तुक्कोसेण अभूतमवि पभूतं तवाति पगासेति एसा **माणनिस्सिता २** । मायाकारगचक्खुमोहणसगडगिलाणाति **मायाणिस्सिता ३** । वणिजातिकूडमाणं समयकरणं वा **लोभणिस्सिता ४** । अतिपेम्मेण 'दासो धं तव' एवमादि चाडुकरणं **पेज्जनिस्सिता ५** । पडिनिविट्ठस्स तित्थकरादीण वि अपवातकरणं **दोसनिस्सिता ६** । परिहासपुव्वं पिता वि एतारिसेण वाधिणा विणट्ठ इति **हासनिस्सिता ७** । **भये** णाणाविधचाडुवयणे पलवतीति **भयनिस्सिता ८** । अक्खाइयासु अप[च]क्खवत्थुगतमणेगकुच( ? च्छ- )सोभावयणमुण्णीयते **अक्खातियानिस्सिता ९** । अभक्खाणवयण**मुपघातनिस्सिता १०** ॥ ६ ॥ १७६ ॥ मोसा गता । सच्चामोसा इमा दसविधा, तं०—

**उप्पण्ण १ विगत २ मीसग ३ जीव ४ मजीवे ५ य जीवअज्जीवे ६ ।**
**तहऽणंतमीसिया ७ खलु परित्त ८ अद्धा ९ य अद्धद्धा १० ॥ ७ ॥ १७७ ॥ दारं ।**

**उप्पण्ण विगत मीसग॰** गाधा । उद्दिस्स गामं णगरं वा दसण्हं दारगाणं जम्मं पगासेंतस्स ऊणेसु अधिएसु य एवमादि **उप्पण्णमीसिया १** । एवमेव मरणकधणे **विगतमीसिया २** । जम्मणस्स मरणस्स य

---

१ **सम्मय २** खं॰ पु॰ वी॰ सा॰ हाटी॰ । **सम्मुयि २** वृद्ध॰ ॥ २ "तत्थ **जणवयसच्चं** नाम जहा एगम्मि चेव अभिधेये अत्थे अणेयाणं जणवयाणं विप्पडिवत्ती भवति, ण च तं असच्चं भवति, तं॰–**पुव्वदेसयाणं** पुग्गलि ओदणो भण्णइ, **लाड-मरहट्ठाणं** कूरो, **द्रविडाणां** चोरो, **अन्ध्राणां** कनायुं, एवमादि **जणवयसच्चं** भवति ।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ३ °**विन्दुघणसमाणे** मूलादर्शे ॥ ४ "**ठवणासच्चं** नाम जहा अक्खं निक्खिवइ, एसो चेव मम समयो एवमादि ।" इति **वृद्धविवरणे** । "**स्थापनासत्यं** नाम अक्षर-मुद्राविन्यासादिषु, यथा–माषकोऽयम्, कार्षापणोऽयम्, शतमिदम्, सहस्रमिदमिति ।" इति **हारि॰ वृत्तौ** । गणितोपदेशस्थानसम्भवेन शताक्षनिक्षेपादि स्थापनासत्यम् ॥ ५ "**नामसच्चं** नाम जं जीवस्स अजीवस्स वा 'सच्चं' इति नामं कीरइ, जहा–**सच्चो** नाम कोइ साहू एवमादि ४ । **रूवसच्चं** णाम जो असाधु साहुरूवधारिणं दट्ठुं भणइ दीसइ वा ५ ।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ६ कनिष्ठिकाङ्गुलिमित्यर्थः ॥ ७ पाषाणनिचयादि ॥ ८ यथाभिप्रायवचनान्तरालापः ॥ ९ **पंथवापुच्छिओ** मूलादर्शे ॥ १० दासोऽहं तव ॥ ११ अप्रत्यक्षवस्तुगतमनेककुत्स्य-शोभावचनमुन्नीयते ॥ १२ **तहऽणंतमीसगा खलु परि°** पु॰ वी॰ सा॰ हाटी॰ । **तह मीसिया अणंता परि°** वीसं॰ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कतपरिमाणस्सोभयकधणे विसंवायणे य **उप्पण्णविगतमिस्सिता** ३। [1]जीवंत-मतयसंख-संखणतायिरासिदरिसणे 'अहो! जीवरासि' त्ति भणंतस्स 'जीवंतेसु सच्चं, मतेसु मोसं' ति **जीवमीसिया** ४। एत्थ चेव बहुसु मतेसु 'अहो! अजीवरासि' त्ति भणंतस्स [ 'मतेसु सच्चं, ] जीवंतेसु मुसा' इति **अजीवमीसिया** ५। सव्वं मतममतं वा मीसमवधारेंतस्स रासी **जीव[अ]ज्जीवमीसिया** ६। मूलगाति अणंतकायं तस्सेव परियंडुरपत्तेहिं अण्णेण वा वणस्सतीकायिएण मिस्सं दट्ठूण 'एस अणंतकायो' त्ति भणंतस्स **अणंतमीसिया** ७। तमेव [2]संमुक्खातमेतं परिमिलाणममिलाणमज्झे रासीकतं 'परित्त' इति भणंतस्स **परित्तमीसिया** ८। अद्धा कालो, सो दिवसो रायी वा, जो तं मिस्सीकरेति, परं [3]तुरावेंतो दिवसतो भणति-'उट्ठेह, रत्ती जायति' एसा **अद्धमीसिया** ९। तस्सेव दिवसस्स रातीए वा एगदेसो **अद्धद्धा**, तं पढमपोरिसिकाले तहेव तुरितं 'मज्झण्हीभूतं' ति भणंतस्स **अद्धद्धमीसिया** १०॥७॥१७७॥ असच्चमोसावसरो। सा दुवालसविधा, तं०—इमाहिं दोहिं गाहाहिं अणुगंतव्वा। तंजहा—

**आमंतणि १ [4]आणमणी २ जायणि ३ तह पुच्छणी ४ य पण्णवणी ५।**
**पच्चक्खाणी भासा ६ भासा इच्छाणुलोमा य ७॥८॥१७८॥**
**अणभिग्गहिता भासा ८ भासा य अभिग्गहम्मि बोधव्वा ९।**
**संसयकरणी भासा १० [5]वोकड ११ अव्वोकडा १२ चेव॥९॥१७९॥**

**आमंतणि आणमणी०** गाहा। **अणभिग्गहिता भासा०** गाधा। हे देवदत्त! इति **आमंतणी** १। कज्जे परस्स पवत्तणं, जधा 'इमं करेध' त्ति **आणमणी** २। कस्सति वत्थुविसेसस्स 'देहि' त्ति मग्गणं **जायणी** ३। अविण्णातस्स संदिद्धस्स वा अत्थस्स जाणणत्थं तदभियुत्तचोयणं **पुच्छणी** ४। विणेयस्सोवदेसो, जधा—"पाणवधातो नियत्ता भवंति दीहा[6]दया अरोगा य।" [ एवमादि **पण्णवणी** ] ५। [7]जातमाणस्स पडिसेधणं **पच्चक्खाणी** ६। कज्जे [8]पडिवातितस्स 'तहा भवतु, ममावि पढममभिप्पेयं' ति **इच्छाणुलोमा** ७। अत्थाणभिग्गहेण बालुम्मत्तप्पलाव-हसियायि **अणभिग्गहिया** ८। घडातिअत्थपडिवातणाभिग्गहेण **अभिग्गहिता** ९। एका वाणी अणेगाभिधेया, सेंधवादिसद्द इव पुरिस-वत्थ-लवण-वाजिसु पवत्तमाणा **संसयकरणी** १०। घडातिलोगप्पसिद्धसद्दत्था **वोकडा** ११। [9]अतिगभीरसद्दत्था लल्लक्खरपयुत्ता य अविभावितत्था **अव्वोकडा** १२॥८॥१७८॥९॥१७९॥ उक्ता असच्चमोसा। पुणो—

**सव्वा वि य सा दुविधा पज्जत्ता खलु तहा अपज्जत्ता।**
**पढमा दो पज्जत्ता उवरिल्ला दो अपज्जत्ता॥१०॥१८०॥ दारं।**

**सव्वा वि य सा दुविधा०** गाहा। चतुव्विधा एसा भासा दुविहा संभवति, तं०—**पज्जत्तिगा अपज्जत्तिगा य**। अत्थावधारणसमत्था **पज्जत्तिगा**, तव्विवक्खिया **अपज्जत्तिगा**। सच्चा मोसा य आराहण-विराहणरूवेण पज्जत्तियाओ। उवरिल्ला दो अणवधारियाराहण-विराधणरूवातो त्ति **अपज्जत्तियाओ**॥१०॥॥१८०॥ एसा दव्वभावभासा। इमा **सुतभावभासा**—

**सुतधम्मे पुण तिविधा सच्चा मोसा असच्चमोसा य।**
**सम्मद्दिट्ठी [10]तुं सुते उवयुत्तो भासए सच्चं॥११॥१८१॥**

**सुतधम्मे पुण तिविधा०** अद्धगाधा। सुतं पढंतस्स तिविधा भासा संभवति—**सच्चा मोसा असच्चमोसा**। तत्थ [11]सच्चाए इमं गाहापच्छद्धं—**सम्मद्दिट्ठी तु सुते उवयुत्तो भासए सच्चं**॥११॥१८१॥

---

१ जीवन्मृतकशङ्ख-शङ्खनकादिराशिदर्शने॥ २ समुत्खातमात्रम्॥ ३ **तुवावेंतो** मूलादर्शे॥ ४ **आणवणी** पु० वी० सा०॥ ५ **वोयड ११ अव्वोयडा** पु० वी० सा० वृद्ध०॥ ६ दीर्घायुष्काः॥ ७ याचमानस्य॥ ८ प्रतिपादितस्य॥ ९ **अतिरभी°** मूलादर्शे॥ १० **उ सुओवउत्तो जं भासई सच्चं** पु० वी०। **उ सुओवउत्तो सो भासई सच्चं** खं० सा० हाटी०॥ ११ **सच्चामोसाए इमं** मूलादर्शे॥



Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

मोसा पुण—

**सम्मद्दिट्ठी तु सुतम्मि अणुवयुत्तो अहेतुगं चेव ।**
**जं भासति सा मोसा मिच्छादिट्ठी वि य तहेव ॥ १२ ॥ १८२ ॥**

[1]**सम्मद्दिट्ठी तु सुतम्मि०** गाधा । जया तु **सम्मद्दिट्ठी सुते अणुवयुत्तो अहेतुं भासति** तता **मोसा** । तं जहा–तंतवो घडकारणं, वीरणा पडस्स, एवमादि सम्मद्दिट्ठिणो वि भवति **मोसा । मिच्छादिट्ठी** पुण पयत्थविवरीयावधारणेण उवयुत्तो अणुवउत्तो वा मोसं भासति ॥ १२ ॥ १८२ ॥

[2]**भवति तु असच्चमोसा सुतम्मि उवरिल्लए तिणाणम्मि ।**
**जं उवउत्तो भासति, एत्तो वोच्छं चरित्तम्मि ॥ १३ ॥ १८३ ॥ दारं ।**

**भवति तु असच्चमोसा०** गाधा । सुतनाणमामंतणि-पण्णवणीमातिनियमिति सुतणाणोवयुत्तस्स वायणाति **असच्चामोसा**, ओहि-मणपज्जव-केवलणाणिवयणं व, एस सुतभावभासा ॥ १३ ॥ १८३ ॥

**चरित्तभावभासा** पुण तं०—

**पढम-बितिया चरित्ते भासा दो चेव होंति णायव्वा ।**
**सच्चरित्तस्स तु भासा सच्चा, मोसा तु इयरस्स ॥ १४ ॥ १८४ ॥ दारं ।**

**पढम-बितिया चरित्ते०** गाहा । सच्चा मोसा य **चरित्ते** भवंति । जं सच्चं मोसं वा भासंतस्स चरित्तं सुज्झति सा **सच्चा**, जाए ण सुज्झति सा **मोसा** । जं वा भासं भासंतो चरित्तीभवति सा **सच्चा**, जमचरित्ती सा **मोसा** ॥ १४ ॥ १८४ ॥ वक्कं भणितं । सुद्धी भण्णति—

[3]**णाम-ट्ठवणासुद्धी दव्वसुद्धी य भावसुद्धी य ।**
**एतेसिं पत्तेयं परूवणा होति कायव्वा ॥ १५ ॥ १८५ ॥**

**णामट्ठवणा०** गाहा ॥ १५ ॥ १८५ ॥ णाम-ट्ठवणाणंतरमिमा दव्वसुद्धी, तं०—

**तिविधा य[4] दव्वसुद्धी तद्दव्वा-ऽऽदेसतो पहाणे य ।**
**तद्दव्वं आदेसो[5] अणण्णमीसा हवति सुद्धी ॥ १६ ॥ १८६ ॥**

**तिविधा य दव्वसुद्धी०** गाहापुव्वद्धं । तं०–तद्दव्वसुद्धी आदेससुद्धी पहाणसुद्धी । तत्थ तद्दव्वसुद्धी आदेससुद्धी य इमेण गाधापच्छद्धेण भणति–**तद्दव्वं आदेसो०** अद्धगाधा । सुवण्णाति सुद्धमसंजुत्तं दव्वंतरेण **तद्दव्वसुद्धी । आदेसदव्वसुद्धी** दुविधा–अण्णत्ते अणण्णत्ते य । तत्थ अण्णत्ते अमलिणवसणो भण्णति सुद्धवत्थो । अणण्णत्ते सुद्धदंतो ॥ १६ ॥ १८६ ॥ पधाणदव्वसुद्धी—

**वण्ण-रस-गंध-[6]फासे समणुण्णा सा पहाणओ सुद्धी ।**
**तत्थ तु सुक्किल मधुरा तु सम्मया चेव उक्कोसा ॥ १७ ॥ १८७ ॥**

**वण्णरसगंधफासे०** गाधा । वण्ण-रस-गंध-फासेसु **समणुण्णा य**, समाणजातीयसमुक्करिसो यदुक्तम् । **तत्थ वण्णे** सुक्किलो पधाणो, गंधेसु सुरभी, रसेसु मधुरो, फासेसु मउय-लहुय-णिद्धुण्हा । पुरिसाभिप्पायतो वा जो जस्स सम्मतो इति पधाणदव्वसुद्धी । एसा दव्वसुद्धी ॥ १७ ॥ १८७ ॥

---

१ **सम्मद्दिट्ठी सुतं तु० गाधा** मूलादर्शे ॥ २ हवइ उ खं० पु० वी० सा० वृद्ध० ॥ ३ **णामं ठव°** खं० वी० पु० सा० ॥ ४ उ खं० पु० वी० सा० हाटी० वृद्ध० ॥ ५ **तद्दव्वगमाएसो** वी० सा० । **तद्दयगमादेसे** खं० । **तद्दव्विगमाएसो** पु० । **तद्दव्विय आदेसो** वृद्ध० ॥ ६ °**फासेसु मणुण्णा** खं० हाटी० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**एमेव भावसुद्धी तब्भावा-ऽऽदेसतो पधाणे य।**
**तब्भावगमाएसो अणण्णमीसा हवति सुद्धी ॥ १८ ॥ १८८ ॥**

**एमेव भावसुद्धी०** गाधापुव्वद्धं। एवमिति प्रकारवयणं, जधा दव्वसुद्धी तिविधा तधा **भावसुद्धी** वि, तं०-तब्भावसुद्धी आदेसभावसुद्धी पधाणभावसुद्धी य। तत्थ तब्भावसुद्धीए आदेसभावसुद्धीए य इमा **तब्भावगमाएसो०** अद्धगाहा-जस्स जम्मि तिव्वो अणुगतो भावो, जधा-तिसियस्स पाणियम्मि, सा तब्भावसुद्धी। आदेस एव सुद्धी दुविहा-अण्णत्ते अणण्णत्ते य। अण्णत्ते जहा सुद्धो भावो एतस्स साहुणो, अणण्णत्ते जधा कोधादीहिं अणाउलचित्तो सुद्धो एस साधू ॥ १८ ॥ १८८ ॥ पहाणभावसुद्धी—

**दंसण-नाण-चरित्ते तवोविसुद्धी पधाणमातेसो।**
**जम्हा तु विसुद्धमलो तेण विसुद्धो भवति सुद्धो ॥ १९ ॥ १८९ ॥**

**दंसणनाणचरित्ते०** गाहा। दंसणादीणि सव्वपहाणाणि पहाणभावसुद्धी। दंसण-नाणप्पहाणभावसुद्धी खाइगं दंसणं नाणं च। चरित्तप्पहाणभावसुद्धी अहक्खातं चरित्तं। अब्भंतरतवे सम्ममाराधणा तवप्पहाणभावसुद्धी **पधाणमातेसो,** जतो दंसणादीहि परमसुद्धेहिं विसुद्धकम्म**मलो भवति सुद्धो।** एत्थ भावसुद्धीए अहिगारो, सेसा उच्चारिततुल त्ति परूविता ॥ १९ ॥ १८९ ॥

भणिता सुद्धी। अधिकारो वक्कस्स। वक्कस्स वक्केण वा सुद्धी वक्कसुद्धी, तीसे निरुत्तगाहा—

**जं वक्कं वदमाणस्स संजमो सुज्झई, ण पुण हिंसा।**
**ण य अत्तकलुसभावो, तेण इहं वक्कसुद्धि त्ति ॥ २० ॥ १९० ॥**

**जं वक्कं वदमाणस्स०** [ गाहा ]। **जं** जधाभूतमजहाभूतं वा वदमाणस्स **संजमो** सुद्धो भवति, **ण पुण हिंसा,** ण य दुभणित-पच्छातावाति तेण **वक्कसुद्धी।** एवं सद्वचो हितं सत्यमिति ॥ २० ॥ १९० ॥

वतछक्कातिणियमितकायचेट्ठस्स वायिकदोसपरिहरणत्थं विसेसिज्जति—

**वयणविभत्तीकुसलस्स संजमम्मी उवट्ठियमतिस्स।**
**दुब्भासितेण होज्जै हु विराधणा तत्थ जतितव्वं ॥ २१ ॥ १९१ ॥**

**वयणविभत्तीकुसल०** गाधा। सच्चा-ऽसच्चवयणविभागे **कुसलस्स** तस्सेवंगुणस्स **संजमम्मि उवट्ठियमतिस्स** थितचेतसो वि **तत्थ** तध वि **दुब्भासितेण** भवे **विराधणा** इति वक्कसुद्धीए सुट्ठु **जतितव्वं ॥ २१ ॥ १९१ ॥** 'वयणं नियमेणमणेगविधं दुरहिगमं' ति कोति भणेज्ज-वरं मोणं, मोणमवि जधा अणुवाययो दोसकारी भवति तमुण्णीयते—

**वयणविभत्तिअकुसलो वयोगतं बहुविधं अजाणंतो।**
**जति वि ण भासति किंची ण चेव वतिगुत्तयं पत्तो ॥ २२ ॥ १९२ ॥**

**वयणविभत्तिअकुसलो०** गाधा। वयणविवेगे अणिउणो **वयोगतं** असच्चामोसाति वक्ष्यमाणं [ **बहुविधं** ] बहुप्पगारं **अयाणंतो,** जतिसद्दो अणब्भुवगमे, अविसद्दो तं विसेसेति, सो **जति वि ण भासति** तहअक्खिणिकोय-पाणिविहारातीहिं विकारेहिं अत्थं पचायेंतो ण भवति **वतिगुत्तो ॥ २२ ॥ १९२ ॥**

---

१ सिद्धो खं० हाटी० ॥ २ °म्मि य उवट्ठिय° पु० वृद्ध०। °म्मी समुज्जय° हाटी० ॥ ३ ° ज्जा त्ति° वृद्ध० ॥
४ किंची तह वि ण वयि° वृद्ध० ॥ ५ वयिगु° वृद्ध०। वइगु° खं०। वयगु° पु० वी० सा० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ वियाणगस्स तु एस गुणो जधा—

**वयणविभत्तीकुसलो वयोगतं बहुविधं वियाणंतो ।**
**दिव[1]समवि भासमाणो अभासमाणो व वइगुत्तो ॥ २३ ॥ १९३ ॥**

**वयणविभत्तीकुसलो॰** गाधा । वयणविभागनिउणो पुण **बहुविधं वयोगतं** विसेसेण **जाणंतो,** अतिवृत्तवयणमिदं । **दिवसं अवि भासमाणो अभासमाणो** वा [2]आतोरेहि उवरोधमदाएंतो भवति **वइगुत्तो** ॥ २३ ॥ १९३ ॥ तस्स कुसलस्स विणेयमतिणो जधाविधीमुपदेसं दातुमाणवेंति गुरवो—वच्छ ! भणितं च वक्ष्यमाणं च सिद्धान्तोवदेसं—

**[3]पुव्विं बुद्धीएँ[4] पासित्ता त[5]तो वक्कमुदाहरे ।**
**अचक्खुओ व णेतारं बुद्धिमण्णेउ ते गिरा ॥ २४ ॥ १९४ ॥**

**॥ वक्कसुद्धिनिज्जुत्ती समत्ता ॥**

**पुव्विं बुद्धीए पासित्ता॰** सिलोगो । पुव्विं पढमं **बुद्धीए** मतीए **पासित्ता** आलोएउं **ततो** तदणंतरं **वक्कमुदाहरे** [6]वंदणमेयं वंदेज्जा । “उदाहरणेण सुगममत्थो पडिवज्जिज्जइ” त्ति सिलोगपच्छिमद्धेण तं भण्णति–**अचक्खुओ व णेतारं** जधा अंधो पडिकड्ढगंतप्पणीयस्स खेममिति गच्छंतमणुगच्छति एवं तव समिक्खभाविणो णिरवातं **बुद्धिमणुगच्छतु गिरा** ॥ २४ ॥ १९४ ॥ णामनिप्फण्णो समत्तो । इदाणिं सुत्तालावगनिप्फण्ण-सुत्तफासियनिज्जुत्तीपडिसमाणणत्थं सुत्तमुच्चारेतव्वं । तं पुण इमं—

३१४. चतुण्हं खलु भासाणं परिसंखाय पण्णवं ।
दोण्हं तु वि[7]जयं सिक्खे दो ण भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥

**३१४. चतुण्हं खलु भासाणं॰** सिलोगो । **चतुण्हं** ति संखासद्दो छट्ठीबहुवयणंतो, सा य णिद्धार[ण]छट्ठी । [8]भासासमुदायायो जासिं विजयो सिक्खितव्वो, पुणो [9]जाओ ण भासितव्वाओ । **खलु**सद्दोऽवधारणे, सव्वो [10]धंणिसमुदायो चतुव्विधत्तणं णातिवत्ततीति अवधारिज्जति । अत्थं वंजयतीति **भासा,** तासिं **भासाणं** समंततो जाणिऊण **परिसंखाय पण्णवं** बुद्धिमं । स एवंगुणो **दो[11]ण्हं तु** एवंपरिसंखाताण, तुसद्दो पिसुणातिविसेसणे, **विजयो** समाणजातियाओ णिकरिसणं, जधा बितियो सुमिणयो, तत्थ वयणीया-ऽवयणीयत्तेण **विजयं सिक्खे । केसिंचि आलावओ–“विणयं सिक्खे”** तेसिं विसेसेण जो णयो भाणितव्वो तं सिक्खे । **दो** बिय-ततियाओ **ण भासेज्ज सव्वसो** सव्वावत्थं ॥ १ ॥

अधुणा सच्चाए विजयो सच्चामोसाए य सव्वहा निसिद्धाए विसेसो अववातो समयमारब्भते—

३१५. जा य सच्चा [12]अवत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा ।
[13]जो जा [14]बुद्धेहिऽणाइण्णा ण तं भासेज्ज पण्णवं ॥ २ ॥

१ **दिवसं पि भासमाणो तहा वि वयगुत्तयं पत्तो** खं॰ पु॰ वी॰ सा॰ हाटी॰ वृद्ध॰ ॥ २ आचारेषु उपरोधमदर्शयन् ॥ ३ अयं निर्युक्तिश्लोको **वृद्धविवरणे** नास्ति ॥ ४ °**ए पेहित्ता** पु॰ सा॰ हाटी॰ ॥ ५ **पच्छा वक्क°** खं॰ पु॰ वी॰ सा॰ हाटी॰ ॥ ६ वचनमेवं वदेत् ॥ ७ **विणयं** अचू॰ विना । **विणयं** अचूपा॰ ॥ ८ भाषासमुदायाद् यासां विजयः शिक्षितव्यः, पुनर्या न भाषितव्याः ॥ ९ **जावो** ण मूलादर्शे ॥ १० ध्वनिसमुदायः ॥ ११ “‘द्वाभ्यां’ सत्या-ऽसत्यामृषाभ्याम्, ‘तुः’ अवधारणे, द्वाभ्यामेवाऽऽभ्यां ‘विनयं’ शुद्धप्रयोगं विनीयतेऽनेन कर्मेति कृत्वा ‘शिक्षेत’ जानीयात् । ‘द्वे’ असत्या-सत्यामृषे न भाषेत ‘सर्वशः’ सर्वैः प्रकारैरिति ।” इति **हारि॰ वृत्तौ** ॥ १२ **णवत्तव्वा** जे॰ ॥ १३ **जा इ बु°** खं ४ जे॰ । **जा य बु°** खं १-२ ३ शु॰ वृद्ध॰ ॥ १४ **बुद्धेहऽणाइण्णा** खं १। **बुद्धेहिं नाऽऽइण्णा** खं ४ जे॰ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१५. **जा[1] य सच्चा अवत्तव्वा०** सिलोगो। **जा** इति उद्देसवयणं, चसद्दो समुच्चये, **सच्चा अवत्तव्वा** समुद्देसादिनिगूहणं। **सच्चामोसा य** एसा सच्चामोसा तत्थ जो विभागो मोसं तं एयं एयं (? पयं पयं) सच्चाए अवत्तव्वं सच्चामोसाए य जो विभागो मोसा। समासतो चतुव्विहाए भासाए **जा जा बुद्धेहिं** जाणएहिं **अणाइण्णा** अणायरिया **ण तं भासेज्ज पण्णवं** पुव्वभणितं ॥ २ ॥

णिसेहो भणितो। विधिमुहेण सेसनिसेहणत्थमिदं भण्णति—

३१६. असच्चमोसं सच्चं च अणवज्जमकक्कसं[2]।
समुप्पेहित[3]ऽसंदिद्धं गिरं भासेज्ज पण्णवं ॥ ३ ॥

३१६. **असच्चमोसं सच्चं च०** सिलोगो। **असच्चमोसा** आमंतणादी, **सच्चा** आराहणी, तं **असच्चमोसं सच्चं** चेति। चसद्देण दो वि समुच्चिऊण तत्थ **अणवज्जं** अमम्म-दुम्मणाति **अकक्कसं** भणितिविसेसेण अणिट्ठुरं, प्रत्यग्रं वा कक्कसं जं अपुव्वमिव निट्ठुरत्तणेण, तमुभयमवि **समुप्पेहित** अभिसमिक्ख एवं समिक्खित-**मसंदिद्धं गिरं भासेज्ज पण्णवं** ॥ ३ ॥ सावज्ज-सकिरियातिविसेसणत्थं पुणो भण्णति—

३१७. एतं च अट्ठं अण्णं वा जं तु णामेति सासयं।
सभासं सच्चमोसं पि[4] तं पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥

३१७. **एतं च अट्ठं अण्णं वा जं तु णामेति सासयं०** सिलोगो। एतमिति सावज्जं कक्कसं च, **अण्णं** सकिरियं "अण्हयकरी छेदकरी" [ ] एवमादिअत्थाधारं वयणमिति इहमत्थग्गहणं। **जमिति** उद्देसवयणं, तुसद्दो विसेसणे, कारणे जयणाए किंचि भासेज्ज, **सासतो** मोक्खो तं **णामेति** भजति। जं मोक्खसाहणविग्घभूतत्तणेण **भासा** जा अप्पणो भासा सा पुण साधुणो अब्भणुण्णात त्ति सच्चा, तं सभासाम-सच्चामोसामपि तं पढममब्भणुण्णातामवि 'मोक्खविग्घभूत' त्ति **तं पि धीरो विवज्जए** ॥ ४ ॥

अप्पदुट्ठेणावि भावेण वितहपरिहरणत्थमिदं भण्णति—

३१८. वितहं पि तहामुत्तिं[5] जं गिरं भासते णरो।
तम्हा सो[6] पुट्ठो पावेणं किं पुणो[7] जो मुसं वदे ? ॥ ५ ॥

३१८. **वितहं पि तहामुत्तिं०** सिलोगो। अतधा **वितहं** अण्णहावत्थितं, अविसद्देण केणति भावेण तधाभूतमवि **मोत्तिं** सरीरं तव्विहणेवच्छाति, जहा पुरिसमित्थिनेवच्छं भणति 'सोभणे इत्थी' एवमादि "पुरिसादीया धम्मा" [ ] इति णरवयणं। **तम्हा** ततो वयणातो **स** इति भासमाणनिद्देसो, **पुट्ठो**

---

१ "[ **जा य सच्चा अवत्तव्वा०** सिलोगो ]। **जा य** इति अणिद्दिट्ठा, **अवत्तव्वा** पुव्वभणिया, ण वत्तव्वा **अवत्तव्वा**, सावज्ज ति वुत्तं भवइ। तं अवत्तव्वं १ मोसं २ सच्चामोसं च ३ एयाओ तिण्णि वि, चउत्थी वि '**जा य बुद्धेहिऽणाइण्णा**।' गहणेणं असच्चामोसा वि गहिता, उक्कमकरणे मोसा वि गहिता, एवं बंधाणुलोमत्थं, इतरहा सच्चाए उवरि मोसा भाणियव्वा। "गंथाणुलोमताए विभत्तिभेदो व वयणभेदो वा। थी-पुंसालिंगभेदो व होज्ज अत्थं अमुंचंतो ॥ १ ॥" **जा य बुद्धेहऽणाइण्णा ण तं भासेज्ज पण्णवं।** तो तासिं चउण्हं भासाणं बितिय ततियाओ नियमा न वत्तव्वाओ, पढम-चउत्थीओ **जा य बुद्धेहऽणाइण्ण** त्ति, तत्थ **बुद्धा** तित्थकर-गणधरादी तेहिं णो आइण्णा **अणाइण्णा। अणाचिण्णा** णाम नोवदिट्ठा भासिया वा। बुद्धा हि भगवंतो ण सव्वं सच्चमायरंति, जधा–अत्थि केइ गाहा पक्खी वा दिट्ठा ?, तत्थ भणंति–णत्थि। असच्चामोसाए य जाओ सावज्जाओ आमंतणादिणीओ ताओ अणाचिण्णाओ बुद्धाणं ति, उच्चेण वा सद्देण परियट्टणं रातीए, एवमादि जं सावज्जं ण तं बुद्धिमता भासियव्वं ति ॥" इति **वृद्धविवरणे** ॥ २ **असावज्ज°** हाटी० ॥ ३ **समुप्पेहमसं°** खं १–२–३–४ जे० शु०। **समुपेहिय असं°** वृद्ध०। **संपेहियमसं°** हाटी० ॥ ४ **च** खं ३–४ ॥ ५ **तहामोत्तिं** खं २–४ जे० शु० ॥ ६ **सो** अचू० विना ॥ ७ **पुण** खं १–४ शु० हाटी० वृद्ध०। **पुणं** खं २–३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इति सव्वपदेसेसु अणुगतो, **पावं** पुण्णविवरीतं तेण । **किं पुणो** इति विसंदेहत्थं भण्णति–जो सक्खं मुसं वदति तत्थ किं भाणितव्वं ? जतो एवं नेवच्छादीण य संदिद्धे वि दोसो ॥ ५ ॥

३१९. तम्हा गच्छामो वक्खामो अमुगं[1] वा णे भविस्सति ।
अहं वा णं करिस्सामि एसो वा णं करिस्सति ॥ ६ ॥

**३१९. तम्हा गच्छामो वक्खामो०** सिलोगो । **तम्हा** इति पुव्वभणितो अत्थो कारणत्तेण निद्दिसति । **गच्छामो** त्ति णातं[2] वट्टमाणकाले किंतु कियासमीवो । भणितं च–"वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा" [ पाणि० ३ । ३ । १३१ ]। बहुवयणमवि गुरूसु निच्चं, कयायि अप्पाणे वि, "बहूण या विहारो" [ ] त्ति जातिपरिग्गहेण वा कीरति । **वक्खामो** त्ति अणागतकालमेव इमं वेदणं[3] 'वक्खामो' इति ण भाणितव्वं, जतो बहुविग्घा परिमला (?), **अमुगं वा** गमणाति वत्थु अम्हं **भविस्सति** । **अहमिति** अप्पाणं निद्दिसति, किंचि संजमाहि(?दि) कारियं[4] **करिस्सामि । एसो वा** तहेव परं कहयति ॥ ६ ॥ गंतव्व-वयणीय-भाविकरणीयाणि अणंताणीति असक्काणि समुच्चारयितुम्, अतो तेसिं सव्वेसिं साहणत्थमिदमादिग्गहणमारभ्यते—

३२०. एवमादि तु जा भासा एसकालम्मि संकिता ।
संपतो-ऽतीतमट्ठे[5] वा तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥

**३२०. एवमादि तु जा भासा०** सिलोगो । एवंसद्दो प्रकारवयणे । **आदिग्गहणेण** सर्वक्रियाविसेसा सूयिया, पढण-थाणा-ऽऽसणादयो । **एसे** अणागते **काले** 'समए असंववहारो' त्ति खणाती तम्मि **संकिता** संदिद्धा तधा अण्णहा वा समाणमिति । ण केवलमेस्से काले किं तु संपते वि । **संपत** इति वट्टमाणो, जधा–'वट्टमाणो मासो संवच्छरो वा एरिसो, दिय-सप्पनिप्फत्तीहिं निप्फण्णं वा एसमं ति बहुवाघाते' ण वत्तव्वं । **अतीते** वि एवं ण वत्तव्वं, 'अतीते एतेण गहातिविकारेण अमुकसंवच्छरो एरिसो आसि' त्ति संकिते सति ण वत्तव्वं । एवं **तं पि धीरो** बुद्धिमं **विवज्जए** ण भणेज्जा ॥ ७ ॥

पुव्वं कालपाहण्णं, इदाणिं कियापाहण्णं । अधवा एतस्स चेव अत्थस्स निरूवणत्थं भण्णति—

३२१. तहेवाणागतं[6] अट्ठं जं वऽण्णऽणुवधारितं ।
संकितं पडुपण्णं वा एवमेयं ति णो वदे ॥ ८ ॥

**३२१. तहेवाणागतं अट्ठं०** सिलोगो । **तहा** तेण प्पगारेण पुव्वभणितेण **अणागतं अट्ठं** । एसस्स अणागतस्स य विसेसो–एसो आसण्णो, अणागतो विकिट्ठो । अणागतमट्ठं ण निद्धारेज्ज–जधा **कक्की** अमुको वा एवंगुणो राया भविस्सति । **जं वऽण्णं** अण्णं अणागतातो अतीतं, तत्थ वि जं अणुवधारितं, जहा–**दिलीपादयो** एवंविधा आसी । **अणुवधारितं** अविण्णातं । **संकितं** संदिद्धं । **पडुप्पण्णं** वट्टमाणं । वट्टमाणमवि संकितं 'एवमिदं' इति अवधारणेण **णो वदे**–जधा अमुको राया अण्णो वा सुता-सुतीहिं एरिसो त्ति सराग दोसवय-

---

१ **अमुगं मे भ°** खं १ ॥ २ न अयम् ॥ ३ वचनम् ॥ ४ संयमादि कार्यम् ॥ ५ **°पयाऽदीतम°** जे० ॥ ६ अष्टम-नवम-सूत्रश्लोकयोः स्थाने सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० च निम्नोद्धृतं सूत्रश्लोकत्रयं वर्तते । तथाहि

**अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पण्णमणागए । जमट्ठं तु न जाणेज्जा एवमेयं ति नो वए ॥ १ ॥**
**अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पण्णमणागए । जत्थ संका भवे तं तु एवमेयं ति नो वए ॥ २ ॥**
**अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पण्णमणागए । निस्संकियं भवे जं तु एवमेयं ति निद्दिसे ॥ ३ ॥**

**कालम्मि** स्थाने **अट्ठम्मि** जे०, **कालम्मि** खं २, **कालम्मी** शु० । **पच्चुप्पण्णमणा°** स्थाने **पच्चुप्पण्णे अणा°** खं २, **पच्चुप्पण्णे मणा°** खं ३ । **निस्संकियं** स्थाने **नीसंकियं** खं ३ जे० । **एवमेयं** स्थाने **थोवथोवं** हाटीपा० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाणि जतो विसंवादीणि । एवं रूव-रस-गंध-फासेसु अतीत-वट्टमाणा-ऽणागतकालसहचरितमासंकितं ण वते इति । सव्वत्थ 'ण सरामि, ण याणामि वा' पुच्छतस्स पडिवयणं ॥ ८ ॥

अतीत-वट्टमाणा-ऽणागतेसु कालेसु अणुवधारितं संकितं वा ण भासितव्वं । इमं पुण भासितव्वं —

३२२. तहेवाणागतं अट्ठं जं होति उवधारितं ।
नीसंकितं पडुप्पण्णं थावथावाए णिद्दिसे ॥ ९ ॥

३२२. **तहेवाणागतं अट्ठं०** सिलोगो । तहेव तेणेव प्पगारेण **अणागतं** कालेणं दूरत्थं वा **अत्थं** जो तम्मि अत्थो वट्टति **जं वा** अतीतकालं **उवधारितं** सुणातं **पडुप्पण्ण**कालं वा **नीसंकितं** । एतं वा **थावथावाए णिद्दिसे** हियए थवेउं वयणेणं वा बाधिज्जमाणं पुणो पुणो थवेतुं । उवधारित-नीसंकिताण विसेसो—**उवधारितं** वत्थुमत्तं, नीसंकितं सव्वप्पगारं ॥ ९ ॥

"दोण्हं तु विजयं सिक्खे" [ सूत्रं ३१४ ] त्ति तस्स विजयस्सणेगागारपदरिसणत्थमिमं भण्णति—

३२३. तहेव फरुसा भासा गुरुभूतोवघातिणी ।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा जतो पावस्स आगमो ॥ १० ॥

३२३. **तहेव फरुसा०** सिलोगो। तहेवेति पढमोववण्णितप्पगारावधारणं, **फरुसं** लुक्खं जं णेहविरहितं वय[ण]मविसंवायणं तं फरुसमिव फरुसं, अतो सा **फरुसा भासा सच्चा वि सा न वत्तव्वा** इति उवरि दीविज्जिहिति । विद्धादीण **गुरूण सव्वभूताण** वा **उवघातिणी,** अहवा **गुरूणि** जाणि **भूताणि** महंति तेसिं **कुलपुत्त-बंभणत्तभावितं** विदेसागतं तहाजातीयकतसंबंधं दासादि वदति जतो से उवघातो भवति, **गुरुं** वा **भूतोवघातं** जा करेति रायंतेउरादिअभिद्रोहातिणा मारणंतियं, **सच्चा वि सा ण वत्तव्वा** किमुत अलिया? । **जतो** इति जम्हा एतातो भासातो **पावस्स आगमो** इहलोइतो अयसादि, पारलोइयो दुग्गतिगमणाति, **आगमो** आवातो ॥ १० ॥ "**गुरुभूतोवघातिणी सच्चा वि सा ण वत्तव्व**" त्ति भणितमितं । अवि य उवघातिणी भण्णति—

३२४. तहेव काणं काणे त्ति पंडगं पंडगे त्ति वा ।
वाहियं वा वि रोगि त्ति तेणं चोरो त्ति णो वए ॥ ११ ॥

३२४. **तहेव काणं काणे त्ति०** सिलोगो । एगक्खिविकलो **काणो**, सो भिण्ण-पुप्फित-केकर-विणाडो तहा ण वत्तव्वो, तस्स अप्पत्तियादिदोसा मा होज्जा । **पंडओ** अपुमं, सो वि 'तुमं एरिसो' त्ति ण वत्तव्वो, त एव दोसा । कोढातिवाधितमवि ण रोगिणं भणेज्जा, तत्थ दोसा त एव, अधिकमणस्सासो कियारंभो वा । **तेणो** परस्सावहारी, तमवि '**चोरो** सि' त्ति ण भणेज्जा, तत्थ ते चेय दोसा, विणासेज्ज वा आसुकारी भणंतगं, सो गेण्हणाती पावेज्जा । अतो न भासितव्वमेतं ॥ ११ ॥

काणातिप्रकारोपदरिसणत्थं वयणोवसंहरणणियमणत्थं च भण्णति—

३२५. एतेणऽण्णेण वऽट्ठेण परो जेणुवहम्मति ।
आयारभावदोसेण ण तं भासेज्ज पण्णवं ॥ १२ ॥

१ °ण वा विभज्झमाणं मूलादर्शे ॥ २ भणितमिदम् ॥ ३ अयं सूत्रश्लोको वृद्धविवरणे नास्ति ॥ ४ °ण अट्ठेण खं १-२-३ जे० शु० । °णमट्ठेण खं ४ ॥ ५ °हम्मए खं २ ॥ ६ °दोसन्नू ण खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२५. **एतेणऽण्णेण वऽट्ठेण०** सिलोगो । **एतेण** काणातिणा **अण्णेण वा** एवंजातीएण विसमण-यण-वंकचिप्पिडणासा-तूपरड-किडिभिल-पारदारिकादिणा, 'अत्थाधारं वयणं' इति अत्थनिद्देसो । **परो** अप्पाणवतिरित्तो सो जेण **उवहम्मति** । परोवघाते अप्पोवघातो कयाति, अतो **आयारभावदोसेण** एतं वयणनियमण**मायारो**, एतम्मि आयारे सति **भावदोसो** पदुट्ठं चित्तं तेण **भावदोसेण ण भासेज्ज** । जति पुण काण-चोराति कस्सति णामं ततो भासेज्जा वि । अहवा **आयारे भावदोसो** पमातो, पमातेण **ण भासेज्ज पण्णवं** पुव्वमुवत्रणितो ॥ १२ ॥ "**दोण्हं तु विजंयं**[1] **सिक्खे**" त्ति [ सुत्तं ३३४ ] विजेयाधिकारे अभाणितव्वत्तेण विणयणं[2] । इदमवि जहा वण्णातो अवदव्वाण (?)—

३२६. तहेव होले गोले त्ति साणे वा वसुले त्ति य ।
दमए दूहए वा[3] वि णं[4] तं भासेज्ज पण्णवं ॥ १३ ॥

३२६. **तहेव होले गोले त्ति०** सिलोगो । **होले** त्ति निट्ठुरमामंतणं **देसीए** भविलवेंदणमिव[5] । एवं **गोले** इति । दुच्चेट्ठितातो **सुणएणोवमाणवेंदणं**[6] । **वसुलो** सुद्दपरिभववयणं । भोयणनिमित्तं घरे घरे द्रमति गच्छतीति **दमओ** रंको । **दूभगो** अणिट्ठो । एताणि वि अणिट्ठवयणाणि **ण भासेज्ज पण्णवं** ॥ १३ ॥

थी-पुरिसाणं अविसेसेण आमंतणाति भणितं । 'भत्तादिजातणासित्थीसु विसेसेण संभवति' त्ति तग्गतं विसेसवेंदणं[7] पढममारब्भते—

३२७. अज्जिते पज्जिते यावि[8] अम्मो मातुस्सिय[9] त्ति य ।
पितुंस्सिए[10] भागिणेज्जि त्ति धूते[11] णत्तुणिए त्ति य ॥ १४ ॥

३२७. **अज्जिते पज्जिते यावि०** सिलोगो । पितामही वा मातामही वा **अज्जिता** । तीसे माता **पज्जिया** । माताअभिधाणं **अम्मो** त्ति । मातुभगिणी **मातुस्सिया** । पितुभगिणी **पितुस्सिया** । भगिणीधूता **भागिणेज्जी** । अवच्चमित्थी **धूता** । पोत्ती दोहित्ती वा **णत्तुणी** । एताणि आमंतणाणि अभिधाणाणि, "णेधाभिसंबंधसंकादयो[12] दोस त्ति । जं उवरिं भणिणिहिति "इत्थियं णेव आलवे" [ सुत्तं ३२८ ] तदिहापीति णेवं वत्तव्वं ॥ १४ ॥

पुव्वाणंतरसिलोगतुलत्थोऽयमिति तदेवोववायणं ति भण्णति—

३२८. हले हले त्ति अण्णे त्ति भट्टे सामिणि गोमिणि ।
होले गोले वसुले त्ति इत्थियं णेवं[13] आलवे ॥ १५ ॥

३२८. **हले हले त्ति०** सिलोगो । **हले**[14] **अण्णे** त्ति **मरहट्ठेसु** तरुणित्थीसाऽऽमंतणं[15] । **हले** त्ति **लाडेसु** । **भट्टे** त्ति अब्भरहितवयणं पायो **लाडेसु** । **सामिणि** त्ति सव्वदेसेसु । **गोमिणी गोल्लविसए** ।

---

१ **विणयं** मूलादर्शे ॥ २ **विणया°** मूलादर्शे ॥ ३ **यावि** खं २-३ हाटी० ॥ ४ **णेवं भा°** खं १-२-३-४ जे० हाटी० । **न तं भा°** शु० अचू० वृद्ध० ॥ ५-६-७ वचनम् ॥ ८ **वा वि** खं १ अचू० विना ॥ ९ **माउस्सिए** खं ३ । **माउस्सिय** खं १-४ जे० वृद्ध० । **माउस्सिउ** खं २ शु० ॥ १० **पिओस्सिए** खं ४ ॥ ११ **धूया णत्तुणिए त्ति या** जे० खं २ । **धूए णत्तुणिय त्ति य** खं१-३-४ । **धूया णत्तुणिय त्ति य** वृद्ध० ॥ १२ स्नेहाभिसम्बन्धाशङ्कादयः ॥ १३ **णेवमाल°** खं १-२-३-४ शु० ॥ १४ "**हले हलि त्ति अण्णे त्ति** एयाणि वि देसं पप्प आमंतणाणि । तत्थ **वरदातडे हले** त्ति आमंतणं । **लाडविसए** समाणवयमण्णं वा आमंतणं जहा **हलि** त्ति । **अण्णे** त्ति **मरहट्ठविसए** आमंतणं । दोमूलक्खरगाण चाटुवयणं **अण्णे** त्ति । **भट्टे** ति **लाडाणं** पतिभगिणी भण्णइ । **सामिणी-गोमिणीओ** चाटुवयणं, **होले** त्ति आमंतणं । जहा—'होल ! वणिओ ते पुच्छइ सयक्कऊ पागसासणो इंदो । अण्णं पि किर वरेसी इंदमहस्सतं समतिरेकं ॥ १ ॥' एवं **गोल-वसुला** वि महुरं सप्पिवासं आमंतणं । एतेहिं हले-हलादीहिं इत्थीतो न आलवेज्जा । किं कारणं ? जम्हा तत्थ चाटुमादिदोसा भवंति । उक्तं च—'अतिमुतमतीवर्जुमल्पमात्रमपि प्रियम् । नैतत् प्राज्ञेन वक्तव्यं बुद्धिस्तेषां विशारदा ॥ १ ॥" इति **वृद्धविवरणे** ॥ १५ तरुणस्त्रीष्वामन्त्रणम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**होले गोले वसुले** त्ति **देसीए** लालणगत्थाणीयाणि प्रियवयणामंतणाणि । एतेहि 'माधुज्जहरणीयो थीजणो' त्ति सव्वेहिं **इत्थियं णेव आलवे** ॥ १५ ॥ सति पुण कारणे अवस्सभणितव्वे इमो पयत्तो जधा—

३२९. णामहेज्जेण णं बूया इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥ १६ ॥

३२९. **णामहेज्जेण णं०** सिलोगो । णामं चेव **णामधेज्जं** तेण **बूया**, यदुक्तं भणेज्ज । विदितगोत्ता वा **गोत्तेणं गोतमातिणा** । **पुणो** इति णाम-गोत्तयो जं अविरुद्धतरं । **जहारिहं** पहुत्तण-वयोविसेस-ईसरत्तादीहि जा जं अरिहति लोगे, जधा वा ण विरुज्झति तहा **अभिगिज्झ** संचिंतेऊण **आलवेज्ज [लवेज्ज] वा**, ईसि लवणमालवणं, अभिक्खं भासणं लवणं ॥ १६ ॥ इत्थिआमंतणातिसमणंतरं पुरिसवयणं तधेव—

३३०. अज्जए पज्जए वा वि बप्पो चुल्लपितु त्ति य ।
माउला भाइणेज्ज त्ति पुत्ता[3] णत्तुणिय त्ति य ॥ १७ ॥

३३०. **अज्जए पज्जए वा वि०** सिलोगो । **अज्जग-पज्जगो** तहेव । **बप्पो** जणेता । **चुल्लपिता** पिउकणीयसो । **मातुलादयो** लोगविदिता । एतेसु वि बहवे दोस त्ति तेण णो एवमालवे ॥ १७ ॥
जहा एताणि वयणाणि वज्जणिज्जाणि तहा—

३३१. हे भो[4] हरे त्ति अण्ण त्ति भट्टि[5] सामिय गोमिय ।
हाल गोल वसुल[6] त्ति पुरिसं णेवमालवे ॥ १८ ॥

३३१. **हे भो हरे त्ति०** सिलोगो । **हे भो हरे त्ति** सामण्णमामंतणवयणं । **अण्ण** इति **मरहट्ठाणं** । **भट्टि-सामिय-गोमिया** पूयावयणाणि निद्देसातिसु सव्वविभत्तिसु । **हाल** इति पहुवयणं जहा—

परियंदति सुण्हा गहवतिस्स पुत्ता ! तुमं सि मे राया ।
चागणडियस्स पुत्तय ! हालस्स व किं घरे अत्थि ? ॥ १ ॥

**गोल वसुल [ त्ति ]** जुवाणप्रियवयणं । एतेसु वि दोससंभवो त्ति पुरिसं णो एवमालवे ॥ १८ ॥ अवस्समालवेतव्वे पुण सति—

३३२. णामधेज्जेण णं बूया पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥ १९ ॥

३३२. **णामधेज्जेण णं०** सिलोगो । पुव्ववण्णितत्थो । णवरं पुरिसाभिधाणमिह **जहारिहमभिगिज्झ** जो जहा मणुस्सातिगो । अयमवि विजयविसेसो ॥ १९ ॥ मणुस्सेसु लिंगविसिट्ठमामंतणाति भणितं । णेवच्छाति-विसेसरहितेसु तिरिएसु दुक्खं लिंगावधारणं, विसिट्ठलिंगता य पंचेंदिएसु, ण सेसेसु त्ति भण्णति—

३३३. पंचेंदियाण पाणाण एस इत्थी अयं पुमं ।
जाव णं ण विजाणेज्जा ताव जाति त्ति आलवे ॥ २० ॥

३३३. **पंचेंदियाण पाणाण०** सिलोगो । सोतातिसमग्गकरणा **पंचेंदिया, पाणा** इति जीवा, तेसिं दूरालोए लिंगविसेसाविभासणे सति चाभिधाणकारणे ण लोक इवाविसेसितं भणेज्जा । जहा—महिसीओ चरंति,

१ माधुर्यहरणीयः ॥ २ **भायणे**° खं २-४ ॥ ३ **पुत्ते** खं १-२ शु० ॥ ४ **हे हो हले त्ति अण्णे त्ति** खं १-२-३-४ जे० शु० ॥ ५ **भट्टा** जे० शु० ॥ ६ **वसुले त्ति** खं १-२-३-४ जे० ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अस्सा आगच्छंति, एवमविसेसाभिधाणे कयायि मिस्साणि वि भवंतीति मुसा। अतो **जाव णं ण विजाणेज्जा ताव जाति त्ति आलवे**, जहा गोणजातीयादीणि दीसंति। एत्थ चोदेति–णणु ए[गिंदिय-]विगलिंदिएसु पुढविमादिसु पासाण-तुसारंगार-वायु-णग्गोह-संख-कुंथु-भमरातिसु पुलिंगप्पओगो, तहा मट्टिया-ओस्सा-जाला-वातोली-चिंचा-सिप्पि-पिपीलि-मक्खिगातिसु य इत्थिलिंगणिद्देसो, सति णपुंसगत्तणे ण य जातिप्पयोगो पासाणजातियाति तत्थ कहं ण मुसा?। आयरिया भणंति–लोगप्पसिद्धीए जणपदसच्चमिति ण दोसो। पंचिंदिएसु पुण विचित्त-लिंगेसु लोगे वि नियमो अत्थि–जहा ग्राम्यपश्यसङ्घेष्वतरुणेषु स्त्री इति, तत्थ 'अयाणगा एते' त्ति परिभवदोसो संभवतीति अविजाणितूण जातिवयणं, णाते विसेसो वत्तव्वो॥ २०॥ थी-पुरिसतिरियाण चतुवयाण मुसापरि-हरणत्थमेकेकसो जहासंभवं वयणमुपदिट्ठं। समुदिताण चेवोवघातपरिहरणत्थमिदमुच्यते—

३३४. तहेव [1]मणुस्सं पसुं पक्खि वा वि [2]सिरीसिवं।
थूले पमेदिले वज्झे [3]पायिमे त्ति य णो वदे॥ २१॥

३३४. **तहेव मणुस्सं पसुं०** सिलोगो। **तहेवेति** जहा पढमं अवयणीयमिदमुद्दिट्ठं मणुस्स-[पसु-] पक्खि-सिरिसिवेसु जातिसद्दादेगवयणं थी-पुरिस-णपुंसगाविसेसो य, जतो सव्वेसु जतणा कातव्वा। **मणुस्सा** विदिता। **पसू** गो-महिस-अविकादयो। **पक्खिणो** हंसादयो। **सिरीसिवा** सप्पादयो। एतेसु थूलोऽयमिति, **थूलो** पुण विपुलसरीरो। **पमेदिलो** पगाढमेतो, अथूलो वि सुक्क-मेदभरितो त्ति भण्णति। **वज्झो** वधारिहो। तत्थ मणुस्सो **पुरिसमेधादिसु**, पक्खि-सिरीसिवा पक्खत्थं। **पायिमो** पाकारिहो, एत्थ वि जहासंभवं मणुस्सा-दयो। एताणि उवघातजणगाणि अवयणाणीति **णो वदे**॥ २१॥

जता पुण थूलातिसु जातणादि तदुपलक्खणेण वा अवस्साभिधाणं संभवति त्ति तदा—

३३५. [4]परिवूढे त्ति णं बूया बूया उवचिते त्ति य।
संजाते पीणिते [5]वा वि महाकाए त्ति आलवे॥ २२॥

३३५. **परिवूढे त्ति णं बूया०** सिलोगो। "दह दहि बृह बृहि वृद्धौ" इति, **परिवूढो** मक्खणादि-परिग्गहीतो। **उवचितो** मंसोवचएण। **संजातो** समत्तजोव्वणो। **पीणितो** आहारातितित्तो। **महाकायो** महासरीरो। सति अवस्सप्पयोयणे एवमालवे॥ २२॥

पुव्वं मारणन्तियदोसभययो ण भण्णति जधा तहा परितावणादिदोसभयादिहापि—

३३६. तहेव गाओ दोज्झाओ दम्मा गोरहग त्ति य।
वाहिमा रहजोग्गे[6] त्ति णेवं भासेज्ज पण्णवं॥ २३॥

३३६. **तहेव गाओ दोज्झाओ०** सिलोगो। **तहेवेति** पढमेण अवयणीएण समाणया। **गाओ दोज्झाओ** त्ति आदिसद्दलोवो एत्थ, तेण महिसिमातीतो **दोज्झाओ** दुहणपत्तकालाओ। **दम्मा** दमणपत्त-काला, ते य अस्सादयो वि। गोजोग्गा रहा गोरहजोगत्तणेण गच्छंति **गोरहगा**, पंडुमधुरादीसु किसोरसरिसा गोपोतलगा अण्णत्थ वा तरुणतरुणारोहा जे रहम्मि वाहिज्जंति, अमदप्पत्ता खुलगवसभा वा ते वि। **वाहिमा**

---

१ माणुसं पक्खि पसुं वा वृद्ध० ॥ २ सरीसिवं खं २ शु० । सरीसवं खं ३ ॥ ३ पाइमे य त्ति नो जे० ॥ ४ ३३५–३६ सूत्रश्लोकयुग्मं वृद्धविवरणे पूर्वापरविपर्यासेन वर्त्तते ॥ ५ यावि खं १–२–३ ॥ ६ °जोग त्ति खं १–२–३ । °जोगि त्ति खं ४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णंगलादिसव्वसमत्था । सिग्घगतयो सदप्पा जुग्गादिवधा **रहजोग्गा** । **इतिसद्दो** प्रकारवयणे । एवमादिअधिकरणभासं दोह-वाहातिसमारंभदोस इति **णेवं भासेज्ज पण्णवं** ॥ २३ ॥ सति पुणोऽवस्सं कारणे गोवयणे—

३३७. जुगंगवे[1] त्ति वा बूया धेणुं रसगवे[2] त्ति य[3] ।
रहस्से महव्वए[4] वा वि वए संवहणे त्ति य ॥ २४ ॥

३३७. **जुगंगवे त्ति णं बूया०** सिलोगो । दम्मं **जुगंगवं** भणेज्जा, **जुगं** जोवणत्थो । **धेणुमवि रसगवि त्ति** भणेज्जा । गो **रहस्सो** गोपोत्तलओ त्ति भणेज्जा । वाहिममवि **महव्वयमालवे** । रहजोग्गं च **संवहणमिति** । कमे पयोयणं नत्थि, सिलोगबंधाणुलोमं चेति । अणंतरसिलोगे **गाओ दोज्झाओ** पढमं, इह **जुगंगववदणमादौ** ॥ २४ ॥ पंचेंदिएसु भासाविसयो भणितो । एगिंदिएसु वणस्सतिकायं प्रति भण्णति—

३३८. तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वताणि वणाणि य[5] ।
रुक्खे[6] महल्ले पेहाय णेवं भासेज्ज पण्णवं ॥ २५ ॥

३३८. **तहेव गंतुमुज्जाणं०** सिलोगो । **तहेवेति** पूर्ववत् । क्रीडानिमित्तं वावियो रुक्खसमुदायो **उज्जाणं** । उस्सितो सिलासमुदायो **पव्वतो** । अडवीसु सयं जातं रुक्खगहणं **वणं** । एताणि उज्जाणादीणि जंतिच्छयो पयोयणतो वा गंतूणं तत्थ **य रुक्खे** अज्जुणादयो **महल्ले पेहाय** पेक्खिऊण **णेवं भासेज्ज** जमणंतरं भणिहि ॥ २५ ॥ कहं ण भासेज्ज ? त्ति भण्णति—एवं ण भासेज्ज । जधा—

३३९. अलं पासायखंभाणं तोरणाणं[10] गिहाण य ।
फलिह-ऽग्गल-नावाणं[11] अलं उदगदोणिणं[12] ॥ २६ ॥

३३९. **अलं पासायखंभाणं०** सिलोगो । **अलंसद्दो** भूसण-पज्जत्ती-वारणेसु वट्टति । भूसणे जधा—अलंकितो देवदत्तो । पज्जत्तीए—अलं मल्लो मल्लाय, पज्जत्तो जुद्धदाणे । वारणे—अलमतिप्रसङ्गेन । इह पज्जत्तिअत्थे सुदीहं उज्जुं रमणिज्जं निव्वरं रुक्खं दट्ठूण णेवं भासेज्ज—अलमयं एगो वि एगखंभपासायकरणे, पासादखंभो[13] वा होज्ज । पसीदंति जम्मि जणस्स मणो-णयणाणि सो **पासादो** । अलं वा एए रुक्खा पासादाणं णाणाविधकट्ठकम्मकरणेसु, जहा—रायकुलंगविभूसणाण **तोरणाणं**, चातुस्सालादीण वा **गिहाण फलिहं** कवाडणिरुंभणं तेसिं वा, उभयोपासपडिबंधि गिहादीकवाडनिरोधकट्ठमग्गला तेसिं वा, अणेगकट्ठसंघातकतमुदकजाणं वा णावा तेसिं वा अलं, एगकट्ठमुदगजाणमेत्र, जेण वा अरहट्टादीण उदकं संचरति सा **दोणी** तासिं वा अलं ॥ २६ ॥

अणुवदरिसितनिदरिसणसंगहत्थमिदं भण्णति—

३४०. पीढए चंगबेरे[15] य णंगलं[16] मइयं सिया[17] ।
जंतलट्ठी व णाभी वा [18]गंडिगा वा[19] अलं सिया ॥ २७ ॥

---

१ गुम्यादिवहाः ॥ २ **जुवंगवे** अचू० वृद्ध० विना ॥ ३ **रसदय त्ति** खं २–३ शु० हाटी० वृद्ध० ॥ ४ **य । हव्विए म°** खं ४ ॥ ५ **°हल्लए** अचू० वृद्ध० विना ॥ ६ **यावि** खं १–४ ॥ ७ **वा** खं १ ॥ ८ **रुक्खा महल्ल पेहाए** अचू० विना ॥ ९ यदृच्छातः प्रयोजनतो वा ॥ १० **°णाणि गिहाणि य** खं १–४ जे० शुपा० ॥ ११ **°वाइं अ°** खं ४ ॥ १२ **°णियं** खं ४ ॥ १३ **पासादचुओ वा** मूलादर्शे ॥ १४ ' अलं **तोरणकट्ठाणं** एते रुक्खा, अलं पुरवर**फलिहाण**मेते रुक्खा, अलं **दारयकट्ठाण**मेते रुक्खा, अलं **णावाकट्ठाण**मेते रुक्खा, अलं **उदगदोणीण**मेते रुक्खा, **उदगदोणी** अरहट्टस्स भवति, जीए उवरिं घडीओ पाणियं पाडेंति, अहवा **उदगदोणी** घरंगणए कट्ठमयी अप्पोदएसु देसेसु कीरइ, तत्थ मणुस्सा ण्हातति आयमंति वा, तयो दोसा भवंति त्ति ।" इति **वृद्धविवरणे** । "तथा 'तोरणानां' नगरतोरणादीनां 'गृहाणां च' कुटीरकादीनाम्, अलमिति योगः । तथा 'परिघार्गलानावां वा' तत्र नगरद्वारे **परिघः**, गोपाटादिषु **अर्गला**, नौ प्रतीतेति, आसामलमेते वृक्षाः । तथा उदकद्रोणीनामलम् । **उदकद्रोण्यः**–अरहट्टजलधारिका इति" इति **हारि० वृत्तौ** ॥ १५ **चंगबेरा य** हाटी० ॥ १६ **णंगले** खं १–२–३–४ जे० शु० हाटी० ॥ १७ **मइए सिया** जे० शु० । **मइयंसि वा** खं ३–४ । **मइयं सि–या** खं १–२ ॥ १८ **दंडिगा** शुपा० ॥ १९ **वज्झलंसियं** खं ४ ॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

**३४०. पीढए चंगबेरे य०** सिलोगो । भिसिगा-पंगुलिगा-पट्टण्हाण-पायपीढादिउववेसणगं **पीढगं**, एतेसिं वा अलं । कट्ठमयं समितातितिम्मणमलणं चंगेरिगासंठितं **चंगबेरं** । **णंगलं** [1]सीरोवकरणं । वाहितच्छेत्तोवरि समीकरण-बीयसारणत्थं समं कट्ठं **मइयं** । जंतो[2]प्पीडणं **जंतलट्ठी** । सगडादीण रहंगसण्णिबंधणकट्ठं **णाभी** । [3]**गंडिगा** [4]चम्मारादीणं दीहं चउरस्सं कट्ठगं ॥ २७॥ [5]समाणनिद्देसमितमिति अणुप्पबंधेणेव भण्णति—

३४१. आसणं सयणं जाणं हो[6]ज्जाऽलं किं[7]चुवस्सए ।
भूतोवघातिणिं भासं णेवं भासेज्ज पण्णवं ॥ २८ ॥

**३४१. आसणं सयणं०** सिलोगो । **आसणं** पीढिकादि । **सयणं** पलंकादि । **जाणं** जुग्गादि । **उवस्सयो** साधुणिलयणं तत्थ बलहरणादि । आसणावत्थंभो **वा "अवस्सयो"** तस्स **किंचि** । एतेसिं **अलमिति** अलंसद्दो सव्वेसिं जुज्जति । तत्थ दोसा–'दंडादिलक्खणपाढओ एस साधु' त्ति वणस्सतिकायच्छेदणं, वणसंडाहिपती तन्निवासिणी वा देवता कुप्पेज्जा, अतो एवं **भूतोवघातिणिं भासं** जीवोवघातकरिं० । एवमादीहिं समाणपयत्तणमुवेति ॥ २८ ॥ छाया-पंथोवदेसादिकारणे अवस्साभिहाणे सति [8]जतणत्थमतमुपदेसो—

३४२. तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वताणि वणाणि [9]य ।
रुक्खा महल्ल पेहाए एवं भासेज्ज पण्णवं ॥ २९ ॥

**३४२. तहेव गंतुमुज्जाणं०** सिलोगो । **तहेवेति** जहा पुव्वं । कारणतो [10]जंतिच्छाए वा **गंतुमुज्जाणं, उज्जाण-पव्वत-वणाणि** तधेव पुव्ववण्णिताणि [ सुत्तं ३३८ ] । **रुक्खा महल्ल पेहाए** त्ति पूर्ववत् । णवरं [ पुव्विं ] पडिसेधो, इह विधाणं । **एवं भासेज्ज** त्ति जयणत्थमुपदेसो त्ति ॥ २९ ॥ सा इमा जतणा—

३४३. जाइमंता इमे रुक्खा दी[11]हा वट्टा महालया ।
पयायसाला विडिमा वदे [12]दरिसणिय त्ति य ॥ ३० ॥

**३४३. जाइमंता इमे रुक्खा०** सिलोगो । विसिट्ठजातिया बकुलादयो विविधजातिया वा **जातिमंता** । **इमे** इति पच्चक्खोवदरिसणं । **रुक्खा दुमपुप्फिताए** [ पत्रं ७ नि. गा. १४ ] वण्णिता । **दीहा** णालिएरियादयो । **वट्टा** पूयफलिमादयो । महंता बहूण वा पक्खिमादीण आलया **महालया** । खंधविणिग्गता डालमूला **साला** जेसिं पकरिसेण जाता ते **पयायसाला** । महतीओ साहा **विडिमा** जेसिं संति ते विडिमा । पतायसद्देण वा उभयं संबज्झति–पयायसाला-विडिमा । **दरिसणिय त्ति य** साधूण विस्समण-पंथोवदेसादिकारणे सति एवं वदे, अण्णहा[13]ऽसव्वाधारो ॥ ३० ॥ रुक्खेसु पडिसेहो जयणा य भणिता । तप्फलेसु पडिसेहत्थमिमं—

३४४. तहा फलाणि पक्काणि पा[14]यख[15]ज्जाणि णो वदे ।
वेलो[16]इमाणि टालाणि वेहिमं[17] वेति णो वदे ॥ ३१ ॥

**३४४. तहा फलाणि पक्काणि०** सिलोगो । **तहेति** पुव्वपडिसेहतुल्लता । पाकविसारीणि **फलाणि** पणसादीणि, तेसिं दरिसणे णो एवं वदेज्जा–**पक्काणि**माणि, पलालातिपक्कं वा कातूण खातियव्वाणि किंचिदपक्काणि,

१ **सिरोव°** मूलादर्शे ॥ २ **जंतोप्फीड°** मूलादर्शे ॥ ३ **"गंडिया** णाम सुवण्णगारस्स भण्णइ जत्थ सुवण्णगं कुट्टइ" इति वृद्ध० । **"गण्डिका** सुवर्णकाराणामधिकरणी स्थापनी भवति" **हाटी०** ॥ ४ चर्मकरादीनाम् ॥ ५ समाननिर्देशमिदमिति ॥ ६ **°ज्जा वा किं°** अचू० विना ॥ ७ **किंचऽवस्सए** अचूग० । **किंतुवस्सए** खं ४ शुपा० ॥ ८ यतनार्थमयमुपदेशः ॥ ९ **वा** खं १ ॥ १० यदृच्छया ॥ ११ **दीह-वट्टा** अचू० वृद्ध० विना ॥ १२ **दंसणिय त्ति** खं १ । **दरिसणे त्ति** खं २-४ जे० । **दरिसणि त्ति** खं ३ शु० ॥ १३ **°हासव्वावारो** मूलादर्शे । अन्यथाऽसद्व्याहारः ॥ १४ **पाइख°** जे० वृद्ध० ॥ १५ **°खज्ज त्ति णो** खं ४ ॥ १६ **वेलोइयाइं टा°** खं २ शु० हाटी० ॥ १७ **वेहिमाइं ति** खं २ शु० । **वेहिमा व त्ति** खं ४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जधा कयलादीणि । कालतो वा पताणओतेउं **वेलोइमाणि** अतिपागाउलं ति बंधणतो । **टालाणि** जहा कविट्ठादीणि अबद्धट्ठिगाणि विभातसंधीणि सक्कंति पेसीकाउं, ताणि पुण टालियंबायिसु पजुज्जंति । णवीकरणीयाणि अंबाणि अतो **वेहिमं वेति** । देवता-ऽधिपतिपओसा-ऽऽरंभकरणदोसा इति **णो** एवं **वदे** ॥ ३१ ॥

सति पुण तदुपलक्खितपधोपदेसादिपयोयणे एवं वदेज्ज—

**३४५. असंथडा इमे अंबा बहुनिव्वत्तियाफला[1] ।**

**वएज्ज बहुसंभूता भूतरूवे[2] त्ति वा पुणो ॥ ३२ ॥**

**३४५. असंथडा इमे अंबा०** सिलोगो । फलादिभरेण [ ण ] संथरंति वोढुमिति **असंथडा, इमे** इति पचक्खवयणं, **अंबा** 'फलेसु पहाण' त्ति अंबवयणं । भणितं च **वररुचिणा**—"अंबं फलाणं मम दालिमं प्रियं" [ ] । एत्थ अंबादयो त्ति आदिसद्दलोपो दट्ठव्वो । बहूणि निव्वत्तियाणि फलाणि जेहिं ते **बहुनिव्वत्तियफला** सुफलिता । बहुसंभूताणि बहूणि फलाणि ण दुव्वायहताणि तव्विहा **बहुसंभूता** । सुणिप्फत्तीए फल-रसादिसंपण्णा **भूतरूवा** । **पुणोसद्दो** णिरुवघाती-अणवज्जवयणसूयणत्थं ॥ ३२ ॥

फलेसु वयणपडिसेहविधाणमुपदिट्ठं । वणस्सतिविसेस एवोसहीसु इमं—

**३४६. तहेवोसहिओ[3] पक्काओ नीलिताओ छवीतिया[4] ।**

**लाइमा भज्जिमाओ त्ति पिहुखज्ज त्ति णो वदे ॥ ३३ ॥**

**३४६. तहेवोसहिओ पक्काओ०** सिलोगो । **तहेवेति** जहा फलादिसु तेणेव प्रकारेणं **ओसहीओ** फलपाकपज्जन्ताओ सालिमादि[या]ओ ताओ पाकपत्ताओ, ण वा पाकपत्ता **णीलियाओ** चेव, एवं **णो वदेज्ज** त्ति सिलोगपज्जन्ते भणिहिति तं पत्तेयं परिसमप्पति । **छवीओ** संबलीओ णिप्फावादीण, ताओ वि **पक्काओ नीलिताओ** वा **णो वदेज्जा** । लुणणजोग्गा **लाइमा** । भुंजणजोग्गा अपक्कचणगादि **भज्जिमा** । कुंभेलसालिमाति **पिहुखज्जा** । एत्थ वि लुणणा-ऽऽरंभ-थालिपाकादयो दोस त्ति णो एवं वदे ॥ ३३ ॥

सति पुण निरूवणादिप्पओयणे एवं वदेज्ज—

**३४७. विरूढा[5] बहुसंभूता थिरा उस्सडा[6] ति य ।**

**गब्भिणाओ[7] पसूताओ ससाराओ त्ति आलवे ॥ ३४ ॥**

**३४७. विरूढा बहुसंभूता०** सिलोगो । **विरूढा** अंकुरिता । **बहुसंभूता** सुफलिता । जोग्गादिउवघातातीताओ **थिरा** । सुसंवड्ढिता **उस्सडा** । **इति** एवं वा वते[8] । अणिव्विसूणाओ **गब्भिणाओ** । णिव्विसूताओ **पसूताओ** । सव्वोवघातविरहिताओ सुणिप्फण्णाओ **ससाराओ त्ति आलवे** ॥ ३४ ॥

वणस्सतिणिसेधविहाणमुपदिट्ठं आलावं प्रति । आउक्कायजयणत्थमिदमारब्भते—

**३४८. तहा[9] नदीओ पुण्णाओ कायपेज्ज[10] त्ति णो वदे ।**

**णावाहि तारिमाओ त्ति पाणिपेज्ज त्ति णो वदे ॥ ३५ ॥**

---

१ °**निव्वडियाफला** वृद्ध० हाटी० । °**निव्वट्टिमाफला** खं १-२-३-४ शु० । **निम्वट्टिमाफला** जे० ॥ २ °**रूवे त्ति** खं १ जे० । °**रूवि त्ति** खं २ ॥ ३ **तहोसहीओ**° खं २ अचू० हाटी० विना ॥ ४ **छवीई य** खं २-४ । **छवी इय** खं १-३ । **छवीति वा** हाटी० ॥ ५ **रूढा** अचू० वृद्ध० विना ॥ ६ **ऊसढा इय** खं ४ । **ऊसढा वि य** खं १-२-३ शु० । **उस्सढा वि य** जे० । **उस्सिया ति य** वृद्ध० ॥ ७ **गब्भियाओ** अचू० विना ॥ ८ **एवं बाधते** । **अणि**° मूलादर्शे ॥ ९ इत आरभ्य चतस्रो गाथाः **अचू०** विना सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु हाटी० वृद्धविवरणे च **तहेव संखडिं० संखडिं संखडिं० तहा नईओ० बहुवाहडा०** इत्येवं क्रमभेदेन वर्तन्ते ॥ १० **कायतेज्ज त्ति** जे० खं १ वृद्ध० अचूपा० । **कायपेज्ज त्ति** वृद्धपा० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**३४८. तहा नदीओ०** सिलोगो। **तहेवेति** पुव्वभणितं। **णदीओ गंगा-जमुणादीओ [पुण्णाओ]** भरिताओ। [1]तडत्थितेहिं काकेहिं पिज्जंति **काकपेज्जा** तहा **णो वदे**। **केसिंचि "कायतेज्ज त्ति"** ताओ पुण णातिदूरतारिमाओ। दूरतारिमाओ **णावाहि तारिमाओ**। [2]तडत्थेहिं हत्थेहिं पेज्जा **पाणिपेज्जा**। काकपेज्जा-पाणिपेज्जाण विसेसो–तडत्थकाकपेज्जाओ सुभरिताओ, बाहाहिं दूरं पाविज्जंति त्ति पाणिपेज्जा किंचिदूणा। तत्थ णि[3]यत्तणा वा दोणिपक्खेवादयो दोस त्ति। तेण जधुद्दिट्ठवयणाणि णो वदे ॥ ३५ ॥

जदा पुण अद्धाणगता संतरणाभिमुहा साधू पुच्छेज्ज, कहंचि वा अवस्सभणितव्वं तदा एवं भणेज्ज—

३४९. [4]बहुपाहडा अगाहा बहुसलिलुप्पीलोदगा।
बहुवित्थडोदगा यावि एवं भासेज्ज पण्णवं ॥ ३६ ॥

**३४९. बहुपाहडा अगाहा०** सिलोगो। बहुभरिता **बहुपाहडा**। **अगाहा** अत्थग्घा, 'थग्घा अत्थि ण वा?' ण विभासेज्ज त्ति। बहुयं पुण पाणियं जासु ता **बहुसलिला**। जासिं समुद्देण अण्णाए वा पवहाए णदीए उप्पीलियमुदगं ण णिव्वहति ता **उप्पीलोदगा**। णदीओ विकिट्ठुप्पधाणि विरल्लेंतीओ **बहुवित्थडोदगा**। जहोवदिट्ठमेव **भासेज्ज पण्णवं** ति सागारियादिसु जा जा जयणा ताए भासेज्ज ॥ ३६ ॥ आउक्कायोवरोहपरिहरणत्थमुपदिट्ठा जयणा। सव्वेगेंदिय-वियलिंदिय-पंचेंदियोवरोहपरिहरणत्थमिदं भण्णति—

३५०. तहेव संखडिं [5]णच्चा किच्चं कज्जं ति णो वदे।
[6]पणीतत्थं च वज्झो त्ति [7]सुतित्थ त्ति य [8]आपका ॥ ३७ ॥

**३५०. तहेव संखडिं णच्चा०** सिलोगो। **तहेवेति** तेणेव जतणाप्रकारेण। छज्जीवकायायुसमत्थखंडणं **संखडी**, केणति निमित्तेण पकरणं **णच्चा** जाणिऊण **किच्चमेव** घरत्थेण देव-पीति-मणुस्सकज्जमिति एवं **णो वदे**। पणीयो परभवं जस्स जीवितत्थो सो **पणीतत्थो**, सो वि णेवं वत्तव्वो–वधारिहो चोरादि **वज्झो**, तमवि पणिज्जमाणं दट्ठूण **वज्झो त्ति** ण भणितव्वं, तस्स अणस्सासो लोकस्स वा 'पत्तकारणो' त्ति मा होज्जा। सोभणतित्था **सुतित्था आपका** णदी, तत्थ पुच्छितेण अपुच्छितेण वाऽधिकरणपवत्तणभया णेवं वत्तव्वं **सुतित्थ त्ति** ॥३७॥

सति पुण अच्चाइण्णासु साधुनिवारणत्थमितरासु वा उवग्गहत्थमुवदेसे इमा जतणा—

३५१. संखडिं संखडिं [9]बूता पणियट्ठे त्ति [10]तेणगं।
बहुसमाणि तित्थाणि आवगाणं वियागरे ॥ ३८ ॥

**३५१. संखडिं संखडिं बूता०** सिलोगो। **संखडी** पुव्वभणिता, तं सणियं संजयपासाए अच्चातिण्णकहणातिसु **संखडिमेव बूया**। **तेणकमपि** अणुकंपापुव्वं सेहातिथिरीकरणत्थं 'एवं पावकम्मिणं विपाक इह, परत्थ य अणेगगुण' त्ति सणियमुवदिसेज्जा। णदीतित्थाण वि साधूसु समुत्तरणत्थं पुच्छमाणेसु को जाणइ अंतज्जले? इमाणि पुण बहुसमाणि। घरत्थपुच्छाओ पुण 'बहूणि से समाणि विसमाणि य, को जाणति?' त्ति एवं संचिंतितं वियागरे ॥ ३८ ॥ संखडी-पणियट्ठवयणजयणोवदिट्ठा। सव्वगतस्समारंभजयणट्ठमिदं भण्णति—

---

१ "काएण तरिज्जंति त्ति **कायतेज्जाओ**। **अण्णे** पुण एवं पढंति, जहा—**"कायपेज्ज त्ति नो वदे"** काया तडत्था पिबंतीति **कायपेज्जा**।" इति **वृद्धविवरणे**। "कायतरणीयाः शरीरतरणयोग्याः" हाटी० ॥ २ "प्राणिपेयाः' तटस्थप्राणिपेयां इति नो वदेत्" हाटी०। "तडत्थिएहिं पाणीहिं पेज्जंतीति **पाणिपेज्जाओ**" वृद्ध० ॥ ३ **नियत्थणा वा दोण्णिपक्केवादयो** मूलादर्शे ॥ ४ **बहुवाहडा** अचू० हाटी० विना ॥ ५ **णच्चा करणीयं ति नो वए** खं ४ हाटी०। **णच्चा किच्चमेयं ति नो वए** वृद्ध०। **किच्चं कुव्वं ति नो वए** खं १ ॥ ६ **तेणगं वा वि वज्झे** अचू० वृद्ध० विना ॥ ७ **सुतित्थे त्ति** अचू० विना ॥ ८ **आवगा** अचू० विना ॥ ९ **बूया पणियट्ठं ति** खं २ शु० ॥ १० **तेणगा** खं ३ ॥

३५२. तहेव सावज्जं जोगं परस्सऽट्ठाए[1] णिट्ठितं ।
कीरमाणं ति वा णच्चा सावज्जं ण[2] लवे मुणी ॥ ३९ ॥

३५२. **तहेव सावज्जं जोगं०** सिलोगो । **तहेवे**ति भणितं । अवज्जं–गरहितं, सह तेण **सावज्जो, जोगो** वावारो, तं सावज्जं, साधूण ण चेव सावज्जो जोगो त्ति **परस्सऽट्ठाए णिट्ठितं** परिसमत्तं **कीरमाणमिति वा** अणवसितक्रियं, णिट्ठिते कीरमाणे वा ण साधुवयणेण समारंभो तहा वि णिवारणं, किमंग पुण करिस्समाणं ? । एवं जाणिऊण तं **सावज्जं ण लवे मुणी** ॥ ३९ ॥

केरिसं पुण सावज्जं ण भणितव्वं ? ति सावज्जवयणसमासोपदरिसणत्थमिदं भण्णति—

३५३. [3]सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुच्छिण्णे सुहडे-[4]मते ।
सुणिट्ठिते सुलट्ठे त्ति सावज्जं[5] ण लवे मुणी ॥ ४० ॥

३५३. **सुकडे त्ति सुपक्के त्ति०** सिलोगो । सुट्ठु कतं **सुकडं**, एतं पसंसावयणं अब्भणुमोदणं च, एतं सावज्जं वज्जए । **सुकडे त्ति** सर्वक्रियापसंसणं । **सुपक्के त्ति** पागस्स, तं पुण मिट्ठमसणादिसु । **सुच्छिण्णे** रुक्खादिसु । **सुहडे** गामादिघातादिसु । **सुमते** सुमारियवयणं, तं कतोयि अणुवसंतादि । **सुणिट्ठिते** बहुवेसणसंपण्णं निट्ठाणकादि । **सुलट्ठे** पासादादि । एवंजातीयमण्णं पि **सावज्जं ण लवे मुणी** । अणवज्जं पुण लोयकरण-बंभचेर[ फल ]पाक-सिणेहपासच्छेद-सेहहरण-पंडितमरण-अट्ठविहकम्मनिट्ठवण-सुलट्ठधम्मकहादि-सिलोग-जहासंखेण लवे ॥ ४० ॥

जदा पुण गिलाणादिनिमित्तं पयोयणतो वा अवस्सभणितव्वं भवति तदा इमा जतणा । जहा—

३५४. पयत्तपक्के[6] त्ति[7] ण पक्कमालवे, पयत्तछिण्णे[8] त्ति[9] ण छिण्णमालवे ।
पयत्तलट्ठे[10] त्ति [11]णो कम्महेउयं, [12]गाढप्पधारं ति ण गाढमालवे ॥ ४१ ॥

३५४. **पयत्तपक्के त्ति०** वृत्तम् । गिलाणातिनिमित्तमेवं वदेज्जा–**पयत्तपक्कं, ण [13]पक्कमिति** । रुक्खं खंभादि वा **पयत्त[ छिण्णे,]** ण **छिण्णमिति आलवे** । वाणमंतरातिघरेसु पयत्तकतेसु **पयत्तलट्ठमेव, ण** पुण लट्ठमिति **कम्मपसंसणहेतुकमेवं** वदे । **पयत्तलट्ठे त्ति व कम्महेउयं**, अहवा तक्कम्मभासणलट्ठं ति **कम्महेतुकं** । **[14]गाढप्पधारं** तदप्पत्तियपरिहरणत्थं **पधार[15]गाढमालवे** । सुकडातिसु वि अवस्सवयणे पयत्तकडाति आलवे ॥ ४१ ॥ कय-विक्कया-ऽहिकरणपरिहरणत्थमिदमवि वत्तव्वं—

३५५. सव्वुक्कस्सं[16] [17]परग्घं वा अतुलं णत्थि एरिसं ।
अचक्कियमवत्तव्वं [18]अचिंतं चेव णो वए ॥ ४२ ॥

३५५. **सव्वुक्कस्सं परग्घं वा०** सिलोगो । पणियणियोगे **सव्वुक्कस्स**मिदमिति णो एवं वदे, 'अणंतरतणा पुढवी'ति [19]सइरसंकहाए वि णो एवं वदे । परमो जस्स अग्घो तं **परग्घं**, जं सुमहग्घं माणिक्काति एतस्स वा एस परमो अग्घो । **अहवा "परार्द्धं"** प्रधानम् । तुलाए समितं तुलं, **अतुलमिदं** ससारतया, किं

१ °**ट्ठाय णि**° खं १ ॥ २ **णाऽऽलवे** खं २–३ शु० वृद्ध० हाटी० ॥ ३ **सुकडे** खं २–४ ॥ ४ °**मडे** सर्वेषु सूत्रादर्शेषु ॥ ५ °**ज्जं वज्जए मुणी** अचू० विना ॥ ६ °**पक्कि त्ति** खं २ ॥ ७ **त्ति व प**° अचू० विना ॥ ८ °**छिण्ण त्ति** जे० शु० ॥ ९ **त्ति व छि**° अचू० विना ॥ १० °**लट्ठ त्ति** शु० ११ **त्ति व क**° अचू० विना ॥ १२ **पहारगाढे त्ति व गा**° अचू० विना ॥ १३ **पक्कमिति** मूलादर्शे ॥ १४ गाढप्रहारम् ॥ १५ °**रवालमा**° मूलादर्शे । प्रहारगाढं गाढप्रहारमित्यर्थः ॥ १६ °**क्कसं प**° अचू० विना ॥ १७ **परद्धं वा** अचूपा० ॥ १८ **अचियत्तं चेव** अचू० वृद्ध० विना ॥ १९ स्वैरसङ्कथायाम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुणा ? [ ण ] अत्थि एरिसं अण्णं । **अचक्कियं** असक्कं, जहा "एवं चक्किया एवं से कप्पति" [ दशा० अ० ८ सू० २३३ ] । **अवत्तव्वं** भणितुं ण तीरति । **अचिंतितं** चिंतेतुं पि ण तीरति वइरादि, किं पुण उवमेउं णाउं वा ? । सव्वविसेसेहि एताणि णिव्वण्णणादिसयवयणाणि **णो वदे** ॥ ४२ ॥

जहाभणितं परेणं पडिवातेउमसक्कं अतो अतिसयवयणसरिसमिदमिति भण्णति—

३५६. **सव्वमेदं वदिस्सामि सव्वमेतं ति णो वदे ।**

**अणुवीयि सव्वं सव्वत्थ एवं भासेज्ज पण्णवं ॥ ४३ ॥**

३५६. **सव्वमेदं वदिस्सामि०** सिलोगो । असंजतऽप्पाहितपावणं नत्थि । जता वि संजतो अप्पाहेज्ज बहुविहं 'सचित्तादिसंववहारगयं सव्वमेतं भणाहि' त्ति संदिट्ठो जो भणेज्ज—**सव्वमेतं वदिस्सामि** त्ति तस्स चोदणवयं **सव्वमेतं** 'जहाभणियवण्णं पडिवादेहामि' **इति णो वदे । अणुवीयि** वयणीया-ऽवयणीयत्तेण विभज्ज **सव्वमिति** सव्वं पुव्वभणितं वयणविणिओगं **सव्वत्थ** सव्वेसु परिपुच्छादिथाणेसु, **एवमिति** जहाजहोवदिट्ठं **भासेज्ज पण्णवं** ति भणितं ॥ ४३ ॥

सामण्णेण पसंसावयणविहाणमुवदिट्ठं । विसेसेण पणितपसंसापडिसेहत्थमिदं भण्णति—

३५७. **सुक्कीयं वा सुविक्कीयं अकेज्जं केज्जमेव वा ।**

**इमं गेण्ह इमं मुंच पणितं णो वियागरे ॥ ४४ ॥**

३५७. **सुक्कीयं वा सुविक्कीयं०** सिलोगो । क्रायकेण विक्रायकेण वा पुव्वगहितदिण्णे पुच्छितो णो एवं वियागरे—एत्तिएण जदि गहितं सुक्कीयमिदं सुविक्कीयं वा, एत्तिएण अणा (?) पुण **इमं** एतेण मोल्लेण **अकेज्जं** एत्तिएण वा **केज्जं**, अहवा **इमं** अग्घेहिति एतं **गेण्ह, इमं** वा ण पडिअग्घिहि त्ति **मुंच पणितं । एवं णो वियागरे** कत-विक्कतगतं ॥ ४४ ॥ किमेतेण ? एवमादिसु बहुसावज्जवयणमिति समासेणेव दिस्सति—

३५८. **अप्पग्घे वा महग्घे वा कये वा विक्कये यि वा ।**

**पणितट्ठे समुप्पण्णे अणवज्जं वियागरे ॥ ४५ ॥**

३५८. **अप्पग्घे वा०** सिलोगो । अप्पग्घं महर्घं,महर्घं बहुमोल्लं, तं पुण सुहि-संबंधिजातीओ कोति किणेज्ज विक्किणेज्ज वा, तम्मि **कये [ वा ] विक्कये यि वा** एवं **पणितगते अट्ठे समुप्पण्णे** चिरमुक्कपणितवावरा वयं इह वा काएसि त्ति ण याणामो, एवमादि **अणवज्जं वियागरे** ॥ ४५ ॥ कयविक्कयाधिकरणपरिहरणमुपदिट्ठं । अणंतरं सर्वक्रियागताधिकरणपरिहरणत्थमिदं भण्णति—

३५९. **तहेवासंजतं धीरो आस एहि करेहि वा ।**

**सय चिट्ठ वयाहि त्ति णेवं भासेज्ज पण्णवं ॥ ४६ ॥**

३५९. **तहेवासंजतं धीरो०** सिलोगो । **तहेवेति** सावज्जवज्जणप्रकारावधारणं । समिति-गुत्तीहिं अणियमितप्पा अस्संजतो, **तमस्संजतं** । धीः—बुद्धिः सा जस्स अत्थि सो **धीरो । आस** उपविस, **एहि** इतो आगच्छ,

१ निर्वर्णनातिशयवचनानि ॥ २ प्रतिपादयितुमशक्यम् अतः । **पडिवातेऊणमसक्कमतो** मूलादर्शे ॥ ३ °**वीई स**° खं १ जे० । **वीइ स**° खं ४ शु० । **वीईय स**° खं २ ॥ ४ **पण्णवे** खं १ ॥ ५ **इ वा** खं १-३-४ जे० । **वि वा** खं २ शु० ॥ ६ **तम्हाऽसं**° खं ४ ॥ ७ **वीरो** जे० ॥ ८ **एहिं** खं ३ ॥ ९ **करेहिं** खं १ जे० ॥ १० **सयं** खं १-३-४ जे० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**करेहि** वा किंचि वावारं, **सय** वा सुवाहि, **चिट्ठ** उड्डउ, **वयाहि** गच्छ, 'तत्तायगोलो इव सो समंततो सत्ताण डहणरूवो' त्ति तं **णेवं भासेज्ज पण्णवं**। अस्संजतस्स वेट्ठावणादि पडिसिद्धं, ण पुण संजतस्स ॥ ४६ ॥

असंजता य साहवो, साधुसद्दो य लोगे सज्जणेसु पयुज्जति—साधुपुरिसो अयमिति, तित्थंतरीएसु य, अतो विसेसणमिदं भण्णति—

३६०. बहवे इमे असाधू लोए वुच्चंति साधवो ।
ण लवे असाधुं साधुं ति साधुं साधुं ति आलवे ॥ ४७ ॥

३६०. **बहवे इमे असाधू०** सिलोगो । **बहवे** अणेगे **इमे** इति पच्चक्खाभिधाणं असाहवो मोक्खसाहगाणं जोगाणं णाम-ठवणा-दव्वसाधुत्तेण गुणैकदेसजोगेण वा **लोए वुच्चंति साधवो** । तं तित्थंतरियाई **ण लवे असाहुं** संतं **साधुमिति** । निव्वाणसाहगजोगसाधणपरसाहुं **साधुमिति आलवे** ॥ ४७ ॥

तस्स साहुणो अजधाभूतलोगभणितमत्तसाधूहिंतो गुणकतमिमं विसेसंतरमारब्भते—

३६१. णाण-दंसणसंपण्णं संजमे य तवे रतं ।
एतग्गुणसमाउत्तं संजतं साधुमालवे ॥ ४८ ॥

३६१. **णाणदंसण०** सिलोगो । **नाणं** पंचविहं, **दंसणं** सम्मत्तं, तेहिं **संपण्णं** समुदितं । **संजमो** सत्तरसविधो, **तवो** बारसधा, एत्थ **रतं** पसत्तं । एतेहि **गुणेहि समाउत्तं [संजतं]** सम्मं जतं, तं **साधुमालवे** ॥४८॥

सव्वक्रियासु असंजयप्पयोगकरणं पडिसिद्धं । इमं पुण विसेसेण रागप्पहाणं बहुप्पगं चेति भण्णति—

३६२. देवाणं मणुयाणं च तिरियाणं च वुग्गहे ।
अमुगाणं जतो होतु मा वा होतु त्ति णो वदे ॥ ४९ ॥

३६२. **देवाणं मणुयाणं०** सिलोगो । **देवाणं** देवा-ऽसुरसंगामकधादिसु वि **णरकवधादिसु, मणुस्साणं** रायसंधि-विग्गहादिसु, **तिरियाणं** वसभातीणं जुद्धेसु **अमुगाणं** देवाणं असुराण वा, **मणुयाणं** इमस्स इमस्स वा रण्णो, तिरियाणं इमस्स इमस्स वा वसभस्स **जतो होतु, मा वा** एतस्स **होतु** । तप्पक्खिता देवता पदुस्सेज्ज, मणुस्सेसु वा सज्जं कलहादयो त्ति **नो एवं वदे** ॥ ४९ ॥

देवादिवुग्गहेसु जय-पराजयवयणं निवारितं । इदमवि देवताकतमेव होज्ज त्ति भण्णति—

३६३. वाओ वुट्ठं व सीउण्हं खेमं धातं सिवं ति वा ।
कया णु होज्ज एताणि ? मा वा होतु त्ति णो वदे ॥ ५० ॥

३६३. **वाओ वुट्ठं व सीउण्हं०** सिलोगो । **वात-वुट्ठ-सीउण्हाणि** लोगप्पसिद्धाणि । **खेमं** परचक्कातिणिरुवद्दवं । **धातं** सुभिक्खं । कुलरोग-मारिविरहितं **सिवं** । तत्थ घम्मत्तो 'उत्तरवातो वाससहितो' त्ति वातं, आसारा(?ढा)तिसु वा वुट्ठं, जव-निप्फावादिनिप्फत्तीनिमित्तं सीतं, हिमेण विणस्समाणेसु निप्फावातिसु सतं वा सीताभिभूतो उण्हं, परचक्के व पीडिये वा खेमं, मधुरण्णे सुभिक्खं, छेववो (?) वा सिवं । एताणि सरीरसुहहेउं पयाणं वा पुणो पुणो आसंसमाणो **कया णु** कम्हि पुण काले **होज्ज**? इति । वात-वुट्ठ-सीउण्हेहिं वा अप्पणो पयाणं वा पीडणमसहमाणो पंतजणवयरोसेण वा खेम-वाय-सिवाणि रुक्खप्पभंजण-सत्तुप्पिलावण-हिमडहण-सत्तपरितावण-जणवदडहण-लूडण-छुधामरण-भयादयो दोसा इति **एताणि कया होज्ज ? त्ति णो वदे** । तदभावे

१ **साहुणो** अचू० वृद्ध० विना ॥ २ **असाहु** जे० ॥ ३ **साहु त्ति साहुं साहु त्ति** खं १-३-४ शु० ॥ ४ **एवंगुण°** अचू० विना ॥ ५ **रतं पगत्तं** मूलादर्शे ॥ ६ **माणुसाणं** खं १ ॥ ७-८ **होज्ज त्ति** खं ३ ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुण अतिघम्म-तणभंग-जवानिप्फत्ति-सत्तुपरितावणा-मंतिचारभडवित्तिपरिच्छेद-भिक्खाभाव-मसाणोवजीविपाणातिविवित्तिच्छेदा[दी] दोसा इति **णो वदे**। ण वा कस्सति वयणेण भवंति वा ण वा, केवलमधिकरणाणुमोदणं ॥५०॥

भणितमधिकरणपरिहरणं । इमं पुण अजहाभूतवदणपरिहरणत्थं भण्णति—

**३६४. तहेव मेहं व णहं व माणवं, ण देव देवे[1] त्ति गिरं वदेज्जा ।**
**सम्मुच्छिते उण्णते वा पयोदे, वदेज्ज वा वुट्ठे[2] बलाहगे त्ति ॥ ५१ ॥**

३६४. **तहेव मेहं व णहं व०** वृत्तम् । **तहेवे**ति भणितं । **मेघो** तोयदो । **णहं** आगासं । **माणवो** मणुस्सो । एतेसिं किंचि **वा**सद्देण अण्णस्स वा जणस्स पसंसावयणत्थं भण्णति–तं अदेवं संतं णो एवं **वदेज्ज**— उण्णतो देवो, वरिसति वा आगासं वा देवसद्दो त्ति, रायाणं वा देवमिति, मिच्छत्तथिरीकरणादयो दोसा इति । सति पुणावस्सवयणे जतणावयणमिमं मेघे–सम्मुच्छितो पयोदो, णिवतियो वा पयोदो, वुट्ठं वा पडितं, बलाहगो वा सम्मुच्छितो ॥ ५१ ॥ मेघजयणावयणमुपदिट्ठं । णभ-माणवजयणावयणोवदेसत्थमिमं भण्णति—

**३६५. अंतलिक्खे त्ति णं बूया गुज्झाणुचरितं ति य ।**
**रिद्धिमंतं णरं दिस्स रिद्धिमंतं ति आलवे ॥ ५२ ॥**

३६५. **अंतलिक्खे त्ति णं बूया०** सिलोगो । **णभमंतलिक्खं** भणेज्जा, निम्मलमंतलिक्खं **गुज्झाणुचरितं** वा, अहवा मेघं अंतलिक्खं गुज्झगाणुचरितं वा बूया । तहा **रिद्धिमंतं** रायादिगं दट्ठूण **रिद्धिमंत**मेव वदे, ण देवं ॥ ५२ ॥ अवयणीयणिसेधो[3] वयणीयजयणा य भणिता । 'अपरिमितो वयणगोयरो' त्ति सेससंगहत्थं संखेववयणमुपदिस्सति । जहा—

**३६६. तहेव सावज्जऽणुमोयणी गिरा, ओहारिणी जा य परोवघातिणी ।**
**से कोह लोह भयसा[4] व माणवा!, ण हासमाणो वि गिरं वदेज्जा ॥ ५३ ॥**

३६६. **तहेव सावज्जऽणुमोयणी गिरा०** वृत्तम् । **तहेवे**ति पुव्वनिरूवितं । **सावज्जणुमोदणी** 'छेत्ताइं कसह, ववह' एवमादि । संदिद्धेसु 'एवमिदं' इति निच्छयवयण**मवधारणं**। जा त **परस्स** सक्का **उवग्घातं** करेति चोंकण-पत्थण-वाहण-मारणातिगं । **से** इति वयणोवायणत्थं । **कोहो** कोवो, **लोभो** लोलिता, आद्यन्तवयणं तम्मज्झपतितोवसंगहनिमित्तं, अतो माण-माताए वा । **भयसा वा** इति सकारांतं लिंगं, एत्थ आदिसद्दलोपेण पेज्जातिवयणं, एतेसिं निमित्तोपादाणत्थं च वयणं । **माणवा!** इति मणुस्सामंतणं 'मणुस्सेसु धम्मोवदेस' इति । **ण हासमाणो वि गिरं वदेज्जा** परं हासयमाणो वि किमु कोधादीहिं एवंविहं गिरं वदेज्जा सावज्जणुमोयणाति ? ॥ ५३ ॥ वक्कसुद्धीए इहभव एव संसिद्धिकफलपदरिसणत्थमिदं भण्णति—

**३६७. से[5]-वक्कसुद्धी समुपेहिता[6] सिया, गिरं च[7] दुट्ठं परिवज्जए सदा ।**
**मितं अदुट्ठं अणुवीतिभासए, स-ताण मज्झे लभती पसंसणं ॥ ५४ ॥**

---

१ **देवे त्ति** खं २-३ ॥ २ **वुट्ठ** खं १-२-३ जे० ॥ ३ **अवणीयोणिसेवो वय**° मूलादर्शे ॥ ४ **भय हास माणवो** खं ३-४ । **भय हास माणवा !** वृद्ध० । "**से कोह लोह भय हास माणवा ! न हासमाणो,** तत्थ **से** त्ति साहुस्स णिद्देसो । तत्थ **कोहो** आदीए, **लोभो** अंते, आइ-अंतग्गहणेण मज्झे वट्टमाणा माण-माया गहिया, **भय-हास**ग्गहणेणं पेज्जादिदोसा गहिता । **माणवा !** इति 'मणुस्सजातीए एस साधुधम्मो' त्ति काऊण मणुस्साऽऽमंतणं कयं, जहा–हे माणवा ! अवि हसंतो वि मा अभासं भासिज्जा, किं पुण कोहादीहिं ? ति" इति **वृद्धविवरणम्** । "'से' इति तामेवम्भूतां क्रोधाद् लोभाद् भयाद् हासाद् वा ( प्रत्यन्तरे **हासाद्** इति नास्ति ), मान-प्रेमादीनामुपलक्षणमेतत् ।" इति **हारि०वृत्तौ** ॥ ५ "**स-वक्कसुद्धि** ति **स** इति साधुणो णिद्देसो, जहा कोइ स भिक्खू एवंविधं **वक्कसुद्धिं** सम्मं उवेहिया **समुवेहिया;** अहवा **स**कारो सोहणअत्थे वट्टइ, सोहणं **वक्कसुद्धिं** सम्मं उवेहिया; अहवा **सगारो** अत्तणो णिद्देसे वट्टइ, जहा अत्तणो वक्कसुद्धिं सम्मं उवेधिया **समुपेहिया**" इति **वृद्धविवरणे** । "**सवक्क**०त्ति सूत्रम् । व्याख्या–सद्वाक्यशुद्धिं वा स्ववाक्यशुद्धिं वा स वाक्यशुद्धिं वा, सतीं–शोभनाम्, स्वाम्–आत्मीयाम्, स इति वक्ता, वाक्यशुद्धिं 'सम्प्रेक्ष्य' सम्यग् दृष्ट्वा" इति **हरिभद्रवृत्तौ** ॥ ६ °**हिया मुणी, गिरं** अचू० विना ॥ ७ **तु** खं १-२-३-४ जे० हाटी० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६७. **स-वक्कसुद्धी समुपेहिता०** वृत्तम् । **स** इति जो पढमज्झयणातिवण्णितो विणेयो सोभणं **वक्कसुद्धिं** अप्पणो वा वक्कसुद्धिं **समुपेहिया** सम्ममुपेक्खिता **सिया** इति निच्छय-संदेहवयणो, संदेहे–यथा स्याद्वादः, इतरम्मि–"सिया य केलाससमा अणंतका" [ उत्त० अ० ९ गा० ४८ ] इह णिच्छयवयणो । स एवं समुपेहिय णिच्छएण **गिरं च दुट्ठं** परिदुट्ठा जा हेट्ठा दूसिता तं **परिवज्जए** इति परिवज्जकः **सदा** सव्वकालं । कज्जपडिवायणमत्तं अणुच्चं च **मितं** । **अदुट्ठं** जयणापुव्वं जहा–इदमुपदिट्ठं, **एवं भासेज्ज पण्णवमिति** । **अणुवीति[भासए]** पुव्वभणितभासकः **स-ताण मज्झे संतो**[1] सोभणा सज्जणा जे तेसिं मज्झे, अथवा संसद्दो बहुवयणो (?), बहुसु अवत्थितेसु **ताण मज्झे स** एवंगुणो **लभते** 'सुसिक्खितो वयणविणियोगं' ति एवं **पसंसणं** स्तुतिमित्यर्थः ॥ ५४ ॥ जतो इहैव एते गुणा तम्हा—

३६८. भासाय[2] दोसे य गुणे य जाणए[3], तीसे य दुट्ठाए[4] विवज्जगो सता ।
छसु संजते सामणिए[5] सया जते, वतेज्ज बुद्धे हितमाणुलोमितं ॥ ५५ ॥

३६८. **भासाय दोसे य०** वृत्तम् । **भासा** पुव्वभणिता, तीसे **दोसे य** परोवघातादयो **गुणे य** परोपकारादयो, ते **दोसे य गुणे य जाणए** विण्णाणेणं सव्वं जाणिऊण तेसिं जा दुट्ठा ताए **विवज्जगो सता छसु** जीवनिकायेसु समणभावे सामण्णे **सया जते वतेज्ज बुद्धे** जो एवं गुण-दोसजाणतो स एव बुद्धः, **हितमाणुलोमितं** हितं सत्ताणुवरोधिं **आणुलोमितं** मधुरं सामपुव्वं ॥ ५५ ॥

इहलोइयफलमुपदिट्ठं । सुपुक्खलपारलोइयफलोवदंसणत्थमिमं भण्णति—

३६९. परिक्ख[6]भासी सुसमाहितिंदिए, चउक्कसायावगते अणिस्सिते ।
स णिद्धुणे[7] धुण्णमलं[8] पुरेकडं, आराहए लोगमिणं तथा परं[9] ॥ ५६ ॥ ति बेमि ॥

॥ सवक्कसुद्धी नामऽज्झयणं सत्तमं सम्मत्तं[10] ॥

३६९. **परिक्खभासी०** वृत्तम् । **परिक्ख** सुपरिक्खितं, तधा भासितुं सीलं यस्स सो **परिक्खभासी** । सुट्ठु समाहिताणि सोतादीणि इंदियाणि जस्स सो **सुसमाहितिंदियो** । कोहादयो कसाया अवगता जस्स सो **चउक्कसायावगतो** । सव्वपडिबंधविरहा**दणिस्सिए** । **स** एवं परिच्छभासी सन् **निद्धुणे** निद्धुणेज्ज असंसयं **धुणयति** कंपयति **धुण्णं** पावमेव तमेव **मलो पुरेकडं** अणेगभवोवचितं । स एवं धुणिऊणं **आराहए लोगमिणं** जधा "सताण मज्झे लभती पसंसणं" [ सुत्तं ३६७ ] । **तधा परं** पच्चक्खेण परोक्खसाहणमिति जहा इमं तेणेव प्रकारेण परं, तं पुण देवलोगगमण-सुकुलसंभव-मोक्खगमणपज्जवसाणमाराहणं ॥ ५६ ॥

**बेमीति** भणितं ॥ णया तहेव ॥

भासं चउव्विहं विभतिऊण दो सव्वहा निसिद्धाओ ।
दोण्ह उ विययविसेसो अणेगहा वक्कसुद्धीए ॥ १ ॥

**॥ वक्कसुद्धीए चुण्णी दिसामत्तप्पदरिसणं समत्तं ॥ ७ ॥**

---

१ **सतासद्दो** मूलादर्शे ॥ २ **भासाए** खं १-२-४ शु० हाटी० ॥ ३ **जाणिया** अचू० विना ॥ ४ **दुट्ठाय विवज्जए सया** खं ४ । **दुट्ठं परिवज्जए सया** हाटी० । **दुट्ठे परिवज्जए सया** खं १-२-३ जे० शु० ॥ ५ "समणभावे अवत्थिए **सामणिए**" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ६ **परिज्जभासी** वृद्ध० । "**परिज्जभासी** नाम परिज्जभासि त्ति वा परिक्खभासि त्ति वा एगट्ठा" **वृद्धविवरणे** । **परिच्छभासी** अचूपा० ॥ ७ **णिद्धुये** खं १ ॥ ८ **धुत्तमलं** खं १-२-४ शु० ॥ ९ **परे** ॥ **त्ति** खं ४ ॥ १० **एसा उ वक्कसुद्धी गंथग्गेणं हवंति सुत्ताइं । सत्तावण्णं जाणसु उद्देसेणेत्थ लिहियाइं** ॥ खं ३ ॥

Jain Education International     For Private & Personal Use Only     www.jainelibrary.org

# ८

# [ अट्ठमं आयारप्पणिहिअज्झयणं ]

धम्मे धितिमतो सेसऽज्झयणणियमितकायचेट्ठस्स वायाणियमणत्थमुपदिट्ठा **वक्कसुद्धी** । ततियं पुण करणं माणसं, तस्स विसोधणत्थमुपपातिज्जति **आयारप्पणिधी** । पणिहाणं अभिप्पायो चित्तमिति समाणं । परोवदेसनिमित्ते वा वयणप्रेरणे शुति-माण-लाभाभिप्पायविरहियाभिसंधिणा सुद्धपराणुग्गहत्थमुपदिसियव्वं । अणेणाभिसंबंधेणाऽऽगतस्साऽऽयारप्पणिधिअज्झयणस्स चत्तारि अणिओगद्दारा **आवस्सगा**णुक्कमेणं । णामणिप्फण्णे **आयारप्पणिधी** । आयारो पणिधी य । आयारे ताव इमा **निज्जुत्ती**—

**जो पुव्वं उवदिट्ठो आयारो सो अहीणमतिरित्तो ।**
**दुविधो य होति पणिधी दव्वे भावे य णायव्वो ॥ १ ॥ १९५ ॥**

**जो पुव्वं उवदिट्ठो०** [ गाधापुव्वद्धं । ] जो **खुड्डियायारए** उवदिट्ठो सो विभावणीयो । पणिधी नामादि चतुधा । नाम-ठ्ठवणातो गतातो । दव्व-भावपणिधीपरूवणत्थमिमं गाहापच्छद्धं—**दुविधो य होति पणिधी०** ॥ १ ॥ १९५ ॥ तत्थ पुण इमो दव्वे—

**दव्वे णिधाणमादी मायपयुत्ताणि चेव दव्वाणि ।**
**भाविंदिय णोइंदिय दुविहो उ पसत्थमपसत्थो ॥ २ ॥ १९६ ॥**

**दव्वे णिधाणमादी०** गाधापुव्वद्धं । **णिधाणं** णिधी । दव्वणिधी जाणि **चाणक्का**दीहि णिहिताणि सुवण्णप्पभितीणि निहाणाणि । मायाकारातीहि वा सचित्ताणि औसातीणि अचित्ताणि वा सुवण्णादीणि **मायापयुत्ताणि**, वेसेण वा पडिच्छादणं पुरिसित्थीण, एवमादीणि दव्वप्पणिधी । भावे पुण—**भाविंदिय णोइंदिय०** गाहापच्छद्धं । भावप्पणिधी दुविहो—इंदियप्पणिधी णोइंदियप्पणिधी । इंदियप्पणिधी दुविहो—पसत्थो अप्पसत्थो य । णोइंदियो वि दुहा—पसत्थो अप्पसत्थो य ॥ २ ॥ १९६ ॥ तत्थ भावपसत्थइंदियपणिधी इमो—

**सद्देसु य रूवेसु य गंधेसु रसेसु तह य फासेसु ।**
**ण वि रज्जति ण वि दुस्सति एसो खलु इंदियप्पणिधी ॥ ३ ॥ १९७ ॥**

**सद्देसु य रूवेसु य०** गाधा । सोय-चक्खु-घाण-जिब्भा-फासाणं विसएसु सद्दातिसु मणुण्णेसु न रज्जति, अमणुण्णेसु पयोसं ण जाति, **एसो** पसत्थो **इंदियप्पणिधी** । अप्पसत्थो पुण मणुण्णा-ऽमणुण्णेसु राग-दोसगमणं ॥ ३ ॥ १९७ ॥ किं पुण से पणिहित्तणं ? जं इंदियाणि तत्थ परिट्ठिते अप्पसत्थेंदियप्पणिधिदोसोपदरिसणत्थमिदं भण्णति—

**सोइंदियरस्सीयुम्मुक्काहिं सद्दमुच्छितो जीवो ।**
**आदियति अणाउत्तो सद्दगुणसमुत्थिते दोसे ॥ ४ ॥ १९८ ॥**

**सोइंदियरस्सीउ०** गाहा । सोइंदियस्स चक्खुसरिसा रस्सिकप्पणा नत्थि, उवयारमत्तं पुण, जम्हा सद्दपोग्गलोपाताणं करेति अतो **सोइंदियरस्सीयुम्मुक्काहिं** समंततो पकिण्णाहिं **सद्देसु** मणुण्णेसु **मुच्छितो** अणुरत्तो **जीवो** इति जीवसामत्थमिदं, न पोग्गलाणं, **आदियति** आदत्ते । एतं अविसेसेणं । विसेसो पुण—

१ °ज्झयणणियमितकायचेट्ठस्स वायानियमितकायचेट्ठस्स वायाणियमतित्थमुपदिट्ठा मूलादर्शे ॥ २ **पुव्विं उद्दिट्ठो** खं॰ वी॰ पु॰ सा॰ वृद्ध॰ हाटी॰ ॥ ३ **दुविहा उ पसत्थमपसत्था** खं॰ ॥ ४ अश्वादीनि ॥ ५ °**स्सीहि ३ मुक्का°** खं॰ वी॰ पु॰सा॰ हाटी॰ वृद्ध॰ ॥ ६ शब्दपुद्गलोपादानं करोति, अतः शब्दरश्म्युन्मुक्ताभिः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**अणाउत्तो सद्दगुणसमुत्थिते दोसे** गुणसद्दो पज्जववयणो, तेण सद्दो चेव गुणो सद्दगुणो ततो समुत्थिता, सद्दो वा गुणो जेसिं ते सद्दगुणा–पोग्गला तेहिंतो वा समुत्थिता। ते उवलद्धिकारणमिति **दोसे** दोसा इति राग-द्दोसा, तप्पभावा मरणादयो दोसा, एवं कारणकारणे कारणोपयार इति **सद्दगुणसमुत्थिते दोसे** कम्मत्ताए गेण्हति ॥ ४ ॥ १९८ ॥ सोतेण तुल्लत्थमिति भण्णति—

> **जह एसो सद्देसुं एसेव कमो तु सेसएहिं पि।**
> **चउहिं पि इंदिएहिं रूवे गंधे रसे फासे ॥ ५ ॥ १९९ ॥**

**जह एसो सद्देसुं॰** गाधा। जधेति प्रकारे। जधा सोइंदियरज्जूहिं उम्मुक्काहिं पावमादियति एवं **सेसेहिं वि चउहिं** दोसोपादाणं करेति ॥ ५ ॥ १९९ ॥

णियमेण सद्दातीणं उपादाणमिंदियाइं करेंति तत्थ विसेसो—

> **जस्स[1] पुण दुप्पणिहिताणि इंदियाइं तवं चरंतस्स।**
> **सो हीरति असहीणेहिं सारही वा तुरंगेहिं ॥ ६ ॥ २०० ॥**[2]

**जस्स पुण दुप्प॰** गाधा। जस्स पुण तवं पि चरंतस्स दुप्पणिहिताणि इंदियाणि भवंति सो तेहिं मोक्खमग्गातो उप्पहं णिज्जति। णिदरिसणं–**असहीणेहिं** अणायत्तेहि **सारही वा तुरंगेहिं** ॥ ६ ॥ २०० ॥

णोइंदियप्पणिधी पुण—

> **कोहं माणं मायं लोहं[3] च महब्भयाणि चत्तारि।**
> **जो रुंभइ सुद्धप्पा एसो णोइंदियप्पणिधी ॥ ७ ॥ २०१ ॥**

**कोहं माणं॰** गाधा। कोहादयो **महाभयाणि चत्तारि**, जतो "पढमिल्लुयाण उदए" [ आव॰ नि॰ गा॰ १०८ ] एवमादि **जो रुंभइ**। कहं रुंभइ? कोधोदयनिरोधो वा उदयपत्तस्स वा विफलीकरणं, एवं सेसेसु वि। **सुद्धप्पा** सुद्धप्पणिधाणो **एसो णोइंदियप्पणिधी** ॥ ७ ॥ २०१ ॥ दुप्पणिहाणफलमिदं—

> **जस्स वि त दुप्पणिहिता होंति कसाया तवं[4] करेंतस्स।**
> **सो बालतवस्सी विव गतण्हात[5]परिस्समं कुणति ॥ ८ ॥ २०२ ॥**

**जस्स वि त दुप्पणिहिता॰** गाधा। जो कोहेण सावदाणत्थं, 'अहं पधाणो तवस्सि' त्ति वा माणेण, अप्पे वि तवे कते 'महातवं कतं[6]' ति माताए, पूया-लाभार्थं लोभेण, एवं **जस्स तवं करेंतस्स कसाया दुप्पणिधिता** भवंति। णिदरिसणं-**सो बालतवस्सी विव** पारण-पूयादिसु बहूणं सत्ताणं उवरोहेणं **गतण्हातपरिस्समं कुणति**, ण्हातुत्तिण्णो[7] गतो पंसुहरणेणं अप्पाणमुग्गुंडेति जधा तहा दुप्पणिहियकसायो कसादेहिं[8] ॥ ८ ॥ २०२ ॥

कहं व—

> **सामण्णमणुचरंतस्स कसाया जस्स उक्कडा होंति।**
> **मण्णामि उच्छुफुल्लमिव[9] निप्फलं तस्स सामण्णं ॥ ९ ॥ २०३ ॥**

**सामण्णमणु॰** गाहा। समणभावो सामण्णं **तमणुचरंतस्स कसाया जस्स उक्कडा** उदयप्पत्ता **होंति**, एवमहं **मण्णामि उच्छुफुल्लमिव** जहा उच्छूण फुल्लाइं णिप्फलाणि भवंति एवं तेसिं कसायुक्कडाणं **सामण्णं** ॥ ९ ॥ २०३ ॥ पसत्थप्पणिधिप्पवत्तणत्थमिमं भण्णति—

---

१ **जस्स खलु दु॰** खं॰ पु॰ सा॰ हाटी॰ ॥ २ एतद्गाथानन्तरं खं॰ आदर्शे—**अहवा वि दुप्पणिहिइंदियो उ मज्जार-बगसमो होइ। अप्पणिहिइंदियो पुण भवइ उ अस्संजओ चेव** ॥ इत्येषा गाथा अधिका वर्तते। नास्त्येषा गाथा व्याख्याता सर्वैरपि व्याख्याकृद्भिः ॥ ३ **लोभं** खं॰ ॥ ४ **तवं चरंतस्स** खं॰ वी॰ पु॰ सा॰ हाटी॰ ॥ ५ **गयण्हाणपरि॰** खं॰ वी॰ पु॰ सा॰ हाटी॰ ॥ ६ कृतम्' इति मायया ॥ ७ स्नातोत्तीर्णो गजः ॥ ८ कषायैः ॥ ९ **॰च्छुपुप्फं व** खं॰ वी॰ पु॰। **॰च्छुफुल्लं व** सा॰ ॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

**[1]एसो दुविहो पणिधी सुद्धो जदि दोसु तस्स तेसिं च ।**
**[2]एत्तो पसत्थमपसत्थलक्खणऽज्झत्थणिप्फण्णं ॥ १० ॥ २०४ ॥**

**[3]एसो दुविहो पणिधी०** अद्धगाधा । **एसो** इति जो अणंतरमुद्दिट्ठो **दुविहो** [ पणिधी ] इंदिय-णोइंदियभेदेण **सुद्धो** निद्दोसो, **जदिसद्दो** नियमणे, **दोसु** अज्झप्प-बाहिरेसु इंदिय-णोइंदियगतो, जतिसद्दो सुतिसमाहितो सुद्धो **तस्स** इंदिय-कसायवयो[4], **तेसिं** इंदिय-नोइंदियाणं, चसद्देण उभयमभिसंबज्झति, उभतस्स वि[5] एतस्स । **एत्तो पसत्थमपसत्थ०** गाधापच्छद्धं । **एतातो** चेव पुव्वपदरिसियाओ **पसत्था-ऽपसत्थलक्खणमज्झत्थनिप्फण्णं** सुभज्झवसाणस्स [ पसत्थो, असुभज्झवसाणस्स ] अप्पसत्थो ॥ १० ॥ २०४ ॥

एवमज्झत्थनिप्फण्णं पसत्थ-ऽप्पसत्थलक्खणमज्झत्थनिप्फण्णमुपदिट्ठं । तत्थ अप्पसत्थं ताव—

**माया-गारवसहितो इंदिय-णोइंदिएहिं अपसत्थो ।**
**धम्मत्था[6]ए पसत्थो इंदिय-णोइंदियप्पणिधी ॥ ११ ॥ २०५ ॥**

**मायागारव०** गाहा । **मायाए** पूयापत्तिहेतुं **गारवेणं** जिर्तिदियत्तणेणं परं परिभवमाणो भुत्त-भावितत्तं वा दाएंतो । एवं **माया-गारवसहितो** इट्ठे सद्दे सुणेमाणो वि[7] ण सुणेति एवमधियासेति; रूवाणि सविलासाणि पेक्खणकादीणि णावलोकेति; गंधे विलेवणाति णाऽऽरभते ण वा अ[8]ग्घातति; रसं सुरससंपण्णं ण भुंजति त्ति, पक्खालिताणि सित्थाणि कणिकायो वा अब्भवहरति; फासेसु फरिसितो वि वेसित्थिकादीहि णिव्वियारलिंगो अच्छति, तेसु रागं ण भावेति, अणिट्ठेसु कंदण-रोयण-हणण-विणासणातिसद्देसु विक्खोभं ण जाति । परमबीभच्छेसु विरूवेसु गंधेसु मड-कुधियादिसु ण णासिगावरोहं करेति, कडुगरसेसु ण मुहं विकूणेति, सीउण्ह-कसा-लउडादीहिं ण क्खोभं जाति, एवं तु पओसं ण जाति, एस इंदियप्पणिधी । णोइंदिएसु वि माया-गारवसहित एव कुद्धो वि कोधलिंगं ण दरिसेति, माणमवि अ[9]प्पमाणं करेति, गारवेणेव तहाणिगूढभावो वि उज्जुयमप्पाणं दरिसेति, लुद्धो वि बहुतरागमत्थपच्चतमुप्पाएंतो लोभनिग्गहं कुणति । एवं सुप्पणिहितस्स वि भावदोसेण अप्पसत्थो भावप्पणिधी संसारहेतुरेव । एस अप्पसत्थो भावप्पणिधी । पसत्थो पुण इमेण गाहापच्छद्धेण भण्णति—**धम्मत्थाए पसत्थो०** अद्धगाधा । जो धम्मनिमित्तं इंदिय-णोइंदियाण पणिधाणं करेति । जधा—सोइंदियप्पयारणिरोधो वा तप्पत्तेसुं वा राग-दोसविणिग्गहो, कोधोदयनिरोधो उदयप्पत्तस्स वा विफलीकरणं वा, एस पसत्थो पणिधी । अप्पणिधिरपणिधिजातीओ । **धम्मत्थाए भ[10]वति पसत्थो,** जधा—तित्थकराणं भगवंताणं तूर-णाडगातीपूयासद्दं सोऊण, उवणच्चणं वा विलासवतीहिं सुवण्णवत्थ-चामरादीहिं वा दट्ठूण, धूव-विलेवण-फुलेहिं वा[11]साणि अग्घातिऊण, रसे फासोऽणुगतो,

१ **एसा दुविधा पणिही सुद्धा जदि** वृद्ध० ॥ २ **एत्तो य पसत्थ-ऽपसत्थल**° वृद्ध० ॥ ३ "**एसा दुविहा पणिही०** अद्धगाधा । **एसा** इति इदाणिं जा भणिया । **दुविधा** णाम इंदियपणिधी णोइंदियपणिधी य । **सुद्धा** णाम अदोससंजुत्ता । **जइसद्दो** असंकिते अत्थे वट्टइ । जहा—जइ एवं भणेज्जा तो पसत्था पणिधी भवेज्ज त्ति । **दोसु** नाम अब्भितरओ बाहिरओ य, इंदिय० णोइंदियपणिधी य व त्ति । **तस्स** नाम इंदियमंतस्स कसायमंतस्स य । **तेसिं** इंदियाणं । **च** त्ति **चकारो समुच्चये** । किं समुच्चिणइ ? जहा—'बाहिर-ऽब्भंतराहिं चिट्ठाहिं इंदिय कसायमंतेण इंदिय-कसायाणं णिग्गहो पसत्थपणिही भण्णइ' एवं समुच्चिणइ । इदाणिं पसत्थं अप्पसत्थं च लक्खणं अज्झत्थनिप्फन्नं भवइ, तत्थ इमं गाहापच्छद्धं, तं जहा—**एत्तो य पसत्थ-ऽपसत्थ०** अद्धगाहा—दुविहं तित्थकरेहिं भणियं, तं०—बाहिरं अब्भितरं च । जं अब्भितरं **एसो** पणिधीए **पसत्थं अप्पसत्थं च लक्खणनिप्फन्नं** ति, निप्फण्णं णाम अज्झवसाणप्पं भवति, तं जहा—**अपसत्थं पसत्थं च लक्खणं अज्झत्थनिप्फण्णं** भवइ ॥" इति **वृद्धविवरणम् । "एसो०** गाहा । व्याख्या—'एषः' अनन्तरोदितः 'द्विविधः प्रणिधिः इन्द्रिय-नोइन्द्रियलक्षणः 'शुद्धः' इति निर्दोषो भवति । यदि 'द्वयोः' बाह्या-ऽभ्यन्तरचेष्टयोः 'तस्य च' प्रणिधिमत इन्द्रियाणां कषायाणां च निग्रहो भवति ततः शुद्धः प्रणिधिः, इतरथा त्वशुद्धः । एवमपि तत्त्वनीत्याऽभ्यन्तरैव चेष्टेह गरीयसीत्याह । अत एवमपि तत्त्वे 'प्रशस्तं' चारु तथा 'अप्रशस्तं' अचारु लक्षणं प्रणिधेः 'अध्यात्मनिष्पन्नं' अध्यवसानोद्भतमिति गाथार्थः ॥" इति **हारि० वृत्तिः** ॥ ४ कषायवतः ॥ ५ **वि पयस्स वि एतस्स** मूलादर्शे ॥ ६ °**त्थाय प**° वृद्ध० सा० ॥ ७ **वि करण सु**° मूलादर्शे ॥ ८ आजिघ्रति ॥ ९ अल्पमानम् ॥ १० **भवति समत्थो** मूलादर्शे ॥ ११ **वाताणि** मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधवा रसवदव्वेहिं फासुएसणिज्जेहिं साधुपडिलाभणमणुमोदमाणो, फरिसे वि मणिभूमिका-पउमकोट्टिमादिसु वेदेमाणो, एताणि परमेण भत्तिवादेण पहरिसितोऽणुभवमाणो वि पणिधितेंदियो । नोइंदिएसु वि सासणपडिणीयेसु कोधं भावेमाणो, परवादिपरिभवणे माणं, अभिमाणेण वा संजमे सम्ममुज्जुत्तो, परवादिसु वा छल-हेतुवादे मायं, सुयनाणअसंतोसे वा लोभं । अवि य—

अरहंतेसु य रागो रागो साधूसु वीतरागेसु । एस पसत्थो रागो अज्ज सरागाण साधूण ॥ १ ॥

एवं एस पसत्थो इंदिय-णोइंदियप्पणिधी ॥ ११ ॥ २०५ ॥ अप्पसत्थो पसत्थो य भावप्पणिधी भणितो । एतस्स पुण दुविहस्स वि जहासंखं फलुदेसत्थमिमा **निज्जुत्तिगाहा**—

**अट्ठविधं कम्मरयं बंधति अपसत्थपणिहिमाउत्तो ।**
**तं चेव खवेति पुणो पसत्थपणिहीसमायुत्तो ॥ १२ ॥ २०६ ॥**

**अट्ठविधं कम्मरयं०** गाहा । **अट्ठ विहा** प्रकारा जस्स सो **अट्ठविहो,** नाणावरणाति कम्ममेव रयो कम्मरयो, तं **कम्मरयं बंधति** णिकाययति **अप्पसत्थे** पुव्वभणिते **पणिहिम्मि आउत्तो । तं चेव खवेति** तं अट्ठविधं कम्मरयं **खवेति** विणासयति **पुणो** इति सततोवओगेण **पसत्थे** पुव्वभणिते **पणिहिम्मि समायुत्तो** ॥ १२ ॥ २०६ ॥

पणिधिफलमुपदिट्ठं । तं चेव पुणो कारणत्तेण णियमेंतेहिं भण्णति, जहा वा दुपउत्तो खवेति—

**दं[1]सण नाण चरित्तं च संजमो तस्स साधणट्ठाए ।**
**पणिधी पयुंजितव्वो[2]ऽणाततणाइं च वज्जाणि ॥ १३ ॥ २०७ ॥**

**दंसण नाण चरित्तं०** गाहा । **दंसणं नाणं चरित्तं च** एस चेव **संजमो । तस्स** संजमस्स **साधणट्ठाए** साहणनिमित्तं पसत्थभाव**पणिधी पयुंजितव्वो** । तस्स संजमाधारभूतस्स पणिधिस्स रक्खणत्थं **अणाततणाइं वज्जाइं, आयतणं** थाणं, तत्थ **अणायतणं** अजोग्गं थाणं, जहा—"खरिया तिरिक्खजोणी०" [ ओघनि० गा० ७६७ ] एवमादि। किंच—"खणमवि ण खमं गंतुं अणाययणसेवणा सुविहिताणं।" [ ओघनि० गा० ७६८ ] वज्जणीयाणि **वज्जाणि** ॥ १३ ॥ २०७ ॥ अणाययणसेवणे पुण पसत्थपणिधिट्ठाणमसक्कं, तहा य सो—

**दुप्पणिधियजोगी पुण लंछिज्जति संजमं अयाणंतो ।**
**वीसत्थणिस[3]ट्ठंगो व कंटइल्ले जह पडंतो ॥ १४ ॥ २०८ ॥**

[ **दुप्पणिधियजोगी०** गाहा ] । दुप्पणिधियो जस्स जोगो—काय-वति-माणसिगो सो **दुप्पणिधियजोगी** । पुणसद्देण दोसावमरिसणं । एवमट्ठविधं सो कम्मरयं बंधति जतो **लंछिज्जति संजमं अयाणंतो,** जधा कोति सव्रणो कीरति एवं जतणमविजाणंतो संजमक्खतं पावति। णिदरिसणं–**वीसत्थणिसट्ठंगो व, वीसत्थो** पमातविरहितो, **णिसट्ठं** मुक्कं, वीसत्थं णिसट्ठाणि अंगाणि जेण सो **वीसत्थणिसट्ठंगो। इवसद्दो** उवमाए । जहा वीसत्थनिसट्ठंगो कंटकावचिते देसे **पवडंतो** व लंछिज्जति तहा दुप्पणिधियजोगी थी-पसु-पंडगादीहि कंटगेहिं लंछिज्जति ॥ १४ ॥ २०८ ॥ पणिधाणगुणो इमो—

**सुप्पणिधितजोगी पुण ण लिप्पती पुव्वभणितदोसेहिं ।**
**णिद्दहति य कम्माइं सुं[4]क्खमिव तणं जहा अग्गी ॥ १५ ॥ २०९ ॥**

---

१ **दंसण-नाण-चरित्ताणि संजमो** खं० वी० पु० सा० वृद्ध० ॥ २ **°जियव्वा अणायणा°** वी० । **°जियव्वो अणायणा°** पु० सा० । **°जियव्वोऽणाययणा°** खं० ॥ ३ **णिसिट्ठं°** खं ॥ ४ **सुक्कतणाइं जहा** खं० वी० पु० सा० हाटी० ॥

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

**सुप्पणिधितजोगी** पुण० गाहा । सुप्पणिधिया जस्स कायादयो जोगा सो **सुप्पणिहितजोगी** । सो पुण **ण लिप्पति** जहा अप्पसत्थपणिधिजुत्तो **पुव्वभणितदोसेहिं** । पुव्वोवचियाणि वि **णिद्दहति कम्माइं** णाणावरणादीणि । णिदरिसणं—**सुक्खमिव तणं जहा अग्गी** ॥ १५ ॥ २०९ ॥

जतो एवमप्पणिधाणे दोसा, गुणा य सुप्पणिधाणे—

**तम्हा तु अप्पसत्थं पणिधाणं उज्झिऊण समणेणं ।**
**पणिधाणम्मि पसत्थे भणितं आयारपणिधाणं ॥ १६ ॥ २१० ॥**[1]

**॥ आयारपणिहिणिज्जुत्ती सम्मत्ता ॥**

**तम्हा तु अप्पसत्थं पणि०** गाधा । **तम्हा** इति पुव्वभणितकारणावमरिसणं । अतो **अप्पसत्थं पणिधाणमुज्झिऊण पसत्थे पणिधाणे** भगवता **भणितमायारपणिधाणमिति** ॥ १६ ॥ २१० ॥

एस णामणिप्फण्णो । सुत्तालावगणिप्फण्णे सुत्तमणुओगदाराणुक्कमेणं । तं पुण इमं—

**३७० आयारप्पणिधिं लद्धुं जहा कातव्व भिक्खुणा ।**
**तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥**

**३७०. आयारप्पणिधिं लद्धुं०** सिलोगो । **आयारो पणिधी** य पुव्वभणितमुभयं, आयारे पणिधी **आयारप्पणिधी** आयारे सव्वप्पणा अज्झवसातो तं लद्धुं पाविऊण **जहा कातव्वं** जमायरणीयं **तं भे उदाहरिस्सामि,** तमायरणीयं भगवतो सयमुवलब्भ सव्वं आगमतो वा, गणहरादीणिंवयणमिणमंतेवासिचोदणे, **तं मे उदाहरिस्सामि** कहयिस्सामि । **आणुपुव्विं** जहापरिवाडिं **सुणेह मे** ॥ १ ॥ **आयारपणिधीए सुत्ते** पुव्वं चरित्तायारो भण्णति, दंसण-णाणायारा जतो तम्मि सण्णिधिता, कहं ? "नादंसणिस्स नाणं०" [उत्त० अ० २८ गा० ३०] गाहा, चरित्तं च जीवातिवातवेरमणाति, जीवा पुढविमादयो त्ति तदुद्देसत्थं भण्णति—

**३७१. पुढवि दग अगणि[4] वाऊ तण रुक्ख सबीयगा ।**
**तसा य पाणा जीव त्ति इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २ ॥**

**३७१. पुढवि दग०** सिलोगो । पुढवि-दगा-ऽगणि-वातवो[5] सव्वप्पभेदभिण्णा सूतिया । **तृण** अप्पकाया[6] वि वणस्सति त्ति जुत्तं भण्णति, **रुक्खवयणेण** दुवालसविधाण सूयणं[7], **सबीयका** इति मूलादिवणस्सतिविकाराण । एते पुढविमादिणो पंच **तसा य** बेंदियादयो **जीवा** । **इतिसद्दो** परिसमत्तीए, एते एव, ण पुण एतव्वतिरित्ता केयि । बितियो **इतिसद्दो** प्रकारार्थे सर्वभेदोपसङ्ग्रहाय । **वुत्तमुपदिट्ठं महेसिणा** गौरवविधाणत्थं सव्वण्णुणा, ण प्पिधज्जणेण केणति ॥ २ ॥ परूविएसु छसु जीवणिकायेसु तदुपरोधपरिहरणत्थमिदं भण्णति—

**३७२. तेसिं अच्छणजोगेण णिच्चं भवियव्वयं[8] सिया ।**
**मणसा काय वक्केणं एवं भवति संजते ॥ ३ ॥**

---

१ **भणिओ आयारपणिहि त्ति** खं० पु० सा० । **भणिया आयारपणिहि त्ति** वी० ॥ २ एतद्गाथानन्तरं निर्युक्त्यादर्शेषु—**छक्काया समितीओ तिण्णि य गुत्तीओ पणिहि दुविहा उ । आयारप्पणिहीए अहिगारा होंति चउरेते ॥** इत्येषा गाथाऽधिका उपलभ्यते । नास्तीयं गाथा चूर्णी-वृत्तिकृद्भिर्व्याख्याता ॥ ३ निर्वचनम् ॥ ४ **अगणि मारुय तण** खं ३-४ जे० शु० । **अगणि वाऊ तण** खं १-२ अचू० हाटी० ॥ ५ वायवः ॥ ६ अल्पकायाः ॥ ७ द्वादश भेदाः **प्रज्ञापनासूत्र**प्रथमपदे २२ सूत्रे यथा—"रुक्खा १ गुच्छा २ गुम्मा ३ लता ४ य वल्ली य ५ पव्वगा ६ चेव । तण ७ वलय ८ हरिय ९ ओसहि १० जलरुह ११ कुहणा १२ य बोद्धव्वा ॥" इति ॥ ८ **होयव्वयं** खं १-२-४ जे० शु० वृद्ध० । **भोयव्वयं** खं ३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७२. **तेसिं अच्छणजोगेण०** सिलोगो । **तेसिं** पुढविमादीण जहुद्दिट्ठाणं छणणं छणः, "क्षणु हिंसायामिति" एतस्स रूवं, छ(क्ष)कारस्स य छगारता पाकते[1], जधा अक्षीणि अच्छीणि, अकारो पडिसेधे, ण छणः **अछणः** अहिंसणमित्यर्थः, **जोगो** संबंधो सो अहिंसणेण, अच्छणो जोगो जस्स सो अच्छणजोगो, तहाविहेण **अच्छणजोगेण णिचं भवियव्वं** सदा **सिया** इति नियमोऽयं। सो छण(? अच्छण)जोगो तिविसुद्धो करणीयो त्ति भण्णति—**मणसा काय वक्केणं** तिविहेणं करण-कारणा-ऽणुमोदणविसुद्धेण छणजोगविरहिए । **एवं भवति संजतो** एवं सम्मं जतो भवति ॥ ३ ॥

पभेदोपदरिसणेण पुढविक्कायछणजोगनिवारणत्थमिमं भण्णति—

३७३. पुढविं[2] भित्तिं सिलं लेलुं णेव भिंदे ण संलिहे ।
तिविहेण करणजोगेण संजते सुसमाहिते ॥ ४ ॥

३७३. **पुढविं भित्तिं०** सिलोगो । **पुढवी** इति विकप्पविरहिता । **भित्ती** तडी । **सिला** सुविच्छिण्णो पासाणो । **लेलू** लेट्ठुओ। एताणि जधुद्दिट्ठाणि **णेव भिंदे** दुधा तिधा णेकधा, **णेव** अंगुलि-सलागादीहि **संलिहे** । पुढवि-तदस्सियपाणसारक्खणत्थं **तिविहेण करणजोगेण संजते सुसमाहिते** सन् ॥ ४ ॥

पुव्वं कामकारकतनिवारणं । इमं तु साभाविकक्कायचेट्ठानियमणत्थं भण्णति—

३७४. सुद्धपुढवीए[3] ण णिसिए ससरक्खम्मि[4] आसणे ।
पमज्जित्तु णिसीएज्जा[5] जाणित्तु जाइयोग्गहं ॥ ५ ॥

३७४. **सुद्धपुढवीए०** सिलोगो । असत्थोवहता **सुद्धपुढवी**, सत्थोवहता वि कंबलिमातीहि अणंतरिया, ताए **ण णिसिए** । "एगग्गहणे वि [ गहणं ] तज्जातियाण"मिति थाणा-ऽऽसणातिनिवारणं । समुद्धुतपुढविरयुग्गुंडितं **ससरक्खं**, तत्थ सचित्तपुढवीरक्खणत्थं ण णिसिए । अचित्ताए पुण पमज्जिऊण निसिएज्जा संडासए पुढविं च । **जाणित्तु** सत्थोवहता इति लिंगतो पंचविहं वा ओग्गहं जाणित्तु तं **जाइय** अणुण्णवित ॥ ५ ॥

पुढविक्कायाणंतरुद्दिट्ठस्स आउक्कायस्स छणनियोगनिवारणत्थमिमं भण्णति—

३७५. सीतोदगं ण सेवेज्जा सिला[6] वुट्ठं हिमाणि य ।
उसुणोदगं[7] तत्तफासुयं पडिग्गाहेज्ज संजते ॥ ६ ॥

३७५. **सीतोदगं ण सेवेज्जा०** सिलोगो । **सीतोदगं** तलागादिसु भोमं पाणितं । **सिला** करगवरिसं। **[ वुट्ठं ]** वुक्कंतकालवरिसोदगं। **हिमं** हिमवति सीतकाले भवति । एतं सव्वमवि **ण सेवेज्ज** । **च**-सद्देण तुसारादयो वि । णिसेवणे इमा जतणा—**उसुणोदगं तत्तफासुयं**, तत्तफासुयमिति विसेसेणं, ण तावणमेत्तेण फासुयं भवति, जता पुण उव्वत्तो डंडो तता फासुगं, इतरहा मिस्सं, तं **पडिग्गाहेज्ज** । एतेण प्पगारेण **संजतो** भवति एवं विसेसणं संभवति ॥ ६ ॥ इहावि पुव्वं अब्भुवेच्च णिसेधणमाउक्कायस्स । संभवतो पुण भेक्खादिणिग्गतस्स वरिसोदगतिम्मणं उत्तरणेण वा णदीमादीण तत्थ जतणत्थमिमं भण्णति—

३७६. उदओल्लं अप्पणो कायं णेव पुंछे ण संलिहे ।
समुप्पेहे[8] तहाभूतं णो णं संघट्टए मुणी ॥ ७ ॥

१ प्राकृते ॥ २ पुढवि खं २-३-४ ॥ ३ °ढविं न खं १ ॥ ४ °रक्खे य आ° खं १ वृद्ध० । °रक्खे व आ° हाटी० ॥ ५ °ज्जा जाइत्ता जस्स ओग्गहं अचू० वृद्ध० हाटी० विना ॥ ६ सिल खं ४ ॥ ७ उसिणो° अचू० विना ॥ ८ समुप्पेह अचू० वृद्ध० विना ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७६. **उदओल्लं अप्पणो कायं०** सिलोगो। उदयेण ओल्लं **उदओल्लं**, तं पुण बिंदुसहितं तधाजातीतं ससणिद्धमवि **अप्पणो कायमवि**, किमुत बाहिरवत्थु ?। तं **णेव पुंछे ण संलिहे**, पुंछणं वत्यादीहिं लूहणं, **संलिहण**मंगुलिमादीहिं णिच्छोडणं। **समुप्पेहे** उवेक्खेज्जा परिधारेज्जा **तहाभूत**मिति उदओल्लसरिसं। ससणिद्धादि परोप्परेणावि गातं गाएण **णो णं संघट्टए मुणी**। तं आउक्कायजीवभावं मुणतीति **मुणी** ॥ ७ ॥

आउक्कायाणंतरुद्दिट्ठतेउकायोपरोधपरिहरणत्थमिमं भण्णति—

३७७. इंगालं अगणिं अच्चिं अलातं वा सजोतियं।
ण उंजेज्जा ण घट्टेज्जा णो णं णिव्वावए मुणी ॥ ८ ॥

३७७. **इंगालं अगणिं०** सिलोगो। परिदड्ढं कट्ठादि जालाविरहित**मिंगालो**। सव्वावत्थो **अगणी**। दीवादिसिहा अपरिच्छिण्णा **अच्ची**। उम्मुक**मलातं**। सव्वं पगासणसमत्थं **जोती**। सव्वे एते अगणिभेदा **ण उंजेज्जा ण घट्टेज्जा णो णं णिव्वावए**, **उंजण**मवसंतुयणं, **घट्टणं** परोप्परेणं अप्फोडणं, **णिव्वावणं** विज्झवणं, एताणि न कुज्जा **मुणी** करण-कारणाऽणुमोदणभावेणं ॥ ८ ॥

अगणिक्कायाणंतरुद्दिट्ठवायुसमारंभपरिहरणत्थमिदं भण्णति—

३७८. तालियंटेण पत्तेण साधाविधूणणेण वा।
ण वीये अप्पणो कायं बाहिरं वा वि पोग्गलं ॥ ९ ॥

३७८. **तालियंटेण पत्तेण०** सिलोगो। **तालियंटो** उक्खेवो। **पत्तं** पल[सा]दीणं। **साधा** रुक्खडालं, **विधूणणं** वीयणं। एतेसिं केणयि **ण वीये अप्पणो कायं** सरीरं, सरीरवतिरित्तं **वा बाहिरं पोग्गलं**। सयंकरणपडिसेहेण कारणाऽणुमोदणमवि पडिसिद्धमेव ॥ ९ ॥

वायुसमणंतरं वणस्सतिकायजतणा इति भण्णति—

३७९. तण-रुक्खे ण छिंदेज्जा फलं मूलं व कस्सति।
आमगं विविधं बीयं मणसा वि ण पत्थए ॥ १० ॥

३७९. **तण-रुक्खे ण छिंदेज्जा०** सिलोगो। तणं सेडिकादि, **रुक्खा** सालादयो। समाणे वणस्संतिकातत्ते पिधं **तणग्गहणं** तण-वलत-हरित-ओसहि-जलरुह-कुहणाण अप्पकायाण उपादाणत्थं। **रुक्खग्गहणं** रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लता-वल्लि-पव्वगाणं महासरीराणं। **फल-मूल**वयणं कंदातिसव्ववणस्सतिकायावयवप्पसिद्धये। **कस्सति** त्ति जधाभणितवणस्सतिकायस्स। **आमगं** जं ण पाकादिपरिणामियं, तं **मणसा वि ण पत्थए**, किं पुण काएण वायाए वा ॥ १० ॥ एगिंदियाणं पंचण्ह वि कायाणं जतणत्थं पत्तेयं उवदेसो भणितो। छण्ह वि कायाण जतणत्थमिमं भण्णति—

३८०. गहणम्मि ण चिट्ठेज्जा बीएसु हरितेसु वा।
उदगम्मि तहा णिच्चं उत्तिंग-पणगेसु वा ॥ ११ ॥

---

१ आयं ण गो मूलादर्शे ॥ २ **साहाविहुयणेण** अचू० विना ॥ ३ **विएज्ज अप्प°** खं २-४ जे० शु० वृद्ध०। **विएज्जऽप्प°** खं १-३ ॥ ४ °**रुक्खं ण** अचू० विना। "तृण-वृक्षमित्येकवद्भावः, तृणानि दर्भादीनि, वृक्षाः कदम्बादयः, एतान् न छिन्द्यात्" इति हारि० वृत्तौ ॥ ५ वनस्पतिकायत्वे ॥ ६ **काए य वा°** मूलादर्शे ॥ ७ **गहणेसु ण** अचू० विना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**३८०. गहणम्मि ण चिट्ठेज्जा०** सिलोगो। **गहणं**[1] घणं गंभीरं, एतम्मि **ण चिट्ठे [ज्जा]** णिसीदणादि सव्वं ण चेएज्जा। गहणं विसेसणं पुण वणस्सतीए, बीत-हरितं, तत्थ बीय-हरितस्स तयालयाणं च तसातीण उपरोधो संभवति। उदगं[2] सभावेणेव गहणं, अंतज्जले बहुसत्तसंभव इति तस्स उदगस्स तदालताण[3] य बहूण वणस्सति-तसादीण उपरोध एव। **उत्तिंगो** पिपीलिकाघरं तत्थ वि पुढवीत बीयाण, तहेव **पणओ** उल्ली तत्थ कुंथुमादयो बहवे इति तस-वणस्सतिविराहणं। पुढवी-आउ-वणस्सतीसु चेव चिट्ठणाति संभवति, तत्थ एताणि गहणाणि परिहरियव्वाणि ॥ ११ ॥ पसंगतो तसकायजयणा भणिता। पाहण्णेण पुण उपदेसत्थमिमं भणणति—

**३८१. तसपाणे[4] ण हिंसेज्जा वाया अदुव[5] कम्मुणा।**
**उवरतो सव्वभूतेसु पासेज्ज विविधं जगं ॥ १२ ॥**

३८१. **तसपाणे ण हिंसेज्जा०** सिलोगो। **तसा** बेइंदियादयो ते ण **हिंसेज्जा, वाया अदुव कम्मुणा,** अहवासद्देण मणो वि उवसंगहितं। **उवरतो सव्वभूतेसु, उवरतो** निवृत्तो **सव्वभूताणि** तसकायाधिकारो त्ति सव्वतसा। तेहिंतो वधं प्रति उवरतो **पासेज्ज विविधं** अणेगागारं हीण-मज्झा-ऽधिक-भावेण **जगं** लोगो तं, एवं वहोवरतीए पासेज्ज, तथा च दृष्टं भवति। अपि च—

मातृवत् परदाराणि परद्रव्याणि लेष्टुवत्।
आत्मवत् सर्वभूतानि यः पश्यति स पश्यति ॥ १ ॥  ॥ १२ ॥

अविसेसेण तसपाणवधवेरमणमुपदिट्ठं। सदयो लोगो वि थूरसरीरेसु हिंसं परिहरति। सुहुमा वि जाणिऊण ण हिंसितव्व त्ति तेसिं जाणणत्थमिदं भण्णति—

**३८२. अट्ठ सुहुमाइं[6] मेधावी पडिलेहेत्तु संजते।**
**दयाधिकारी भूतेसु आस चिट्ठ सय[7] त्ति वा ॥ १३ ॥**

३८२. **अट्ठ सुहुमाइं०** सिलोगो। **अट्ठेति** संखा **सुहुमाणि** सण्हाणि, सुहुमाणीति णपुंसकनिद्देसो जीवत्थाणाणि अहवा सरीराणि, ताणि गहण-धारणमेराधावण**मेधावी पडिलेहेत्तु** उवलभिऊण **संजते** इति उवलभणतग्गतमाणसो, **दया** घिणा, **अधिकारो** तदभिज्झा, दयाए अधिकारो जस्स सो **दयाधिकारी, भूतेसु** जीवेसु। एवंगते **आस** उवविस, **चिट्ठ** उट्ठितउ, **सय** सुवाहि। आसण-त्थाण-सयणक्रियासु सव्वावत्थं दयाधिकारी भवेज्जा ॥ १३ ॥

अट्ठ त्ति उद्दिट्ठपइण्णपडिणामं विसेसियाणि। तव्विसेसणत्थं चोदणामुहमुत्थापयंति गुरवो। जधा—[8]

**३८३. कतमाणि[9] अट्ठ सुहुमाणि? जाणि[10] पुच्छेज्ज[11] णं परो।**
**इमाइं ताइं मेधावी आदिक्खेज्ज[12] वियक्खणो[13] ॥ १४ ॥**

१ "तत्थ **गहणं** गुविलं भण्णइ, तत्थ उव्वत्तमाणो परियत्तमाणो वा साहादीणि घट्टेइ तं गहणं" इति **वृद्धविवरणे**। "**गहनेषु** वननिकुञ्जेषु न तिष्ठेत्, सङ्घट्टनादिदोषप्रसङ्गात्" इति हारि० वृत्तौ ॥ २ "तत्थ **उदगं** णाम अणंतवणप्फई, से भणियं च—"उदए अवए पणए सेवाले" [ ] एवमादि। अहवा **उदगग्ग**हणेण उदगस्स गहणं करेंति, कम्हा? जेण उदए वणप्फइकाओ अत्थि।" इति **वृद्धविवरणे**। "अत्र **उदकम्** अनन्तवनस्पतिविशेषः। यथोक्तम्—"उदए अवए पणए" इत्यादि। उदकमेवाऽन्ये, तत्र नियमतो वनस्पतिभावात्।" इति हारि० वृत्तौ ॥ ३ तदालयानाम् ॥ ४ **तसे पाणे** खं १-३ शु० वृद्ध० ॥ ५ **अदुय** खं १ जे० ॥ ६ **°माइं पेहाए जाइं जाणित्तु संजए** अचू० विना ॥ ७ **सएहि वा** अचू० वृद्ध० हाटी० विना ॥ ८ नास्त्ययं सूत्रश्लोकः **वृद्धविवरणे** ॥ ९ **कयराइं अ°** अचू० विना ॥ १० **जाइं पु°** खं १-२-३ जे० शु०। **जायं पु°** खं ४ ॥ ११ **°ज्ज संजए। इमाइं** अचू० विना ॥ १२ **आइक्खे°** खं १-२-३ जे० शु०। **आयक्खे°** खं ४ ॥ १३ **विचक्खणे** जे० ॥

Jain Education International  For Private & Personal Use Only  www.jainelibrary.org

३८३. **कतमाणि अट्ठ सुहुमाणि॰** सिलोगो । **कतमाणी**ति पडिपुच्छावयणं । **अट्ठे**ति जाणि पढमसुद्दिट्ठाणि । **सुहुमाणी**ति भणितं । **जाणि पुच्छेज्ज णं परो** त्ति सिस्सवयणं, परेण चोतितेण कतराणि य मया कहयियव्वाणि ? । आयरिया आणवेंति–**इमाइं ताइं मेधावी आइक्खेज्ज वियक्खणो, इमाणी**ति जाणि अणंतरं भणीहामि **ताणी**ति जाणि पुच्छसि **मेधावी** जधाभणितावधारणक्खमो **आदिक्खेज्ज** पुच्छमाणाण कहेज्ज **वियक्खणो** सयमवि लिंगतो वियारणक्खमो ॥ १४ ॥

जमुद्दिट्ठं "इमाणि" इति तप्पडिसमाणणत्थं भण्णति—

३८४. सिणेहं १ पुप्फसुहुमं २ च पाणु[३]त्तिंगं ४ तहेव य ।
पणगं ५ बीय ६ हरितं ७ च अंडसुहुमं ८ च अट्ठमं ॥ १५ ॥

३८४. **सिणेहं पुप्फसुहुमं॰** सिलोगो । सिलोगेणेव उद्दिट्ठाण विभागो–**सिणेहसुहुमं** पंचप्पगारं, तं॰–ओस्सा हिमए महिया करए हरतणुए १ । **पुप्फसुहुमं च** उदुंबरादीणि पुप्फाणि, तस्समाणवण्णाणि सव्वाणि वा सुहुमकायियाणि पुप्फसुहुमं २ । अणुंधरी कुंथू चलमाणा विभाविज्जति, णेतरहा, एतं **पाणसुहुमं** ३ । **उत्तिंगसुहुमं** कीडियाघरगं, जे वा जत्थ पाणिणो दुव्विभावणिज्जा ४ । पंचवण्णो तद्दव्वसमतावण्णगो पणगो **पणगसुहुमं** ५ । सरिसवादि सव्वबीयाण वा मिंजाथाणं **बितियसुहुमं** ६ । अंकुरो **हरितसुहुमं** ७ । पंचविध**मंडसुहुमं** तं॰–उद्दंसंडे पिपीलियंडे उक्कलियंडे हलियंडे हल्लोहलियंडे । उद्दंसंडं महुमच्छिगादीण । कीडियाअंडगं पिपीलियाअंडं । उक्कलियंडं लूयापडगस्स । हलियंडं बंभणियाअंडगं । सरडिअंडगं हल्लोहलिअंडं ८ ॥ १५ ॥

कधियाणि अट्ठ सुहुमाणि । तप्पडिसमाणणत्थमिदं भण्णति—

३८५. एवमेताणि जाणित्ता सव्वभावेण संजते ।
अप्पमत्ते[१] जए णिच्चं सव्विंदियसमाहिते ॥ १६ ॥

३८५. **एवमेताणि॰** सिलोगो । **एव**मिति पुव्वभणितेण प्रकारेण **एताणी**ति अणंतरभणिताणि **जाणित्ता** उवलभिऊणं **सव्वभावेणं** लिंग-लक्खण-भेदविकप्पेणं, अहवा **सव्वभावेण अप्पमत्ते** इंदियादिपमादविरहिते[३] **संजते** इति ण अण्णत्थ अप्पमादो विज्जति, एवं वा संजते भवति, **निच्चं** सता **सव्विंदियसमाहिते** सद्दातिसु अरज्जमाणे ॥ १६ ॥

तसाण विसेसेण अण्णेसिं पि संभवतो अहिंसणमिदं भण्णति—

३८६. धुवं च पडिलेहेज्जा जोगसा पाय-कंबलं ।
सेज्जमुच्चार[४]भूमिं च संथारं अदुवाऽऽसणं ॥ १७ ॥

३८६ **धुवं च पडिलेहेज्जा॰** सिलोगो । धुवं नियतमप्पणो पडिलेहणकाले **पडिलेहेज्ज** त्ति पडिलेहणपप्फोडण-पमज्जणमुपदिट्ठं । **जोगसा** जोगसामत्थे सति । अहवा " उवउज्जिऊण पुव्विं " [ ओघनि॰ गा. २८८ ] ति जोगेण **जोगसा**[५] ऊणा-ऽतिरित्तपडिलेहणवज्जितं वा, **जोगसा** जोगरत्ता कसायी । तहा **पायं** लाबु-दारुमट्टियामयं, **कंबलो**पदेसेण तज्जातीयं वत्थादि सव्वमुपदिट्ठं । पडिस्सओ **सेज्जा**, तमवि सदाकालं पडिलेहेज्जा ।

---

१ °**मत्तो जए** खं १-२-३-४ जे॰ ॥ २ '**ब्वसभा**° मूलादर्शे ॥ ३ विरहितः ॥ ४ °**रभावं च** खं ४ ॥ ५ "अहवा **जोगसा** णाम जं पमाणं भणितं ततो पमाणाओ ण हीणमहितं वा पडिलेहेज्जा, जहा जोगरत्ता साडिया पमाणरत्त त्ति वुत्तं भवति, तहा पमाणपडिलेहा **जोगसा** भण्णइ" इति **वृद्धविवरणे** ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**उच्चारो** सरीरमलो तस्स भूमी **उच्चारभूमी**, तमवि अणावातमसंलोगादिविहिणा पडिलेहेज्जा, पडिलेहित-पमज्जिते वा आयरेज्ज। संथारभूमिमवि पडिलेहित अत्थुणेज्जा। आसणमवि उवविसमाणो पडिलेहेज्जा ॥ १७ ॥

छण्ह वि जीवणिकायाण समासतो हिंसापरिहरणत्थमिमं भण्णति—

३८७. उच्चारं पासवणं खेलं सिंघाण जल्लियं।
फासुयं पडिलेहित्तु परिट्ठावेज्ज संजते ॥ १८ ॥

३८७. **उच्चारं पासवणं०** सिलोगो। **उच्चारो** वच्चं। **पस्सवणं** पस्सावो। **खेलो** ससमयाभिधाणेण णिट्ठुहओ। **सिंघाणओ** सिंघा। **जल्लिया** मलो, तस्स य जाव सरीरभेदाए नत्थि उव्वट्टणं। जदा पुण पस्सेदेण गलति गिलाणाति कज्जे वा अवकरिसणं तदा। एवं उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणाति जल्लियं **फासुयं** भूमिप्पदेसं **पडिलेहित्तु परिट्ठावेज्ज संजते**, एवं परिट्ठवेमाणो वि संजतो भवति ॥ १८ ॥

अडवीए पडिस्सए वा छज्जीवणिकायजतणा भणिता। भिक्खातिगतो पुण—

३८८. पविसित्तु परागारं पाणट्ठा भोयणस्स वा।
जतं चिट्ठे मितं भासे णो रूवेसु मणं करे ॥ १९ ॥

३८८. **पविसित्तु परागारं०** सिलोगो। **अगारं** गिहं, परस्स अगारं **परागारं**, तदंगणाति सव्वमगारं। केण पुण कारणेण? इति भण्णति—**पाणट्ठा भोयणस्स वा, पाणं** आयामादि **भोयणं** असणाति तदट्ठं। वासदेण वत्थादिकज्जेण वा। पवेसे कारणं भणितं। तत्थ किं करणीयं? **जतं चिट्ठे, जतो** पवयण-संजमो-वघातियं ठाणं वज्जेऊण। उक्खेव-निक्खेवसोधणट्ठं अणेसणापडिसेहट्ठं पुच्छितो वा किंचि चोदणाए अणवज्जमेगं दो वा **मितं** भासेज्जा। भेक्खादिप्पदाणं पायो इत्थीसु ततो तासिं सिंगारादीसु **णो रूवेसु मणं करे**, वणियवच्छकनिदरिसणेण। "एगग्गहणे गहणं समाणजातीयाणं" ति सद्द-रस-गंध-फासेसु वि ॥ १९ ॥

सो एवं भेक्खादिगतो तिकरणोवयुत्तो वि अवंगुतदुवारेहि उम्मिलितेहि य—**बहुं सुणेति०** सिलोगो। पुच्छितो वा वट्टमाणिं एवमियं भासेज्ज वा—अम्हं एसणोवउत्ताणं णत्थि परवावारो, इमो य सिद्धंतोवदेसो—

३८९. बहुं सुणेति कण्णेहिं बहुं अच्छीहिं पासति।
ण य दिट्ठं सुयं सव्वं साधू मक्खातुमरुहति ॥ २० ॥

३८९. **बहुं सुणेति०** एवं सिलोगो। **बहुं** पभूतं पसत्था-ऽपसत्थसद्दजातं **बहुं सुणेति कण्णेहिं**। तधा रूवगतं **अच्छीहिं पासति**। तत्थ **न दिट्ठं सुतं** वा **सव्वमक्खातुमरुहति साधू**। दिट्ठे ताव जति कोति भणेज्जा—अत्थि ते एतेण ठाणेण पुरिसो गच्छमाणो दिट्ठो? सो य वज्झो वा डंडणीयो वा। जीवंतइ-तित्तिरहत्थगतं वा मेतं मंसत्थी पुच्छेज्जा। सुतं वा भवता को एतस्स पडहगस्स अत्थो? सो य कस्सति उग्गोवणत्थो वा प्रदाणाती वा जणवतोवघातिए?। एवमादिए सुते तत्थ **ण य दिट्ठं सुयं सव्वं०**। णोऽत्तं सव्वसद्दो निस्सेसवाची किंतु विसेसे, तेण भगवतो तित्थगरस्स पूया-महिमादि, वादे वा परवादिं परायियं दिट्ठं, अण्णं वा पवयणुब्भावणकारि सुतं, अवि भगवतो सुसाधुस्स वा कस्सति आगमणाति, एवंविहं पुच्छितो अपुच्छितो वा **अक्खातुमरुहति** ॥

१ आस्तृणुयात् ॥ २ °**लेहेत्ता प°** अचू० जे० विना ॥ ३ **पाणट्ठा** अचू० विना ॥ ४ **ण य रूवेसु** अचू० विना ॥
५ **पेच्छइ** खं २-३-४। **पेच्छई** शु० जे०। **पेच्छद** खं १॥ ६ **भिक्खू मक्खाउमरिहइ** अचू० विना॥ ७ न अयं सर्वशब्दः ॥

Jain Education International  For Private & Personal Use Only  www.jainelibrary.org

एत्थ उदाहरणं—**धिज्जाइतो** साधुणा उब्भामगमादरमाणो दिट्ठो। तेण 'मा कस्सति कहेति' त्ति साधुमारणत्थं पंथो **बद्धो**। पुच्छिओ य णेण—किं ते दिट्ठं?। साधुणा भणियं—सावग! एस सिद्धंतोवदेसो "बहुं सुणेति कण्णेहिं०"। धिज्जातितो मारणवावारातो नियत्तो, धम्मं सुणेऊण निक्खंतो॥

एवं ण दिट्ठं सुतं वा सव्वमक्खातुमरुहति ॥ २०॥ पुव्वभणितस्स अत्थस्स पडिसमाणणत्थमिमं भण्णति—

**३९०. सुतं वा जदि वा दिट्ठं ण लवेज्जोवघातितं।**
**ण य केणति उवादेण गिहिजोगं समायरे ॥ २१ ॥**

**३९०. सुतं वा जदि वा दिट्ठं०** सिलोगो। **सुतं** चोर-पारदारिकादि णो एवं **लवेज्ज**—किं मए ण सुतो सि जधा एरिसो? दिट्ठपुव्वो वा सि एरिसमायरंतो, एवं **ण लवेज्जोवघातितं। ण य केणति उवादेण** केणति प्रकारेण **गिहिजोगं** गिहिसंसग्गिं गिहिवावारं वा गिहिजोगं इमं वा कम्मं करेह त्ति तदुपदेसं॥ २१॥

गोयरगतस्स सोय-चक्खु-वयणनियमणमुदिट्ठं। इमं तु विसेसेण रसनियमणनिमित्तं भण्णति—

**३९१. णिट्ठाणं रसनिज्जूढं भद्दगं पावगं ति वा।**
**पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा लाभा-ऽलाभं ण णिद्दिसे ॥ २२ ॥**

**३९१. णिट्ठाणं रसनिज्जूढं०** सिलोगो। सव्वसंभारसंभियं सुपागं सुगंधं सुरसतया णिट्ठं गतं भोयणं **णिट्ठाणं**। अरसविरसमलवणकंजिकादि निग्गतरसं **रसनिज्जूढं**। तत्थ णिट्ठाणे पुच्छितो वा 'किं ते लद्धं?' अपुच्छितो वा पहरिसितो 'पेक्खह मिमं लद्ध'मिति **लाभं ण णिद्दिसे**, विरसे वा 'किमेतेण करेमी'ति **अलाभं ण निद्दिसे**, 'विरसेण वा किमेतेण करेमी'ति अलाभं ण निद्दिसे॥ २२॥

वयणेण लाभा-ऽलाभनिद्दिसणनिवारणं कतं। चेतसा पुण—

**३९२. ण य भोयणम्मि गिद्धो चरे उंछं [1]अयंपुरो।**
**अफासुयं ण भुंजेज्जा कीतमुद्देसिया-ऽऽहडं ॥ २३ ॥**

**३९२. ण य भोयणम्मि गिद्धो०** सिलोगो। **णे**ति पडिसेहसद्दो। **भोयणं** अण्णं, तम्मि **ण गिद्धो** ण अतिकंखापरो **चरे** गच्छे **उंछं** चउव्विहं। णाम-ठवणातो गतातो। दव्वुंछं उंछवित्तीणं। भावुंछं अण्णातमेसणासुद्धमुपपातियं भावुंछं, तं चरे। चडुकम्मादिअजंपणसीलो **अयंपुरो**। तं उंछं विसेसिज्जति—**अफासुयं न भुंजेज्ज**। तं पुण **कीतमुद्देसिया-ऽऽहडं** कीतुद्देसिया-ऽऽहडातीणि **पिंडणिज्जुत्तीए** भणिताणि, तेहिं सेसुग्गमदोससूयणं, एवं उग्गमदोसमसुद्धमवि॥ २३॥

**३९३. सण्णिहिं च ण कुव्वेज्जा अणु[2]मायमवि संजते।**
**मुधाजीवी असंबद्धे [3]हवेज्ज जगणिस्सिते ॥ २४ ॥**

**३९३. सण्णिहिं च ण०** सिलोगो। सण्णिधाणं **सण्णिधी** 'उत्तरकालं भुंजीहामि' त्ति सण्णिचयकरणमणेगदेवसियं तं ण कुव्वेज्ज। ण केवलं पभूतमेव णिचयं **अणुमायमवि** थोवमात्रमवि। **मुधा** अमुलेण तधा जीवति **मुधाजीवी** जहा **पढमपिंडेसणाए** [ सुत्तं १९८ ]। **असंबद्धो** रसादिपडिबंधेहि **जगणिस्सितो** इति ण एक्कं कुलं गामं वा णिस्सितो जणपदमेव॥ २४॥

---

१ **अयंपिरो** खं १-४ अचू० विना॥ २ **°मायं पि सं°** अचू० विना॥ ३ **भवेज्ज** जे०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सण्णिधिकरणमणंतरं निवारितं। इह तु तद्दिवसियमवि—

> ३९४. लूहवित्ती सुसंतुट्ठो अप्पिच्छे सुभरे[1] सिया।
>
> आसुरत्तं[2] ण गच्छेज्जा सोच्चाण[3] जिणसासणं॥ २५॥

३९४. **लूहवित्ती सुसंतुट्ठो०** सिलोगो। **लूहं** संजमो तस्स अणुवरोहेण **वित्ती** जस्स सो **लूहवित्ती**, अहवा लूहदव्वाणि चणग-निप्फाव-कोद्दवादीणि वित्ती जस्स, ण पुण वइयाइसु खीरादि मग्गंतो हिंडति, जेण तेण लद्धेण संथरति एवं **सुसंतुट्ठो**। सुसंतुट्ठो वि आहारविसेसोवगरणादिसु वि ण महिच्छो, एवं **लूहवित्ती सुसंतुट्ठो**। **अप्पिच्छो** य जो सुहं तस्स **भरणं** पोसणमिति तधा **सिया** एवं भवेदित्यर्थः। विसेसेण गोयरगतस्स आमिसत्थिपिंडोलगादीहिंतो अणिट्ठसद्दादिसवणं लाभालाभगतं च कोधकारणमणेगमिति भण्णति—**आसुरत्तं ण गच्छेज्जा** असुराणं एस विसेसेणं ति **आसुरो** कोहो, तब्भावो आसुरत्तं, तं ण गच्छेज्जा। **सोच्चाण जिणसासणं** ति जधा जिणसासणे कोधविपाकस्स **मंडुक्कलियाखमगादीण** वण्णणा, जधा य सति कोधकारणे भगवता आलंबणाणि उपदिट्ठाणि, तं०—

अक्कोस-हणण-मारण-धम्मब्भंसाण बालसुलभाण। लाभं मण्णति धीरो जहुत्तराणं अभावम्मि॥ १॥
[　　　　　　] ॥ २५॥

जहा कोधकारणाति विसेसेण गोयरे संभवति तहा इंदियविसयसुहनिरंतरे लोगे तदणुरत्तेण जणेण समुदीरिताण एतेसिं पि संभवो त्ति भण्णति—

> ३९५. कण्णसोक्खेसु[4] सद्देसु पेमं[5] णाभिनिवेसए।
>
> दारुणं कक्कसं फासं काएणं अधियासए॥ २६॥

३९५. **कण्णसोक्खेसु०** सिलोगो। **कण्णा** सोइंदियं, कण्णाण सुधा कण्णसोक्खा, तेसु गेय-हास-विलासातिसु **पेमं णाभिनिवेसए** प्रीतिं णाभिनिवेसेज्ज, बलादवि सुणणं संभवति। **दारुणः** कष्टः तीव्रः, सीउण्हातितं **कक्कसो**, वयत्थो वयत्थाए जो फासो सो वि वयत्थो, तं पुण रच्छादिसंकडेसु विपणिमग्गेसु वा फरिसितो तमवि **काएणं अधियासए** सहे, ण तत्थ दोसं रागं वा भयेज्जा। अहवा अतीव कक्कसो **दारुणो** कसा-लकुलादिसु तमवि अहियासए। एवमेते पंचण्हं सोतादीणं इट्ठा-ऽणिट्ठभेदेण राग-दोस-कारणभूता[6] विसया, तत्थ जधा "आदिरंतेण सह" इति एवमिहापि आद्यंतवयणेण सव्वेसिमभिधाणं ति सव्वविसए अधियासए॥ २६॥ गोतॅरगतस्सेव[7] असति लाभे केणति वा बाहिज्जमाणस्स इमं पि संभवति त्ति तदहियासणत्थं भण्णति—

> ३९६. खुहं पिपासं दुस्सेज्जं सीउण्हं अरती भयं।
>
> अधियासए[8] अव्वहितो देहे दुक्खं महाफलं॥ २७॥

३९६. **खुहं पिपासं दुस्सेज्जं०** सिलोगो। बुभुक्खा **खुधा**। पातुमिच्छा **पिपासा**। विसमादि-भूमिसु दुक्खसयणं **दुस्सेज्जा**। **सीतमुण्हं** वा रितुविकारकतं। **अरती** अधिती। **भयं** उव्वेगो सीह-सप्पातीतो।

---

१ सुहरे खं १-३ जे० शु०। सुभरे खं २ अचू० वृद्ध० हाटी०। सुहडे सुया खं ४॥　२ आसुरत्तं खं १-३॥ ३ सोच्चाणं अचू० खं १ विना॥　४ सोक्खेहिं सद्देहिं खं १-२-३-४ जे० शु० वृद्ध०॥　५ पेम्मं खं ३-४॥　६ °ता द वि° मूलादर्शे॥　७ गोचरगतस्यैव॥　८ अहियासे खं ४ अचू० विना॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

एताणि **अधियासए** सहेज्ज **अव्वहितो** अविक्कवो होऊण । **देहो** सरीरं तम्मि उप्पण्णं **दुक्खं** एवं सहिज्जमाणं मोक्खपज्जवसाणफलत्तेण **महाफलं**, भवतीति वयणसेसो ॥ २७ ॥

एतं गोयरग्गगतस्स लाभादिसु अधियासणं । कालनियमेण पुण—

> ३९७. अत्थंगतम्मि आइच्चे पुरत्था[1] वा अणुग्गते ।
> आहारमतियं सव्वं मणसा वि ण पत्थए ॥ २८ ॥

३९७. **अत्थंगतम्मि आइच्चे०** सिलोगो । आइच्चादितिरोभावकरणपच्चयो **अत्थो**, खेत्तविप्पकरिसभावेण वा अदरिसणमत्थो, तं गते, **पुरत्था वा** पुव्वाए दिसाए **अणुग्गते** अणुट्ठिए दिणकरे, **आहारमतियं सव्वं**, **आहारमइयं** चउव्विधमाहारं **सव्वं** असेसं 'कहं कतो वा लभीहामि ?' त्ति एवं **मणसा वि**, किमु वाताए 'देही' ति मग्गणं ?, 'उदिते वा भुंजीहामि' त्ति उपादाणं **ण पत्थए** णाभिलसेज्ज ॥ २८ ॥

अकाले आहारोपादाणं पडिसिद्धं । सति पुण उपादाणकाले—

> ३९८. अतिन्तिणे अचवले [2]अप्पवादी मियासणे ।
> असंभवे पभूतस्स थोवं लद्धुं ण खिंसए ॥ २९ ॥

३९८. **अतिन्तिणे अचवले०** सिलोगो । तेंबुरुविकट्ठडहणमिव तिणितिणणं **तिंतिणं**, तहा अरसादि ण हिलिमिंत्थति त्ति **अतिंतिणे । चवलो** तरसकारी, तन्निवारण**मचवल** इति । **अप्पवादी** जो कारणमत्तं जायणाति भासति । **मियासणो** [3]मितमाधारयति, एवं जहाभणितोवदेसकारी भवेज्ज । **असंभवे पभूतस्स थोवं लद्धुं** दायारं सण्णिवेसं वा **ण खिंसए, खिंसणं** किलेसणमेव ॥ २९ ॥

गोयरे सव्वावत्थं वा चावलणिवारणाणंतरं गव्वनिवारणमिमं भण्णति—

> ३९९. ण बाहिरं परिभवे [4]अप्पाणं ण समुक्कसे ।
> [5]सुतेण लाभेण लज्जाए [6]जच्चा तवस बुद्धिए ॥ ३० ॥

३९९. **ण बाहिरं परिभवे०** सिलोगो । **णे**ति पडिसेहसद्दो । अप्पाणवतिरित्तो बाहिरो तं **ण बाहिरं परिभवे । ण** वा **अप्पाणं समुक्कसणं** उक्करिसणं । तं पुण इमेहिं–**सुतेण** अहमेव बहुस्सुतो, किमेते वरागा जाणंति ? । **लाभेण** अहमेव लद्धिसंपण्णो, अण्णे निप्फिडिताऽऽगता । **लज्जा** संजमो तेण वा, अहं उग्गविहारो, अण्णे जहा तधा वा । **जच्चा** जातीए, अहं **उग्ग**जातीतो, ण सेसा । **तवसा** वा को मम तुल्लो ? ति । **बुद्धीए** जहा अहं परियच्छामि णेवं कोति । अहवा **बाहिरो** जो सुतादीहिं असंपुण्णो ण पुण अवतिरित्तो चेव तं **ण परिभवे** ॥ ३० ॥ जता पुण सरागतया पुव्वभणिताण समायट्ठाणाण संभवो तदा खलितपडिसंधणत्थमिदं भण्णति—

> ४००. से [7]जाणमजाणं वा कट्टु आहम्मितं पदं ।
> संवरे खिप्पमप्पाणं [8]बितियं तं ण समायरे ॥ ३१ ॥

---

१ °त्थाय अ° अचू० विना ॥ २ अप्पभासी मियासणे । हवेज्ज उयरे दंते थोवं अचू० विना। अप्पवादी वृद्ध०। भवेज्ज उदरे खं ४ ॥ ३ मितमाहारयति ॥ ४ अताणं अचू० विना ॥ ५ सुय-लाभे ण मज्जेज्जा जच्चा तवस्सि बुद्धिए अचू० वृद्ध० विना ॥ ६ जाया त° खं ४ ॥ ७ जाणं अजाणं खं ४ जे० शु० ॥ ८ बीयं खं १-२-४ शु० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**४००. से जाणमजाणं वा०** सिलोगो । **से** इति वयणोवण्णासे । **जाणं** जाणंतो कामकारेण । **अजाणं** अणाभोगेण । **वा**सद्दो एवमेवं वा **कट्टु आहम्मितं** करेतूण **आधम्मितं** अधम्मेण चरति जं, **पय**सद्दो अत्थवयणो, जधा-उच्चारपदेण पत्थितो । तमाधम्मियमत्थं काऊण अहम्मागमनिवारणत्थं **संवरे खिप्पमप्पाणं संवरणं** पिधणं **खिप्पं** सिग्घं । **बितियं** पुण **तं** अत्थं **ण समायरे** ॥ ३१ ॥

संवरणं पायच्छित्तादि गुरूवदेसेण भवति त्ति तं भण्णति—

**४०१. अणायारं परक्कम्म ण[1] गूहे ण व निण्हवे ।**
**सूती सदा विगडभावो असंसत्तो जितिंदिओ ॥ ३२ ॥**

**४०१. अणायारं परक्कम्म०** सिलोगो । **अणायारो** अकरणीयं वत्थुं, तं **परक्कम्म** पडिसेविऊण तमालोए गुरुसगासे । आलोएमाणो सयं लज्जादीहिं **ण गूहे** ण किंचि पडिच्छाएज्जा, **ण वा** पुच्छितो **निण्हवे, सूती** ण "आकंपतित्ता अणुमाणतित्ता०" [ स्थानाङ्ग० स्था० १० सू० ७३३ पत्र ४८४-१ ] । **सदा विगडभावो** सव्वावत्थं जधा बालो जंपंतो तहेव विगडभावो । **असंसत्तो** दोसेहिं गिहत्थकज्जेहिं वा । **जितसोतादिंदिओ**, ण पुण [ अ ]तहाकारी, एवं संदरिसितसव्वसब्भावो ॥ ३२ ॥ अणायारविसोधणत्थं जं आणवेंति गुरवो तं—

**४०२. अमोहं वयणं कुज्जा आ[2]यरियाणं महप्पणो ।**
**तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववातए ॥ ३३ ॥**

**४०२. अमोहं वयणं कुज्जा०** सिलोगो । **अमोहं** अवंझं **वयणं** जं ते आणवेंति **कुज्जा** एवं करणीयं । **आयरिया**[3] आयारोवदेसगा णाणादीहि संपण्णा । महं अप्पा जेसिं ते महप्पाणो तेसिं **महप्पणो, तं** 'इच्छामि खमासमणो !' त्ति **वायाए** परिगेण्हिऊण, ण वायामत्तेण, **कम्मुणा** वि जहा आणवेन्ति तहा **उववातए**। उववातणं तहाणुट्ठाणं ॥ ३३ ॥ अणायाणविणियत्तणं जमादिसंति गुरवो तं ण रायवेट्ठिमिव मण्णमाणो किंतु अप्पणो एवमुपकारबुद्धी—

**४०३. अधुवं जीवितं णच्चा सिद्धिमग्गं वियाणिया ।**
**[4]विणिव्विज्जेज्ज भोगेसु आउं परिमितमप्पणो ॥ ३४ ॥[5]**

**४०३. अधुवं जीवितं णच्चा०** सिलोगो । **अधुवं** असासतं **जीवितं** प्राणधारणं **णच्चा** जाणिऊण, नाण-दंसण-चरित्ताणि **सिद्धिमग्गं** विविधं जाणिऊण **वियाणिया**, सिद्धिमग्गस्स अविराहणत्थं **विणिव्विज्जेज्ज भोगेसु** सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेहिंतो भोगेहिं । जतो **आउं परिमितमप्पणो** [6]कतिपदाणि दिणाणि विघात-बहुलं च ॥ ३४ ॥ इमेण य आलंबणेण विणिव्विज्जेज्ज भोगेसु जधा—

**४०४. [7]जरा जाव ण पीलेति वाधी जाव ण वड्ढती ।**
**[8]जाविंदिया ण हायंति ताव धम्मं समायरे ॥ ३५ ॥**

---

१ **णेव गूहे ण नि°** अचू० वृद्ध० विना ॥ २ **आयरियस्स मह°** अचू० वृद्ध० हाटी० विना ॥ ३ "**आयरिया** पसिद्धा, **महप्पणो** नाम महंतो अप्पा सुयादीहिं जेसिं ते महप्पाणो, तेसिं महप्पणो" इति **वृद्धविवरणे** । "आचार्याणां महात्मनां श्रुतादिभिर्गुणैः" इति हारि० वृत्तौ ॥ ४ **विणियट्टेज्ज** अचू० विना । **विणिव्विसेज्जा** वृद्ध० ॥ ५ एतत्सूत्रश्लोकानन्तरं सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु अवचूर्यां च एकः सूत्रश्लोकोऽधिको दृश्यते, तथाहि-**बलं थामं च पेहाए सद्धामारोग्गमप्पणो । खेत्तं कालं च विण्णाय तहऽप्पाणं निजुंजए** ॥ इति । **निजोजए** खं ३-४ जे० ॥ ६ कतिपयानि ॥ ७ **जाव जरा न** वृद्ध० ॥ ८ **जावेंदि°** खं ३ ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४०४. **जरा जाव ण पीलेति०** सिलोगो। **जाव** इति कालावधारणं, जावंतं कालं **जरा ण पीलेति**, दुक्खं जराभिभूताण संजमकरणमिति। **जाव** य वात-पित्त-सिंभ-सण्णिवातसमुत्थो **वाधी ण वड्ढती,** जातिपयत्थिकमेकवयणं। **जाविंदिया** सोतादी **ण हायंति ताव धम्मं समायरे** ॥ ३५ ॥

तस्स य धम्मस्स विग्घभूता दुज्जिण्णाहारविसत्थाणीया पढमं णीहरितव्वा कसाया इति भण्णति—

४०५. कोधं माणं च मायं च लोभं च पाववड्ढणं।
वमे चत्तारि [1]दोसे तु इच्छंतो हितमप्पणो ॥ ३६ ॥

४०५. **कोधं माणं च मायं च०** सिलोगो। पदविभा[गा]णंतरमत्थविवरणं। असमासकरणं **पच्चत्तरा-यिप्पभितीण** उदाहरणाणोपादाणाय। तिण्णि चसद्दा पत्तेयं गतिमादिनिदरिसणाय। एते **चत्तारि** कोधादयो वयणेणेव उद्दिट्ठा, किं पुणो [2]चेयुग्गहणं? ति भण्णति—एगेगस्स चतुधा अणंताणुबंधादिभेदत्थं। ते **वमे** तधा-आरोग्गत्थिणेव दोसा ॥ ३६ ॥ एतेसिं च अणिग्गहे इहेवामी दोसा—

४०६. कोधो पीतिं पणासेति माणो विणयणासणो।
माया मित्ताणि णासेति लोभो सव्वविणासणो ॥ ३७ ॥

४०६. **कोधो पीतिं पणासेति०** सिलोगो। **कोधो** रोसो, सो य दाणादीहि सुबद्धामवि **पीतिं पणासेति**। **माणो** वि गव्वाभिभूतस्स माणारिहे अप्पडिमाणिंतस्स **विणयणासणो** भवति। **माया** वि कवडसमायरणेण कुलपरंपरागताणि वि **मित्ताणि णासेति**। **लोभो** पुण एतेसिं पीति-विणय-मित्ताणं कुल-संथितिप्पभितीण य गुणाणं **सव्वेसिं विणासणो** ॥ ३७ ॥

जतो इहभवे एते दोसा धम्मचरणविग्घत्तणेण य परभवे दुक्खपरंपरकारिणो अतो—

४०७. उवसमेण हणे कोहं माणं मद्दवता जिणे।
मायं चऽज्जवभावेण लोभं [3]संतुट्ठिए जिणे ॥ ३८ ॥

४०७. **उवसमेण०** सिलोगो। खमा **उवसमो**, तेण कोधोदयनिरोधादिक्कमेण **हणे कोहं**। अगव्वो **मद्दवता**, ताए गव्वितेसु वि अगव्वितो **माणं जिणे**। रिजुता **अज्जवं**, तेण उज्जुभावेण **मायं जिणे** इति वट्टति। संतोसो **संतुट्ठी**, तीए उदयप्पत्तविफलीकरणोदयनिरोधेण **लोभं जिणे** ॥ ३८ ॥

एवमेते परभवे दुक्खपरंपरमारभंते। जहा—

४०८. कोहो य माणो य [4]अणिग्गिहीता, माया य लोभो य विवड्ढमाणा।
चत्तारि एते [5]कसिणा कसाया, सिंचंति मूलाणि पुणब्भवस्स ॥ ३९ ॥

४०८. **कोहो य माणो य०** वृत्तम्। **कोहो य माणो य अणिग्गिहीता** अणिवारिता, **माया य लोभो य विवड्ढमाणा** अप्पणो कारणेहि समुज्जलिता विविधं वड्ढमाणा। दोण्हं [6]पिधंणिद्देसो कोहो माणो य दोसो, माया लोभो य रागो, एतस्सोवदरिसणत्थं। ते एवं राग-दोसाभिभूतस्स जीवस्स **चत्तारि** वि **एते कसिणा** पडिपुण्णा **पुणब्भवो** संसारो तस्स पुणब्भवरुक्खस्स परमकडुफलविवागस्स ते कोधादयो **मूलाणि सिंचंति**। एवं सो [7]समप्पाइयमूलो विवड्ढति ॥ ३९ ॥

---

१ **दोसाइं इच्छं**° खं १-३ ॥ २ चतुर्ग्रहणम् ॥ ३ **संतोसओ जिणे** खं १-२-४ शु० हाटी० ॥ ४ **अणिग्गही**° खं १ जे० अचू० विना ॥ ५ **कसिणे** खं १-२-३-४ ॥ ६ पृथग्निर्देशः ॥ ७ समाप्यायितमूलः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवसमादीहि कोधादिविजयं करेमाणो तज्जयोवदेसकेसु तज्जयपरेसु—

४०९. राइणिएसु विणयं पयुंजे, धुवसीलयं सततं ण[2] हावएज्जा ।
[3]कुम्मेव अल्लीण-पल्लीणगुत्ते, [4]परऽक्कमेज्जा तव-संजमम्मि ॥ ४० ॥

४०९. **राइणिएसु विणयं०** वृत्तम् । **रातिणिया** पुव्वदिक्खिता, तेसु अब्भुट्ठाणादिकं **विणयं पयुंजे** । इमं च **धुवसीलयं सततं ण हावएज्जा धुवं** सततं **सीलं** अट्ठारससहस्सभेदं, धुवसीलस्स [भावो] धुवसीलता तमवि न परिभवेज्ज । सततं सीलजुत्ते **कुम्मेव अल्लीण-पल्लीणगुत्ते, कुम्मो** कच्छभो, जधा सो सजीवितपरिपालणत्थमंगाणि कभल्ले संहरति, गमणातिकारणे य सणियं पसारेति; तहा साधू वि संजमकडाहे इंदियप्पयारं कायचेट्ठं निरुंभिऊण **अल्लीणगुत्तो**, कारणे जतणाए ताणि चेव पवत्तयंतो **पल्लीणगुत्तो**, गुत्तसद्दो पत्तेयं परिसमप्पति । एतेण विधिणा **परऽक्कमेज्जा परा** कोधादयो **अक्कमेज्ज तव-संजमम्मि** थितो ॥ ४० ॥ इंदियपमादविरहितेण अल्लीण-पल्लीणगुत्तेण अण्णाणि वि पमादट्ठाणाणि परिहरितव्वाणीति भण्णति—

४१०. णिद्दं च ण[6] बहुमण्णेज्जा [7]संपहासं विवज्जए ।
[8]मिधुकहाहि ण रमे [9]सज्झायम्मि रओ सदा ॥ ४१ ॥

४१०. **णिद्दं च ण बहुमण्णेज्जा०** सिलोगो । **णिद्दा** प्रतीता, तं **ण बहुमण्णेज्जा बहुमतं** प्रियं, ण तत्थ प्रीतिमाधरेज्ज । समेच्च समुदियाणं पहसणं [10]सैंतिरालावपुव्वं **संपहासो** तं विवज्जए । [11]विकधा-पमादपरिवज्जणत्थं **मिधुकहाहि ण रमे मिधुकहाओ** रहस्सकधाओ इत्थीसंबद्धाओ तहाभूतातो वा [12]तीयो वज्जेत्ता **सज्झायम्मि** पंचविहे **रओ** तच्चित्तो **सदा** सव्वकालं ॥ ४१ ॥ विकहाविरहितो सज्झायादिकमणेगविधं—

४११. जोगं च समणध[13]म्मस्स जुंजे अ[14]णलसो धुवं ।
जुत्तो य समणधम्मम्मि अत्थं लभति अणुत्तरं ॥ ४२ ॥

४११. **जोगं च समणधम्मस्स०** सिलोगो । **जोगो** तिविहो । **समणधम्मस्स** अत्थे जधाजोगं मणो-वयण-कायमयअणुप्पेहण-सज्झाय-पडिलेहणादिसु पत्तेयं समुच्चयेण वा **च**सद्देण नियमेण **भंगितसुते** तिविधमवि **जुंजे अणलसो** सउज्जमो अप्पणो काले अण्णोण्णमबाहंतं **धुवं** । समणधम्मजोगसकलफलोवदरिसणत्थमिमं भण्णति—**जुत्तो य समणधम्म०** सिलोगो [पच्छद्धं] । **जुंजे** इति उपदिट्ठं, **जुत्तो** पुण दसविधे **समणधम्मम्मि** [15]अत्थसद्दो इह फलवाची तं **लभति** । णत्थि जतो उत्तरतरो विसिट्ठतरो सो **अणुत्तरो** ॥ ४२ ॥

कहमणुत्तरं ?—

४१२. इहलोग-पारत्तहितं जेणं गच्छति सोग्गतिं ।
बहुस्सुतं पज्जुवासेज्ज पुच्छेज्जऽत्थविणिच्छयं ॥ ४३ ॥

४१२ **इहलोग-पारत्तहितं०** [सिलोगो] । **इहलोगे**

धम्मेण समणधम्मे एगदिवसदिक्खितो वि विणएणं । वंदिज्जते य पूतिज्जए य अवि रायरायीहिं ॥
[　　　　　]

---

१ **समयं भाव°** वृद्ध० ॥　२ **णो** जे० ॥　३ **कुम्मो व्व अ°** खं १ अचू० विना ॥　४ **परक्क°** अचू० विना ॥
५ **तं सचित्तं परि°** मूलादर्शे ॥　६ **ण हु मण्णे°** खं ४ ॥　७ **सप्पहासं** अचू० विना ॥　८ **मिधोक°** अचू० वृद्ध० विना ॥
९ **अज्झयणम्मि** जे० वृद्ध० । **सज्झाणनिरए** खं ३ ॥　१० स्वैरालापपूर्वम् ॥　११ **विवाप°** मूलादर्शे । विकथा-प्रमादपरिवर्जनार्थम् ॥
१२ ताः ॥　१३ **°म्मम्मि जुं°** अचू० विना ॥　१४ **°णलसे** खं १ ॥　१५ **अत्थो सद्दो** मूलादर्शे ॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

**परलोए** सुकुलसंभवादि । जेणं धम्मेण गच्छति [ **सोग्गतिं** ] । सव्वस्सेयस्स उवलभणत्थं **बहुस्सुतं पज्जुवासेज्ज** । पज्जुवासमाणो **पुच्छेज्जऽत्थविणिच्छयं अत्थविनिच्छयो** तब्भावनिण्णयो तं **पुच्छेज्ज** वियारेज्ज ॥ ४३ ॥ पज्जुवासणे अयं विधी—

४१३. हत्थं पायं च कायं च पणिहाय जितिंदिए ।
अल्लीणगुत्तो [1]णिसीएै सगासे गुरुणो मुणी ॥ ४४ ॥

४१३. **हत्थं पायं च कायं च०** सिलोगो । **हत्थ-पाय-काया** कर-चरण-सरीराणि ताणि **पणिहाय** हत्थणट्ट-पादकुहडि-सरीरमोडणाति परिहरंतो, कायाभिधाणे हत्थ-पादवयणं तप्पहाणा चेट्ठ त्ति । जिताणि इंदियाणि जेण सो **जितेंदियो, अल्लीणो** णाइदूरमणासण्णे [ **गुत्तो** ] मणसा गुरुवयणे उवयुत्तो वायाए कज्जचोदणपरो **णिसीए** उवविसे **सकासे** समीवे **गुरू** आयरियादि तस्स । **मुणी** इति एवं नाणी भवति ॥ ४४ ॥

सुप्पणिहित[ह]त्थ-पादेण जितिंदियेण गुरुसुस्सूसणपरेण कतरे पदे से [2]ट्ठातियव्वं ? ति तस्स थाण-नियमणमिमं—

४१४. [3]णै पक्खतो ण पुरतो णेव किच्चाण पिट्ठतो ।
ण य ऊरुं समासज्ज चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए ॥ ४५ ॥

४१४. **न पक्खतो न पुरतो०** सिलोगो । समप्पहप्पेरिया सद्दपोग्गला कण्णबिलमणुपविसंतीति कण्णसमसेढी **पक्खो,** ततो ण **चिट्ठे गुरुणमंतिए,** तधा अणेगग्गता भवति । अविणतो वंदमाणाण विघातो त्ति सममग्गतो **पुरतो ण चिट्ठेज्जा** । अविणयदोस इति समं पच्छतो **पिट्ठतो ण चिट्ठे** । तधा **ऊरुगमूरुगेण** संघट्टेऊण एवमवि **ण चिट्ठे** । **[4]अंतियं** अब्भासं ॥ ४५ ॥

सरीरेण एताणि त्थाणाणि परिहरंतेण वायाए इमं परिहरितव्वं—

४१५. अपुच्छितो ण भासेज्जा भासमाणस्सै वऽन्तरा ।
पि[5]ट्ठीमंसं ण खाएज्जा मायामोसं विवज्जए ॥ ४६ ॥

४१५. **अपुच्छितो ण भासे०** सिलोगो । आयरिएहि अणिउत्तो **ण भासेज्ज** । **भासमाणस्स वा** [6]गुरुणो वदमाणस्स य मज्झे, जहा—खमासमणो ! ण भवति एतं एवं जहा तुब्भे वदह, जधा हं भणामि तहा । अवण्णवयणं जमसरीरमंसभक्खणं तं परम्मुहस्स **पिट्ठीमंसं ण खाएज्जा** । मायासहितं मोसं **मायामोसं** तं **विवज्जए** । जं पुण लुद्धगमादीहि पुच्छिताण मृगादीण अकहणं ण तं [7]मायासहितं, धम्मसहितमिति अतो वदेज्ज ॥ ४६ ॥ असमक्खमवण्णवयणं निवारितं । समक्खमवि —

४१६. अप्पत्तियं जेण सिया आसु कुप्पेज्ज वा परो ।
सव्वसो तं ण भासेज्जा भासं [8]अधितगा[9]मिणी ॥ ४७ ॥

४१६. **अप्पत्तियं जेण सिया०** सिलोगो । **अपत्तियं** अप्रीतिः णातिफुडलिंगं कालंतरावत्थाति-कोवकरणं तं जेण भवति तं ण भासेज्ज । **आसु** सिग्घं **कुप्पेज्ज वा** जेण तक्खणं मारणाति समारभेज्जा **परो**

---

१ **णिसिए** अचू० वृद्ध० विना ॥ २ **°ए वा स°** खं ४ ॥ ३ **न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ । न जुंजे ऊरुणा ऊरुं सयणे नो पडिस्सुणे** ॥ इत्युत्तराध्ययनसूत्रे अ० १ गा० १८ ॥ ४ **°स्स यंत°** हाटी० । **°स्स अंत°** सर्वासु सूत्रप्रतिषु ॥ ५ **पिट्ठिमंसं** अचू० विना ॥ ६ **गुरुणैवदणस्सधणस्स य** मूलादर्शे ॥ ७ मायासहितम् ॥ ८ **अहियगा°** अचू० विना ॥ ९ **°गामिणिं** खं २ जे० शु० वृद्ध० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तू सव्वो वा अप्पाणवइरित्तो, सव्वसो सव्वप्पगारं तं ण भासेज्ज। अधितो संसारो तं गमयति अधितगामिणी ॥ ४७ ॥ एवं ताव अणंतरभणितं ण भासेज्ज । इमे पुण भासेज्ज—

४१७. दिट्ठं मितं असंदिद्धं [1]पडिपुण्णं [2]वियं जितं ।
[3]अयंपुरमणुव्विग्गं भासं [4]णिसिरे अत्तवं ॥ ४८ ॥

४१७. **दिट्ठं मितं०** सिलोगो । सयं चक्खुणा उवलद्धं **दिट्ठं** । अणुचं कज्जमत्तं च **मितं** । असंकितं **असंदिद्धं** । सर-वंजण-घोसेण अहीणं **पडिपुण्णं** । [5]विभाविज्जमाणमत्थतो **वियं** व्यक्तं । **जितं** ण वामोहकरमणेकाकारं । अजंपणसीलो **अयंपुरो**, तहासभावमयंपुरं । अभीतमणुव्विग्गं । एतेण विधिण **भासा** पुव्वभणिता तं **णिसिरे** विसज्जते । नाण-दंसण-चरित्तमयो जस्स [6]आया अत्थि सो **अत्तवं**, एवं वा भासमाणो **अत्तवं** भवति ॥ ४८ ॥

परपरिभवाधनेकदोसं हासमिति तस्सहितं दिट्ठादिगुणोवेतमवि णिवारयंतेहिं भण्णति—

४१८. आयार-पण्णत्तिधरं दिट्ठिवादमधिज्जगं ।
[7]वयिविक्खलितं णच्चा [8]ण तं [9]अवधसे मुणी ॥ ४९ ॥

४१८. **आयार-पण्णत्तिधरं०** सिलोगो । **आयारधरो** भासेज्जा तेसु विणीयभासाविणयो, विसेसेण **पण्णत्तिधरो**, तं **वयिविक्खलितं [णच्चा] ण अवहसे**। **दिट्ठिवादमधिज्जगं** दिट्ठिवादमज्झयणपरं, [तम्मि] अधीते [10]सव्ववतोगतविसारदस्स नत्थि खलितं, एतं वयण-लिंग-वण्णविवज्जासे **ण अवधसे**। 'जति तेसिं पि खलितं भवति किं पुण सेसाणं?' ति सेसे वि णावहसे **मुणी** इति भणितं ॥ ४९ ॥

परिहासादि जधा वायिगो दोसो परिहरियव्वो तधा अयमवि । जहा—

४१९. णक्खत्तं सुमिणं जोगं णिमित्तं मंत भेसजं ।
[11]गेहीण तं ण आतिक्खे भूताधिकरणं पदं ॥ ५० ॥

४१९. **णक्खत्तं सुमिणं०** सिलोगो । णक्खत्ताणि कित्तिकादीणि, तेसिं अज्ज अमुकं **णक्खत्तं** ति एवं णाऽऽतिक्खे । तहा **सुमिणमवि** 'एतस्स इमं फलं' ति । एवं **जोगो** ओसहसंमवादो तमपि । **णिमित्तं** वा रट्ठुपघाति । तहा [12]विच्छिकोमज्जणाति **मंतमसाधणं**, एवंजातीयं वा विज्जाविसेसं । **भेसजं** ओसहं वातातिसमणं । सव्वमपि एतं **गेहीण णाऽऽतिक्खे** । **भूताधिकरणं** भूताणि उवरोधक्किरियाए [14]अधिकियंते जम्मि तं भूताधिकरणं **पदं** थाणं ॥ ५० ॥

वतिगुत्तिसमणंतरं मणगुत्ती, सा य थाणगुणतो भवति त्ति सुणिलयणोवदेसे इमं–**अण्णट्ठ०** । अधवा पदसद्दो थाणवाची, "भूताहिकरणं पद"मिति वत्थुमतं, इमं तु थाणमेव, अतो भण्णति—

४२०. अण्ण[15]ट्ठप्पगडं [16]लेणं भयेज्ज सयणा-ऽऽसणं ।
उच्चारभूमिसंपण्णं इत्थी-पसुविवज्जितं ॥ ५१ ॥

---

१ पडुप्पण्णं वृद्ध० ॥ २ वियंजितं वृद्ध० ॥ ३ अयंपिर° खं २–३ शु० ॥ ४ निसिर सर्वेषु सूत्रादर्शेषु ॥ ५ "वियंजितं णाम वियंजितं ति वा तत्थं ति वा एगट्ठा" इत्येकपदत्वेन व्याख्यानं वृद्धविवरणे ॥ ६ आया नत्थि मूलादर्शे ॥ ७ वइवि° खं १–२–३ शु० । वयवि° खं ४ जे० ॥ ८ णेवं उव° जे० ॥ ९ उवहसे अचू० वृद्ध० विना ॥ १० सर्वस्वोगतविशारदस्य ॥ ११ गिहिणो तं अचू० वृद्ध० हाटी० विना ॥ १२ समवायः ॥ १३ वृश्चिकापमार्जनादि ॥ १४ अधिक्रियन्ते ॥ १५ अण्णट्ठं पग° खं १ अचू० विना ॥ १६ लयणं खं २ शु० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**४२०. अण्णट्ठप्पगडं०** सिलोगो। **अण्णट्ठप्पगडं अण्णस्स** ण साधुणो परिनिमित्तं, पकरिसकतं **पगतं** परिनिट्ठितमेव, लीयंते जम्मि तं **लेणं** णिलयणमाश्रयः, तं **अण्णट्ठप्पगडं लेणं भयेज्ज** सेवेज्ज। **सयणं** संथारो, **आसणं** कट्ठपीढकादि, सयणासणमवि तहाविधमेव भयेज्ज। **उच्चारभूमीए संपण्णं** सा जत्थ सुलभा, सव्वं जमुच्चरति पासवणादि [त]**मुच्चारः। इत्थीहिं विवज्जितं**, ण तासिं समीवे, विसेसवज्जितमिति तज्जातीएहिं णपुंसकेहिं विवज्जियं, **पसूहिं** अमिलादीहि **विवज्जितं**, तं भयेज्ज इति वट्टति ॥ ५१ ॥

थी-पसु-पंडगविवज्जिते लयणे संदंसणादिदोसकारणविवज्जणत्थमिमं परिहरेज्जा—

> ४२१. विवित्ता य भवे सेज्जा णारीणं णे[1] कधे कहं।
> गिहिसंथवं न कुज्जा कुज्जा साधूहिं संथवं ॥ ५२ ॥

**४२१. विवित्ता य भवे सेज्जा०** सिलोगो। इत्थिमादीहि वियुता **विवित्ता**। एवंगुणा जदि भवे सेज्जा। लयणमेव **सेज्जा**। तत्थ जंतिच्छोवगताण[2] वि **णारीणं** सिंगारातिगं विसेसेण [ण] **कधे कहं**। तहा **गिहिसंथवं न कुज्जा** तेहिं संसग्गिं परिहरे, आयरियादि-चरित्तसारक्खणत्थं **कुज्जा साधूहिं संथवं** ॥ ५२ ॥

को पुण निब्बंधो जं विवित्तलयणत्थितेणावि कहंचि उपगताण नारीण कहा ण कथणीया? भण्णति— वत्स!, नणु चरित्तवतो महाभयमिदं इत्थीणाम कहं—

> ४२२. जहा कुक्कुडपोतस्स निच्चं कुललयो भयं।
> एवं खु बंभचारिस्स इत्थीविग्गहतो भयं ॥ ५३ ॥

**४२२. जहा कुक्कुडपोतस्स०** सिलोगो। **कुक्कुडो** पक्खिविसेसो, तत्थ वि **पोतो** अजातपक्खो, तस्स **जहा निच्चं** सव्वकालं **कुललयो** मज्जारातो **भयं** पमादो। **एवं** एतेण प्रकारेण **खु** इति भयनिरूवणे **बंभव्वतचारिस्स इत्थीविग्गहतो विग्गहो** सरीरं ततो, रूव-रूवसहगताणेगविकप्पं ति विग्गहग्गहणं, **भयं** ॥५३॥

णिचं जतो इत्थिविग्गहतो सव्वावत्थं भयं तम्हा—

> ४२३. चित्तभित्तिं ण णिज्झाए णारिं वा सु[3]तलंकितं।
> भक्खरं पिव[4] दट्ठूणं दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥ ५४ ॥

**४२३. चित्तभित्तिं ण णिज्झाए०** सिलोगो। **चित्तभित्तिं ण णिज्झाए** "इत्थिविग्गहतो भय"मिति अधिकारो तेण जत्थ इत्थी लिहिता तहाविधं चित्तभित्तिं **ण णिज्झाए** ण जोएज्जा। **णारिं वा सुतलंकितं** आभरणेहि सुविभूसितं। जता पुण चक्खुपहमागच्छति तदा **भक्खरं पिव** तं **दट्ठूणं दिट्ठिं पडिसमाहरे**। जहा तिव्वकिरणजालेणमादिच्चं दट्ठूण तेयसा विकुंचिता दिट्ठी साहरिज्जति तथा चित्तभित्तिगतं सुयलंकितं वा णारिं दट्ठूण दिट्ठिपडिसमाहरणं करणीयं ॥ ५४ ॥

चित्तभित्तिगतमलंकितं वा ण णिज्झाए त्ति भणितं। सेसासु कहं? भण्णति—एतमवत्थं पि—

> ४२४. हत्थ-पातपलिच्छिण्णं कण्ण-णासविकंप्पितं[5]।
> अवि वाससतिं[6] णारिं बंभयारी विवज्जए ॥ ५५ ॥

---

१ **न लवे कहं** सर्वेषु सूत्रादर्शेषु ॥ २ यदृच्छोपगतानामपि ॥ ३ **सुअलं°** सर्वेषु सूत्रादर्शेषु। **सुयलं°** वृद्ध०। **सुवलं°** शुपा० ॥ ४ **पिय** खं ३ ॥ ५ **°विगप्पियं** खं १-२ शु०। **°वियप्पियं** खं ३-४। **°विगत्तियं** जे० हाटी० अव० ॥ ६ **°सई णा°** खं १-२ जे० शु० वृद्ध०। **°सयं णा°** खं ३-४ ॥ •

४२४. **हत्थपादपलि०** सिलोगो । हत्था पादा परिच्छिण्णा जीसे सा **हत्थ-पादपरिच्छिण्णा,** तमवि वज्जए । **कण्ण-णासविकप्पितं,** जीसे सओट्ठउडं समुक्कंतं तं पि कण्ण-णासविकप्पितं । वयसा हि **अवि वाससतिं णारिं बंभयारी विवज्जए,** अपिसद्दा एवं संभावयति–तहागतामपि किं पुणमविगलं तरुणिं वा ॥ ५५ ॥ "णारिं [वा] सुअलंकितं ण णिज्झाए" [सुत्तं ४२२] त्ति भणितं । सरीरविभूसाए इत्थिसंसग्गादिसु य कारणेसु पैच्चवातोपदरिसणत्थं भण्णति—

४२५. विभूसा इत्थिसंसँग्गी पणीतरसभोयणं ।
णरस्सऽत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जधा ॥ ५६ ॥

४२५. **विभूसा इत्थिसंसग्गी०** [सिलोगो] । अलंकरणं **विभूसा** । **वड्ढकहा**तिकहण**मित्थिसंसग्गिं** । णेह-लवणसंभारातीहि प्रकरिसेण सुरसत्तं णीतं **पणीतरसं,** पणीतरसस्स भोगो **पणीयरसभोयणं** । **णरस्सऽत्तगवेसिस्स** अप्पणो हितगवेसिस्स, अप्पहितगवेसणेण अप्पा गविट्ठो भवति । तस्स अत्तगवेसिस्स विभूसादीणि **विसं तालउडं जधा** तालपुडसमयेण मारयतीति **तालउडं,** जधा जीवितट्ठिस्स तं अधितं एवमेताणि अत्तगवेसिणो अधियाणि ॥ ५६ ॥ जधा विभूसादीणि विसत्थाणीयाणि तहा इदमपीति भण्णति—

४२६. अंग-पच्चंग-संठाणं चारु लवित-पेहितं ।
इत्थीणं तं ण णिज्झाए कामरागविवड्ढणं ॥ ५७ ॥

४२६. **अंग-पच्चंग०** सिलोगो । **अंगाणि** हत्थादीणि, [**पच्चंगाणि**] णयण-दसणादीणि, **संठाणं** समचतुरंसादिसरीररूवं । अहवा अंग-पच्चंगाणि संठाणं **अंग-पच्चंगसंठाणं, चारु** दरिसणीयं । चारुसद्दो मज्झे ठितो उभयमवेक्खये, अंगादि पुव्वभणितं, वक्ष्यमाणं च **लवितं** भासितं समंजुलादि, **पेहितं** सौवंगं णिरिक्खणं । एतं सव्वं पि **इत्थीणं ण णिज्झाए** । जतो **कामरागविवड्ढणं** कामम्मि रागं वड्ढेति त्ति कामरागविवड्ढणं ॥ ५७ ॥ ण केवलं चक्खुगतेसु । सव्विंदिएसु चेव—

४२७. विसएसु मणुण्णेसु पेमं णाभिणिवेसए ।
अणिच्चं तेसि विण्णातं परिणामं पोग्गलाण यँ ॥ ५८ ॥

४२७. **विसएसु मणुण्णेसु०** सिलोगो । सद्दादिसु **विसएसु** मणाभिरामेसु **पेमं णाभिणिवेसए** । तधा अमणुण्णेसु वि दोसं । किं पुण हियएण अत्थं वेलंबिऊणं? इमं—**अणिच्चं तेसि विण्णातं तेसिं** इंदियविसयाण मणुण्णो अमणुण्णो वा परिणामो जतो अणिच्चो भणितो–"ते चेव सुब्भिसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, एवं दुब्भिसद्दा वि सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, एवं रूवादयो" [ज्ञाताधर्मं० श्रु० १ अ० १२ सू० ९२ पत्रं १७४] । अहवा ग्राहकविसेसेण परिणमंति, जधा–मणुण्णा वि अमणुण्णा, [अमणुण्णा] वि य मणुण्णा अधितिसमावण्णस्स । जं **कण्णसोक्खेसु सद्देसु पेमं** [सुत्तं ३९५] ति तं लेसाभिधाणमादिरंतेण सद्देति । जं **विसएसु मणुण्णेसु पेमं** ति दुम्मेहपडिबोहणत्थं फुडतरमिदं, तहिं च सोइंदियावसरो, इह चक्खुंदियावसरेण सव्विंदिगतं अतो ण पुणरुत्तं एवमिति ॥ ५८ ॥

---

१ **वयमादि अवि** मूलादर्शे ॥ २ °**सत्ता एवं** मूलादर्शे ॥ ३ प्रत्यपायोपदर्शनार्थम् ॥ ४ °**संसग्गो** हाटी० ॥ ५ **पणीयंरस**° खं १-२-३-४ जे० ॥ ६ **चारुल्लवित**° सर्वासु सूत्रप्रतिषु ॥ ७ सापाङ्गम् ॥ ८ **पेम्मं** खं ३-४ ॥ ९ **विण्णाय** अचू० विना ॥ १० उ खं ४ शु० वृद्ध० हाटी० ॥ ११ **वालिंपिऊणं** मूलादर्शे । अवलम्ब्य ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**४२८. पोग्गलाणं परिणामं तेसिं णच्चा जधा तधा ।**
**विणीयतण्हो विहरे सीत[1]भूतेण अप्पणा ॥ ५९ ॥**

४२८. **पोग्गलाणं परिणामं०** सिलोगो । रूव-रस-गंध-फरिस-सद्दमंतो अत्था **पोग्गला**, तेसिं **परिणामो** परिणती भावंतरगमणं । **तेसिं** पुव्वुद्दिट्ठाणं **णच्चा** जाणिऊणं **जधा तधा** सर्वप्रकारं **विणीयतण्हो** सद्दातिविगतविसयतिसो एवं विहरति । **सीतभूतेण सीतो** उवसंतो, जधा निसण्णो देवो, अतो **सीतभूतेण** उवसंतेण **अप्पणा** ॥ ५९ ॥ जधा णवे सद्धासमुत्थाणे विणीयतण्हो आयारप्पणिहिं पडिवज्जति तधा अपडिपडित-सद्धेण सव्वकालं भवितव्वमिति भण्णति—

**४२९. जाए सद्धाए णिक्खंतो परि[2]यायत्थाणमुत्तमं ।**
**तमेव अणुपालेज्जा गुणे आयरिय[3]सम्मते ॥ ६० ॥**

४२९. **जाए सद्धाए निक्खंतो०** सिलोगो । **जाए** त्ति निक्खमणसमकालं भण्णति, **सद्धा** धम्मे आयरो, **निक्खंतो** धम्मं पुरतो काऊणं जं घरातो निग्गतो । **परियाओ** पव्वज्जा सें एव मोक्खसाहणभावेण **थाणमुत्तमं** । **तमेवेति** तं सद्धं पव्वज्जासमकालिणिं **अणुपालेज्जा**, पच्छादपि, सा य मूलगुण-उत्तरगुणाणु-पालणेण पालिता भवति अतो **गुणे आयरियसम्मते** गुणे अणुपालेज्जा **[आयरिया]** सामिणो तित्थकर-गणधराद्यो तेसिं सम्मता इट्ठा ॥ ६० ॥ तस्स मूलुत्तरगुणाणुपालणलक्खणस्स आयारप्पणिधिस्सेमं फलं—

**४३०. तवं[6] चिमं संजमजोगयं च, सज्झायजोगं च सदा अधिट्ठए ।**
**सूरो व सेणाए समत्त[7]मायुधी, अलमप्पणो होति अलं परेसिं ॥ ६१ ॥**

४३०. **तवं चिमं संजम०** वृत्तम् । **तवं** अणसणादिकं बारसभेदं, **इमम्मि** त्ति इमम्मि सासणे उपदिट्ठं, ण बालतवं, सत्तरसविधं **संजमजोगं च सज्झायजोगं च सदा अधिट्ठए** । बारसविहे तवे अंतग्गतो वि सज्झायजोगो पुणो विसेसेण भण्णति पाधण्णातो, जधा—साधुणो आगता सयं खमासमणा य, साधुभावे समाणे वि पाधण्णेण खमासमणाण विसेसेणं संभवति । अवि य—

बारसविधम्मि वि तवे सब्भिंतर-बाहिरे कुसलदिट्ठे ।
ण वि अत्थि ण वि य होही सज्झायसमं तवोकम्मं ॥ १ ॥ [कल्पभाष्ये गा० ११६९]

निदरिसणं भण्णति—स एवमधिट्ठयं **सूरो व सेणाए समत्तमायुधी, सूरो** विक्रान्तः, **इव**सद्दो उवमाए, **सूरे इव सेणाए** सेणा वाहिणी, तीए परिवुडो पंच वि आउधाणि सुविदिताणि जस्स सो **समत्तमायुधी** । एवं सो सेणाए मज्झे समत्तमायुधी होंतो **अलमप्पणो** पज्जत्तो रक्खणातिसु । एवंगुणो **अलं परेसिमवि** रक्खणादावेव । अहवा **अलं परेसिं, पर**सद्दो एत्थ सत्तूसु वट्टति, **अलं**सद्दो विधारणे, सो **अलं परेसिं** धारणसमत्थो सत्तूण ॥ ६१ ॥ तस्सेवं तव-संजम-सज्झायजोगमधिट्ठमाणस्स—

---

१ **सीईभू**° खं २ शु० वृद्ध० हाटी० । **सीयभू**° खं १-२-४ जे० ॥ २ °**यायट्ठाण**° शु० वृद्ध० । °**याएट्ठाण** खं १-२-३-४ जे० ॥ ३ °**सम्मतं** हारि० वृत्तौ पाठान्तरम् ॥ ४ **स इव** मूलादर्शे ॥ ५ "**तमेव परियायट्ठाणमणुपालेज्जा,** तं च परियायट्ठाणं मूलगुणा उत्तरगुणा य, ते गुणे अणुपालेजा **आयरियसम्मओ** त्ति **आयरिया** नाम तित्थकर-गणधराई, तेसिं **सम्मए** नाम सम्मओ त्ति वा अणुमओ त्ति वा एगट्ठा ॥" इति **वृद्धविवरणे** । "**तामेव**' श्रद्धामप्रतिपतिततया प्रवर्द्धमानामनुपालयेद् यत्नेन । क्व ? इत्याह—'**गुणेषु**' मूलगुणादिलक्षणेषु '**आचार्यसम्मतेषु**' तीर्थंकरादिबहुमतेषु । **अन्ये** तु श्रद्धाविशेषणमेतदिति व्याचक्षते—'**तामेव**' श्रद्धामनुपालयेद् गुणेषु, किम्भूताम् ? आचार्यसम्मताम्, न तु स्वाग्रहकलङ्कितामिति सूत्रार्थः ।" इति **हारि० वृत्तौ** ॥ ६ **तवं तिमं** खं ४ ॥ ७ °**माउहे, अ**° खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी० । °**मायुधे, अ**° वृद्ध० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३१. सज्झाय-सज्झाणरतस्स तातिणो, अपावभावस्स तवे रयस्स ।
विसुज्झती जं से रयं पुरेकडं, समीरियं रुप्पमलं व जोतिणा ॥ ६२ ॥

४३१. **सज्झाय-सज्झाणरयस्स०** वृत्तम् । **सज्झाये** पंचविहे **सज्झाणे** धम्म-सुक्के रतस्स **सज्झाय-सज्झाणरतस्स** । **तातिणो** पुव्वभणितस्स । **पावो** दुट्ठो भावो, अपावो भावो जस्स सो **अपावभावो**, तस्स **अपावभावस्स, तवे रयस्स** । तस्सेवंविधस्स सतो **विसुज्झती जं से रयं पुरेकडं, विसुज्झती**-ति विगच्छति, **रयो** मलो पावमुच्यते, तं तस्स रयो पुरेकडं तव-सज्झायजोगेण विसुज्झति, संजमतो णवं ण वज्झति । कहं विसुज्झति? एत्थ दिट्ठंतो–**समीरियं रुप्पमलं व जोतिणा**, सं ईरियं **समीरियं** खित्तं, **रुप्पं** सुवण्णं रययं वा, तस्स मलो **रुप्पमलो** । जधा रुप्पमलो धम्ममाणमग्गिणा समुदीरियं विगच्छति एवं तस्स भगवतो अपावभावस्स पुव्वकडं रजो विसुज्झति ॥ ६२ ॥ तस्सेवं पुव्ववण्णियायारपणिधिसमाधिजोगजुत्तस्स रजसि विसुद्धे किमवत्थंतरं संभवति ? इति, भण्णति —

४३२. से तारिसे दुक्खसहे जितिंदिए, सुतेण जुत्ते अममे अकिंचणे ।
विसुज्झती पुव्वकडेण कम्मुणा, कसिणब्भपुडावगमे व चंदिम ॥ ६३ ॥
त्ति बेमि[3] ॥

॥ आयारपणिही नामऽज्झयणं अट्ठमं समत्तं ॥ ८ ॥

४३२. **से तारिसे दुक्खसहे जितिंदिए०** वृत्तम् । **से** इति जस्स तं विसुज्झति जं से रतं पुरेकडं **तारिसे** इति जहोववण्णितगुणो **दुक्खं** सारीर-माणसं सहतीति **दुक्खसहो** । जितसोतादिइंदियो **जितिंदियो** । दुवालसंगेण सुतनाणेण **सुतेणं** । णिम्ममत्ते **अममे** । दव्वकिंचणं हिरण्यादि, भावकिंचणं तग्गतो लोभो, तं किंचणं जस्स णत्थि सो **अकिंचणो** । **विसुज्झती पुव्वकडेण कम्मुणा, विसुज्झति** विमुच्चति **पुव्वकडेण** पुव्वनिबद्धेण अट्ठविहेण णाणावरणादिणा **कम्मुणा** । जं पुव्वभणितं "**विसुज्झती जं से रयं पुरेकडं**" [सुत्तं ४३१] इमस्स य एस विसेसो–तत्थ दव्वकम्मस्स रजसो, विसेस(से)णं तं अवगच्छति विसुज्झति, इह पु(?त)व्विरहितस्स तस्स भगवतो पुव्वकतकम्मविरहितो परमविसुद्धप्पा एवं सोभते–**कसिणब्भपुडावगमे व चंदिमा, कसिणं** असेसं **अब्भस्स पुडं** वलाहतादि, कसिणस्स अब्भपुडस्स अवगमो **कसिणब्भपुडावगमो** हिम-रजो-तुसार-धूमिगादीण वि अवगमो, एवं कसिणब्भपुडावगमे व **चंदिमा** चन्द्रमा, जधा सरदि विगतघणे णभसि संपुण्णमंडलो ससी शोभते तधा सो भगवं ॥ ६३ ॥ **बेमि** त्ति तधेव । णता य ॥

आयारे पणिधाणं करणीयं सो य वण्णितो बहुधा ।
आयारप्पणिधीये अज्झयणत्थो समासेण ॥ १ ॥

॥ **अत्थसमासतो आयारप्पणिधी समत्ता** ॥ ८ ॥

---

१ **जं सि मलं पुरे°** अचू० विना । **से** शु० ॥ २ **विमुच्चती पुव्वकडेण कम्मुणा, कसिण°** वृद्ध० । **विरायई कम्मघणम्मि अवगए, कसिण°** सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव० च ॥ ३ एतदनन्तरम्–**तेवट्ठि सुत्ताइं गाथामाणेण संखियं । आयारप्पणिही नाम अट्ठमऽज्झयणं तु सम्मत्तं ॥ १ ॥** इति खं ३ ॥ ४ **धम्मत्थकामा सम्मत्ता** ॥ इति पुष्पिका जे० ॥ ५ **अधिगमो** मूलादर्शे ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९

## [णवमं विणयसमाहिअज्झयणं]

### [पढमो उद्देसओ]

आयारप्पणिधाणवता उवदेसोवलंभहेतुब्भूतो सव्वपयत्तेण विणएव ताव जाणितव्वो, णातूण य विणयारुहेसु पउंजियव्वो–त्ति एतेणाभिसंबंधेणाऽऽततस्स अज्झयणस्स चत्तारि अणिओगद्दारा जधा **आवस्सए**। णवरं णामणिप्फण्णे विणयसमाधी। विणयो समाधी य दो पदा। तं०—

**विणयस्स समाधीय य दोण्ह वि निक्खेवतो चउक्को य।**
**दव्वविणयम्मि तिणिसो सुवण्णमिवादिदव्वाणि ॥ १ ॥ २१० ॥**

**विणयस्स समाधीय य दोण्ह वि निक्खेवतो चउक्को य।** तत्थ विणयस्स ताव चउक्कनिक्खेवो भण्णति–णाम-ट्ठवणा-दव्व-भावविणयो त्ति। णाम-ट्ठवणातो गतातो। दव्वे **दव्वविणयम्मि तिणिसो,** दव्वस्स इच्छितपरिणामजोग्गता दव्वविणयो, जधा तिणिसस्स इच्छितरहंगपरिणामणं, **सुवण्णादीण** वा कुण्डलादिपरिणतिखमया दव्वविणयो ॥ १ ॥ २१० ॥ भावविणयो पंचविहो इमाए गाहाए भण्णति। तं०—

**लोगोवयारविणयो १ अत्थणिमित्तं २ च कामहेउं ३ च।**
**भयविणय ४ मोक्खविणयो ५ विणयो खलु पंचहा होइ ॥ २ ॥ २११ ॥**

**लोगोवयारविणयो॰** गाधा। भावविणयो पंचविहो, तं०–लोगोवयारविणयो १ अत्थविणयो २ कामविणयो ३ भयविणयो ४ मोक्खविणयो ५ ॥ २ ॥ २११ ॥ तत्थायं लोगोवयारविणयो। तं०—

**अब्भुट्ठाणं अंजलि आसणदाणं च अतिधिपूया य।**
**लोगोवयारविणयो देवतपूया य विभवेणं ॥ ३ ॥ २१२ ॥**

**अब्भुट्ठाणं अंजलि॰** गाहा। अब्भुट्ठाणारिहस्साऽऽगतस्साभिमुहमुट्ठाणम**ब्भुट्ठाणं**। उट्ठितेणाणुट्ठितेण वा **अंजलिकरणं**। जधारुहमासणस्स दाण**मासणदाणं**। अतिधिस्स एगाधिकाति सत्तितो पूयण**मतिधिपूया**। इह देवताविसेसस्स **बलि-वैसदेवादि[स्स]** विभवाणुरूवं पूयणं **देवतपूया**। एस **लोगोवयारविणयो** ॥ ३ ॥ २१२ ॥

अत्थविणयो पुण—

**अब्भासवित्ति छंदाणुवत्तणं देस-कालदाणं च।**
**अब्भुट्ठाणं अंजलि आसणदाणं च अत्थकते ॥ ४ ॥ २१३ ॥**

**अब्भासवित्ति छंदाणुवत्तणं॰** गाहा। अत्थनिमित्तं रायादीण विणयकरणं **अत्थविणयो**। **अब्भासं** आसण्णं, तम्मि वत्तण**मब्भासवित्ती,** जधा रायादीण अत्थत्थं किंकरा आणत्तियापडिच्छणत्थमच्छंति। अभिप्पायो **छंदो,** तस्साणुवत्तणं **छंदाणुवत्तणं**।

१ °माहीए णिक्खेवो होइ दोण्ह वि चउक्को। दव्व° खं० वी० पु० सा०। °माहीएस्थाने °माहीय य खं० ॥ २ °मिखेवमाईणि सा० ॥ ३ वा जुण्हला° मूलादर्शे ॥ ४ मुक्ख° वी० पु० सा० ॥ ५ °त्तणा दे° खं० वी० पु० ॥ ६ अत्थनिवत्तं मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंदाणुवत्तिणो समक्खं रण्णा भणितं-अवदव्वं वार्तिगणार्ति। तेण भणितं-छड्डुणत्थमेतेसिं वेंटार्ति। अण्णदा केणति कहापसंगेण रण्णाऽभिधितं-विसिट्टं सालणगं वार्तिगणं। छंदाणुवत्तिणा भणितं-रायं! एते अहड्डा लावगा एवमादि।

**देसकाल-दाणं** जं सुट्ठु अत्थित्ते सति। जं पि ओलग्गगादीसरादीण **अब्भुट्ठाणं** करेंति। **एवमंजलि-**कम्ममवि जो देव० त्ति करेंति। **आसणदाणं** पि उवविसणकाले। एताणि अब्भासवत्तियादीणि अत्थनिमित्तं जं करेंति एस अत्थविणयो॥ ४॥ २१३॥ कामविणओ भयविणओ य इमेण गाहापुव्वद्धेण भण्णति—

**एमेव कामविणयो भये य णेयव्वो आणुपुव्वीए।**

**एमेव कामविणयो०** अद्धगाहा। जधा अत्थनिमित्तमब्भासवत्तिमादीणि करेंति तहा कामनिमित्तं भय-निमित्तं च। तत्थ कामनिमित्तमित्थीणं अब्भासवत्तणं करेंति, जतो वलिसमाणधम्माओ इत्थीओ आसण्णमणुगच्छंति। तधा "माधुज्जेण हीरति महिलाजणो" ति छंदाणुवत्तणं। देस-कालदाणमवि वेसादिसु। अब्भुट्ठाण-अंजलिपग्गह-आसण-दाणेहिं उवयारहरणीयो गणिकाजणो हीरति। तधा भयविणएण दासप्पभितयो अब्भासवत्तिमाति करेंति। कामविणयो भयविणओ य भणितो। मोक्खविणयो इमो। तं०—

**मोक्खम्मि वि पंचविधो परूवणा तस्सिमा होति॥ ५॥ २१४॥**

**मोक्खम्मि वि पंचविधो०** गाहापच्छद्धं। पंचविहो मोक्खविणयो। **तस्स इमा परूवणा॥ ५॥** २१४॥ तं०—

**दंसण १ नाण २ चरित्ते ३ तवे ४ य तह ओवयारिए ५ चेव।**
**एसो उ मोक्खविणयो पंचविहो होइ णायव्वो॥ ६॥ २१५॥**

**दंसण नाण चरित्ते०** गाधा। **पंचविहो मोक्खविणयो,** तं०—नाणविणयो १ दंसणविणयो २ चरित्तविणयो ३ तवविणयो ४ ओवयारियविणयो ५ ति॥ ६॥ २१५॥ 'णादंसणिस्स णाणं चरित्तं च भवति' इति दंसणविणयो पुव्वं भण्णति—

**दव्वाण सव्वभावा उवदिट्ठा जे जहा जिणवरेहिं।**
**ते तह सद्दहति णरो दंसणविणयो भवति तम्हा॥ ७॥ २१६॥**

**दव्वाण सव्वभावा०** गाहा। दव्वा दुविहा-जीवदव्वा अजीवदव्वा य। तेसिं **दव्वाण सव्वभावा,** सव्वभावा पुण सव्वपज्जाया, ते दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो **जे** [जहा] जेण प्रकारेण **जिणवरेहिं उवदिट्ठा ते तह सद्दहति** जम्हा **णरो दंसणविणयो भवति तम्हा॥** ७॥ २१६॥ नाणविणयो इमो—

**नाणं सिक्खति नाणं गुणेति णाणेण कुणति किच्चाणि।**
**नाणी णवं ण बंधति नाणविणीयो भवति तम्हा॥ ८॥ २१७॥**

**नाणं सिक्खति०** गाधा। जं नाणं पुव्वमधीते एवं **णाणं सिक्खति। नाणं गुणेति** जं सिक्खिय-मब्भसति। **णाणेण कुणति किच्चाणि** संजमाधिकारिकाणि। **नाणी** नाणोवउत्तो अट्ठविधं कम्मं **णवं ण बंधति,** जतो पोराणं च णाणप्पभावेण निज्जरेति। **नाणविणीयो भवति तम्हा॥** ८॥ २१७॥ चरित्तविणओ पुण—

१ णेयव्वमाणु° खं०॥ २ °महासवत्ति° मूलादर्शे॥ ३ पंचविधो विणओ खलु होइ नायव्वो खं०॥

Jain Education International  For Private & Personal Use Only  www.jainelibrary.org

**अट्ठविधं कम्मचयं जम्हा रित्तं करेति जयमाणो।**
**णवमण्णं च ण बंधति चरित्तविणयो भवति तम्हा ॥ ९ ॥ २१८ ॥**

**अट्ठविधं कम्मचयं॰** गाधा। अट्ठप्रकारमट्ठविधं, कम्मस्स चयो **कम्मचयो**, तं **जम्हा रित्तं करेति**। कहं व रित्तं करेति? णणु जीवं तदपकरिसेण रित्तं करेति? भण्णति–उभतगतं रेयणं, आधारगतमाधेयगतं च, जधा घडं रेचयति पाणियं रेयेति। चरित्ते जयमाणो **णवं च अण्णं ण बंधति। चरित्तमेव [चरित्तविणयो] भवति तम्हा** ॥ ९ ॥ २१८ ॥ इमो तवविणयो। तं०—

**अवणेति तवेण तमं उवणेति यं मोक्खमग्गमप्पाणं।**
**तव-णियमणिच्छितमती तवोविणीयो भवति तम्हा ॥ १० ॥ २१९ ॥**

**अवणेति॰** गाहा। **अवणेति** जीवातो फेडेति **तवेण** बारसविधेण **तमं** अविण्णाणं। **उवणेति य** समीवेणं णेति य **मोक्खमग्गमप्पाणं। तव-णियमणिच्छितमती**, एस **तवोविणीयो भवति तम्हा** ॥ १० ॥ २१९ ॥ उवयारविणयो भण्णति—

**अध ओवगारिओ पुण दुविधो विणओ समासतो होति।**
**पडिरूवजोगजुंजणओऽणच्चासातणाविणओ ॥ ११ ॥ २२० ॥**

**अध ओवगारिओ पुण॰** गाधा। अधसद्दो अणंतरे, तवविणयातो अणंतरं ओवयारियो। सो य दुविहो–**पडिरूवजोगजुंजणा**विणयो **अणच्चासातणाविणओ** य ॥ ११ ॥ २२० ॥ तत्थ पडिरूवजोगजुंजणाविणयो, तं०—

**पडिरूवो खलु विणयो कायियजोगे १ य वाय २ माणसिओ ३।**
**अट्ठ चउव्विह दुविहो परूवणा तस्सिमा होति ॥ १२ ॥ २२१ ॥**

**पडिरूवो खलु विणयो॰** [गाधा]। पडिरूवविणयो तिविहो, तं०—कायियो १ वायियो २ माणसियो ३। तत्थ कायियो अट्ठविधो, वायियो चतुव्विहो, माणसिओ दुविहो। एतस्स तिविहस्स वि **परूवणा इमा होति** ॥ १२ ॥ २२१ ॥ काइयस्स ताव परूवणा इमा—

**अब्भुट्ठाणं १ अंजलि २ आसणदाणं ३ अभिग्गह ४ किती ५ य।**
**सुस्सूसण ६ मणुगच्छण ७ संसाधण ८ काय अट्ठविहो ॥ १३ ॥ २२२ ॥**

**अब्भुट्ठाणं अंजलि॰** गाहा। सो इमो अट्ठविहो कायियविणयो, तं०—अब्भुट्ठाणं १ अंजलि २ आसणदाणं ३ अभिग्गहो ४ कितिकम्मं ५ सुस्सूसणा ६ अणुगच्छणा ७ संसाहण ८ त्ति। अभिमुहमागच्छंतस्स उट्ठाण**मब्भुट्ठाणं** १। हत्थुस्सेहकरण**मंजली** २। कट्ठ-पीढ-कप्पातिदाण**मासणदाणं** ३। आयरियादीण भत्ताणयणातिवत्थुस्स नियमग्गहण**मभिग्गहो** ४। वंदणं **कितिकम्मं** ५। ठितस्स णातिदूरे ठितेणं पज्जुवासणं **सुस्सूसणा** ६। आगच्छंतस्स पच्चुग्गच्छण**मणुगच्छणं** ७। गच्छमाणस्साणुव्वयणं **संसाधणा** ८। एस कायिगो ॥ १३ ॥ २२२ ॥ वायिगो पुण—

---

१ **रित्तीकरेति** खं० ॥ २ **णवमं(?गं) चेव ण** खं० ॥ ३ **य सग्ग-मोक्खमप्पाणं** खं० वी० मु० पु० हाटी० ॥ ४ °**मणिच्छियम**° वी० मु० हाटी० ॥ ५ **अह ओवयारिओ** खं० वी० पु० मु० ॥ ६ °**ण तह य अणासायणा**° खं० मु०। °**ण तहेव अणसायणा**° वी० ॥ ७ **अण ओवरियायो। सो** मूलादर्शे ॥ ८ **अणिग्घा**° मूलादर्शे ॥ ९ **अणुग**° वी० ॥ १० **सुस्सणा** मूलादर्शे ॥ ११ **सुस्सा। आग**° मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**हित १ मित २ अफरुसंभासी ३ अणुवीतीभासि ४ वाथियो विणओ।**

**हित-मित०** अद्धगाहा। हितभासी १ मितभासी २ अफरुसभासी ३ अणुवीतिभासी ४। जं आयरियादि अपच्छभोजणादिनिवारणं करेंति एतं इहलोगहितं, सीतंतरस चोयणा परलोगहितं १। तं चेव परिमितमणुबसदं च मितं २। तं चेव सामपुव्वं 'वरं सि मया णिद्धेण भणितो, ण परेण' इति सिणेहपुव्वमुल्लावितो अफरुसवायी ३। देस-कालादिमणुचिंतिय भासमाणो अणुवीतिभासी ४। एस वाथिको। मणविणयो पुण—

**अकुसलमणोनिरोहो १ कुसलमणउदीरणा २ चेव ॥ १४ ॥ २२३ ॥**

**अकुसल०** गाहापच्छद्धं। अकुसलमणनिरोहो १ कुसलमणउदीरणं २ च। दुविहो माणसियो ॥ १४ ॥ २२३ ॥ सव्वो वि एस—

**पडिरूवो खलु विणयो पराणुवत्तीपरो मुणेयव्वो।**
**अप्पडिरूवो विणयो णायव्वो केवलीणं तु ॥ १५ ॥ २२४ ॥**

**पडिरूवो०** गाधा। जधावत्थुअणुरूवो पडिरूवविणयो अब्भुट्ठाणादि **पराणुवत्तीपरो** छदुमत्थाण। पराणुवत्तिविरहिताण अप्पडिरूवो विणयो केवलीणं। पराणुवत्ती पुण पुव्वपवत्तं अणाभिण्णा ण हावेंति, णाता पुण ण करेंति ॥ १५ ॥ २२४ ॥ अतिक्कंतपच्चवमरिसणेण पुणो उवदंसिज्जति—

**एसो भे परिकहितो विणयो पडिरूवलक्खणो तिविधो।**
**बावण्णविधिविधाणं बेंतऽणचासातणाविणयं ॥ १६ ॥ २२५ ॥**

**एसो भे परि०** गाहा। एसो जोऽणुक्कंतो **परिकहितो पडिरूवलक्खणो [तिविधो] विणयो। अणचासातणाविणयं** पुण **बावण्णविधिविधाणं** तित्थगरा भगवंतो बावण्णं(ण्णविहं) **बेंति** कहयंति ॥ १६ ॥ २२५ ॥

ते बावण्णभेदा इमेहिं तेरसहिं [पदेहिं]—

**तित्थकर १ सिद्ध २ कुल ३ गण ४ संघ ५ किरिय ६ धम्म ७ नाण ८ नाणीणं ९।**
**आयरिय १० थेरु ११ वज्झाय १२ गणीणं १३ तेरस पदाणि ॥ १७ ॥ २२६ ॥**

**तित्थकर-सिद्ध-कुल०** गाहा। तित्थकरा १ सिद्धा २ कुलं ३ गणो ४ संघो ५, किरिया—अत्थित्तं, तं० 'अत्थि जीवा' एवमादि ६, धम्मो ७ नाणं ८ नाणी ९ आयरिया १० थेरा ११ उवज्झाया १२ गणी १३। एतेसिं तित्थकरादीणं गणिपज्जवसाणाणं तेरसण्हं पदाणं [अणासातणा-]भत्तिमादीणि चत्तारि कारणाणि अणच्चासातणाविणयो बावण्णविहो भवति ॥ १७ ॥ २२६ ॥ ते य [अणासातणा-] भत्तिमादी इमे—

**अणसातणा १ य भत्ती २ बहुमाणो ३ तह य वण्णसंजलणा ४।**
**तित्थगरादी तेरस चतुग्गुणा होंति बावण्णा ॥ १८ ॥ २२७ ॥**

**अणसातणा य भत्ती०** गाधा। **अणासातणा १ भत्ती २ बहुमाणो ३ वण्णसंजलणा ४।** एतेहिं चउहिं कारणेहिं बावण्णा भवति। तं०—तित्थगराणं अणासातणा जाव गणीणं, एको तेरसतो अणच्चासातणाए गतो १। भत्ती भण्णति तं०—तित्थकराणं भत्ती जाव गणीणं बितिओ तेरसओ, दो वि मिलिता छव्वीसा २। बहुमाणे वि तेरस चेव, तं०—तित्थगरेसु बहुमाणो जाव गणीसु ततियो तेरसतो, छव्वीसाए मेलितो जाता एगूण-

१ °सवाई अणु खं० वी० पु० मु० हाटी० ॥ २ एतं हितलोग° मूलादर्शे ॥ ३ °लचित्तणि° वी० मु० ॥ ४ °णुवित्तीमओ मु° खं०। °णुवत्तिमइओ मु° वी०। °णुअत्तिमइओ मु° मु० ॥ ५ बेंति अणासात° खं० वी० पु० मु० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चत्तालीसा ३। वण्णसंजलणाए वि तेरस चेव, **वण्णसंजलणा** गुणुक्कित्तणा, तित्थकराण वण्णसंजलणा जाव गणीणं, पुव्विल्ला एगूणचत्तालीसा एते य तेरस, एसा बावण्णा ४ ॥ १८ ॥ २२७ ॥ अणच्चासातणाविणयो समत्तो, ओवयारियविणओ य समत्तो, मोक्खविणयो य समत्तो, समत्तो विणयो। समाधी भण्णति—सा चउव्विधा। णाम-ट्ठवणातो गतातो। दव्वसमाही पुण—

**दव्वं जेण व दव्वेण समाधी आधितं च जं दव्वं।**

**दव्वं जेण व दव्वेण०** अद्धगाथा। दव्वसमाधी समाधिमत्तादि, **जेण दव्वेण** भुत्तेण **समाधी** भवति, आधियव्वं **जं दव्वं आधितं** समारोवितं, जेण दव्वेण तुलारोवितेण [ण] क्वतो वि णमति समतुलं भवति सा दव्वसमाधी। भावसमाधी पुण इमेण गाधापच्छद्धेण भण्णति—

**भावसमाधि चउव्विध दंसण १ नाणे २ तव ३ चरित्ते ४ ॥ १९ ॥ २२८ ॥**

**॥ विणयसमाहीए णिज्जुत्ती सम्मत्ता ॥**

**भावसमाधि०** अद्धगाहा। चतुव्विहा भावसमाधी, तं०—दंसणसमाधी १ नाणसमाधी २ तवसमाधी ३ चरित्तसमाधि ४ त्ति ॥ १९ ॥ २२८ ॥ नामनिप्फण्णो गतो। सुत्तालावगनिप्फण्णे सुत्तमुच्चारेतव्वं, जहा **अणुओगद्दारे**। तं च सुत्तं इमं, तं०—

४३३. थंभा व कोधा व मय प्पमादा, गुरूण सगासे विणयं ण चिट्ठे।
सो चेव तू तस्स अभूतिभावो, फलं व कीयस्स वहाय होति ॥ १ ॥

**४३३. थंभा व कोधा व०** वृत्तम्। थंभणं **थंभो** अभिमाणो गव्वो, सो य जातियातीहिं संभवति, ततो **थंभातो** 'उत्तमजातीओ ह'मिति जो **गुरूणं सकासे विणयं न चिट्ठे। कोहा वा** रोसेण वा विणयं ण चिट्ठेज्ज। **मय** इति मायातो, एत्थ **आयारस्स** ह्रस्सता, सरहस्सता य **लक्खणविज्जए(?विचए)** अत्थि, जधा "ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य" [पा० १।२।४७], पागते विसेसेण, जधा एत्थेव **वासद्दस्स**, एवं मायाए वि गिलाणलक्खेण अब्भुट्ठाणाति गुरूण ण करेति। **पमायादिति** सव्वप्पमादमूलमिति लोभ एवाभिसंबज्झति, अप्पणो लाभमाकंखमाणो **गुरूण सगासे विणयं ण चिट्ठे**, इंदिय-निद्दा-मज्जादिप्पमादेण वा। **वासद्दो** विकप्प-समुच्चयार्थः, एतेसिमेगतरेण दोहिं समुदिएहिं वा **गुरूणं सगासे विणये ण चिट्ठे** विणए ण ट्ठाति दुविहे आसेवण-सिक्खाविणए। **सो चेव तू तस्स अभूतिभावो, सो** इति सो अविणयो, भूतिभावो रिद्धी, भूतीए अभावो **अभूतिभावो, तस्स** अविणीयस्स स एवाविणयो अभूतिभावो। अभूतिभावो अभूतिभदणं। जधा कस्स किमभूतिभावः? इति, दिट्ठंतो भण्णति—**फलं व कीयस्स वहाय होति, कीयो** वंसो, सो य फलेण सुक्खति। उक्तं च—

पक्षाः पिपीलिकानां, फलानि तल-कदलि-वंशपत्राणाम्। ऐश्वर्यं चाविदुषामुत्पद्यन्ते विनाशाय ॥ १ ॥

[ ]

जधा कीयस्स फलमेव[म]विणयो तस्स अविणीयस्स अभूतिभाव इति ॥ १ ॥ एवमातगतेहिं समुक्करिसकारणे[हिं] अविणीयो भवति। जधा पुण परगतेहिं परिभवकारणेहिं गुरुसगासे विणए ण चिट्ठे तधा भण्णति—

१ **वुत्तेण** मूलादर्शे ॥ २ **गुरुस्सगासे** खं० १-२-३-४ जे० शु० ॥ ३ **विणए** अवपा० वृद्ध० ॥ ४ **ण सिक्खे** खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी० अव० । **ण चिट्ठे** हाटीपा० अवपा० ॥ ५ **ऊ** खं १-२-३ । **ओ तस्स** खं ४ जे० शु० ॥ ६ **पराते** मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३४. जे यावि मंदे त्ति गुरुं विदित्ता, डहरे इमे अप्पसुते त्ति णच्चा।
हीलेंति मिच्छं पडिवज्जमाणा, करेंति आसातण ते गुरूणं ॥ २ ॥

**४३४. जे यावि मंदे त्ति गुरुं०** वृत्तम्। **जे** इति सामण्णवयणं। चसद्दो पुव्वभणिताणुकरिसणे। **अविसद्दो** संभावणे। जति ताव अतुक्करिसणमतमभूतिभावो परपरिभवो सुट्टुतरमभूतिभावो। मंदो चतुव्विहो। [दव्वमंदो दुविहो–] उवचए [अवचए] य। तत्थ उवचये जधा **मरट्ठाण** थूलसरीरो मंदो, अवचये पुण तणुयसरीरो मंदो। भावमंदो वि दुविहो–उवचये अवचए य। अवचये जस्स थूला बुद्धी सो मंदबुद्धी, उवचये पुण सण्हा बुद्धी। एत्थ [दव्व-]भावेहिं अविकारो, सेसा उच्चारितसरिस त्ति परूविता। 'आयरियलक्खणोववेयो' त्ति गुरुपदे थावितो मंद [?दो] बुद्धीए कहंचि वा सरीरेण तं **हीलेंति** हेपयंति अहियालेंति **मिच्छं** असच्चं उवदेसादण्णधा पडिवज्जंता सूताए–अवदेसेण जधा—जति अम्हे वि एवंबुद्धिसंपण्णा होंता तो भणंता, असूताए–फुडमेव—किं तुब्भ मंदबुद्धीण उल्लावितेण ?। डहरं वयसोपकमेव सूताए–किं अम्हं चेडरूवाण भणितेणं ?, असूताए वि–बालो ताव तुमं, किं ते भणितेणं ?। एवऽप्पसुतमवि ते हीलेंता **करेंति आसातण०। आसातणं** पुण गुरुतस्स निज्जराआयस्स **सातणं** अधिक्खिवणं गुरुगुणसातणं तं करेंति ॥ २ ॥ **मिच्छं पडिवज्जमाणा करेंति आसातण**मिति भणितं। को पुण गुरूण [विणए] गुणो आसातणे वा दोसो जतो तदासातणं परिहरितव्वमिति ? भण्णति—

४३५. पगतीए मंदा वि भवंति एगे, डहरा वि य जे सुत-बुद्धोववेता।
आयारमंता गुणसुट्ठितप्पा, जे हीलिता सिहिरिव भास कुज्जा ॥ ३ ॥

**४३५. पगतीए मंदा०** वृत्तम्। स्वभावो **पगती,** तीए **मंदा वि** णातिवायाला उवसंता **एगे** केति। तधा **डहरा वि [जे] सुत-बुद्धोववेता,** जति वि डहरा वयसा तहावि बहुसुता पंडिता। एवं **आयारमंता** णाणातिणा आयारेण संगहोवग्गहादि**गुणसुट्ठितप्पाणो।** निदरिसणं–जे **हीलिता सिहिरिव भास कुज्जा, सिही** अग्गी तेण तुल्ला, जधा सो समुज्जलितो महंतमवि तण-कट्ठरासी छारीकरेति एवं ते हीलिता भासं कातुं समत्था, अतो ण हीलेज्जा ॥ ३ ॥ भणितो आसातणपच्चवातो। तमेव पुणो वंतोविसेसेण दिट्ठंतगं दरिसंतेहिं भण्णति—

४३६. जे यावि णागं डहरे ति णच्चा, आसादए सो अहिताय होति।
एवाऽऽयरियं पि हु हीलयंतो, णिगच्छती जाति-वधं खु मंदे ॥ ४ ॥

**४३६. जे यावि णागं [डहरे] ति०** वृत्तम्। **जे** इति अनिद्दिट्ठस्स वयणं। **चसद्दो** पुव्वभणितसमुच्चये। **अविसद्दो** 'किमुत महल्लं ?' इति संभावणे। **णागो** सप्पो तं **आसादए** परिभवंतो अंगुलिविघट्टणादिहिं। **सो** णागो तस्सेवमासादेंतस्स समुदीरितरोसविसो डसंतो मारणातिअ**हिताय** संभवति। जधा तं **एवाऽऽयरियं पि हु हीलयंतो णिगच्छति जाति-वधं** जाती–समुप्पत्ती वधो–मरणं, जम्म-मरणाणि णिगच्छति, **अधवा "जातिपधं"** जातिमग्गं–संसारं। **खु** इति अवधारणे, जधा एतं खु ते अवत्थं एवमयं पच्चवातावधारणे, एवमायरियं पि हु अयमवि खु मंद इति बुद्धिहीणो ॥ ४ ॥ डहरणागासातणातो इमं गुरुतरं गुरूणमासातणं ति दरिसंतेहिं भण्णति—

१ **मंद त्ति** जे० शु० ॥ २ सूचया इत्यर्थः ॥ ३ असूचया इत्यर्थः ॥ ४ गुरुकस्य निर्जराऽऽयस्य ॥ ५ **पगतीय** जे० वृद्ध० ॥ ६ वयोविशेषेण ॥ ७ **डहरं ति ण°** खं ३ शु० ॥ ८ **आसायए से अ°** अचू० विना ॥ ९ **नियच्छई** अचू० विना ॥ १० **जातिपहं** अचू० विना। **जातिपधं** अचूपा० ॥ ११ **अद्दिट्ठस्स वयणं** मूलादर्शे ॥ १२ **णागो अप्पेतं** मूलादर्शे ॥ १३ **गुरुसमा°** मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३७. आसीविसो यावि परं सुरुट्ठो, किं जीतंणासातो परं नु कुज्जा ? ।
आयरियपादा पुण अप्पसण्णा, अबोधि आसातण नत्थि मोक्खो ॥ ५ ॥

४३७. **आसीविसो यावि०** वृत्तम् । आसीविससप्पस्स दाढा **आसी**, तीए विसं जस्स सो **आसीविसो**, स चावि पधाणं रोसत्थाणं सुट्ठु गतो **परं सुरुट्ठो किं जीतणासातो परं नु कुज्जा ?** जीतणासातो अण्णं ण किंचि वि काउं समत्थो । **आयरियपादा पुण अप्पसण्णा अबोधिआसातणे** सति, अबोहितो य **नत्थि मोक्खो**, दिक्खाविफलता य एवं ॥ ५ ॥ 'णागासायणातो आयरियासातणं पावं' ति समत्थितं । सिहिणिदरिसणातो वि पावतरमिति समत्थयंतेहिं भण्णति—

४३८. जो पावकं जलितमवक्कमेज्जा, आसीविसं वा वि हु कोवएज्जा ।
जो वा विसं खातति जीवितट्ठी, एसोवमाऽऽसातणता गुरूणं ॥ ६ ॥

४३८. **जो पावकं०** वृत्तम् । **जो** इति अणिद्दिट्ठग्गहणं । पुणाति आणारंभकुयातो (?) **पावको** अग्गी, तं जो **जलितमवक्कमेज्ज । आसीविसं वा** अकुवितं **कोवएज्जा । जो वा [जीवितट्ठी]** जीविताभिकंखी **विसं** पभूतं **खातति** । अवि ताव हेतुत्तणेण पावगसमक्कमणातितुल्ला **एसोवमाऽऽसातणता गुरूणं** ॥ ६ ॥ पावकाऽऽसीविससंजोगेहिंतो गुरुहीलणं नियमेण विणासकतरमिति दरिसंतेहिं भण्णति—

४३९. सियाय से पावत णो डहेज्जा, आसीविसो वा कुवितो ण भक्खे ।
सिया विसं हालहलं ण मारे, ण यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥

४३९. **सियाय से पाव०** वृत्तम् । **सियाय**सद्दो आसंकावाची । **से** इति जलितमिति जो भणितो **पावतो** मंत-तव-सच्च-देवतापरिग्गहेण **णो डहेज्ज । आसीविसो** बंधादीहिं ण खाएज्ज । मंतादीहिं वा **विसं हालहलं ण मारे । हालहल**मिति जातिविसेसो, तं विसेसेण मारगं । सिताति एताणि अविणासगाणि, **ण यावि मोक्खो गुरुहीलणाए** आसातणाए, गुरूणं आसातणादोसेहि ण मुच्चति [त्ति] ॥ ७ ॥ इमाणि वि पावकक्कमणातितुल्लाणि, यथा य एतेहिंतो वि पच्चवतरा[६] गुरुहीलणा तं भण्णति—

४४०. जो पव्वतं सिरसा भेत्तुमिच्छे, सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा ।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं, एसोवमाऽऽसातणता गुरूणं ॥ ८ ॥

४४०. **जो पव्वतं०** वृत्तम् । **जो** इति तहेव, **पव्वतं सिरसा भेत्तुमिच्छे** । जो वा **सीहं** सुहप्पसुत्तं **पडिबोहएज्ज । सत्ती** आयुधं तस्स परमतिक्खे **[अग्गे]** जो वा पाणितलेण **पहारं** देज्जा । जधा पव्वतभेदणादि विणासगमेगंतेण एतेहिं तुल्ला **एसोवमाऽऽसातणता गुरूणं** ॥ ८ ॥ अवि य पव्वतभेदणातीण सुकरता, तेहिंतो वा णिरवायता संभवति, ण य हीलणातो गुरूणं सुहमत्थि त्ति भण्णति—

४४१. सियाँय सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिया व सीहो कुवितो ण भक्खे ।
सिया ण भिंदेज्ज व सत्तिअग्गं, ण यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥

---

१ **आवि** खं ३ । **वा वि** खं २ ॥ २ **जीवणा°** अचू० वृद्द० विना । **जीयणा°** वृद्द० ॥ ३-४ जीवनाशात् ॥ ५ **सिया हु से** खं १ खं २ शु० हाटी० वृद्द० ॥ ६ प्रत्यपकरा ॥ ७-८ **सिया हु सी°** अचू० विना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**४४१. सियाय०** वृत्तम् । कयायि विज्जादिबलेण पव्वतं [1]सिरसा भिंदेज्जा । पडिबोहितो वा **सीहो** थंभणि-मोहणातिपभावेण ण भक्खेज्ज । **सत्थबंधणादीहिं** वा **ण भिंदेज्ज सत्तिअग्गं । ण यावि गुरुहीलणो-** वतियस्स कम्मबंधस्स **मोक्खो** ॥ ९ ॥

एवं च पावकक्कमणादीहिंतो आयरियासातणा पावतरी समासेणोवदंसिज्जति । जधा—

४४२. आयरियपादा पुण अप्पसण्णा, अबोधि आसायण णत्थि मोक्खो ।
तम्हा अणाबाहसुहाभिकंखी, गुरुप्पसादाहिमुहो रमेज्जा ॥ १० ॥

**४४२. आयरि०** वृत्तम् । **आयरियपादा पुण** अविणयं[1]विराहिता **अप्पसण्णा** । सैव **अबोधी** । तेसिमेवाऽऽ**सायणाओ णत्थि मोक्खो** । जतो एवं **तम्हा अणाबाहसुहाभिकंखी गुरुप्पसादाहिमुहो रमेज्जा, अणाबाहो** मोक्खो, तत्थ जं सुहं तं अणाबाहसुहं, तं अभिमुहमाकंखितुं सीलं जस्स सो **अणाबाध-सुहाभिकंखी** । सो अणाबाहसुहनिमित्तं **गुरुप्पसादाभिमुहो रमेज्जा** ॥ १० ॥

जधा परमेणाऽऽदरेण गुरुप्पसादाभिमुहेण भवितव्वं तं सणिदरिसणं भण्णति—

४४३. जहाऽऽहिअग्गी जलणं णमंसे, णाणाहुती-मंतपदाभिसित्तं ।
एवाऽऽयरियं उवचिट्ठएज्जा, अणंतनाणोवगतो वि संतो ॥ ११ ॥

**४४३. जहाऽऽहि०** वृत्तम् । जेण प्रकारेण **आहिअग्गी,** एस **वेदवादो** जधा—"हव्ववाहो सव्वदेवाण हव्वं पावेति" अतो ते तं परमादरेण हुणंति, तेणेदं निदरिसणं । **जलणं णमंसं(से)**ति अभिथुणं(णे)ति । **णाणाहुती० णाणा** अणेगविधं घतादयो आहुतिविसेसा **मंतपदेहिं अभिमुहं सित्तं** जो जस्स देवताविसेसस्स मंतो तेण । नाणासद्दो उभयाणुसारी—णाणाहुतीहिं नाणामंतपदेहिं । **एवं** एतेण प्रकारेण **आयरियं उवचिट्ठएज्जा** उवचरेज्जा महतीमवि विभूतिं पप्पा । कधं ? **अणंतनाणोवगतो वि संतो** अणंतं जेण णज्जति तं अणंतनाणं, तमवि उवगतो सुस्सूसेज्ज गुरुं ॥ ११ ॥ **एवाऽऽयरियं उवचिट्ठएज्ज** ति दिक्खागुरूण विणतो भणितो । नाणोवदेसत्थपाहण्णेण इमं भण्णति, न केवलं जेण दिक्खितो, किंतु—

४४४. [2]जस्संतियं धम्मपदाणि सिक्खे, [3]तस्संतियं वेणइयं [4]पउंजे ।
सक्कारए सिरसा पंजलीतो, काय ग्गिरा भो ! मणसा य णिच्चं ॥ १२ ॥

**४४४. जस्संतियं धम्म०** वृत्तम् । **जस्से**ति उवज्झायादीण कस्सति **अंतिए धम्मोवदेसपदाणि सिक्खे तस्संतियं** विणयस्स भावो **वेणइयं** तं **पउंजे** । तमेवं पजुज्ज **सक्कारए सिरसा पंजलीतो । सिरसा पंजलितो** त्ति एतेण पंचंगितस्स[5] वंदण[स्स] गहणं । [6]ते धम्मपतोवदेसए पुव्वभणितेण अब्भुट्ठाणादिणा विणएण सक्कारए, इमेण य पंचंगितेण वंदणएण जाणुजुवलं पाणितलदुतं[7] सिरं च भूमीए णिमेऊण, एवं काएण । गिराए 'मत्थएण वंदामि' त्ति भणमाणो । **भो** इति सीसामंतणं, **मणसा** एगग्गेण, **णिच्चं** एव सव्वं कालं ॥ १२ ॥

१ °यविरहिता मूलादर्शे ॥ २ जस्संतिए अचू० वृद्ध० विना ॥ ३ तस्संतिए अचू० वृद्ध० विना ॥ ४ पउंजे अचू० विना ॥ ५ पञ्चाङ्गिकस्य ॥ ६ तान् धर्मपदोपदेशकान् ॥ ७ पाणितलदुतं मूलादर्शे ॥



Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

धम्मपयप्पविभागोवदरिसणत्थं भण्णति—

४४५. लज्जा दया संजम बंभचेरं, कल्लाणभागिस्स विसोधिठाणं।
जे मे गुरू संततमणुसासयंति, ते हं गुरू संतयं पूययामि ॥ १३ ॥

४४५. **लज्जा दया०** वृत्तम्। अकरणिज्जासंकणं **लज्जा**। सत्ताणुकंपा **दया**। सत्तरसविहो **संजमो**। मेहुणोवरती **बंभचेरं**। "एगग्गहणे समाणजातीयग्गहण"मिति बंभचेरग्गहणेण मूलगुणुत्तरगुणग्गहणं। एतं समुदितं **कल्लाणं** मोक्खो तस्स आभागी, तस्स **कल्लाणभागिस्स विसोधिठाणं**। एतेसु सीतमाणं **जे मे गुरू सततमणुसासयंति** जधा एतेसु न सीतितव्वं, **ते हं गुरू** तमुपकारमुद्दिस्स **[स]तयं** णिचं **पूययामि**। जस्संतिए **धम्मपदाणि सिक्खे** ति उपकारमुद्दिस्स विणयप्पयोगो भणितो ॥ १३ ॥

४४६. जहा णिसंते तवतऽच्चिमाली, पभासती भारहं केवलं तु।
एवाऽऽयरियो सुत-सील-बुद्धिए, विरायती सुरमज्झे व इंदो ॥ १४ ॥

४४६. **जहा णिसंते०** वृत्तम्। जेण प्रकारेण **जधा**। **णिसा** रत्ती, तीसे **अंते** णिसापरिसमत्तिकाले दिवसो **तवति** पदीपयति। रस्सीओ—अच्चीओ, तासिं माला अच्चिमाला, सा जस्स अत्थि सो **अच्चिमाली**, तवंतो य **पभासती भारहं केवलं तु, पभासति** उज्जोवेति **भारहं** सव्वदक्खिणं **जंबुद्दीववरिसं** तं पभासति **केवलं** असेसं। तुसद्दो विसेसेति, कमेण सव्वं **जंबुद्दीवं**। एवमिति ओवमितो अत्थो भण्णति—**आयरियो** पुव्ववण्णितो **सुत्तेण सीलेण बुद्धीए** अच्चिमालात्थाणीएहिं **विरायति** सोभती। **सुरमज्झे व इंदो** जधा सामाणियातीण देवाण मज्झगतो इंदो शोभते एवमायरियो गणपरिवुडो शोभते ॥ १४ ॥

**विराजते सुरमज्झे व इंदो** इति परोक्खेणोवमाणं कतं। इमं तु पच्चक्खेण—

४४७. जधा ससी कोमुदिजोगजुत्तो, णक्खत्त-तारागणपरिवुडप्पा।
खे सोभते विमले अब्भमुक्के, एवं गणी सोभति भिक्खुमज्झे ॥ १५ ॥

४४७. **जधा ससी०** वृत्तम्। जेण प्रकारेण **जधा**। **ससी** चंदो। कुमुदाणि—उप्पलविसेसो, कुमुदेहिं प्रहरणभूतेहिं कीडणं जीए सा **कोमुदी**, कुमुयाणि वा संति, सा पुण कत्तियपुण्णिमा, कोमुदीए जोगो कोमुदीजोगो, तेण जुत्तो **कोमुदिजोगजुत्तो**। णक्खत्तेहिं—कत्तियादीहिं तारागणेहि य परिवुडो अप्पा [जस्स] सो **णक्खत्त-तारागणपरिवुडप्पा**। **खं** आकासं तम्मि **विमले** धूमिकादिदिरहिते **अब्भेहि** वलाहकादीहि **मुक्के**। **जधा** सो **ससी कोमुदिजोगजुत्तो णक्खत्त-तारा[गण]परिवुतो खे विमले अब्भमुक्के** सोभते **एवं गणी सोभति भिक्खुमज्झे** ॥ १५ ॥ एवमाइतेहिं सोभाविसेसेहिं जुत्ता—

१ °भाइस्स खं ४ ॥ २ सयय अणु° शुपा० ॥ ३ सययं अचू० विना ॥ ४ °वअच्चि° खं २-३-४। °वणऽच्चि° खं १ जे० शु० हाटी० अव० ॥ ५ केवल भारहं तु अचू० वृद्ध० विना ॥ ६ विराजते अचूपा० ॥ ७ सीसमज्झे वृद्ध० ॥ ८ एवमादिकैः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४४८. महागरा आयरिया महेसी, समाधिजोगाण सुत-सील-बुद्धिए ।
संपावितुकामो अणुत्तराणि[1], उवट्ठितो तोसए धम्मकामी ॥ १६ ॥

**४४८. महागरा आय०** वृत्तम् । महतामाकरा ते **महाकरा** चतुव्विहा । णाम-ट्ठवणातो गतातो । दव्वमहाकरा रयणागरा समुद्दा । भावमहाकरा णाणादिरयणागरा **आयरिया** । तेहि त इधाधिकारो । **महेसी** महरिसतो । ते य महागरा **समाधिजोगाणं सुतस्स** त बारसंगस्स **सीलस्स** य **बुद्धीए** य, अधवा सुत-सील-बुद्धीए समाधिजोगाणं महागरा । ते एवंगुणे आयरिए **अणुत्तराणि** अतिसयमादीणि **संपावितुकामो कामो** इच्छा, संपाविउ कामो जस्स सो **संपावितुकामो** । **उवट्ठितो** उवणयो । सो एवं अणुत्तराणि संपाविउकामो उवट्ठितो ते आयरिये तदट्ठं **तोसेज्जा धम्मकामी**, ण वृत्तिहेतुं ॥ १६ ॥

जाणि आयरियगुणोववण्णणं प्रति एतम्मि उद्देसए भणिताणि एयाणि—

४४९. सोच्चाण मेधावि सु[2]भासिताणि, सुस्सूसए आयरियँ[3]ऽप्पमत्तो ।
आरा[4]धयित्ताण गुणे अणेगे, से पावती सिद्धिमणुत्तरं ति ॥ १७ ॥ बेमि ॥

॥ विणयसमाधीए पढमुद्देसओ सम्मत्तो ॥ ९-१ ॥

**४४९. सोच्चाण मेधा०** वृत्तम् । सुणेऊण **सोच्चाण** । **मेधावी** पुव्वभणितो । सोभणाणि भासिताणि **[सुभासिताणि]** । एताणि सोऊण मेधावी सुस्सूसणं जधाभणिताणुट्ठाणेण सोतुं[5]मिच्छात **सुस्सूसए आयरियं** पुव्वभणितं । णिद्दादिपमादविरहितो **अप्पमत्तो** । सो एवं अप्पमादी सुस्सूसमाणो **आराधयित्ताण गुणे अणेगे** जधाभणिते **से पावति सिद्धिमणुत्तरं ति** सो य मोक्खो तं पावति तम्मि वा भवे, सावसेसेण वा कम्मुणा सुहपरंपरेण अट्ठभवंतरे पावति सिद्धिमणुत्तरं ॥ १७ ॥ इति बेमि तित्थगरोवदेसेण ॥

॥ विणयसमाधीए पढमुद्देसो ॥ ९-१ ॥

---

**[विणयसमाहीए बिइउद्देसओ ।]**

---

पढमुद्देसे विणयनिमित्तमाराधणमिति पसाधिते भवेदयं सीसस्साभिप्पायो, जधा—धम्मो मंगलप्पभिति धम्मसंसाधणे पत्थुए किमप्पणो उपकारनिमित्तमायरिया विसेसेण विणयं वण्णयंति ? उत तित्थगरवयणमेव ? एवमासंकामुहेण भगवंतो आणवेंति—धम्माधारभूत एव विणयो । जतो भण्णति—

४५०. मूलातो खंधो[6] पभवो दुमस्स, खंधातो पच्छा समुवेंति साला ।
साह[7]-प्पसाहा विरुहंति पत्ता, ततो से पुप्फं च फलं रसो य ॥ १ ॥

---

१ °राणि, आराहए तोस° अचू० वृद्ध० विना ॥ २ सुहासियाइं, सु° खं २-४ ॥ ३ °रिएऽप्प° खं २-४ ॥ ४ °राहइत्ता° अचू० विना ॥ ५ श्रोतुमिच्छया ॥ ६ खंधप्पभवो अचू० वृद्ध० विना ॥ ७ साहा खं २-३-४ शु० हाटी० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४५०. **मूलातो खंधो०** वृत्तम्। **मूलं** पतिट्ठा ततो लद्धपतिट्ठस्स **मूलातो** सुउव्विद्धो **खंधो**, एस **पभवो दुमस्स। खंधातो पच्छा** तदणंतरं **समुवेंति** जायंति साहापतिट्ठाणा **साला**। ततो य **साह-प्पसाहा**। अणुक्कमेण **विरुहंति पत्ता**। समुज्जातपत्तस्स **ततो पुप्फं**। चसद्देण तदणंतरं **फलं**। ततो तित्तादिअणेगविधो **रसो** ॥ १ ॥

जहा एसो मूलादिरसपज्जवसाणो दुमो—

४५१. एवं धम्मस्स विणओ मूलं, परमो सो[1] मोक्खो।
जेण [2]किर्त्ति सुतं सग्घं, निस्सेसमधिगच्छति ॥ २ ॥

४५१. **एवं धम्मस्स०** वृत्तम्। आदिप्पभिति उववण्णितस्स जिणोवदिट्ठस्स एतेण प्रकारेण **एवं धम्मदुमस्स विणयो मूलं, परमो सो मोक्खो** परमो पधाणो, मोक्खप्पधाणो धम्मो, अपरमो देवलोगादिफलादि। स एव धम्मो अपरमेण वि धम्मफलेण दरिसिज्जति—**जेण कित्तिं सुतं सग्घं निस्सेसमधिगच्छति, जेण** धम्मेण **कित्तिमधिगच्छति**, तज्जातीयं जसमवि। तत्थ पंडितेहिं संसद्दिज्जमाणा वित्थरति जा सा **कित्ती**, विभवादिसमुत्थितं विदियत्तणं **जसो। सुतं च सग्घं** साघणीयमधिगच्छति। णिस्सेयसं च मोक्खमधिगच्छति ॥ २ ॥

विणयगुणा उवदिट्ठा। अविणयदोसकतमिमं। उभए कहिते सुहं दोसभीरू अविणयं परिहरति, गुणाकंखी य विणए उज्जमिहीं, ते इमे दोसा—

४५२. जे य चंडे मिते थद्धे [6]दुव्वाती णियडीसढे।
[7]वुज्झति से[8] अविणीयप्पा कट्ठं [9]सोतंगतं जहा ॥ ३ ॥

४५२. **जे य चंडे०** सिलोगो। **जे** इति [अनिद्दिट्ठग्गहणे]। चसद्दो चंडातिकारणसमुच्चये। **चंडो** रोसणो, सो किंचि भणितो रोसेण अविणीतो भवति। मंदबुद्धी **मितो**, सो उपदेसमपडिवज्जमाणो भवति अविणीयप्पा। जातिमदादीहि गव्वितो **थद्धो** कोति तधा अविणीयो भवति। **दुव्वाती** अकारणे वि फरुसाभिधाती एवमविणीयो [भवति]। **नियडी** माता तीए सढो **णियडीसढो**, गिलाणलक्खादिमायाए अविणीयो भवति, सव्वेहिं वा चंडादीहिं सढो। एवमविणयबहुलो **वुज्झति से अविणीयप्पा**। कथमिव? **कट्ठं सोतगतं जहा**, जहा कट्ठं णदीसोतगतं महासमुद्दं पाविज्जति एवं सोऽविणीयो सोतसा संसारमहासमुद्दमुवणिज्जति ॥ ३ ॥

चंडादीहिं अविणयकारणेहि समधिट्ठितो—

४५३. विणयं पि से[10] उवाएण [11]चोदितो कुप्पती णरो।
दिव्वं से[13] सिरिमे[14]ज्जंती दंडेण पडिसेधए ॥ ४ ॥

---

१ से खं ४ अचू० विना ॥ २ कित्ती खं १ जे० ॥ ३ सिग्घं खं ४ शुपा० ॥ ४ जिस्सेसं चाभिग° खं १-३-४ जे० शु०। नीसेसं चाहिग° खं २। निस्सेसमभिग° वृद्ध० ॥ ५ श्लाघ्यं श्लाघनीयम् ॥ ६ दुव्वाथी णि° जे० वृद्ध० ॥ ७ वुज्झई से खं १ जे० शु०। वुब्भई से खं २। वुब्भई अ° खं ३-४ वृद्ध० ॥ ८ सेऽविणी° खं १ ॥ ९ सोयं गयं खं १। सोयगयं खं २-३-४ शु०। सेयगयं जे० ॥ १० सो वृद्ध०। जो खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी० ॥ ११ °एणं खं १-२ ॥ १२ चोइओ अचू० वृद्ध० विना ॥ १३ सो खं १-२ जे० शु० वृद्ध० ॥ १४ सिरिमेज्जंतिं खं १-२ शु०। सिरीमेज्जंती खं ४। सिरिमेजंती खं ३। सिरिमेयंतिं जे० ॥ १५ डंडेहिं प° खं ४ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४५३. **विणयं पि०** सिलोगो। **विणयो** पुव्ववण्णितो, तं **विणयं पि से** इति जो एतेहिं दोसेहिमभिभूतो **उवाएण** देस-कालोववण्णं हितं मितं च, एवमवि **चोदितो कुप्पति णरो** इति पुरिसकाराभिमाणी। एवमविणीयो **दिव्वं से सिरिमेज्जंती** दिव्वं लच्छिं आगच्छंती **दंडेण पडिसेधए**। एत्थ उदाहरणं—

**दसारप्पमुहे** सूरे **सुधम्मागते** परिणय[व]तितिथिवेसा **सिरी** उवगंतूण 'तवाहं रूवुम्मादियाऽऽगता, इच्छ मए' त्ति एगमेगं भणति। सव्वेहिं दंडेण निवारिता। **वासुदेवेण** 'ण एसा पागत'त्ति, उत्तमपगती वा सो सव्वं ण निच्छोभेति, अतो तेण अभिलसिता, दिव्वरूवा तमणुपविट्ठा॥

जधा ते भोज्जा **सिरिं** अविण्णाणेण चुक्का, एवमविणीया इह-परलोए सिरिं ण पावेंति। विणीया पुण जधा **वासुदेवो** तहा पावंति॥ ४॥ पच्चक्खमवि जधा तिसु[1] वि गतीसु अविणीयस्स अणिट्ठफलविपाकदोसा, विणयगुणा य कल्लाणफलविपाका, तदिदं भण्णति—

४५४. तहेव[2] अविणीयप्पा उववज्झा[3] हता[4] गता।
दीसंति दुहमेहंता अभिओग[5]मुवागता॥ ५॥

४५४. **तहेव अवि०** सिलोगो। तेण प्रकारेण **तहा**, दंडेण पडिसेहिता। एवसद्दो प्रकारावधारणे, एवं अविणीयो अप्पा जेसिं ते **अविणीयप्पा**। उप्पेध (? उवेच्च) सव्वावत्थं वाहणीया **उववज्झा, हता** अस्सा, **गता** हत्थी, ते अंकुस-कसा-लता-रज्जुमादीहिं ताडिता पच्चक्खं **दीसंति दुहमेहंता** दुक्खमणुभवमाणा **अभिओगमुवागता**। जधा एते तिरिक्खजोणिगा सत्ता [तधा] परभवकतस्स अविणयस्स फलसूयगं दुक्खमणुभवमाणा इहावि दुस्सीलादयो अविणीया भवंति, अविणयफलं च कसघातादीहिं सविसेसमणुभवंति॥ ५॥

४५५. तधेव सुविणीयप्पा उववज्झा[6] हता गता।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढिप्पत्ता[7] महाजसा॥ ६॥

४५५. **तधेव सु०** सिलोगो। **तधा** इति जधा अणंतरुद्दिट्ठं अविणयस्स फलमणुभवंति तधा जे भणि(?वि)हिंति सुविणीयप्पा ते विणयस्स कल्लाणफलमणुभवंति। एवसद्दो पूर्ववत्। सुट्ठु विणीयो अप्पा जेसिं ते **सुविणीयप्पा**। रायादीण गमणकाले सुहजाणत्तणेण संगामितत्तणेण य **उववज्झा हत-गतादयो** इट्ठजवस-जोग्गासणातिभोगेण **दीसंति सुहमेहंता**, विभूसणातिभोगेहिं **इड्ढिप्पत्ता**, लोगविदिता 'अमुगो आसो हत्थी वा सव्वपधाणो' त्ति **महाजसा**॥ ६॥ एवं ता तिरिएसु अविणय-विणयफलमुपदिट्ठं। मणुएसु वि जं पच्चियणीयं तं पुव्वमविणयफलमुवदिस्सति। तं च इमं—

४५६. तधेव अविणीयप्पा लोगंसि[8] णर-णारिओ।
दीसंति दुहमेधंता ते छायाविगलिंदिया[9]॥ ७॥

१ 'तिसृष्वपि गतिषु' तिर्यग्-मनुष्य-देवरूपासु। नारकाणां परवशत्वेनात्रागमनाभावाद् लोकेऽसंव्यवहार्यत्वात्, तत्र भूम्ना सर्वभावानामशुभत्वाच्च नात्राधिकारः॥ २ ४५४-५५ गाथे वृद्ध० हाटी० क्रमव्यत्यासेन व्याख्याते स्तः, सूत्रप्रतिषु अवचूर्यां च अगस्त्यव्याख्यातक्रमेणैव वर्तेते॥ ३ **ओववज्झा** जे० हाटी०॥ ४ **हया गया** अचू० विना॥ ५ **आभिओग°** अचू० विना॥ ६ **ओववज्झा** जे० हाटी०॥ ७ **इड्ढीपत्ता** खं ४॥ ८ **लोगम्मि** खं २-४॥ ९ **°ता छाया विगलितेंदिया** अचूपा० हाटी० अव०॥ **°तिंदिया** अचूपा०। **°ता छाया ते विगलिंदिया** सर्वासु सूत्रप्रतिषु वृद्ध०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४५६. **तधेव०** सिलोगो। **तधे**ति जधा तिरियाणं पच्चक्खमवि सिद्धमविणयफलं भणितं तहा मणुएसु, **एव**सद्दो तधेव, अविणीयो जेसिं अप्पा ते **अविणीयप्पा। लोगंसि** इति मणुस्ससमुदाये चेव **णर-णारीओ** पुव्वमविणयभावे पेसत्तमुवगता, इह य वंकभावेण अणिट्ठा। **ते दीसंति [दुहमेधंता]** दुक्खाणि—सारीर-माणसाणि अणुभवमाणा **छायाविगलिंदिया छाया** शोभा, सा पुण सरूवता सविसयगहणसामत्थं वा, छायातो विगलिंदियाणि जेसिं ते **छायाविगलिंदिया** काणंध-बधिरादयो भट्ठच्छायेंदिया। **अहवा—छाया** छुहाभिभूता, "**विगलितिंदिया**" विरंगितिंदिया। एवं **दीसंति दुहमेहंता** ॥ ७ ॥

४५७. दंड-सत्थपरिजूणा[1] असब्भवयणेहि य।
कलुणा विवण्णछंदा[2] खु[3]-पिवासाए परिगता ॥ ८ ॥

४५७. **दंडसत्थ०** सिलोगो। **दंडे**हिं लकुल-लता-कप्पडादीहिं, असि-परसु-पट्टसादीहि य **सत्थेहिं**, एतेहिं ताडिज्जमाणा वि **परिजूणा** परिगिलाण-दीणप्पा। अक्कोसादीहि य **असब्भवयणेहिं परिजूणा। कलुणा** घिणाकारिणो। **छंदो** इच्छा, विवण्णो छंदो जेसिं ते **विवण्णछंदा** परायत्ता। **खु-पिवासाए परिगता** वेरियादीहि सव्वधा वा निरुद्धा[हारा] परिमितभत्त-पाणा वा। एवमविणयफलमणुभवंति। पुव्वसिलोगे **छाया,** ते पुण अप्प-लूहाहारा; इह पुण **परिगता** इति समंततो खु-प्पिवासाणुगता, यदुक्तं णिरुद्धाहारा। तत्थ य पाढविकप्पेण, इह मूलपाढत्थ एवेति ॥ ८ ॥ इमं पुण विणयफलं—

४५८. तहेव सुविणीयप्पा लोगंसि णर-णारिओ।
दीसंति सुहमेहंता[4] रिद्धिपत्ता महाजसा ॥ ९ ॥

४५८. **तहेव सुवि०** सिलोगो। **तहे**वेति पुव्वभणितसारिस्सं। सुट्ठु विणीयप्पा **सुविणीयप्पा। लोए** पुव्वभणिते। **णर-णारीओ** पुव्वभवविणएण **[दीसंती सुहमेधंता]** रायाइभावमुवगता। पेसत्तणे वि सेवासु विणीया भोगाभागसुविभत्ता **रिद्धिपत्ता,** कम्मण्णयाए[5] लोए पंडिता **महाजसा** ॥ ९ ॥

मणुस्सेसु विणयफलमुपदिट्ठं। देवेसु वि पुव्वमविणयफलं भण्णति—

४५९. तधेव अविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति दुहमेहंता अभियोगमुवत्थिता[6] ॥ १० ॥

४५९. **तधेव०** सिलोगो। **तहा एव** त्ति भणितं, **अविणीयप्पा** य। जोतिस-वेमाणिया य **देवा,** वाणमंतरा **जक्खा,** भवणवासी **गुज्झगा,** अहवा देवाण एते पज्जाया। एते तित्थकरकाले एरावणादयो पच्चक्खमेव **दीसंति० अभियोगमुवत्थिता** दुक्खाणि पावमाणा, विजातीहि वि अभिउत्ता दीसंति ॥ १० ॥

अविणयफलमुवदिट्ठं। विणयफलं तु देवेसु भण्णति—

---

१ °**परिजुण्णा** खं २-३-४ जे० शु० वृद्ध०। °**परिज्जुण्णा** खं १॥ २ °**ण्णछाया खु**° खं १॥ ३ **खु-प्पिवा**° अचू० वृद्ध० विना॥ ४ °**ता इड्ढिं पत्ता** खं १-२-३ जे० शु० वृद्ध० हाटी०। °**ता इड्ढी पत्ता** खं ४॥ ५ कर्मण्यतया॥ ६ **आभिओग**° अचू० विना॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६०. तहेव सुविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा ।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढिप्पत्ता महाजसा ॥ ११ ॥

४६०. **तहेव सुवि०** सिलोगो । **तहेव सुविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा** इति भणितं । **दीसंति०** तित्थकरकालमधिकरेऊण भणितं, इंद-सामाणिकादयो तम्मि काले पच्चक्खं दीसंति ॥ ११ ॥ तिरिय-मणुय-देवेसु अविणय[-विणय]फलं भणितं । णरएसु पुण सव्वमसुभमेव, ण य पच्चक्खा, उवदेसतो छउमत्थेहिं उवलब्भंति, अतो ण संववहारो तेहिं । एवं ता लोगे । लोउत्तरे पुण जस्स विणओ मूलं तस्स फलमिमं इहलोए—

४६१. जे आयरिय-उवज्झायाण सुस्सूसा-वयणंकरा ।
तेसिं सिक्खा[१] विवड्ढंति जलसित्ता[२] व पादवा ॥ १२ ॥

४६१. **जे आयरिय-उवज्झायाण०** सिलोगो । **जे** इति उद्देसो । **आयरिय-उवज्झाया** ससिद्धंतप्पसिद्धा, **तेसिं** जे **सुस्सूसा-वयणंकरा** सोतुमिच्छा सुस्सूसा, तं करेंति सुस्सूसकरा, वेयावच्चादिविणयं(? वयणं) करा य, **तेसिं** आसेवण-गहण**सिक्खा विवड्ढंति** । णिदरिसणं–**जलसित्ता व पादवा** जधा जलसित्ता पादवा आसु विवड्ढंति पुप्फ-फलप्पदा य भवंति तहा सुस्सूसा-वयणकरणजलसित्ता तेसिं सिक्खापादवा वड्ढेंति । सिक्खादिगस्स महतो फलस्स लाभहेतुं धम्मायरिया सुस्सूसणीया ॥ १२ ॥

जति ताव लोगिगा अप्पस्स फललाभस्स कारणा सुस्सूसंति, ते य—

४६२. अप्पणट्ठा परट्ठा वा सिप्पा णेपुणिताणि[३] य ।
गिहिणो उवभोगट्ठा इहलोगस्स कारणा ॥ १३ ॥

४६२. **अप्पणट्ठा०** सिलोगो । **अप्पणट्ठा** अप्पणो जीविगाणिमित्तं **परट्ठा** 'सयण-परिजणोपकारिणो भविस्सामो' त्ति **सिप्पाणि** सुवण्णकारादीणि **णेपुणिताणि** ईसत्थसिक्खाकोसलादीणि **गिहिणो** असंजता भोयण-ऽच्छादणनिमित्तं **उवभोगट्ठा** तुच्छकालीणस्स **इहलोगस्स कारणा** ॥ १३ ॥

ते य इहलोगोपभोगसुहत्थिणो वि सिक्खणकाले फलमिहलोगसुहं उज्झंति । जधा—

४६३. जेण बंधं वधं घोरं परितावण[४] दारुणं ।
सिक्खमाणा नियच्छंति जुत्ता ते ललितेंदिया[५] ॥ १४ ॥

४६३. **जेण बंधं०** सिलोगो । **जेण** त्ति जेण गुरुणा सिक्खाविज्जमाणो **बंधं** णिगलादीहिं **वधं** लकुलादीहिं **घोरं** पासत्थियाण भयाणगं **परितावणं** अंगभंगादीहिं **दारुणं** तीव्रं **सिक्खमाणा** आदावेव एयाणि **नियच्छंत्ति** उवणमंति । एवंणियोगमुवगता **जुत्ता, ते** इति सिक्खगसमुक्करिसवयणं । **ललिताणि** नाडगातिसुक्खसमुदिताणि जेसिं रायपुत्तप्पभितीणं ते **ललितेंदिया** । **लालितेंदिया वा** सुहेहि, लाकारस्स ह्रस्सादेसो ॥ १४ ॥

इहलोगसुहाभिलासिणो जेण सिक्खाविज्जमाणा बंधादी णिगच्छंति—

१ °क्खा पव° अचू० वृद्ध० विना ॥ २ °त्ता इव पा° अचू० वृद्ध० विना ॥ ३ नेउणियाणि सर्वासु सूत्रप्रतिषु ॥ ४ परियावं च दा° सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव० । परितावं सुदा° वृद्ध० ॥ ५ ललिइंदि° सर्वासु सूत्रप्रतिषु ॥

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

४६४. ते वि तं गुरुं पूयेंति[1] तस्स सिप्पस्स कारणा।
सक्कारेंति समाणेंति[2] तुट्ठा णिद्देसवत्तिणो ॥ १५ ॥

४६४. **ते वि तं गुरुं०** सिलोगो। **ते** इति ते तहालिलितेंदिया, **अविसद्दा** किं पुण जे तदूणा?, तं बंधादिकारणं **गुरुं पूयेंति** अत्थसंविभाग-दाणादीहिं **तस्स सिप्पस्स कारणा** तं सिक्खोवदेसं बहुमण्णमाणा, न केवलं वृत्तिदाणेण भोयण-ऽच्छादण-गंध-मल्लेण य **सक्कारेंति,** थुतिवयण-पादोवफरिस-समयक्करणादीहि य **समाणेंति तुट्ठा** होतूण, ण आ(? अ)कामं दायव्वमिति सव्वमाणत्तियं करेमाणा **णिद्देसवत्तिणो** ॥ १५ ॥

जदि ताव ते इहलोगोवकारिविण्णाणत्थमेवं करेंति—

४६५. किं पुण जे सुतग्गाही अणंतसुहकामए।
आयरिया जं वदे भिक्खू तम्हा तं णातिवत्तए ॥ १६ ॥

४६५. **किं पुण जे०** सिलोगो। **'किं पुण'**सद्दो इहलोगोपकारातो इमस्सोपकारस्स अणेगेहिं गुणेहिं समुक्करिसणत्थो। किं पुण **जे सुतग्गाही** सुतग्गाहगा अणंतमोक्खसुहं तं कामयंतीति **अणंतसुहकामए**? । से एवं अणंतसुहकामए होतूण **भिक्खू** जतो तं बंधादीणि अकरेंता **[आयरिया जं वदे]** इह-परलोगहितमुपदिसंति **तम्हा तं** गुरुं विणएण **णातिवत्तए** णातिक्कमेज्ज। **जं वदे तं णातिवत्तए** त्ति गुरूण वयणं कातव्वं ॥ १६ ॥

अभणितमवि विणयोवगतेणमणेगविधं करणीयमतो भण्णति—

४६६. णीयं सेज्जं गतिं ठाणं णीयं च आसणं[4] तहा।
णीयं च पादे वंदेज्जा णीयं कुज्जा य अंजलिं[5] ॥ १७ ॥

४६६. **णीयं सेज्जं०** सिलोगो। **सेज्जा** संथारयो **तं णीयतर**मायरियसंथारगाओ कुज्जा। **गतिमवि** ण आयरियाण पुरतो गच्छेज्जा, एवं णीता भवति। **ठाणमवि** जं "ण पक्खतो ण पुरतो०" [उत्तरा० अ० १ गा० १८] एवमादि अविरुद्धं तं णीतं तहा कुज्जा। एवं पीढ-फलगादिकमवि **आसणं**। **तहा णीयं च पादे वंदेज्जा**। **अंजलि**मवि ओणओ होऊण **णीयं** कुज्जा ॥ १७ ॥ कायिको विणयो उवदिट्ठो। अयं तु वायिको। अधवा णीयमवि पादवंदणादि करेंतस्स जति तग्गतो कोति अइयारो भवेज्जा तस्स नियमणत्थं भण्णति—

४६७. संघट्टइत्ता[6] काएण तधा उवधिणा अवि।
खमेह अवराधं मे वदेज्ज ण पुणो त्ति य ॥ १८ ॥

४६७. **संघट्टइत्ता०** सिलोगो। **संघट्टइत्ता** छिविऊण हत्थादि**काएण,** वासकप्पादिणा वा **उवधिणा**। **अविसद्देण** अच्चासण्णगमणवायुणा वा। इमेण उवाएण **[अवराधं]** खामेज्ज पादपडितो—मिच्छा मि दुक्कडं, अवरद्धो हं, **ण पुण** एवं करेहामि ॥ १८ ॥ विणये चेट्ठागतमणेगमुपदिट्ठं। असक्कं सव्वं भणितुं ति उदाहरणमत्तमेतं, अतोऽपरमवि बुद्धिमता[7] लोग-लोगुत्तराविरुद्धं समतिवियारेण वट्टितव्वं। मंतिनिधूणो[8] पुण—

---

१ पूयंति खं ३। पूइंति खं १ जे०। पूयंति खं २-४ शु० ॥ २ **नमंसंति** सर्वासु सूत्रप्रतिपु वृद्ध० हाटी० अव० ॥ ३ °**तहितका**° अचू० विना ॥ ४ **आसणाणि य** अचू० वृद्ध० विना ॥ ५ **अंजली** खं ४ ॥ ६ °**इयित्ता** खं ३ ॥ ७ °**वहिणा मवि** सर्वासु सूत्रप्रतिपु ॥ ८ मतिविहीनः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६८. दु[1]ग्गवो व प[2]तोदेण चोदितो वहति रधं ।
एवं दु[3]ब्बुद्धि किच्चाणं वुत्तो वुत्तो प[4]युंजति ॥ १९ ॥

४६८. **दुग्गवो व०** सिलोगो । कुत्सितो गौः **दुग्गवो** गलिबलेद्दो, स इव **पतोदेण** पतोदो तु[5]त्ततो, तेण **चोदितो** तु[6]त्तियो, ततो **रधाती वहति** जधा, **एवं** सो **दुब्बुद्धी** आयरियँ[7]करणीयाणि वयणप्पयोगेण **वुत्तो वुत्तो पयुंजति** तधा मतिमता ण कायव्वं, अचोदिएणेव पवत्तियव्वं ॥ १९ ॥ दुब्बुद्धी वयणेण करणीयाणि पडिवज्जति त्ति भणितं । वयणमंतरेण पुण कधं पडिवज्जितव्वाणि ? इति भण्णति—

[8]४६९. कालं छंदोवयारं च पडिलेहेत्ताण हेतुहिं ।
[9]तेहिं तेहिं उवाएहिं तं तं संपडिवातए ॥ २० ॥

४६९. **कालं छंदोवयारं च०** सिलोगो । **कालं** कालं प्रति [10]वरिसा-सीतुम्भेसु कालेसु तिसु, सरतादिसु वा रितुसु जधाकालं जोग्गं भोयण-सयणा-ऽऽसणादि उवणेयं । **छंदो** अभिप्पायो, ततो वि कस्सयि किंचि इट्ठं भवति । जधा—

अण्णस्स पि[11]ता छासी, मासी (?सासी) अण्णस्स आसुरी किसरा ।
अण्णस्स घारिया पूरिता य ब[12]हुलोहलो लोगो ॥ १ ॥ [　　　　]

**उवयारो** आणा, कोति आणतियाए तूसति । ते एतेहिं काल-छंदोवयारादीहिं **पडिलेहेत्ताण हेतूहिं** कार[णु]त्रवत्तितो णातूण **तेहिं तेहिं उवाएहिं** जो जस्स वत्थुस्स संपादणे उवायो तेण तेण **तं तं संपडिवातए** ॥ २० ॥ अविणयस्स अकुसलं विणयस्स कुसलं फलमणेगधा वण्णितं । तस्सोवसंहरणत्थं भण्णति—

४७०. विवत्ती अविणीयस्स संपत्ती विणियस्स य[13] ।
जस्सेयं दुहतो णातं सिक्खं से अभिगच्छति ॥ २१ ॥

४७०. **विवत्ती अवि०** सिलोगो । **विवत्ती** कज्जणासो । **संपत्ती** कज्जलाभो । **विवत्ती अविणीयस्स** जधा हेट्ठा भणितं—**तहेव अविणीयप्पा०** [सुत्तं ४५४ आदि] एवमादि । संपत्ती जधा—**दीसंति सुधमेहंता** [सुत्तं ४५५ आदि] एवमादि । **जस्सेयं दुहतो णातं जस्स** विणयवतो **दुहतो** उभयमवि विणयाऽविणयफलं णातं, आसेवणा-गहण**सिक्खं से अभिगच्छति** पावति । सिक्खाए य परमं सिक्खाफलमधिगच्छति मोक्खं ॥ २१ ॥

उभतो णातमिति विणयपरिण्णाणसफलता भणिता । अविण्णाणदोसो पुण—

---

१ दुग्गओ वा प° अचू० हाटी० विना ॥ २ **पओयण** खं १ जे० शु० । **पयोयण** वृद्ध० । **पओगेण** खं २-३-४ ॥ ३ **दुब्बुद्धि** खं २ । **दुबुद्धि** खं १-३-४ जे० शु० ॥ ४ **पकुव्वई** अचू० विना ॥ ५ तोत्रकः ॥ ६ तोत्रितः ॥ ७ °**कणणीसाणि** मूलादर्शे ॥ ८ एतत्सूत्रश्लोकात् प्राक् खं २ प्रतिं विहाय सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु अयं सूत्रश्लोकोऽधिक उपलभ्यते—**आलवंते लवंते वा न निसेज्जाए पडिसुणे । मोत्तूणं आसणं धीरो सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥** नायं सूत्रश्लोकः अगस्त्यचूर्णौ वृद्धविवरणे हारि० वृत्तौ अवचूर्यां च व्याख्यातोऽस्तीति प्रक्षिप्त एव सम्भाव्यते ॥ ९ **तेण तेण उवाएणं** खं १-२-३ वृद्ध० हाटी० अव० । **तेणं तेणं उवाएहिं** शु० । **तेहिं तेहिं उवाएहिं** पाठः खं ४ जे० प्रत्योरपि वर्तते ॥ १० वर्षा-शीत-उष्मसु ॥ ११ प्रिया ॥ १२ **बहुडोहलो** वृद्ध० ॥ १३ उ जे० ॥



Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

४७१. जे यावि चंडे [1]मतिइड्ढिगारवे, पिसुणे णरे साधस हीण[2]पेसणे।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए, असंविभागी ण हु तस्स मोक्खो ॥ २२ ॥

४७१. **जे यावि०** वृत्तम्। जे इति तधेव। **च**सद्दो समुच्चये। **अपि**सद्दो एवं संभावयति—दुलभमवि लभिऊण धम्मं एवं करेति **चंडो** कोधणो। **मतिइड्ढिगारवे** जो मतीए इड्ढिगारवमुव्वहति। पीतिसुण्णकारी **पिसुणो**। रभसेणाकिच्चकारी **साधसो**। पेसणं जधाकालमुपपादयितुमसत्तो **हीणपेसणो**। अजाणतो **अदिट्ठधम्मो**। **विणये** जहोवदिट्ठे **अकोवितो** अपंडितो। असंविभयणसीलो **असंविभागी**। एतस्स जहोववण्णितस्स **ण हु तस्स मोक्खो** ॥ २२ ॥ एवमविणयो मोक्खसाधणं ण भवतीति भणितं। जधा पुण विणयो मोक्खसाधणं भवति तमुपदिस्सति—

४७२. निद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं, [3]सुतऽत्थधम्मा वि[4]णए य कोविता।
[5]तरित्तु तोओधमिणं दुरुत्तरं, खवेत्तु कम्मं [6]गतिमुत्तमं गत ॥ २३ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ विणयसमाधीए बितिओ उद्देसओ सम्मत्तो ॥

४७२. **निद्देसवत्ती पुण०** वृत्तम्। **निद्देसो** आणा तम्मि वट्टंति **निद्देसवत्तिणो**। पुणसद्दो विसेसणे। **गुरूणं** भणितं उवज्झायादीण वि अणुरूवो करणीयो। **जे** इति उद्देसो। **गुरुणो** आयरिया। सुतो अत्थधम्मो जेहि ते **सुतत्थधम्मा**, ते पुण गीतत्था। **कोवितो** पंडितो। **विणये** जधारिहप्पयोगे **कोविता** विणीतविणया। विणयफलेण **तरित्तु तोओधमिणं दुरुत्तरं** दव्वतरणेणं तियमभिसंबज्झति—तरओ तरणं तरितव्वं, तरतो पुरिसो, तरणं णावादि, तरियव्वं समुद्दादि। एवं भावे वि तरओ साधू, तरणं नाण-दंसण-चरित्ताणि, तरियव्वो संसारसमुद्दो। अतो **तरित्तु तोओघो** संसार एव चातुरंतो तं। विणएणेव **खवेत्तु** नाणावरणादि **कम्मं गतिमुत्तमं गता** मोक्खगतिं। पुव्वं **तरित्तु** कधं पच्छा **खवेत्तु कम्मं**? भण्णति—राग-दोस-मोहणीयसलिलसंपुण्णं बंधवादिसिणेहजातआसपाससमाचितं दुरुत्तरमविणीय-कातरपुरिसेहिं घरावासकिलेससमुद्दं निक्खमंता **तरित्तु**, ततो **खवेत्तु कम्म**मिति ण विरुज्झति। **गता** इति कधमतीतकालो? भण्णति—जधा गता तधा **विदेहा**दिसु भण्णति। गमिस्संति य कम्मभूमिसु सावसेसकम्माणो सुहपरंपरएण तहेव। अहवा ण एत्थ संदेहो जे एवं विणीयविणी(ण)या गता एव ते ॥ २३ ॥ **बेमि** सद्दो जधा पुव्वं ॥

॥ **विणयसमाधीए बितियो उद्देसओ सम्मत्तो** ॥ ९-२ ॥

---

१ **मयइड्ढि**° खं १ ॥ २ **दीण**° जे० ॥ ३ **सुत्तऽत्थ**° खं १-४ ॥ ४ **विणए अ को**° खं ४। **विणयम्मि को**° खं ४ अचू० वृद्ध० विना ॥ ५ **तरित्तु तोओधमिणं** इति **तरित्तु तोओघमिणं** इति च पाठद्वयं अचू०। **तरित्तु ते ओघमिणं** खं २। **तरित्तु ते ओहमिणं** खं २ विना सर्वासु सूत्रप्रतिषु। **तरंति (? तरित्तु) ते ओघमिणं** वृद्ध० ॥ ६ **गयमुत्त**° खं ४ ॥ ७ "आह—पुव्विं **खवित्तु कम्म**मिति वत्तव्वे कहं **तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं** ति पुव्वं भणियं?। आयरिओ आह—'**पच्छादीवगो** णाम एस सबंधो' त्ति काऊण न दोसो भवइ।" इति **वृद्धविवरणे** पृ. ३१७ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[विणयसमाधीए तइओ उद्देसओ]

पढम-बितिउद्देसभणितविणयसावसेसपडिवादणत्थमुद्देसो ततियो वि भण्णति, जतो [पढमुद्देसे] विणयविहाणं बहुविहं, बितिए विसेसेण विणयफलमुवदिट्ठं, इह तु "स पूज्यः" इति इमम्मि चेव लोगे कित्तिमयं फलं परभवे बहुतरगुणमिति ततियुद्देससंबंधो। तस्स इमं आदिसुत्तं—

४७३. आयरियऽग्गिमिवाऽऽहिअग्गी, सुस्सूसमाणो पडिजागरेज्जा।
आलोइतं इंगितमेव णच्चा, जो छंदमाराधयती स पुज्जो॥ १॥

४७३. **आयरियऽग्गिमिवाऽऽहिअग्गी०** वृत्तम्। सुत्त-ऽत्थ-तदुभयादिगुणसंपण्णो अप्पणो गुरूहिं गुरुपदे त्थावितो **आयरियो,** तं **अग्गिमिवाऽऽहिअग्गी** जधा आधितग्गी परमेण आदरेण **सुस्सूसमाणो** मंताऽऽहुतिविसेसेहि 'मा विज्झाहिति' त्ति पडिजग्गति एवमायरियं **पडिजागरेज्जा।** इमेण पुण विधिणा—**आलोइतं इंगितमेव णच्चा, आलोइयं** इसि त्ति निरिक्खितं, जं आलोइयं वत्थुं, जधा सीतवेलाए पाउरणं, तेण **छंदमाराधयति, छंदो** इच्छा तामाराधयति। अभिप्पायसूयकमाकारितमिंगितं। यथा—

इङ्गिताकारितैश्चैव क्रियाभिर्भाषितेन च।
नेत्र-वक्त्रविकाराभ्यां गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः॥ १॥ [ ]

एतेण विधिणा जो छंदमाराधयति स पूयारुहो सपक्ख-परपक्खातो त्ति **स पुज्जो।** चोदगो भणति—किमुदाहरणसमुच्छेदो वट्टति? जतो **जधाऽऽहिअग्गी** [सुत्तं ४४३] इति भणिते पुणो **आयरिय अग्गिमिवाऽऽहिअग्गी** इति?। आयरिया भणंति—**जधाऽऽहिअग्गी जलणं णमंसे** [सुत्तं ४४३] एत्थ आदरपडिवत्ती, **आयरियं अग्गिमिवाऽऽहितग्गी** एत्थ आलोइत-इंगितादीतस्साबज्झापतन्त इव (?) सततपडियरणीयता, एस विसेसो॥ १॥

विणयप्पओगे कारणमुवदिसंतेहि भण्णति—

४७४. आयारमट्ठा विणयं पउंजे, सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं।[2]
जहोवदिट्ठं अविकंपमाणो,[3] जो छंदमाराधयती स पुज्जो॥ २॥

४७४. **आयारमट्ठा०** वृत्तम्। पंचविधस्स नाणातिआयारस्स अट्ठाए एवं **विणयं पउंजे।** तमुपदेसं **सुस्सूसा** सोतुमिच्छा। एवं विणयक्कमेण **[परि]** समंता गेण्हितुं **वक्कं** गुरूणं **जहोवदिट्ठं** अणूणमधितं एवं वक्कपरिग्गहं काऊणं, वक्कं पुण वयणसमुदायो, तदुपदेसातो अविचलमाणो **अविकंपमाणो** तेसिं गुरूणं **छंदं** अभिप्पायं **जो आराधयति** संसाहयति **स** भवति **पुज्जो**॥ २॥ विण्णाणं विणयकारणमुद्दिस्स भणितं। इदं पुण चरित्तपडिवत्तिप्पधाणमुपदिस्सति, जधा—

४७५. राइणिएसु[4] विणयं पयुंजे, डहरा वि य जे परियायजेट्ठा।[5]
णियत्तणे[6] वट्टति सच्चवादी, ओवायवं वक्ककरे स पुज्जो॥ ३॥

१ °इय इंगि° खं १-२-४ जे०॥ २ पडिगिज्झ जे०॥ ३ अभिकंखमाणो गुरुं तु नासाययइ स अचू० वृद्ध० विना॥ ४ रातिणि° वृद्ध०। रायणी° खं ४॥ ५ °यागजे° खं ३॥ ६ नीयत्तणे खं १-३-४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**४७५. राइणिएसु विणयं पयुंजे०** वृत्तम् । आयरियोवज्झायादिसु सव्वसाधुसु वा अप्पाणातो पढमपव्वतियेसु जाति-सुतथेरभूमीहिंतो परियागथेरभूमीमुक्करिसेंतेहि विसेसिज्जति—**डहरा वि जे** वयसा **परियायजेट्ठा** पव्वज्जामहल्ला **णीयं सेज्जं गती०** [सुसं० ४६६] एवमादि जधाभणित**णियत्तणे वट्टति,** जधाभणितविणयपडिवत्तीए **सच्चवादी,** आयरियआणाकारी **ओवायवं,** वयणे वयणे 'इच्छामो' 'तध त्ति' वक्कं करेमाणो **वक्ककरे,** एस य **पुज्जो** ॥ ३ ॥ विणयविसेस एव गुरूणं इच्छितभत्तादिसमुपणयणं **वेयावच्चं,** तं इमेण विधिणा करणीयं—

४७६. अण्णायउंछं चरती विसुद्धं, जवणट्ठता समुदाणं च[1] निच्चं ।
अलद्धुयं णो परिदेवएज्जा, लद्धुं ण[2] विकंथयई स पुज्जो ॥ ४ ॥

**४७६. अण्णायउंछं०** वृत्तम् । **अण्णातं** जं ण मित्त-सयणादि[णातं] । दव्वुंछं तावसादीणं । भावुंछं जहासंभवमप्पे प्रभूते वा लाभे संतुट्ठस्स । **चरति** तं गच्छति भक्खयति वा । उग्गमादिदोसवज्जितं **विसुद्धं** । संजमभरुव्वहण-सरीरधारणत्थं **जवणट्ठता,** समेच्च उवादीयते **समुदाणं, निच्च**मिति सदा । भेक्खवित्ती तमुंछं चरमाणो **अलद्धुयं** वा असति लाभे पुण 'किं करेमि मंदभग्गो ? अलद्धिगो अहं'मिति एवं **णो परिदेवेज्ज** । **लद्धूण वा** 'इमं मया विसिट्ठं दव्वं लद्धं, एवमहं सलद्धिग' इति **ण विकंथय[ति]** । जो एवं भवति **स** एव **पुज्जो** ॥ ४ ॥

लाभे सति जधा अविकंथणेण तधा अमहिच्छेणावि भवितव्यमिति भणति—

४७७. संथारसेज्जा-ऽऽसण भत्त-पाणे, अप्पिच्छता अवि[3] लाभे वि संते ।
जो एवमप्पाणं[4]ऽभितोसएज्जा, संतोसपाहण्णरतो स पुज्जो ॥ ५ ॥

**४७७. संथारसेज्जा०** वृत्तम् । अड्ढाइज्जहत्थाऽऽयतो सचउरंगुलहत्थवित्थिण्णो **संथारो,** सव्वंगिका **सेज्जा,** संथार एव वा सेज्जा **संथारसेज्जा, आसणं** पीढकादि, एतम्मि संथारसेज्जा-ऽऽसणे । तधा **भत्त-पाणे अप्पिच्छता** लभमाणेसु वि ण महिच्छो भवति । **अविसद्देण** लाभे जधा अप्पिच्छता तधा अलाभे वि अविसातो । **जो एवं अप्पाणं अभितोसएज्जा** जेण व तेण व संतूसेज्जा । संतोसे पाहण्णेण रतो **संतोसपाहण्णरतो स पुज्जो** ॥ ५ ॥ अण्णातउंछं चरमाणस्स जहा अलाभो दुरहियासो, अप्पिच्छया य सति लाभे दुक्करा, तद्देदमवि दुक्करकरणीयमुपदिस्सति—

४७८. सक्का सहितुं[5] आसाए[6] कंटगा, अतोमता[7] उच्छहता नरेण ।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए, वयीमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥

**४७८. सक्का सहितुं०** वृत्तम् । सक्कणीया **सक्का सहितु** मरिसेतुं लोभो **आसा** ताए **कंटगा** बब्बूलपभितीणं । जधा केति तित्थादित्थाणेसु लोभेण 'अवस्समम्हे धम्ममुद्दिस्स कोति उत्थावेहिति'त्ति कंटकसयणमारूढा तताए धणासाए सक्का सहितुं । तधा **अतोमता** वि पहरणविसेसा संगामादिसु सामियाण पुरतो धणासाए चेव **उच्छहता** 'मणुस्सेसु उच्छाहसामत्थ'मिति **नरेण** । एताओ इमं दुक्करं ति भणति—**अणासए जो उ** इहभवधणासामणुतिस्स अणासता(तो) **जो उ** जो इति उद्देसवयणं, पुव्वक्रियातो दूरेणातिदुस्सहविसेसणे तुसद्दो,

१ **तु** खं १ ॥ २ **ण विकत्थय°** खं ३-४ वृद्ध० ॥ ३ **अइलाभे** खं २-३ हाटी० अव० ॥ ४ **°णमभि°** खं ४ वृद्ध० ॥ ५ **सहेउं** खं २ शु० । **सहिउं** खं १-३-४ जे० वृद्ध० ॥ ६ **आसाय** खं १ ॥ ७ **अओमया** अचू० विना ॥ ८ ततया-विस्तृतया ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**सहेज्ज कंटए** । किम्मए पुण ? **वयीमए** अक्कोस-फरुस-कडुगवयणमए, **कण्णं सरंति** पावंति **कण्णसरा,** अधवा जधा सरीरस्स दुस्सहमायुधं सरो तहा ते कण्णस्स, एवं **कण्णसरा** ते । वायामए कण्णाण सरभूते धणासामणुदिस्स जो सहेज्ज **स पुज्जो** ॥ ६ ॥ एवं च सक्का ते सहिउं कंटगा, वायाकंटगा पुण असक्का, जतो—

४७९. मुहुत्तदुक्खा हु[1] भवंति[2] कंटगा, अतोमता[3] ते वि तओ सुउद्धरा ।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणुबंधीणि महब्भयाणि[4] ॥ ७ ॥

४७९. **मुहुत्तदुक्खा हु०** वृत्तम् । मुहुत्तं दुक्खं जेसिं संजोगेण ते **मुहुत्तदुक्खा** । हुसद्दो वयणादिसए, अप्पकालदुक्खा इति **मुहुत्तदुक्खा हु भवंति कंटगा, अतोमता** दढा इति । **ते वि तओ** ते हि साहाकंटकेहितो ततो वा वणदेसायो सुहुम(?सुहमय)यत्तेण उद्धरिज्जंतीति **सुउद्धरा,** वणपरिकम्मणादीहि दुरुद्धरणदोसातो[5] वि सुउद्धरा । **वायादुरुत्ताणि** पुण सुसण्हाणि हिदयाणुसारीणि **दुरुद्धराणि वेराणुबंधीणि,** अओ **महब्भयाणि** ॥ ७ ॥

**कण्णसरे** इति भणितं, ण पुण कण्णे खता समुपलब्भंतीति कस्सति बुद्धी हवेज्ज, तत्थ ण एते कण्णद्दारमभिताडयंति, कण्णद्दारमतिगता पुण हिदयभेदिणो भवंतीति विसेसणत्थमिदं भण्णति—

४८०. समावयंता वयणाभिघाता, कण्णं गता दुम्मणियं[6] जणेंता[7] ।
धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे, जितिंदिए जो सहती स पुज्जो ॥ ८ ॥

४८०. **समावयंता०** वृत्तम् । एकीभावेण आवयंता **समावयंता** । समावयंता वयणेहि अभिहणणाणि हिदयस्स **वयणाभिघाता कण्णं गता** कण्णमणुपविट्ठा दुम्मणस्ससमुप्पाएंति **दुम्मणियं जणेंता** [[8]............... ............ ॥ ८ ॥ जधा वयणाभिघाता] परप्पयुत्ता अम्हमादीण दुस्सधा तहा अम्हेहि पउज्जमाणा अण्णेसिं ति णाऊण—

४८१. अवण्णवायं च परम्मुहस्स, पच्चक्खतो पडिणीयं[9] च भासं[10] ।
ओधारिणिं[11] अप्पियकारिणिं[12] च, भासं ण भासेज्ज सता स पुज्जो ॥ ९ ॥

४८१. **अवण्णवायं च०** वृत्तम् । अकित्तिपगासणं **अवण्णवायो,** तं **परम्मुहस्स, पच्चक्खतो** चोरपारदारियवायाति **पडिणीयं च भासं ओधारिणिं** असंदिद्धरूवं संदिद्धे वि । भणितं च—"से णूणं भंते ! मण्णामीति ओधारिणी भासा०" [प्रज्ञापना, पद ११, सूत्र १६१, पत्र २४६] आलावतो । अदेस-कालप्पयोगेण करणतो वा अप्पियमुप्पादेति **अप्पियकारिणी** । एतं जहुद्दिट्ठं **भासं ण भासेज्ज सता स पुज्जो** ॥ ९ ॥

अवण्णवायादि ण भासेज्ज त्ति भासाविणयणमुपदिट्ठं । इमं तु मणोविणयणं—

---

१ उ खं २ शु० ॥ २ हवंति खं २-३ शु० । भवेज्ज खं १ ॥ ३ अओमया ते वि ततो अचू० विना । अयोमया वृद्ध० ॥ ४ महाभया° खं १ ॥ ५ दुद्धवणदोसावोवि मूलादर्शे ॥ ६ दुम्मणयं जे० ॥ ७ जणंति अचू० विना ॥ ८ मूलादर्शेऽत्राऽगस्त्यचूर्णिपाठो गलित इति स्थानपूर्त्यर्थमत्र वृद्धविवरणव्याख्यापाठ उद्ध्रियते । तथाहि—"समावयंता० वृत्तम् । समावयंता नाम अभिमुहमावयंताणि वयणाणि कडुग-फरुसाणि णेहविवज्जियाणि अभिघाता वयणाभिघाता । कन्नं गया दुम्मणियं जणंति त्ति । दुम्मणियं नाम दोमणस्सं ति वा दुम्मणियं ति वा एगट्ठा । वयणाभिघाए कोयि असत्तिओ सहइ कोइ धम्मो त्ति । जो पुण धम्मो त्ति काऊण सहइ सो य परमग्गसूरे भवइ । परमग्गसूरे णाम जुद्धसूर-तवसूर-दाणसूरादीणं सूराणं सो धम्मसद्धाए सहमाणो परमग्गं भवइ, सव्वसूराणं पाहण्णयाए उवरिं वट्टइ त्ति वुत्तं भवति । जिइंदिए त्ति साहुस्स गहणं । जो एवं ते वयणाभिघाए सहइ सो पूयणिज्जो भवइ त्ति ॥ ८ ॥ एते वयणदोसे णाऊण अवण्णवाद० वृत्तम् ।" [पत्र २२१] ॥ ९ पडणीयं खं १–३–४ ॥ १० भासी खं ४ ॥ ११ ओहारणी जे० ॥ १२ °कारणिं खं २–३ ॥

४८२. अलोलुए [1]अकुहए [2]अमादी, अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
णो [3]भावदे णो वि य भावितप्पा, अकोउहल्ले य सदा स पुज्जो ॥ १० ॥

४८२. **अलोलुए०** वृत्तम् । आहार-देहादिसु अपडिबद्धे **अलोलुए** । इंदजाल-कुहेडगादीहिं ण कुहावेति ण वि कुहाविज्जति **अकुहए** । अज्जवजुत्ते **अमादी** । अवेदकारए **अपिसुणे** । आहारोवहिमादीसु विरूवेसु लब्भमाणेसु अलब्भमाणेसु वा ण दीणं वत्तए **अदीणवित्ती** । घरत्थेण अण्णतित्थिएण वा मए लोगमज्झे गुणमंतं भावेज्जासि त्ति एवं **णो भावदे**, तेसिं वा कंचि अप्पणा **णो भावए** । अहमेवंगुण इति अप्पणा वि **ण भावितप्पा** । णड-णट्टकादिसु **अकोउहल्ले य** । चसद्दो पुव्वभणितपुज्जताकारणसमुच्चयत्थो । एवंगुणो य **सदा स पुज्जो** ॥ १० ॥

जे एते उद्देसादावारब्भ भणिता पुज्जताकारिणो एतेहिं—

४८३. गुणेहिं साधू अ[4]गुणेहिऽसाधू, गेण्हाहि साधूगुण मुंचऽसाधू ।
वियाणिया अप्पगमप्पएण, जे राग-दोसेहिं समे स पुज्जो ॥ ११ ॥

४८३. **गुणेहिं साधू०** वृत्तम् । छंदोसमाराधणादीहिं हेट्ठा य भणितेहि बहुविहेहिं **गुणेहिं** जुत्तो **साधू** भवति, तव्विवरीयो पुण जे **य चंडे मिए थद्धे०** [सुत्तं ४५२] एवमादीहिं **अगुणेहिं** जुत्तो **असाहू** । सिस्सो भण्णति—वत्स ! एवं जाणिऊण **गेण्हाहि** साधुभावसाधगा जे गुणा साधव एव ते गुणा, ते गेण्हाहि । **मुंचासाधू**, गुणा इति वयणसेसो, मुंच असाधुगुणा इति, [5]एत्थ ण समाणदिग्घता किं तु पररूवं कतं, तवदिति । एत्थ य गुणसद्दो पज्जववादी, अण्णे वा असाधुदोसा इति भणेज्ज । **वियाणिया अप्पगमप्पएणं** जाणिऊण अप्पगं अप्पएणेव **जे राग-दोसेहिं समे** सम इति ण राग-दोसेहिं वट्टति **स पुज्जो** । **वियाणिया अप्पगं अप्पएणेति** भण्णति तं गुणाण अणण्णभावणत्थं, ण जधा **वेसेसियातीण** गुणा अत्थंतरभूता ॥ ११ ॥

**जे राग-दोसेहिं समे** इति भणितं, सा पुण समया इमा—

४८४. तहेव डहरं व महल्लगं वा, [6]इत्थी पुमं पव्वइयं गिहिं वा ।
णो हीलए णो वि य खिंसएज्जा, थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥ १२ ॥

४८४. **तहेव डहरं०** वृत्तम् । **तहेवेति** अवण्णवायादितुलता । तरुणो **डहरो**, थेरो **महल्लो**, **वासद्देण** मज्झिममवि सव्वमवि । **इत्थी पुमं**, एत्थ वि **वासद्दो** उवयुज्जति । तमवि **पव्वइयं गिहिं वा** । पुव्वदुच्चरितादि-लज्जावणं **हीलणं** । अंबाडणातिकिलेसणं **खिंसणं** । तं **णो हीलए णो वि य खिंसएज्ज** । सव्वधा हीलण-खिंसणाण कारणभूतं **थंभं च कोहं च चए स पुज्जो** ॥ १२ ॥

इत्थी-पुरिस-पव्वइय-गिहिसु अविसेसेण थंभ-कोधपरिच्चागो भणितो । इमं पुण गुरूसु—

४८५. जे माणिया सततं माणयंति, जत्तेण कण्णं व निवेसयंति ।
ते माणए माण[7]रुहे तवस्सी, जितिंदिए सच्चरते स पुज्जो ॥ १३ ॥

---

१ **अक्कुहए** अचू० वृद्ध० विना ॥ २ **अमाई** अचू० विना ॥ ३ **भावए** अचू० विना ॥ ४ **अगुणेहऽसा°** खं १-२-४ ॥ ५ "गंथलाघवत्थमकारलोवं काऊण एवं पढिज्जइ जहा—'मुंचऽसाधु' त्ति" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ६ **इत्थिं** खं ३-४ ॥ ७ **माणरिहे** अचू० विना ॥

४८५. **जे माणिया सततं०** वृत्तम्। जे इति उद्देसवयणं। पूयविसेसेहि पूतिया **माणिया सततं माणयंति** अच्चंताऽऽयहितोवदेसकरणेहिं। **जत्तेण कण्णं व निवेसयंति** कुलत्थितिवृद्धिनिमित्तं बालभावप्पभिति ललितं रक्खितं च [**कण्णं** माता-पिता] अणुरूवकुलपुत्तप्पभितिप्पदाणविवाधधम्मेण महता **पयत्तेण निवेसयंति** जधा, एवं गुरवो सिक्खापदगाहणादिपयत्तेण आयरियपदे ठावयंति। विणयविसेसेहिं जधोवदिट्ठेहिं **ते माणए, अरुहो** जोग्गो, माणस्स ते अरुहा अतो **ते माणए माणरुहे**। बारसविहे तवे रतो **तवस्सी**। जितसोतादिदिए [**जिर्तिदिए**]। **सच्चं** संजमो, तम्मि जधाभणितविणयसच्चकरणे वा रते **सच्चरते**। **स एव पुज्जो** भवति ॥ १३ ॥ **ते माणए माणरिहे** इति पूयणमुपदिट्ठं। पूयणंतरं सुणणमिति भण्णति—

४८६. तेसिं गुरूणं गुणसागराणं, सोच्चाण मेधावि सुभासिताणि[1]।
चरे मुणी पंचजते[2] तिगुत्ते, चतुक्कसायावगतो स पुज्जो ॥ १४ ॥

४८६. **तेसिं गुरूणं०** वृत्तम्। **तेसिमिति** जे **जत्तेण कण्णं व णिवेसयंती**ति भणिता। **गुरूणं** ति आयरियाणं, आयरियगुणेहिं समुद्दभूताणं **गुणसागराणं, सोचाण** सोऊण, **मेधावी** पुव्वभणितो, सोभणाणि भासिताणि [**सुभासिताणि**], सुभासितोवदेसेण **चरे मुणी**। एवं चरेमाणो मुणी भवति **पंच**महव्वतजते तिगुत्ति**गुत्ते**, अवगता चत्तारि कोधादयो कसाया जस्स सो **चतुक्कसायावगतो**। एवं जहोवदिट्ठगुणो **स पुज्जो** ॥ १४ ॥ उद्देसादावारब्भ "स पूज्यः" इति भणितं। ण पूज्यताफलमेव विणयकरणं, किंतु सगलमिदमस्स फलं—

४८७. गुरुमिह सततं पडियरिय मुणी, जिणवयणणितुणे[3] अभिगमकुसले।
धुणिय रय-मलं पुरेकुडं, भासुरमतुलं गतिं[4] गय ॥१५॥ त्ति बेमि ॥

॥ विणयसमाहीए तइओ उद्देसओ सम्मत्तो ॥ ९।३ ॥

४८७. **गुरुमिह सततं०** वृत्तम्। **गुरुमिध गुरू** आयरियो तं **इहे**ति **इह** मणुयलोगे कम्मभूमी पाविऊण **सतत**मामरणादविच्छेदेण जधाजोगं सुस्सूसिऊण **पडियरिय**। विदितवेदितव्वे **मुणी जिणवयणणितुणे**। जहारिहं विणयेणाभिगंतुं कुसले **अभिगमकुसले**। अभिगमकुशलस्सन् **धुणिय रय-मलं** अभिगमकुसलत्तणेण रय-मलधूणणे कुशलः धुणितुं **धुणित**, रय-मलविसेसो—आश्रवकाले **रयो**, बद्ध-पुट्ठ-णिकायियं कम्मं **मलो**। त **कुसले धुणित रय-मलं** पुव्वकतं **पुरेकडं**, कुसलभावेणेव णवकम्मागमं पि हंतुं। **भासुरं**—अतुलगुणेहिं दिप्पतीति भासुरं, गुणेहिं तुलितुमण्णेण असक्का **अतुलं, तं भासुरमतुलं** सिद्धिगतिं **गय** ति। **स पूज्य** इति पराधिकारवयणं। एवंगुणो सिद्धिगतिं गच्छति त्ति सदा प्रवृत्तकाले वर्तमाननिर्देशो पावति। अहवा ण एत्थ संदेहो इति निरुविज्जति–गत एवासौ जो एवंगुणो भवति। एतं अभिलसंतेण एतं कातव्वमिति सीसोपदेसनियमणं ॥ १५ ॥ **बेमि** तहेव ॥

॥ **इति ततियो समत्तो** ॥ ९।३ ॥

---

१ **सुभासियाइं** अचू० विना। **सुहासि**° खं ४॥ २ **पंचरते** अचू० वृद्ध० विना॥ ३ **जिणमयणिउणे** खं १-३-४ हाटी०। **जिणवयणिउणे** खं २ जे० शु०। हाटी० ताडपत्रीयप्राचीनप्रत्यन्तरे **जिणवयणणिउणे** पाटस्य व्याख्यानं दृश्यते॥ ४ **गई वइंति। त्ति बेमि** वृद्ध०॥

[विणयसमाहीए चउत्थो उद्देसओ]

विणयसमाधीए पढम-बितिय-ततियुद्देसेसु विणयोववण्णणं कतं। ततियुद्देसे य भणितं "**आयारमट्ठा विणयं पउंजे**" [सुत्तं ४७४] त्ति समुलिंगणमायारस्स। विणयपुव्वं पुण सुतं तवो आयारो य। एतेसिं विसेसपरूवणं चतुत्थुद्देसे, अतो तस्सावसरो। एतेण संबंधेणाऽऽगतस्स चतुत्थुद्देसगस्स इमं आदिसुत्तं—

४८८. सुतं मे आउसं! तेणं भगवता एवमक्खातं—इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाधिट्ठाणा पण्णत्ता ॥ १ ॥

**४८८. सुतं मे आउसं! तेणं भगवता०**। एवं जधा **छज्जीवणियाए**। **इहे**ति इहलोगे सासणे वा। **खलु**सद्दो अतीता-ऽणागतथेराण वि एवं पण्णवणाविसेसणत्थं। **थेरा** पुण गणधरा **भगवंत** इति जसंसिणो तेहिं। **चत्तारी**ति संखा, विणयस्स विणये विणएण वा समाधी **विणयसमाधी, ठाणं** अवकासो, परूविता **पण्णत्ता** ॥ १ ॥

तेसिं विभागपडिपुच्छणत्थमाह सिस्सो—

४८९. कतरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाधिट्ठाणा पण्णत्ता? ॥ २ ॥

**४८९. कतरे खलु** जाव **पण्णत्ता** ॥ २ ॥ वक्ष्यमाणं विभागविभागमंगीकरेतूणं आयरियो आह—

४९०. इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाधिट्ठाणा पण्णत्ता। तं जधा—विणयसमाधी १ सुतसमाधी २ तवसमाधी ३ आयारसमाधी ४ ॥ ३ ॥

**४९०. इमे खलु** जाव **पण्णत्ता, तं जधा—विणयसमाधी सुतसमाधी तवसमाधी आयारसमाधी** विणय-सुत-तवा-ऽऽयारा उवरि विसेसेण भण्णिहिन्ति ॥ ३ ॥ एस पदबद्धो अत्थो सिलोगेण संचेप्पति, तं०—

४९१. विणये सुते तवे या आयारे णिच्चं[1] पंडिता।
अभिरामयंति अप्पाणं जे भवंति जितिंदिया ॥ ४ ॥

**४९१. विणये सुते तवे या [आयारे] निच्चं०** सिलोगो। उद्दिट्ठस्स अत्थस्स फुडीकरणत्थं सुभणणत्थं सिलोगबंधो। उक्तं च—

गद्येनोक्तः पुनः श्लोकैर्योऽर्थः समनुगीयते। स व्यक्तिव्यवसायार्थं दुरुक्तग्रहणाय च ॥ १ ॥ [ ]

अहवा पुव्वमुद्देसमत्तं सिलोगे विसेसिज्जति—**[विणये सुते तवे या आयारे,]** एतेसु **णिच्चं पंडिता** एतेसिं पडिविसेसजाणता जे ते एतेसु चेव **अभिरामयंति अप्पाणं**, एवं पुण जे **जितिंदिया भवंति**, एवं वा **जितिंदिया** जे ते एतेसु **अप्पाणं अभिरामयंति**। विणयमूलो धम्मो, विणयातो य सुतादिपडिवत्ती भवतीति ॥ ४ ॥

[1] **निच्चपंडिया** खं १-३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विणयसमाधीवित्थरोवण्णासो इमो—

४९२. चतुव्विधा खलु विणयसमाधी भवति। तं जधा—अणुसासिज्जंतो सुस्सूसति, ◁ विणयसमाधीए पढमं पदं १ ▷। सम्मं पडिवज्जेति, ◁ विणयसमाधीए बीयं पदं २ ▷। वेदमाराधयति, ◁ विणयसमाधीए ततियं पदं ३ ▷। ण य भवति अत्तसंपग्गहिए, ◁ विनयसमाधीए चउत्थं पदं भवति ४ ▷ ॥५॥

४९२. **चतुव्विधा खलु विणयसमाधी भवति**। चतुष्प्रकारा **चतुव्विहा**। **खलु**सद्दो पत्तेयविधाणनियमणत्थं वा छिद्रप्रतिपूरणे वा, एवं सव्वत्थ। विणयस्स समाधी **विणयसमाधी** जं विणयसमारोवणं, विणएण वा जं गुणाण समाधाणं एस विणयसमाधी भवतीति। चतुव्विहाणनियमण[त्थं] तमिति बंधविण्णासो। **जधा** इति विहाणुद्देसो। **अणुसासिज्जंतो सुस्सूसति** पढमसासणाओ सीयमाणस्स पच्छासासणमणुसासणा। विणयपडिचोदणाए पडिचोतिज्जमाणो 'ममेतं हित'मिति आयरिय-उवज्झाए तिव्वेण विणयाणुरागेण **सुस्सूसति**। एतं पढमं विणयसमाधिट्ठाणमिति **पढमं पदं १**। **सम्मं** इति एस णिवातो पसत्थाभिधाणो, पडिचोदणमेत्र सोभणेण विधिणा **पडिवज्जति** 'एवमेवं' ति, **बीयं** विणयपदं २। **वेदमाराधयति** विदंति जेण अत्थविसेसे जम्मि वा भणिते विदंति सो **वेदो**, तं पुण नाणमेव, तं जधाभणियजाणणाणुट्ठाणेण **वेदं आराधयति, ततियं** विणयसमाधीपदमिमं ३। **ण य भवति अत्तसंपग्गहिए** संपग्गहितो गव्वेण जस्स अप्पा सो **अत्तसंपग्गहितो**, तधा ण भवति। 'अहो हं विणीयो विणये गुरूहिं संभावितो, महतो थाणस्स जोगो'त्ति एवमत्तसंपग्गहिते [ण] भवति। विणयसमाधाणस्स इमं **चउत्थं पदं भवति ४** ॥ ५ ॥

४९३. भवंति चेत्थ सिलोगो—

वीहेति हिताणुसासणं, सुस्सूसए तं च पुणो अहिट्ठए।
ण य माणमदेण मज्जती, विणयसमाधीए आययट्ठिते ॥ ६ ॥

४९३. **विणयसमाधि**सुत्तत्थाणे इमो **भवति चेत्थ सिलोगो, भवति चेत्थ** इति सव्वस्स एतस्स पडिसमाणणत्थं।

**वीहेति हिताणुसासणं, सुस्सूसए तं च पुणो अहिट्ठए।**
**ण य माणमदेण मज्जती, विणयसमाधीए आययट्ठिते** ॥

अभिलसति पत्थयति **वीहेति**। इह परभवे य हितस्स अणुसासणं **हिताणुसासणं** तं **वीहेति**। **सुस्सूसति** य परमेणाऽऽदरेण आयरियोवज्झाए। **'तं च'** हितोवदेसं हिताणुट्ठाणकिरियाए **अहिट्ठए** त्ति जधा भणितं करेति। **ण य** विणयसमाधिट्ठाणे अप्पाणमसमाणं मण्णमाणो माण एव मतो **माणमतो** तेण **मज्जति** 'विणयकुसलोऽहं'मिति

२, ५, ७, ९ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव० नास्ति॥ १ सुस्सूसति. २ पढमं विणयसमाधीए पदं १ वृद्ध०॥ ३ सम्मं संपडि° खं ४ अचू० विना॥ ४ °ज्जंति त्ति बितियं [विणयसमाधीए] पदं २ वृद्ध०॥ ६ °राहइ त्ति ततियं [विणयसमाधीए] पदं ३ वृद्ध०॥ ८ °ग्गहिए, चउत्थं [विणयसमाधीए] पयं भवति ४ वृद्ध०॥ १० पदविन्यासः॥ ११ भवइ य एत्थ सर्वासु सूत्रप्रतिषु वृद्ध०॥ १२ पेहेइ अचू० विना॥ १३ °माधीआय° खं १-३-४ जे० शु० अचूपा० वृद्धपा०॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विणयसमाधिमतेण। **विणयसमाधीए आतयं** अट्ठाणविप्पकरिसतो मोक्खो, तेण तम्मि वा अत्थी **आययत्थी**, स एव **आयत्थीकः**। अहवा **आयती** आगामी कालो तम्मि सुहत्थी **आययत्थी**। **विणयसमाधीए** वा सुट्ठु आदरेण अत्थी **विणयसमाधीआययट्ठी**[1] ॥ ६ ॥ एसा विणयसमाधी १। इदाणीं—

४९४. चतुव्विधा खलु सुतसमाधी भवति। तं जधा—सुतं मे भविस्सति त्ति अज्झातितव्वं भवति,[2] ◁[3] सुतसमाधीए पढमं पदं १ ▷। एगग्गचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झातितव्वं भवति,[4] ◁[5] सुतसमाधीए बितियं पदं २ ▷। सुहमप्पाणं[6] धम्मे ठावयिस्सामि त्ति अज्झातितव्वं भवति,[7] ◁[8] सुतसमाधीए ततियं पदं ३ ▷। थितो[9] परं धम्मे थावइस्सामि त्ति अज्झातितव्वं भवति,[10] ◁[11] सुतसमाधीए ▷ चतुत्थं पदं भवति ४ ॥ ७ ॥

**४९४. चतुव्विधा खलु सुतसमाधी भवति तं जधा—सुतं मे भविस्सति त्ति अज्झातितव्वं भवति।** दुवालसंगगणिपिडगं सुतणाणं, तं **सुतं मे भविस्सति त्ति** एतेण आलंबणेण सदा वि साधुणा **अज्झातियव्वं भवति। सुतसमाधीए** एतं **पढमं पदं १। एगग्गचित्तो** अव्वाकुलो। सो हं सुतोवदेसेण **एगग्गचित्तो भविस्सामि त्ति** तेणावि आलंबणेण साधुणा **अज्झातितव्वं भवति। सुतसमाधीए** चेव एतं **बितियं पदं** भवति २। णाणोवदेसेण **सुहमप्पाणं धम्मे ठावयिस्सामि त्ति** एतेणावि आलंबणेण साधुणा **अज्झातितव्वं भवति। सुतसमाधीए** चेव एतं **ततियं पदं** भवति ३। तधा धम्मे सयमवत्थितो णाणोवदेसेण **परमवि** धितिदुब्बलं **धम्मे थावइस्सामि** त्ति एतं पि आलंबणमालंबिऊण साधुणा **अज्झातितव्वं भवति। सुतसमाधीए चतुत्थमिमं पदं भवति ४** ॥ ७ ॥

४९५. भवति य[12]ऽत्थ सिलोगो—

नाणमेगग्गचित्तो तु[13] ठितो ठावयती परं।
सुताणि य अधिज्झित्ता रतो सुतसमाधिए ॥ ८ ॥

**४९५. भवति यऽत्थ सिलोगो—**
**नाणमेगग्गचित्तो तु ठितो ठावयती परं।**
**सुताणि य अधिज्झित्ता रतो सुतसमाधिए ॥**

अज्झातिए नाणी भवति। तेण य णाणगुणेण [**एगग्गचित्तो** भवति]। एगग्गचित्तो य धम्मे गिरिरिव निप्पकंपो भवति। सयं च सुट्ठितो समत्थो **परमवि** धम्मे ठावेऊण। **सुताणि य अधिज्झित्ता** नाणाविधाणि तप्पभावेणेव **रतो सुतसमाधीए** ॥ ८ ॥ एस सुतसमाधी २। सुतसमाधिसमणंतरं—

---

१ विनयसमाध्यायतार्थी ॥ २ भवति, पढमं सुतसमाधीए पदं १ वृद्ध० ॥ ३, ५, ८, ११ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव० नास्ति ॥ ४ भवति, बितियं सुयसमाधीए पदं २ वृद्ध० ॥ ६ अप्पाणं ठाव° अचू० विना ॥ ७ भवति, तइयं सुयसमाहीए पदं ३ वृद्ध० ॥ ९ ठिओ परं ठाव° अचू० विना ॥ १० भवति, चउत्थं सुयसमाहीए पयं भवति ४ वृद्ध० ॥ १२ य एत्थ सर्वासु सूत्रप्रतिषु वृद्ध० ॥ १३ य जे० अचू० वृद्ध० विना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४९६. चतुव्विधा खलु तवसमाधी भवति। तं जधा–णो इहलोगट्ठताए तवमहिट्ठेज्जा,[1] ◁[2] तवसमाधीए पढमं पदं १ ▷। णो परलोगट्ठताए तवमहिट्ठेज्जा,[3] ◁[4] तवसमाधीए बितियं पदं ▷। णो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठताए तवमहिट्ठेज्जा,[5] ◁[6] तवसमाधीए ततियं पदं ३ ▷। णऽण्णत्थ णिज्जरट्ठताए तवमहिट्ठेज्जा,[7] ◁[8] तवसमाधीए ▷ चतुत्थं पदं भवति ४ ॥ ९ ॥

४९६. **चतुव्विधा खलु तवसमाधी भवति** बारसविहो तवो। **तं जधा**—कामभोगाण इहलोइयाण पूयाहेतुं वा **णो इहलोगट्ठताए तवमहिट्ठेज्जा**, जधा **धम्मिलेण** अहिट्ठितो। एवं **तवसमाधीए पढमं पदं १**। देवलोएसु चक्कवट्टिमादिसु वा जति एवंविहो होज्जामि त्ति [**णो परलोगट्ठताए तवमहिट्ठेज्जा**], जधा वा **बंभदत्तेणा**धिट्ठितो। **बितियमिदं तवसमाधिपदं** २। परेहिं गुणसंसद्दणं **कित्ती**, लोकव्यापी जसो **वण्णो**, लोकविदितया **सद्दो**, परेहिं पूणं (? पूयणं) **सिलोगो**। एते उद्दिस्स **णो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठताए तवमहिट्ठेज्जा**। एतं **ततियं तवसमाधिपदं** ३। **णऽण्णत्थ णिज्जरट्ठताए तवमधिट्ठेज्जा, णऽण्णत्थ** त्ति परिवज्जणसद्दो कम्मनिज्जरणं मोत्तूण, णऽण्णहा। **तवसमाधीए चतुत्थं पदं भवति ४** ॥ ९ ॥

४९७. भवति यऽत्थ सिलोगो—

विविहगुण-तवोरये य निच्चं, भवति निरासए निज्जरट्ठिते।
तवसा[9] धुणति पुराणपावगं, जुत्तो सदा तवसमाधिए ॥ १० ॥

४९७. **भवति यऽत्थ सिलोगो—**
**विविहगुण-तवोरये य निच्चं, भवति निरासए निज्जरट्ठिते।**
**तवसा धुणति पुराणपावगं, जुत्तो सदा तवसमाधिए ॥**

**विविहेसु गुणेसु तवे य रते णिच्चं भवति। निरासए** निग्गतअप्पसत्थासए **निरासए**। **निज्जराए य ठिते निज्जरट्ठिते**। **तवसा** बारसविधेण **धुणति पुराणपावगं** अट्ठविधं **सदा तवसमाधिजुत्ते** ॥ १० ॥

४९८. चतुव्विधा खलु आयारसमाधी भवति। तं जधा–णो इहलोगट्ठताए आयारमहिट्ठेज्जा,[11] ◁[12] आयारसमाधीए पढमं पदं १ ▷। णो परलोगट्ठताए आयारमहिट्ठेज्जा,[13] ◁[14] आयारसमाधीए बितियं पदं २ ▷। णो कित्ति-वण्ण-सद्द-

---

१ °ज्जा, पढमं तवसमाधीए पदं १ वृद्ध० ॥ २ ◁▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव० नास्ति ॥ ३. °ज्जा, बितियं तवसमाधीए पदं २ वृद्ध० ॥ ४, ६, ८ ◁▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव० नास्ति ॥ ५ °ज्जा, ततियं तवसमाधीए पदं ३ वृद्ध० ॥ ७ °ज्जा, चउत्थं तवसमाधीए पदं भवति ४ वृद्ध० ॥ ९ "तहा णो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठया एगट्ठा, अकत्थनिमित्तं आयारनिमित्तं च पउंजमाणा पुणरुत्तं न भवतीति।" इति वृद्धविवरणे पत्र ३२८। "न कीर्ति-वर्ण-शब्द-श्लाघार्थ'मिति सर्वदिग्व्यापी साधुवादः कीर्तिः, एकदिग्व्यापी वर्णः, अर्धदिग्व्यापी शब्दः, तत्स्थान एव श्लाघा।" इति श्रीहरिभद्रसूरिवृत्तौ पत्र २५७–२ ॥ १० °सा ओणय पुरा° जे० ॥ ११ °ज्जा, पढमं आयारसमाधीए पदं १ वृद्ध० ॥ १२, १४ ◁▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव० नास्ति ॥ १३ °ज्जा बितियं आयारसमाहीए पयं २ वृद्ध० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिलोगट्ठताए आयारमहिट्ठेज्जा, ◁ आयारसमाधीए ततियं पदं ३ ▷। णऽण्णत्थ आरहंतिएहिं हेतूहिं आयारमहिट्ठेज्जा, ◁ आयारसमाधीए ▷ चतुत्थं पदं भवति ४ ॥ ११ ॥

**४९८.** चउव्विहा वि तवसमाधी भणिता जधा तधा **आयारसमाधी चतुव्विहा** णिव्विसेसा भाणियव्वा। णवरं–**णऽण्णत्थ आरहंतिएहिं हेतूहिं आयारमहिट्ठेज्जा,** एतम्मि आलावए सिलोगे य विसेसो–जे अरहंतेहि अणासवत्त-कम्मनिज्जरणादयो गुणा भणिता आयिण्णा वा ते **आरहंतिया हेतवो**–कारणाणि भवंति, ते **मोत्तूणण्णस्स**(? त्थ) कारणे [ण] मूलगुण-उत्तरगुणमतं आयारमहिट्ठेज्जा ॥ ११ ॥

४९९. सिलोगो पुण एत्थ—

जिणवयणमते अतिंतिणे, पडिपुण्णाततमाययट्ठिते।
आयारसमाहिसंवुडे, भवति य दंते भावसंधए ॥ १२ ॥

**४९९. सिलोगो पुण एत्थ—**
**जिणवयणमते अतिंतिणे, पडिपुण्णाततमाययट्ठिते।**
**आयारसमाहिसंवुडे, भवति य दंते भावसंधए॥**

जिणाण वयणं **जिणवयणं, मतं** अभिरुयियं, तं जिणवयणं मतं जस्स से **जिणवयणमते। तिंतिणो** पुव्वभणितो, तस्स पडिसेहो **अतिंतिणो**। निरवसेसं जं एतं **पडिपुण्णं, आयतं** आगामिकालं, सव्वमागामिणं कालं **पडिपुण्णायतं। तम्मि आयतट्ठिते** एत्थ **आयत**वयणं धणितार्थम्, धणितमायारसमाधीए अत्थी **आयतट्ठिते** आयारसमाधीए संवुडो **आयारसमाधिसंवुडे**। आयारसमाधीए करणभूताए संवरियासवे **आयारसमाधिसंवुडे**। आयारसमाधीसंवुडे सन् **भवति य दंते** इंदिय-णोइंदियदमेण दंते। अतिदमेण भवति य खादिकादिभावसाधए। चसद्दो अन्नाणि एताणि कारणाणि समुच्चिणोति, समुदितेहिं एतेहि भावसंधणं ॥ १२ ॥ विणय-सुत-तवा-ऽऽयारसमाधीए भावसंधाणस्स फलमिदमुपदिस्सते—

५००. अधिगतचतुरसमाधिए, सुविसुद्धो सुसमाधियप्पयो।
विपुलहित-सुहावहं पुणो, कुव्वति से पदखेममप्पणो ॥ १३ ॥

**५००. अधिगतचतुरसमाधिए॰** वृत्तम्। अविसेसमहिगताओ चतुरो समाधीओ जस्स सो **अधिगतचतुरसमाधितो**। मण-वयण-कायजोगेहिं सुट्ठु विसुद्धो **सुविसुद्धो**। दसविधे समणधम्मे सुट्ठु समाधितो अप्पा जस्स सो **सुसमाधियप्पयो**। **विपुलं** विसालं, **हितं** आयतिक्खमं, **सुहं** सातं, हितं सुहं च हित-सुहं, विउलं हित-सुहमावहति **विउलहितसुहावहं**। **पुणो**सद्दो सेससुहातिरेगेण मोक्खसुहविसेसणे वट्टति। **कुव्वति** करेति,

१ °ज्जा, **ततियं आयारसमाहीए पयं ३** वृद्ध० ॥ २, ४ ◁▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव० नास्ति ॥ ३ **°ज्जा, चउत्थं आयारसमाहीए पयं भवति ४** वृद्ध० ॥ ५ **आरुहंतिएहिं** मूलादर्शे ॥ ६ गुणमयम् ॥ ७ **भवइ यऽत्थ सिलोगो–जिण°** सर्वासु सूत्रप्रतिषु ॥ ८ **°णरए** अचू० विना ॥ ९ क्षायिकादि- ॥ १० **अभिगय°** वृद्ध०। **अभिगम्म** खं २ अचू० वृद्ध० विना ॥ ११ **चतुरो समाहिओ** सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**से** इति जं प्रति उवदेसो भण्णति, **पदं** थाणं, **खेमं** णिरवातं **अप्पणो**, वयणं जो करेति स एवाणुभवति कहंचि अविणट्ठो ॥ १३ ॥ जं विउलहित-सुहावहं पदं भणितं तस्स सरूवनिद्देसत्थं भण्णति—

५०१. जाति-मरणातो मुच्चति, इत्थत्तं च जहाति सव्वसो।
सिद्धे वा **भवति** सासते, देवे वा अप्परते महिड्ढिते ॥ १४ ॥ त्ति बेमि
विणयसमाधीए चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥ ४ ॥

विणयसमाही समत्ता ॥ ९ ॥

**५०१. जाति-मरणातो०** वृत्तम्। **जाती** समुप्पत्ती, देहपरिच्चागो **मरणं**, अहवा **जातीमरणं** संसारो, ततो **मुच्चति**। **इत्थत्तं च जहाति सव्वसो** अयं प्रकार **इत्थं**, णारग-तिरिय-मणुय-देवादिप्रकारनिद्देसो इत्थं, तस्स भावो **इत्थत्तं**, तं **जहाति** परिच्चयति **सव्वसो** सव्वपज्जवेहिं, ण जधा भवंतरादौ, सव्वहा। किं बहुणा? **सिद्धे वा भवति सासते**। सिद्धे इति भणिते पुणो सासयवयणं न विज्जातिसिद्धे, किं तर्हि? सव्वदुक्खविरहिते सासते। **देवे वा अप्परते** अप्पकम्मावसेसे अणुत्तरातिसु **महिड्ढिते** ॥ १४ ॥ **त्ति बेमि**। णयवयणं जधा पढमज्झयणेसु ॥

॥ चतुत्थुद्देसतो विणयसमाहीए चुण्णी समासपरिसमत्तं ॥ ४ ॥

पढमिलुद्देसत्थो विणयेणा[ऽऽराहणं] गुरूणं ति १। अविणयफलं अणिट्ठं बिइउद्देसस्स पिंडत्थो २ ॥ १ ॥
ततियस्स इहेव भवे विणयफलं जेण एस पुज्जो ति ३। सुत-तव-आयाराणं विणयो मूलं चतुत्थे [तु] ४ ॥ २ ॥

**विणयसमाधीए चुण्णी समत्ता इति ॥**

---

१. **जाई-जरा-मरणाओ** खं २ ॥ २ इत्थत्थं च अचू० विना ॥ ३ **चयाइ स**° खं १-३-४ हाटी० अव०। **चयइ** खं २ जे० शु० ॥ ४ **समत्ता** ॥९॥ **एसा विणयसमाही चउहिं उद्देसएहिं संखाया। असिईइ समहियाए गंथग्गेणं परिसमत्ता** ॥ खं २ ॥ ५ 'प्रथमाध्ययनेषु' पूर्वव्याख्यातेष्वध्ययनेष्वित्यर्थः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# १०

# [ दसमं सभिक्खुअज्झयणं ]

इह कंचि विणय-मति-धम्मसाहणे जोग्गं पुरिसं प्रति पढमज्झयणे धम्मो पसंसितो १ । धम्मसाहणत्थमेव बितिए [धिती] २ । धितीमतो य धम्मे ततिये आयारसमासो ३ । आयारो विदितजीवनिकायस्स भवतीति चतुत्थे जीवपरिण्णा ४ । विदितजीवस्स धम्मसाहणसरीरधारणत्थं पिंडसोही पंचमे ५ । कतसरीरधारणस्स छट्ठे महती आयारकधा ६ । आयारसुत्थियस्स परोवदेसणत्थं सत्तमे वयणविभत्ती ७ । विदियवयणविणियोगस्स मणोविसोधणट्ठमट्ठमे आयारप्पणिधी ८ । सुप्पणिधियस्स गुरुसमाराधणत्थं णवमे विणयो ९ । एवं णवअज्झयणाणुक्कमेण विणीयचेट्ठो जो दसमज्झयणगुणाणुक्करिसणे नियमिज्जति पुणो स भिक्खू इति एस **सभिक्खुआमिसंबंधो** । तस्स चत्तारि अणिओगद्दारा जधा **आवस्सए** । नामनिप्फण्णो सभिक्खू, सगारो निक्खिवितव्वो, भिक्खू य । सकारस्स निक्खेवो णामादि चउव्विहो । णाम-ट्ठवणातो गतातो । जाणगसरीरदव्वसगारो य जहा **सामाइए** । जाणगसरीरभवियसरीरवतिरित्तो दव्वसगारो इमेण गाहापुव्वद्धेण भण्णति—

**निद्देस पसंसाए अत्थीभावे य होति तु सकारो ।**

**निद्देस पसंसाए०** । सकारो तिसु अत्थेसु वट्टति—**निद्देसे १ पसंसाए २ अत्थिभावे ३ य** । निद्देसे जधा एत्थ—

नदीकूलं भित्वा कुवलयमिवोत्पाट्य सुतरून्, मदोद्धूतान् हत्वा कर-चरण-दन्तैः प्रतिगजान् ।
जरां प्राप्याऽनार्यां तरुणिजनविद्वेषणकरीं, स एवायं नागः सहति कलभेभ्यः परिभवम् ॥ १ ॥

पसंसाए जहा–सप्पुरिसो सज्जणो । अत्थित्ते जधा—सब्भावो एस । गतो दव्वसगारो । सगारोवयुत्तो जीवो भावसगारो ॥

**निद्देस पसंसाएँ य वट्टमाणेणं अधिगारो** ॥ १ ॥ ॥ २३० ॥

**निद्देस पसंसाए०** गाधापच्छद्धं । एतम्मि दसमज्झयणे **निद्देस पसंसाए [य] वट्टमाणेण अधिकारो** ॥ १ ॥ २३० ॥ कहं ? जेण—

**जे भावा दसकालियसुत्ते करणिज्ज वण्णित जिणेहिं ।**
**तेसिं समाणणम्मी जो भिक्खू इति भवति स भिक्खू** ॥ २ ॥ २३१ ॥

**जे भावा दसकालियसुत्ते०** [गाधा । जे भावा दसकालियसुत्ते] **करणिज्जा** इति **वण्णिता जिणेहिं तेसिं समाणणम्मि** कते ततो [जो] भिक्खू [इति] एवं **भवति**, जेण एते गुणा समाणिता स

---

१ निद्देस १ पसंसा २ अत्थिभावो ३ य मूलादर्शे ॥ २ °ए अधिकारो एत्थ अज्झयणे खं० वी० पु० सा० हाटी० ॥ ३ एत्थ दव्वसगारो मूलादर्शे ॥ ४ दसवेयालियम्मि कर° खं० वी० पु० सा० वृद्ध० हाटी० ॥ ५ सण्णिय वृद्ध० ॥ ६ समाणणम्मी सो–भिक्खू भण्णइ स भिक्खू वृद्ध० । समावणम्मी भिक्खू इह भण्णइ स भिक्खू हाटी० । समाणणम्मी जो भिक्खू ते (त्ति) भन्नइ स भिक्खू खं० । समाणणम्मि जो भिक्खू इह भन्नइ स भिक्खू वी० । समाणणम्मि ति जो भिक्खू भन्नइ स भिक्खू सा० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**भिक्खू**, एस निद्देससकारो। सोभणो सो भिक्खू भवति, एस पसंसाए। समाणणं पुण जं तेसिं गुणाणं आयरणं ॥ २ ॥ ॥ २३१ ॥ सगारो भणितो। भिक्खू भण्णति। तस्स इमा दारगाधा—

**भिक्खुस्स य णिक्खेवो १ णिरुत्त २ एगट्ठियाणि ३ लिंगाणि ४।**
**अगुणट्ठिए ण भिक्खु त्ति ५ अवयवा पंच ६ दाराइं ॥ ३ ॥ २३२ ॥**

**भिक्खुस्स य निक्खेवो** ० गाहा। भिक्खुस्स निक्खेवो भाणितव्वो १। तधा निरुत्तं २ एगट्ठियाणि ३ लिंगाणि ४ अगुणेसु ठितो ण भवति भिक्खू गुणेसु ठितो भवति ५। पंच य अवयवा ६। एताणि दाराणि ॥ ३ ॥ २३२ ॥ तत्थ इमो निक्खेवो—

**नामं ठवणा भिक्खू दव्वभिक्खू य भावभिक्खू य।**
**दव्वम्मि आगमादी अण्णो वि य पज्जयो इणमो ॥ ४ ॥ २३३ ॥**

**नामं ठवणा भिक्खू**० गाहा। चउव्विहं परूवेऊण नाम-ठवणातो गतातो। दव्वभिक्खू इमो, तं०— **दव्वम्मि आगमादी** दव्वभिक्खू दुविहो तं०—आगमतो णोआगमतो य। आगमतो जाणते अणुवउत्ते। णोआगमतो तिविहो, तं०—जाणगसरीरदव्वभिक्खू १ भवियसरीरदव्वभिक्खू २ जाणगसरीरभवियसरीरवतिरित्तो दव्वभिक्खू ३। [भिक्खुपदत्थाधिगारजाणगस्स सरीरं] मतं वा भिक्खुसरीरं जाणगसरीरदव्वभिक्खू, जधा—अयं घयकुंभे आसी १। भवियसरीरदव्वभिक्खू जो जीवो भिक्खुपदत्थाधिकारं जाणिधिती जधा—अयं घयकुंभे भविस्सति २। जाणगसरीरभवियसरीरवतिरित्तो दव्वभिक्खू तिविहो, तं०—एगभवियो बद्धाउओ अभिमुहणामगोतो। जो अणंतरं उव्वट्टिऊणं भिक्खू भविस्सति सो एगभविओ। भिक्खूसु जेण आउयं निबद्धं सो बद्धाउओ। जेण पदेसा निच्छूढा सो अभिमुहनामगोतो ३। अण्णो वि एतस्स भिक्खुणो **इणमो** इमो अण्णो वि **पज्जयो** ॥ ४ ॥ २३३ ॥ तं०—

**भेदतो भेदणं चेव भिंदितव्वं तहेव य।**
**एतेसिं तिण्हं पि य पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥ ५ ॥ २३४ ॥**

**भेदतो भेदणं चेव**० गाहा। दव्वं भिंदतीति दव्वभेदतो परूवेयव्वो १ दव्वभेदणं परूवेतव्वं २ दव्वभेत्तव्वं परूवेतव्वं ३। तं **परूवणमेतेसिं तिण्हं पि पत्तेय वोच्छामि** ॥ ५ ॥ २३४ ॥ सा परूवणा इमा—

**जध दारुकम्मकारो भेदण-भेत्तव्वसंजुतो भिक्खू।**
**अण्णे वि दव्वभिक्खू जे जातणका अविरता य ॥ ६ ॥ २३५ ॥**

**जध दारुकम्मकारो**० गाधा। जधासद्दो उद्देसवयणे। **दारुकम्मकारो** रहकारो सो भेततो। **भेदणं** परसू। **भेत्तव्वयं** कट्ठं। सो दारुकम्मकारो एतेहिं भेदण-भिंदियव्वेहिं **संजुत्तो** भवति, दव्वभिक्खू। तधा **अण्णे वि दव्वभिक्खू** ण दारुकम्मकार एव दव्वभिक्खू भवति, किंतु अण्णे वि दव्वभिक्खू **जे** पाणातिवाता-[दी]हिंतो **अविरता जातणका** य ते असंजता लोगमुवजीवमाणा दव्वभिक्खुणो भवंति ॥ ६ ॥ २३५ ॥ ते य दुविहा—गिहत्था लिंगिणो य। गिहत्था जधा—

---

१ **पज्जवो** सर्वासु निर्युक्तिप्रतिषु ॥ २ याजनका याचनका वा इत्यर्थः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**गिहिणो विसयारंभग उज्जुप्पण्णं जणं विमग्गंता ।**
**जीवणिय दीण किवणा ते विज्जा दव्वभिक्खु त्ति ॥ ७ ॥ २३६ ॥**

**गिहिणो विसयारंभय०** गाधा । **गिहिणो** वि होंति पंचेंदिय**विसयारंभगा** बंभणा, 'लोगाणुग्गहत्थं अम्हे हि अवयरिया' एवं उज्जुप्पण्णं उज्जुबुद्धी **जणं** णाणाउवादेहिं विविधं मग्गंता **विमग्गंता** दव्वभिक्खवो भवंति । अण्णे **जीवणिया**निमित्तं **कप्पडिकादयो दीणा** सरेण **किवणा** जातणेण **ते विज्जा** विज्ञेया **दव्वभिक्खु त्ति** ॥ ७ ॥ २३६ ॥ तधा कुपासंडिणो वि—

**मिच्छादिट्ठी तस-थावराण पुढवादि-बेंदियादीणं ।**
**णिच्चं वधकरणरता अबंभचारी य संचइया ॥ ८ ॥ २३७ ॥**

**मिच्छादिट्ठी०** गाधा । **रत्तवडादयो मिच्छादिट्ठिणो तस-थावराण [पुढवादि-बेंदियादीणं] । वधकरणे रता । अबंभचारिणो कावालियादयो रत्तवडादयो य संचइया** । एवमादयो दव्वभिक्खु(क्ख)वो भवंति ॥ ८ ॥ २३७ ॥ जे वि तेसिं 'सीलं रक्खामो' पडिवण्णा ते वि एवमबंभचारिणो भवंति—

**दुपय-चतुप्पय-धण-धण्ण-कुविय तिग-तिगपरिग्गहे निरता ।**
**सचित्तभोति पयमाणगा य उद्दिट्ठभोती य ॥ ९ ॥ २३८ ॥**

**दुपय-चतुप्पय०** गाहा । **दुपयाण** दासिमादीण **चतुप्पदाण** य महिसिमादीणं परिग्गहेण तग्गयमेधुणप्पयोगनिसेवणेण अबंभाणुमोदणयो अबंभचारिणो भवंति । संचयिया **धण[-धण्ण-]कुविय [तिग-तिग]परिग्गहे निरता, धणं** हिरण्णादि, **धण्णं** सालिमादि, **कुवितं** उवक्खरो कंस-दूसादि । सचित्ता-ऽचित्त-मीसाण दव्वाण मण-वयण-कायजोगेहिं **तिग-तिगपरिग्गहे निरता । सचित्तं** पाणियादि भुंजंता **पयमाणगा य,** सतमपतंता वि **उद्दिट्ठभोतिया** ॥ ९ ॥ २३८ ॥ **तिगतिगपरिग्गहे णिरता** य एवं—

**करणतिए जोगतिए सावज्जे आयहेतु पर उभए ।**
**अट्ठा-ऽणट्ठपवत्ते ते विज्जा दव्वभिक्खु त्ति ॥ १० ॥ २३९ ॥**

**करणतिए०** गाहा । करण-कारणा-ऽणुमोदणं मण-वयण-कायजोगेहिं आरंभे **आयहेतुं** सरीरोवभोगनिमित्तं, मित्त-सयणादीण **परट्ठा उभयट्ठा वा । अट्ठा** सरीरादीण **अणट्ठाए** परिहासादीहि पवत्तमाणा **ते विज्जा दव्वभिक्खु त्ति** ॥ १० ॥ २३९ ॥ एस दव्वभिक्खू । भावभिक्खू इमेण गाधापुव्वद्धेण भण्णति, तं०—

**आगमतो उवउत्तो तग्गुणसंवेदए तु भावम्मि ।**

**आगमतो उवउत्तो०** अद्धगाहा । भावभिक्खू दुविहो, तं०—आगमतो णोआगमतो य । आगमतो जाणए उवउत्ते । णोआगमतो **तग्गुणसंवेदए** भिक्खुगुणसंफासओ तग्गुणसंवेदओ । तेणाधिकारो । भावभिक्खू समत्तो । भिक्खूनिक्खेवो इति गतं १ । बितियं निरुत्तमिति दारं । तं०—

**तस्स निरुत्तं भेदग-भेदण-भेत्तव्वएण तिधा ॥ ११ ॥ २४० ॥**

---

१ **गिहिणो वि सयारंभग** इति पदच्छेदेन श्रीहरिभद्रसूरिपादैर्व्याख्यातमस्ति ॥ २ नानोपायैः ॥ ३ अब्रह्मानुमोदनात् ॥ ४ **°मोदमोदणयो अबंभ°** मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स निरुत्तं भेदग० गाहापच्छद्धं । तस्स पुव्वभणितस्स भिक्खुणो निरुत्तमेवं तिधा—भेदक-भेदण-भेत्तव्वएण ॥ ११ ॥ २४० ॥ एतेसिं तिण्हं पि इमं निदरिसणं । तं०—

भेत्ताऽऽगमोवयुत्तो दुविह तवो भेदणं च भेत्तव्वं ।
अट्ठविधं कम्मखुहं तेण णिरुत्तं स भिक्खु त्ति ॥ १२ ॥ २४१ ॥

भेत्ताऽऽगमोवयुत्तो० गाहा । आगमोवयुत्तो साधू [भेत्ता] भेदयो । बाहिर-ऽब्भंतरो तवो दुविहो भेदणं । भेत्तव्वमट्ठविधं कम्मं तं च खुहं, जम्हा तं भिंदति अतो निरुत्तं स भिक्खु त्ति ॥ १२ ॥ २४१ ॥ निरुत्तावसरे एगट्ठिताणि य से—

भिंदंतो यावि खुधं भिक्खू जतमाणतो जती भवति ।
संजमचरयो चरयो भवं खवेंतो भवंतो तु ॥ १३ ॥ २४२ ॥

भिंदंतो यावि खुधं०गाहा । जधा खुहं भिंदंतो भिक्खू भवति तधा जतमाणतो जती भवति । सत्तरसविधं च संजमं चरमाणयो चरयो भवति । भवमवि चतुप्पगारं खवेमाणो भवंतो भवति ॥ १३ ॥ २४२ ॥ अधवा भिक्खुसद्दस्स इमेण पज्जायंतरेण निरुत्तं भण्णति । अप्पसंगेण खमण-तवस्सीसद्दाण निरुत्तं । तं जधा—

जं भिक्खमेत्तवित्ती तेण व भिक्खू खवेति जं व अणं ।
तव-संजमे तवस्सि त्ति वा वि अण्णो वि पज्जायो ॥ १४ ॥ २४३ ॥

जं भिक्खमेत्तवित्ती० गाहा । जम्हा भिक्खमेत्तवित्ती भवति अतो भिक्खू भण्णति । अणं कम्मं, जम्हा य अणं खवयति तम्हा खवणो भण्णति । तव-संजमे वट्टमाणो तवस्सी भण्णति । तस्सेव भिक्खुसद्दस्स अण्णो एसो खवण-तवस्सीमादी णिरुत्तपज्जायो भवति ॥ १४ ॥ २४३ ॥ णिरुत्तं भणितं २ । एगट्ठिताणि भिक्खुणो तिहिं गाहाहिं इमाहिं भण्णति—

तिण्णे तायी दविए वती य खंते य दंत विरते य ।
मुणि तावत पण्णवगुज्जु भिक्खु बुद्धे जति विदू य ॥ १५ ॥ २४४ ॥

पव्वयिये अणगारे पासंडी चरय बंभणे चेव ।
पारिव्वाये समणे निग्गंथे संजते मुत्ते ॥ १६ ॥ २४५ ॥

साधू लूहे य तधा तीरट्ठी होति चेव णातव्वे ।
णामाणि एवमादीणि होंति तव-संजमरताणं ॥ १७ ॥ २४६ ॥

तिण्णे तायी दविए० गाहा । पव्वयिये अण० गाधा । साधू लूहे० गाधा । जम्हा संसारसमुद्दं तरति तरिस्सति वा अतो तिण्णे । जम्हा त्राएति संसारसागरे पडमाणे जीवे तम्हा तायी । राग-दोसविरहित इति दविए । वयाणि से संतीति वती । खमतीति खंतो । इंदिय-कसायदमणेण दंतो । पाणवधादीणियत्तो विरतो । विजाणतीति मुणी, सावज्जेसु वा मोणवतीति मुणी । तवे ठितो तावतो । पण्णवतीति पण्णवयो । मातरहितो

१ य अह खुहं खं० वी० सा० ॥ २ तावस खं० वी० सा० वृद्ध० हाटी० ॥ ३ परिवायगे य समणे वी० सा० ॥
४ मौनव्रतीति ॥ ५ मायारहितः ॥

१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संजमे वा ठितो **उज्जु**। **भिक्खू** पुव्वभणितो। बुज्झतीति **बुद्धो**। जतणाजुत्तो **जती**। णाणासति ति(?त्ति) विदू॥ १५॥ २४४॥ एगाए गाधाए अत्थो भणितो। बितियाए पुण—

बंधादीयो पावादो व्रजितो **पव्वयितो**। अगारं गृहं, तं से णत्थि **अणगारो**। अट्ठविधकम्मपासातो डीणो **पासंडी**। तवं चरतीति **चरयो**। अट्ठारसविधं बंभं धारयतीति **बंभणो**। भिक्खणसीलो **भिक्खू**। पावपरिवज्जणेण **पारिव्वायो**। सममणो **समणो**। बाहिर-ऽब्भंतरगंथविरहितो **निग्गंथो**। अहिंसादीहिं **संजते**। ते[हिं] चेव बाहिर-ऽब्भंतरेहिं गंथेहिं विप्पमुक्को **मुत्तो**॥ १६॥ २४५॥ बितियाए गाधाए अत्थो भणितो। ततियाए पुण—

णेव्वाणसाधए जोए साधयतीति **साधू**। अंत-पंतेहि लूहेहि जीवतीति **लूहे**, अधवा राग-सिणेहविरहिते **लूहे**। संसारसागरस्स तीरं अत्थयति—मग्गतीति **तीरट्ठी**, संसारसागरस्स वा तीरे ठितो **तीरट्ठी**॥ १७॥ २४६॥ एताणि भिक्खुणो एगट्ठिताणि ३। लिंगाणि पुणो से इमाहि दोहिं गाहाहिं भण्णंति। तं०—

**संवेगो निव्वेगो विसयविरागो सुसीलसंसग्गी।**
**आराधणा तवो णाण दंसण चरित्त विणओ य॥ १८॥ २४७॥**

**खंती य मद्दवऽज्जव विमुत्तया तह अदीणय तितिक्खा।**
**आवस्सगपरिसुद्धी य होंति भिक्खुस्स लिंगाणि॥ १९॥ २४८॥**

**संवेगो निव्वेगो**०गाधा। **खंती य मद्दवऽज्जव**०गाहा। जिणपणीए धम्मे कहिज्जमाणे पुव्वा-ऽवरविरुद्धेसु परसमएसु दूसिज्जमाणेसु संवेगगमणं, सो तस्स **संवेगो** भिक्खुलिंगं। गब्भे वा णरगादिभयेसु निव्वेगगमणं **निव्वेगो** भिक्खुभावलिंगं। तहा सद्दाति**विसयविरागो** भिक्खुलिंगं। तहा **सुसीलेहिं संसग्गी** भिक्खुलिंगमेव। तधा इहलोग-परलोगा**राधणा** भावभिक्खुलिंगं। एवं **तवो** बाहिर-ऽब्भंतरो। आभिणिबोहियणाणादि पंचविधं **णाणं**। सम्म**द्दंसणं** दुविहं णिसग्गज[मधि]गमजं च। **चरित्तं** अट्ठारससीलंगसहस्समयं। **विणओ य विणयसमाधीए** पुव्वभणियो। एते सव्वे वि भेया भिक्खुणो लिंगाणि भवंतीति। एगाए गाहाए अत्थो गतो॥ १८॥ २४७॥ अक्कोसादिखमणं **खंती** भावभिक्खुलिंगं। तधा **मद्दवं** भावभिक्खुसाहणं। एवमज्जवमवि। आहारादिसु **विमुत्तया**। आहारत(?स) अलाभे **अदीणता**। एवं बावीसपरीसह**तितिक्खणं**। अवस्सकरणीयजोगाणुट्ठाणं॥ १९॥ २४८॥ जधा भिक्खू भवति ण भवति वा एत्थ पंचावयवा। तं०—

**अज्झयणगुणी भिक्खू, ण सेस, इति एस णे पतिण्ण त्ति १।**
**अगुणत्ता इति हेतू २ को दिट्ठंतो? सुवण्णमिव ३॥ २०॥ २४९॥**

**अज्झयण**० गाधा। 'जे एतम्मि अज्झयणे भिक्खुगुणा भण्णिहिन्ति तेहिं गुणेहिं जुत्तो भाव**भिक्खू**, ण **सेसा**' **इति एस णे** एसा अम्हं **पतिण्णा** १। हेतू दिट्ठंतो य इमेण गाहापच्छद्धेण भण्णति—[**अगुणत्ता इति हेतू**० गाहापच्छद्धं।] पुव्वं पतिण्णा, तयत्थसाधणत्थमयं हेतू भण्णति—अगुणजुत्तया अण्णेसिं अभिक्खुभावे कारणं। दिट्ठंतो सुवण्णं॥ २०॥ २४९॥ दिट्ठंतयाए उवण्णत्थस्स सुवण्णस्स इमे अट्ठ गुणा भवंति। तं जधा—

१ नानास्मृतिरिति (?)॥ २ बधादितः पापात्॥ ३ °यविवेगो खं० वी० सा० वृद्ध० हाटी०॥ ४ **इति णे पइन्न, को हेऊ?**। अगु° खं० वी० सा० वृद्ध० हाटी०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**विसघाति १ रसायण २ मंगलत्त ३ विणिए ४ पयाहिणावत्ते ५।**
**गुरुए ६ अडज्झ७ऽकुच्छे ८ अट्ठ सुवण्णे गुणा भणिता ॥ २१ ॥ २५० ॥**

**विसधाति रसायण०** गाथा। विसघातित्तं १ रसायणता २ मंगलता ३ जधाभिप्पेतकुंडलादिपरिणतिसामत्थं विणीयता ४ आवट्टमाणस्स पदाहिणावत्तया ५ गुरुता ६ अदहणिज्जता ७ अकुहणं ८ एते सुवण्णगुणा ॥ २१ ॥ २५० ॥ उवसंहारो भण्णति—

**चतुकारणपरिसुद्धं कस-छेदण-ताव-तालणाए यँ।**
**जं तं विसघाति–रसायणादिगुणसंजुतं होति ॥ २२ ॥ २५१ ॥**

**चतुकारण०** गाहा। चतुहिं कारणेहिं–णिहस-च्छेद-तावें-तालणाहिं परिसुद्धं सुवण्णं भण्णति। **जं च** एतेहिं **परिसुद्धं** तमेव **विसघाति-रसायण**-गुरुय-मडज्झ-अकुधणा**दिगुणसंजुतं भवति** ॥ २२ ॥ २५१ ॥ किंच—

**तं[5] कसिणगुणोवेतं होति सुवण्णं, ण सेसयं जुत्ती।**
**न[6] य नाम-रूवमत्तेण एवमगुणो भवति भिक्खू ॥ २३ ॥ २५२ ॥**

**तं कसिणगुणोवेतं०** गाहा। जधा **तं कसिणेहिं** णिरवसेसेहि **गुणेहि उववेतं सुवण्णं** भवति, **ण** पुण **सेसं जुत्ती** कतसुवण्णपडिरूवगं सुवण्णं भवति। जधा सुवण्णपडिरूवगं सुवण्णं न भवति तधा **[न य] नाम-रूवमत्तेण** भिक्खुगुणेहिं अजुत्तो **भिक्खू भवति** ॥ २३ ॥ २५२ ॥ किंच—

**जुत्तीसुवण्णगं पुण सुवण्णवण्णं तु जति वि कीरेज्जा।**
**ण हु होति तं सुवण्णं सेसेहि गुणेहऽसंतेहिं ॥ २४ ॥ २५३ ॥**

**जुत्तीसुवण्णगं पुण०** गाथा। तं **जुत्तीसुवण्णगं** आरकूडगादि तं **जति वि** केणति उवातेण **सु[वण्ण]-वण्णं कीरेज्जा** तधा वि **ण हु होति तं सुवण्णं सेसेहिं** णिहसादीहि **गुणेहि असंतेहिं** ॥ २४ ॥ २५३ ॥ तधा —

**जे अज्झयणे भणिता भिक्खुगुणा तेहि होति सो भिक्खू।**
**वण्णेणं जच्चसुवण्णगं व संते गुणनिहिम्मि ॥ २५ ॥ २५४ ॥**

**जे अज्झयणे भणिता०** गाथा। **जे** एतम्मि **अज्झयणे भिक्खुगुणा भणिता तेहि** उववेतो **सो होति भिक्खू**। जेण य सव्वदेव सुद्धाऽणवज्जभिक्खवित्ती अतो। अण्णेसु गुणेसु संतेसुं चेव वण्णप्पधाणेण सोभण-वण्णमिति सुवण्णं। ण पुण भिक्खणमेत्तेण भिक्खू ॥ २५ ॥ २५४ ॥

**जो भिक्खूगुणरहितो भेक्खं हिंडति ण होति सो भिक्खू।**
**वण्णेणं जुतिसुवण्णगं व असती गुणणिधिम्मि ॥ २६ ॥ २५५ ॥**

१ °लत्थ ३ विणि° खं० वी० सा० हाटी० ॥ २ होंति खं० ॥ ३ य। तं विसघाय रसायण गुरुगमडज्झं अकुच्छं च खं० ॥ ४ °च-अलणिहिं परि° मूलादर्शे ॥ ५ तं निहसगुणोवेयं वृद्ध० ॥ ६ ण वि णाम° खं० वी०। न हि नाम° सा० हाटी० ॥ ७ °सु वि वण्ण° मूलादर्शे ॥ ८ °क्खं गेण्हइ न खं० सा०। "भिक्षामटति" इति हाटी० ॥

**जो भिक्खू गुणरहितो०** गाधा। **जो भिक्खूगुणविरहितो भेक्खं हिंडति ण सो** भिक्खमेत्तेण **भिक्खू भवति**। कधं? जधा **वण्णेण** जुत्तमवि **जुत्तीसुवण्णगमसुवण्णं, असति** निहसादिसुवण्णगुणविरथरे ॥ २६ ॥ २५५ ॥ 'भिक्खणसीला सव्वे भिक्खवो' त्ति मंण्णंते[1] उवालभंतेहि भण्णति—

> **उद्दिट्ठकडं भुंजति छक्कायपमद्दणो[2] घरं कुणति।**
> **पच्चक्खं च जलगते जो पियति कधण्णु सो भिक्खू? ॥ २७ ॥ २५६ ॥**

**उद्दिट्ठकडं०** गाधा। जो **उद्दिट्ठकडं भुंजति**, पुढविमादि**छक्कायपमद्दणेण** जो **घरं कुणति, पच्चक्खं च जलगते** पूतरगादि **पियति**। **कधं**सद्दो पुच्छाए, **णु**सद्दो वितक्के। प्रकारवितक्केण पुच्छति—केण प्रकारेण उद्दिट्ठादिभोयिणो भिक्खुगा? ॥ २७ ॥ २५६ ॥ उवसंहाराणंतरं णिगमणं भण्णति—

> **तम्हा जे अज्झयणे भिक्खुगुणा तेहि होति सो भिक्खू।**
> **तेहि य सउत्तरगुणेहि चेव सो भावितत्तरो उ ॥ २८ ॥ २५७ ॥**

**तम्हा जे अज्झयणे०** गाधा। जतो गुणेहि भिक्खू भवति **तम्हा जे** एतम्मि दस**मज्झयणे** मूलगुणा भणिता **तेहिं** समण्णितेहिं समणुगतो **भिक्खू भवति**। पिंडविसोधि-समितिमादि उत्तरगुणा, **तेहि य सउत्तर-गुणेहिं चेव** सउत्तरगुणेहिं भिक्खुभावेण **[सो] भावितत्तरो** भवति ॥ २८ ॥ २५७ ॥ नामनिप्फण्णो निक्खेवो गतो। सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेतव्वं जधा **अणियोगद्दारे**। तं च सुत्तं इमं—

> ५०२. णिक्खम्ममाणाए[3] बुद्धवयणे, निच्चं चित्तसमाहितो भवेज्जा।
> इत्थीण वसं ण यावि गच्छे, वंतं णो पॅडियायियती[4] स भिक्खू ॥ १ ॥

**५०२. णिक्खम्ममाणाए०** वृत्तम्। वैतालिकजातिः। निक्खम्मं निक्खमिऊण। निग्गच्छिऊण गिहातो आरंभातो वा **आणा** वयणं संदेसो ताए **निक्खम्ममाणाए**। **बुद्धा** जाणगा तेसिं **वयणं बुद्धवयणं** दुवालसंगं गणिपिडगं, तत्थ आणाए निक्खम्मं पुव्वं, पच्छा **[निच्चं] चित्तसमाहितो भवेज्जा**, पच्छा सत्तीए बुद्धवयणे एव **निच्चं** सव्वकालमेव **चित्तं** मणो तं **समाहितं** जस्स सो **चित्तसमाहितो** तधा **भवेज्ज**। चित्तसमाधाणविग्घभूता विसया, तत्थ वि पाहण्णेण इत्थिग त्ति भण्णति—**इत्थीण वसं ण यावि गच्छे वसो** छंदो, विसयाणुरागा ण इत्थिवसगतो होज्ज। **अपि**सद्दो 'एत्थ दढव्वतो सेसेसु दढव्वतो'त्ति संभावेति तासिं अवसगतो **वंतं** असंजमं **ण पॅडियायियति**[5] अतो **ण गच्छे**, अपडिगमणेण य ण पडियातियते। जो एवं चित्तसमाहितो इत्थीण वसमगच्छमाणो वंतं ण पडियापिबेत् **स भिक्खू**, एस निद्देसे। पसंसाय सोहणो भिक्खू **सभिक्खू**। चोदगो भणति—'**निक्खम्ममाणाय बुद्धवयणे सभिक्खू**' इति च वयणेण सभिक्खू एस? आयरिया भणंति—णणु दव्वभिक्खू भिक्खुत्तणेण निवारितो, जधा—

> उद्दिट्ठकडं भुंजति छक्कायपमद्दणो घरं कुणति।

---

१ मन्यमानान् ॥ २ °**मद्दओ घरं** सा० हाटी० ॥ ३ °**णाय बु**° खं २-३ जे० शु० वृद्ध० अचूपा० ॥ ४ **पडियायियई स** खं १-२। **पडियातियति स** वृद्ध०। **पडियायई जे स** शु०। **पडिआयए स** खं ३। **पडियाइ स** खं ४ जे०। श्रीमद्भिरगस्त्यसिंहपादैः **पडियायियति** पाठः प्राकृतभाषासम्बन्धिव्यञ्जनविकारसम्भावनया **पडियातियते** इति **पडियापिबेत्** इति च प्रकारद्वयेनापि व्याख्या-तोऽस्ति। **श्रीहरिभद्रवृत्तौ अवचूर्यां च प्रत्यापिबति** इति व्याख्यातमस्ति। **वृद्धविवरणकृता** पुनः **पडियातियति** इत्येतावन्मात्र-मुल्लिखितमस्ति ॥ ५ **पडियायिति** मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चक्खं च जलगते जो पिबति कहण्णु सो भिक्खू ? ॥ १ ॥ [निज्जुत्तिगा० २५६]

तप्परिच्चागेण भावभिक्खुणा अधिगारो। तदुवदेसतो वि ण भावबुद्धो, जतो छक्काये तेसिं जयणं [च] ण जाणति। भावबुद्धो पुण तित्थगरो, जेण भावभिक्खुलक्खणमणेग[विह]मुपदिट्ठं, तम्हा ण दोसोऽयं ॥ १ ॥ उत्तमवि भावबुद्धस्स भावभिक्खुणो य णियामकमिमं छक्कायदयावयणं। तत्थ पढमुद्दिट्ठस्स पुढविकायस्स ताव भण्णति—

५०३. पुढविं ण खणे ण खणावए, सीतोदगं णं पिबे ण समारभेज्जा।
अगणिसत्थं जधा सुणिसितं, तं ण जले ण जलावए स भिक्खू ॥ २ ॥

**५०३. पुढविं ण खणे०** वृत्तम्। आराभागेण अंतरियाण तस-थावराण विणासणमिति **पुढविं** सयं **ण खणे**, परेण **ण खणावए**, तज्जातियाण गहणमिति[2] अण्णं खणंतमवि ण समणुजाणेज्जा। **सीतोदगं ण पिबे ण समारभेज्जा**, अविगतजीवं **सीतोदगं**, तं **ण पिबे**, ण वा हत्थादिधोवणादिकज्जे **समारभेज्जा** मण-वयण-कायजोगेण करण-कारणा-ऽणुमोदणेण वा। **अगणि सत्थं जधा सुणिसितं** ति जधा खग्ग-परसु-छुरिगादिसत्थमणुधारं छेदगं तधा समंततो दहणरूवं, **तं न जले** सयं, **ण जलावए** परेण, [परं] णाणुमोदए। जो एवं पुढविमादिदयापरो **स भिक्खू**। सीसो भणति—**छज्जीवणिकाए** वि एस अत्थो, जहा **से पुढविं वा भित्तिं वा०** [सुत्तं ४९] एवमादि, **पिंडेसणाए** वि **पुढविजीवे ण(? वि)हिंसेज्जा** [सुत्तं १६७] तहा **उदओल्लेण हत्थेण** [सुत्तं ११६] एवमादि, **धम्मत्थकामाए** वि **वयछक्क०** [निज्जुत्तिगा० १७०] **आयारप्पणिधीए** वि **पुढविं भित्तिं** [सुत्तं ३७३] एवमादि, सेसेसु अज्झयणेसु वि पायो छक्कायपरिहरणमेव, किं पुणो दसमज्झयणे काया चेव ? कधं एतं पुणरुत्तं ?। आयरिया आह—अवीसरणत्थं सीसस्स पुणोपुणोवयणं, विदेसगमणे सुतहितोवदेसवत्। अपि च—

"अनुवादा-ऽऽदर-वीप्सा-भृशार्थ-विनियोग-हेत्वसूयासु। ईषत्सँम्भ्रम-विस्मय-गणना-स्मरणेष्वपुनरुक्तम् ॥ १ ॥
आदरोपदरिसणत्थमिह, अतो कायव्वयोवदेसे ण पुणरुत्तं ॥ २ ॥ पत्थुयं कायुद्देसाणुपुव्वीए भण्णति—

५०४. अणिलेण णों वियावए ण वीए, हरियाणि ण छिंदावए ण छिंदे।
बीयाणि सदा विवज्जयंतो, सच्चित्तं णाऽऽहारए स भिक्खू ॥ ३ ॥

**५०४. अणिलेण ण०** वृत्तम्। **अणिलो** वायू तेण अप्पणो कायं बाहिरं वा पोग्गलं परेण **ण वियावए** सयं **ण विए**। अण्णेसु ठाणेसु पढमं सयं करणं पच्छा परेण कारणं, इह पुण विवरीयं, कध पुण इदं ? भण्णति—चित्रोपदेशं सूत्रं भगवत इति तदत्थमिदं वयणं। समाणजातीयसवणेण अणुमोदणमवि। **हरियाणि ण छिंदावए ण छिंदे** हरितवयणं सव्ववणस्सतिसूयगं, करण-कारणा-ऽणुमोदणाणि तहेव। **बीयाणि सदा विवज्जयंतो**, बीयवयणं कंदादिसव्ववणस्सतिअवयवसूयकं। सच्चित्तवयणं पत्तेय-साधारणवणस्सतिगहणत्थं, एवं सव्ववणस्सति **सच्चित्तं णाऽऽहारए**। एवंगुणसंपण्णो **स भिक्खू** भवति ॥ ३ ॥ पुढविमादीण पत्तेयमुपरोधपरिहरणमुपदिट्ठं। तेसिं पुणो सव्वेसिं एगिंदियादीणं परिहरणनिमित्तं भण्णति—

---

१ ण पिए ण पियावए। अगणि° अचू० वृद्ध० विना ॥ २ °मिति भखणं° मूलादर्शे ॥ ३ °मादि से अज्झ° मूलादर्शे ॥ ४ ° त्सम्भ्रमविस्मय° मूलादर्शे ॥ ५ न वीए न वियावए हरि° अचू० वृद्ध० विना ॥ ६ °याणि न छिंदे न छिंदावए। बी° अचू० विना ॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

५०५. वहणं तस-थावराण होइ, पुढवि[1]-दग-कट्ठणिस्सियाणं ।
तम्हा उद्देसियं ण भुंजे, णो[2] पए ण पयावए[3] स भिक्खू ॥ ४ ॥

५०५. **वहणं तस-थावराण०** वृत्तम् । **वधणं** मारणं तं **तसाण** [4]बितिंदियादीण **थावराण** य पुढविमादीणं उद्देसिए संभवति । अतो वधणपरिहारी **तम्हा उद्देसियं ण भुंजे, ण पए ण पयावए**। उद्देसियपरिहरणेणाणुमोदणं निसिद्धमेव। अण्णेण वि लोगजत्तातिणा केणति कारणेण **ण पए ण पयावए स भिक्खू** ॥ ४ ॥ उद्देसियपरिहरणं भगवतैवोपदिट्ठं, ण परेण, अतो सव्वहा—

५०६. [5]रोतिय णायपुत्तवयणं, अ[6]त्तसमे मण्णेज्ज छप्पि काए ।
पंच य फासे महव्वताणि, पंचासव संव[7]रे स भिक्खू ॥ ५ ॥

५०६. **रोतिय णायपुत्त०** वृत्तम् । रुयिं उप्पायेऊण अप्पणो **रोयिय** णातकुलुप्पण्णस्स **णातपुत्तस्स** भगवतो **वद्धमाणसामिणो वयणं** तं रोयेऊण **अत्तसमे मण्णेज्ज** अप्पणो तुल्ले "जध मम पियं ण दुक्खं" [अनुयोग-पत्रं २५६] एवमण्णेसामवीति एवं **मण्णेज्ज** जाणेज्जा, मण्णमाणो य आ(? का)तवधं परिहरेज्जा, **छप्पि** पुढविमादी। तधामण्णमाणो पाणातिवायवेरमणादीणि **पंच य फासे महव्वताणि, फासणं** आसेवणं। **पंचासवदाराणि** इंदियाणि, ताणि आसवा चेव, ताणि **संवरे** । कहं ?

सद्देसु त भद्दय-पावएसु सोतविसयं उवगतेसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १ ॥"
[णायाधम्म० श्रु० १ अ० १७ प्रान्ते]

एवं सव्वेसु एवंगुणो भवति **स भिक्खू** ॥ ५ ॥ भणिता मूलगुणा । उत्तरगुणा पुण—

५०७. चत्तारि वमे सदा कसाये, धु[8]वजोगी य भवेज्ज बुद्धवयणे ।
अधणे णिज्जायरूव[9]-रयते, गिहिजोगं परिवज्जए[10] स भिक्खू ॥ ६ ॥

५०७. **चत्तारि वमे सदा कसाये०** वृत्तम् । पंचसु महव्वएसु ठितप्पा कोधादी **वमे चत्तारि सदा कसाए। धुवजोगी य भवेज्ज बुद्धवयणे बुद्धा** जिणा तेसिं वयणं **बुद्धवयणं** तम्मि । **जोगो** [11]काय-वातमणोमतं कम्मं, सो धुवो जोगो जस्स सो **धुवजोगी**ति, जोगेण जहाकरणीयमायुत्तेण पडिलेहणादिओ जोगो तत्थ णिच्चजोगिणा, ण पुं[12]ण कदादि करेति कदायि न करेति। भणितं च—"जोगे जोगे जिणसासणम्मि दुक्ख०" [ओघ० नि० गा० २७७]। **बुद्धवयणे** दुवालसंगे गणिपिडए **धुवजोगी** पंचविधसज्झायपरो । **धणं** चउप्पदादि तं जस्स नत्थि **से अहणो**। अकृतकं सुवर्णं **जातरूवं, रयतं** रुप्पं, निग्गतो जातरूव-रययातो तदुपादाणेण निग्गतो जतो स भवति **णिज्जायरूव-रयते**। **गिहिजोगो** जो तेसिं वावारो पयण-पयावणं तं **परिवज्जए स भिक्खू** ॥ ६ ॥ धम्मोवएसणप्पभिति सम्मद्दंसणमुवदिट्ठं। तस्स वामोहका[रण]बोहणत्थं भण्णति—

---

१ **पुढवि तण-कट्ठ**° खं १ अचू० वृद्ध० विना ॥ २ **णो वि पए** अचू० वृद्ध० विना ॥ ३ °**ए जे स** खं ३-४ जे० अचू० वृद्ध० विना ॥ ४ द्वीन्द्रियादीनाम् ॥ ५ **रोइयनायपुत्तवयणे** सर्वासु सूत्रप्रतिषु ॥ ६ **अप्पसमे** शु० ॥ ७ "पंचासव**संवरे** णाम पंचिंदियसंवुडे" इति वृद्धविवरणानुसारेण **श्रीहरिभद्र**पादादिभिः "पञ्चाश्रवसंवृतश्च" इति व्याख्यातं सम्भाव्यते। **संवरए जे स** खं २-४ शु० । **संवरए य जे स** खं १-३ ॥ ८ **धुयजो**° जे० ॥ ९ °**रूय-र**° खं १ जे० ॥ १० °**ए जे स**° खं १-२ शु० ॥ ११ काय-वाग्-मनोमयम् ॥ १२ **पुण कादि** मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५०८. सम्मदिट्ठी सदा अमूढे, अत्थि हु णाणे तवे य संजमे य।

तवसा धुणति पुराणपावगं, मण-वति-कायसुसंवुडे स भिक्खू ॥ ७ ॥

५०८. **सम्मद्दिट्ठी सदा०** वृत्तम्। सब्भावसद्दहणालक्खणा [सम्मा,] सम्मा दिट्ठी सा जस्स सो सम्मद्दिट्ठी। परतित्थिविभवादीहिं **सदा अमूढे**। एवं च अमूढे **अत्थि हु णाणे**, तस्स फले, **तवे य** बारसविहे सफले, सत्तरसविहे य **संजमे**, ताणि य इमम्मि चेव जिणसासणे। एवं मणसा सुणिच्छितेण **तवसा धुणति पुराणपावगं** अणेगभवसतोवतियं पावं णवकम्मासवणिरोधहेतुं। **मण-वति-कायसुसंवुडे** मणसा अकुसलमणनिरोधो कुसलमणउदीरणं वा, वायाए जधा **वक्कसुद्धीए** उवदिट्ठं तहा भासणं मोणं वा, काएण अजुत्तचेट्ठानिरोहो। एवं एतेहिं संवुडे **स भिक्खू** ॥ ७ ॥ सति सम्मद्दंसणे आहारनियमो भिक्खुभावोपपादण इति भण्णति—

५०९. तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइम साइमं लभित्ता।

होहिति अट्ठो सुते परे वा, तं ण णिहे ण णिहावएँ स भिक्खू ॥ ८ ॥

५०९. **तहेव असणं०** वृत्तम्। **तहेवेति** पुव्वभिक्खुभावसाधगं कारणसारिस्सत्थं। **असण-पाण-खाइम-साइमाणि** पुव्वभणिताणि। तेसिं अण्णतरं सव्वाणि वा **लभिऊण** उवयुत्तसेसं सरसं वा लोभेणं **होहिति अट्ठो** छुहाए अण्णस्स अत्थित्तं **सुते** कल्ले **परे** ततो परतरेण। एतेण पणिधाणेण **तं** सयं **ण णिहे** परेण **ण णिहावए स भिक्खू** ॥ ८ ॥ भिक्खुभावप्पसाधगमेव आहारसंविभागकरणं सपक्खे भण्णति—

५१०. तहेव असणं पाणगं वा, विविहं खाइम साइमं लभित्ता।

छंदिय साधम्मियाण भुंजे, भोच्चा सज्झायरते य जे स भिक्खू ॥ ९ ॥

५१०. **तहेव असणं०** वृत्तम्। **तहेवेति** भिक्खुत्तणे कारणस्स निरूवणं। **असण-पाण-खाइम-साइमाणि लभित्ता छंदिय साधम्मियाण भुंजे छंदो** इच्छा, इच्छाकारेण जोयणं छंदणं, एवं **छंदिय**, **साधम्मिया** समाणधम्मिया साधुणो जति गेण्हंति तेसिं दाऊण। सेसं अगढिते कतविणयो सव्वं एतेण कमेण भुंजिऊण ण विकधा-विसोत्तियारते, किंतु पंचविहे **सज्झायरते य जे स भिक्खू** ॥ ९ ॥ आहारसमुप्पादयप्राणो सुंधं विकहा-विग्गहेहि अच्छति तन्निवारणत्थं भण्णति—

५११. ण य विग्गहियं कधं कहेज्जा, ण य कुप्पे णिहुतिंदिए पसंते।

संजमधुवंजोगजोगजुत्ते, उवसंते अविहेढएँ स भिक्खू ॥ १० ॥

५११. [**ण य विग्गहियं०** वृत्तम्।] भुत्तुत्तरकालं **ण य विग्ग[हियं क]हं** ण इति पडिसेहसद्दो विग्गहकधानिवारणत्थं। चसद्दो पुव्वकारणसमुच्चयत्थो। **विग्गहो** कलहो, तम्मि तस्स वा कारणं **विग्गहिता**। जधा—अमुगो एरिसो राया देसो वा, एत्थ सज्जं कलहो समुप्पज्जति। जति वि परो कहेज्ज तधा वि 'अम्हं रायाणं देसं वा

---

१. हु जोगे नाणे य सं° वृद्ध० ॥ २ °वुडे जे स खं १-२ शु० ॥ ३ सम्मा दिट्ठी मूलादर्शे ॥ ४ सोमदिट्ठी मूलादर्शे ॥ ५ पाए णव° मूलादर्शे ॥ ६ होही अ° सर्वासु सूत्रप्रतिषु ॥ ७ °ए जे स खं १-२ शु० ॥ ८ विकथा-विश्रोतसिकारतः ॥ ९ इत्तम् ॥ १० वुग्गहियं सर्वासु सूत्रप्रतिषु ॥ ११ °धजोगजुत्ते अचू० विना ॥ १२ अविहेडए खं ४ अचू० विना ॥ १३ °ए जे स खं १-२ जे० शु० ॥

णिंदसि 'त्ति **ण कुप्पेज्जा**। वादादौ वा सयमवि कहेज्जा विग्गहकहं, ण य पुण कुप्पेज्जा। तं कज्जत्थमेव **निहुत-**सोतातिइंदियो करेज्ज। कोधादिअणुद्धते **पसंते**। संजमे धुवजोगो तदवस्सकरणीयाण, संजमधुवजोगे काया-वाया-मणोमतेण जोगेण जुते **संजमधुवजोगजोगजुत्ते**। लोगविग्गहकधातो वि उवेच्च संते **उवसंते**। परे विग्गह-विकधापसंगे सुसमत्थो वि ण तालणादिणा विहेढयति एवं **अविहेढए**। उवसंते अविहेढए वा **स भिक्खू** ॥ १० ॥ ण य कुप्पेज्ज त्ति सेः(स)हणमुपदिट्ठं। इदमपि भिक्खुभावसाधगं सर्वणमुपदिस्सति—

> ५१२. जो सहइ हु गामकंटके, अक्कोस-पहार-तज्जणाओ य।
> भय-भेरव सद्द संपहासे, समसुह-दुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥ ११ ॥

५१२. **जो सहइ हु०** वृत्तम्। **जो** इति उद्देसवयणं, **सहति** मरिसेति, सोतादिइंदियसमवादो **गामो**, तस्स **कंटका** इव कंटका अणिट्ठविसया। ते य इमे विसेसेण—**अक्कोसा पहारा य तज्जणा य**, मादि-सगारादि **अक्कोसा**, कसातीताडणं **पधारा**, धि!-मुंडितादिअंबाडणं **तज्जणा**, पच्चवायो **भयं**, रौद्रं **भेरवं**, वेताल-कालिया(?या)दीण **सद्दो**, भय-भैरव-सद्देहि समेच्च पहसणं **भय-भेरव-सद्दसंपहासो**। तम्मि समुवत्थिते समं सुहेण दुक्खं तं जो सहति सो **समसुह-दुक्खसहे** अहवा पुव्वभणिते य **भय-भेरवे सद्दे**, हसित-गीय-सिंगार[माइ], संपहसणे **संपहासे**, एत्थ एगम्मि समसुहे एगम्मि समदुक्खे विपरीतं जहासंखं पुण सुहे दुक्खे वा समे चेव **जे** एवं **स भिक्खू** ॥ ११ ॥ सज्झसंज(?ग)ते सति भिक्खुभावपसाधगमिमं सुकरं भवति तस्स—

> ५१३. पडिमं पडिवज्जिता सुसाणे, ण य भाती भय-भेरवाणि दट्ठुं।
> विविधगुण-तवोरते य णिच्चं, ण सरीरं अभिकंखती स भिक्खू ॥ १२ ॥

५१३. **पडिमं पडिवज्जिता०** वृत्तम्। पडिमाओ अणेगहा सिद्धंते वण्णिताओ, तासिं अण्णतरं **पडिवज्जिता**। भयत्थाणमिदमिति विसेसिज्जति—**सुसाणे** तं पुण सवसयणं सुसाणं, तम्मि पडिमं पडिवज्जिता **ण य भाति** ण बिभेति पुव्वभणिताणि **भय-भेरवाणि दट्ठूण**। जति पुण कस्सति मती भवेज्ज, जधा—**सक्कभिक्खूण एस उवदेसो**—मासाणिगेण भवितव्वं, ण य ते तम्मि बिभेंति, तम्मतिणिसेधणत्थं उत्तमवि विसेसिज्जति—**विविधमूलुत्तरगुणे** बारस-विधतवोरते **य णिच्चं ण सरीरं** उवसग्गादीहिं बाधिज्जमाणम**भिकंखती स भिक्खू** ॥ १२ ॥ अणंतरमुवदिट्ठा भिक्खुभावप्पसाधणी क्रिया। तीसे अभिक्खणमारंभोवदेसत्थं भण्णति—

> ५१४. असतिं वोसट्ठ-चत्तदेहे, अक्कुट्ठे व हते व लूसिते वा।
> पुढवीसमए मुणी भवेज्जा, अणिदाणे अकुतूहले स भिक्खू ॥ १३ ॥

५१४. **असतिं वो०** वृत्तम्। **असतिं** अभिक्खणं पुणो पुणो, **वोसट्ठो** पडिमादिसु विनिवृत्तक्रियो, ण्हाणाणुमद्दणातिविभूसाविरहितो **चत्तो**, सरीरं **देहो**, वोसट्ठो चत्तो य देहो जेण सो **वोसट्ठ-चत्तदेहो**। एवं

---

१ निभृतश्रोत्रादीन्द्रियः ॥ २ मनोमयेन ॥ ३ विदुवेच्च मूलादर्शे ॥ ४-५ सहनम् ॥ ६ सप्पहासे अचू० विना ॥ ७ मसाणे अचू० वृद्ध० विना ॥ ८ णो भायई खं २। णो भायए खं १-३-४ जे०। णो भाए शु० ॥ ९ दिस्स खं ४ अचू० वृद्ध० विना ॥ १० अभिकंखयई खं १। अभिकंखई खं १ अचू० वृद्ध० विना ॥ ११ °खई जे स खं ३ जे० अचू० वृद्ध० विना ॥ १२ आकुट्ठे जे० ॥ १३ °समे मुणी अचू० विना ॥ १४ अकोउहल्ले य जे स खं १-२-४ जे० शुपा० वृद्ध०। अकोहल्ले य जे स खं ३ शु० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वोसट्ठ-चत्तदेहे **अक्कुट्ठे वा** मादि-सगारादीहिं, **हते** कसातीहिं, **लूसिते** पादकड्ढणिमादीहि, एवं कीरमाणे वि **पुढवीसमए** जधा पुढवी अक्कोसादीहिं ण विचलति तधा सो पुढविसमो तधा **भवेज्जा**। दिव्वादिविभवेसु अणिट्ठद्ध-चित्ते **अणिदाणे**, णच्चणगादिसु **अकुतूहले, स भिक्खू** ॥ १३ ॥ **पुढवीसमए मुणी भवेज्ज** त्ति अणंतरमुद्दिट्ठं, ण तत्थ अविण्णाणरूवं समाणीकज्जति, किंतु—

५१५. अभिभूत काएण परीसहाइं, समुद्धरे जाति-वधातो अप्पगं।
विदित्तु जाती-मरणं महब्भयं, भवे रते सामणिए स भिक्खू ॥ १४ ॥

५१५. **अभिभूत काएण०** वृत्तम्। अभिमुहं भविऊण **अभिभूत** जिणिऊण, **कायो** सरीरं तेण, छुधादीणि बावीस **परीसहाणि**। छुहा-पिवासा-सी-उण्हादयो परीसहा पायेण कायसहणीया अतो **कायेणेति** भण्णति। जे वा **बौद्धादयो** "चित्तमेव णियंतव्य"मिति तप्पडिसेधणत्थं कायवयणं। **समुद्धरे** एकीभावेण उद्धरे। **जातिवधो** पुव्वभणितो ततो, **अप्पगं**। दुस्सहपरीसहसहणे इमं आलंबणं—**विदित्तु जाती-मरणं महब्भयं** जाणिऊण जम्मं **जाती मरणं** मच्चू तमुभयं जाणिऊण **महाभयं भवे रते सामणिए** समणभावो **सामणियं** तम्मि **रतो भवे**। एवं भवति **स भिक्खू** ॥ १४ ॥ **भवे रते सामणिए** इति सामणियमुपदिट्ठं। तस्स सरूवनिद्देसत्थं भण्णति—

५१६. हत्थसंजते पायसंजते, वायसंजते संजतिंदिए।
अज्झप्परते समाहितप्पा, सुत्तत्थं च विजाणए स भिक्खू ॥ १५ ॥

५१६. **हत्थसंजते०** वृत्तम्। हत्थेहिं णच्चणाइ अकरेमाणे **[हत्थ]संजते**। पाएहि वग्गणाति [अकरेमाणे **पायसंजते**।] अकुसलवइनिरोधादिणा **वायसंजते**। इंदियविसयप्पयारनिरोधेण इंदियप्पत्तविसयराग-दोसनिग्गहेण **संजतिंदिए**। अप्पाणमधिकरेऊण जं भवति तं **अज्झप्पं**, तं पुण सुहज्झाणमेव। नाण-दंसण-चरित्तेसु सुट्ठु आहितप्पा **समाहितप्पा**। **सुत्तं अत्थं** च तदुभयं पि एतदेव तं **विजाणए**। एवं जधोव-दिट्ठकारणेहिं भवति **स भिक्खू** ॥ १५ ॥ हत्थ-पाद-वाया-इंदियाण संजमो उवदिट्ठो। णोइंदियं मणो तस्स संजमणत्थमुवदिस्सति—

५१७. उवधिम्मि अमुच्छिते अगढिते, अण्णाउंछपुलाए णिप्पुलाये।
कय-विक्कय-सण्णिधीहिंतो विरते, सव्वसंगावगते स भिक्खू ॥ १६ ॥

५१७. **उवधिम्मि अमु०** वृत्तम्। वत्थ-पत्तादि **उवधी**, तम्मि **अमुच्छिते**, जधा मुच्छावसगतो अचेतणो भवति एवं लोभेण एस मुच्छित इव मुच्छितो, तधा जो ण भवति सो **अमुच्छितो**। जो पुण तप्पडिबंधेण ण विहरति बद्ध इव अच्छति सो **गढितो**, तधा य जो ण भवति स **अगढिते**। अधवा **मुच्छितो गढित** इति समाणमिममादरत्थं भण्णति। **अण्णाउंछपुलाए णिप्पुलाये**, उंछं चउव्विहं परिवेतूण णाम-ठवणातो गतातो, दव्वुंछं

१ जाइपहाओ अचू० वृद्ध० विना। "जातिग्गहणेण जम्मणस्स गहणं कयं, वधगहणेण मरणस्स गहणं कयं" इति **वृद्धविवरणे** ॥ २ **तवे रते** सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव० ॥ ३ °**रते सुसमा**° अचू० विना ॥ ४ °**ए जे स** अचू० वृद्ध० विना ॥ ५ **अगिद्धे, अ**° अचू० वृद्ध० विना ॥ ६ **अण्णातउंछं पुलनिप्पुलाए** अचू० विना ॥ ७ °**सण्णिहिओ वि**° अचू० विना ॥ ८ °**गए य जे स** खं २-३-४ जे० शु०। °**गए जे स** खं १ ॥ ९ **अण्णोतं उंछं पुलणिलाये**। उंछं मूलादर्शे ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तावसादीणं, उग्गमुप्पायणेसणासुद्धं अण्णायमण्णातेण समुप्पादितं भावुंछमण्णाउंछं, तं पुलएति–तमेसति एस **अण्णाउंछपुलाए**। **पुलाए** चउव्विहे। नाम-ठवणातो गतातो। दव्वपुलाओ पलंजी। मूलुत्तरगुणपडिसेवणाए निस्सारं संजमं करेति एस भावपुलाए, [ण] तधा **णिप्पुलाए**। मुलस्स पडिमुल्लेण गहणं दाणं वा **कय-विक्कयो,** सण्णिधाणं **सण्णिधी**। एतेहिंतो **कय-विक्कय-सण्णिधीहिंतो विरते अण्णाउंछपुलाए** ति "विधिसेसा णिसेधा"। सव्वधा जे उवधिमुच्छादयो भणिता अभणिता य ते सव्वे संगा अवगता जस्स से **सव्वसंगावगते**। संगो यु "जत्थ सज्जंति जीवा जरहत्थी इव कद्दमे"। एतेहिं भिक्खुभावसाधगेहिं गुणेहिं वट्टमाणे **स भिक्खू** ॥ १६ ॥ उवगरणे गेहीनिवारणमुपदिट्ठं 'उवधिम्मि अमुच्छिते' आहारगेहिनिवारणत्थमिदं भण्णति—

**५१८. अलोलु भिक्खू ण रसेसु गिद्धे, उंछं चरे जीवित णाभिकंखे।**
**इड्ढी सक्कारण पूयणं वा, जहे ठितप्पा अणिहे स भिक्खू ॥ १७ ॥**

**५१८. अलोलु भिक्खू०** वृत्तम्। अपत्तरसपत्थणं लौल्यम्, ण तधा इति **अलोले**। **भिक्खू** जो एत्थ चेव अधिकृतो। तित्तादिसु पत्तेसु वि **ण रसेसु गिद्धे**। **उंछं** जधा वण्णितं, तं **चरे**। **अण्णाउंछपुलाए** [सुत्तं ५१७] त्ति एत्थं उवधिं प्रति, इमं पुण आहारं, तेण **ण** पुणरुत्तं। 'सुहं चिरं वा जीवेज्जामि'त्ति एवं **जीवितं नावकंखे**। किञ्च–**इड्ढी सक्कारण पूयणं वा, इड्ढी** विउव्वणमादि, **सक्कार-पूयण**विसेसो जधा **विणयसमाधीए** त(बि)तियुद्देसए [सुत्तं ४...]। सव्वाणि एताणि **जहे** "ओहाक् त्यागे" इति परिच्चये। नाण-दंसण-चरित्तेसु **ठितप्पा अणिहे** अकुडिले, **अणिण्हे वा** पंचेंदिएसु, **अणिहे वा** असरिसे, **स भिक्खू** ॥ १७ ॥ **अलोले भिक्खू ण रसेसु गिद्धे** इति जिब्भिंदियनियमणमुपदिट्ठं। रस[ण]तेण तस्सेव वयणत्तेण णियमणत्थं भण्णति—

**५१९. ण परं वदेज्जासि अयं कुसीले, जेणऽण्णो कुप्पेज्ज ण तं वएज्जा।**
**जाणिय पत्तेय पुण्ण पावं, अत्ताणं ण समुक्कंसे स भिक्खू ॥ १८ ॥**

**५१९. ण परं वदेज्जासि०** वृत्तम्। परो पव्वतियस्स अपव्वतियो, तं अपत्तियादिदोसभयतो **ण वदेज्ज अयं कुसीलो** घरत्थसीलपरिभट्ठो, कदायि सपक्खे चोदेज्ज अतो परग्गहणं, सव्वहा **जेणऽण्णो कुप्पेज्ज** जम्म-मम्म-कम्मादिणा **ण तं वदेज्ज**। केण पुण आलंबणेण न वदेज्जा? **जाणिय पत्तेय** जं जस्स **पुण्णं पावं** वा स एव तस्स फलमणुभवति। जधा अण्णम्मि य पक्खुलिते एवं जाणिय **ण परं वदेज्ज अयं कुसीले**। एतेणेव आलंबणेण गव्वेण **अत्ताणं ण समुक्कसे स भिक्खू** ॥ १८ ॥ **अत्ताणं ण समुक्कसेज्ज** त्ति भणितं। अत्तसमुक्कसे कारणमुद्देण नियमिज्जति जधा—

**५२०. ण जातिमत्ते ण य रूवमत्ते, ण लाभमत्ते ण सुतेण मत्ते।**
**मंताणि सव्वाणि विवज्जयित्ता, धम्मज्झाणरते य जे स भिक्खू ॥ १९ ॥**

---

१ **अण्णायमण्णतेण** मूलादर्शे। वृद्धविवरणे **अण्णायमण्णातेण** इत्येव पाठो वर्तते ॥ २ **सते संगा** मूलादर्शे ॥ ३ **अलोलो** शु०। **अलोल** खं २ वृद्ध० ॥ ४ **णाभिकंखे** जे०वृद्ध० हाटी० अव०। **णाभिकंखी** शु० ॥ ५ **इड्ढि** खं १-२-३ शु० ॥ ६ **च** अचू० विना ॥ ७ **अणिण्हे** अचूपा० ॥ ८ "**अणिण्हे** णाम अकुडिले त्ति वा अणिहे त्ति वा एगट्ठा" इति **वृद्धविवरणे** ॥ ९ अनिभः सं० ॥ १० °**क्कसे जे स** खं ३ अचू० वृद्ध० विना ॥ ११ **मयाणि** खं ३ विना सर्वासु सूत्रप्रतिषु। **मयाइं** खं ३। **मदाणि** वृद्ध० ॥ १२ **विवज्जयंतो** खं २-३ जे० शु०। **विगिंच धीरे** वृद्ध० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५२०. **ण जाति०** वृत्तम्। 'उत्तमजातीयो हं' मिति एवं **ण जातिमत्ते** भवे इति वयणसेसो। तधा 'सुरूवो हं' मिति एवं **ण य रूवमत्ते**। 'लाभसंपण्णो हं' मिति य **ण लाभमत्ते**। तधा 'बहुस्सुतो हं' मिति **ण सुतेण मत्ते**। अणुद्दिट्ठपडिसमाणणत्थं भण्णति–इस्सरियादीणि **मताणि सव्वाणि विवज्जयित्ता** धम्मज्झाणं–पुव्ववण्णितं तम्मि रते **धम्मज्झाणरत्ते**। एवं जहा भणितगुणे **जे स भिक्खू** ॥ १९ ॥ माणजतोवदेसाणंतरं मायानिमित्तं भण्णति–

५२१. पवेयए अंज्जवयं महामुणी, धम्मे ठितो ठावयती परं पि।
णिक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं, ण यांवि हंस्सकुहए स भिक्खू ॥ २० ॥

५२१. **पवेयए अज्जवयं०** वृत्तम्। **पवेदणं** कहणं, **[अज्जवयं]** रिजुभावं दरिसेज्ज त्ति, एवं विसुद्धप्पा भवति **महामुणी**। एवं च सुहं परो वि धम्मे पडिवादेतुं भवति। सुतधम्मे चरित्तधम्मे य सब्भावेण **ठितो ठावयति परं पि,** जतो अट्ठितो ण ठवेति परं। धम्मोवएसणं च निज्जरणाकारणं, कहं ?

निक्खित्तसत्थमुसलो सोता जति भवति किंचि वी कालं।
सोतुं च जति नियत्तति कहगस्स वि तं हितं होति ॥ १ ॥ [ ]

एवमज्जवतापवेदणं। **निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं निक्खम्म** घरातो गिहत्थभावातो वा निक्खम्म निक्कारणे **पंडरंगादीण** कुसीलाण लिंगं वज्जेज्जा, अणायारादी वा कुसीलस्स लिंगं ण रक्खए। किं च **ण यावि हस्सकुहए** हस्समेव कुहगं तं जस्स अत्थि सो **हस्सकुहतो** तधा न भवे, हस्सनिमित्तं वा कुहगं **हस्सकुहगं,** तधा करेति परस्स हासमुप्पज्जति, एवं **ण यावि हस्सकुहए स भिक्खू**। सव्वम्मि अज्झयणे भिक्खुसद्दो भवति, सद्दजोगी एसा सद्दत्थधम्मता ॥ २० ॥ **निक्खम्ममाणाए** [सुत्तं ५०२] अतो पभिर्ति भिक्खुभावपसाधगा बहुगुणा भणिता। तस्सेवंगुणसमुदयपसाहितस्स भिक्खुभावस्स सगलफलोपदरिसणेण नियमणत्थमिदं भण्णति—

५२२. तं देहवासं असुतिं असासतं, सदा जहे निच्चंहिते ठितप्पा।
छिंदित्तु जाती-मरणस्स बंधणं, उवेति भिक्खू अपुणागमं गंतिं ॥ २१ ॥
ति बेमि ॥

॥ सभिक्खु अज्झयणं दसमं सम्मत्तं ॥

५२२. **तं देहवासं०** वृत्तम्। **तं देहवासं** तमिति पुव्वपत्थुताभिसंबंधणं, तेण भिक्खुभावपसाहगो देहोऽभिसंबज्झति, सो य ण अण्णत्थ भिक्खुभाव इति मणुस्सदेहो, तम्मि वासो **देहवासो**। विरागनिमित्तं तस्सभावो भण्णति–**असुति** अणिट्ठगंधादिपरिणामो असुती। भणितं च—

१ अज्जपयं खं ४ अचू०विना ॥ २ **आवि** वृद्ध० ॥ ३ **हासं कुहए** खं ३ विना सर्वासु सूत्रप्रतिषु। **हासकुहए** वृद्ध० ॥ ४ °**दा चए** अचू० वृद्ध० विना ॥ ५ °**च्चहियट्ठियप्पा** अचू० हाटी० विना ॥ ६ **गयं** ॥ **त्ति बेमि** खं ३-४ जे०। **गयं** ॥ **ति बेमि** खं १ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थाणं बीज[म]वट्ठंभो णिस्संदो निहणं तहा। देहस्साणिट्ठरूवाणि तेणायमसुती मतो ॥ १ ॥ [ ]

असूयीसभावत्ते पुणो **असासतं** खणमत्तभंगुरं । [1]आध य—

कायो सपच्चवायो समागमा विप्पयोगविरसरसा । उप्पादजुतं सव्वं विणासिमवि णत्थि संदेहो ॥ १ ॥ [ ]

**सदा** सव्वकालं **जहे** [2]परिच्चये, जहे ण एक्कपयपरिच्चागेण, किंतु तदिट्ठलालणाविसेसपरिच्चागेण । **णिच्चहितं** मोक्खो तस्साधणे निच्चं ठितो अप्पा जस्स सो **निच्चहिते ठितप्पा**। सो एवंविधो **छिंदित्तु जाती-मरणस्स बंधणं जातीमरणं** संसारो अट्ठविधं वा कम्मं तं जेण बज्झति तं **जातीमरणस्स बंधणं**, तं पुण रागो य दोसो य, एतं कम्मस्स निबंधणं, तं छिंदित्तु वीतरागतामुपगतो **उवेति** उवागच्छति **भिक्खू** इति सगल**दसवेतालित**त्थ-निद्दिट्ठगुणनिव्वत्तियो दसमज्झयणभणितगुणसमुदयनिरूवणनिद्दिट्ठो स भिक्खू **अपुणागमं गतिं** पुणरागमणं आजवंजवीभावो, तव्विरहिता अपुणागमा, सा य सिद्धी संसारदुक्खविणिवित्ती, तं **उवेति भिक्खू अपुणागमं गतिं** ॥ २१ ॥ **त्ति बेमि** ॥ णया य पूर्ववत् ॥

धम्मो ससाधणो जं पडुच्च भणितो णवऽज्झयणसुद्धो ।
तस्स निरूवणहेतुं दसमज्झयणं स भिक्खु त्ति ॥ १ ॥

**सभिक्खुगचुण्णी समत्ता ॥**

१ आह च ॥ २ परित्यजेत् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१

[ पढमा रइवक्का चूलिया ]

धम्मादि नेव्वाणफलपज्जवसाणं विणीयमतिपुरिसबुद्धिबोधणत्थं समाणितं **दसवेतालियसत्थं** । तस्साऽऽदावुपण्णत्थं "पढमे धम्मपसंसा" [णिज्जुत्तिगा० ८] तदणु धम्मसाधणोपकाराणुपुव्वीए समाणीतं "एस भिक्खु" त्ति । तस्स भिक्खुभावस्स साधगं गुणसमुज्जतस्स मतिविकप्पणिसेहातोपदिस्सति चूलादुयं **रतिवक्कं चूलिका** य । तत्थे अणुपसंगहितस्स तदोपधिगस्स उपसंगहत्थं चेदमुत्तरं तन्त्रम्, जधा उत्तरगमायणादीणि । तत्थ जं सामण्णं चूलावयणं तस्स वक्खाणत्थमिमा णिज्जुत्तिगाधा —

**दव्वे खेत्ते काले भावम्मि य चूलियाय निक्खेवो ।**
**तं पुण उत्तरतंतं सुतगहितत्थं तु संगहणी ॥ १ ॥ २५८ ॥**

**दव्वे खेत्ते काले भावम्मि य०** गाथा । छव्विहनिक्खेवस्स णाम-ठवणातो गतातो । **तं पुण** चूलितादुतं **उत्तरतंतं** जधा **आयारस्स** पंचचूला उत्तरमिति । जं उवरि सत्थस्स जं अवणितोवसंगहत्थं **सुतगहितत्थं** सुते जे गहिता अत्था तेसिं कस्सति फुडीकरणत्थं **संगहणी** ॥ १ ॥ २५८ ॥ दव्वचूलादीण विभागो—

**दव्वे सचित्तादी कुकुडचूला-मणी-मयूरादी ।**
**खेत्तम्मि लोगनिक्खुड मंदरचूला य कूडा य ॥ २ ॥ २५९ ॥**

**दव्वे सचित्तादी०** [गाधा] । दव्वचूला तिविधा—सचित्ता अचित्ता मीसा । तत्थ सच्चिता कुकुडमत्थगचूला मंसमता, अचित्ता चूलामणी, मीसा मयूरस्स मंसपिंछरद्धा । एसा दव्वचूला । खेत्ते पुण—**खेत्तम्मि लोगनिक्खुड०** पच्छद्धगाहा । खेत्तचूला **लोगणिक्खुडाणि मंदरचूला कूडा य** एवमादि ॥ २ ॥ २५९ ॥ कालचूला पुण—

**अतिरित्त अधिगमासा अधिगा संवच्छरा य कालम्मि ।**
**भावे खयोवसमिये इमाउ चूलाउ णेयव्वा ॥ ३ ॥ २६० ॥**

**अतिरित्त०** अद्धगाहा । **अतिरित्ता अधिगमासा अधिसंवच्छरा य** । भावचूला **भावे खयोवसमिये** [खयोवसमिये] भावे सुतनाणमिति एताओ **चूलाओ** खयोवसमियभावचूलाओ ॥ ३ ॥ २६० ॥ तत्थ पढमं चूलज्झयणं **रतिवक्कं** । तस्स चत्तारि अणिओगद्दारा, जधा **आवस्सए** । णवरं नामनिप्फण्णो **रतिवक्कं** । दो पदा–रती वक्कं च । रतीए चउक्कओ निक्खेवो । णाम-ट्ठवणातो गतातो ॥ इदाणिं दव्वरती—

---

१ अनुपसङ्गृहीतस्य ॥ २ **कूडादी** खं० वी० सा० हाटी० ॥ ३ "दव्वचूला इमेण गाथापुव्वद्धेण भण्णइ । तं जहा-**दव्वे सचित्तादी०** अद्धगाथा । [**दव्वे सचित्तादी** तिविहा] । तं०—सचित्ता अचित्ता मीसिया । तत्थ सचित्ता कुकुडस्स चूला, सा मत्थए भवइ । अचित्ता चूलामणी, सा य सिरे कीरई । मीसिया मयूरस्स भवति । एवमादि दव्वचूला भणिया । इदाणिं खेत्तचूला भण्णइ—**खेत्तम्मि लोगनिक्कुड०** गाहापच्छद्धं । खेत्तचूला लोगणिक्कुडाणि, मंदरस्स पव्वयस्स चूला, कूडा य, एवमादि खेत्तचूला भण्णइ । अहवा अहेलोगस्स सीमंतओ, तिरियलोगस्स मंदरो, [उड्ढलोगस्स ईसीपब्भार त्ति] ।" इति **वृद्धविवरणे** पत्र ३५० ॥ "'द्रव्ये' इति द्रव्यचूडा आगम-नोआगमज्ञशरीरेतरादि । व्यतिरिक्ता त्रिविधा 'सचित्ताद्या' सचित्ता अचित्ता मिश्रा च । यथासंख्यं दृष्टान्तमाह—कुक्कुटचूडा सचित्ता, चूडामणिरचित्ता, मयूरशिखा मिश्रा । 'क्षेत्रे' इति क्षेत्रचूडा लोकनिष्कुटा अध-उपरिवर्तिनः, मन्दरचूडा च पाण्डुकम्बला, कूटादयश्च तदन्यपर्वतानाम्, क्षेत्रप्राधान्यात् । आदिशब्दादधोलोकस्य सीमन्तकः, तिर्यग्लोकस्य मन्दरः, ऊर्ध्वलोकस्येषत्प्राग्भारेति गाथार्थः ॥" इति **हारिभद्रीवृत्तौ** पत्र २६९-७० ॥ ४ **इमा उ चूला मुणेयव्वा** खं० वी० । **इमा उ चूडा मुणेयव्वा** सा० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**दव्वरती खलु दुविहा कम्मरती चेव णो-य-कम्मरती ।**
**कम्म रतिवेदणीयं णोकम्मरती तु सद्दादी ॥ ४ ॥ २६१ ॥**

**सद्द-रस-रूव-गंधा-फासा रइकारगाणि दव्वाणि ।**
**दव्वरती भावरती उदए एमेव अरती वि ॥ ५ ॥ २६२ ॥**

**दव्वरती०** [गाहा] । **सद्दरस०** गाहा । **दव्वरती** दुविहा—**कम्मदव्वरती णोकम्मदव्वरती य । कम्म-**दव्वरती **रतिवेदणिज्जं** कम्मं बद्धं, न ताव उदिज्जति । **णोकम्मदव्वरती** इट्ठा **सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधा रतिकारगाणि दव्वाणि । भावरती** पुण **उदये** भवति रतिवेदणिज्जं कम्मं जाहे उदिण्णं भवति । एसा भावरती ।

विपक्खतापसंगेण **अरती वि** भण्णति—तधेव चउव्विधा । णाम-ट्ठवणातो गतातो । दव्वअरती दुविधा—कम्म-दव्वअरती णोकम्मदव्वअरती य । कम्मदव्वअरती अरतीवेदणिज्जं कम्मं बद्धमणुदिण्णं । णोकम्मदव्वअरती अणिट्ठा सद्दादयो । अरतिवेदणिज्जं कम्ममुदिण्णं भावअरती ॥ ४-५ ॥ २६१-२६२ ॥ रती भणिता । वक्कावसरे वक्कं, तं जधा **वक्कसुद्धीए** तहेव । रतीए हेतुभूतं रतये वक्कं रतिवक्कं । अरती पुव्ववण्णिता जाधे परीसहाण उदयेण उप्पज्जेज्जा ताहे सरीरपीडाकरी वि णिच्छयतो हि तंमहितासणं ति अहियासेतव्वा । एत्थ दिट्ठंतो—

**जध नाम आतुरस्सिह सिव्वण-छेज्जेसु कीरमाणेसु ।**
**जंतणंमवच्छकुच्छाऽऽमदोसविरुती हितकरी तु ॥ ६ ॥ २६३ ॥**

**जध नाम०** गाहा । **जह नाम** प्रकारसद्दो य **आतुरो** रोगी सो त वणेण आगंतुणा सरीरसमुत्थेण वा होज्जा । **इहेति** इह सुहनिमित्तं दुक्खसहणं—**सिव्वण-छेज्जेसु कीरमाणेसु जंतणमवच्छकुच्छाऽऽमदोसविरुती हितकरी तु, जंतणं** आयासातिपरिहरणं । पागवेदणाकारीण **अवच्छदव्वाण** दुगुंछणं **अवच्छकुच्छा ।** आमसमुत्थो दोसो **आमदोसो** ततो विणियत्तणं **विरुती आमदोसविरुती ।** अहवा आमविरुयी दोसाण य विरुती । अपि च—

व्रणे श्वयथुरायासात् स च रागश्च जागरात् । तौ च रुक् च दिवास्वप्नात् ते च मृत्युश्च मैथुनात् ॥ १ ॥
[सुश्रुत, सूत्रस्थान, अध्याय १९, श्लो. ६६]

एताणि उत्तरकाल**हितकराणि** तस्स जधा ॥ ६ ॥ २६३ ॥ तहेव—

**अट्ठविहकम्मरोगाउरस्स जीवस्स तवतिगिच्छाए ।**
**धम्मे रती अधम्मे अरती गुणकारिता होति ॥ ७ ॥ २६४ ॥**

---

१ न खल्वेते निर्युक्तिगाथे साम्प्रतीनेषु निर्युक्त्यादर्शेषु उपलभ्येते । केवलं **स्तम्भतीर्थीयशान्तिनाथताडपत्रीयभाण्डागार-**सत्कनिर्युक्तिप्रतौ केनापि विदुषा तदानीन्तनादर्शान्तरेषु उपलब्धे बहिरल्लिखिते लब्धे इति तत इह लिखिते स्तः । **वृद्धविवरणकृता** एते एव गाथे आदृते स्त इत्याभाति । श्रीमद्भि**र्हरिभद्राचार्य**पादैस्तु साम्प्रतीनेष्वादर्शेषूपलभ्यमाना एतदर्थसङ्ग्राहिका एकैव गाथाऽऽदृता व्याख्याता चास्ति । सा चेयम्—

**दव्वे दुहा उ कम्मे णोकम्मरती उ सद्ददव्वाई ।**
**भावरई तस्सेव उ उदए एमेव अरई वि ॥**

अस्याः निर्युक्तिगाथायाः पूर्वार्धस्य खं० प्रतौ **दव्वेयरवेयणियं नोकम्मे सद्दमाइ रइजणगा** । इति पाठान्तरं दृश्यते ॥

२ तदभ्यासनम् ॥ ३ **सीव्वण**° खं० वी० सा० ॥ ४ °**ण अवत्थकु**° वृद्ध० । °**णमपत्थकु**° वी० सा० । °**णमपच्छकु**° खं० ॥ ५ °**विरती** खं० वी० सा० हाटी० वृद्ध० ॥ ६ **दिवास्वापात् ताश्च मृ**° इति निर्णयसागरप्रकाशिते सुश्रुते ॥ ७ **तह तिगि**° खं० वी० सा० वृद्ध० हाटी० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**अट्ठविहकम्म०** गाधा । णाणावरणादि**अट्ठविहकम्मरोगेण आउरस्स जीवस्स तवतिगिच्छाए** कम्मदोसविसोधणीए कीरमाणीए बावीसपरीसहा सुस्सधा, अव्वाबाधसुहनिमित्तं सहमाणस्स दसविधसमण**धम्मे रती** तव्विवरीए **अधम्मे अरती** जा संभवति सा तस्स **गुणकारिता भवति** ॥ ७ ॥ २६४ ॥ सा पुण एतेसुं धम्मसाहणेसु रती—

**सज्झाय संजम तवे वेयावच्चे य झाणजोगे य ।**
**जो रमति ण रमति असंजमम्मि सो पावए सिद्धिं ॥ ८ ॥ २६५ ॥**

**सज्झाय०** गाधा । वायणादिते पंचविहे **सज्झाए**, सत्तरसविधे य **संजमे**, **तवे** य बारसविधे, **वेयावच्चे** य, **झाणजोगे** दुविहे धम्मे सुक्के य । एतेसु **जो रमति**, हिंसादिविधाणेण **ण रमति असंजमम्मि**, कम्मरोगविरहितो परमणीरोगभावं **सो पावए सिद्धिं** । तवोवयणेण सिद्धे सज्झाय-वेयावच्च-ज्झाणाण गहणं पहाणभावोवदरिसणत्थं ॥ ८ ॥ २६५ ॥ जतो एवं धम्मे रती अधम्मे अरती सिद्धिगमणकारणं—

**तम्हा धम्मे रतिकारगाणि अरइकारगाणि य अहम्मे ।**
**ठाणाणि ताणि जाणे जाइं भणिताणि अज्झयणे ॥ ९ ॥ २६६ ॥**

**तम्हा धम्मे०** गाधा । **तम्हा** दुक्खक्खयमिच्छता जधाभणिते **धम्मे रतिकारगाणि अधम्मे य अरतिकारगाणि ठाणाणि ताणि जाणे**, थाणसद्दो अत्थवयणो, अट्ठारस अत्थवत्थूणि जाणितव्वाणि, जाणि इहेव तुज्झ उद्दिसिहिंति ॥ ९ ॥ २६६ ॥ • गतो नामनिप्फण्णो । सुत्तालावगणिप्फण्णे सुत्तं उच्चारेतव्वं जधा **अणियोगद्दारे** । तं च इमं जधा—

५२३. इह खलु भो! पव्वयियेणं उप्पण्णदुक्खेण संजमे अरतिसमावण्णचित्तेण ओहाणुप्पेहिणा अणोहावितेण चेव हयरस्सि-गतंकुस-पोतपडा[3]गारभूताइं इमाइं अट्ठारस ठाणाणि [4]सम्मं पडिलेहितव्वाणि भवंति ॥ १ ॥

**५२३. इह खलु भो! पव्वयियेणं०** । इहेति इह जिणप्पवयणे **पव्वयियेणं**, **खलु**सद्दो णवधम्मथिरीकरणत्थं तं विसेसेति, **भो!** इति आमंतणसद्दो सव्वस्स एवं समुप्पण्णवत्थुगस्स अभिधाणे, पावातो पवत्तो अवक्कमितुं पव्वतितो तेण । सारीरं सी-उण्हादिनिमित्तं, माणसं इत्थि-सक्कारादिनिमित्तं, उप्पण्णमिदं उभयं दुक्खं जस्स तेण **उप्पण्णदुक्खेण** । सत्तरसविधे **संजमे**, **अरती** पुव्वभणिता, **समावण्णं** उवगतं, मती-बुद्धी-विण्णाणं **चित्तं**, संजमे अरतिं समावण्णं चित्तं जस्स सो संजमे अरतिसमावण्णचित्तो, तेण **संजमे अरतिसमावण्णचित्तेण** । **ओधाणं** अवसप्पणं अवक्कमणं । तं कतो अवधा[व]णं ? जेण संजमे अरतीसमावण्णचित्तेणेति पत्थुतं अतो संजमातो अवधावणं । तं अणुपेहेतुं सीलं जस्स सो **अवधावणाणुप्पेधी**, **अव** इति एतस्स पागते ओकारो भवति एवं **ओहाणुप्पेधी**, तेण **ओहाणुप्पेहिणा** । एवं कयसंकप्पेण पढमं ओहावणाओ **अणोहावितेण** । एवसद्दो अवधारणे, णियमादणोहाइतेण, पच्छाचिंतणमवत्थं(? मणत्थगं) । अट्ठारस ट्ठाणाणि चिंतणीयाणि । ताणि य अणुच्चारेऊण तेसिं पभावोवदरिसणत्थं भण्णति—**हयरस्सि-गतंकुस-पोतपडागारभूताइं** हतो अस्सो तस्स

---

१ सुसहा ॥ २ **वच्चती सिद्धिं** खं० । **वच्चई सिद्धिं** वी० सा० ॥ ३ °**पडागाभूयाइं** अचू० वृद्ध० विना ॥ ४ **सम्मं सुप्पडि**° खं १ हाटी० । **सम्मं संपडि**° खं २–३–४ जे० शु० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**रस्सी** खलिणं, सो त सुदप्पितो वि खलिणेण नियमिज्जति, हत्थी **गतो** तस्सावि लोहमयं मत्थयक्खणण**मंकुसो,** तेण सुमत्तो वि विणयं गाहिज्जति, जाणवत्तं **पोतो,** तस्स **पडागारो** सीतपडो, पोतो वि सीतपडेण वितत्तेण वीचीहिं ण खोभिज्जति इच्छितं च देसं पाविज्जति। इयादीण रस्सिमादयो नियामगा अतो पत्तेयं ते हि सह पढिज्जंति **हयरस्सि-गतंकुस-पोतपडागारा,** भूतसद्दो इवसद्दसारिस्सवाची, जधा—

"कोलाहलगभूतं **महिलाए** आसि पव्वतंतम्मि।" [उत्तरा० अ० ९ गा० ५]

अतो य **भूताणि** तस्स सरिस्साणि, एवं **हयरस्सि-गतंकुस-पोतपडागारभूताइं। इमाइं अट्ठारस इमाणीति** जाणि इह भणीहामि ताणि हिदए काऊण पच्चक्खाणि भण्णंति, **अट्ठारस** इति संखाभिधाणं प्रतीतम्, **ठाणाणीति** सद्दो वि अत्थवादी, तेण **अट्ठारस ट्ठाणाणि** अट्ठारस अत्था, जहा अण्णत्थ वि इच्चेतेहिं "चतुहिं ठाणेहिं जीवा णेरइगत्ताए कम्मं पकरेंति" [स्थानाङ्ग स्था० ४ सूत्र ३७३]। अतो इमाइं अट्ठारस ट्ठाणाइं जहा हयादीण रस्सिमादीणि णियामकाणि तथा जीवस्स ओहावणकुचेट्ठातो नियत्तेऊण पुव्वभणिते भिक्खुभावे थावगाणि **सम्मं इति** एस णिवातो पसंसाए। **सम्मं पडिलेहितव्वाणि** संविमंसितव्वाइं[1], अतो पसत्थमेगीभावेण वियारणीयाणि भवंति॥ १॥

५२४. तं जहा—हंभो! [2]दुंसमाए [3]दुप्पजीवं १। लहुस्सगा [4]ईत्तिरिया गिहीणं काम-भोगा २। भुज्जो [5]यें सादीबहुला [6]मणुस्सा ३। [7]इँमे [8]य मे दुक्खे णचिरकालोवट्ठाती भविस्सति ४। ओमजणपुरक्कारे ५। वंतस्स वं [9]पडियाइयणं ६। [10]अघरगंतिवासो-वसंपदा ७। [11]दुंल्लभे खलु भो! गिहीणं धम्मे गिहवासमज्झे वसंताणं ८। [12]ओयंके से [13]वंधाए होति, संकप्पे से [14]वंधाए होति, सोवक्केसे [15]गिहिंवासे ९। णिरुवक्केसे परियाए १०। बंधे [16]गिहिंवासे ११। मोक्खे परियाए १२। सावज्जे [17]गिहिंवासे १३। अणवज्जे परियाए १४। बहुसाधारणा गिहीणं काम-भोगा १५। पत्तेयं पुण्ण-पावं १६। [18]अंणिच्चे मणुयाण जीविते कुसग्गजलबिंदुचंचले १७। बहुं च [19]खलुं पावं कम्मं पगडं, पावाणं च खलु भो! कडाणं कम्माणं पुव्विं दुच्चिण्णाणं [20]दुंप्पर-क्कंताणं वेदयित्ता मोक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता, [21]अंट्ठारसमं पदं भवति १८॥ २॥

---

१ संविमर्षितव्यानि॥ २ **दूसमा**° खं ३॥ ३ **दुप्पजीवी** अचू० विना॥ ४ **इत्तरिया** शु०॥ ५ **य सातिव**° खं ४ वृद्ध०। **य सायब**° खं १-२-३॥ ६ **मणूसा** खं १॥ ७ **इमं च मे दुक्खं** खं ३ अचू० वृद्ध० विना॥ ८ **य** अचू० विना॥ ९ °**याविय**णं खं १-२। °**याइणं** जे०। °**यायणं** शुपा०॥ १० °**गयवा**° जे०॥ ११ **दुलंभे** जे०॥ १२ श्री**अगस्त्यसिंह**पादविहितव्याख्यानुसारेण इदं नवमं पदं त्रिपदात्मकं वर्तते। वधस्य क्लेशसमानजातीयत्वात् क्लेशस्तु क्लेशोऽस्त्येवेति त्रिपदात्मकेऽस्मिन् नवमे पदे न कोऽपि विरोध इति। सम्प्रत्यनुपलभ्यमानप्राचीनवृत्तावपि इत्थमेव पदविभागो निर्दिष्ट आसीदिति श्री**अगस्त्यसिंह**-श्री**वृद्धविवरणकारो**ल्लिखिततद्गाथावदम्ब-कान्तस्तथादर्शनाद् ज्ञायते॥ १३-१४ **वहाय** अचू० विना॥ १५-१६-१७ **गिहिवासे** शु०॥ १८ **अणिच्चे खलु भो! मणु**° अचू० वृद्ध० विना॥ १९ **खलु भो! पावं** खं ३-४ हाटी० अव०॥ २० **दुप्पडिकं**° खं. १-२-३ शु०। **दुप्परिकं**° खं ४ जे०॥ २१ श्री**अगस्त्यसिंह**पाद-श्री**वृद्धविवरणकार**-श्री**हरिभद्रसूरि**चरणैः स्वस्वव्याख्यायाम् अवधावनाभिमुखनिर्ग्रन्थैः समनुचिन्तनीया-नामेतेषामष्टादशानां पदानां विभागो भिन्नभिन्नप्रकारेण विहितोऽस्ति। तत्रा**गस्त्यसिंह**पादैः स्वचूर्णौ सम्प्रत्यनुपलभ्यमानप्राचीनतम**दशवै-कालिकसूत्रवृत्त्य**नुसारेणाष्टादशानां पदानां विभागो विहितोऽस्ति। श्री**वृद्धविवरणकृद्भिः** तत्पक्षपातिभिश्च श्री**हरिभद्राचार्यैः** समानरूपेण

५२४. **तं जहे**ति वयणोवन्नासे। [हंभो ! इत्यादि।]गणधरादीण जे वा सीसजुत्ते आयरिया तेसिं सीयमाणसीसामंतणमिमं, "[2]हं! भो! हे! हरे! हंघो!" इति जं आमंतणपदं ण तस्स पयोगो, **हंभो!** इति सिस्सामंतणं काऊणं संहितया उच्चारणं, **दुस्समाए दुप्पजीवं समा** संवच्छरो, कुच्छिता समा **दुस्समा,** तस्समुदायो कालविसेसो दुस्समा, तीए **दुस्समाए दुप्पजीवं** दुक्खं एत्थ पजीवसाधणाणि संपातिज्जंति ईसरेहिं, किं पुण सेसेहिं ?।

रायादियाण चिंताभरेहिं वणियाण भंडविणएहिं। सेसाण पेसणेहिं पजीवसंपादणं दुक्खं ॥ १ ॥

सुहसाधणस्स य विभवस्स अभावे मंदसुहेणं [3]किं अधम्मसाधणघरत्थभावेण? इति अधम्मसाहणभावे एवं अरती करणीया, सेयो इहभवे परभवे य जिणदेसितो धम्मो त्ति धम्मे रती। एतं धम्मे रतिनिमित्तमुपदेसवयणं पढमं च पदं ॥ १ ॥ तधा—

**लहुस्सगा इत्तिरिया गिहीणं** ते ण संपुण्णे वि पुरिसाउसे तधाविधा, किमुत इमे पडुच्च? समयत्तणओ रतो वि बहुविघातो, जतो य **लहुसगा इत्तिरिया** अतो आसेविज्जमाणा वि ण तण्हीकरेंति, जतो य एवं तम्हा धम्म एव रती करणीया। तत्थ—**कामा** थीविसया, [**भोगा** सद्दादिविसया।] अवि य—

लहुसा इत्तरकाला कयलीगब्भवदसारगा जम्हा। तम्हा गिहत्थभोगे चतिऊण रतिं कुणह धम्मे ॥ १ ॥

बितियं ठाणं ॥ २ ॥ किंच—

---

पदविभागो विनिर्मितोऽस्ति। अपि च श्री**हरिभद्रपादैः** स्ववृत्ता**वन्याचार्यीय**सम्मतः पदविभागोऽपि निर्दिष्टोऽस्ति। एषोऽन्या**चार्यीय**पदविभागः **प्राचीनतमवृत्त्य**नुसारविहिताद् **अगस्त्यसिंह**सूरिकृताद् भिन्न एवेति न ज्ञायते 'क एते अन्याचार्याः?' इति। किञ्च श्री**हरिभद्र**सूरिनिर्दिष्टोऽन्या**चार्यीयमतः** श्री**अगस्त्यसिंहचूर्णौ वृद्धविवरणे** च निर्दिष्टो न दृश्यते। श्री**हरिभद्र**सूरिपादोल्लिखितः पदविभागभिन्नतावेदक**स्तद्वृत्ति**गतः पाठोऽयम्—

"तथा '**प्रत्येकं पुण्य-पापम्**' इति माता-पितृ-कलत्रादिनिमित्तमप्यनुष्ठितं पुण्य-पापं 'प्रत्येकं प्रत्येकं' पृथक् पृथग् येनानुष्ठितं तस्य कर्तुरेवैतदिति भावार्थः, एवमष्टादशं स्थानम् १८। एतदन्तर्गतो **वृद्धा**भिप्रायेण शेषग्रन्थः समस्तोऽत्रैव। **अन्ये** तु व्याचक्षते—'सोपक्लेशो गृहिवासः' इत्यादिषु षट्सु स्थानेषु सप्रतिपक्षेषु स्थानत्रयं गृह्यते, एवं च **बहुसाधारणा गृहिणां कामभोगाः**' इति चतुर्दशं स्थानम् १४ **प्रत्येकं पुण्य**पापमिति पञ्चदशं स्थानम् १५। शेषाण्यभिधीयन्ते—तथा '**अनित्यं खलु**' अनित्यमेव नियमतः '**भो!**' इत्यामन्त्रणे '**मनुष्याणां**' पुंसां '**जीवितम्**' आयुः, एतदेव विशेष्यते—**कुशाग्रजलबिन्दुचञ्चलं** सोपक्रमत्वादनेकोपद्रवविषयत्वादत्यन्तासारम्, तदलं गृहाश्रमेणेति सम्प्रत्युपेक्षितव्यमिति षोडशं स्थानम् १६। तथा '**बहु च खलु भोः! पापं कर्म प्रकृतम्**' बहु च, चशब्दात् क्लिष्टं च, खलुशब्दोऽवधारणे, 'बह्वेव पापं कर्म' चारित्रमोहनीयादि 'प्रकृतं' निर्वर्त्तितम्, मयेति गम्यते, श्रामण्यप्राप्तावप्येवं क्षुद्रबुद्धिप्रवृत्तेः, नहि प्रभूतक्लिष्टकर्मरहितानामेवमकुशला बुद्धिर्भवति, अतो न किञ्चिद् गृहाश्रमेणेति सम्प्रत्युपेक्षितव्यमिति सप्तदशं स्थानम् १७। तथा '**पापानां च**' इत्यादि, 'पापानां च' अपुण्यरूपाणां चशब्दात् पुण्यरूपाणां च 'खलु भोः! कृतानां कर्मणां खलुशब्दः कारितानुमतविशेषणार्थः, 'भोः' इति शिष्यामन्त्रणे, 'कृतानां' मनो-वाक्-काययोगैरोघतो निर्वर्तितानां 'कर्मणां' ज्ञानावरणीयाद्यसातवेदनीयादीनां 'प्राक्' पूर्वमन्यजन्मसु 'दुश्चरितानां' प्रमाद-कषायजदुश्चरितजनितानि दुश्चरितानि, कारणे कार्योपचारात्, दुश्चरितहेतूनि वा दुश्चरितानि, कार्ये कारणोपचारात्, एवं 'दुष्पराक्रान्तानां' मिथ्यादर्शना-ऽविरतिजदुष्पराक्रान्तजनितानि दुष्पराक्रान्तानि, हेतौ फलोपचारात्, दुष्पराक्रान्तहेतूनि वा दुष्पराक्रान्तानि, फले हेतूपचारात्, इह च दुश्चरितानि मद्यपाना-ऽश्लीला-ऽनृतभाषणादीनि, दुष्पराक्रान्तानि तु वध-बन्धादीनि, तदमीषामेवम्भूतानां कर्मणां 'वेदयित्वा' अनुभूय, फलमिति वाक्यशेषः, किम्? 'मोक्षो भवति' प्रधानपुरुषार्थो भवति, 'नास्त्यवेदयित्वा' न भवत्यननुभूय, अनेन सकर्मकमोक्षव्यवच्छेदमाह, इष्यते च स्वल्पकर्मोपेतानां कैश्चिन् सहकारिनिरोधतस्तत्फलादानवादिभिस्तत्, तदपि नास्त्यवेदयित्वा मोक्षः, तथारूपत्वात् कर्मणः, स्वफलादाने कर्मत्वायोगात्, 'तपसा वा क्षपयित्वा' अनशन-प्रायश्चित्तादिना वा विशिष्टक्षायोपशमिकशुभभावरूपेण तपसा प्रलयं नीत्वा, इह च वेदनमुदयप्राप्तस्य व्याधेरिवानारब्धोपक्रमस्य क्रमशः, अन्यानिबन्धनपरिक्लेशेन, तपःक्षपणं तु सम्यगुपक्रमेणानुदीर्णोदीरणदोषक्षपणवदन्यनिमित्तप्रक्रमेणापरिक्लेशमिति, अतस्तपोऽनुष्ठानमेव श्रेय इति न किञ्चिद् गृहाश्रमेणेति सम्प्रत्युपक्षितव्यमिति 'अष्टादशं पदं भवति' अष्टादशं स्थानं भवति १८।" [दशवै० हरिभद्रवृत्तिः पत्र २७३–७४]

उपर्युल्लिखितवृत्त्यंशसमीक्षणेन एतदपि प्रतिभाति, यत्-श्रीमतां **हरिभद्रसूरि**पूज्यानां **वृद्धविवरणकृ**द्विहितपदविभागानुसारेण व्याख्यानेऽपि नैव सम्यक्सन्तोष इति, अत एव अन्याचार्यीयपदविभागनिर्देशव्याजेनाप्रेतनपदव्याख्यानानुसन्धानमिति ॥

**१ वा सजुत्ते** मूलादर्शे॥ २ "**हं!** ति **भो!** ति सम्बोधनद्वयमादराय" इति **वृद्धविवरणे**॥ ३ **किं घरत्थभावेणेति अधम्मसाधणघ**° मूलादर्शे ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**भुज्जो य सादीबहुला मणुस्सा ।** **भुज्जो** इति पुणो पुणो **साति** कुडिलं **बहुल**मिति पायोवृत्ति, पुणो पुणो कुडिलहियया प्रायेण । भुज्जो य सातिबहुला मणुस्सा काम-भोगनिमित्तं निद्धेसु वि भाति-पिति-पुत्तपभितिसु सातिसंपओगपरा अविस्संभिणो य । अविस्सत्थहिययाण य किं सुहमिति धम्म एव रती करणीया ।

लहुसगभोगनिमित्तं परातिसंधणपरा जयो मणुया । विस्संभसुहविमुक्का य तेण धम्मे रतिं कुणह ॥ १ ॥

ततियं ठाणं ३ ॥ तहा—

“ **इमे य मे दुक्खे णचिरकालोवट्ठाती भविस्सति ।** गुरवो संदिसंति—वत्स ! एवं चिंतय, **इमे य मे** **इमे** इति जं सारीर-माणसं परीसहोदयेण दुक्खमुप्पण्णं तं पच्चक्खं काऊण । **च**सद्देण इमं दुक्खमायतिसुहेण विसेसयति । **मे** इति अप्पाणं निद्दिसइ । **दुक्खं** अरतिकारगं, **चिरं** पभूतो कालो, ण तधा णचिरं, [णचिरं] कालमुपट्ठाणं जस्स तं **णचिरकालोवट्ठाणं** । तं च कधं ? अब्भासजोगोपचितेण धितिबलेण परीसहाणीयं जिणिऊण विजितसामंतमंडल इव राया सुहं संजमरज्जमभुत्तं करेति । इह पुण परीसहपराजितस्स णरगादिसु दुक्खपरंपरा एव अतो धम्मे रमितव्वं ।

दुक्खं परीसहकतं नवधम्माणं विसेसतो जम्हा । तम्हा दुक्खमणागतमणिच्छमाणा रमह धम्मे ॥ १ ॥ **एका** ॥[1]

किञ्च—**ओमजणपुरक्कारे । ओमो** ऊणो, **जणो** लोगो, ओमो जणो **ओमजणो,** सक्कार एव पुरक्कारो, ओमजणस्स ओमजणेण वा पुरक्कारो **ओमजणपुरक्कारो ।** धम्मे ठितो पभूण वि पुज्जो, ततो चुओ पुण ओमजणमवि अब्भुट्ठाणा-ऽसणपदाण-अंजलिपग्गहादीहिं सेवाविसेसेहिं पुरेकरेति, एतं ओमजणपुरक्करणं । अहवा अग्गतो करणं **पुरक्कारो,** धम्मब्भट्ठो रायपुरिसेहिं पुरतो कातुं विट्ठिमादीणि कारिज्जति, एवं ओमजणाओ वि परिभवकतं पुरतोक्कारं पावति, एस ओमजणातो पुरक्कारो ।

ओमजणपुरक्कारो धम्मातो चुतस्स जेण संभवति । परपरिभव परिहरणा य तेण धम्मे रतिं कुज्जा ॥ १ ॥ र्तृ ॥[2]

तहा—**वंतस्स व पडियाइयणं ।** अण्णमब्भवहरिऊण मुहेण उग्गिलियं **वंतं,** तस्स पडिपियणं ण कयायि हितं भवति, तं आयीयरसं ण बल-वण्ण-उच्छाहकारि, विलीणतया य पडिएति, वग्गुलिवाहिं वा जणयति, कोढं वा उवरिभागसमावृत्तदोसस्स, गरहितं च तहागतस्स पाणं **वंतस्स य पडियातियण**मिति । एत्थ इवसद्दस्स अत्थो—पव्वयकाले सव्वहा परिचत्ताण भोगाण पुणरासेवणं वंतभोयण-पाणसरिसं गरहादिदोसदूसियं ।

सुलसाकुलप्पसूता अगंधणा रोसवससमुग्गिण्णं । उव्वितुं न भुयंगा पिबंति पाणच्चए वि विसं ॥ १ ॥

अतो वंतपडियातियणसरिसं भोगाभिलासं मोत्तूण धम्मे रती करणीया फ्रं[3] ॥ तहा य पमादिणो—

**अधरगतिवासोवसंपदा ।** अधो गतिः **अधरगतिः**, जत्थ पडंते कम्मादिभारगौरवेण ण सक्का धारेतुं सा अधरगतिः, सा पुण णरगगतिरेव, तत्थ वासो **अधरगतिवासो,** तं उवसप्प संपज्जणं उवसंपज्जणं **अधरगतिवासोवसंपया ।** सा कधं ? पुत्तदारस्स कते हिंसादीणि कूरकम्मादीणि अधरगतिमुवसंपज्जंति, इहावि सी-उण्ह-भय-परिस्समविप्पयोग-पराधीणत्तणादीणि णारगदुक्खसरिसाणि वेदेंति ।

णरयाउयं निबंधति णरयसमाणि य इहेव दुक्खाणि । पावति गिही वरागो जं तेण वरं रती धम्मे ॥ १ ॥ ग्रां[4] ॥

प्रायेण णरकगतिजोग्गकम्मकारीण **दुल्लभे खलु भो ! गिहीणं धम्मे गिहवासमज्झे वसंताणं ।**

---

१ अत्राष्टादशपद**चूर्णि**सन्दर्भे श्रीमद्**गस्त्यसिंह**पादाः तत्तत्पदसमाप्तिस्थाने प्रचलितान् ४, ५, ६, ७, ८, ९ प्रभृतीनङ्कान् विहाय **एका, र्तृ, फ्र, ग्रां, ह, उँ** प्रमुखैरक्षराङ्कैस्तत्तत्स्थानसङ्ख्यां निर्देक्ष्यन्तीति नात्रार्थे भ्रान्तिराधेया । अत्र **एका** अक्षरेण चतुःसङ्ख्या ज्ञेया । एवमग्रेऽपि यथाक्रममक्षराङ्केण पदसङ्ख्या ज्ञेयेति ॥ २ **र्तृ** पञ्चेत्यर्थः ॥ ३ **फ्र** षडित्यर्थः ॥ ४ **ग्रां** सप्तेत्यर्थः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुक्खं लभते **दुल्लभो** पमादबहुलत्तणे सति। **भो!** इति तधेवाऽऽमंतणं। गिहाणि संति जेसिं ते **गिहिणो** तेसिं। दुग्गतिनिपतणधारणातो **धम्मो** दुलभो पुणबोधिरूवो। धम्मालाभे य दुक्खपरंपरा इति सुहनिमित्तं धम्मे रती करणीया।

दुलहो गिहीण धम्मो गिहत्थवासे पमादबहुलम्मि। मोत्तूण गिहेसु रतिं रतिपरमा होह धम्मम्मि ॥ १ ॥ हृं ॥

अयमवि गिहवासमज्झावसंताणं दोसो। तं जहा—

**आयंके से वधाए होति**। सूलादिको आसुकारी सरीरबाधाविसेसो **आतंको**। समाणजातीयत्रयणेण रोगो-पादाणमवि, सो पुण कुट्ठादिको दीहो रुयाविसेसो। सो य गिहवासमज्झावसंताणं आहार-विसमज्वरादि-भारवहणाया-सा-ऽसीलणिसेवणातो। **आयंके से वधाए होति**। रोगा-ऽऽतंका य ऐहिकसुखाणुभवणविग्घभूता इति धम्मे रतेण भवितव्वं।

दुलभं गिहीण धम्मे सुहमातंकेहि विग्घितसमग्घे। तम्हा धम्मम्मि [रतिं] करेध विरता अहम्मातो ॥ १ ॥

किञ्च—**संकप्पे से वधाए होति**। आतंको सारीरं दुक्खं, **संकप्पो** माणसं। तं च पियविप्पयोगा-ऽणिट्ठसंवास-सोग-भय-विसादादिकमणेगहा संभवति।

इट्ठाण वि सण्णेज्झे सद्द-प्फरिस-रस-रूव-गंधाणं। का मणुयसुहम्मि रती अरति-भय-विओयविरसम्मि ॥ १ ॥

एवं च विसेसेण धम्मे रती करणीया, जतो—

**सोवक्केसे गिहवासे**। सह उवक्केसेहिं [सोवक्केसे]। उवक्केसा पुण—सी-उण्ह-भय-परिस्सम-किसि-पसुपाल-वाणिज्ज-सेवादयो णेह-लवण-तंडुला-ऽऽच्छादणसमुप्पायणे बहवे परिक्केसा इति सोवक्केसे गिहवासे। तमेवंगतं जाणिऊण धम्मे रती करणीया ॥

वित्तिविधाणनिमित्तं सोवक्केसो जतो घरावासो। मोत्तूण घरावासं तम्हा धम्मे रतिं कुज्जा ॥१॥ ॐ ॥

ततो विरुद्धधम्मे य—

**णिरुवक्केसे परियाए**। निग्गतो उवक्केसो जतो सो **णिरुवक्केसो** पुव्वभणितोवक्केसविरहिततया। सव्वतो आतो **परियातो**, समंतयो पुण्णागमणं। पव्वज्जासद्दस्सेव अवब्भंसो **परियातो**, तत्थ उवक्केसो ण संभवतीति [धम्मे] रती करणीया।

णिरुवक्केसायासो परियायो जं इहेव पच्चक्खं। परियाते तेण रतिं करेह विरता अधम्माओ ॥ १ ॥ ॡ० ॥

दुलभधम्मे य सदारंभपरे—

**बंधो गिहवासो**। बंधणं **बंधो**। गिहेसु वासो **गिहवासो**। गिहं पुण दारमेव, दारभरण-पोसणनिमित्त-मसुहकम्मपवत्तस्स कोसकारकीडगस्सेव कोसगेण अट्ठविहमहाकम्मकोसेण संभवति बंधो, अतो तेण बंधहेतुभूतातो गिहवासातो विरतेण सदा धम्मे रती करणीया।

घरचारगबंधातो कम्मट्ठगबंधहेतुभूतातो। विरमह रतिं च धम्मे करेह जिणवीरभणितम्मि ॥ १ ॥ ॡ१ ॥

परिचत्तसव्वारंभे य—**मोक्खे परियाए**। विमोत्ती **मोक्खो**। **परियातो** पुव्वभणितो। तम्मि परियाए सति अट्ठविधकम्मणिगलसंकलासु झाणपरसुप्पयोगविघप्पसु जीवस्स सतो भवति णिरवायो मोक्खो परियाए।

१ ह अष्टावित्यर्थः ॥ २ रती माण-भय° वृद्ध० ॥ ३ ॐ नवेत्यर्थः ॥ ४ ॡ० दशेत्यर्थः ॥ ५ ॡ१ एकादशेत्यर्थः ॥ ६ ध्यानपरशुप्रयोगविहतासु ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घरवासम्मि य बंधो मोक्खो संभवति जेण परियाए। मोक्खत्थं तेण रइं धम्मे जिणदेसिए कुणह ॥ १ ॥ लृ[1]२ ॥

एवं च तत्थ बंधो संभवति जतो—**सावज्जे गिहवासे**। सह अवज्जेण **सावज्जं**। **अवज्जं** पुण गरहितं। तं च—

पाणवध मुसावादे अदत्त मेहुण परिग्गहे चेव। एतमवज्जं[2] भणितं सह तेण उ होति सावज्जं ॥ १ ॥ अधवा "मिच्छत्तं[3] अविरति०"गाधा ॥ २ ॥ लृ[4] ३ ॥

ततो वैधम्मेण—**अणवज्जो परियायो**। पाणातिवातादिअवज्जविरहितो **अणवज्जो परियायो**।

सावज्जो गिहवासो अणवज्जो जेण होति परियाओ। तेणाणवज्जमोक्खत्थताए धम्मे रतिं कुणह ॥ १ ॥ लृ[5]ण्का ॥

किंच—जेसिं कते कम्मबंधणमिच्छति ते--**बहुसाधारणा गिहीणं कामभोगा**। सामण्णं **साधारणं**, **बहूहि** चोर-ऽग्गि-तक्कर-रायकुलादीहि सामण्णा **बहुसाधारणा**, एवंविधा गिहीणं कामभोगा।

न य तित्तिकरा भोगा बहुजणसाधारणा य जं कामा। तम्हा नीसामण्णे होतु रती मे थिरा धम्मे ॥ १ ॥ लृ[6]र्तृ ॥

साधारणाण भोगाण उवज्जणे जं कम्ममारभते तं पुण—**पत्तेयं पुण्ण-पावं**। एगमेगं प्रति **पत्तेयं**, दारा-ऽवच्च-सयण-मित्तादीण वि अत्थे कतं कम्मं **पावं** जो कारओ तमेवाणुयाति, ण दारादीणमण्णमेगं संविभागेण वा। एवं **पुण्णमवि**।

दारादीण वि अत्थे कतस्स पत्तेयमेव संबंधी। मोत्तूण दारमादीणि तेण धम्मे मतिं ( रतिं ) कुणह ॥ १ ॥ लृ[7]ष्क ॥

काम-भोगाण आराध(धार)[8]णभूता आउ-प्राणा, ते य जीवितं। से वि य—

**अणिच्चे मणुयाण जीविते**। णियतं **णिच्चं**, ण णिच्चमणिच्चं। **मणुया** मणुस्सा एव, तेसिं **जीवित**मणिच्चं। खणिकताविसेसता दिट्ठंतेण णिदरिसिज्जति—**कुसग्गजलबिंदुचंचले** दब्भजातीया तृणविसेसा **कुसा**, तेसिं **अग्गाणि** सुसण्हाणि भवंति, तेसु ओस्सायातिजलबिंदवो[9] अतीव चंचला मंदेणावि वादुणा प्रेरिता पडंति, तहा मणुयाण जीविते अप्पेणावि रोगादिणोवक्कमविसेसेण संखोभिते विलयमुपयाति, अतो **कुसग्गजलबिंदुचंचले**। एवंगते जीविते को कामभोगाभिलासो ? इति धम्मे रती धारणीया।

जीवितमवि मणुयाणं कुसग्गजलबिंदुचंचलं जम्हा। तम्हा का मणुयभवे रति त्ति धम्मे रतिं कुणह ॥ १ ॥ लृ[10]ग्रा ॥

कुसग्गजलबिंदुचंचलस्स जीवितस्स अत्थे—

**बहुं च खलु पावं कम्मं पगडं, पावाणं च खलु भो ! कडाणं कम्माणं पुव्विं दुच्चिण्णाणं दुप्परकंताणं वेदयित्ता मोक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता**। बहुं पभूतं। चसद्दो पुव्वकारणसमुच्चये। **खलु**सद्दो विसेसणे। एवं विसेसयति—**पावं** सव्वं कम्मं **कम्मं** पुण पुण्णं पावं च, तं बहुं च पावं कम्मं **पगडं** पगरिसेण कडं **पकडं**। **पावाणं च खलु**, इह खलुसद्दो पूरणे, **भो !** इति सीसामंतणं, **कडाणं** सयमुपचिताणं, **पुव्विं** पढमकालमणंतेसु भवग्गहणेसु राग-दोसवसगतेहिं दुट्ठु चिण्णाणं **दुच्चिण्णाणं**, पुव्वमेव मिच्छादरिसणा-ऽविरती-प्रमाद-कसाय-जोगेहिं दुट्ठुपरक्कंताणं **दुप्परक्कंताणं**, तेसिं वेदणेण तेहिंतो मोक्खो अतो **वेदइत्ता मोक्खो**। अवंझाण अवंझ[11]ओपदरिसणत्थं भण्णति—**णत्थि अवेदयित्ता**। फुडाभिहाणत्थं वा अपुणरुत्तं, जहा

१ लृ २ द्वादशेत्यर्थः ॥ २ °**वज्जं सह तेण होति तम्हा उ सावज्जं** वृद्ध० ॥ ३ इयं हि गाथा कुतोऽपि शास्त्रान्तरान्नोपलब्धेति न पूरिता ॥ ४ लृ ३ त्रयोदशेत्यर्थः ॥ ५ **लृण्का** चतुर्दशेत्यर्थः ॥ ६ **लृर्तृ** पञ्चदशेत्यर्थः ॥ ७ **लृष्क** षोडशेत्यर्थः ॥ ८ **आधारभूता** वृद्धविवरणे ॥ ९ अवश्यायादिजलबिन्दवः ॥ १० **लृग्रा** इति सप्तदशेत्यर्थः ॥ ११ अवन्ध्यत्वोपदर्शनार्थम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**कोइल्लए** "क्रिया हि द्रव्यं विनयति नाद्रव्यम्" [१.४.५.] एवं **वेदयित्ता मोक्खो, नत्थि अवेदयित्ता** [इति] ण पुणरुत्तया। अधवा तवेणं बारसविहेण जिणोवइट्ठेण **तवसा वा झोसइत्ता झूसणं** निदहणं, **तहा वा** मोक्खो। तत्थ जं वेदयित्ता विमोक्खणं तमुदयपत्तस्स कम्मुणो महापरिकिलेसेण, तवसा तु झूसणं अणुदिण्णोदीरणदोसनीहरणमिव लहुतरं। [1]अणुभवणेण य विमोक्खणे आसयसंताणेण पुणरुपचय इति दरिद्दरिणसमुद्धरणदाणे इव अणमोक्ख एव। अतो कम्मनिज्जरणत्थं तवसि समासतो वा दसविधे समणधम्मे करणीया रती।

[2]जं मुच्चति अणुभवणेण जदि व तवसा कडाण कम्माण। तम्हा तवोधणोवज्जणम्मि धम्मे रतिं कुणह॥ १॥

[3]लैह॥ एवं धम्मे रतिजणणवयणं अट्ठारसमं ति ठाणं, एतदेव **अट्ठारसमं पदं भवति**॥ एत्थ इमातो **वृत्तिगतातो** पदुद्देसमेत्तगाधाओ। तं जहा—

दुक्खं च दुस्समाए जीवियुं जे १ लहुसगा पुणो कामा २।
सातिबहुला मणुस्सा ३ अचिरट्ठाणं चिमं दुक्खं ४॥ १॥
ओमजणम्मि य खिंसा ५ वंतं च पुणो निसेवियं भवति ६।
अहरीवसंपया वि य ७ दुलभो धम्मो गिहे गिहिणो ८॥ २॥
नि[4]बंयंति परिकिलेसा ९ बंधो ११ सावज्जजोगि गिहवासो १३।
एते तिण्णि वि दोसा न होंति अणगारवासम्मि १०।१२।१४॥ ३॥
साधारणा य भोगा १५ पत्तेयं पुण्ण-पावफलमेवं १६।
जी[5]यमवि माणवाणं कुसग्गजलचंचलमणिच्चं १७॥ ४॥
णत्थि य अवेदयित्ता मोक्खो कम्मस्स निच्छओ एसो १८।
पदमट्ठारसमेतं वीरवयणसासणे भणितं॥ ५॥

सविसेसमुपदिट्ठेसु **रतिवक्कादेसु** पडिसमाणणत्थमुत्तरपडिसंधाणत्थं च भण्णति—**अट्ठारसमं पदं भवति**॥ २॥

५२५. भवति य एत्थ सिलोगो—
जता य जंधती धम्मं अणज्जो भोगकारणा।
से तत्थ मुच्छिते बाले आतती णावबुज्झति॥ ३॥

**५२५.** [6]**भवति य एत्थ सिलोगो। भवति** विज्जते। **च**सद्दो समुच्चये। ~~एत्थेति~~ एतम्मि चेव धम्मरतीवयणे पदोवदिट्ठस्स अत्थस्स सदिट्ठंनस्सोवदंसणत्थं **सिलोगो**। तं जधा—

१ "अणुभवणेण विमोक्खणं असंततणेणं दरिद्दरिणसमुद्धरणमिव अणमोक्ख एव।" इति **वृद्धविवरणे** पत्र ३५८॥ २ "गुणभवणे रिणमोक्खो जइ वा तवसा कडाण कम्माणं। तम्हा तवोवहाणे अज्जेतव्वे रतिं कुणह॥ १॥" इतिरूपा गाथा **वृद्धविवरणे**॥ ३ **लैह इति** अष्टादशाङ्कसूचकोऽक्षराङ्कः अष्टादशेत्यर्थः॥ ४ "निबयंति परिकिलेसा ९" इति गाथापूर्वार्द्धेन सोपक्लेशः ९ बन्धः ११ सावद्ययोगः १३ इति नवमैकादश-त्रयोदशानां दोषरूपाणां त्रयाणां पदानां ग्रहणम्, "एते तिण्णि वि दोसा" इत्युत्तरार्द्धेन च निरुपक्लेशः १० मोक्षः १२ अनवद्यभावः १४ इति दशम-द्वादश-चतुर्दशानां दोषाभावरूपाणां त्रयाणां पदानां सङ्ग्रह इति ज्ञेयम्॥ ५ **जयइ** सर्वासु सूत्रप्रतिषु॥ ६ **भवियत्थ पत्थ** मूलादर्शे॥ ७ "**भवति चात्र श्लोकः**" अत्रेति अष्टादशस्थानार्थव्यतिकरे, उक्ता-ऽनुक्तार्थसङ्ग्रहपर इत्यर्थः, **श्लोक** इति च जातिपरो निर्देशः, ततः श्लोकजातिरनेकभेदा भवतीति प्रभूतश्लोकोपन्यासेऽपि न विरोधः।" **हरिभद्रपादाः स्ववृत्तौ**॥

**जना य जधनी धम्मं०** सिलोगो। **जता** इति जम्मि चेव काले, **च**सद्दो पुव्वभणितकारणसमुच्चये, **धम्मो** सुतधम्मो चरित्तधम्मो य, तं जता **जधति** परिच्चयति। ण अज्जे अणज्जा मेच्छादयो, जो तधा चेट्ठितो सो अणज्ज इव **अणज्जो**। तं किमत्थं परिच्चयति? माणुस्सगकाम-भोगनिमित्तं **भोगकारणा**। **से तत्थ, से** इति जो धम्मपरिच्चागकारी **तत्थे**ति तीए लहुसगकाम-भोगालिच्छाए **मुच्छिते** गढिते अज्झोववण्णे **बाले** इति जे मंदविण्णाणे **आततो** आगामी कालः तं **णाववुज्झति**, आततिहितं आयतिक्षममित्यर्थः **णाववुज्झति** ण परियच्छति। **केयी भणंति** — **आयती** गौरवं तं **णाववुज्झति** जधा–मम सामण्णपरिभट्ठस्स एवं मंदा आयतीति ॥ ३ ॥ अणववुद्धायतीको य कामभोगमुच्छितो धम्मं परिच्चतिऊण—

५२६. [1]जदा य ओधातियो होति इंदो वा [2]पंडितो छमं।
सव्वधम्मपरिब्भट्ठो स पच्छा परितप्पति ॥ ४ ॥

५२६. **जदा य ओधातियो०** सिलोगो। **जदा य** जम्मि काले। **च**सद्दो पुव्वकारणसमुच्चये **ओधावणं** अवसप्पणं, तं पुण पव्वजातो जता अवसरितो भवति। तस्स ओहातियस्स सतो अवत्थंतरनिदरिसणत्थं भण्णति—**इंदो वा पडितो छमं इंदो** सक्को देवेसो, **वा** इति उवमा, **पडितो** परिब्भट्ठो, **छमा** भूमी तत्थ पडितो। [3]जधा धिधं इंदस्स महतो विभवातो पचुतस्स भूमिपडणं तथा तस्स परमसुहहेतुभूतातो जिणोवदिट्ठातो धम्मातो अवधावणं। एवं **च सव्वधम्मपरिब्भट्ठो** जं चिरमवि वतधारणं कतं जावजीवितपइण्णालोवे तं निप्फलं, कतं पुण्णं सव्वं परिब्भट्ठं भवति। अहवा जं लोइया पुण्णपरिकप्पणविसेसा तेहिंतो वि परिब्भट्ठो **सव्वधम्मपरिब्भट्ठो**। पमातित्तणेण वा सावगधम्मातो वि भट्ठो। काम-भोगसाधणविरहितो रागोदयावसाणे **स पच्छा परितप्पति स** इति धम्मपरिच्चागी **पच्छा** इति उत्तरकालं सारीर-माणसेहिं दुक्खेहिं सव्वतो तप्पति **परितप्पति** ॥ ४ ॥ ओहाइयस्स इहभव एवाणेगदोसणिदरिसणत्थं पुणो भण्णति—

५२७. जता य वंदिमो होति पच्छा होति [5]अवंदिमो।
[4]देवता वा चुता ठाणा स पच्छा परितप्पति ॥ ५ ॥

५२७. **जता य वंदिमो होति०** सिलोगो। **जता** इति एस निवातो, यस्माद् एतस्स अत्थे वट्टति। **च**सद्दो इंदस्स छमापडणसमुच्चये, तहाजातीयं चेव इदमवि। **वंदिमो** वंदणिज्जो, 'सीलत्थितोऽय' मिति राय-रायमत्तादीणमवि वंदणारिहो। तहाहोऊण सीलपरिक्खलणाणंतरं **पच्छा** 'सीलगुणविरहितो' इति **होति अवंदिमो** सक्कारसमुचितो ण। तदलाभे **देवता वा चुता ठाणा देवता** इति पुरंदरं मोत्तूण अण्णो देवविसेसो सट्ठाणातो परिपडंतो माणसं महादुक्खमणुभवति। **वा**सद्दो उवमाणत्थस्स इवसद्दस्स अत्थे, तेण जधा सा देवता देवताठाणातो चुता एवमेव सो ओधावितो संजमावसप्पणातो अणंतरं **पच्छा** माणसातिरेगेण दुक्खेण समंततो तप्पति ॥ ५ ॥ इंद-देवतापडणातो अपच्चक्खातो फुडतरं पच्चक्खमोधावणदोसनिदरिसणमुब्भावितेहिं भण्णति—

५२८. जता य पूतिमो होति पच्छा होति अपूतिमो।
राया व रज्जपब्भट्ठो स पच्छा परितप्पति ॥ ६ ॥

---

१ जया ओहाविओ खं ३ जे० विना सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव० ॥ २ पलितो जे० ॥ ३ यथा छत्र ॥ ४ देवया व चुयट्ठाणा खं १-२-४ जे० हाटी० अव०। देवया व चुया ठाणा शु०। देवया वऽब्भुयट्ठाणा खं ३ ॥ ५ अवंदणीओ मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**५२८. जता य पूतिमो होति०** सिलोगो। **जता**सद्दो **च**सद्दो य पुव्वभणिता। **पूयिमो** पूयणारिहो यदुक्तं पूज्यो **होति** जं एवं स भवति। ओहावणाणंतरं च **पच्छा** स भवति अतधाभूतो **अपूतिमो**। पूयणसुहलालितो तस्साभावे **राया व रज्जपब्भट्ठो** राया इव **राया व,** जधा कोति मंडलिकं महामंडलिकं सव्वभूमिपत्थिवत्तणं वा पाविऊण पुणो अपुण्णोदयमणुभवमाणो केणति कारणेण ततो रज्जातो अचरथं भट्ठो **पब्भट्ठो परितप्पति,** तधा **सो** पूजणीयो अपूयणीयत्तमुवगतो समणधम्मपब्भट्ठो **पच्छा परितप्पति** ॥ ६ ॥ जधा रायत्थाणपरिब्भंसातो तहा अण्णतो महामणुस्सत्थाणातो अवसातिज्जमाणस्स महादुक्खमेव भवति त्ति णिदरिसंतेहि भण्णति—

५२९. जता य माणिमो होति पच्छा होति अमाणिमो।
[1]सेट्ठि व्व कब्बडे छूढो स पच्छा परितप्पति ॥ ७ ॥

**५२९. जता य माणिमो होति०** सिलोगो। **जता** इति सह **च**सद्देणोववण्णितं। तत्थ **माणिमो** माणणजोग्गो माणणीयो। जता सो सीलप्पसादेण महतामवि माणणीयो, अतहाभूतो **पच्छा** स भवति [अमाणिमो अमाणणीयो,] तदाऽस्मात् माणणीयभावविगमात् **सेट्ठि व्व कब्बडे छूढो** रायकुललद्धसम्माणो समाविद्धवेढणो वणिग् गाममहत्तरो य **सेट्ठी,** चौड-चोंबग-कूडसक्खिसमुब्भावितदुव्ववहारा[3]रंभं **कब्बडं,** जहा सेट्ठी तम्मि छूढो विभवहरणा-ऽयसदूमितो परितप्पति। अधवा **कब्बडं** कुणगरं, जत्थ जल-थलसमुब्भवविचित्तभंडविणिओगो णत्थि तम्मि 'एत्थ वसितव्वं'ति रायकुलणिओगेण छूढो कयवि[4]क्कयाभावे विभवोपभोगपरिहीणो जधा सो, तधा साधुधम्माभिणंदिणा जणेण पुव्विं माणितो धम्मपरिब्भट्ठो माणणाभावे **स पच्छा परितप्पति**। अंजलिपग्गह-सिरकम्मा-ऽऽसणप्पदाणादि महंततरे जोग्गं वंदणं, व[5]त्थ-भत्तादिप्पदाणमुभयजोग्गं पूयणं, सदाणगुणुक्कित्तणा-मुण्णतिकरणं जुवजोग्गं माणणं, वंदण-पूयण-माणणाणं अध विसेसो ॥ ७ ॥ धम्मपरिच्चागाणंतरं वंदण-पूयण-माणणविरहितस्स जधा पच्छातावदुक्खं भवति तमुवदिट्ठं। उत्तरकालमवि वयो[6]परिणाम-तग्गतकिलेसोवदरिसणत्थं भण्णति—

५३०. जता य थेरयो होति समतिक्कंतजोव्वणो।
[7]मच्छो गलं गिलित्ता वा स पच्छा परितप्पति ॥ ८ ॥

**५३०. जता य थेरयो होति०** सिलोगो। **जता** जम्मि काले। **च**सद्दो पुव्वभणितपच्छातावकारणसमुच्चये। पढमवयपरिणामेण **थेरयो होति दूरसमतिक्कंतजोव्वणो**। निदरिसणं—से **मच्छो गलं गिलित्ता वा** जलचरसत्तविसेसो **मच्छो** णाम [8]थीवोवजीवि व्व बडिसामिसबद्धलोभेण गलमब्भवहरिऊण गलगे सुतिक्खलोहकंटगविद्धो थलमुवणीयो गलगिलणातो पच्छा परितप्पति। एवं सो बलिसा-ऽऽमिसत्थाणीयमंदकामभोगाभिलासेण धम्मपरिच्चागी **पच्छा परितप्पति** ॥ ८ ॥ थेरभावे जधाजातीयाणि विसेसेण दुक्खाणि संभवंति तदुपदर्शनार्थं भण्णति—

१ **सेट्ठीव क**° खं ४ जे०। **सेट्ठी वा क**° खं १ ॥ २ **बाडवोवगकूड**° वृद्ध० ॥ ३ °**रारंभो** मूलादर्शे ॥ ४ °**कयभावविब्भवो-भोग**° मूलादर्शे ॥ ५ "वत्थ-पत्तादिप्पयाण—" वृद्ध० ॥ ६ °**परिमाणत**° मूलादर्शे ॥ ७ **मच्छो व्व गलं गिलित्ता स** खं १-२-३-४ जे० शु० हाटी० अव०। खं ४ **व**। जे० **गिलं**। शु० **गलिं** ॥ ८ **थोवोचजीवोवजिव्वपडिसा**° मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३१. पुत्त-दारपरिक्किण्णो मोहसंताणसंतयो ।
पंकोसण्णो जहा णागो स पच्छा परितप्पति ॥ ९ ॥

**५३१. पुत्तदारपरिक्किण्णो०** सिलोगो। **पुत्ता** अवच्चाणि **दारा** भज्जा, पुत्त-दुहिता-भज्जातीहिं संबंधीहिं **परिक्किण्णो** परिवेढितो । तेहिं परिकिण्णो दंसण-चारित्तमोहणमणेगविधं कम्मं अविण्णाणं च **मोहो** तस्स **संताणो** अवोच्छित्ती तेण मोहसंताणेण समधिट्ठितो **मोहसंताणसंतयो**। निदरिसणं—**पंकोसण्णो जहा णागो पंको** चिक्खल्लो तम्मि खुत्तो **पंकोसण्णो, जधा** इति जेण प्रकारेण **णागो** इति हत्थी । जधा परिजिण्णो हत्थी अप्पोयगं पंकबहुलं पाणियत्थाणमवगाढो अणुवलब्भ पाणियं पारं च 'किमहमवइण्ण ?' इति **परितप्पति,** तधा **सो** ओहाइओ **पच्छा** थेरभावे पुत्त-दारभरणवावडो परिहीणकामभोगासंगो उत्तरकालं समंतयो तप्पति ॥ ९॥ थेरभावपरिहीणुच्छाहो पुत्त-दारभरण-पोसणासमत्थो धातुपरिक्खयपरिहीणकामभोगपिवासो पच्चागतसंवेगो संजमाधिकारणट्ठचेट्ठो बहुविधमणुतप्पमाणो विसेसेण इमं ओधावणपच्छाणुतावगतं चिंतयति । जधा—

५३२. अज्ज याहं गणी होंतो भावितप्पा बहुस्सुतो ।
जति हं रमंतो परियाये सामण्णे जिणदेसिते ॥ १० ॥

**५३२. अज्ज याहं गणी होंतो०** सिलोगो। अज्ज सो **गणी** सूरिपदमणुप्पत्तो **अहमज्ज होंतो**। सम्मदंसणेण बहुविहेहि य तवोजोगेहि अणिच्चयादिभावणाहि य **भावितप्पा**। परिसमत्तगणिपिडगज्झयणस्सवणेण य विसेसेण य **बहुस्सुतो**। अतिपण्णा एसा किया इति भण्णति—**जति हं रमंतो जदि** त्ति [अति]क्कान्तकियामासंसति, **अहमिति** अप्पाणमेव निद्दिसति, **रमंतो** इति रतिं विंदंतो। **परियाओ** णाम तहाप[व्व]ज्जपरिणती, अधवा प्रव्रज्यासद्दस्स अवब्भंसो **परियाओ**। बहुविधाओ पव्वज्जाओ त्ति विसेसिज्जति—**सामण्णे** सो य समणभावो तत्थ। पुणो विसेसो—**जिणदेसिते,** ण बोडिग-णिण्हगादिसच्छंदगाहे ॥ १० ॥ जरापरिणतोधावितपच्छाणुतावावदणनिदरिसणपसंगेणाणंतरसिलोगसुत्तं। इमं तु भगवतो **अज्जसेज्जंभवस्स** तदपराणं च गुरूण ओहाणुप्पेहीसिस्समतिथिरीकरणत्थमामंतणपुव्वं वयणं—

५३३. सोम्ममुहा !
देवलोगसमाणो तु परियाओ महेसिणं ।
रताण अरताणं तु महाणिरयसालिसो ॥ ११ ॥

**५३३. सोम्ममुहा ! । देवलोगसमाणो तु०** सिलोगो। देवाणं लोगो **देवलोगो,** सो पुण देवदत्तणमेव, तेण **समाणो** तत्तुल्लो। जधा पधाणेसु देवलोगेसु विसेसेण माणसाणि दुक्खाणि न संभवंति तधा पव्वज्जाए वि धिति-

---

१ एतत्सूत्रश्लोकात् प्राक् सर्वासु सूत्रप्रतिषु अयं सूत्रश्लोकोऽधिको दृश्यते—**जया य कुकुडुंबस्स कुतत्तीहिं विहम्मइ । हत्थी व बंधणे बद्धो स पच्छा परितप्पइ ॥** नायं सूत्रश्लोकः **अगस्त्यचूर्णौ वृद्धविवरणे हरिभद्रसूरिवृत्तौ** च व्याख्यातोऽस्ति । यद्यपि मुद्रित**हरिभद्रवृत्तौ** अस्य सूत्रश्लोकस्य व्याख्या वर्तते, किन्तु प्राचीनतमेष्वादर्शेषु नोपलभ्यतेऽस्य व्याख्या । **अवचूरीकृता सुमतिसाधुना** तु एष श्लोको व्याख्यातो दृश्यत इति ॥ २ °**परिकिण्णो** खं ३ अचू० विना सर्वासु सूत्रप्रतिषु । °**परीकिण्णो** वृद्ध० ॥ ३ °**ज्ज ताऽहं** वृद्ध० हाटी० अव० । **अज्जत्ते हं** वृद्धपा० ॥ ४ °**याओ य महेसिणो** जे० ॥ ५ **च** सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव० ॥ ६ °**हानरय**° खं २ शु० वृद्ध० हाटी० अव० ॥ ७ °**सारिसो** खं ४ वृद्ध० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मतो, तेण **देवलोगसमाणो तु**। **तु**सद्दो विसेसणे, अरतेहिंतो परियायरते विसेसयति। **परियाओ** पुव्वभणितो। **महेसिणं** ति तत्थ ठिता महरिसिणो भवंति। एवं सद्धासमणुगताणं परियागरताणं। तव्विवरीयाणं **अरताणं, तु**सद्दो तहेव, रतेहिंतो अरते विसेसेति। निदरिसणं मणोदुक्खाणुगमेण—**महाणिरयसालिसो महाणिरयो** जो सब्भावणिरयो, ण तु मणुस्सदुक्खे उवयारमत्तं, अहेसत्तमादी वा **महाणिरयो**, तेण **सारिस्सं** जस्स सो **महाणिरयसारिस्सो**, सावब्भंसं **महाणिरयसालिसो** ॥ ११ ॥ एतं तस्स अरतस्स सामण्णपरियाए सामण्णे रताण अरताणं च सुहं दुक्खं च सद्दोपमाणेण भणितं। एतस्स चेव अत्थस्स उवसंहरणोवदेसत्थमुण्णीयते—

५३४. अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तिमं[1], रयाण परियाए तहाऽरताणं।
[2]णिरयोवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं, [3]रमेज्ज तम्हा [4]परियाए पंडिए ॥ १२ ॥

५३४. **अमरोवमं जाणिय सोक्ख०** वृत्तम्। मरणं मरो, ण जेसिं मरो अत्थि ते **अमरा**, अमराण सोक्खं **अमरसोक्खं**, अमरसोक्खेण उवमा जस्स तं अमरसोक्खोवमं, उत्तरपदलोवे कते **अमरोवमं**। जाणिय यदुक्तं जाणिऊण। सुहभावो **सोक्खं** तं **उत्तिमं** उक्किट्ठतरमण्णसुहेहिंतो। तं पुण कस्स? उच्यते—**रयाण परियाए**। एवं देवलोगसमाणं सोक्खं धितीमतो सामण्णे। इदाणिं **तहाऽरताणं** ति उत्तरेण वयणेण संबज्झति, तं पुण इमं—**णिरयोवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं, तहे**ति तेण प्रकारेण, जधा रताण देवसोक्खसरिसं तहेव अरताण णरगवासोवमं दुक्खमुत्तमं जाणिऊण **रमेज्ज** सामण्णे धितिमुप्पाएज्ज। **तम्हा** इति हेतुवयणं रया-ऽरयाण सुह-दुक्खपरिण्णाणहेऊ। एतेण कारणेण **परियाए रमेज्ज**। एवं सति **पंडितो** भवति ॥ १२ ॥ एवं परियाए रताणं सोक्खं अरताणं दुक्खमिति जाणिऊण इहभव एव परपरिभवपरिहारिणा धम्मे रती करणीय त्ति तदत्थमिदमुपदिस्सति—

५३५. धम्मातो भट्ठं [5]सिरीयो ववेतं, जण्णग्गि विज्झायमिवऽप्पतेयं।
हीलेंति णं दुव्विधियं [6]कुसीलं, दाढुद्धितं घोरविसं व णागं ॥ १३ ॥

५३५. **धम्मातो भट्ठं सिरीयो ववेतं०** वृत्तम्। दसविधो समणधम्मो पुव्ववण्णितो, ततो चुतं एवं **धम्मातो भट्ठं**। **सिरी** लच्छी सोभा वा, सा पुण जा समणभावाणुरूवा सामण्णसिरी, ततो **ववेतं** ववगतं **सिरीयो ववेतं**, तमेवं धम्मसिरीपरिचत्तं। सिरीविरहे से दिट्ठंतो—**जण्णग्गि विज्झायमिवऽप्पतेयं** जधा मधमुहेसु समिधासमुदाय-वसा-रुहिर-महु-घतादीहिं हूयमाणो अग्गी सभावदित्तीओ अधिगं दिप्पति, हवणावसाणे य परिविज्झाणमुरंगारावत्थो भवति अप्पतेयो, एवं ओधावितो वि समणधम्मसिरीपरिचत्तो अप्पतेयो भवति। अतो तमेवंविसिट्ठं संतं **हीलेंति णं दुव्विधियं कुसीलं हीः** इति लज्जा, लज्जामुपणयंति **हीलेंति**, यदुक्तं ह्रेपयन्ति, एवंगतं एतं हीलणं, **विहितो** उप्पादितो, दुट्ठु विधितो **दुव्विहितो**, किं तेण उप्पादितेण जो एवं णिंदाभायणं?। तमेवंगतं हीलेंति सीलपरिच्चागिणं **कुसीलं**। जधा को पतावहीणो हीलिज्जइ? त्ति णिदरिसणं—**दाढुद्धितं घोरविसं व णागं** अग्गदंतपरिपस्सदसणविसेसो दाढा, सा अवणीया जस्स सो दाढुद्धितो, तं **दाढुद्धितं**, घोरं विसं जस्स सो **घोरविसो**, जधा पुव्वं घोरविसं पच्छा आहितुंडिगादीहि समुद्धित-विसदाढं। **व**सद्दो उवमारूवस्स इवसद्दस्स अत्थे। जधा तं दाढसहितमतिघोरविसमुत्तरकालमुद्धृतदाढं 'निव्विसोऽय-

१ °**मोत्तमं** जे०। °**मुत्तमं** अचू० वृद्ध० जे० विना॥ २ **नरयो**° खं २ हाटी० अव०॥ ३ **तम्हा रमेज्जा प**° खं ३ जे०॥ ४ °**याय पं**° शु०॥ ५ **सिरीओ अवेयं** खं ४ जे० अव०॥ ६ **कुसीला** खं १-२-३ शु० हाटी० अव०॥



Jain Education International  For Private & Personal Use Only  www.jainelibrary.org

मिति जणो परिभवति **णागं**, णागो पुण सप्पो। तधा तं 'दुव्विहित-कुसीलसमण-पव्वोगलितोऽयम्' एवमा[दि]-दुव्वयणेहिं हीलेंति॥ १३॥ ओधाइयस्स इहभवलज्जणगदोसो भणितो। इदाणिं इह परत्थ य णेगदोससंभवणत्थमुण्णीयते। जधा—

५३६. इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती, दुण्णाम-गोतं च पिधुज्जणम्मि।
चुतस्स धम्मातो अधम्मसेविणो, संभिण्णवित्तस्स य हेट्ठतो गती॥ १४॥

५३६. **इहेवऽधम्मो अयसो०** इन्द्रवज्रा। इह इमम्मि मणुस्सभवे। **एव**सद्दोऽवधारणे। एतं अवधारिज्जति—अच्छतु ता परलोगो, णणु इहेव दोसा **अधम्मो अयसो अकित्ती**, जं समणधम्मपरिच्चाग-छक्कायारंभेण अपुण्णमाचरति एस **अधम्मो**, सामण्णगुणपरिहाणी **अयसो**, एस समणगभूतपुव्व इति दोसकित्तण**मकित्ती**। जधाणुरूवस्स भूमिभागस्स गुणेहिं वायणमिह **जसो**, जणमुखपरंपरेण गुणसंसद्दणं **कित्ती**, अयं जस-कित्तीविसेसो। किंच—**दुण्णाम-गोतं च पिधुज्जणम्मि** कुच्छितं णामं **दुण्णामं** पुराणातिगं, जो णियमारूढो तं मुंचति अवस्सं णीयजातीयो वि त्ति **दुगोतं**। दुस्सद्दो कुच्छितत्थो एगत्थपउत्तो उभयगामी। महत्ताविरहितो सामण्णजणवतो **पिहुज्जणो**। एते अधम्मादयो ओधावितस्स पिधुज्जणे वि दोसा इति संभाविज्जंति, किं पुण उत्तमजणे?। तस्स एवंदोसदूसितस्स **चुतस्स धम्मातो** परिब्भट्ठस्स धम्मातो सरीरसुह-पुत्त-दारभरणपरिमूढस्स विसेसेण पाणातिवातादि **अधम्मसेविणो**। **संभिण्ण-वित्तस्स**, **वृत्तं** सीलं समेच्च भिण्णं **संभिण्णं**। **च**सद्दो पुव्वुद्दिट्ठकारणसमुच्चये। तस्स धम्मपरिचुतस्स अधम्मसेविणो समवलंबितसंभिण्णचारित्रस्य च रयणप्पभादिसु कम्मभारगुरुतया अधोगमणमिति **हेट्ठतो गती**॥ १४॥ अयं च समणभावपरिच्चागे अधम्मोऽजसोऽकित्ती दुण्णाम-गोत-दुग्गतिगमणेहिंतो पावयरो पच्चवातो त्ति तदुब्भासणत्थमुण्णीयते—

५३७ भुंजित्तु भोगाणि पसज्झ चेतसा, तधाविधं कट्टु असंजमं बहुं।
गतिं च गच्छे अणाभिज्झितं [दुहं], बोधीय से णो सुलभा पुणो पुणो॥ १५॥

५३७. **भुंजित्तु भोगाणि०** वृत्तम्। **भुंजित्तु** अब्भवहरणादिणा उवजीविऊण, दारा-ऽऽभरण-भोयणऽच्छादणादीणि भोत्तव्वाणि **भोगाणि**। वैरि-दायाद-तक्करादीण एगदत्ताभिणिविट्ठाण बलक्कारेण, एवं **पसज्झ** विसयसंरक्खणे य हिंसा-मोसादिनिविट्ठेण **चेतसा**, तस्स हिंसादियस्स अणुरूवं **तधाविधं**, करेऊण **कट्टु**, अपुण्ण**मसंजमो** तमुवचिणिऊण **बहुं**। अह मरणसमये **गतिं च गच्छे अण[भिज्झितं दुहं] गतिं** णरगादिकं तं एतेण सीलेण गच्छेज्जा, अभिलासो अभिज्झा, सा जत्थ समुप्पण्णा तं अभिज्झितं, तव्विवरीयं **अणभिज्झितं** अणभिलसितमणभिप्रेतं [दुहं दुक्खरूवं] **गतिं गच्छे**। तस्स तहापमादिणो **बोधी य से णो सुलभा पुणो पुणो** आरुहंतस्स उवलद्धा बोही य से णो सुलभा। **च**सद्देण अणभिज्झितगतिगमणातिसंसूयणं। **पुणो पुणो** इति ण केवलमणन्तरभवे, किंतु भवसतेसु वि॥ १५॥ जाणि ओधाणुप्पेहीमतीथिरीकरणत्थमट्ठारस पदाणि **दुस्समाए दुप्पजीवं १** [सुत्तं ५२४] एवमादीणि समासतोऽभिहिताणि, तेसिमत्थवित्थरणत्थं **जदा [य] जधती धम्मं** [सुत्तं ५२५] एवमादयो सिलोगा भणिता। जं पुण **इमे य मे दुक्खे णचिरकालोवट्ठादी भविस्सति ४** [सुत्तं ५२४] त्ति आलंबणं तदुपदेसत्थमिदमारब्भते—

---

१ °**मधेज्जं च** सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव०। °**मधेयं च** खं ३॥ २ °**चित्तस्स उ** खं २ जे०॥ ३ सामान्यजनव्रजः॥ ४ **अणहिज्झियं** सर्वासु सूत्रप्रतिषु॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३८. इमस्स ता णेरयियस्स जंतुणो, दुहोवणीतस्स किलेस[1]वित्तिणो।
पलिओवमं झिज्जति सागरोवमं, किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं? ॥ १६॥

५३८ **इमस्स ता णेरयियस्स०** वृत्तम्। **इमस्से**ति अप्पणो अप्पनिद्देसो। **ता** इति तावसद्दस्सावधारणत्थस्स अत्थे, इमस्सेव ताव, किमुत बहूणं संसारिसत्ताणं? **णेरयियस्स जंतुणो** त्ति जता अधमेव णरगसूववण्णो तस्सेवंगतस्स दुक्खाणि णरयोवगाणि दुक्खेहिं वा तप्पायोग्गेहिं णरगमुवणीतस्स, अतो **दुहोवणीतस्स** णिमिसमेत्तमवि णत्थि सुहमिति **किलेसवित्तिणो** तधागतस्स पलिओवमट्ठितिएसु उववण्णस्स तप्पभूतो कालो तहा वि झिज्जति, किं बहुणा? ततो पभूततरं **सागरोवमम**वि। **किं पुण किमंग** तु, अधवा **अंग** इति आमंत्रणे, संजमे अरतिसमावण्णमप्पाणमामन्त्रयति थिरीकरेति य। **मज्झ** इति मम **इम**मिति जं अरतिमयमप्पणो पच्चक्खं **मणोदुह**मिति मणोमयमेव ण सारीरदुक्खाणुगतं ॥ १६॥ ओहावणाणुप्पेहाणियमणत्थमालंबणमणंतरुद्दिट्ठं जं तस्स सावसेससंगहत्थमिदं भण्णति—

५३९. ण मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सति, असासता भोगपिवास जंतुणो।
ण[2] मे सरीरेण इमेणऽवेस्सती, [3]वियरसती जीवितपज्जवेण मे ॥ १७॥

५३९. **ण मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सति०** वृत्तम्। **ण** इति पडिसेहसद्दो। **मे** इति अप्पणिद्देसो, यदुक्तं मम। **चिरं** दीहकालं। **दुक्ख**मिति जं संजमे अरतिसमुप्पत्तिमयं। **भविस्सती**ति आगामिकालणिद्देसो। तं एतं मम संजमे अरतिमयं दुक्खं णातिचिरकालीणमिति सुसहं। जण्णिमित्तं च अहं संजमातोऽवसप्पितुं ववसामि सा **असासता भोगपिवासा जंतुणो** इमस्स मम जीवस्स। **ण मे सरीरेण इमेणऽवेस्सती**ति एत्थ काकुगम्मो जतिसद्दस्स अत्थो, जति दुक्खमिणं [इमेण] उपादत्तकेण सरीरगेण ण अवगच्छिहिति तहा वि अवस्समेव **वियस्सती जीवितपज्जवेण मे, वियस्सती**ति विगच्छिहिति, परिगमणं **पज्जयो** [4]अंतगमणं, तं पुण जीवितस्स पज्जायो मरणमेव। जति इमेण सरीरेण एतस्स अरतिदुक्खस्स अंतो ण कज्जिहिति तहा वि केत्तियमेव पुरिसायुमिति तदंते अरतिदुक्खस्स अंत एवेति अरतिमधियासेज्जा। **सरीरेणे**ति तृतीया, जं सरीरेण सहगतं सरीरं सरीरिदुक्खाणि य समाणमिति भणितं [5]होति। एवमिति सव्वं जाणिऊण **रमेज्ज तम्हा परियाए** [6]**पंडिए** [सुत्तं ५३४]॥ १७॥ संजमे रतिनिमितमालंबणमणंतरुद्दिट्ठं। तस्स सुद्धस्साऽऽलंबणस्स फलोवदरिसणत्थमिदमारब्भते—

५४०. जस्सेवँ[7]मप्पा तु भवेज्ज निच्छितो, [8]जहेज्ज देहं ण य धम्मसासणं।
तं तारिसं ण प्पचलेंति इंदिया, उवेंत वाया व सुदंसणं गिरिं ॥ १८॥

५४०. **जस्सेवमप्पा तु भवेज्ज निच्छितो०** वृत्तम्। **जस्से**ति अणिद्दिट्ठणामधेयस्स **एव**मिति प्रकारोवदरिसणं भगवान् **अज्जसेज्जंभवो** आह। जस्स एतेण प्रकारेण आमरणाए वि संजमे अरतिआधियासणं प्रति **अप्पा** इति चित्तमेव, तुसद्दो संजमे रयं विसेसेति, **भवेज्ज** त्ति प्रार्थनं उवदेसो वा **निच्छितो** एकग्गकतववसातो। सो एवं

१ °**सवत्तिणो** खं १-४ जे० शु० ॥ २ **न चे सरी**° खं २ शु० हाटी० अव० ॥ ३ **अवेस्सई** खं ३ जे० शुपा०। **अविस्सई** खं १। **अवेसई** खं २-४ ॥ ४ **अण्तगमणं** मूलादर्शे ॥ ५ होतिमिति। **पव**° मूलादर्शे ॥ ६ **पिंडिए** मूलादर्शे ॥ ७ °**व अप्पा** खं १-४ जे० ॥ ८ **चएज्ज देहं न उ** खं २-३ शु० हाटी० अव०। **चइज्ज देहं न हु** खं १-४ जे० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कतनिच्छतो **जहेज्ज देहं ण य धम्मसासणं जहेज्ज** त्ति चयेज्ज, **देहो** सरीरं, ण् इति प्रतिषेधे, **चसद्दो** अवधारणे, सासिज्जति–णाये पडिवाथिज्जति जेण तं **सासणं**, धम्मस्स धम्म एव वा सासणं **धम्मसासणं**। एवं कतववसायो देहसंदेहे वि धम्मसासणं ण छड्डेज्ज। धम्मधितिथणियणिच्छयं **तं तारिसं ण प्पचलेंति इंदिया त**मिति पडिनिद्देसवयणं विम्हए वा। **तारिस**मिति देहविणासे वि धम्मापरिच्चागिणं **ण प्पचलेंति** ण विकंपयंति धम्मचरणातो, के ण प्पचलेंति? इति, **इंदिया** सद्दादयो इंदियत्था इति तदभिसंबंधेण पुलिंगाभिधाणं। जधा के कं ण विचालयंति? इति भण्णति—**उवेंत वाया व सुदंसणं गिरिं उवेंता** उवागच्छंता **वाता** पादीणादयो ते इव **सुदंसणं गिरिं सुदंसणो** सेलराया **मेरुः**। जधा वाता उवेंता **मेरुं** ण पचालेंति तहा तं सुणिच्छितमाणसमिंदियत्था ण पचालेंति ॥ १८ ॥ इदाणिं सुविदियट्ठारसट्ठाणेण संजमे अरतिमुज्झिऊण धितिसंपण्णेण जं करणीयं तदुपदेसत्थं भण्णति—

५४१. इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं णरो[1], आयं उवायं विविधं वियाणिया।
कायेण वाया अदु माणसेण, तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमं[2]धिट्ठते ॥ १९ ॥ त्ति बेमि

॥ र[3]इवक्का नाम चूला पढमा समत्ता ॥

५४१. **इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं णरो॰** वृत्तम्। इतिसद्दो उवप्पदरिसणत्थो, जं इह अज्झयणे आदावारब्भ उपदिट्ठं तमालोकयति। एवसद्दो अवधारणे पच्चवलोगणे णियममाह। **संपस्सिय** एकीभावेण अवलोकेऊण बुद्धी जस्स अत्थि सो **बुद्धिमं** भवति **णरो** मणुस्सो, 'पुरुसुत्तरिया धम्मा' इति तस्स गहणं। एवमालोगेऊण **आयं उवायं विविधं वियाणिया आयो** पुण्ण-विण्णाणादीण आगमो, **उवायो** तस्स साधणे आणुपुव्वी, तं **आयं उवायं च विविधं** अणेगागारं जाणिऊण। एवं संपस्सितूण आयोवायकुसलेण सव्वहा इमं धारणीयं—**कायेण वाया अदु माणसेण कायो** सरीरं **वा**गिति अभिधाणं **माणसं** मण एव, एतेहिं तिहिं वि करणेहिं जहोवदेसपवत्तण-णियत्तणेण। एतेहिं चेव सुणियमितेहिं एवं **तिगुत्तिगुत्तो जिणस्स** भगवतो तित्थगरस्स **वयणं** उवदेसो तं जिणवयणं **अधिट्ठते** अधितिट्ठति, जं तत्थ अवत्थाणं करेति। **अधिट्ठए** इति भगवतः सूत्रकारस्स उवदेसवयणं ॥ १९ ॥ **इति-बेमि**सद्दा पुव्ववण्णितत्था ॥ णया तहेव ॥

संजमधितिपडिवायणहेतुं अट्ठारसत्थपडिलेहा। जिणवयणोवत्थाणं च होंति रतिवक्कपिंडत्था ॥ १ ॥

**रतिवक्कं समत्तं ॥**

१ **नरे** जे॰ ॥ २ °**महिट्ठेज्जासि** ॥ **त्ति बेमि** सर्वासु सूत्रप्रतिषु ॥ ३ **रइवक्का पढमचूला समत्ता** खं १। **रइवक्कज्झयणं समत्तं** खं २-३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# [बितिया विवित्तचरिया चूलिया]

धम्मे धितिमतो खुड्डियायारोवत्थितस्स विदितछक्कायवित्थरस्स एसणीयपिंडधारितसरीरस्स समत्तायारावत्थितस्स वयणविभागकुसलस्स सुप्पणिहितजोगजुत्तस्स विणीयस्स दसमज्झयणोपवण्णितगुणस्स समत्तसकलभिक्खुभावस्स विसेसेण थिरीकरणत्थं विवित्तचरियोवदेसत्थं च उत्तरतंतमुपदिट्ठं चूलितादुतं--**रतिवक्कं[१] चूलिता[२] य**। तत्थ धम्मे थिरीकरणत्था **रतिवक्क**णामधेया पढमचूला भणिता। इदाणिं विवित्तचरियोवदेसत्था बितिया चूला भाणितव्वा। तीसे पढमपदसंकित्तणे चूलिया इति णाम। एतेण अणुक्कमेण आगतं बितियं **चूलियज्झयणं**। तस्स इमा उवग्घात**निज्जुत्ति**-पढमगाहा। तं जहा—

**अधिगारो पुव्वुत्तो चतुव्विहो बितियचूलियज्झयणे।**
**सेसाणं दाराणं अधक्कमं घोसणा होति॥ १॥ २६७॥**

**अधिकारो पुव्वुत्तो॰** गाधा। अधिकरण**मधिकारो**; जं तस्स वत्थुस्स अंगीकरणं, सो **पुव्वुत्तो** पुव्वभणित एव **रतिवक्क**णामाए पढमचूलाए। सो पुण **चतुव्विहो** णामादि इहावि तधेव भणितव्वो। तम्मि परूविते ततो **बितियचूलियज्झयणे सेसाणं** नामादीणं निद्देसादीणं च **दाराणं अधक्कमं घोसणा होति, अधक्कम**मिति जो जो अणुक्कमो तेण घोसणमिति जं तेसिं दाराणं अत्थेण स्पर्शनम्॥ १॥ २६७॥ गतो नामनिप्फण्णो। [२]दो सुत्तफासियगाथाओ सुत्ते चेव भणिहिति त्ति एतेण पुण उवग्घातेण इमं चूलियज्झयणपढमसुत्तमागतं तं जधा—

५४२. चूलियं तु पवक्खामि सुतं केवलिभासितं।
जं सुणेत्तु सपुण्णाणं धम्मे उप्पज्जती मती॥ १॥

**५४२. चूलियं तु पवक्खामि॰** सिलोगो। तत्थ अप्पा चूला **चूलिया**, सा पुण सिहा। सा चतुव्विहा अणंतरज्झयणोववण्णिता। **तु**सद्दो भावचूलाविसेसणे। तं पकरिसेण वक्खामि **पवक्खामि**। श्रूयत इति **श्रुतम्**। तं पुण सुतनाणं **केवलिभासित**मिति सत्थगौरवमुप्पायणत्थं भगवता केवलिणा भणितं, ण जेण केणति, तव्वयणं पुण सद्धासमुप्पायणत्थमिति भण्णति। **जं सुणेत्तु** जं चूलियत्थवित्थरं सोऊण **सपुण्णाणं** सह पुण्णेण सपुण्णा, [तेसिं सपुण्णाणं]। तं पुण (? संपुण्णं) पुणाति–सोधयतीति **पुण्णं** सात-सम्मद्दंसणाति। **धम्मे उप्पज्जति** संभवति **मती** चित्तमेव। तं सद्धाजणणं चूलियसुतनाणं सोऊण सपुण्णाणं 'करणीयमेयं'ति विसेसेण चरित्तधम्मे मती संभवति॥ १॥ पतिण्णा—पढमसिलोगे भणितं "**चूलितं सुतं केवलिभासितं पवक्खामि**"त्ति, अभिणवधम्मस्स सद्धाजणणत्थं तत्थ [३]चरिता-गुण-नियमगतमणेगहा भाणितव्वं। एवं तु सुहुमत्थपडिपायणमिति णिदरिसणं ताव इमं भण्णति--

५४३. अणुसोयपट्ठिते बहुजणम्मि पडिसोतलद्धलक्खेण।
पडिसोतमेव अप्पा दातव्वो होतुकामेण॥ २॥

---

१ फासणा खं॰ वी॰ सा॰॥ २ "उद्देसे णिद्देसे य॰" तधा "किं कइविहं कस्स कहिं॰" इत्येते द्वे गाथे बोद्धव्ये॥ ३ चर्या-गुण-नियमगतमनेकधा॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५४३. **अणुसोयपट्ठिते०** गाहासुत्तं । तत्थ **अणु**सद्दो पच्छाभावे, **सोय**मिति पाणियस्स णिण्णप्पदेसाभिसप्पणं, सोतेण पाणियस्स गमणे पवत्ते जं तत्थ पडितं कट्ठाति छुब्भति तं सोतमणुजातीति **अणुसोतपट्ठितं**, एवं अणुसोतपट्ठित इव, इवसद्दलोवो एत्थ दट्ठव्वो, **पट्ठित** इति एवं प्रवृत्तो । जधा कट्ठातीण तदवलग्गाण व मणुस्सातीण णिण्णप्पदेसपट्ठितपाणितवेगसमप्फालियाण सुहं ततो वेगेण गमणं, एवं बहुजणस्सावि बहुजणो, सो पुण असंजतजणो, जेण संजतेहिंतो असंजता अणंतगुणा । जहा तेसिं पाणितवेगाहताणं तहा बहुजणस्सावि सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधपडिबद्धस्स परोप्परकारिकासमुच्छाइणसंघातियवेगेण संसारमहापाताले पतणं, एवमणुसोतपट्ठितो बहुजणो । तम्मि **अणुसोतपट्ठिते** सति **बहुजणम्मि** किं करणीयं ? इति भण्णति–**पडिसोतलद्धलक्खेण पडिसोतमेव अप्पा दातव्वो,** प्रतीपं सोतं **पडिसोतं**, जं पाणियस्स थलं प्रति गमणं तं पुण ण साभावितं, देवतायिणिओगेण होज्ज जधा असक्कं, एवं सद्दादिविसयपडिलोमा प्रवृत्ती दुक्करा, एतं पडिसोतं । **लद्धलक्खो** पुण जधा ईसत्थं सुसिक्खितो सुसुण्हमवि वालादिगं लक्खं लभते तधा कामसुहभावणाभाविते लोगे तप्परिच्चागेण संजमं लक्खं जो लभते सो **पडिसोतलद्धलक्खो** भवति । तेण पडिसोतलद्धलक्खेण पुणो पुणो णियमेतूण **पडिसोतमेव अप्पा दातव्वो,** इह पडिसोतं रागविणयणं, **एव**सद्दो अवधारणे, एतं अवधारेति—एतातो ण अण्णहा, **अप्पा** इति जो एस अधिकृतो संजमातो, **दातव्वो** इति तथा पवत्तेयव्वो । भिक्खुभावेण निव्वाणगमणारुहो तहा भवितुकामो, अतो तेण **होतुकामेण** पडिसोतगेण **पडिसोतमप्पा दातव्वो** ॥ २ ॥ एतस्सेव उदाहरणस्स विसेसेण निरूवणं भण्णति—

५४४. अणुसोतसुहो लोगो पडिसोतो आसमो सुविधिताणं ।
अणुसोतो संसारो पडिसोतो तस्स निप्फेडो ॥ ३ ॥

५४४. **अणुसोतसुहो लोगो०** गाधा । **अणुसोतं** पुव्वभणितं, तं जस्स सुहं, तं जधा-पाणियस्स णिण्णाभिसप्पणं सुहं, एवं सद्दातिसंगो सुहो लोगस्स, सो पुण **अणुसोतसुहो लोगो**, एवं सद्दावकरणं । एताओ विवरीयो **पडिसोतो आसमो सुविधिताणं** पडिसोतगमणमिव दुक्करं संसारे तधाभवितस्स विसयविणियत्तणं, **आसमो** णाम तवोवणत्थाणं । सुट्ठु जेसिं विधाणं ते सुचरित्त-सुविधाणवंतो **सुविहिता** तेसिं विसयविरागमंताणं **सुविधिताणं आसमो पडिसोतो** । उभयफलनिदरिसणं—**अणुसोतो संसारो**, तहा अणुसोतसा विसयसुहमुच्छिओ लोगो पवत्तमाणो संसारे निवडति, 'संसारकारणं सद्दादयो अणुसोता' इति कारणे कारणोवयारो, अतो **अणुसोतो संसारो** । तव्विवरीयायरणेण पुण **पडिसोतो तस्स निप्फेडो,** जधा पडिलोमं गच्छंतो ण पाडिज्जति पाताले णदिसोतेण, एवं सद्दादीहिं अमुच्छितो ण संसारमहापाताले पडति ॥ ३ ॥ संसारस्स तव्विमोक्खस्स य कारणमुद्देसेण भणितं । इदाणिं तु विमोत्तिकारणवित्थरोवदरिसणनिमित्तं भण्णति—

५४५. एवं आयारपरक्कमेण संवरसमाधिबहुलेणं ।
चरिया गुणा य णियमा य होंति साधूण दट्ठव्वा ॥ ४ ॥

५४५. **एवं आयारपरक्कमेण०** गाधासूत्रम् । **एवं**सद्दो प्रकारोवदरिसणे, संसारकारणपडिकूलायरणेण विमुत्तिभावं दरिसयति । तं पुण **आयारपरक्कमेण** आयारे परक्कमो **आयारपरक्कमो, आयारो** मूलगुणा,

---

१ **आसवो** अचू० हाटीमा० अवपा० विना ॥ २ **तस्स निग्घाडो** वृद्ध० । **तस्स उत्तारो** सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव० ॥ ३ **असंजमो** इति मूलादर्शे पाठः ॥ ४ °**विसंगमं**° मूलादर्शे ॥ ५ **तम्हा आयार**° अचू० वृद्ध० विना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**परक्कमो** बलं आयारधारणे सामत्थं, आयारे परक्कमो जस्स अत्थि सो आयारपरक्कमवान्, मतुलोवे कते **आयारपरक्कमो** साधुरेव तेण, **एवं आयारपरक्कमेणं। संवरसमाधिबहुलेणं, संवरो** इंदियसंवरो णोइंदियसंवरो य, संवरे **समाधिबहुलो** संवरे जं समाधाणं ततो अविकंपणं, बहुं [लाति-] गेण्हति संवरे समाधिं बहुं पडिवज्जति **संवरसमाधिबहुलो**, तेण **संवरसमाधिबहुलेण**। किं करणीयं? इति, भण्णति--**चरिया गुणा य णियमा य होंति साधूण दट्ठव्वा, चरिता** चरित्तमेव मूलुत्तरगुणसमुदायो, **गुणा** तेसिं सारक्खणनिमित्तं भावणातो, **णियमा** पडिमादयो अभिग्गहविसेसा, ते वि सत्तिओ **दट्ठव्वा** इति भणामि। **चसद्दो**भयं चरिया-णियमाणेगभेदविकप्पणत्थं। **होंति दट्ठव्वा** तेण संभवंति। **साधूण** इति साधुणा, एसा तृतीया। तेण आयारपरक्कमवता संवरसमाधिबहुलेण चरिता-नियम-गुणा साधुणा अभिक्खणमालोएऊण विण्णाणेण जहोवदेसं कातव्वा, एवं सम्मं दिट्ठा भवंति ॥ ४ ॥ साधु त्ति वा संजतो त्ति वा भिक्खु त्ति वा एगट्ठं, तेण भिक्खुं भणामि। तस्स भिक्खुस्स णामादिदारघोसणं काऊणं इमाए सुत्तफासियगाहाए उक्करिसिज्जति—

**दव्वं सरीर भविओ भावेण तु संजतो इहं तस्स।**
**ओगहिता पग्गहिता विहारचरिता मुणेतव्वा ॥ २ ॥ २६८ ॥**

**दव्वं सरीर०** एसा **निज्जुत्तिगाथा**। तत्थ दव्वभिक्खुं जाणगसरीर-भवियसरीर-तव्वतिरित्तं अणिओगदारक्कमेण वण्णेऊण **भावेण तु संजतो** भावभिक्खू जो संजमे ठितो **इहं तस्से**ति **तस्स** भावभिक्खुस्स **इह** अज्झयणे। **ओगहिता पग्गहिता०** एतं गाहापच्छद्धं अज्झयणपिंडत्थोवदरिसणहेतुगं। **उग्गहिता** इति समविभावेण गहिता, जं पढमवयोपडिवण्णा एतं भणितं। **पग्गहिता** जं विसेसेण जधाभणितं गहिता। का पुण सा? **विहारचरिता** विहरणं **विहारो** मासकप्पादी, तम्मि **चरिता** जधाभणिताणुट्ठाणं **मुणेतव्वा** उवदेसवयणं एवं जाणितव्वा ॥ २ ॥ २६८ ॥ 'आयारे परक्कमवता संवरसमाधिबहुलेण साधुणा चरिता गुणा य णियमा य दट्ठव्वा' इति भणितं। तेसिं चरिया-नियम-गुणाण विसेसोवदरिसणायेदमुण्णीयते—

**५४६. अणिएयवासो समुदाणचरिया, अण्णातउंछं पतिरिक्कया य।**
**अप्पोवधी कलहविवज्जणा य, विहारचरिया इसिणं पसत्था ॥ ५ ॥**

**५४६. अणिएयवासो समुदाणचरिया०** इति वृत्तम्। एतस्स उवोग्घातो जो अणंतरसुत्तेण संबंधो भणितो। अणिएयवासो त्ति पदं, समुदाणचरिय त्ति पदं एवमादि २।

पदत्थो पुण-'अणिएयवासो'त्ति **णिकेतं** घरं तत्थ ण वसितव्वं उज्जाणातिवासिणा होतव्वं "**अणियय-वासो**" वा जतो ण णिच्चमेगत्थ वसियव्वं किंतु विहरितव्वं। **समुदाणचरिया** इति मज्जायाए उग्गमितं-एगीभावमुवणीयमिति **समुदाणं**, तस्स विसुद्धस्स चरणं **समुदाणचर्या**। **उंछं** दव्वउंछं वित्तिमादीण, तमेव समुदाणं पुव्व-पच्छासंथवादीहिं ण उप्पादियमिति भावतो **अण्णातउंछं**। **पतिरिक्कं** रित्तगं, दव्वपतिरिक्कं जं विजणं, भावे रागादिविरहितं, तब्भावो **पतिरिक्कया**। उवधाणमुवधी, तत्थ दव्वओ **अप्पोवधी** जं एगेण वत्थेण परिवुसित एवमादि, भावतो अप्पकोधादिधारणं सपक्ख-परपक्खगतं। कोधाविट्ठस्स भंडणं **कलहो**, तस्स विविधं वज्जणा

१ **य** खं० वी० सा० हाटी० ॥ २ **उग्गहिता** खं० वी० सा० ॥ ३ **अणिययवासो** खं ३ अचूपा० वृद्धपा० हाटी० अव०। **अणिएयवासो** हाटीपा० अवपा० ॥ ४ **विरहितव्वं। समुदाणचर्या इति** मूलादर्शे ॥ ५ **ज चजणं** मूलादर्शे ॥ ६ **दव्वअया पोवधी** मूलादर्शे ॥ ७ °**दिधारणं** वृद्ध० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

**कलहविवज्जणा**। **चसद्दो** अणिएयवासातीण चरियाविसेसाण अणुकरिसणत्थो। सव्वा वि एसा **विहारचरिया इसिणं पसत्था** विहरणं **विहारो** जं एवं पवत्तियव्वं, एतस्स विहारस्स चरणं **विहारचर्या, इसिणं पसत्था** इति **रिसयो** गणधरादयो तेसिं, भगवता एसा चरिया पसंसिता। एवमायरंता रिसयो भवंतीति वा एवं **इसिणं पसत्था**। एसा अक्खरभावण त्ति पदत्थो ३।

पदविग्गहो—समासपदे संभवति तदिह णत्थि ४।

इदाणिं सुत्तत्थवित्थरणं **निज्जुत्तीए** करणीयमिति तीसे अवकासो, [तं] पुण सव्वसुत्तेसु जत्थ वक्खसेसत्थाणीयं किंचिदणुपसंगहितमवस्सभणितव्वं च। इह तं अप्पेण विसेसेण भवितव्वमिति भण्णति—

*** अणिएतं पतिरिकं अण्णातं सामुदाणियं उंछं।**
**अप्पोवधी अकलहो विहारचरिया इसिपसत्था ॥ ३ ॥ २६९ ॥**

अक्खरत्थो सुत्तभणितो। केणति विसेसेण विवरिज्जति—**अणिकेतं** जं ण घरत्थतुल्लेसु आरंभेसु पवत्तति। **पतिरिकं** जं विवित्तसेज्जासणसेवी। **अण्णातं** जं ण तवस्सिमादिपगासणेण सति वा असति वा तम्मि गुणे। **सामुदाणियं उंछं** जं सीलंगाणि संधायतति फासुयत्तणेण। **अप्पोवधी** जं संजमोवघातीणं उवगरणाणं अधारणं। **अकलहग्गहणेण** सव्वकसायणिज्जयसूयणं। एसा अणेगागारा **विहारचरिता** इसीहिं इसीण वा पसत्था **इसिपसत्था ॥ ३ ॥ २६९ ॥**

णणु **निज्जुत्तिगाहाए** पुणरुत्तीकरणमिति पचालणा ५।

पच्चवत्थाणं—घरे [ण] वसितव्वमिति दव्वतो अणियेतं, घरत्थारंभेसु [ण] वट्टितव्वमिति भावतो अणियेतं। एवं सव्वपदेसु दव्व-भावगतो विसेसो। जधासंभवमेसा आजोजणा ६ ॥ ५ ॥

अणियेयवासी-विहारचरियासविसेसपडिपादणत्थमिदमुण्णीयते। जधा—

**५४७. आइण्णोमाणविवज्जणा य, उस्सण्णदिट्ठाहडं भत्त-पाणं।**
**संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू, तज्जायसंसट्ठ जती जएज्जा ॥ ६ ॥**

**५४७. आइण्णोमाणविवज्जणा य०** इन्द्रवज्रा। **आतिण्ण**मिति अच्चत्थ पडिपूरियं, तं पुण रायकुलसंखडिमादि, तत्थ महाजणविमद्दे पविसमाणस्स हत्थ-पादादिदूमण-भाणभेदादी दोसा। उक्खेव-णिक्खेवाऽऽगमणातीणि य दायकस्स 'ण सो वेति' त्ति तव्विवज्जणं। **ओमाणं** पुण **अवमं** ऊणं माणं **ओमाणं**, ओमो वा माणो जत्थ संभवति तं ओममाणं **ओमाणं**। पत्थुतं पुण सपक्खेण वा संजतादिणा परपक्खेण वा **चरगादिणा** पविसमाणेण 'बहूण दातव्व'मिति तमेव भिक्खमाणमूणीकरिंति दातारो, 'कतो पहुप्पति?' ति वा अवमाणणमारभंते, अतो तस्स विवज्जणं। **चसद्देण** विहारचरिया इति अणुकरिसिज्जति। **उस्सण्णसद्दो** प्रायोवृत्तीए वट्टति, जधा—"देवा उस्सण्णं सातं वेदणं वेदेंति, आहच्च अस्सातं" [ ] ति। दिट्ठं आहडं [10]**दिट्ठाहडं**

१ स्स आचरणं मूलादर्शे ॥ २ °यासावसेस° मूलादर्शे ॥ ३ आइण्ण-ओमा° खं २ जे० शु० ॥ ४ ओसन्न° खं २-४ शु० ॥ ५ °हडं भत्त° अचूपा० ॥ ६ °पाणे सर्वासु सूत्रप्रतिषु ॥ ७ जएज्जा खं २ अचू० विना ॥ ८ रायकुलकुलसंख° मूलादर्शे ॥ ९ कतो दुप्पहुअ त्ति मूलादर्शे ॥ १० "दिट्ठाहडं जं जत्थ उपयोगो कीरइ आइ[ति]घरंतराओ। परतो णोणिसीहाभिहडं, कारणे एयं। उस्सण्णं दिट्ठाहडं भत्त-पाणं गेण्हेज्ज त्ति" इति वृद्धविवरणे। "इदं चोत्सन्नदृष्टाहृतं यत्रोपयोगः शुध्यति, त्रिगृहान्तरादारत इत्यर्थः" इति हारि० वृत्तौ। त्रिगृहान्तरात् परत आनीतं भक्त-पानं गृहान्तरनोनिशीथम्, त्रिगृहान्तरादारत आनीतं पुनर्नोगृहान्तरनोनिशीथमिति ज्ञेयम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जत्थ उ जोगो कीरति आरा तिघरंतरातो, परतो वि **णोणिसीहाभिहडं**। कारणे एतं **उस्सण्णदिट्ठाहडं भत्त-पाणं** गेण्हेज्ज त्ति वक्कसेसो। **केसिंचि पाढो–"हरं भत्त-पाणं"** तेसिं उद्देसितं कीतमाहरं च आतिण्णोमाणमिव विवज्जणीयं। **संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू, संसट्ठं** संगुट्ठं ईसिं सम्मिस्सं, एवं घेत्तव्वमिति एस **कप्पो**, एतेण **चरेज्ज** एस उवदेसो, एवं भवति **भिक्खू**। संसट्ठमेव विसेसिज्जति "**तज्जायसंसट्ठ जती जयेज्जा,**" **तज्जाय**मिति जातसद्दो प्रकारवाची, तज्जातं तधाप्रकारं, जधा आमगो गोरसो आमगस्सेव **गोरसस्स** तज्जातो, कुसणादि पुण अतज्जातं, एवं सिणेह-गुल-कट्टरादिसु वि। तत्थ असंसट्ठे पच्छेकम्म-पुरेकम्मादिदोसा, अतज्जातसंसट्ठे संसज्जतिमा-ऽसंसज्जिमदोसा, अतो संसट्ठमवि **तज्जायसंसट्ठं** चरेज्जा। **जती जतेज्ज** त्ति एवं अट्ठ भंगा अणुक्करिसिज्जंति, तं जधा–संसट्ठो हत्थो संसट्ठो मत्तो सावसेसं दव्वं, एवं अट्ठभंगा। तत्थ पढमो भंगो पसत्थो, सेसेसु वि चारेऊण गहणमग्गहणं वा। एवं **जती जतेज्ज** ॥ ६ ॥ आतिण्णोमाणविवज्जणमणंतरमुपदिट्ठं। वियडपसंगे पुण नियमेण आतिण्णदोसा पोग्गले य कुच्छियात्वमाणदोसा इति तप्परिहरणत्थमिदमुण्णीयते—

५४८. अमज्ज-मंसासि अमच्छरीया, अभिक्खणं निव्विगतीगता य।
अभिक्खणं काउस्सग्गकारी, सज्झायजोगे पयतो भवेज्जा ॥ ७ ॥

५४८. **अमज्ज-मंसासि अमच्छरीया०** उपेन्द्रवज्रोपजातिः। मदनीयं मदकारि वा **मज्जं**–मधु-सीहु-पसण्णादि, **मंसं** प्राणिसरीरावयवो, तं पुण जल-थल-खचराण सत्ताण, तमुभयं जो भुंजति, सो **मज्ज-मंसासी**, 'साधूण [ण] तहा भवितव्वं' इति अकारेण पडिसेधो कीरति **अमज्ज-मंसासी**। **मच्छरो** कोधो, सो विसेसेण मज्जपाणे संभवति, विणा तु मज्जेण **अमच्छरिया** भवेज्जा इति वक्कसेसो। विकृतिं विगतिं वा णेतीति विगती, मज्ज-मंसे पुण विगती, तदवसरेण सेसविगतीओ वि नियमिज्जंति—**अभिक्खणं निव्विगतीगता य** अप्पो कालविसेसो खणो, तत्थ **अभिक्खण**मिति पुणो पुणो निव्विइयं करणीयं, ण जधा मज्ज-मंसाणं अच्चंतपडिसेधो तहा विगतीणं। **केयि पढंति–"अभिक्खणिव्वीतियजोगया य"** तेसिं अभिक्खणं णिव्वितियजोगा पडिवज्जितव्वा इति अत्थो। जधा णिव्वितियता तधेव **अभिक्खणं काउस्सग्गकारी**, काउस्सग्गे सुट्ठितस्स कम्मनिज्जरा भवतीति गमणा[-ऽऽगम]ण-विहारादिसु अभिक्खणं काउस्सग्गकारिणा भवितव्वं। जधा काउस्सग्गो उस्सितुस्सितो पयत्तवतो तहा **सज्झायजोगे पयतो भवेज्जा** वायणातिपंचविधो सज्झायो, तस्स जधाविधाणमायंबिलादीहिं **जोगो**, तम्मि वा जो उज्जमो एस चेव **जोगो**, तत्थ पयतेण भवितव्वं। **भवेज्जा** इति अंते दीवगं सव्वेहि अभिसंबज्झते—अमज्ज-मंसासी भवेज्जा एवमादि। एत्थ चोदणा—नणु **पिंडेसणाए** भणितं—"**बहुअट्ठितं पोग्गलं अणिमिसं वा बहुकंटगं**" [सुत्तं १७१] इति बहुयट्ठितं निसिद्धमिह सव्वहा, विरुद्धं तत्थ। इह परिहरणं—से इमं उस्सग्गसुत्तं, तं कारणियं, जता कारणे गहणं तदा परिसाडीपरिहरणत्थं सुद्धं घेत्तव्वं, ण बहुयट्ठितमिति ॥ ७ ॥ मज्जं पातुकामस्स पीते वा सज्झायादिसु वा सयणादीहि उपयोग इति तेसु ममीकारनिसेधणनिमित्तं भण्णति—

५४९. ण पडिण्णवेज्जा सयणा-ऽऽसणाइं, सेज्जं निसेज्जं तह भत्त-पाणं।
गामे कुले वा णगरे व देसे, ममत्तिभावं ण कहिंचि कुज्जा ॥ ८ ॥

---

१ °क्खणं निव्वियए य हुज्ज खं २ संशोधितः पाठः। °क्खणिव्वीतियजोगया य अचूपा०। °क्खणं णिव्वितिया [य] जोगो वृद्धपा० ॥ २ वहेज्जा खं १ ॥ ३ ममत्तभावं खं १ जे० अचू० विना ॥



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५४९. **ण पडिण्णवेज्जा सयणा-ऽऽसणाइं०** वृत्तम् । **णं**कारो पडिसेधे । अत्थिभाव( ? अत्थ भावि )-कालंतरेण उपदरिसणं, ण पुण तक्खणमेव जातणं एतं पडिण्णवणं । णकारेण पडिण्णवणपडिसेधणं, एवं **ण पडिण्णवेज्जा।** जधा—परुं मम इंह वरिसारत्तो, ममेव दातव्वाणि, मा अण्णस्स देहिह । किं पुण ण पडिण्णवेज ? त्ति भण्णति—**सयणा-ऽऽसणाइं सेज्जं निसेज्जं तह भत्त-पाणं, सयणं** संथारगादि, **आसणं** पीढकादि, **सेज्जा** वसही, **णिसेज्जा** सज्झायादिभूमी । **तहे**ति तेणेव प्रकारेण [ण] पडिण्णवेज—सुए परसुए परतरेण वा **भत्तं** ओदणादि **पाणं** चउत्थरसिगादि, 'तं एत्तियं कालं एवंपरिमाणं वा देज्जह 'त्ति ण पडिण्णवेज । एतं पडिण्णवणं ममत्तेण अतो सव्वधा वि **गामे कुले वा णगरे व देसे ममत्तिभावं ण कहिंचि कुज्जा,** तत्थ कुलसमवायो **गामो, कुलं** एगकुडुंबं, महामणुस्ससंपरिग्गहो पंडितसमवायो **णगरं,** विसयस्स किंचि मंडलं **देसो,** एएसु जहुद्दिट्ठेसु 'मम इमं. मम इमं' इति ममत्तिभावं ण कुज्जा । **कहिंचि**वयणेण विसय-गण-रायादिसु सव्ववत्थूसु, किं बहुणा ? धम्मोवकरणेसु वि, जतो "**मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इति वुत्तं महेसिणा**" [सुत्तं २६५] ॥ ८ ॥ ममत्तनिवारण[मणं]-तरसुत्ते भणितं । इमं पि ममत्तनिवारणत्थमेवेति भण्णति—

५५०. गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा, अभिवायण वंदण पूयणं च ।
असंकिलिट्ठेहिं समं वसेज्जा, मुणी चरित्तस्स जतो ण हाणी ॥ ९ ॥

५५०. **गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा०** वृत्तम् । **गिहं** पुत्त-दारं, तं जस्स अत्थि **सो गिही,** एगवयणं जातिपदत्थमुद्दिस्स, तस्स **गिहिणो । वेयावडियं न कुज्जा, वेयावडियं** नाम तव्वावारकरणं, तेसिं वा प्रीतिजणणमुपकारं असंजमाणुमोदगं **न कुज्जा । अभिवायण वंदण पूयणं च,** वयणेण णमोक्कारादिकरण-**मभिवादणं,** सिरप्पणामातीहिं **वंदणं,** वत्थादिदाणं **पूयणं,** एताणि वि असंजमाणुमोदणाणि न कुज्जा । जधा गिहीण एयाइं न करणीयाणि तहा सपक्खे वि **असंकिलिट्ठेहिं समं वसेज्ज,** गिहिवेयावडियादिराग-दोसवि-बाहियपरिणामो **संकिलिट्ठो,** तहाभूते परिहरिऊण **असंकिलिट्ठेहिं [समं]** संवासदोसपरिहारी **संवसेज्जा** । जेहिं संवासो चरित्ताणुपरोधकारि त्ति भण्णति—**मुणी चरित्तस्स जतो ण हाणी, मुणी** साधू **चरित्तं** मूलुत्तरगुणा तस्स, **जओ** हेतुभूतातो तं ण उवहम्मति तव्विहेहिं असंकिलिट्ठेहिं सह एव वसितव्वं । अणागतोमासि तमिदं सुत्तं, जतो तित्थकरकाले पासत्थादयो संकिलिट्ठा णेव संति, अतो अणागतमिदमत्थं परामसति ॥ ९ ॥ संवासपराहीणं चरित्तधारणमणंतरमुपदिट्ठं । अप्पणो निच्छयबलाधाणत्थमिदमुण्णीयते—

५५१. ण या लभेज्जा णिउणं सहायं, गुणाधिकं वा गुणतो समं वा ।
एको वि पावाइं विवज्जयंतो, चरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ १० ॥

५५१. **ण या लभेज्जा निउणं सहायं०** इन्द्रवज्रा । ण इति पडिसेधसद्दो सद्दस्स अत्थे वट्टति, णका-राणंतरो **चसद्दो** चेत् एतस्स अत्थे, **णो चेत्** इति जतिसद्दस्स अत्थे, **लभेज्ज** त्ति प्रापेज्ज, यदुक्तं यदि ण लभ... . किं जति ण लभेज ? त्ति पुच्छिते भण्णति—**निउणं सहायं णिउणो** संजमावस्सकरणीयजोगेसु दक्खो, **सह**

१ "**णकारो** पडिसेधे वट्टइ, पडिन्नवणं पडिसेधणमिति, जो आगामिकालपक्खो, ण संपतिकालविसओ, आगामिकालियपडियरण-पडिसेहणं एव, न पडिन्नवेज्जा, जधा—मम इह पर वरिसारत्तो भविस्सइ, ममेव दायव्वाणि, [मा] अण्णस्स देह ।" इति **वृद्धविवरणे** ॥ २ **इह परित्तो ममेव** मूलादर्शे ॥ ३ **वा** अचू० वृद्ध० विना ॥ ४ अनागतावमर्षि तदिदम् ॥ ५ परामृशति ॥ ६ **अप्पाण निच्छय-पलावाणत्थ°** मूलादर्शे ॥ ७ **विहरेज्ज** अचू० विना ॥ ८ **णकारणा......द्दो** मूलादर्शे ॥ ९ संयमावश्यकरणीययोगेषु ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगत्थ पवत्तत इति **सहायो**, तं जति **ण लभेज्जा निउणं सहायं**। कहं निउणं? भण्णति—[1]अविक्खितसाधूतो **गुणाधिकं वा गुणा** संजमजोगा तेहि ततो [वा] अतिरित्तो **गुणाधिको** तव्विधं, **गुणतो समं वा** इति जो गुणेहि हेतुभूतेहि समभावमुवगतो, तव्विधं वा जइ ण लभेज्जा इति वट्टति। **वासद्दुगं** जोग्गतामधिकरेति, जो सिक्खाविज्जंतो वि गुणेहिं अधिको समो वा आसंसिज्जति पात्रतया तेणावि संवासो अविरुद्धो। जता पुण ण लभेज्ज गुणाधिकं समं वा ततो **एको वि पावाइं विवज्जयंतो**, एक इति असहायो। **अपि सद्दो** संभावणे, जो अविचालणीय-संभावितगुणो तस्स एकाकिता। पातयतीति **पावं**, तं पुण अपुण्णं, ताणि **विवज्जयंतो** परिहरंतो इति भणितं, एवं **चरेज्ज**। एतं पावागमणमुखमिति भण्णति—**कामेसु असज्जमाणो, कामा** इत्थिविसया, तग्गहणेण भोगा वि सद्द-फरिस[-रस-]रूव-गंधा सूयिया, तेसु **असज्जमाणो** संगं अगच्छमाणो **चरेज्ज** त्ति उवदेसवयणं ॥ १० ॥ **कामेसु असज्जमाणो** त्ति विहरणमुपदिट्ठमणंतरं। तस्स कालनियमणनिमित्तमिदमुण्णीयते—

५५२. संवच्छरं वा वि परं पमाणं, [2]बितियं च वासं ण तहिं वसेज्जा।
सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू, सुत्तस्स अत्थो जह आणवेति ॥ ११ ॥

५५२. **संवच्छरं वा वि परं पमाणं०** इन्द्रवज्रोपजातिः। **संवच्छर** इति कालपरिमाणं, तं पुण णेह बारसमासिगं संवज्झति किंतु वरिसारत्तचातुम्मासितं, स एव जेट्ठोग्गहो तं संवच्छरं। **वासद्दो** पुव्व[3]भणितविवित्तचरिया-कारणसमुच्चये। **अपिसद्दो** कारणविसेसं दरिसयति। **परमिति परसद्दो** उक्करिसे वट्टति, एतं उक्किट्ठं **पमाणं**, एत्तियं कालं वसिऊण **बितियं च वासं, बितियं** ततो अणंतरं, चसद्देण ततियमवि, जतो भणितं—

"तं दुगुणं दुगुणेण अपरिहरित्ता ण वट्टति।" [　　　　]

बितियं ततियं च परिहरिऊण चउत्थे होज्ज। एवं जे अभिक्खसंदरिसण-सिणेहादिदोसा ते परिहरिता भवंति, अतो तं **ण वसेज्ज** त्ति उवदेसवयणं। एतस्स नियमणत्थं **दसज्झायी**भणितस्स अवलोकणत्थं भण्णति—**सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू**, तं पुण अत्थसूयणेण अत्थप्पसूतितो वा **सुत्तं**, तस्स **मग्गेणेति** तस्स वयणेण, जं तत्थ भणितं तहा चरेज्ज एवं भिक्खू भवति। सूयणामेत्तेण सव्वं ण बुज्झति त्ति विसेसो वि कीरति—**सुत्तस्स अत्थो जह आणवेति**, तस्स **सुत्तस्स** मासकप्पादिसु उस्सग्गा-ऽववाया गुरूहिं निरूविज्जंति, **अत्थो जध आणवेति**, **जधा सो** करणीयमग्गं निरूवेति, जम्हा "वक्खाणतो विसेसपडिवत्ती" "**अत्थ[स्स] मग्गेणे**"ति ण भणति, जतो सुत्तसूयिएण मग्गेण अत्थो पवत्तति, तेण [4]उं सुत्तं **विवित्तचरिया**[5], असीयण(? णं) फलं चेति बितियचूलाधिकारो ॥ ११ ॥ तत्थ **विवित्तचरिया** भणिया। असीतणं पुण जधाभणितमणुवसमाणो सुत्तत्थमणुसारी—

५५३. जो पुव्व[6]रत्तअवरत्तकाले, सं[7]रक्खती अप्पगमप्पएण।
किं मे कडं किं [8]व मे किच्चसेसं?, किं सक्कणिज्जं ण समायरामि? ॥ १२ ॥

५५३. **जो पुव्वरत्तअवरत्तकाले०** इन्द्रवज्रोपजातिः। **जो** इति अणिद्दिट्ठणामस्स उद्देसमत्तं। रायीए पढमजामो **पुव्वरत्तो** तम्मि, जो पुव्वरत्ते **अवरत्तो** पच्छिमजामो तम्मि वा, अवररत्त एव **अवरत्तो**, एगस्स

---

१. अपेक्षितसाधुनः, विवक्षितसाधोरित्यर्थः॥ २ **बीयं च** खं १ अचू० वृद्ध० विना॥ ३ °**भणितो विवि**° मूलादर्शे॥ ४ **उस्सुत्तं** मूलादर्शे॥ ५ °**या य सीयण**° मूलादर्शे॥ ६ °**रत्ताऽवररत्त**° खं २ अचू० वृद्ध० विना॥ ७ **संपेहई अप्प**° शु०। **संवेक्खई अप्प**° खं ४। **संपेक्खई अप्प**° खं १-२-३ जे०॥ ८ **च** सर्वासु सूत्रप्रतिषु हाटी० अव०॥

रकारस्स अलक्खणियो [1]लोवो । एत्थ कालिगपाढो त्ति **काले** इति वयणं । एते धम्मजागरियाकाला इति एतेसु भण्णति । खण-लवपडिबोधं पडुच्च सव्वकालेसु । पुव्वरत्तावरत्तकाले किं करणीयं ? इति भण्णति—**सारक्खती अप्पगमप्पएणं**, एकीभावेण पालयति, **संसद्दस्स साभावो**, **अप्पगमेव** कम्मभूतं, **अप्पएण** कारगेण (? करणेण), जधा अप्पाणं पात्रीकरेति । सारक्खणोवायो पुण से इमो—जधुद्दिट्ठकालमप्पमादं पडिसंधेंतो एवं चिंतेज्जा—**किं मे कडं** अवस्सकरणीयजोगेसु बारसविधस्स वा तवस्स जं कतं तं [2]लद्धमिति किं मे कडं । **किंसद्दो** अप्पगते विचारणे, **मे** इति 'मम'सद्दस्स आदेसो, **कडमिति** निव्वत्तियं । **किं व मे किच्चसेसं**, किमिति **वासद्दसहितं** [3]अविकप्पं करणीयं विचारयति—किं करणीयसेसं जा तम्मि उज्जमामि ? करणीयसेसे सामत्थविचारणापुव्वमाह—**किं सक्कणिज्जं न समायरामि ?**, वयो-बल-कालाणुरूवं सक्कं वत्थुं किमहं ण समायरामि पमाददोसेण ? जा छड्डेऊण पमादं तमवि करेमि ॥ १२ ॥ पुव्वरत्तावरत्तकालेसु सारक्खणमप्पणो भणितं । असीतणं तस्सावसेसमिदमुण्णीयते—

५५४. किं मे परो [4]पस्सति ? किं [5]व अप्पा ?, किं वा हं [6]खलितो विवज्जयामि ? ।
इच्चेव सम्मं [7]अणुपस्समाणो, अणागतं णो पडिबंध कुज्जा ॥ १३ ॥

५५४. **किं मे परो पस्सति ? किं व अप्पा ?०** इन्द्रवज्रा । कतकिच्चसेसेसु चेव **किं मे परो पस्सति ?** अप्पगतमेव विचारणं, **मे** इति मम, **पर** इति अप्पगवतिरित्तो, सो परो किं मम **पासति** पमादजातं ? । सपक्खो वा सिद्धंतविरुद्धं, परपक्खो वा लोकविरुद्धं, **किं व अप्पा** इति पमादबहुलत्तणेण जीवस्स किं मए निद्दादिपमादेण णो लोकितं ? जं इदाणिं कतोवओगो पस्सामि, एवं किं परो अप्पा वा मम पासति ? । **किं वा हं खलितो विवज्जयामि ?**, **किंसद्दो** तहेव, **वासद्दो** विकप्पे धम्मावस्सगजोगविकप्पणे, **अहमिति** अप्पणो निद्देसो । किं वा मम पमादकतं बुद्धिखलियं ?, खलणं पुण विचलणं सभावत्थाणातो, सो हं किं करणीयं बुद्धि**खलितो विवज्जयामी**ति ण समायरामि ? । **केति पढंति—" किं वा हं खलितं ण विवज्जयामि "** तं किमहं संजमखलियं ण परिहरामि ? । **इच्चेव सम्मं अणुपस्समाणो, इतिसद्दो** उवप्पदरिसणे, 'किं कडं ? किं किच्चसेसं मे ?' एवमादीण अत्थाण उव[प्प]-दरिसणे । [**एवसद्दो** अप्पगतकिरियाउवप्पदरिसणे,] अधवा **एवसद्दो**ऽयमवधारणत्थो तदा प्रकारमेवावधारयति, एवमेव णऽण्णहा, **सम्म**मिति अव्वभिचारेण **अणुपस्समाणो** नाम पढमं भगवता दिट्ठमुवदिट्ठं च पच्छा बुद्धिपुव्वमालोएमाणो **अणुपस्समाणो** । अभिगतं पायच्छित्तादीहिं समीकरेमाणो य **अणागतं णो पडिबंध कुज्जा**, **अणागय**मिति आगामिके काले, **णो** इति पडिसेधसद्दो, पडिबंधणं **पडिबंधो**, सो य इच्छितफललाभविग्घो, असंजमपडिबंधणबद्धो विमुत्ति**पडिबंधं णो कुज्जा**, निदाणं वा ॥ १३ ॥ एवं पुव्वरत्तावरत्तादिसु अप्प-परावदेसेण सम्मं समभिलोगेमाणो—

५५५. जत्थेव [8]पस्से कति दुप्पणीयं, कायेण वाया अदु माणसेण ।
तत्थेव धीरे [9]पडिसाहरेज्जा, आतिण्णो [10]खिप्पमिव क्खलीणं ॥ १४ ॥

५५५. **जत्थेव पस्से कति दुप्पणीयं०** इन्द्रवज्रोपजातिः । **जत्थे**ति जम्मि संजमखलणावकासे । एव-सद्दो तदवकासावधारणे, 'ण कालंतरेण [11]संवरणं काहामि'त्ति पमादेण अंतरितं । **पस्से** इति जत्थ पेक्खेज्जा **कयि** त्ति

१ **लोगो पत्थ** मूलादर्शे ॥ २ **लद्धमिति** वृद्ध० ॥ ३ **सविकप्पं** वृद्ध० ॥ ४ **पासइ** अचू० वृद्ध० विना ॥ ५ **च अप्पा ?, किं चाहं** खं २-३ जे० शु० ॥ ६ **खलितं विव°** वृद्ध० । **खलितं न विव°** सर्वासु सूत्रप्रतिषु अचूपा० वृद्धपा० हाटी० अव० ॥ ७ **अणुपासमाणो** खं २-३ जे० शु० ॥ ८ **पासे कइ दुप्पउत्तं** अचू० वृद्ध० विना ॥ ९ **°संहरेज्जा** खं १ ॥ १० **खिप्पमिव** सर्वासु सूत्रप्रतिषु अचूपा० वृद्धपा० हाटी० अव० ॥ ११ **संहरणे का°** मूलादर्शे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्हि संजमट्ठाणे "**किं मे परो पस्सति किं व अप्पा ?**" इति स-परोभयदिट्ठे **दुप्पणीयमिति** दुट्ठु पणीयं संजमजोगविरोधेण पवत्तियं। इमेहिं तं जोगेहिं होज्ज त्ति भण्णति—**कायेण वाया अदु माणसेणं, कायेण** इरियादि-असमितित्तणं **वायाए** भासादिअसमिती **माणसेण** दुच्चिंतितादि, **अदु** अहसद्दस्स अत्थे, मण एव माणसं। एतेहिं काया-वाया-माणसेहिं जत्थ दुप्पणीयं पासेज्ज **तत्थेव धीरे पडिसाहरेज्जा, तत्थेवेति** तम्मि चेव काय-वाय-माणसावगासे, तम्मि वा काले, ण कालंतरेण, **एवसद्दो** उभयावधारणे, **धीरो** पंडितो तवकरणसूरो वा। उज्झितस्स पडिसंहरणं पडिसाधरणं, तं कायदुप्पणीयादि, तम्मि चेव विरोधितावगासे, तम्मि चेव वा काले **पडिसाहरेज्जा**। सणिदरिसणो सुहमत्थो घेप्पति त्ति निदरिसणं भण्णति—**आतिण्णो खित्तमिव खलीणं**, गुणेहिं जव-विणयादीहि आपूरितो **आतिण्णो**, सो पुण अस्सो, जातिरेव वा **आइण्णा कत्थकादि**, जधा सो **पडिसाहरति** पडिवज्जति **खित्तं खलिणं, खित्तमिति** उच्छूढमवि खंधदेसमागतं नातिक्कमति, अधवा **खित्तं** जं सारहिणा आकड्ढियं, सारहिणा ईसदवि क्खित्तं णोयियाति[1] प्रायेण। [**अधवा**] **पाढ एवं—"खिप्पमिव क्खलीणं" खिप्पमिति** सिग्घं, **इवसद्दो** ओवम्मे, वंभ-लोह-[2] समुदायो हयवेगनिरुंभणं **खलिणं**। जधा सो परमविणीतो आतिण्णो सयमवि[3] सुहेण खिप्पं पडिवज्जति, सारहि-छंदिएण वा खलीणवसेण पवत्तमाणो ईसदपि प्रेरितं पडिवज्जति, एवं तव्वसेण वेगपडिसाहरणादिणा खलीणमेव पडि-साहरियं भवति। जधा आइण्णो खिप्पं खलीणं पडिसाहरति तहा कायिकादिदुप्पणीयं ॥ १४ ॥ "**कायेण वाया अदु माणसेण**" इति कायिग-वायिग-माणसजोगाणं नियमणमुपदिट्ठमणंतरं। तं समुक्करिसेंतो भगवं **अज्जसेज्जंभवो** सिस्से आमंतेऊण आणवेति—वत्स! अतियारनियमणं पडिसंहरिता "जस्सेरिसा जोग जितिंदियस्स"। सव्वं वा "धम्मो मंगल"दिकमुपदेसजातं पच्चवलोगणेणोवदरिसेंतो भगवं **सेज्जंभवसामी** आणवेति सकलदसकालियसत्थोवदे-सत्थणियमिता—

> ५५६. जस्सेरिसा जोग जितिंदियस्स, धितीमतो सप्पुरिसस्स णिच्चं।
> तमाहु लोगे पडिबुद्धजीवी, सो जीवती संजमजीवितेण ॥ १५ ॥

५५६. **जस्सेरिसा जोग जितिंदियस्स०** वृत्तम्। **जस्सेति** अणिद्दिट्ठनामधेयस्स, छट्ठीणिद्देसेण जोग-संबंधं दरिसयति। **एरिसा** इति प्रकारोवदरिसणे। एवं नियमिता **जोगा** इति कायिक-वायिक-माणसा वावारा। सद्दातिविसयविणियत्तियेंदियो **जितिंदियो** तस्स। धिती जस्स [अत्थि] सो **धितिमं** तस्स **धितिमतो**। सोहणो पुरिसो **सप्पुरिसो**, पसंसितो वा पुरिसो, तस्स। **णिच्चमिति** आ महव्वतोपादाणातो मरणपज्जंतं, ण पुण जो विसु-द्धिमविसुद्धिं च संजमट्ठाणाण पडिवज्जति। **तमाहु लोगे पडिबुद्धजीवी तमिति** तंसद्देण अणंतरोववण्णितो सप्पुरिसोऽभिसंबज्झते, **तं आहुरिति** कहयंति। भगवतो **अज्जसेज्जंभवस्स** तित्थगर-गणधरादिपतिट्ठितमिदं वयणमिति गौरवसमुप्पादणत्थमयमुपदेसो—**तमाहु** तित्थकर-गणधरादयो **पडिबुद्धजीवी**, जो ण भवति पमादसुत्तो सो **पडिबुद्धो**, पडिबुद्धस्स जीवितुं सीलं जस्स स भवति **पडिबुद्धजीवी**। **सो** एवंगुणो **जीवति संजमजीवितेणं**, तमेव सुजीवितमसारे माणुसत्तणे ॥ १५ ॥

'धितिमतो सप्पुरिसस्स जितिंदियस्स जस्सेरिसा जोगा स जीवति संजमजीवितेणं'ति भणितं अणंतरं। तस्स जीवितस्स फलोवदरिसणनिमित्तं भण्णति—**अप्पा खलु सततं०**। अधवा बितियचूलाधिगारा विवित्तचरिया असीतणफलं चेति, तत्थ विवित्तचरिया अणिएयवासादि [सुत्तं ५४६], असीदणं "जो पुव्वरत्तावरत्तकाले" [सुत्तं ५५१]

---

१ नातियाति नातिकाम्यति इत्यर्थः ॥ २ "**वंभ-लोहसंडासादयो हयवेगनिरुंभगा खलिणं**" वृद्धविवरणे ॥ ३ **सयमेव वृद्ध०** ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवमादि, उभयफलोवदरिसणत्थं भण्णति—**अप्पा खलु सततं०**। सव्वस्स वा **दसकालियसत्थभणितस्स** धम्मपसंसादिगस्स उवदेसस्स सव्वदुक्खविमोक्खणेण फलमिदमिति भण्णति—

५५७. अप्पा[1] खलु सततं रक्खितव्वो, सव्विंदिएहिं सुसमाधिएहिं ।
अरक्खितो जाति-वधं[2] उवेति, सुरक्खितो सव्वदुहाण मुच्चति ॥ १६ ॥
त्ति बेमि ॥

५५७. **अप्पा खलु सततं रक्खितव्वो०** इन्द्रवज्रोपजातिः । जो धम्मपसंसा१धितिगुणा२ऽऽय-संजमो३ाय३जीवाभिगमण४भिक्खाविसोधणा५ऽऽयारवित्थर६वयण७पणिधाण८विणयोववातिय९भिक्खुभाव१०चूलियज्झयण ११-१२ सुणिव्वत्तियंगोवंगो एस संजमाता। जतो भणितं—"**सो जीवती संजमजीवितेणं**" [सुत्तं ५५६]। एवंगुणो **अप्पा**। **खलु** विसेसणे, तित्थंतरियभणितकज्जकरणपरमप्पाणेहिंतो संजमप्पाणं विसेसेति। **सतत**मिति आ महव्वतारोवणा मरणपज्जन्तं सव्वं कालं। **रक्खितव्व** इति पडिपालणीयो। तस्स रक्खणोवायो भण्णति—**सव्विंदिएहिं सुसमाधिएहिं**, सोय-चक्खु-घाण-रसण-फरिसणाणि सव्वाणि इंदियाणि **सव्वेंदियाणि** तेहिं, **सुट्ठु समाहितेहिं** विसयविणियत्तणेण आतभावमेगंतेण आरोविताणि समाधिताणि एवंविहेहिं। अरक्खणे ताव पच्चवायोवदरिसणत्थं भण्णति—**अरक्खितो जाति-वधं उवेति**, ण रक्खितो **अरक्खितो**, तहा णिज्जंतणो **जाति-वधं उवेति**, **जाती** जणणं उप्पत्ती, **वधो** मरणं, जाती य वधो य **जाति-वधो**, तं **अरक्खितो जाति-वधं** जम्म-मरणमुवेति। **केति पढंति—**"**जातिपधं**" तं पुण संसारमग्गं चउरासीतिजोणिलक्खपरमगंभीरं भयाणगमुवेति। सुरक्खणे गुणोवण्णणनिमित्तं समत्थसत्थफलोवदरिसणत्थं च भण्णति—**सुरक्खितो सव्वदुहाण मुच्चति**, **सुट्ठु** सव्वपयतेण पावविणियत्तीए रक्खितो **सुरक्खितो**, तहाणियमितो **सव्वदुहाण** सारीर-माणसाण **मुच्चति**, सव्वदुक्खविरहितो णेव्वाणमणुत्तरं परमं संतिमुवेति ॥ १६ ॥

**इति** सद्दो अज्झयणपरिसमत्तिविसयो। **बेमि**सद्दो तित्थकरवयणाणुकरिसणे ॥

॥ **बितियं चूलियज्झयणमेवं परिसमत्तं** ॥

चरिया य परिवित्ति असीतणं जो य तस्स फललाभो। एते विसेसभणिता पिंडत्था चूलियज्झयणे ॥ १ ॥

**सयलदसवेयालियस्स**ऽत्थोवसंहरणत्थं तु जं आदितो उद्दिट्ठं "जेण व जं व पडुच्चा" [णिज्जुत्तिगा०४] इति तत्थ कारगस्स हेतुपडिसाधणनिमित्तमिमा **णिज्जुत्तिगाधा** भण्णति—

**छहि मासेहि अधीतं अज्झयणमिणं तु अज्झमणएणं ।**
**छम्मासा परियाओ अह कालगतो समाधीए ॥ ४ ॥ २७० ॥**

**छहि मासेहिं अधीतं०** गाधा। **छहिं** इति परिमाणसद्दो, **मास** इति कालपरिसंखाणं तेहिं, **छहिं [मासेहिं] अधीतं**, एत्तिएण कालेण पढितं। **अज्झयणसद्दो** सव्वम्मि **दसकालिये** वट्टति। अधवा **अज्झयणमिणं तु** जं इमं पच्छिमं चूलियज्झयणं एतम्मि आणुपुव्वीए अहीते सगलं सत्थमधीतं भवति। **अज्झमणएणं** ति अज्जसद्दो सामिपज्जायवयणो, **मणयो** पुव्वं भणितो, तेण तस्स एत्तियो चेव **छम्मासा परियाओ**। **अह कालगतो** अधसद्दो अणंतरत्थे, अज्झयणपरियायाणंतरं। अह तदणु **कालगतो समाधीए** जीवणकालो जस्स गतो सो

१ °प्पा हु ख° खं २-३ विना सर्वासु सूत्रप्रतिषु। अचू० वृद्ध० हाटी० अव० हु नास्त्येव ॥ २ जातिपहं अचू० वृद्ध० विना ॥

**कालगतो समाधीए** ति । जधा तेण एत्तिएण चेव सुतनाणेण आराधितं एवमण्णे वि एत्तिएणेव आराधगा भवंती ति ॥ ४ ॥ २७० ॥ बितिया **निज्जुत्ति**गाधा—

**आणंदअंसुपातं कासी सेज्जंभवा तहिं थेरा ।**
**जसभद्दाण य पुच्छा कधणा य वियालणा संघे ॥ ५ ॥ २७१ ॥**

**॥ चूलियज्झयणचूलाणिज्जुत्ती समत्ता ॥ १२ ॥ दसवेयालियणिज्जुत्तीसमत्ता ॥**

**आणंदअंसु०** गाधा । आणंदणमाणंदो तेण **अंसुपातो**, 'जधाइट्ठसमादौ आराधितमिमेणं" ति एतेण अत्थेण **कासी** इति अकार्षीत् अतिक्कंतकालवयणं, **सेज्जंभवा थेरा** इति जे पढमं परूविता, **तहिं** ति तम्मि काले । **सेज्जंभव**सामिपधाणसिस्साणं **जसभद्दाण य पुच्छा** अंसुपातं प्रति–किं खमासमणा ! इमम्मि खुड्डए कालगते अंसुपातो अकतपुव्वो कतो ? । **कधणा य** अज्ज**सेज्जंभवाण,** जधा—एरिसो संसारसंबंधो त्ति, एस मम सुतो । अज्ज**जसभद्दे**हि य 'एस गुरूणं सुतो'त्ति एवं कधणा । **वियालणा संघे** सव्वेहि य आणंदअंसुपातो मिच्छादुक्कडाणि य कताणि, पडिचोदणादिसु गुरुसुतो आसाइतो त्ति । **सेज्जंभवसामि**णा वि 'मा गोरवेण ण पडिचोदेज्ज' त्ति । अतो पढमं न कधियं ॥ ५ ॥ २७१ ॥ एवमणुगमे परिसमत्ते णया । तत्थ—

**[णायम्मि गेण्हितव्वे अगेण्हितव्वम्मि चेव अत्थम्मि ।**
**जतियव्वमेव इति जो उवदेसो सो णयो णाम ॥ १ ॥]**
**णायम्मि गेण्हितव्वे०** गाधा । गाधाविचारणं जधा **आवस्सए** ॥ १ ॥ बितिया—
**[सव्वेसिं पि णयाणं बहुविधवत्तव्वतं णिसामेत्ता ।**
**तं सव्वणयविसुद्धं जं चरण-गुणट्ठितो साधू ॥ २ ॥]**
**सव्वेसिं पि णयाणं०** गाधा । अक्खरत्थविचारो से तधेव ॥ २ ॥

एवमेतं धम्मसमुक्कित्तणादिचरणकरणाणुओगपरूवणागब्भं नेव्वाणगमणफलावसाणं भवियजणाणंदिकरं **चुण्णि**समासवयणेण **दसकालियं** परिसमत्तं ॥

## [चुण्णिकारपसत्थिया]

**वीरवरस्स** भगवतो तित्थे **कोडीगणे** सुविपुलम्मि ।
गुणगणवइराभस्सा **वेरसामिस्स** साहाए ॥ १ ॥
महरिसिसरिससभावा भावाऽभावाण मुणितपरमत्था ।
**रिसिगुत्तखमासमणा** खमा-समाणं निधी आसि ॥ २ ॥
तेसिं सीसेण इमा **कलसभवमइंद**णामधेज्जेणं ।
**दसकालियस्स चुण्णी** पयाण रयणातो उवण्णत्था ॥ ३ ॥

---

१ **जसभद्दस्स** य खं० वी० सा० हाटी० ॥

रुयिरपद-संधिणियता छड्डियपुणरुत्त-वित्थरपसंगा ।
वक्खाणमंतरेण वि सिस्समतिबोधणसमत्था ॥ ४ ॥

ससमय-परसमयणयाण जं थ ण समाधितं पमादेणं ।
तं खमह पसाहेह य इय विण्णत्ती पवयणीणं ॥ ५ ॥

## ॥ दसकालियचुण्णी परिसमत्ता ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## पढमं परिसिट्ठं

# दसकालियसुत्तगाहाणुकमो


| सुत्तगाहा | गाहंको |
|---|---|
| अंग-पच्चंग-संठाणं | ४२६ |
| अंजणगतेण हत्थेण | १२४ |
| अंतलिक्खे त्ति णं बूया | ३६५ |
| अकाले चरसि भिक्खो ! | २०३ |
| अगुत्ती बंभचेरस्स | ३०३ |
| अग्गलं फलिहं दारं | २०७ |
| अजतं आसमाणस्स | ५७ |
| अजतं चरमाणस्स | ५५ |
| अजतं चिट्ठमाणस्स | ५६ |
| अजतं भासमाणस्स | ६० |
| अजतं भुंजमाणस्स | ५९ |
| अजतं सुतमाणस्स | ५८ |
| अज्जए पज्जए वा वि | ३३० |
| अज्ज याहं गणी होंतो | ५३२ |
| अज्जिते पज्जिते यावि | ३२७ |
| अज्जीवं परिणयं णच्चा | १७५ |
| अट्ठ सुहुमाइं मेधावी | ३८२ |
| अट्ठावए य णालीया | २० |
| अणाययणे चरंतस्स | ९३ |
| अणायारं परक्कम्म | ४०१ |
| अणिएयवासो समुदाणचरिया | ५४६ |
| अणिलस्स समारंभं | २८१ |
| अणिलेण ण वियावए ण वीए | ५०४ |
| अणुण्णते णावणए | ९६ |
| अणुण्णवेत्तु मेधावी | १८१ |
| अणुसोतसुहो लोगो | ५४४ |
| अणुसोयपट्ठिते बहुजणम्मि | ५४३ |
| अण्णट्ठप्पगडं लेणं | ४२० |
| अण्णायउंछं चरती विसुद्धं | ४७६ |
| अतिन्तिणे अचवले | ३९८ |
| अतिभूमिं न गच्छेज्जा | १०७ |
| अत्तट्ठगुरुओ लुद्धो | २२८ |
| अत्थंगतम्मि आइच्चे | ३९७ |
| अदीणो वित्तिमेसेज्जा | २२२ |
| अधिगतचतुरसमाधिए | ५०० |
| अधुवं जीवितं णच्चा | ४०३ |
| अपुच्छितो ण भासेज्जा | ४१५ |
| अप्पग्घे वा महग्घे वा | ३५८ |
| अप्पणट्ठा परट्ठा वा कोधा | २५६ |
| अप्पणट्ठा परट्ठा वा सिप्पा | ४६२ |
| अप्पत्तियं जेण सिया | ४१६ |
| अप्पा खलु सततं रक्खितव्वो | ५५७ |
| अप्पे सिता भोयणजाते | १७२ |
| अबंभचरियं घोरं | २६० |
| अभिभूत काएण परीसहाइं | ५१५ |
| अमज्ज-मंसासि अमच्छरीया | ५४८ |
| अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तिमं | ५३४ |
| अमोहं वयणं कुज्जा | ४०२ |
| अरसं विरसं वा वि | १९६ |
| अलं पासायखंभाणं | ३३९ |
| अलोलुए अकुहए अमादी | ४८२ |
| अलोलु भिक्खू ण रसेसु गिद्धे | ५१८ |
| अवण्णवायं च परम्मुहस्स | ४८१ |
| असंथडा इमे अंबा | ३४५ |
| असंसट्ठेण हत्थेण | १३३ |
| असंसत्तं पलोएज्जा | १०६ |
| असच्चमोसं सच्चं च | ३१९ |
| असणं पाणगं वा वि | |
| अ... उक्कड्डिया दए | १६१ |
| असणं पाणगं वा वि | |
| अ... उज्जालिया दए | १५८ |
| असणं पाणगं वा वि | |
| अ... उस्सक्किया दए | १५५ |
| असणं पाणगं वा वि | |
| अ... उस्सिंचिया दए | १६० |
| असणं पाणगं वा वि | |
| अ... ओतारिता दए | १६४ |
| असणं पाणगं वा वि | |
| अ... ओवत्तिया दए | १६३ |
| असणं पाणगं वा वि | |
| अ... ओसक्किया दए | १५७ |
| असणं पाणगं वा वि | |
| अ... णिस्सिंचिया दए | १६२ |
| असणं पाणगं वा वि | |
| अ... विज्झाविया दए | १५९ |
| असणं पाणगं वा वि | |
| अ... संघट्टिया दए | १५४ |
| असणं पाणगं वा वि...उ॰ | १५२ |
| असणं पाणगं वा वि...दाणट्ठ॰ | १४३ |
| असणं पाणगं वा वि...पुण्णट्ठ॰ | १४५ |
| असणं पाणगं वा वि...पुप्फेहिं | १५० |
| असणं पाणगं वा वि...वणिमट्ठ॰ | १४६ |
| असणं पाणगं वा वि...समणट्ठ॰ | १४७ |
| असतिं वोसट्ठचत्तदेहे | ५१४ |
| अहं च भोगरातिस्स | १३ |
| अह केति ण इच्छेज्जा | १९४ |
| अहो ! जिणेहिं असावज्जा | १९० |
| अहो ! निच्चं तवोकम्मं | २६७ |
| आइण्णोमाणविवज्जणा य | ५४७ |
| आउकायं ण हिंसंति | २७४ |
| आउकायं विहिंसंतो | २७५ |
| आगाहइत्ता चलइत्ता | ११४ |
| आतावयंति गिम्हासु | २८ |
| आतावयाहि चय सोउमल्लं | १० |
| आभोएत्ताण निस्सेसं | १८७ |
| आयरिए आराहेति | २४० |
| आयरियऽग्गिमिवाऽऽहिअग्गी | ३४७ |
| आयरियपादा पुण अप्पसण्णा | ४४२ |
| आयरिये नाऽऽराधेति | २३६ |
| आयार-पण्णत्तिधरं | ४१८ |
| आयारप्पणिधिं लद्धुं जहा | ३७० |
| आयारमट्ठा विणयं पउंजे | ४७४ |
| आलोगं थिग्गलं दारं | ९८ |
| आसंदी-पलियंकेसु | २९८ |
| आसणं सयणं जाणं | ३४१ |
| आसीविसो यावि परं | ४३७ |
| आहरेंती सिया तत्थ | १११ |
| इंगालं अगणिं अच्चिं | ३७७ |
| इंगालं छारियं रासिं | ९० |
| इच्चेयं छज्जीवणियं | ८२ |
| इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं णरो | ५४१ |
| इत्थियं पुरिसं वा वि | २२५ |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| सुत्तगाहा | गाहंको |
|---|---|
| इमस्स ता णेरयियस्स जंतुणो | ५३८ |
| इहलोग पारत्तहितं | ४९२ |
| इहेवऽधम्मो अयसो | ५३६ |
| | |
| उक्कुट्ठगतेण हत्थेण | १३२ |
| उग्गमं से पुच्छेज्जा | १४९ |
| उच्चारं पासवणं | ३८७ |
| उज्जुप्पण्णो अणुव्विग्गो | १८८ |
| उदओल्लं अप्पणो कायं | ३७६ |
| उदओल्लं बीयसंसत्तं | २६९ |
| उदओल्लेण हत्थेण | ११६ |
| उद्देसियं कीयगडं णियाग | १८ |
| उद्देसियं कीयगडं पूतीकम्मं | १४८ |
| उप्पण्णं णातिहीलेज्जा | १९७ |
| उप्पलं पउमं वा वि | |
| ...तं च संलुंचिया दए | २११ |
| उप्पलं पउमं वा वि | |
| ...तं च सम्मद्दिया दए | २१३ |
| उवधिम्मि अमुच्छिते | ५१७ |
| उवसमेण हणे कोहं | ४०७ |
| ऊसगतेण हत्थेण | १२० |
| | |
| एगंतमवक्कमित्ता • जयणाए | १८४ |
| एगतमवक्कमित्ता • जयतं | १७९ |
| एतं च अट्ठं अण्णं | ३१७ |
| एतं च दोसं दट्ठूण • अणुमायं | २४४ |
| एतं च दोसं दट्ठूण • सव्वाहारं | २७० |
| एतेणऽण्णेण वट्ठेण | ३२५ |
| एमेते समणा मुत्ता | ३ |
| एलगं दारगं साणं | १०५ |
| एवं आयारपरक्कमेण | ५४५ |
| एवं करेंति संपण्णा | १६ |
| एवं तु गुणप्पेधी | ५३९ |
| एवं धम्मस्स विणओ मूलं | ४५१ |
| एवमादि तु जा भासा | ३२० |
| एवमेताणि जाणित्ता | ३८५ |
| | |
| ओवायं विसमं खाणुं | ८६ |
| | |
| कंदं मूलं पलंबं वा | १६८ |
| कंसेसु कंसपातीसु | २९५ |
| कण्णसोक्खेसु सद्देसु | ३९५ |
| कतमाणि अट्ठ सुहुमाणि ? | ३८३ |
| कविट्ठं मातुलिंगं च | २१९ |

| सुत्तगाहा | गाहंको |
|---|---|
| कहं चरे ? कहं चिट्ठे ? | ६१ |
| कहं णु कुज्जा सामण्णं | ६ |
| कालं छंदोवयारं | ४६९ |
| कालेण निक्खमे भिक्खू | २०२ |
| किं पुण जे सुतग्गाही | ४६५ |
| किं मे परो पस्सति ? किं व अप्पा ? | ५५४ |
| कुक्कुसगतेण हत्थेण | १३१ |
| कोधं माणं च मायं च | ४०५ |
| कोधो पीतिं पणासेति | ४०६ |
| कोहो य माणो य अणिग्गिहीता | ४०८ |
| | |
| खवेंति अप्पाणममोहदंसिणो | ३१२ |
| खवेत्तु पुव्वकम्माणि | ३१ |
| खुहं पिवासं दुस्सेज्जं | ३९६ |
| | |
| गंभीरं झुसिरं चेव | १६५ |
| गंभीरविजया एते | ३०० |
| गहणम्मि ण चिट्ठेज्जा | ३८० |
| गिहिणो वेतावडियं जा य | २२ |
| गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा | ५५० |
| गुणेहिं साधू अगुणेहिऽसाधू | ४८३ |
| गुरुमिह सततं पडियरिय मुणी | ४८७ |
| गुव्विणीयमुवण्णत्थं | १३७ |
| गेरुयगतेण हत्थेण | १२६ |
| गोयरग्गपविट्ठस्स | ३०१ |
| गोयरग्गपविट्ठो उ वच्च | १०२ |
| गोयरग्गपविट्ठो तु ण | २०६ |
| | |
| चतुण्हं खलु भासाणं | ३१४ |
| चत्तारि वमे सदा कसाये | ५०७ |
| चलं कट्ठं सिलं वा वि | ८९ |
| चित्तभित्तिं ण णिज्झाए | ४२३ |
| चित्तमंतमचित्तं वा | २५८ |
| चूलियं तु पवक्खामि | ५४२ |
| | |
| जं जाणेज चिराधोतं | १७४ |
| जं पि वत्थं व पातं वा...तं पि | २६४ |
| जं पि वत्थं व पायं वा...ण ते | २८३ |
| जं भवे भत्त-पाणं तु | १४० |
| जता गतिं बहुविहं | ६९ |
| जता जहती संजोगे | ७२ |
| जता जीवे अजीवे य | ६८ |
| जता णिव्विंदती भोगे | ७१ |
| जता य जधती धम्मं | ५२५ |

| सुत्तगाहा | गाहंको |
|---|---|
| जता य थेरयो होति | ५३० |
| जता य पूतिमो होति | ५२८ |
| जता य माणिमो होति | ५२९ |
| जता य वंदिमो होति | ५२७ |
| जता लोगमलोगं च | ७७ |
| जति तं काहिसि भावं | ४० |
| जत्थ पुप्फाणि बीयाणि | १०४ |
| जत्थेव पस्से कति दुप्पणीयं | ५५५ |
| जदा कम्मं खवित्ताणं | ७९ |
| जदा जोगे निरुंभित्ता | ७८ |
| जदा धुणति कम्मरयं | ७५ |
| जदा पुण्णं च पावं च | ७० |
| जदा मुंडे भवित्ता णं | ७३ |
| जदा य ओधावितो होति | ५२६ |
| जदा संवरमुक्कट्ठं | ७४ |
| जदा सव्वत्तगं णाणं | ७६ |
| जधा ससी कोमुदिजोगजुत्तो | ४४७ |
| जयं चरे जयं चिट्ठे | ६२ |
| जरा जाव ण पीलेति | ४०४ |
| जस्संतियं धम्मपदाणि सिक्खे | ४४४ |
| जस्सेरिसा जोग जितिंदियस्स | ५५६ |
| जस्सेवमप्पा तु भवेज्ज निच्छितो | ५४० |
| जहा कुक्कुडपोतस्स | ४२२ |
| जहा णिसंते तवतऽच्चिमाली | ४४६ |
| जहा दुमस्स पुप्फेसु | २ |
| जहाऽऽहिअग्गी जलणं णमंसे | ४४३ |
| जाइंमंता इमे रुक्खा | ३४३ |
| जाए सद्धाए णिक्खंतो | ४२९ |
| जाणंतु ता भए समणा | २३० |
| जाणि चत्तारिऽभोज्जाइं | २९१ |
| जाति-मरणातो मुच्चति | ५०१ |
| जायतेयं ण इच्छंति | २७७ |
| जा य सच्चा अवत्तव्वा | ३१५ |
| जावंति लोए पाणा | २४४ |
| जिणवयणरते अतिंतिणे | ४९९ |
| जुगंगवे त्ति वा बूया | ३३७ |
| जे आयरिय-उवज्झायाण | ४६१ |
| जे उ कंते पिए भोए | ८ |
| जेण बंध वधं घोरं | ४६३ |
| जे ण वंदे ण से कुप्पे | २२६ |
| जे णियागं ममायंति | २९३ |
| जे माणिया सततं माणयंति | ४८५ |
| जे चंडे मिते थद्धे | ४५२ |
| जे यावि चंडे मतिइड्ढिगारवे | ४७१ |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| सुत्तगाहा | गाहंको |
|---|---|
| जे यावि णागं डहरे ति णच्चा | ४३६ |
| जे यावि मंदे त्ति गुरुं विदित्ता | ४३४ |
| जोगं च समणधम्मस्स | ४११ |
| जो जीवे वि ण याणति | ६६ |
| जो जीवे वि वियाणति | ६७ |
| जो पव्वतं सिरसा भेत्तुमिच्छे | ४६० |
| जो पावकं जलितमवक्कमेज्जा | ४३८ |
| जो पुव्वरत्तअवरत्तकाले | ५५३ |
| जो सहइ हु गामकंटके | ५१२ |
| | |
| णक्खत्तं सुमिणं जोगं | ४१९ |
| ण चरेज्ज वासे वासन्ते | ९३ |
| ण चरेज्ज वेससामंते | ९२ |
| ण जातिमत्ते ण य रूवमत्ते | ५२० |
| णऽण्णत्थेरिसं वुत्तं | २५० |
| ण पक्खतो ण पुरतो | ४१४ |
| ण पडिण्णवेज्जा सयणा-ऽऽसणाइं | ५४९ |
| ण परं वदेज्जासि अयं कुसीले | ५१९ |
| ण बाहिरं परिभवे | ३९९ |
| ण मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सति | ५२९ |
| ण य भोयणम्मि गिद्धो | ३९२ |
| ण य विग्गहियं कथं कहेज्जा | ५११ |
| ण या लभेज्जा णिउणं सहायं | ५५१ |
| ण सम्ममालोइयं होज्जा | १८९ |
| ण सो परिग्गहो वुत्तो | २६५ |
| णाण-दंसणसंपण्णं | ३६१ |
| णामधेज्जेण णं बूया पुरिस- | ३३२ |
| णामधेज्जेण णं बूया इत्थी- | ३२९ |
| णाऽऽसंदी-पलियंकेसु | २९९ |
| णिक्खम्ममाणाए बुद्धवयणे | ५०२ |
| णिगिणस्स वा वि मुंडस्स | ३०९ |
| णिच्चुव्विग्गो जधा तेणो | २३५ |
| णिद्दं च ण बहुमण्णेज्जा | ४१० |
| णीयं सेज्जं गतिं ठाणं | ४६६ |
| णीयदुवार-तमसं | १०३ |
| | |
| तं अप्पणा ण गेण्हंति | २५९ |
| तं उक्खिवित्तु ण णिक्खिवे | १८३ |
| तं च अच्चंबिलं पूतिं | १७७ |
| तं च उब्भिंदिया देज्जा | १४२ |
| तं च होज्ज अकामेण | १७८ |
| देहवासं असुइं असासयं | ५२२ |
| भवे भत्त-पाणं तु...एरिसं | २१२ |
| भवे भत्त-पाणं तु...नारिसं | १५६ |

| सुत्तगाहा | गाहंको |
|---|---|
| तण-रुक्खे ण छिंदेज्जा | ३७९ |
| ततो कारणमुप्पण्णे | २०१ |
| ततो वि से चइत्ताणं | २४३ |
| तत्थ से चिट्ठमाणस्स | ११० |
| तत्थ से भुंजमाणस्स | १८२ |
| तत्थिमं पढमं ठाणं | २५३ |
| तत्थेव पडिलेहेज्जा | १०८ |
| तधेव अविणीयप्पा देवा | ४५९ |
| तधेव अविणीयप्पा लोगंसि | ४५६ |
| तधेव सुविणीयप्पा | ४५५ |
| तम्हा असणपाणाती | २९४ |
| तम्हा एतं विजाणित्ता...आउ- | २७६ |
| तम्हा एयं विजाणित्ता...पुढवि- | २७३ |
| तम्हा एयं विजाणित्ता...तस- | २९० |
| तम्हा एयं वियाणित्ता...तेउ- | २८० |
| तम्हा एयं वियाणित्ता...वणस्सति- | २८७ |
| तम्हा एयं वियाणित्ता...वाउ- | २८४ |
| तम्हा एवं वियाणित्ता...वज्जते | ५४ |
| तम्हा गच्छामो वक्खामो | ३१९ |
| तम्हा तेण ण गच्छेज्जा | ८८ |
| तम्हा ते ण सिणायंति | ३०७ |
| तरुणियं वा छिवाडिं | २१६ |
| तवं कुव्वति मेधावी | २३७ |
| तवं चिमं संजमजोगयं च | ४३० |
| तवतेणे वतितेणे | २१४ |
| तवोगुणपहाणस्स | ८१ |
| तसकायं ण हिंसंति | २८८ |
| तसकायं विहिंसंतो | २८९ |
| तसपाणे ण हिंसेज्जा | ३८१ |
| तस्स पस्सध कल्लाणं | २३८ |
| तहा कोलमणुस्सिण्णं | २०७ |
| तहा नदीओ पुण्णाओ | ३४४ |
| तहा फलाणि पक्काणि | ३४४ |
| तहेव अविणीयप्पा | ४५४ |
| तहेव असणं पाणगं वा...छंदिय | ५१० |
| तहेव असणं पाणगं वा...होहिति | ५०९ |
| तहेव काणं काणे त्ति | ३२४ |
| तहेव गंतुमुज्जाणं...रुक्खा | ३४२ |
| तहेव गंतुमुज्जाणं...रुक्खे | ३३८ |
| तहेव गाओ दोज्झाओ | ३३६ |
| तहेव चाउलं पिट्ठं | २१८ |
| तहेव डहरं व महल्लगं वा | ४८४ |
| तहेव तरुणगं पवालं | २१५ |
| तहेव फरुसा भासा | ३२३ |

| सुत्तगाहा | गाहंको |
|---|---|
| तहेव फलमंथूणि | २२० |
| तहेव मणुस्सं पसुं | ३३४ |
| तहेव मेहं व णहं व माणवं | ३६४ |
| तहेव संखडिं णच्चा | ३५० |
| तहेव सत्तुचुण्णाइं | १६९ |
| तहेव सावज्जं जोगं | ३५९ |
| तहेव सावज्जऽणुमोयणी | ३६६ |
| तहेव सुविणीयप्पा देवा | ४६० |
| तहेव सुविणीयप्पा लोगंसि | ४५८ |
| तहेव होले गोले त्ति | ३२६ |
| तहेवाणागतं अट्ठं जं वऽण्ण- | ३२१ |
| तहेवाणागतं अट्ठं जं होति | ३२२ |
| तहेवासंजतं धीरो | ३५९ |
| तहेवुच्चावयं पाणं | १७३ |
| तहेवुच्चावया पाणा | २०५ |
| तहेवोसहिओ पक्काओ | ३४६ |
| तारिसं भत्त-पाणं तु | १४४, १५१, १५३ |
| तालियंटेण पत्तेण...ण ते वीयितु- | २८२ |
| तालियंटेण पत्तेण...ण वीये | ३७८ |
| तिण्हमण्णतरातस्स | ३०४ |
| तित्तगं व कडुयं व कसायं | १९५ |
| तीसे सो वयणं सोच्चा | १५ |
| ते वि तं गुरुं पूयेंति | ४६४ |
| तेसिं अच्छणजोगेण | ३७२ |
| तेसिं गुरूणं गुणसागराणं | ४८६ |
| तेसिं सो णिहुतो दंतो | २४८ |
| | |
| थंभा व कोधा व मय प्पमादा | ४३३ |
| थणगं पज्जेमाणी | १३९ |
| थोवमासायणट्ठाए | १७६ |
| | |
| दंड-सत्थपरिजूणा | ४५७ |
| दगमट्टितआताणे | १०९ |
| दगवारएण पिहितं | १४१ |
| दवदवस्स ण चरेज्जा | ९७ |
| दस अट्ठ य ठाणाइं | २५२ |
| दिट्ठं मितं असंदिद्धं | ४१७ |
| दुक्कराति करेंता णं | ३० |
| दुग्गवो व पतोदेण | ४६८ |
| दुल्लभा हु मुहादायी | १९८ |
| देवलोगसमाणो तु | ५३३ |
| देवाणं मणुयाणं च | ३६२ |
| दोण्हं तु भुंजमाणाणं एगो | १३५ |
| दोण्हं तु भुंजमाणाणं दो वि | १३६ |

| सुत्तगाहा | गाहंको |
|---|---|
| धम्माजो भट्ठं सिरीओववेयं | ५३५ |
| धम्मो मंगलमुक्कट्ठं | १ |
| धिरत्थु ते जसोकामी | १२ |
| धुवं च पडिलेहेज्जा | ३८६ |
| धूवणे त्ति वमणे य | २५ |
| नमोक्कारेण पारेत्ता | १९१ |
| नाण-दंसणसंपण्णं | २४६ |
| नाणमेगग्गचित्तो तु | ४९५ |
| निट्ठाणं रसनिज्जूढं | ३९१ |
| निद्दंसवत्ती पुण जे गुरूणं | ४७२ |
| पंचासवपरिण्णाता | २७ |
| पंचेंदियाण पाणाण | ३३३ |
| पक्खंदे जलियं जोतिं | ११ |
| पगतीए मंदा वि भवंति एगे | ४३५ |
| पच्छेकम्मं पुरेकम्मं | २९७ |
| पडिकुट्ठं कुलं ण पविसे | १०० |
| पडिग्गहं संलिहित्ताणं | १२९ |
| पडिमं पडिवज्जिता सुसाणे | ५१३ |
| पडिसेहिते व दिण्णे | २१० |
| पढमं नाणं ततो दया | ६४ |
| पडत्तपत्ते त्ति ण पक्कमालवे | ३५४ |
| परिक्खभासी सुसमाहितिंदिए | ३६९ |
| परिवूढे त्ति णं बूया | ३३५ |
| पवीसहरिवूदंता | २९ |
| पवडंते व से तत्थ | ८७ |
| पविसित्तु परागारं | ३८८ |
| पवेयए अज्जवयं महामुणी | ५२१ |
| पाईणं पडिणं वा वि | २७८ |
| पिंडं सेज्जं च वत्थं च | २९२ |
| पिट्ठगतेण हत्थेण | १३० |
| पियालेगतियो तेणो | २३३ |
| पीढए चंगबेरे य | ३४० |
| पुढविं ण खणे ण खणावए | ५०३ |
| पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं | ३७३ |
| पुढविक्कायं न हिंसंति | २३१ |
| पुढविक्कायं विहिंसंते | २३२ |
| पुढविक्कायं विहिंसेज्जा | १६१ |
| पुढवि दग अगणि वाऊ | ३७१ |
| पुत्तदारपरिक्किण्णो | ५३१ |
| पुरतो जुगमाताए | ८५ |
| पुरेकम्मकतेण हत्थेण | ११५ |
| पूयणट्ठी जसोगामी | २३१ |

| सुत्तगाहा | गाहंको |
|---|---|
| पोग्गलाणं परिणामं | ४२८ |
| बहवे इमे असाधू | ३६० |
| बहुं परघरे अत्थि | २२३ |
| बहुं सुणेति कण्णेहिं | ३८९ |
| बहुअट्ठियं पोग्गलं | १७१ |
| बहुपाहडा अगाहा | ३४९ |
| भासा य दोसे य गुणे य जाणए | ३६८ |
| भुंजित्तु भोगाणि पसज्झ चेतसा | ५३७ |
| भूताणं एसमाघातो | २५९ |
| मंचं खीलं च पासायं | १६६ |
| मट्टियागतेण हत्थेण | ११९ |
| मणोसिलागतेण हत्थेण | १२३ |
| मधुकारसमा बुद्धा | ५ |
| महागरा आयरिया महेसी | ४४८ |
| मुसावादो य लोगम्मि | २५७ |
| मुहुत्तदुक्खा हु भवंति कंटगा | ४७९ |
| मूलए सिंगबेरे य | २३ |
| मूलमेतमहम्मस्स | २६१ |
| मूलातो खंधो पभवो दुमस्स | ४५० |
| रण्णो गहवतीणं च | ९९ |
| राइणिएसु विणयं पयुंजे डहरा | ४७५ |
| राइणिएसु विणयं पयुंजे धुव- | ४०९ |
| रायाणो रायमत्ता य | २४७ |
| रोतिय णायपुत्तवयणं | ५०६ |
| लज्जा दया संजम बंभचेरं | ४४५ |
| लद्धूण वि देवत्तं | २४२ |
| लहुवित्ती सुसंतुट्ठो | ३९४ |
| लोणगतेण हत्थेण | १२५ |
| लोभस्सेसो अणुफासो | २६३ |
| वड्ढती सोंडिया तस्स | २३४ |
| वणस्सतिं ण हिंसंति | २८५ |
| वणस्सतिं विहिंसंतो | २८६ |
| वणीमगस्स वा तस्स | २०९ |
| वण्णियगतेण हत्थेण | १२७ |
| वत्थ-गंध-मलंकारं | ७ |
| वयं च वित्तिं लब्भामो | ४ |
| वहणं तस-थावराण होइ | ५०५ |
| वाओ वुट्ठं व सीउण्हं | ३६३ |

| सुत्तगाहा | गाहंको |
|---|---|
| वाहितो वा अरोगो वा | ३०५ |
| विक्कायमाणं पसढं रयेण | १७० |
| विडमुब्भेइमं लोणं | २६२ |
| विणएण पविसित्ता | १८६ |
| विणयं पि से उवाएण | ४५३ |
| विणये सुते तवे या | ४९१ |
| वितहं पि तहामुत्तिं | ३१८ |
| विभूसा इत्थिसंसग्गी | ४२५ |
| विभूसावत्तियं चेतं | ३११ |
| विभूसावत्तियं भिक्खू | ३१० |
| विरूढा बहुसंभूता | ३४७ |
| विवत्ती अविणीयस्स | ४५० |
| विवत्ती बंभचेरस्स | ३०२ |
| विवित्ता य भवे सेज्जा | ४२१ |
| विविहगुण-तवोरये य निच्चं | ४९७ |
| विसएसु मणुण्णेसु | ४२७ |
| विस्ससंतो इमं चिंते | १९२ |
| वीहेति हिताणुसासणं | ४९३ |
| संखडिं संखडिं बूता | ३५१ |
| संघट्टइत्ता काएण | ४६७ |
| संजमे सुट्ठितप्पाणं | १७ |
| संतिमे सुहुमा पाणा घसीसु | ३०६ |
| संतिमे सुहुमा पाणा तसा | २६८ |
| संथारसेज्जाऽऽसण भत्त-पाणे | ४७७ |
| संपत्ते भिक्खकालम्मि | ८३ |
| संवच्छरं वा वि परं पमाणं | ५५२ |
| संसट्ठेण हत्थेण | १२४ |
| सक्का सहितुं आसाए कंटगा | ४७८ |
| सखुड्डग-वियत्ताणं | २५१ |
| सज्झाय-सज्झाणरतस्स तातिणो | ४३१ |
| सण्णिहिं च ण कुव्वेज्जा | ३९३ |
| सण्णिही गिहिमत्ते य | १९ |
| सति काले चरे भिक्खू | २०४ |
| सतोवसंता अममा अकिंचणा | ३१३ |
| समणं माहणं वा वि | २०८ |
| समाए पेहाए परिव्वयंतो | ९ |
| समावयंता वयणाभिघाता | ४८० |
| समुयाणं चरे भिक्खू | २२१ |
| सम्मद्दमाणी पाणाणि | ११२ |
| सम्मद्दिट्ठी सदा अमूढे | ५०८ |
| सयणाऽऽसण वत्थं | २२ |
| सवक्कसुद्धी समुपेहिता सिया | ३६ |
| सव्वजीवा वि इच्छंति | २५ |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| सुत्तगाहा | गाहंको |
|---|---|
| सव्वत्थुवहिणा बुद्धा | २६६ |
| सव्वभूतऽप्पभूतस्स | ६३ |
| सव्वमेतमणातिण्णं | २६ |
| सव्वमेदं वदिस्सामि | ३५६ |
| सव्युक्कस्सं परग्घं वा | ३५५ |
| ससरक्खेण हत्थेण | ११८ |
| ससिणिद्धेण हत्थेण | ११७ |
| साणं सूवियं गाविं | ९५ |
| साणी-पावारपिहितं | १०१ |
| साधवो तो चियत्तेण | १९३ |
| सालुगं वा विरालियं | २१४ |
| साहट्टु निक्खिवित्ता णं | ११३ |
| सिक्खिऊण भिक्खेसणसोधी | २४५ |
| सिणाणं अधवा कक्कं | ३०८ |
| सिणेहं पुप्फसुहुमं | ३८४ |
| सिया एगतियो लद्धुं लोभेण | २२७ |
| सिया एगतियो लद्धुं विविधं | २२९ |
| सिया य गोयरग्गगतो | १८० |
| सिया य भिक्खु इच्छेज्जा | १८५ |
| सिया य समणट्ठाए | १३८ |
| सिया य सीसेण गिरिं पि भिंदे | ४४१ |
| सिया य से पावत णो डहेज्जा | ४३९ |
| सीतोदगं ण सेवेज्जा | ३७५ |
| सीतोदगसमारंभे | २९६ |
| सुकडे त्ति सुपक्के त्ति | ३५३ |
| सुक्कीयं वा सुविक्कीयं | ३५७ |
| सुतं वा जदि वा दिट्ठं | ३९० |
| सुद्धपुढवीए ण णिसिए | ३७४ |
| सुरं वा मेरगं वा वि | २३२ |
| सुहसीलगस्स समणस्स | ८० |
| से गामे वा णगरे वा | ८४ |
| से जाणमजाणं वा | ४०० |
| सेज्जातरपिंडं च | २१ |
| सेज्जा-निसीहियाए | २०० |
| सेडियगतेण हत्थेण | १२९ |
| से तारिसे दुक्खसहे जितिंदिए | ४३२ |
| सोच्चा जाणति कल्लाणं | ६५ |
| सोच्चाण मेधावि सुभासिताणि | ४४९ |
| सोरट्ठियगतेण हत्थेण | १२९ |
| सोवच्चले सिंधवे लोणे | २४ |
| हंदि ! धम्म-ऽत्थ-कामाणं | २४९ |
| हत्थं पायं च कायं च | ४१३ |
| हत्थ-पातपलिच्छिण्णं | ४२४ |
| हत्थसंजते पायसंजते | ४१६ |
| हरितालगतेण हत्थेण | १२१ |
| हले हले त्ति अण्णे त्ति | ३२८ |
| हिंगोलुयगतेण हत्थेण | १२२ |
| हे भो हरे त्ति अण्ण त्ति | ३३१ |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## बीयं परिसिट्ठं

# दसकालियनिज्जुत्तिगाहाणुक्कमो


| निज्जुत्तिगाहा | गाहंको |
|---|---|
| अकुसलमणोनिरोहो | २२३ |
| अक्खेवणिअक्खित्ता | १०४ |
| अज्झयणगुणी भिक्खू | २४९ |
| अट्ठविधं कम्मचयं | २१८ |
| अट्ठविधं कम्मरयं | २०६ |
| अट्ठविहकम्मरोगाउरस्स | २६४ |
| अट्ठारस ठाणाइं | १६९ |
| अणभिग्गहिता भासा | १७९ |
| अणसातणा य भत्ती | २२७ |
| अणिएतं पतिरिक्कं | २६९ |
| अणिंदियगुणं जीवं | १३१ |
| अणिगूहितबल-विरिओ | ९१ |
| अण्णं पि य सिं णामं | ७२ |
| अतसि हिरिमिंथ तिउडग | १५६ |
| अतिरित्त अधिगमासा | २६० |
| अत्थकहा कामकहा | ९२ |
| अत्थबहुलं महत्थं | ८० |
| अत्थमहंती वि कहा | ११३ |
| अत्थि बहुगाम-देसा | ४१ |
| अत्थि बहू वणसंडा | ३६ |
| अध ओवगारिओ पुण | २२० |
| अधिगारो पुव्वुत्तो | २६७ |
| अप्फासुय-कय-कारित | ३१ |
| अब्भासवित्ति छंदाणुवत्तणं | २१३ |
| अब्भुट्ठाणं अंजलि आसणदाणं अभिग्गह | २२२ |
| अब्भुट्ठाणं अंजलि आसणदाणं च अतिधि | २१२ |
| अवणेति तवेण तमं | २१९ |
| अवि भमरमहुकरिगणा | ४५ |
| अस्संजतेहिं भमरेहिं | ४६ |
| अह कीस पुण गिहत्था | ४० |
| | |
| आओडिम मुक्किण्णं | ७४ |
| आगमतो उवउत्ते | २४० |
| आणंदअंसुपातं | २७१ |
| आमंतणि आणमणी | १७८ |
| आयप्पवायपुव्वा | ५ |
| आयाणे परिभोगे | १२५ |
| आराहणी यु दव्वे | १७४ |
| इंदियविसयकसाया | ८१ |
| इच्छा पसत्थमपसत्थिका | ७० |
| इत्थिकहा भत्तकहा | १०६ |
| | |
| उद्दिट्ठकडं भुंजति | २५६ |
| उप्पण्ण विगत मीसग | १७७ |
| उरग गिरि जलण सागर | ६३ |
| उवमा खलु एस कता | ८७ |
| उवसंहारो देवा | २८ |
| | |
| एक्को कातो दुहा जातो | १३८ |
| एता चेव कहातो | १०७ |
| एत्थं पुण अधिकारो | १३९ |
| एत्थ य भणेज्ज कोति | ३३ |
| एत्थ य समणसुविहिया | ४३ |
| एमेव भावसुद्धी | १८८ |
| एसो दुविहो पणिधी | २०४ |
| एसो मे परिकहितो | २२५ |
| | |
| कंतारे दुब्भिक्खे | ३९ |
| कत्थति पंचावयवं | २३ |
| कत्थति पुच्छति सीसो | १६ |
| करणतिए जोगतिए | २३९ |
| कामो चउविसतिविहो | १६२ |
| कायं वायं च मणं | ५२ |
| कारणविभाग कारणविणास | १३२ |
| काले विणये बहुमाणे | ८८ |
| किंच दुमा पुप्फंती | ३५ |
| किंची सकायसत्थं | १४१ |
| किण्णु गिही रंधती | ३८ |
| कुसुमे सभावपुप्फे | ४९ |
| कोडीकरणं दुविहं | १४६ |
| कोधे माणे माया | १७६ |
| कोहं माणं मायं | २०१ |
| | |
| खंती य मद्दवऽज्जव मुत्ती | १५१ |
| खंती य मद्दवऽज्जव विमुत्तया | २४८ |
| | |
| गज्जं पज्जं गेतं | ३६ |
| गम्म पसु देस रज्जे | २० |
| गावी महिसी उट्टी | १६० |
| गिहिणो विसयारंभग | २३६ |
| गुणि उड्डगतित्ते वा | १२० |
| | |
| चउवीसं चउवीसं | १५४ |
| चतुकारणपरिसुद्धं | २५१ |
| चरितं च कप्पितं वा | २५ |
| चितं चेयण सण्णा | १२६ |
| | |
| छज्जीवणियाए खलु | ११६ |
| छहि मासेहि अधीतं | २७० |
| | |
| जं च तवे उज्जुत्ता | ५३ |
| जं भत्त-पाण-उवकरण | ३० |
| जं भिक्खमेत्तवित्ती | २४३ |
| जं वक्कं वदमाणस्स | १९० |
| जणवत समुति ठवणा | १७५ |
| जध दारुकम्मकारो | २३५ |
| जध नाम आतुरस्सिह | २६३ |
| जस्स पुण दुप्पणिहिताणि | २०० |
| जस्स वि त दुप्पणिहिता | २०२ |
| जह एत्थ चेव इरियादिएसु | ५१ |
| जह एसो सद्देसुं | १९९ |
| जह चेव य उद्दिट्ठो | १४८ |
| जह दुमगणा उ तह णगर· | ४८ |
| जह भमरो त्ति य एत्थं | ३२ |
| जह मम ण पियं दुक्खं | ६० |
| जा ससमएण पुव्विं | ९९ |
| जा ससमयवज्जा खलु | ९८ |
| जिणवयणं सिद्धं चेव | २२ |
| जीवस्स उ निक्खेवो | ११९ |
| जीवस्स उ परिमाणं | १३५ |
| जीवा·ऽजीवाभिगमो | १४४ |
| जीवाऽजीवाहिगमो | ११५ |
| जुत्तीसुवण्णगं पुण | २५३ |
| जे अज्झयणे भणिता | २५४ |
| जेण य धरति भवगतो | १२३ |

| निज्जुत्तिगाहा | गाहंको |
|---|---|
| जेण व जं व पडुच्चा | ४ |
| जे भावा दसकालियसुत्ते | २३१ |
| जोगे करणे सण्णा | ८२ |
| जोणिब्भूते बीए | १४२ |
| जो पुव्वं उवदिट्ठो | १५५ |
| जो भिक्खू गुणरहितो | २५५ |
| जो संजतो पमत्तो | ११० |
| णत्थि य से कोति वेसो | ६१ |
| णवकोडीपरिसुद्धं | ४४ |
| णव चेवऽट्ठारसगं | १४७ |
| णाणाविहोवकरणं | १६१ |
| णातं आहरणं ति य | २४ |
| णामं ठवण सरीरे | १३७ |
| णामं ठवणाकामा | ६८ |
| णामं ठवणाजीवो | १२१ |
| णामं ठवणा दविए खेत्ते काल दिसि | ६७ |
| णामं ठवणा दविए खेत्ते काले तहेव | ११८ |
| णामं ठवणा दविए खेत्ते काले पहाण | ८३ |
| णामं ठवणा दविए माउगपय | १,११७ |
| णामं ठवणाधम्मो | १७ |
| णामं ठवणापिंडो | १४५ |
| णाम-ठवणासुद्धी | १८५ |
| णामण धोवण वासण | ८५ |
| णामदुमो ठवणदुमो | १३ |
| णामपदं ठवणपदं | ७३ |
| णायम्मि गेण्हियव्वे | ७६ |
| तं कसिणगुणोवेतं | २५२ |
| तेतिसमं वण्णसमं | ७९ |
| ततिए आयारकहा | ९ |
| तत्थ असंपत्तोऽत्थी | १६३ |
| तम्हा जे अज्झयणे | २५७ |
| तम्हा तु अप्पसत्थं | २१० |
| तम्हा धम्मे रतिकारगाणि | २६६ |
| तव-संजमगुणधारी | १०९ |
| तिण्णे णेया दविए | ६६ |
| तिण्णे ताती दविए | २४४ |
| तित्थकर सिद्ध कुल गण | २२६ |
| तिविधा य दव्वसुद्धी | १८६ |
| ते उ पतिण्णा सुद्धी | ५४ |
| तो समणो जति सुमणो | ६२ |
| दुंत त्ति पुण पदम्मी | ५० |

| निज्जुत्तिगाहा | गाहंको |
|---|---|
| दंसण नाण चरित्तं | २०७ |
| दंसण नाण चरित्ते तव आयारे | ८६ |
| दंसण नाण चरित्ते तवे य | २१५ |
| दंसण-नाण-चरित्ते तवोविसुद्धी | १८९ |
| दक्खत्तणगं पुरिसस्स | ९४ |
| दव्वं च अत्थिकायो | १८ |
| दव्वं सत्थऽग्गि-विसं | १४० |
| दव्वं सरीर भविओ | २६८ |
| दव्वरती खलु दुविहा | २६१ |
| दव्वाण सव्वभावा | २१६ |
| दव्वे अद्ध अहाउय | ३ |
| दव्वे खेत्ते काले | २५८ |
| दव्वे णिधाणमादी | १९६ |
| दव्वे तिविधा गहणे | १७३ |
| दव्वे भावे वि य मंगलाणि | २१ |
| दव्वे सच्चित्तादी | २५९ |
| दिट्ठंतो अरहंता | २७ |
| दिट्ठीए संपातो | १६४ |
| दुपय-चतुप्पय-धण-धण्ण | २३८ |
| दुप्पणिधियजोगी पुण | २०८ |
| दुमपुप्फियं च आहारएसणा | १५ |
| दुमपुप्फियाए णिज्जुत्तिसमासो | ५५ |
| दुमा य पायवा रुक्खा | १४ |
| दुविहा य होंति जीवा | १२४ |
| देसं खेत्तं कालं | ११४ |
| दो अज्झयणा चूलिय | १२ |
| धण्णाणि चउव्वीसं | १५५ |
| धण्णाणि रयण थावर | १५३ |
| धम्मकहा बोधव्वा | ९६ |
| धम्मत्थिकायधम्मो | १९ |
| धम्मस्स फलं मोक्खो | १६७ |
| धम्मो अत्थो कामो उवइस्सइ | १०५ |
| धम्मो अत्थो कामो तिण्णेते | १६६ |
| धम्मो एमुवदिट्ठो | १५२ |
| धम्मो गुणा अहिंसादिया | २६ |
| धम्मो बाविसतिविहो | १४९ |
| नाणं सिक्खति नाणं गुणेति | २१७ |
| नामं ठवणा भिक्खू | २३३ |
| निक्खेवो तु चउक्को | १७१ |
| निद्देस पसंसाए | २३० |
| निरामया-ऽऽमयभावा | १३३ |
| निस्संकित णिक्कंखिय | ८७ |

| निज्जुत्तिगाहा | गाहंको |
|---|---|
| पंच य अणुव्वयाइं | १५० |
| पगती एस गिहीणं | ४२ |
| पगती एस दुमाणं | ३७ |
| पज्जं पि होति तिविहं | ७८ |
| पडिरूवो खलु विणयो काथिय- | २२१ |
| पडिरूवो खलु विणयो पराणु- | २२४ |
| पढम-बितिया चरित्ते | १८४ |
| पढमे धम्मपसंसा | ८ |
| पणिहाणजोगजुत्तो | ८९ |
| पतिखुड्डएण पगतं | ८४ |
| पत्थेण व कुलएण व | १३६ |
| परलोग मुत्तिमन्तो | १६८ |
| पव्वइए अणगारे पासंडी चरक तावसे | ६५ |
| पव्वयिये अणगारे पासंडी चरय बंभणे | २४५ |
| पावाणं कम्माणं | १०१ |
| पुव्विं बुद्धीए पासित्ता | १९४ |
| फरिसेण जहा वाऊ | १३० |
| बारसविहम्मि वि तवे | ५० |
| बितिओ वि य आदेसो | ७ |
| बितियपइण्णा जिणसासणम्मि | २९ |
| भवति तु असच्चमोसा | १८३ |
| भावपदं पि य दुविहं | ७५ |
| भावसमाधि चउव्विध | २२८ |
| भिक्खविसोधी तव-संजमस्स | १० |
| भिक्खुस्स य णिक्खेवो | २३२ |
| भिंदंतो यावि खुधं | २४२ |
| भूमी घरं तरुगणा | १५९ |
| भेत्ताऽऽगमोवयुत्तो | २४१ |
| भेदनो भेदणं चेव | २३४ |
| मधुरं हेउनिउत्तं | ७७ |
| माया-गारवसहितो | २०५ |
| मिच्छत्तं वेदेंतो | १०८ |
| मिच्छादिट्ठी तस-थावराण | २३७ |
| मिच्छा भवेतु सव्वत्था | १२८ |
| मोक्खम्मि वि पंचविधो | २१४ |
| रयणाइं चउव्वीसं | १५७ |
| रूवं वतो व वेसो | ९५ |
| लोगसत्थाणि... | १२९ |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| निज्जुत्तिगाहा | गाहंको |
|---|---|
| लोगोवयारविणयो | २११ |
| वक्कं वयणं च गिरा | १७२ |
| वण्ण-रस-गंध-फासे | १८७ |
| वयछक्क कायछक्कं | १७० |
| वयणविभत्तिअकुसलो | १९२ |
| वयणविभत्तीकुसलस्स | १९१ |
| वयणविभत्तीकुसलो | १९३ |
| वयणविभत्ती पुण सत्तमम्मि | ११ |
| वासति ण तणस्स कते | ३४ |
| विज्जा चरणं च ततो | ९७ |
| विज्जा सिप्पमुवाओ | ९३ |
| विणयस्स समाधीय य | २१० |
| विसघाति रसायण मंगलत्त– | २५० |
| विस तिणिस वाउ वंजुल | ६४ |
| विसयसुहेसु पसत्तं | ७१ |
| वीरिय-विउव्वणिड्ढी | १०० |
| वेणतितस्स पढमया | १०३ |
| संखो तिणिसो अगरु | १५८ |
| संते आउयकम्मे | १२२ |
| संवेगो निव्वेगो | २४७ |
| सच्चप्पवातपुव्वा | ६ |
| सज्झाय संजम तवे | २६५ |
| सद्द-रस-रूव-गंधा-फासा उदयं- | ६९ |
| सद्द-रस रूव-गंधा-फासा रइकार- | २६२ |
| सद्देसु य रूवेसु य | १९७ |
| समणस्स उ णिक्खेवो | ५९ |
| समणेण कहेतव्वा | ११२ |
| सम्मद्दिट्ठी तु सुतम्मि | १८२ |
| सव्वण्णुवदिट्ठत्ता | १२४ |
| सव्वा वि य सा दुविधा | १८० |
| सव्वेसिं पि णयाणं | ५७ |
| साधू लूहे य तधा | २४६ |
| सामण्णपुव्वगस्स तु | ५८ |
| सामण्णमणुचरंतस्स | २०३ |
| सिंगाररसुत्तुतिया | १११ |
| सिद्धं जीवस्स अत्थित्तं | १२७ |
| सिद्धी य देवलोगो | १०२ |
| सुतधम्मे पुण तिविधा | १८१ |
| सुप्पणिधितजोगी पुण | २०९ |
| सेसं सुत्तप्फासं | १४३ |
| सोइंदियरस्सीयुम्मुक्काहिं | १९८ |
| हसित ललितोऽवगूहित | १६५ |

## तइयं परिसिट्ठं

# दसकालियचुण्णिअंतग्गयगंथंतरावतरणाणुक्कमो


| अवतरणं | पिट्ठंको |
|---|---|
| अंबं फलाणं मम दालिमं प्रियं | १७३ |
| अक्कोस-हणण-मारण | १९१ |
| अच्छेयोऽयं [भगवद्गीता अ० २ श्लो० २४] | ६८ |
| अट्टे तिरिक्खजोणी | १६ |
| अट्ठारस पुरिसेसुं | २३ |
| अण्णस्स पिता छासी | २१७ |
| अण्णातं थितितोपेतं | १९ |
| अण्हयकरी छेदकरी | १३५ |
| अत्थं भासति अरहा | ७२ |
| अत्थि त्ति जा वितक्का | २५ |
| अधीयाणा अणज्झाए | ५१ |
| अनुवादा-ऽऽदर-वीप्सा | २३७ |
| अरहंतेसु य रागो | १८३ |
| अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं [नन्दी० सूत्र १६ पत्र ९७-२] | ७४ |
| अविशेषोक्ते हेतौ प्रतिषिद्धे | ७५ |
| आकंपतित्ता अणुमाणतित्ता० [स्थानाङ्ग० स्था० १० सू० ७३३ पत्रं ४८४-१] | १९३ |
| आगारिंगित-चेट्ठागुणेहिं | ११० |
| आपो देवता, पृथिवी देवता | ७४ |
| आवंती केयावंती लोगंसि [आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० १ सू० १] | ५३ |
| आवस्सगस्स दसकालियस्स [आव० नि० गा० ८४] | १ |
| आहाकम्मं णं भंते! भुंजमाणे कति कम्म० [भग० श० १ उ० ९ सू० ७९] | ५ |
| इंगाल [आचा० नि० गा० ११] | ७५ |
| इड्ढाण वि सण्णेज्झे | २५१ |
| इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गम् [पाणि० ५।२।९३] | ६७ |
| इस्सा-विसाय-मय-कोह | ५७ |
| उक्कलिया [आचा० नि० गा० १६६] | ७५ |
| उच्चालियम्मि पाए | १२ |
| उद्देसे णि० [आव० नि० गा० १४०-४१ पत्र १०४] | ९ |
| उवओग-जोग-इच्छा | ६८ |
| उवयुजिऊण पुव्वं [ओघ नि० गा० २८७ पत्र ११६-२] | ८ |
| उवयुज्जिऊण पुव्विं | १३७ |
| एक्कं पंडियमरणं | ४५ |
| एक्को करेति कम्मं० [महापच्चक्खाणे गा० १५] | १८ |
| एगग्गहणे गहणं समाणजातीयाणं | १८९ |
| एगग्गहणे वि [गहणं] तज्जातियाणं | १८५ |
| एवं चक्किया एवं से कप्पति [दशा० अ० ८ सू० २३३] | १७६ |
| एवं जीवाकुले लोके | ९२ |
| ओदंसितो य महतो [कल्पभा० गा० १७१६ पत्र ५०६] | २४ |
| ओमजणपुरक्कारो | २५० |
| ओमजणम्मि य खिंसा | २५३ |
| ओस्सुदय० (सुद्धोदए) [आचा० नि० गा० १०८] | ७५ |
| काए वि हु अज्झप्पं | ५३ |
| कामं सव्वपदेसु वि | ८४ |
| काम! जानामि ते रूपं | ४१ |
| कायो सपच्चवायो | २४४ |
| कोलाहलगब्भूतं [उत्तरा० अ० ९ गा. ५] | २४८ |
| क्रिया हि द्रव्यं विनयति, नाद्रव्यम् | १४५, २५३ |
| खणमवि ण खमं गंतुं [ओघनि० गा० ७६८] | १८३ |
| खरिया तिरिक्खजोणी [ओघनि० गा० ७६७] | १८३ |
| गद्येनोक्तः पुनः श्लोकै० | २२४ |
| घरचारगबंधातो | २५१ |
| घरवासम्मि य बंधो | २५२ |
| चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइगत्ताए [स्थानाङ्ग स्था० ४ सूत्र ३७३] | २४८ |
| चउहिं ठाणेहिं संते गुणे णासेज्जा [स्थानाङ्ग स्था० ४ उ० ४ सू० ३७० पत्र २८४-१] | ४३ |
| चित्तमेव णियंतव्वं | २४१ |
| जं इंदिएहिं दीसति | ६८ |
| जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स [स्थानाङ्ग स्था० १० सूत्र ७२०] | ३८ |
| जं मुच्चति अणुभवणेण | २५३ |
| जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज [नन्दि० सू० ४२] | २४ |
| जम्म-जरा-मरण० [मरण० गा० ५७८] | १८ |
| जलमज्झे जहा णावा | ९२ |
| जस्स धिती तस्स तवो० | ५ |
| जह तुब्भे तह अम्हे | २१ |
| जहा पुण्णस्स [कत्थति] [आचा० श्रु० १ अ० २ उ० ६ सू० ४] | ३७ |
| जाती कुल गण कम्मे | ६१ |
| जीवितमवि मणुयाणं | २५२ |
| जोगे जोगे जिणसासणम्मि [ओघ-नि० गा० २७७] | २३८ |
| जो चेट्ठति कायगतो | २३ |
| णत्थि य अवेदयित्ता | २५३ |
| ण पक्खतो ण पुरतो [उत्तरा० अ० १ गा० १८] | २१६ |
| णरयाउयं निबंधति | २५० |
| णालं ते तव ताणाए वा [आचाराङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० १ सूत्र २] | ४४ |
| णिर[त्थ]गमवत्थं च | १९ |
| णिदवक्केसायासो | २५१ |
| तं दुगुणं दुगुणेण अपरिहरित्ता ण वट्टति | २६७ |
| तमेव सच्चं निस्संकं | १७ |
| ताव पइण्णाओ हेउणा | २० |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| अवतरणं | पिट्ठंको |
|---|---|
| ते चेव सुब्भिसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए [ज्ञाताधर्म० श्रु० १ अ० १२ सू० ९२ पत्रं १७४] | १९९ |
| थाणं वीज[म]वट्ठंभो | २४४ |
| दश धर्मं न जानन्ति [महाभारते] | १२९ |
| दारादीण वि अत्थे | २५२ |
| दिट्ठा सि कसेरुमती | १०६ |
| दुक्खं च दुस्समाए | २५३ |
| दुक्खं परीसहकतं | २५० |
| दुलभं गिहीण धम्मे | २५१ |
| दुलहो गिहीण धम्मो | २५१ |
| दुःखमेव वा [तत्त्वा० ७-५] | ८५ |
| दृह दहि वृह वृहि वृद्धौ | १७० |
| देवा उस्सण्णं सातं वेदणं वेदेंति, आहच्च अस्सातं | २६४ |
| धमे धमे णातिधमे | ५१ |
| धम्मेण समणधम्मे | १९५ |
| धी संसारो जहियं० [मरण० गा० ५९९] | १८ |
| नदीकूलं भित्वा कुवलयमिवोत्पाट्य सुतरून् | २३० |
| न य तित्तिकरा भोगा | २५२ |
| नादंसणिस्स नाणं० [उत्त० अ० २८ गा० ३०] | १८४ |
| निक्खित्तसत्थमुसलो | २४३ |
| निक्खेवेगट्ठ णिरुत्त | २ |
| निवयंति परिकिलेसा | २५३ |
| पक्षाः पिपीलिकानां | २०६ |
| पडिमिल्लुयाण उदए [आव० नि० गा० १०८] | १८१ |
| पणिवाएण पहाणं | ५५ |
| पभू णं चोद्दसपुव्वी घडाओ [भग० श० ५ उ० ४ सू० २०० पत्र २२४-१] | ५७ |
| परियंदति सुण्हा गहवतिरस | १६९ |
| पाणवध मुसावादे | २५२ |
| पाणवधातो नियत्ता | १६१ |
| पातेण दुव्विणीतो | १०२ |
| पिंडस्स जा विसोही [व्यव० भा० उ० १ गा० २८९] | ६,९८ |
| पुच्छइ पुणो पुणो आदरेण | २६ |
| पुढविक्काइया वेमाताए याऽऽणमंति वा | ७५ |
| पुढवी य सक्करा वालुगा य [आचा० नि० गा० ७३] | ७५ |
| पुरिसादीया धम्मा | १६५ |
| पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशं [वैशेषिकदर्शन अ० १ आ० १ सू० ५] | ६८ |
| पेच्छति जहा सचक्खू | ५६ |
| बहूण या विहारो | १६६ |
| बह्वचोऽन्तोदात्ता० [पाणि० ४।३।६७] | ७३ |
| बातालीसेसणसंकडम्मि [पिण्डनिर्युक्ति-गाथा ६३४] | १२५ |
| बारसविधम्मि वि तवे [कल्पभाष्ये गा० ११६९] | २०० |
| बे मज्झ धातुरत्ताइं [आव० चूर्णी विभाग १ पत्र ५६५ हारी० पत्र ४३५] | ५४ |
| भिक्षादिभ्योऽण् [पाणि० ४-२-३८] | ९९ |
| मणपज्जव आहारक | ५७ |
| मत्तं गयमारुहंतिए! | ४७ |
| मातृवत् परदाराणि | १८७ |
| मिच्छत्तं अविरति० | २५२ |
| मुत्तनिरोहे चक्खुं [ओघनि० गा० १९७] | १०५ |
| मोरी णउलि० [आव० मूलभाष्यगा० १३८ हारी० पत्र ३१९] | २६ |
| रक्खंति अप्पमत्ता | ४४ |
| रागो द्वेषश्च मोहश्च | ४५ |
| रायादियाण चिंताभरेहिं | २४९ |
| लहुसगभोगनिमित्तं | २५० |
| लहुसा इत्तरकाला | २४९ |
| वयं मणुस्सा ण सढा ण निट्ठुरा | ३७ |
| वर्तमानसामीप्ये० [पाणि० ३-३-१३१] | ११०, १११, १६६, |
| वारत्तगनिदरिसणं [पिंडनि० गा० ६२८] | १०७ |
| विभङ्गभतियस्स कप्पंति सव्वे गोयरकाला [दशाश्रु० अ० ८ सूत्र २४४] | १२६ |
| विणतो सासणे मूलं [आव० नि० गा० १२२८] | ६ |
| वित्तिविधाणनिमित्तं | २५१ |
| वीतरागो हि सव्वण्णू | ७० |
| वीयरागा हि सव्वण्णू | २० |
| वीरं कासवगोत्तं | १ |
| वेयण वेयावच्चे | ३२ |
| व्याधिप्रतीकारत्वात् कण्डूपरिगतवच्चाब्रह्म० [तत्त्वा० ७-५ सूत्रभाष्ये] | ८५ |
| व्रणे श्वयथुरायासात् [सुश्रुत, सूत्रस्थान, अध्याय १९, श्लो० ३६] | २४६ |
| संदंसणेण पीती | ५५ |
| संदंसणेण पि(पी)ती | १०१ |
| संवच्छरबारसएण | २१ |
| संहिता य पदं चेव | ९ |
| सग्गाम परग्गामे | ६० |
| सद्देसु त भद्दग-पावगेसु [णायाधम्म० श्रु० १, अ० १७ प्रान्ते] | १४ |
| सद्देसु त भद्दय-पावएसु [णायाधम्म श्रु० १ अ० १७ प्रान्ते] | २३८ |
| समानकर्तृकयोः पूर्वकाले [पाणि० ३।४।२१] | ८६ |
| सम्मद्दिट्ठी जीवो विमाणवज्जं | ५७ |
| सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः [तत्त्वा० अ० १-१] | |
| सव्वं कुट्ठं तिदोसं हि | १९ |
| सव्वजीवाणं अक्खरस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडिओ [नन्दि० सू० ४२] | ४ |
| सव्वट्ठाणाइं असासताइं [मरणसमाहीए गा० ५७४] | १८ |
| सव्वविसुद्धे उवओगे | २४ |
| सव्वो वि किसलओ खलु | ७६ |
| साधारणा य भोगा | २५३ |
| सावज्जो गिहवासो | २५२ |
| सिया य केलाससमा असंतका [उत्त० अ० ९ गा० ४८] | १७९ |
| सिरीए मतिमं तुस्से | ५२ |
| सीतालं भंगसतं | ८० |
| सुण्हातं ते पुच्छति | ४७ |
| सुभगा होंतु णदीओ | ४७ |
| सुमहग्घो वि कुसुंभो | ५५ |
| सुलसाकुलप्पसूता | २५० |
| सुलसागब्भप्पसवा | ४५ |
| सुह-दुक्खसंपओगो | २२ |
| सूत्रपदप्रमाणानि | ५१ |
| से णूणं भंते! मण्णामीति ओधारिणी भासा [प्रज्ञापना, पद ११, सूत्र १६१, पत्र २४६] | २२१ |
| हव्ववाहो सव्वदेवाण हव्वं पावेति | २०९ |
| हिंसादिष्विहामुत्र चापायाऽवद्यदर्शनम् [तत्त्वा० ७-४] | ८५ |
| हे जं व तं व आसीय! | १५८ |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## चउत्थं परिसिट्ठं

# दसकालियसुत्तं-चुण्णिअंतग्गयविसेसनामाणुकमो


| विसेसनाम | पिट्ठंको |
|---|---|
| अंधगवण्हि | ४६ |
| अग्गिगिह | ५१ |
| अज्जमणअ | २७० |
| अज्जवइर | ५१ |
| अज्जसेज्जंभव | ३ |
| अट्ठावअ | ६० |
| अट्ठावय | ६० |
| अणुओगदार | ३८ |
| अणुओगद्दार | १३८, २०६ |
| अमअ | ४३ |
| अभत | २३, ४३ |
| अभय | २३, २६ |
| अयल | ५५ |
| अरिट्ठणेमिसामि | ४६ |
| असंखअ | ५२ |
| असगडपिता | ५२ |
| असगडा | ५२ |
| आमड | ५० |
| आयप्पवायपुव्व | ५ |
| आयार | ४, १९७, २४५ |
| आयारकहा | ६ |
| आयारपणिधी | १८४ |
| आयारपणिही | ६ |
| आयारप्पणिधिअज्झयण | १८० |
| आवस्सअ | ६, २५, ३५, ५०, ५१, ५४, ५८, ९८, १३८, १५९, २०२, २३०, २४५, |
| आवस्सग | १, २६, ५१, १८० |
| आसाढ | ५१ |
| इंदाइमहामह | २९ |
| इसिभासिय | २ |
| उग्गसेण | ४६ |
| उज्जेणी | २८, ५१ |
| उण्णामणी | २३ |
| उत्तरज्झयण | ५१ |
| उत्तरावह | ६२ |
| उसभसामी | ७३ |
| ओणामणी | २३ |
| ओहनिज्जुत्ति | १२, २४ |
| कणाद | ११ |
| कप्प | २ |
| कम्मप्पवायपुव्व | ५ |
| कयमालअ | २६ |
| कलसभवमइंद | २७१ |
| काल | १७ |
| कावालिय | २३२ |
| काविल | ७१ |
| कासव | ७२, ७३ |
| काहावण | ६५ |
| कुत्तितावण | २८ |
| कूणिअ | २६ |
| कोक्कास | ५४ |
| कोडलअ | २५३ |
| कोडीगण | २७१ |
| कोसंबी | २५ |
| खुड्डियायार | १८० |
| खुड्डियायारकहा | ६५ |
| गंगा | १७४ |
| गागलिग | २६ |
| गोतम | २९, १६९ |
| गोयमसामि | २६ |
| गोल्ल | १० |
| गोविंदवायअ | ५३ |
| चउरंगिज्ज | ५२ |
| चंदगुत्त | २६, ४२ |
| चंदणा | २५ |
| चंपा | २४ |
| चरग | २६४ |
| चाणक्क | २६, ४२, ५४, १८० |
| चूलुत्तरचूला | ५ |
| छज्जीवणिका | ६ |
| छजीवणिया | २३, ६५, १४९, १५१, २२४ |
| छलुअ | २६, २८ |
| जंबु | ४, ९, ४३ |
| जमुणा | १७४ |
| जरासंध | २१ |
| जसभद्द | २७१ |
| जातकसता | ६८ |
| जिणदत्त | २४ |
| जीवा-ऽजीवाधिगम | ९४ |
| जोगसंगह | ५४ |
| जोणिपाहुड | २२ |
| ठाण | ८ |
| णंद | २६, ४२ |
| णागदत्त | २२ |
| णातपुत्त | १३७, २३८ |
| णाय | १४७ |
| णायपुत्त | १४६, १४७, १४९, २३८ |
| णारय | ५५ |
| णालिया | ६१ |
| णालीया | ६० |
| णिण्हग | २५६ |
| तंदुलवेयालिअ | ३ |
| तत्त्वार्थ | १६ |
| तरंगवई | ५५ |
| तरंगवतियादि | ५८ |
| तिमिसगुहा | २६ |
| थंभणि | २०९ |
| दक्खिणावह | १० |
| दत्तिलायरिअ | ३ |
| दसकालिय | २, ३, ६, ९, २७०, २७१ |
| दसवेकालिय | ३ |
| दस[वे]कालिय | ५ |
| दसवेतालित | २४४ |
| दसवेतालिय | ३, २४५ |
| दसवेयालिय | २७० |
| दसार | २१३ |
| दसारा | २१ |
| दिट्ठिवात | २ |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| विसेसनाम | पिट्ठंको |
|---|---|
| दिट्ठिवाद | २, १९७ |
| दिलीप | १६६ |
| दीवायण | २१ |
| दुमपत्तअ | २६ |
| दुमपुप्फितअज्झयण | ३५ |
| दुमपुप्फिता | ५३, ५९, ८२, १४०, १५२ |
| दुमपुप्फिया | ५, ६, ३५, ५२, १३९ |
| देवदत्ता | ५५ |
| देसी | १६८, १६९ |
| दोवती | ५५ |
| दोवतीणाते | ५५ |
| धम्मपण्णत्ति | १४९ |
| धम्मपण्णत्तिअज्झयण | ९८ |
| धम्मपण्णत्ती | ५, ७३ |
| धम्मपण्णत्तीअज्झयणं | ६५ |
| धम्मिल | २२७ |
| नलदामकोलिय | २६ |
| नागदत्त | २२ |
| पउमरह | ५५ |
| पंचकप्प | २३ |
| पज्जोय | २६ |
| पण्णत्ति | १९७ |
| पण्णत्ती | ५ |
| पभव | ४, ९ |
| पाडलिपुत्त | २४ |
| पिंडणिजुत्ती | १९० |
| पिंडनिज्जुत्ती | ३२, ६०, ६१, १०७, ११३ |
| पिंडेसणज्झयण | ९८, १३८ |
| पिंडेसणा | ५, ६, २६५ |
| पूसमित्ततिकविंस | २ |
| पोंडरीयज्झयण | २४ |
| बंभदत्त | ५४, ५५, २२७ |
| बारवती | २१ |
| बिंदुसार | ४२ |
| बुद्ध | ६८ |
| बोडिग | २५६ |
| भद्दियायरिअ | २ |
| भरह | ४३ |
| भारह | ५६, ५८ |
| भोगराति | ४६ |
| भोयराय | ४६ |
| भोया | ४६ |
| मंडुक्कलियाखमगा | १९१ |
| मंदर | २४५ |
| मणअ | ९ |
| मणग | ४, ५, |
| मणय | २७० |
| मधुरा | २१ |
| मम्मण | ५४ |
| मरट्ठा | २०७ |
| मरहट्ठगा | ११३ |
| मरहट्ठा | १६९ |
| महतिमायारकहज्झयण | १३८ |
| महावीर | ७२, ७३, १४४ |
| मालवगा | २१ |
| मिगावती | २५ |
| मूलदेव | २८, ५५ |
| मेरु | २६० |
| मोहण | २०९ |
| रक्खिय | २ |
| रतिवक्कचूलिया | ५, ६, |
| रत्तवडा | २३२ |
| रहणेमी | ४६, ४८ |
| रहनेमी | ४७ |
| रातीमती | ४७ |
| रायगिह | ४, ४३, ५० |
| रायमति | ४६ |
| रायीमई | ४८ |
| रिसिगुत्तखमासमण | २७१ |
| रुप्पिणि | ५५ |
| लोहक | ५४ |
| वइर | २ |
| वक्कसुद्धी | ५, ६, १८० |
| वक्कसुद्धीअज्झयण | १५९ |
| वड्डकहा | १९९ |
| वद्धमाणसामि –°मी | ७३, १३७, २३८ |
| वरधणु | ५४ |
| वररुचि | १७३ |
| वसंतपुर | ४७ |
| वसुदेव | ५५ |
| वारत्तगनिदरिसणं | १०७ |
| वासुदेव | २१३ |
| विणयसमाहि | ६ |
| विदेहा | २१८ |
| वीर | २७१ |
| वृत्ति-दशवैकालिक-सूत्रस्याप्राप्या प्राचीनतमा वृत्तिः | २५३ |
| वेदवाद | २०९ |
| वेरसामि | २७१ |
| वैसेसिय | २७ |
| व्यास | ६८ |
| सक्क | ११, ५६ |
| सगाल | ५४ |
| सच्चपवाय | ५ |
| सच्चप्पवातपुव्व | ५ |
| सभिक्खुक | ५ |
| सभिक्खुय | ६ |
| समुद्दविजय | ४६ |
| सामण्णपुव्वअ | ७३ |
| सामाइअ | २३० |
| सामाइयनिज्जुत्ती | ३ |
| सारस्सत | ११ |
| सिद्धत्थ | १४७ |
| सिरिगुत्त | २८ |
| सिवादेवी | ४६ |
| सुंसुमा | ८ |
| सुदंसण | २५९, २६० |
| सुधम्म | ९ |
| सुधम्मसामि | ४, ४३ |
| सुधम्मा | २१३ |
| सुबुद्धी | ४२ |
| सुभद्दा | २४, २५ |
| सुरट्ठ | २१ |
| सुलसा | ५० |
| सूरपण्णत्ति | २, ३८ |
| सेज्जंभव | ४, ४८, १४७, २५६, २५९, २६९, २७१ |
| सेज्जंभवसामि | १५७, २६९, २७१ |
| सेणिअ | ५०, ५२ |
| सेणित | २२ |
| सेणिय | ५० |
| सेयपड | ४ |
| सोगरिक | १७ |
| हरिवंस | ४६ |
| हिंगुसिव | २४ |
| हिमवंत | ५३ |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

## पंचमं परिसिट्ठं

# दसकालियचुण्णिअंतग्गयवक्खात-अवक्खातविसिट्ठसद्दाणमणुक्कमो


| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| अंजलिकरण | २०२ |
| अंजली | २०४ |
| अंबिल | १२४ |
| अकप्पित | १०७ |
| अकहा | ५८ |
| अकिंचण | २०१ |
| अकुहअ | २२२ |
| अक्खेवणी | ५५, ५६ |
| अगडित | २४१ |
| अगणी | १८६ |
| अगारधम्म | १३९ |
| अग्गबीत | ७५ |
| अग्गला | १२७, १७१ |
| अचंतिय | ११ |
| अचि | ८९ |
| अचियत्त | १०४ |
| अच्ची | १८६ |
| अच्चुसिण | ११६ |
| अच्छण | १८५ |
| अजय | ९१ |
| अजीवमीसिय | १६१ |
| अजीवाभिगम | ७७ |
| अज्जव | ११, ११८, २३४ |
| अज्जवय | २४३ |
| अज्जीव | ९४ |
| अज्झप्प | २४१ |
| अट्ठ | ६४ |
| अट्ठावय | ६० |
| अणंग | १४२ |
| अणंगकीडा | १४२ |
| अणंतनाणोवगत | २०९ |
| अणंतमीसिया | १६१ |
| अणगार | ३७, २३४ |
| अणगारधम्म | १३९ |
| अणगारिता | ९५ |
| अणच्चासातणाविणय | २०५ |
| अणभिग्गहिय | १६१ |
| अणभिज्झित | २५८ |
| अणवट्ठ | १४ |
| अणसण | १२ |
| अणाइण्ण | १६५ |
| अणाचिण्ण | ५९ |
| अणाततण | १८३ |
| अणादिट्ठ | २ |
| अणासातणा | २०५ |
| अणिकेत | २६४ |
| अणिण्हव | ५३ |
| अणिदाण | २४१ |
| अणिमिस | ११८ |
| अणियोगद्दार | ९ |
| अणिव्वुड | ६१, ६२ |
| अणिव्वेद | ५४ |
| अणिह | २४२ |
| अणुगच्छण | २०४ |
| अणुगम | ९ |
| अणुपस्समाण | २६८ |
| अणुपेहा | १८ |
| अणुप्पेहा | १६, १९ |
| अणुयोग | २ |
| अणुवीतिभासी | २०५ |
| अणुव्वत | १३९ |
| अणुव्विग्ग | ९९ |
| अणुसट्ठी | २४ |
| अणुसासणा | २२५ |
| अणुसोत | २६२ |
| अणुसोतमुह | २६२ |
| अणुसोयपट्ठित | २६२ |
| अणुस्सरण | १३० |
| अणेगंतपक्खावलंबण | २२ |
| अणेगंतवात | २८ |
| अणोहावित | २४७ |
| अण्णत्थ | ७४ |
| अण्णाउंछपुलाअ | २४१ |
| अण्णातउंछ | २६३ |
| अण्णायउंछ | २२० |
| अतिभिप्पूया | २०२ |
| अतियार | १२२ |
| अत्तव | १९७ |
| अत्तसंपग्गहित | २२५ |
| अत्तोवण्णास | २६ |
| अत्थ | ५३, १४० |
| अत्थंतर | ८२ |
| अत्थकहा | ५४ |
| अत्थबहुल | ४० |
| अत्थविणय | २०२ |
| अत्थविरमणविरामजुत्त | ४० |
| अत्थि | ६७ |
| अत्थिकाय | १० |
| अत्थिकायकात | ७२ |
| अत्थी | १४२ |
| अदत्तादाण | १४५ |
| अदिण्णादाण | ८३ |
| अदीणता | २३४ |
| अद्धद्धमीसिय | १६१ |
| अद्धसम | ४० |
| अधरगतिवासोवसंपया | २५० |
| अधितगामिणी | १९७ |
| अधुणा | ४० |
| अपज्जत्तिग | १६१ |
| अपाद | ४० |
| अपिसुण | २२२ |
| अपुणागम | २४४ |
| अपूतिम | २५५ |
| अप्पडिरूव | २०५ |
| अफरुसभासी | २०५ |
| अबंभवेरमणगुण | १४६ |
| अबोधिलाभ | ९१ |
| अबोही | ९५ |
| अब्भासविनी | २०२ |
| अब्भुट्ठाण | २०२, २०४ |
| अभिगमकुसल | २२३ |
| अभिग्गह | १४ |
| अभिग्गहिता | १६१ |
| अभिग्गहो | २०४ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| अभिप्पात | ७ |
| अभिहड | ६० |
| अभुत्तुब्भावण | ८२ |
| अमगुण्ण | १६ |
| अमाणिम | २५५ |
| अमादी | २२२ |
| अमुच्छित | ९९ |
| अमूढदिट्ठि | ५० |
| अयंपुर | १९०, १९७ |
| अरस | १२४ |
| अरहंतपडिमा | ४ |
| अलात | १८६ |
| अलिसिंद | १४० |
| अलोग | ९६ |
| अलोल | २४२ |
| अलोलुअ | २२२ |
| अवंदिम | २५४ |
| अवगूहण | १४२ |
| अवज्ज | ११ |
| अवणत | १०२ |
| अवण्णवाय | २२१ |
| अवतेस | ४० |
| अवधारण | १७८ |
| अवब्भंस | ७ |
| अवयव | २० |
| अवरत्त | २६७ |
| अवराहपद | ४१ |
| अवस्सकरणीयजोगाणुट्ठाण | २३४ |
| अवात | १७, २१, २२ |
| अविसोधिकोडी | ९८ |
| अविहेडअ | २४० |
| अव्वह | १९ |
| अव्वोकड | १६१ |
| अव्वोच्छिण्ण | ४० |
| असंकिलिट्ठ | २६६ |
| असंपन्न | १४२ |
| असंभंत | ९९ |
| असंविभागी | २१८ |
| असंसत्त | १०६, १९३ |
| असच्चमोस | १६१ |
| असच्चामोसा | १५९ |
| असण | ८६ |
| असम्मोह | १९ |
| असुचित | १२४ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| अहम्मत्थिकाय | १० |
| अहम्मपउत्त | २६ |
| अहिंसा | १२, १४४ |
| अहिगम | ६५ |
| अहेतुगेज्झ | ५० |
| अहेतुवात | ५० |
| अहेमालोहड | ११७ |
| आउकाइत | ७३ |
| आउकाय | १८५ |
| आउजयणा | १४९ |
| आओडिम | ३९ |
| आकिंचणीय | ११ |
| आगम | १३८ |
| आगमप्पहाण | २३ |
| आगासत्थिकाय | १० |
| आगाहण | १०८ |
| आजीवणा | ६१ |
| आणमणी | १६१ |
| आणा | १७ |
| आणापाणु | ६७ |
| आणारुयी | १८ |
| आतंक | १७ |
| आतती | २५४ |
| आताण | १४२ |
| आदिट्ठ | २ |
| आदेसभावसुद्ध | १६३ |
| आदेससुद्धि | १६२ |
| आमंतणी | १६१ |
| आमग | ६२, ११७, १८६ |
| आमपिट्ठ | ११० |
| आयतट्ठी | १३३ |
| आयती | २५४ |
| आययत्थी | २२६ |
| आयरिय | १५, २०० |
| आयाण | ६६ |
| आयार | ६, ४९ |
| आयारक्खेवणी | ५६ |
| आयारगोयर | १३९ |
| आयारधर | १९७ |
| आयावण | ४४ |
| आरकूडग | २३५ |
| आराधणा | २३४ |
| आराहणी-विराहणी | १५९ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| आरुहंत | ४ |
| आलिंगण | १४२ |
| आलिहण | ८७ |
| आलोग | १०३ |
| आलोयण | १४ |
| आसंदी | ६१ |
| आसण | १३२ |
| आसणदाण | २०२, २०४ |
| आसव | ६३, २३८ |
| आसवदार | २३८ |
| आसुर | १९१ |
| आसुरी | १४० |
| आहरण | २०, २१ |
| आहरणतद्देस | २१, २४ |
| आहरणतद्दोस | २१, २६ |
| इंगाल | ८९, १०१, १८६ |
| इंगिणिमरण | १२ |
| इंगित | २१९ |
| इंदितातीतविण्णाण | ९३ |
| इंदिय | ४१, ६७ |
| इच्छा | ३९ |
| इच्छाकाम | ३९ |
| इच्छाणुलोम | १६१ |
| ईहा | ६७ |
| उंछ | १९० |
| उंदुय | ९१ |
| उक्कलियंड | १८८ |
| उक्का | ८९ |
| उक्किट्ठ | १२ |
| उग्गमकोडी | ९८ |
| उग्गहिता | २६३ |
| उच्चार | १८९ |
| उच्चावय | ११८ |
| उच्छु | ११८ |
| उज्जालण | ११५ |
| उज्जु | ६३, २३४ |
| उड्ढमालोहड | ११७ |
| उण्णत | १०२ |
| उत्तरगुण | ६, ८६, २३६ |
| उत्तिंग | ११४, १८७ |
| उत्तिंगसुहुम | १८८ |
| उदओल्ल | १८६ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| उदग | ८८ |
| उदय | ६७ |
| उदाहरण | २१ |
| उद्दंसंड | १८८ |
| उद्देसित | ६० |
| उप्पण्णमीसिया | १६० |
| उप्पण्णाविगतमिस्सिता | १६१ |
| उप्पल | १२८ |
| उप्फुल्ल | १०६ |
| उमुत | ८९ |
| उम्मात | १४२ |
| उवओग | ६७ |
| उवग्घाअ | ९ |
| उवग्घात | १७८ |
| उवज्झात | ९५ |
| उवज्झाय | २०९ |
| उवणत | २० |
| उवण्णासोवणअ | २१ |
| उवमा | २० |
| उवयारविणय | २०४ |
| उववूहण | ५० |
| उवसंत | २४० |
| उवसंहार | २०, ३२ |
| उवसंहारविसुद्धी | ३३ |
| उवसग्ग | ४० |
| उवसम | १९४ |
| उवहाण | ५२ |
| उवाअ | २२, ५४ |
| उवात | २१ |
| उवालंभ | २५ |
| उस्सड | ११३ |
| उस्सण्ण | २६४ |
| उस्सण्णदिट्ठाहड | २६५ |
| उरिसक्कण | ११५ |
| ऊस | ११० |
| | |
| एक | २, ६५ |
| एगंतदिट्ठी | ३६ |
| एगंतिय | १९ |
| एगधार | १५० |
| एलग | १०५ |
| एसणिज्ज | ११३ |
| ओकिण्ण | ३९ |
| ओगाढरुयी | १८ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| ओणेज्ज | ३९ |
| ओमजणपुरक्कार | २५० |
| ओमोदरिय | १३ |
| ओवम्म | २० |
| ओवम्मसच्च | १६० |
| ओसक्किय | ११५ |
| ओहजीव | ६६ |
| ओहाणुप्पेधी | २४६ |
| | |
| कंखा | ५० |
| कंगु | १४० |
| कंद | ६२, ११७ |
| कंबल | ९१ |
| कंबलोपदेस | १८८ |
| कट्ठ | ८७ |
| कडुय | १२४ |
| कप्पित | २१, १०७ |
| कम्म | ६७, ९१ |
| कम्मदव्वरत | २४६ |
| करग | ८८ |
| करण | ४१, १४२ |
| कररुह | १४२ |
| कलह | १०२ |
| कलाय | १४० |
| कवाड | १०४, १२७ |
| कलिंच | ८७ |
| कविट्ठ | १३० |
| कसाय | ६७, १२४ |
| कहा | ५३, ५८ |
| काइय | २०४ |
| काउस्सग्ग | १४ |
| काम | १७, ३८, ४१, १४१ |
| कामकहा | ५५ |
| कामविणअ | २०३ |
| काय | १० |
| काल | ५१ |
| कालखुड्डय | ४९ |
| कालचूला | २४५ |
| कालमहंत | ४९ |
| कालालोण | ६२ |
| कालावात | २१ |
| कालोवात | २२ |
| कितिकम्म | २०४ |
| किनी | २१२ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| किवण | १२७ |
| कीतकड | ६० |
| कुपासंडि | २३२ |
| कुप्पवयण | ११ |
| कुमुद | १२८ |
| कुम्मास | १२४ |
| कुवित | २३२ |
| कुविय | १४१ |
| केवलिसमुग्घात | ४९ |
| कोट्ठअ | १२० |
| कोध | १९४ |
| कोल | १३० |
| कोला | ११७ |
| | |
| खंत | ३८, २३३ |
| खंती | २३४ |
| खंध | ७३ |
| खंधबीय | ७५ |
| खत्तिय | १३८ |
| खमा | ११ |
| खमासमण | २०० |
| खलिण | २६९ |
| खवण | २३३ |
| खाणु | १०० |
| खादिम | ८६ |
| खील | ११७ |
| खेल | १८९ |
| खुड्डुत | ४९ |
| खुड्डिय | ४९ |
| खेत्तचूला | २४५ |
| खेत्तमहंत | ४९ |
| खेत्तावात | २१ |
| खेत्तोवात | २२ |
| | |
| गंडिग | १७२ |
| गंथित | ४० |
| गंथिम | ३९ |
| गंध | ६० |
| गउज्ज | ४० |
| गणधम्म | ११ |
| गणहर | ४ |
| गणी | १३८ |
| गतिक्कात | ७२ |
| गम-णयसुद्ध | ४० |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| गम्मधम्म | १० |
| गहसम | ४० |
| गहित | ४० |
| गाम | ९९, २४० |
| गिद्ध | २४२ |
| गिह | १७१ |
| गिहत्थ | २३१ |
| गिहवइ | १०४ |
| गिहिजोग | १९० |
| गिहिणिसेज्जा | १५४ |
| गिहिभायणवज्जणत्थ | १५३ |
| गीतत्थ | २१८ |
| गुज्झग | २१४ |
| गुण | ९७, १३५, २०० |
| गुणग्गा | ४१ |
| गुणव्वत | १३९ |
| गुत्ति | ५३ |
| गुव्विणी | १११ |
| गेरुय | ११० |
| गोट्ठिधम्म | ११ |
| गोयर | ९९, १३९ |
| घट्टण | ८७ |
| घसी | १५६ |
| चंगबेर | १७२ |
| चक्कारबद्ध | १४१ |
| चतुधार | १५० |
| चतुप्पय | १४१ |
| चरक | ३७ |
| चरण | ९९ |
| चरणकखेवणी | ५६ |
| चरणिड्डि | ५७ |
| चरय | २३३, २३४ |
| चरित | २१ |
| चरित्त | २३४ |
| चरित्तधम्म | ११ |
| चरित्तविणअ | २०३ |
| चरित्तायार | ५३ |
| चलण | १०८ |
| चाउलोदग | ११९ |
| चाग | ११ |
| चालणा | १९ |
| चिंता | १६, १४२ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| चित्त | ६७, ७४ |
| चियत्त | १०४ |
| चुण्ण | ११७ |
| चुण्णपद | ४० |
| चूलिया | २६१ |
| चेदणा | ६७ |
| चेलकण्ण | ८९ |
| छंदाणुवत्तण | २०२ |
| छक्क | ६५ |
| छक्कायदया | ६ |
| छारिय | १०१ |
| छिवाडिया | १३० |
| छीरविराली | १२९ |
| छेज्ज | ३९ |
| छेद | १४, ९३, ९४ |
| जंतलट्ठी | १७२ |
| जक्ख | २१४ |
| जणवदसच्च | १६० |
| जती | २३३, २३४ |
| जयणा | ८६ |
| जल्लिया | १८९ |
| जवणट्ठता | २२० |
| जस | २१२ |
| जातणक | २३१ |
| जाति | २७० |
| जातिपध | २०७ |
| जाति-वध | २०७ |
| जातीसरण | ४१ |
| जायणी | १६१ |
| जाल | ८९ |
| जावअ | २८ |
| जिण | ११ |
| जिणवयण | ५१ |
| जित | १९७ |
| जीव | ६५, ९४, १८४ |
| जीव[अ]ज्जीवमीसिया | १६१ |
| जीवच्चिंता २२ तः २५, २७, २८, २९, ३६ | |
| जीवत्थिकाय | १० |
| जीवत्थित्त | २० |
| जीवमीसिया | १६१ |
| जीवाहिगम | ७७ |
| जुग | ९९ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| जुत्तीसुवण्णग | २३५ |
| जुद्ध | १०२ |
| जोग | ४१,६७ |
| जोगसच्च | १६० |
| जोती | १८६ |
| झूसण | २५३ |
| ठवणाकम्म | २१, २४ |
| ठवणासच्च | १६० |
| णंगल | १७२ |
| णंदी | १ |
| णगर | ९९ |
| णय | ३५ |
| णाण | २३४ |
| णाणिड्डि | ५७ |
| णात | २० |
| णाभि | १७२ |
| णालिया | ६१ |
| णाहितवाती | २५, २६ |
| णिकायकात | ७२ |
| णिग्गमणविसुद्धी | ३४ |
| णिट्ठाण | १९० |
| णिदाण | १७ |
| णिप्पुलाअ | २४२ |
| णिप्फाव | १४० |
| णिवाय | ४० |
| णिसीहिया | १२६ |
| णिस्सावयण | २६ |
| णिहुत | ११९ |
| णीय | १३१ |
| णीरत | ९६ |
| णीसा | ११२ |
| णेता | ३८ |
| णेपुणित | २१५ |
| णोअवराहपद | ४० |
| णोकम्मदव्वरति | २४६ |
| णोणिसीहाभिहड | २६५ |
| ण्हाणमंडव | १०३ |
| तंतिसम | ४० |
| तज्जायसंसट्ठ | २६५ |
| तणग्गहण | १८६ |
| तणलता | ७५ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| तत्त | ४ |
| तत्तअनिव्वुडभोती | ६१ |
| तत्तनिव्वुड | ११० |
| तदण्णवत्थुय | २७ |
| तद्दव्वसुद्धि | १६२ |
| तब्भवजीवित्त | ६६ |
| तब्भावणा | १४२ |
| तब्भावसुद्धि | १६३ |
| तव | १२, १४, २३४ |
| तवविणय | २०४ |
| तव-सज्झायजोग | २०१ |
| तवसमाधि | २२७ |
| तवस्सी | १५, २३३ |
| तवायार | ५३ |
| तव्वत्थुत | २७ |
| तसकाय | ९१ |
| तसकायजयणा | १८७ |
| तालसम | ४० |
| तायी | २३३ |
| तावस | २३३ |
| तावस | ३७ |
| तिणिस | १४१ |
| तिण्ण | ३७, २३३ |
| तितिक्खण | २३४ |
| तित्तग | १२४ |
| तित्थकर | ४९ |
| तित्थगर | २३७ |
| तिधार | १५० |
| तिपुड | १४० |
| तिरिच्छसंपातिम | १०१ |
| तिलप्पडग | १३० |
| तिलपिट्ठ | १३० |
| तीरट्ठी | ३८, २३४ |
| तुंबाग | ११७ |
| तुसरासी | १०१ |
| तूयरी | १४० |
| तेउ | ७३ |
| तेउकायोपरोधपरिहरण | १८६ |
| तेउकाय | ८९, १५० |
| तोरण | १७१ |
| तोस्स | ८८ |
| त्रस | ७३ |
| थंभ | २०६ |
| थावअ | २८ |
| थावर | १४१ |
| थिग्गल | १०३ |
| थिरीकरण | ५१ |
| थेर | १५, २२४ |
| दंत | ३८, २३३ |
| दंसण | २३४ |
| दंसणविणय | २०३ |
| दंसणायार | ५० |
| दक्खत्त | ५४ |
| दक्खिण्ण | ५५ |
| दग | ९९, १०६ |
| दगभवण | १०३ |
| दगवारअ | ११२ |
| दया | १८७, २१० |
| दयाधिकारी | १८७ |
| दवदव | १०३ |
| दवद्दव | १०३ |
| दविअ | २३३ |
| दवित | ३८ |
| दवियणिकाल | ७२ |
| दव्व | २०३ |
| दव्वअरति | २४६ |
| दव्वखुत | ४९ |
| दव्वचूला | २४५ |
| दव्वछक्क | ६५ |
| दव्वजीव | ६६ |
| दव्वणिधी | १८० |
| दव्वत्थ | १४० |
| दव्वपद | ३९ |
| दव्वप्पणिधी | १८० |
| दव्वभिक्खु | २३१, २३२ |
| दव्वमहंत | ४९ |
| दव्वविणय | २०२ |
| दव्वविराधणी | १५९ |
| दव्वसत्थ | ७४ |
| दव्वसमाधी | २०६ |
| दव्वसुद्धि | १६२ |
| दव्वायार | ४९ |
| दव्वाराधणी | १५९ |
| दव्वावाअ | २१ |
| दव्वोवात | २२ |
| दसकालिय | २ |
| दसणसण्णिवात | १४२ |
| दसावयव | ३० |
| दसावयवपरूवण | २० |
| दार | १०३, १२७ |
| दारुकम्मकार | २३१ |
| दिक्खागुरु | २०९ |
| दिट्ठंत | २०, २९, ३० |
| दिट्ठंतविसुद्धी | ३२ |
| दिट्ठ | १९७ |
| दिट्ठाहड | २६४ |
| दिट्ठिवाद | १९७ |
| दिट्ठिवादअक्खेवणी | ५६ |
| दिट्ठिसंपात | १४२ |
| दिट्ठिसेवणा | १४२ |
| दुक्ख | २०१ |
| दुधार | १५० |
| दुप्पणीय | २६९ |
| दुप्परकंत | २५२ |
| दुम | ६ |
| दुरुवणीत | २७ |
| दुरुहमाण | ११७ |
| दुव्विहित | २५७ |
| दुस्समा | २४९ |
| देव | २१४ |
| देस | १० |
| देसधम्म | १० |
| दोणी | १७१ |
| धण्ण | १४० |
| धण्णा | १४० |
| धम्म | ४, ९, १०, ३९ (टि०) |
| धम्मकहा | १६, ५५, ५८ |
| धम्मकहि | ५१ |
| धम्मत्थकाम | १३९ |
| धम्मत्थिकाय | १० |
| धम्मलाभ | ४ |
| धातुवातिता | २२ |
| धारणा | ६७ |
| धिज्जाइत | १९० |
| धूमण | ६२ |
| धूवण | ६२ |
| नाणविणय | २०३ |
| नाणायार | ५१ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| निकाय | ७१ |
| निगमण | २०, ३४ |
| निग्गंथ | ३७, २३४ |
| निदरिसण | २० |
| नियडी | १३४ |
| निव्वेग | २३४ |
| निव्वेदणी | ५५ |
| निव्वेदणीकहा | ५७ |
| निसग्गरुती | १८ |
| निस्सेणी | ११७ |
| | |
| पउम | १२८ |
| पंचावयव | २०, २९ |
| पंचासवदार | २३८ |
| पंसुखार | ६२ |
| पग्गहिता | २६३ |
| पच्चक्लाणी | १६१ |
| पच्छेकम्म | १५४ |
| पज्ज | ४० |
| पज्जत्तिग | १६१ |
| पज्जवकात | ७२ |
| पजाद | २ |
| पज्जाय | १० |
| पडिकुट्ठ | १०४ |
| पडिक्कमण | १४ |
| पडिग्गह | १२५ |
| पडिणिभ | २७ |
| पडिपुण्ण | १९७ |
| पडिबुद्धजीवी | २६९ |
| पडिमा | २४० |
| पडियाइयण | २५० |
| पडिरूवजोगजुंजणाविणय | २०४ |
| पडिरूवलक्खण | २०५ |
| पडिरूवविणय | २०५ |
| पडिलोम | २६ |
| पडिसंलीण | ६३ |
| पडिसोत | २६२ |
| पडिसोतलद्धलक्ख | २६२ |
| पडुच्चमहंत | ४९ |
| पडुच्चसच्च | १६० |
| पणअ | ११४, १८७ |
| पणगसुहुम | १८८ |
| पणिहाण | १८० |
| पणिहाणजोगजुत्त | ५३ |
| पण्णत्तिअक्खेवणी | ५६ |
| पण्णन्निस्सर | १९७ |
| पण्णवणी | १६१ |
| पण्णवय | २३३ |
| पतिण्णत | ४० |
| पतिण्णा | २० |
| पतिण्णासुद्धी | ३० |
| पतिरिक्क | २६४ |
| पतिरिक्कया | २६३ |
| पद | ३९ |
| पदविभाग | ९ |
| पधाणदव्वसुद्धि | १६२ |
| पधाणभावसुद्धि | १६३ |
| पमाद | १४२ |
| परक्कम | १०० |
| परमधम्मित | ७७ |
| परमाहम्मिय | ७७ |
| परलोगाराधणा | २३४ |
| परिग्गह | ८५, १४६ |
| परिज्झ | १७ |
| परिण्णा | ६३ |
| परित्तमीसिया | १६१ |
| परिभोग | ६७ |
| परियट्टण | १६ |
| परियाअ | २०० |
| परियात | २५१ |
| परूवण | ६६ |
| पलंब | ११७ |
| पलियंक | ६१ |
| पव्वइअ | ३७ |
| पव्वयित | २३४ |
| पसंत | २४० |
| पसिद्धी | १९ |
| पसुधम्म | १० |
| पस्सवण | १८९ |
| पहाणपुरुष | ४९ |
| पहाणमहंत | ४९ |
| पहाणसुद्धि | १६२ |
| पहुल | ११७ |
| पागतभासानिबद्ध | ५० |
| पाण | ८६, ९१, ९९ |
| पाणसुहुम | १८८ |
| पाणातिवात | ८० |
| पाणातिवातविरति | १४५ |
| पाणियकम्मन्त | १०३ |
| पाणियमंचिका | १०३ |
| पादोवगमण | १२ |
| पाय | १८८ |
| पायच्छित्त | १४ |
| पारंचित | १४ |
| पारधम्मित | ७७ |
| पारिव्वात | ३७ |
| पारिव्वाय | २३४ |
| पावारत | १०४ |
| पासंडी | ३७, २३४ |
| पासाण | १४१ |
| पासाद | ११७, १७१ |
| पिट्ठ | १३० |
| पिट्ठमंस | १९६ |
| पिपीलियाअंड | १८८ |
| पिहुजण | २५७ |
| पीढ | ११७ |
| पीढग | ९१, १७२ |
| पीलिय | ३९ |
| पुच्छण | १६ |
| पुच्छणी | १६१ |
| पुच्छा | २६ |
| पुढवि | ७४ |
| पुढविकाय | १४९ |
| पुढविकायसंजम | ४१ |
| पुढविकाइय | ७३ |
| पुढविकायजयणा | १४९ |
| पुढवी | ७५, ८७ |
| पुप्फ | ७ |
| पुप्फसुहुम | १८८ |
| पुर | १० |
| पुराणपावग | २३९ |
| पुरिम | ३९ |
| पुरिसकारक्खेवणी | ५६ |
| पुरेकम्म | १०८, १५४ |
| पुलाअ | २४२ |
| पुव्वत | ३८ |
| पूयिम | २५५ |
| पेहा | ४४ |
| पोग्गल | ११८ |
| पोग्गलत्थिकाय | १० |
| पोरबीय | ७५ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| फल | १८६ |
| फलग | ९१ |
| फलिह | १२७, १७१ |
| फाणिय | ११७ |
| फासण | २३८ |
| फासुग | १२० |
| फुमण | ८९ |
| | |
| बंध | ६७ |
| बंभ | ११ |
| बंभचेर | १०१, २१० |
| बंभण | २३४ |
| बक्करअ | १०५ |
| बहुपद | ४० |
| बहुमाण | ५२, २०५ |
| बहुसाधारण | २५२ |
| बहुस्सुत | १९५, २५६ |
| बादर | ६६ |
| बितियसुहुम | १८८ |
| बिमेलग | १३० |
| बीत | ६२ |
| बीय | ९९ |
| बीयमंथु | १३० |
| बीयरुह | ७५ |
| बुद्ध | २३४ |
| बुद्धवयण | २३६, २३८ |
| बुद्धि | ६७ |
| बुध | ११७ |
| | |
| भत्त | ९९ |
| भत्तपच्चक्खाण | १२ |
| भत्ती | २०५ |
| भयविणअ | २०३ |
| भवंत | २३३ |
| भवजीवित | ६६ |
| भारकात | ७२ |
| भारक्कात | ७२ |
| भाव | २, ७ |
| भावअरति | २४६ |
| भावक्कात | ७२ |
| भावच्चुय | ४९ |
| भावचूला | २४५ |
| भावजीव | ६६ |
| भावपद | ३९ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| भावप्पणिधी | १८० |
| भावबुद्ध | २३७ |
| भावभिक्खु | २३२ |
| भावमहंत | ४९ |
| भावरति | २४६ |
| भावविणय | २०२ |
| भावसगार | २३० |
| भावसच्च | १९० |
| भावसत्थ | ७४ |
| भावसमाधी | २०६ |
| भावसुद्धि | १६३ |
| भावायार | ५० |
| भावावाअ | २१ |
| भावोवात | २२ |
| भासा | १६१ |
| भिंदण | ८७ |
| भिक्खायरिया | १४ |
| भिक्खु | २७, २३१, २३३ २३४ |
| भिक्खुलिंग | २३४ |
| भित्ति | ८७ |
| भिलुगा | १५६ |
| भिलुहा | १५६ |
| भूत | ९१, १८७ |
| भूताधिकरण | १९७ |
| भेत्तव्व | २३३ |
| भेत्ता | २३३ |
| भेदण | २३३ |
| | |
| मंगल | १, ११, ३० |
| मंगलपरिग्गहिय | १ |
| मंच | ११७ |
| मंडसुहुम | १८८ |
| मंथु | १२४ |
| मंद | २०७ |
| मट्टिया | ९९, १०६ |
| मणविणय | २०५ |
| मणुण्ण | १६ |
| मति | ६७ |
| मद्दव | २३४ |
| मद्दवता | ११, १९४ |
| मधुर | ४०, १२४ |
| मयणकाम | ३९ |
| मरण | १४२ |
| मल्ल | ६० |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| महत्थ | ४० |
| महरिसि | ५९ |
| महव्वय | १२ |
| महंत | ४९ |
| महावात | १०१ |
| महित | ८० |
| महेसि | २५७ |
| माउयापद | ४० |
| माण | १३३, १९४ |
| माणिम | २५५ |
| माता | १३७ |
| मातुकात | ७२ |
| मातुयपद | २ |
| मातुलिंग | १३० |
| मामक | १०४ |
| माया | १९४ |
| मालोहड | ११७ |
| माहण | १२७ |
| मित | १९७ |
| मितभासी | २०५ |
| मुंड | ९५ |
| मुच्छा | ६ |
| मुणालिया | १२९ |
| मुणि | ९९, १३३, १८६, २३३ |
| मुत्त | ३७, २३४ |
| मुधाजीवी | १९० |
| मुधालद्ध | १२४ |
| मुम्मुर | ८९ |
| मुसा | १४५ |
| मुसावात | ८२ |
| मुसावाद | १४५ |
| मुहाजीवी | १२४ |
| मूल | १४, ६२, ११७ |
| मूलगुण | ६, ८२, ८३, २३६ |
| मूलबीय | ७५ |
| मूलवयण | १८६ |
| मेरग | १३४ |
| मेहुण | ८४ |
| मोक्खविणय | २०३ |
| मोसा | १५९, १६० |
| मोहसंताणसंतय | २५६ |
| | |
| रंगपद | ३९ |
| रज | १० |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| रय | २०१ |
| रयण | १४१ |
| रसनिज्जूढ | १९० |
| रहस्सारक्खिता | १०४ |
| राइणिअ | २२० |
| रातिभत्त | ६० |
| रातीभोयण | ८६ |
| रातीभोयणपडिसेह | ८६ |
| रातीभोयणवेरमण | ८६ |
| रायधम्म | ११ |
| रायमत्त | १३८ |
| रायमास | १४० |
| राया | १०४ |
| रायाण | १३८ |
| रिजुता | १९४ |
| रुक्खग्गहण | १८६ |
| रुमालोण | ६२ |
| रूवकहा | ५५ |
| रूवसच्च | १६० |
| लक्खण | ६६ |
| लज्जा | २१० |
| लज्जाणास | १४२ |
| लद्धि | ५७ |
| लयसम | ४० |
| ललित | १४२ |
| लवण | १२४ |
| लूसअ | २९ |
| लूह | ३८, २३४ |
| लेण | १९८ |
| लेलु | ८७, १८५ |
| लेसा | ६७ |
| लोइअ | १० |
| लोउत्तरिय | ११ |
| लोकायतिक | १४३ |
| लोग | ९६ |
| लोगोवयारविणय | २०२ |
| लोद्ध | ११२ |
| लोण | ११० |
| लोभ | १९४ |
| वंजण | ५३ |
| वंदण | २०९ |
| वंदिम | २५४ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| वंसक | २८ |
| वक | १५९ |
| वक्खेव | ५७ |
| वच्छल | ५१ |
| वणस्सति | ७५ |
| वणस्सतिकातजतणा | ८९ |
| वणस्सतिकातिय | ७५ |
| वणस्सतिकायजतणा | १८६ |
| वणस्सतिसमारंभपरिहारोवदेसत्थ | १५१ |
| वणीमग | ११३, १२७ |
| वण्णसम | ४० |
| वण्णसंजलणा | २०६ |
| वण्णित | ११० |
| वती | २३३ |
| वत्थ | १३२ |
| वत्थातिपरिग्गह | १४७ |
| वत्थिकम्म | ६२ |
| वनस्पति | ७३ |
| वयणसंजोग | १४२ |
| ववहारक्खेवणी | ५६ |
| ववहारसच्च | १६० |
| वहदोसदूसिय | १५३ |
| वाउकायवज्जणत्थ | १५१ |
| वाउक्कायविसेस | ८९ |
| वातिम | ३९ |
| वादीभ | ५१ |
| वायण | १६ |
| वायिग | २०४ |
| वायु | ७३ |
| वायुसमारंभपरिहरणत्थ | १८६ |
| वालधोवण | ११८ |
| विओसग्ग | १४,१९ |
| विकहा | ५८, ५९ |
| विक्कवता | १४२ |
| विक्खेवणी | ५५, ५६ |
| विगडभाव | १९३ |
| विगतमीसिया | १६० |
| विग्गहिय | २३९ |
| विमाणअ | २४१ |
| विज्जल | १०० |
| विज्जा | ५४, ५६ |
| विज्जाअक्खेवणी | ५६ |
| विज्जालद्धि | ५७ |
| विणअ | ५२, २३४ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| विणय | १४, २०२, २१२ |
| विणयसमाधि | २२४, २२५ |
| विण्णाण | ७, ६७ |
| वितक्क | ६७ |
| वितिकिंछ | ५० |
| वितोसग्ग | १९ |
| विदू | २३४ |
| विभूसादोस | १५६ |
| विमुत्तया | २३४ |
| विय | १९७ |
| वियस्सति | २५९ |
| विरत | ३८, २३३ |
| विरस | १२४ |
| विरालिय | १२९ |
| विलिहण | ८७ |
| विवेग | १४, १९ |
| विसंवादण | ८३ |
| विसम | ४०, १०० |
| विसयविराग | २३४ |
| विसोत्तिका | १०१ |
| विसोहिकोडी | ९८ |
| विहारचरिता | २६३ |
| वुड्ढ | १८५ |
| वेकालिय | ३ |
| वेडिम | ३९ |
| वेद | २२५ |
| वेयणा | ७ |
| वेयावच्च | १५ |
| वेयावडिय | २६६ |
| वेलुय | १३० |
| वेससामंत | १०१ |
| वैर | १४१ |
| वोकडा | १६१ |
| वोसट्ठ | २४० |
| संकप्प | ४१ |
| संकम | १०० |
| संका | ५० |
| संकित | ११२ |
| संकिलिट्ठ | २६६ |
| संखडी | १७४ |
| संगह | २ |
| संगहणिकात | ७२ |
| संघाडग | ४ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| संघातिम | ३९, ११७ |
| संचअ | ५४ |
| संजत | ३७, ८७, २३४ |
| संजतिंदिअ | २४१ |
| संजम | ११, १२, ५९, २०१, २१० |
| संडिब्भ | १०२ |
| संतुट्ठी | १५४ |
| संथार | २२० |
| संथारग | ९१ |
| संधी | १०३ |
| संपत्त | १४२ |
| संपराअ | ४५ |
| संपुच्छण | ६० |
| संभम-दवद्दव | १०३ |
| संभरण | १४२ |
| संभास | १४२ |
| संभिण्णवित्त | २५८ |
| संलीणता | १४ |
| संवर | ९५, २३८ |
| संवाधणा | ६० |
| संवेग | २३४ |
| संवेगणी | ५७ |
| संवेदणी | ५५ |
| संसग्गी | २३४ |
| संसट्ठ | ११० |
| संसट्ठकप्प | २६५ |
| संसत्त | १०६ |
| संसयकरणी | १६१ |
| संसाधणा | २०४ |
| संसेइम | ११९ |
| संहिता | ९ |
| सकार | २३० |
| सक्कुली | ११७ |
| सचित्तसंघट्टणा | १०८ |
| सच्च | ११, १५९ |
| सच्चा | १५९ |
| सच्चामोसा | १५९, १६० |
| सज्झाअ | १६ |
| सज्झाण | २०१ |
| सज्झाय | २०१ |
| सज्झायजोग | २०० |
| सट्टिका | १४० |
| सण | १०४ |
| सण्णा | २४, ४१, ६७ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| सतुया | ११७ |
| सत्थ | ७४, १५० |
| सद्दातिविसयविराग | २३४ |
| सद्धा | १४२, २०० |
| सब्भावपडिसेह | ८२ |
| सब्भावसद्दहणा | २३९ |
| सम | ४० |
| समण | ३६, ३७, १२७, २३४ |
| समणधम्म | ४१, १४० |
| समा | ४४ |
| समाधी | २०६ |
| समाहितप्पा | २४१ |
| समिति | ५३ |
| समुतिसच्च | १६० |
| समुदाण | २२० |
| समुदाणचरिया | २६३ |
| समुद्दिसणविधि | १२१ |
| सम्मद्दिट्ठि | २३९ |
| सम्माण | १३३ |
| सम्मुच्छिम | ७५ |
| सयण | १३२ |
| सरक्ख | ८७ |
| सरण | ६१ |
| सरीरकाल | ७२ |
| सलागा | ८७ |
| सव्वओभार | १५० |
| सव्वणयविसुद्ध | २७ |
| सव्वत्तम | ९५ |
| सव्वपज्जाय | २०३ |
| सव्वभाव | २०३ |
| सव्वसंगावगत | २४२ |
| सांभरिलोण | ६२ |
| साणी | १०४ |
| साति | २५० |
| सातिबहुल | २५० |
| सादिम | ८६ |
| साधम्मिय | २३९ |
| साधु | २३४ |
| सामण्ण | ३६ |
| सामुदाणिय | २६४ |
| सालुय | १२९ |
| सावज्जणुमोदणी | १७८ |
| साहम्मित | १६ |

| सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|
| साहु | ३४ |
| सिंगबेर | ११७ |
| सिंघाणअ | १८९ |
| सिक्खग | १६ |
| सिक्खावत | १३९ |
| सिणाण | ६०, १५५ |
| सिणेहसुहुम | १८८ |
| सिद्ध | ९६ |
| सिप्प | ५४, २१५ |
| सियासद्द | ४४ |
| सिला | ८७ |
| सीलंगसहस्स | ४१ |
| सुत | २०१ |
| सुतधम्म | ११ |
| सुतसमाधि | २२६ |
| सुद्धि | १६२ |
| सुद्धोदग | ८८ |
| सुपरिच्छितम्माहि | ९३ |
| सुरा | १३४ |
| सुवण्णगुण | २३५ |
| सुसमाधि | २७० |
| सुसाण | २४० |
| सुस्सूसणा | २०४ |
| सुहुम | ६६, १८८ |
| सूचित | १२४ |
| सेंधव | ६२ |
| सेंबली | ११८ |
| सेज्जा | ९१, १२१, १२६, १८८, २२० |
| सेज्जातरपिंड | ६१ |
| सेयपडत | ४ |
| सेलेसि | ९६ |
| सोंडिय | १३४ |
| सोभवज्जण | १५६ |
| सोय | ११ |
| सोरट्ठिय | ११० |
| सोवच्चल | ६२ |
| हंभो | २४९ |
| हरतणुत | ८८ |
| हरित | ९० |
| हरितसुहुम | १८८ |
| हरिताल | ११० |
| हलिबंद | १८८ |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| सद्दो | पिट्ठंको | सद्दो | पिट्ठंको | सद्दो | पिट्ठंको |
|---|---|---|---|---|---|
| हल्लोहलिभंड | १८८ | हितभासी | २०५ | हेउ | २०, २७, ३०, ४० |
| हसित | १४२ | हिम | ८८ | हेउनिउत्त | ४० |
| हस्सकुहअ | २४३ | हिरण्ण | १४१ | हेउविसुद्धी | ३० |
| हिंसा | १२ | हिरिमिंथ | १४० | हेतुगेज्झ | ५० |

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org